विश्व नाटक

के गुह्य

राजा

प्रस्तावना

परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसने हमको इस विश्व-नाटक के सर्व राज़ों का, सर्व वेद-शास्त्रों का सार समझाया है, जो राज़ हमारी बुद्धि में सदा जाग्रत रहें तो हमको सदा परमानन्द की अनुभूति होती रहेगी। ये परमानन्द की सदा अनुभूति करना और सर्व को अनुभूति कराना ही इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का सार है, हमारा परम कर्तव्य है। उन सभी राज़ों का अधिक से अधिक ज्ञान हमारी बुद्धि में रहे इसके लिए ही यहाँ पुरुषार्थ किया गया है। परमात्मा तो ज्ञान का सागर है, उसके बताये गये सर्व राज़ों को बुद्धि में रखना, उन सबका वर्णन करना तो गागर में सागर को समाना ही है, जो अति कठिन ही नहीं लेकिन असम्भव ही है परन्तु पुरुषार्थ ब्राह्मण जीवन का परम कर्तव्य है। इस लक्ष्य से ही यहां हमने बाबा के महावाक्यों और अनुभव के आधार पर कुछ राज़ों अर्थात् ज्ञान बिन्दुओं का वर्णन किया है और हर राज़ के केन्द्र बिन्दु (Center Point) पर पहुँचने का पुरुषार्थ किया है। विश्व नाटक की विविधता के अनुसार किसी के विचार इससे भिन्न और विशेष प्रभावशाली हो सकते हैं क्योंकि इस विविधतापूर्ण नाटक में हर आत्मा की बुद्धि अपनी-अपनी है। एक आत्मा के अपने ही विचारों में देश-काल-परिस्थिति के अनुसार भिन्नता हो सकती है। हर आत्मा में कोई न कोई विशेष गुण और शक्तियां हैं यदि वे अपने विचारों से हमको अवगत करायेंगे तो हम अवश्य ही उन पर विचार करेंगे और यदि वे तर्क-संगत और बाबा के महावाक्यों के अनुसार होंगे, यथार्थ होंगे तो हम उनको सहर्ष स्वीकार करेंगे।

यह भी विचारणीय सत्य है कि परमात्मा ज्ञान-सागर, कल्याणकारी है, इसलिए बाबा ने मुरली में विश्व नाटक के अविनाशी सत्यों का भी ज्ञान दिया है तो गुणों और शक्तियों का भी ज्ञान दिया है और देश-काल-परिस्थिति एवं व्यक्ति को देखकर उसके कल्याणार्थ भी महावाक्य बोले हैं। अविनाशी सत्य तीनों कालों में सदा सत्य हैं परन्तु किसके कल्याणार्थ बोले गये महावाक्यों में भिन्नता होना स्वभाविक है क्योंकि वे देश-काल-परिस्थिति और व्यक्ति की स्थिति को देखकर बोले हैं।

बी.के.महेश, एकाउण्ट्स ऑफिस
पाण्डव भवन, माउण्ट आबू
I.Com No. - 4879

ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा उद्‍घाटित विश्व-नाटक के गुह्य राज़

विषय-सूची

ज्ञान की सत्यता का राज़
निश्चय बुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति का राज़
परमात्मा का राज़
परमात्मा शब्द का भावार्थ
परमात्मा सर्वव्यापी नहीं, एक देशवासी है अर्थात् परमधाम का वासी का राज़
परमात्मा के सर्वज्ञ, जानी-जाननहार स्वरूप का राज़
परमात्म के न्यायकारी और समदर्शीपन का राज़
परमात्मा के परकाया प्रवेश का राज़
परमात्मा के अवतरण का राज़
परमात्म मिलन का गुह्य राज़
परमात्म मिलन कब, कहाँ और कैसे ?
परमात्मा के लिब्रेटर-गाइड अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता का राज़
परमात्मा के गुणों और कर्तव्यों का राज़
परमात्मा के बाग़वान स्वरूप का राज़
परमात्मा के पतित-पावन स्वरूप और कर्तव्य का राज़
परमात्म के गरीब-निवाज कर्तव्य का राज़
परमात्मा के समदर्शी स्वरूप का राज़
परमात्मा के खिवैया स्वरूप का राज़
परमात्मा, नैया और खिवैया का राज
विषय वैतरणी नदी अर्थात् विषय सागर और क्षीर सागर का राज़
परमात्मा के सौदागर स्वरूप का राज़
परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप का राज़
परमात्मा सर्व आत्माओं का बाप का राज़
परमात्म के सर्वशक्तिवान स्वरूप का राज़
परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का राज़ और अनुभव
परमात्मा और ड्रामा का राज़
परमात्मा और कर्म का राज़
आत्मा का राज़
आत्मिक स्वरूप का राज़
आत्मा और शरीर के अस्तित्व का राज़ और शरीर में आत्मा के स्थान का राज़
आत्मा और देह अर्थात् प्रकृति और पुरुष के सम्बन्ध का राज़ और अनुभव
आत्मा निर्लेप नहीं, आत्मा के पतित और पावन बनने का राज़
आत्मा के लेप-क्षेप का राज़
आत्माओं के पूज्य और पुजारीपन का राज़
आप ही पूज्य और आप ही पुजारी का राज़
आत्मा रूपी बैटरी चार्ज और डिस्चार्ज होने का राज़
आत्मा और परमात्मा के निराकार स्वरूप का राज़
आत्मा-परमात्मा के भेद और उनकी समानता का राज़
आत्मा की सच्ची कमाई का राज़
आत्मा के 84 जन्मों का राज़
आत्मा के अविनाशी संस्कारों का राज़
आत्मा की विभिन्न योनियों का राज़
मनुष्यात्मा और अन्य योनियों की आत्माओं का राज़
मनुष्यात्मा मनुष्य योनि में ही पुनर्जन्म लेती है, पशु योनियों में नहीं का राज़
विभिन्न योनि की आत्माओं के कर्मों और उनकेसुख-दुख का राज़
आत्माओं के लिंग परिवर्तन का राज़
मन-बुद्धि-संस्कार और आत्मा के अस्तित्व का राज़
वृत्ति और वायब्रेशन का वातावरण पर प्रभाव तथा वातावरण का आत्मा की स्थिति पर प्रभाव का राज़
आत्मा की संकल्प शक्ति का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान और उसके महत्व का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान (Spiritual Knowledge) और धार्मिक ज्ञान में अन्तर का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान, मनोविज्ञान और दोनों के भेद का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान और दार्शनिक ज्ञान का राज़
ईश्वरीय ज्ञान और धर्मपिताओं के ज्ञान का राज़ और अन्तर
आत्मा की कर्मातीत स्थिति का राज़
आत्मा के मोक्ष का राज़
आत्माओं का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब का राज़
आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों का राज़
आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों के हिसाब-किताब और कल्पान्त में पूरा करके वापस घर जाने का राज़
ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता का राज़
फरिश्ता आत्माओं और प्रेतात्माओं का राज़ तथा दोनों के गुण धर्मों में अन्तर का राज़

फरिश्ता और सूक्ष्म शरीरधारी प्रेत आत्माओं के अस्तित्व का राज़
देह में रहते फरिश्ता स्वरूप का राज़
ईविल सोल्स एवं उनके प्रभाव का राज़
आत्मा के परमधाम से आने और वापस जाने का राज़
आत्मा के सतयुग और कलियुग में देह त्याग का राज़
आत्मिक प्यार का राज़
आत्मा की चेतनता की परख का राज़
सृष्टि-चक्र का राज़
विश्व-नाटक और उसकी संरचना का राज़
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता और सतत परिवर्तन-शीलता का राज़
विश्व-नाटक और परमात्मा-आत्मा का राज़
विश्व-नाटक के गुण-धर्मों (Characterstics) का राज़
विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्तों का राज़
विश्व-नाटक के आध्यात्मिक नियम और सिद्धान्तों का राज़
विश्व-नाटक के सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारिता के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक में सतोप्रधानता और तमोप्रधानता के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक के सतत परिवर्तनशीलता और विविधता का राज़
विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता का राज़
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी शूटिंग के री-शूटिंग का राज़
विश्व-नाटक की परमानन्दमयता का राज़
विश्व-नाटक और सुख-दुख एवं आनन्द का राज़
विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का राज़
विश्व-नाटक और पुरुषोत्तम संगमयुग का राज़
विश्व-नाटक और सूर्य, चांद, तारों के सम्बन्ध का राज़
विश्व-नाटक और सुखधाम, दुखधाम, शान्तिधाम का राज़
विश्व-नाटक और साक्षी स्थिति का राज़
विश्व-नाटक और निर्दोष दृष्टि का राज़
विश्व-नाटक और शुभ-भावना शुभ-कामना का राज़
'जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है' का राज़
स्वदर्शन चक्र और स्वदर्शन चक्रधारी बनने का राज़
विश्व-नाटक और स्वर्ग-नर्क, जीत-हार, दिन-रात का राज़
स्वास्तिका का राज़ - चार युगों की आयु और उसकी दिशा और दशा का राज़
विश्व-नाटक और पुरुषार्थ का राज़
विश्व-नाटक और अहंकार-हीनता, ऊंच-नीच के भाव का राज़
विश्व-नाटक एवं योग का राज़
विश्व-नाटक, कर्म और कर्म-फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक और हमारे कर्तव्य का राज़
विश्व-नाटक और मान-अपमान,... जीत-हार में समान स्थिति का राज़
विश्व-नाटक और खेल-भावना का राज़
विश्व-नाटक और समय की विशेषता का राज़
विश्व-नाटक, आत्मा, साधन-सम्पत्ति और परमानन्द का राज़
विश्व-नाटक और कर्म के विधि-विधान का राज़
विश्व-नाटक और अधिकार एवं कर्तव्य का राज़
विश्व-नाटक और मोक्ष का राज़
विश्व-नाटक और हीरो पार्ट का राज़
विश्व-नाटक और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़
जो हुआ अच्छा हुआ... जो होगा अच्छा होगा का राज़
विश्व-नाटक और 'नथिंग न्यू' का राज़
विश्व-नाटक और व्यर्थ चिन्तन का राज़
विश्व-नाटक और अज्ञानता (Ignorance) का राज़
तीनों लोकों का राज़
ब्रह्म लोक (ब्रह्माण्ड) का राज़
सूक्ष्म वतन का राज़
सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा - विष्णु - शंकर का राज़
स्थूल वतन का राज़
त्रिलोकीनाथ का राज़
कल्प वृक्ष का राज़
कल्प-वृक्ष की कलम का राज़
आदि सनातन देवी-देवता धर्म और उसका विभिन्न धर्मों के साथ सम्बन्ध का राज़
संसार में विभिन्न धर्मों की स्थापना और सबके विलीन होकर एक सत धर्म की स्थापना का राज़
परमात्मा और विभिन्न धर्म स्थापकों के धर्म-स्थापनार्थ परकाया प्रवेश का राज़
एक धर्म की आत्माओं का दूसरे धर्मों में परिवर्तित होने और कल्पान्त में अपने मूल धर्म में वापस आने का राज़
आदि सनातन देवी-देवता धर्म और हिन्दू धर्म का राज़
सनातन शब्द का राज़ अर्थात् हिन्दू धर्म से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम लगने का राज़
सृष्टि में जनसंख्या वृद्धि और कम होने का राज़
कल्प-वृक्ष की आयु का राज़
कल्प-वृक्ष की आयु लाखों वर्ष नहीं, 5000 वर्ष है का राज़
कल्प-वृक्ष के अक्षयपन अर्थात् अनादि-अविनाश्यता का राज़
वृक्षपति, वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की दशा का राज़

योग अर्थात याद का राज़
योग के अर्थ और उसके महत्व का राज़
योग के विधि-विधान का राज़
योग में आंखें खोलकर अभ्यास करने का राज़
राजयोग और हठयोग के अन्तर का राज़
निर्संकल्प समाधि और निर्विकल्प समाधि का राज़
अन्तर्मुख अर्थात् निर्वान स्थिति का राज
बिन्दु अर्थात् बिन्दु रूप स्थिति का राज़
बिन्दु रूप स्थिति के अभ्यास का महत्व
बिन्दुरूप स्थिति और अव्यक्त स्थिति का राज़
विभिन्न प्रकार के योग और उनका राजयोग से सम्बन्ध का राज़
कर्मयोग, ज्ञान योग, भक्ति योग का राज़
ज्ञानयोग मार्ग
निष्काम कर्मयोग मार्ग
राजयोग मार्ग
राजयोग, हठयोग, राजऋषि, ब्रह्मऋषि, राजयोगी, हठयोगी का राज़
राजयोग-हठयोग की समानताओं और असमानताओं का राज़
रुहानी ड्रिल का राज़ और अभ्यास
योग की सफलता के लिए योगाभ्यास अर्थात् आध्यात्मिक ड्रिल का ज्ञान
एकान्त और एकाग्रता का राज़
स्मृति और विस्मृति का राज़
स्मृति से समर्थी का राज़
मौन का राज़ और योग की सफलता में उसके महत्व का राज़
माया, माया की प्रवेशता, माया से युद्ध और मायाजीत बनने का राज़
युद्ध और युद्ध के मैदान का राज़
रुस्तम से माया के भी रुस्तम होकर लड़ने का राज़
योगानन्द (परमानन्द) और विषयानन्द का राज़
कर्मों की गहन गति का राज़
कर्म के नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान का राज़
विकर्म और विकर्म विनाश की प्रक्रिया का राज़
सुकर्म-अकर्म-विकर्म का राज़
सुकर्म कर्म करने के विधि-विधान का राज़
कर्म और कर्म फल का राज़
निष्काम कर्म का राज़
विकर्माजीत सम्वत् और विकर्मी सम्वत् का राज़
कर्म और ड्रामा के विधि-विधान के सम्बन्ध का राज़
कर्मातीत अवस्था का राज़
कर्मातीत स्थिति और कर्म-बन्धन की स्थिति का राज़
कर्मभोग और कर्मयोग का राज़ और कर्मभोग से सहज मुक्त होने की विधि का राज़
कर्मभोग के सूली से कांटा बनने का राज़
दैहिक और मानसिक व्याधियों के कारण और निदान का राज़
कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध का राज़
साक्षी - कर्मातीत - मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का राज़
कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति का राज़
कर्मातीत स्थिति और विनाश के सम्बन्ध का राज़
धर्म और कर्म का राज़
पतित और पावन का राज़
आत्मा के पावन से पतित और फिर पतित से पावन बनने का राज़
आत्मा के पुण्यात्मा और पापात्मा बनने का राज़
पाप-पुण्य का राज़
आत्मा के पुण्यात्मा और पापात्मा बनने का राज़
पुण्यात्मा, पवित्रात्मा और पापात्मा का राज़
आत्मा का खाता जमा और ना (-) होने का राज़
पापों का बोझ चढ़ने और पाप भस्म कर पावन बनने का राज़
धर्मराज और धर्मराजपुरी का राज़
धर्मराजपुरी के विधि-विधान का राज़
धर्मराज की सजायें और सजाओं से बचने का राज़
धर्मराज की ट्रिबुनल का राज़
कब्रदाखिल और कब्र से जगाने का राज़
क्यामत अर्थात् विनाश का राज़
पवित्रता का राज़
सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता का राज़
सच्ची पवित्रता अर्थात् आत्मिक पवित्रता का राज़
ब्रह्मचर्य व्रत और ब्रह्मचारी जीवन का राज़
ब्रह्मचर्य व्रत तथा पवित्रता में अन्तर का राज़
संगमयुग की पवित्रता और उसका भक्ति मार्ग के पूज्य स्वरूप से सम्बन्ध का राज़
स्वर्ग की स्थापना और स्वर्ग की राजधानी की स्थापना का राज़
स्वर्ग में ऊंच पद पाने का राज़
पुरुषार्थ का राज़
यम अर्थात् संयम और नियम का राज़
पुरुषार्थ और प्रालब्ध का राज़
पुरुषार्थ और भाग्य का राज़
पुरुषार्थ, प्राप्ति (सुख-दुख) और ड्रामा का राज़
ज्ञानी तू आत्मा और योगी तू आत्मा का राज़
मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् गति-सद्गति का राज़
ब्रह्मा का राज़

ब्रह्मा के अस्तित्व का राज़ अर्थात् कैसे शिव बाबा की ब्रह्मा तन में प्रवेशता और ब्रह्मा नामकरण का राज

ब्रह्मा के 84 जन्मों और परमात्मा के ब्रह्मा तन में प्रवेश होने का राज़

आत्मायें अविनाशी हैं और परमात्मा भी अविनाशी है तो परमात्मा पिता कैसे है, उसका राज़

परमात्म के मात-पिता बनने का राज़

जगतपिता और परमपिता का राज़

जगदम्बा और जगतपिता का राज़

ब्रह्मा और ब्रह्मा-सरस्वती का राज़

बेहद के दिन और रात अर्थात् ब्रह्मा के दिन और ब्रह्मा की रात का राज़

ब्रह्मा सो विष्णु और विष्णु सो ब्रह्मा अर्थात् ब्रह्मा और कृष्ण का राज़

श्याम-सुन्दर का राज़

ब्रह्मा की अनेक भुजाओं और चतुर्मुख का राज़

साकार ब्रह्मा बाप के साकार साथ का राज़

ब्रह्मा बाबा की सम्पूर्णता और समर्पणता का राज़

ब्रह्मा बाबा की महानता का राज़

फॉलो फादर का राज़

सन शोज फादर, फादर शोज सन का राज़

ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के गुण-कर्तव्यों का राज़

ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्यों की विशेषताओं का राज़ अर्थात् ज्ञान

कमलासन और कमलासनधारी का राज़

न्यारे और प्यारे बनने का राज़

ब्रह्मा बाबा - सतयुग के प्रथम नारायण और राजा विक्रमादित्य का राज़

आदि देव, आदम, एडम का राज़

ब्राह्मण और ब्राह्मणों के द्विज जन्म का राज़

ब्रह्मा कुमार-कुमारियों का राज़

योगबल - भोगबल का राज़

योगबल और भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति का राज

श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर पंख का राज़

योगबल से देह धारण करने और देह त्याग का राज़

योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति और उसके विश्व पर प्रभाव का राज़

भारत का राज़

भारत और भगवान का राज़,

भारत और स्वर्ग-नर्क का राज़

भारत की सम्पन्नता और महानता का राज़

भारत खण्ड की अविनाश्यता का राज़

भारत के उत्थान-पतन और उसके विश्व के उत्थान-पतन से सम्बन्ध का राज़

भारत की सीमाओं और भारत की सीमाओं के विस्तार और संकुचन का राज़

आर्य और अनार्य का राज़

भारत और भगवान के सम्बन्ध का राज़

भारत और भारत से विभिन्न धर्म और सभ्यताओं के सम्बन्ध का राज़

भारत भूमि पर विभिन्न धर्मों और सभ्यताओं के शासन का राज़

भारत और विश्व-परिवर्तन का राज़

'आबू तीर्थ महान' का राज़

मधुबन (पाण्डव भवन) का राज़

मधुबन निवासियों के भाग्य का राज़

देलवाला, अचलगढ़ मन्दिर और तीर्थराज आबू का राज़

दिल्ली दरबार - इन्द्रप्रस्थ का राज़

भारत और भारत के प्राचीन राजयोग का राज़

भारत की राजनैतिक एवं आध्यात्मिक स्वतन्त्रता-परतन्त्रता का राज़

भारत और स्थापना-विनाश के सम्बन्ध का राज़

भारत और विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया का राज़

भारत और खूने नाहेक खेल का राज़

सोमनाथ मन्दिर, राजा विक्रमादित्य और भक्ति मार्ग के प्रारम्भ होने का राज़

कृष्ण और क्रिश्चियन्स के सम्बन्ध का राज़

पुरुषोत्तम संगमयुग का राज़

पुरुषोत्तम संगमयुग और उसकी यादगार पुरुषोत्तम मास का राज़

पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन के महत्व का राज़

ब्राह्मण जीवन की महानता का राज़

सिद्धि-स्वरूप स्थिति का राज़

ब्राह्मण जीवन की सिद्धियों का राज़

व्यक्त में अव्यक्त मिलन का राज़

अव्यक्त होकर अव्यक्त मिलन के सुख का राज़

मुक्ति - जीवनमुक्ति और संगमयुगी मुक्ति - जीवनमुक्ति के अनुभव का राज़

परमात्मा और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़

आत्मा और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़

संगमयुग और अमृत-वेला का राज़

सायंकाल के सन्धिकाल का राज़

भूतकाल और भविष्य काल का वर्तमान से सम्बन्ध का राज़

भूत, वर्तमान और भविष्य स्थिति के दर्पण का राज़

वर्तमान प्राप्तियों का भविष्य प्राप्तियों से सम्बन्ध का राज़

जीवन में सच्ची खुशी का राज़ अर्थात् सच्ची सुख-शान्ति का राज़
सुख-दुख का राज़
दुख-अशान्ति की पहेली के हल का राज़
परम सुख और परम दुख का राज़
जीवन में परम प्राप्ति का राज़
सुख, परम सुख और पुरुषोत्तम संगमयुग के सुख का राज़
भौतिक सुख, इन्द्रिय सुख और अतीन्द्रिय सुख, ज्ञान का सुख, परमात्म मिलन के सुख का राज़
परमात्मा के दिलतख्त और दिल तख्तनशीन होने का राज़
अकाल तख्त का राज़
पाण्डव-कौरव और यादव सेना का राज़
गीता, गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता का राज़
यदा यदाहि ... सृजाम्यहं का राज़
जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है का राज़
मन्मनाभव-मध्याजी भव, नष्टोमोहा - स्मृतिलब्धा का राज़
श्रीमत अर्थात् ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत का राज़
विनाशकाले परमात्मा से प्रीतबुद्धि विजयन्ति और विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति का राज़
परमात्मा और सत्य ज्ञान की प्रत्यक्षता का राज़
प्रत्यक्षता और प्रत्यक्ष प्रमाण का राज
आस्तिक और नास्तिक का राज़
निश्चय, नशे और सिद्धि-स्वरूप का राज़
विनाश और विनाश की प्रक्रिया का राज़
स्थापना और स्थापना की प्रक्रिया का राज़
एडवान्स पार्टी, उनके कर्तव्यों का राज़
एडवान्स पार्टी और योगबल से जन्म का राज़
स्थापना-विनाश और सिविल वार, एटॉमिक वार, नेचुरल केलेमिटीज का राज़
स्थापना, विनाश और पालना के सम्बन्ध का राज़
स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का राज
स्व-कल्याण से विश्व-कल्याण का राज़
दृष्टि-वृत्ति और सृष्टि परिवर्तन का राज़
राम और रावण का राज़
रावण के दस शीश का राज़
कुम्भकरण का राज़
भस्मासुर का राज़
विष्णु और महालक्ष्मी की चार भुजाओं का राज़
रामायण और महाभारत का राज़
महाभारत युद्ध का राज़
वेद-पुराणों का राज़
जड़-जंगम और चेतन प्रकृति का राज़
जड़ तत्वों के पावन होने का राज़
मेहमान और महानता का राज़
देह में रहते, देह से न्यारे अर्थात् अशरीरी होने का राज़
जन्म-मृत्यु और पुनर्जन्म का राज़
मृत्यु और अमरत्व का राज़
शिवालय-वेश्यालय का राज़
क्षीर सागर और विषय-सागर का राज़
जीते जी मरने का राज़
अमृत और विष का राज़
अमरलोक और मृत्युलोक का राज़
मृत्यु और मृत्यु-विजय का राज़
मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय और उनसे मुक्त होने का राज़
अकाले मृत्यु का राज़
सुखद जन्म, सुखद जीवन और सुखद मृत्यु का राज़
अन्त मति सो गति का राज़
गर्भ-जेल और गर्भ-महल का राज़
शिव और शंकर का राज़
देवियों और उनकी अनेक भुजाओं का राज़
विष्णु और विष्णु के अलंकारों का राज़
शिव-जयन्ति, गीता-जयन्ति, रक्षा-बन्धन, दीपावली तथा अन्य त्योहारों का राज़
विभिन्न पर्वों और उत्सवों का राज़
श्रीकृष्ण और श्रीनारायण का राज़
राधे-कृष्ण और लक्ष्मी-नारायण का राज
श्रीकृष्ण के जन्म का राज़
मुरलीधर की मुरली का राज़
गोपी-वल्लभ और गोप-गोपियों का राज़
गोप-गोपियों और मुरली का राज़
लक्ष्मी-नारायण और सीता-राम का राज़
रुद्र माला और वैजन्ती माला का राज़
9 रत्न का राज़
वैजयन्ती माला का दाना बनने का राज़
रुद्र ज्ञान-यज्ञ और अश्वमेध यज्ञ का राज़
रुद्र ज्ञान-यज्ञ और विनाश के सम्बन्ध का राज़
शिव की बारात का राज़
अशोक वाटिका और शोक वाटिका का राज़
शिव-शक्ति सेना और उसके युद्ध का राज़
भक्ति मार्ग के विभिन्न संगमों का राज़
होलिका दहन का राज़ - विनाश और कल्प परिवर्तन का राज़
परमात्मा और देवताओं को भोग अर्पण का राज़
अन्न और संग तथा उनके प्रभाव का राज़

खान-पान का जीवन पर प्रभाव का राज़
खान-पान के विधि-विधान का राज़
परमात्म प्यार का राज़
परमात्म-प्यार के विधि-विधान का राज़
परमात्म प्यार और पालना का राज़
आशिक-माशूक का राज़
शमा और परवाने का राज़
लव एण्ड लॉ का राज़
लव एण्ड लॉ के बैलेल का राज़
दधीचि ऋषि के समान स्थिति का राज़
राजा जनक के समान विदेही स्थिति का राज़
राजा जनक के समान ट्रस्टी स्थिति का राज़
भागीरथ का राज़
ईश्वरीय परिवार और विश्व-बन्धुत्व की भावना का राज़
ईश्वरीय परिवार, दैवी परिवार और आसुरी परिवार का राज़
आसुरी परिवार से ईश्वरीय परिवार में आने का राज़
ईश्वरीय परिवार और दैवी परिवार के परस्पर सम्बन्धों का राज़
शिवबाबा के भण्डारे का राज़
ब्रह्मा भोजन का राज़
इन्द्र, इन्द्र-सभा और उसके विधि-विधान का राज़
ज्ञान वर्षा और इन्द्र का राज़
ज्ञान के तीसरे नेत्र और कुण्डलिनी जागरण का राज़
देवताओं के तीसरे नेत्र का राज़
त्रिनेत्री और त्रिकालदर्शी पन का राज़
सत्य नारायण की सच्ची कथा, अमर कथा, तीजरी की कथा का राज़
हिम्मते बच्चे मददे बाप का गुह्य राज़
सर्वशक्तिवान बाप की मदद का राज़
परमात्मा की मदद लेने और देने का राज़
बाप के साथ सर्व सम्बन्ध, सम्बन्ध निभाने और सर्व सम्बन्धों से सर्व प्राप्तियों का राज़
परमात्मा के साथ बाप, टीचर, सतगुरु, सजनी-साजन, सखा आदि सर्व सम्बन्धों का राज़
आत्मा का आत्मा को शक्ति देने और लेने का राज़
गोबर्धन पर्वत को उठाने में अंगुली के सहयोग का राज़
''एक बल, एक भरोसा'' और एकरस स्थिति का राज़
हिंसा और अहिंसा का राज़
काम महाशत्रु है और उसके दुष्परिणाम का राज़
समर्पणता का राज़
सम्पूर्णता का राज़
सम्पूर्णता और समर्पणता के सम्बन्ध का राज़
सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता और उनके सम्बन्ध का राज़
सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता और बाप समान बनने का राज़
सर्व प्राप्ति सम्पन्न बनने का राज़
ईश्वरीय प्राप्तियों का राज़
मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति का राज़
साक्षी स्थिति का राज़
साक्षात्कारमूर्त स्थिति का राज़
सच्चे सत्संग और सत्संग का जीवन में महत्व का राज़
निद्राजीत का राज़
योग-निद्रा का राज़
साक्षात्कार, दिव्य-दृष्टि एवं दिव्य-बुद्धि का राज़
ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग के साक्षात्कार के अन्तर का राज़
देवता और असुरों का राज़
दैवी चलन और आसुरी चलन का राज़
दैवी गुणों और आसुरी गुणों का राज़
ईश्वरीय गुण, दैवी गुण और आसुरी गुणों के अन्तर का राज़
असुर से ब्राह्मण, ब्राह्मण से फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता बनने का राज़
देवताओं की महानता का राज़
जीवन की पहेली का राज़
यथार्थ जीवन जीने का राज़
सफल जीवन-व्यवहार का राज़
कर्मेन्द्रियजीत और इन्द्रियों के वशीभूत का राज़
स्वराज्य अधिकारी का राज़
स्वमान और सम्मान का राज़
अहंकार-हीनता और उससे मुक्त होने का राज़
अधिकार और कर्तव्य का राज़
रुहानी रॉयल्टी और पर्सनॉलिटी का राज़
स्नेह और शक्ति के सन्तुलन (Balence) का राज़
साधन और साधना के सन्तुलन का राज़
बैलेन्स से ब्लेसिंग्स का राज़
जियो और जीने दो अर्थात् अधिकार और कर्तव्य के सन्तुलन का राज़
सच्ची स्वतन्त्रता का राज़
देह और देह की दुनिया से न्यारे अर्थात् 5 तत्वों से पार स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखने का राज़
उत्थान और पतन, सतोप्रधानता और तमोप्रधानता का राज़
चढ़ती कला, उतरती कला अर्थात् सीढ़ी चढ़ने और उतरने का राज़
आत्मा की उतरती कला और चढ़ती कला का राज़

साइलेन्स और साइन्स का राज़ तथा उनके परस्पर सम्बन्ध का राज़
वायसलेस (Voiceless) और वाइसलेस (Viceless) स्थिति का राज़
प्रकृतिजीत बनने का राज़
प्रकृति का सहयोग और प्राकृतिक आपदाओं का राज़
पुरुष और प्रकृति के परस्पर सम्बन्ध का राज़
सत्य ज्ञान, उसकी कसौटी और उसके अनुभव का राज़
परमात्मा को पहचानने और उनका बनने का राज़
परमात्मा के गोद लेने और प्रवेश होने (Adoptation and Re-incarnation) का राज़
परमात्मा की गोद और गोद का बच्चा बनने का राज़
भगवान, भाग्य और भाग्य-विधाता का राज
त्याग और भाग्य का राज़
भगवान बाप और भगवान को बच्चा बनाने का राज़
बाप और वर्से अर्थात् बाप का वारिस बनने और बनाने का राज़
परमात्मा की छत्रछाया का राज़
आत्मा का परमात्मा के साथ हिसाब-किताब का राज़
एक का हजारगुणा प्राप्ति के विधि-विधान का राज़
विश्व के इतिहास और भूगोल (H. & G. of the World) का राज़
धर्म और राज की स्थापना का राज
ज्ञान की धार्मिकता और राजनैतिकता का राज़
पवित्रता और प्रकृति के सम्बन्ध का राज़
यात्रा और मुसाफिर का राज़
तीर्थ, तीर्थ यात्रा और याद की यात्रा का राज़
भक्ति और ज्ञान के सम्बन्ध का राज़
नवधा भक्ति और उनके इष्ट के साक्षात्कार के सम्बन्ध का राज़
अव्यभिचारी भक्ति और व्यभिचारी भक्ति का राज़
ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का राज़
ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग के रीति-रिवाजों का राज़
संगमयुग की रीति-रिवाज़, सतयुग की रीति-रिवाज़ और कलियुग की रीति-रिवाज़ों का राज
भक्ति मार्ग में देवताओं को पीठ न दिखाने का राज़
भक्ति के विभिन्न कर्म-काण्डों का राज़
भक्ति में बलि की प्रथा और ज्ञान मार्ग में बलि का राज़
काशी कलवट का राज़
ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा और लकी ज्ञान सितारों का राज़
'घट में ही सूरज ... 9 लाख तारे' का राज़
ग्रहण का राज़
आत्मा के घर से आने और घर वापस जाने का राज़
सतयुग-त्रेता की राजाई स्थापन होने और परिवर्तन होने का राज़
सतयुग-त्रेता की राज़ाई का राज़
सतयुग-त्रेता की राजाई के विधि-विधान का राज़
सतयुग के 8 जन्म और 8 गद्दियों का राज
8 गद्दियों और अष्ट रत्नों का राज़
राजा-रानी, दास-दासी और साहूकार प्रजा बनने का राज़
विश्व महाराजा-महारानी बनने का राज़
बाहुबल, योगबल और विश्व की एकछत्र राजाई का राज़
दान-पुण्य का राज़
दान-पुण्य के विधि-विधान का राज़
दान और अविनाशी ज्ञान रतनों के दान का राज़
दान और गुप्त-दान का राज़
दानी, महादानी और वरदानी का राज़
नर्क की धन-सम्पत्ति स्वर्ग में ट्रान्सफर करने का राज़
सफल कर सफलता मूर्त बनने का राज़
सफलता के सितारों का राज़
यज्ञ में बीज बोने का राज़
ईश्वरीय सेवा, उसके महत्व और उसमें सफलता का राज़
यज्ञ सेवा का राज़
आलराण्डर सेवाधारी का राज़
मन्सा सेवा का राज़
मन्सा सेवा के विधि-विधान और उसके महत्व का राज़
यथार्थ सोशल सर्विस का राज़
खुदाई खिज़मतगार का राज़
निर्विकारी और विकारी जीवन का राज़
वसुधैव कुटुम्बकम् का राज़
शिव और सालिग्राम का राज़
परमात्मा के साथ पार्ट बजाने का राज़
दोस्त और दुश्मन का राज़
खुदा दोस्त का राज़
दुश्मन को भी दोस्त बनाने का राज़
अपकारी पर भी उपकार करने का राज़
सप्ताह का राज़
वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति और राहू की दशा का राज़
वर्णों का राज़
बाजोली का राज़
आत्मा-परमात्मा के मंगल मिलन मेले का राज़
विराट स्वरूप का राज़
सच्ची तपस्या का राज़
चार सब्जेक्ट ज्ञान-योग-धारणा-सेवा के Aim Object और फल का राज़

दैवी, आसुरी और ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों का ज्ञान और उनके आत्मा पर प्रभाव का राज़
ब्राह्मण और देवताओं का राज़ और उनके परस्पर सम्बन्धों का राज़
शुभ भावना, शुभ कामना का राज़
लगन में मगन स्थिति का राज़
सागर मंथन का राज़
स्वाध्याय, पठन-पाठन का राज़
चिन्तन का राज़
मनन-चिन्तन का राज
स्व-चिन्तन और पर-चिन्तन का राज़
शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक का राज़
चिन्तन और चिन्ता का राज़ तथा चिन्तन और चिन्ता से परे निर्संकल्प स्थिति का राज़
निर्भय और निश्चिन्त जीवन का राज़
भय और चिन्ता का राज़
बेफिकर बादशाह बनने का राज़
बेग़मपुर के बादशाह का राज
विघ्न और विघ्न-विनाशक स्थिति का राज़
निर्विघ्न जीवन बनाने का राज़
लाइट-हाउस, माइट-हाउस और सर्च-लाइट स्थिति का राज़
लाइट, माइट और डिवाइन इन्साइट का राज़
गंगा, जमुना आदि नदियों की महिमा का राज़
बाप के हाथ और साथ का राज़
ईश्वरीय इज्जत, दैवी इज्जत और आसुरी इज्जत का राज़
नॉलेज इज सोर्स ऑफ इन्कम का राज़
गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ इज दि बेस्ट का राज़
पढ़ाई और परीक्षा का राज़
फाइनल पेपर में पास होने का राज़
परीक्षा और पश्चाताप का राज़
देह से न्यारा होकर परमानन्द को अनुभव करने का राज़
न्यारा और प्यारा बनने का राज़
विश्व-शान्ति का राज़
सालवेन्ट - इन्सालवेन्ट स्थिति का राज़
तीन बाप का राज़
निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति का राज़
वर्तमान और भविष्य जीवन के सम्बन्ध का राज़
रुहानियत और रुहानी स्नेह का राज़
रुहानी सेना का राज़
हम सो, सो अहम् का राज़
सच्ची कमाई और झूठी कमाई का राज़
सच्चे त्याग का राज़
त्याग और भाग्य का राज़
त्याग-तपस्या और सेवा का राज
हद और बेहद का राज़
हद-बेहद के वैराग्य वृत्ति का राज़
वैराग्य और सन्यास का राज़
हद और बेहद के सन्यास का राज़
वानप्रस्थ का राज़
निवृत्ति मार्ग और प्रवृत्ति मार्ग का राज़
पवित्र प्रवृत्ति मार्ग और पतित प्रवृत्ति मार्ग का राज़
सर्व के माननीय बनने का राज़
क्रिमिनल आई और सिविल आई का राज़
आत्मा और परमात्मा की रूह-रुहान का राज़
बाप और दादा की रूह-रुहान का राज़
ब्रह्मचर्य जीवन और दैवी-जीवन का राज़
आध्यात्मिक जीवन की सफलता का राज़
परमात्मा, ड्रामा और प्राकृतिक आपदाओं का राज़
ओम् और ओम् शान्ति का राज़
ईश्वरीय गवर्मेन्ट का राज़
अचानक के पेपर का राज़
एवर रेडी स्थिति का राज़
बालकपन और मालिकपन का राज़
परमार्थ और व्यवहार की सिद्धि का राज़
मास्टर सर्वशक्तिवान का राज़
मास्टर ऑलमाइटी अथॉर्टी का राज़
निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति का राज़
निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति को प्रखर करने का राज़
मास्टर नॉलेजफुल और पॉवरफुल का राज़
बाप समान बनने और बनाने का राज़
बापदादा की बच्चों से आशायें और उन आशाओं को पूरा करने का राज़
दाता-विधाता-वरदाता का राज़
परमात्मा और उनके द्वारा आत्म-कल्याण का राज़
साधारणता में महानता का राज़
कम खर्च बालानशीन का राज़
एकनाम-एकॉनामी का राज़
सच्ची दिल और कुशल दिमाग का राज़
सच्ची दिल पर साहेब राज़ी का राज़
परमपिता परमात्मा के साथ फरमान-बरदार, वफादार, ईमानदार का राज़
दुआयें लेने और दुआयें देने का राज़
परमात्मा की दुआयें लेने का राज़
अविनाशी ज्ञान रत्नों के महत्व का राज़

अन्नोन बट वेरीवेल नोन वारियर्स का राज़
सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म का राज़
मर्यादा पुरुषोत्तम का राज़
ईश्वरीय मर्यादायें, ब्राह्मण कुल की मर्यादायें और आसुरी कुल की मर्यादाओं का राज़
इच्छा-शक्ति और दृढ़ इच्छा-शक्ति का राज़
विल पॉवर और विल पॉवर को प्राप्त करने का राज़
संकल्प और दृढ़-संकल्प का राज़
समय का ज्ञान और उसके महत्व का राज़
ब्राह्मण और शूद्रों का राज़
इच्छा मात्रम् अविद्या का राज़
समस्याओं और उनके समाधान का राज़
सर्वशक्तियां और उनकी धारणा का राज़
पैगम्बर-मैसेन्जर का राज़
आत्मा, परमात्मा और वातावरण का राज़
नारद का राज़
सुदामा का राज़
और संग तोड़, एक संग जोड़ का राज़
द्रोपदी, द्रोपदी के चीर हरण का राज़
सीता, सीता हरण का राज़
गार्डन आफ अल्लाह, खुदा के बगीचे का राज़
ज्ञान की सम्पूर्णता का राज़
समर्थ और असमर्थ स्थिति का राज
व्यर्थ और समर्थ का राज़
अव्यक्त बापदादा के सूक्ष्म वतन की दिनचर्या का राज़
कमल पुष्प सम जीवन का राज़
वरदानों का राज़
ईश्वरीय वरदानों का राज़
मोहजीत राजा का राज़
स्थूल और सूक्ष्म भोजन का राज़
जीवन में घाटे-फायदे का राज़
आत्म-विश्वास का राज़
विवाह और गन्धर्वी विवाह का राज़
आत्मानुभूति और परमात्मानुभूति का राज़
सृष्टि-रचनात्मक शक्ति (Cosmic Energy) का राज़
सुखी जीवन जीने की कला का राज़
कछुआ, सर्प, भ्रमरी आदि के कर्मों और गुणों का राज़
डबल ताज और सिंगल ताज का राज़
आपघात - महापाप का राज़
आपघात और जीवघात के भेद का राज़
विश्व-नाटक के हीरो पार्टधारी का राज़
धर्म-सत्ता और राज-सत्ता का राज़
धर्म और कर्म का राज़
अन्त:वाहक देह का राज़
देह में रहते देह से न्यारी स्थिति का राज़
करन-करावनहार का राज़
जो है, जैसा है का राज़
सूर्य-चांद के ग्रहण का राज़
व्यभिचारी और अव्यभिचारी याद का राज़

ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा उद्‌घाटित विश्व-नाटक के गुह्य राज

''ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर यह रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।'' सा.बाबा 10.01.69

''तुम जानते हो इस रथ द्वारा बाप हमको सब राज़ समझाते हैं। रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाया है... नई दुनिया स्थापन करना उनका ही काम है। ऐसे नहीं कि वहाँ बैठे स्थापना करते हैं।'' सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

सत्य ज्ञान जीवन की परम प्राप्ति है क्योंकि सत्य ज्ञान निर्भय, निचिन्त बनाकर परम सुख को देने वाला है। सत्य ज्ञान का दाता ज्ञान सागर परमात्मा है, वह अभी सत्य ज्ञान दे रहा है। ज्ञान की इस सत्यता को समझकर और धारण कर परम सुख को अनुभव करना और कराना हम आत्माओं का परम कर्तव्य है।

''यह बना-बनाया खेल है ना। यह बेहद का बाप समझाते हैं, उनको ही सत्य कहा जाता है। सत्य बातें तुम संगम पर ही सुनते हो, फिर तुम सतयुग में जाते हो... तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में उतना ही टाइम लगता है, जितना टाइम बाप यहाँ रहते हैं।''

सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

गौ-धन, गज-धन, बाजि-धन और रत्न-धन खान,
जब आवे सन्तोष-धन सब धन धूरि समान।
सम्पन्नता सन्तुष्टता का आधार है, सम्पूर्णता सम्पन्नता का आधार है,
ज्ञान धन सम्पूर्णता का आधार है परमात्मा ज्ञान का सागर है।

बाबा की मुरली है विश्व-नाटक के सर्व राज़ों की खान। इस ज्ञान मुरली में ज्ञान सागर बाप ने इस विश्व-नाटक के सर्व राज़ों का रहस्योद्‌घाटन किया है, जिन राज़ों को जानने वाला इस विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव कर सकता है।

ज्ञान चिन्तन ही सत्य को अनुभव करने और धारण करने का एकमात्र आधार है, साधन है। ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसका चिन्तन कर उसके गुण-धर्मों, प्रभाव (Fact figures, Cause effects) को जानने और अनुभव कर धारण करने से ही आत्मा सम्पन्न बनती है, उसका सुख अनुभव करती है। ईश्वरीय ज्ञान परम सुख को देने वाला है। आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है, परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है, ये विश्व-नाटक परम सुखमय है। जो आत्मा इनके रहस्यों को जानकर अनुभव कर सम्पन्न बनती है, वही इनके सुर-दुर्लभ परमानन्द को अनुभव करती है। ये संगमयुगी ब्राह्मण जीवन कल्प का फूल है और परमानन्दमय है। चिन्तन ही इस सबको अनुभव करने और धारण करने और उसका सुख अनुभव का एकमात्र आधार है।

परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसने हमको ज्ञान के अनेक राज़ बताये हैं, जो सदा हमारी बुद्धि में जाग्रत रहेंगे तो बुद्धि सदा भरपूर रहेगी, आत्मा सदा सम्पन्नता का अनुभव करेगी, आत्मा सदा साक्षी स्थिति में रहेगी और सदा सुख-शान्ति-आनन्द का अनुभव करेगी, खुशी का पारा सदा चढ़ा रहेगा क्योंकि ज्ञान धन सर्वश्रेष्ठ धन है और ज्ञान धन से सम्पन्न आत्मा ही सम्पूर्णता का अनुभव कर सकती है। सम्पूर्णता से ही सम्पन्नता का अनुभव होता है। सन्तुष्टता, सम्पन्नता का दर्पण है। सन्तुष्टता जीवन की सर्वोत्तम प्राप्ति है।

''यह वण्डरफुल दुनिया है। कैसे स्वर्ग बनता है और फिर कैसे नर्क बन जाता है। यह सब राज़ बाप ही बच्चों को समझाते हैं। यह स्प्रीचुअल नॉलेज जो स्प्रीचुअल फादर वा तुम ब्राह्मणों के सिवाए कोई दे न सके। तुम ब्राह्मणों के सिवाए और किसको यह रुहानी नॉलेज मिल न सके। जब तक ब्राह्मण न बने, तब तक देवता बन न सके।'' सा.बाबा 8.01.2005 रिवा.

इन सब राज़ों को जानने और अनुभव करने के लिए ज्ञान-सागर परमात्मा के साथ बुद्धियोग स्थिर करके उन राज़ों का मनन-चिन्तन करेंगें, विचार-सागर मंथन करेंगें तब ही उनका गुह्य रहस्य अनुभव होगा और आत्मा उनका सुख अनुभव करेगी। ये ज्ञान के गुह्य रहस्य परम धन है, जिसको धारण करना और कराना ही ब्राह्मण जीवन का परम कर्तव्य है। इसीलिए बाबा ने कहा - अनुभव सबसे बड़ी अथॉर्टी है, अनुभवी कब धोखा नहीं खा सकते।

Q. ज्ञान सागर बाबा ने हमको क्या-क्या राज़ समझाये हैं और वे राज़ हमारी खुशी में कैसे वृद्धि कर सकते हैं तथा कैसे वह खुशी स्थाई रह सकती है?

Q. ज्ञान सागर बाप आकर हमको कौन-कौन से राज़ समझाते हैं, जिसके कारण हमारी चढ़ती कला होती है और जिसके लिए ही आधा कल्प हम बाप को याद करते हैं?

ज्ञान सागर बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक के सभी राज़ों का ज्ञान दिया है और उनमें स्थित होने की प्रक्रिया बताई है। जब तक वे राज़ हमारी बुद्धि में स्पष्ट नहीं होंगे और उनका रहस्य बुद्धि में स्पष्ट नहीं होगा तथा उनमें स्थित होने की प्रक्रिया का सफल अभ्यास नहीं होगा और तब तक इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा अविनाशी सुख अनुभव नहीं कर सकेंगे। साथ ही बाबा ने इस सत्य का भी ज्ञान दिया है कि ये ज्ञान एक सेकेण्ड का भी है अर्थात् 'अपने को आत्मा समझ एक बाप दूसरा न कोई' की स्थिति में स्थित आत्मा के सारे कार्य परमात्मा सिद्ध करता है परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि हमारी इस स्थिति की परीक्षा भी होगी अर्थात् माया हमारी बुद्धि को परमात्मा से हटाने का पूरा प्रयत्न करेगी। बाबा भी कहते हैं - रुस्तम से माया भी रुस्तम होकर लड़ती है।

''भक्ति और ज्ञान का राज़ अभी तुम बच्चों ने समझा है। सीढ़ी और झाड़ में यह सब समझानी है।... फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी। गति कहा जाता है शान्तिधाम को और सद्गति होती है यहाँ। सद्गति के अगेन्स्ट होती है दुर्गति।... अभी तुम बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो।'' सा.बाबा 27.7.04 रिवा.

''मुरली मिस कर देते हैं। बाप कहते हैं - कितनी गुह्य-गुह्य बातें तुमको सुनाता हूँ, जो सुनकर धारण करना है। धारणा नहीं होगी तो कच्चे रह जायेंगे। बहुत बच्चे भी विचार सागर मंथन कर अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुनाते हैं।... तुमको तो अथाह खुशी होनी चाहिए।'' सा.बाबा 29.7.04 रिवा.

''दिखाते हैं सागर से देवतायें रत्नों की थालियां भर-भरकर देते थे। वास्तव में ज्ञान सागर बाप है, जो तुम बच्चों को ज्ञान रत्नों की थालियाँ भरकर दे रहे हैं।'' सा.बाबा 14.5.05 रिवा.

भक्ति मार्ग में भी किसी भक्त आत्मा ने गाया हुआ है -

जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूढ़न डरा, रहा किनारे बैठ।

परमात्मा ज्ञान का सागर है, उनके हर महावाक्य में, मुरली की प्रत्येक लाइन में एक नया राज़ है क्योंकि जैसे ये विश्व नाटक नित्य नया है ऐसे परमात्मा का हर महावाक्य एक नये राज से भरा हुआ है। उन सब राज़ो का यहाँ वर्णन करना तो 'गागर में सागर भरने' के समान है। परमात्मा के दिये ज्ञान के सब राज़ों को समझना तो साधारण मनुष्य की बुद्धि से परे की ही बात है। इसलिए ज्ञान सागर बाबा ने ज्ञान के जो अनन्त राज़ों का ज्ञान दिया है, उनमें से हमने यहाँ कुछ राज़ों का वर्णन करने का पुरुषार्थ किया है, जो सागर में एक बूँद के समान ही है। ज्ञान सागर बाप ने हमको विश्व-नाटक के जिन राज़ों को बताया है अर्थात् गुह्य रहस्यों का जो ज्ञान दिया है, उनमें मुख्य-मुख्य की लिस्ट विषय-सूची में दिखाई गई है।

विवेचना - विचार - भाव-अर्थ और ईश्वरीय महावाक्य

हर राज़ का केन्द्र बिन्दु क्या है, वह सदा बुद्धि में रहे तब ही समय पर उसका लाभ उठा सकते हैं, उसका सुख ले सकते हैं। इसलिए परमात्मा ने जो राज़ बताये हैं, जिनका ज्ञान हमारी बुद्धि में होना परमावश्यक है, जिनको हम मुरली से तो सुनते ही हैं

और उसकी सत्यता, उसके महत्व पर विचार भी करते हैं और उसको जीवन में धारण करने का प्रयत्न भी करते हैं परन्तु उस राज़ का केन्द्र बिन्दु क्या है, जो हमको अपनी बुद्धि में सदा रखना है, जिससे वह हमारे जीवन को सुखमय बनाने और किसी परिस्थिति को पार करने में सहायक हो, उससे हमारे जीवन में खुशी की लहर का संचार होता रहे, उसके लिए संक्षेप में यहाँ कुछ विचारों को लिखा गया है और साथ में उससे सम्बन्धित बाबा के महावाक्यों को उद्धृत किया गया है।

''अभी तुम बच्चों को मूलवतन से लेकर स्थूलवतन तक के सब राज़ समझाये हैं। मूलवतन का राज़ बाप के बिगर और कौन समझायेंगे।... तुम औरों को भी आप समान बनायेंगे तो बहुत ऊंच पद पा सकते हो।... अब बाप ने आर्डिनेन्स निकाला है - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पाने से तुम जगतजीत बन जायेंगे।'' सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

ज्ञान की सत्यता का राज़

सत्य ज्ञान क्या है, कौन सत्य ज्ञान का दाता है और सत्य ज्ञान का फल क्या होता है, सत्य ज्ञान की धारणा वाले व्यक्ति की स्थिति क्या होती है, ये सब राज़ अभी परमात्मा ने बताये हैं।

''सबसे बड़े से बड़ी शक्ति वा अथॉर्टी सत्यता की ही है।... सत् अर्थात् सत्य और सत् अर्थात् अविनाशी।... दुनिया में भी कहते हैं - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। साथ-साथ परमात्मा को सच्चिदानन्द स्वरूप भी कहते हैं। आत्माओं को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं।'' अ.बापदादा 20.3.87

''सत्य के लिए गायन है - सत्य की नाव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। आप लोग भी कहते हो- सच तो बीठो नच... सत्यता की शक्ति वाला शक्तिशाली होगा, उसमें सामना करने की शक्ति होगी, इसलिए कब घबरायेगा नहीं।'' अ.बापदादा 20.3.87

''सत्यता वृद्धि को प्राप्त करने की विधि है। सत्यता की शक्ति से सतयुग बनाते हो, स्वयं भी सत्यनारायण बनते हो।... सत्य ज्ञान है, सत्य बाप का ज्ञान है। इसलिए दुनिया से न्यारा और प्यारा है।'' अ.बापदादा 20.3.87

''सत्यता की शक्ति वाले विजयी अवश्य बनते हैं। सत्यता की प्राप्ति खुशी और निर्भयता है।... सत्य ज्ञान, सत्य बाप, सत्य प्राप्ति, सत्य याद, सत्य गुण, सत्य शक्तियाँ सर्व प्राप्ति है। तो इतनी अथॉर्टी का नशा रहता है?... सत्यता की अथॉर्टी वाले की वाणी में स्नेह और नम्रता होगी।'' अ.बापदादा 20.3.87

''सत्यता की अथॉर्टी वाले निरहंकारी होते हैं। तो अथॉर्टी भी हो, नशा भी हो और निरहंकारी भी हो। इसको कहते हैं सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप।'' अ.बापदादा 20.3.87

''झूठ खण्ड में ब्रह्मा बाप को सत्यता की अथॉर्टी का प्रत्यक्ष साकार स्वरूप देखा ना।... अथॉर्टी के बोलों में स्नेह समाया हुआ है, निर्मानता है, निरहंकार है, इसलिए अथॉर्टी के बोल प्यारे लगते हैं।... तो सेवा में, कर्म में फॉलो ब्रह्मा बाप है।''

अ.बापदादा 20.3.87

''जैसे ब्रह्मा बाप को देखा... सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष भी करेंगे लेकिन स्नेह से बच्चे-बच्चे कहते नया ज्ञान सारा स्पष्ट कर देंगे। इसको कहते हैं - स्नेह और सत्यता की अथॉर्टी का बैलेन्स। तो सेवा में इस बैलेन्स को अण्डरलाइन करो।''

अ.बापदादा 20.3.87

''निर्भयता की अथॉर्टी जरूर रखो। एक ही बाप का नया ज्ञान सत्य ज्ञान है और नये ज्ञान से नई दुनिया की स्थापना होती है, यह अथॉर्टी और नशा स्वरूप में इमर्ज हो।... धरनी, नब्ज, समय यह सब देखकर ज्ञान देना - यही नॉलेजफुल की निशानी है।''

अ.बापदादा 20.3.87

''कोई भय न हो। निर्भय होकर धरनी भल बनाओ।... यह जरूर है कि जैसा व्यक्ति वैसी रूपरेखा बनानी पड़ती है लेकिन व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आ सकते। अपने सत्य ज्ञान की अथॉर्टी से व्यक्ति को परिवर्तन करना है - यह लक्ष्य नहीं भूलो।''

अ.बापदादा 20.3.87

''इस मधुबन की धरनी पर आने से उनको यह जरूर मालूम पड़ना चाहिए... यह उल्हना न दे कि ऐसी धरनी पर भी मैं पहुँचा लेकिन यह मालूम नहीं पड़ा कि परमात्म ज्ञान क्या है? परमात्म-भूमि पर आकर परम-आत्मा की प्रत्यक्षता का सन्देश जरूर ले जाये।'' अ.बापदादा 20.3.87

''यह लक्ष्य जरूर रखो कि नई दुनिया का नया ज्ञान प्रत्यक्ष जरूर करना है। अभी स्नेह और शान्ति प्रत्यक्ष हुई है। बाप का प्यार के सागर का स्वरूप, शान्ति के सागर का स्वरूप प्रत्यक्ष किया है लेकिन ज्ञान स्वरूप आत्मा और ज्ञान सागर बाप है, यह प्रत्यक्ष कम हुआ है।'' अ.बापदादा 20.3.87

''इस धरनी पर आने से वे भी नर्म हो जाते हैं और नर्म धरनी बनने के कारण उसमें जो भी बीज डालेंगे, उसका फल सहज निकलेगा।। मधुवन धरनी पर छाप जरूर लगानी है... स्टेम्प यहाँ मधुवन में ही लगेगी।'' अ.बापदादा 20.3.87

निश्चयबुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति का राज़

बाबा ने मुख्यत: तीन बातों का ज्ञान दिया है - आत्मा, परमात्मा और ड्रामा। इन तीन बातों में सभी बातें आ जाती हैं। जिस आत्मा को इन तीनों बातों का पूरा ज्ञान होगा और उस पर पूरा निश्चय होगा, उसके जीवन में असफलता या हार नाम की कोई बात हो नहीं सकती।

यहाँ इस सत्य को जानना भी महत्वपूर्ण है कि ज्ञान और निश्चय के साथ जो भी कार्य या पुरुषार्थ किया जाता हैं तो उसका महत्व और प्रभाव अधिक होता है। सिद्धान्त के अनुसार जब किन्हीं दो सत्ताओं के मध्य किसी एक सत्ता का आधिपत्य 50 प्रतिशत से अधिक होता है तो ही वह दूसरी पर हावी हो पाती है परन्तु इसके प्रभाव में दोनों के ज्ञान और निश्चय का प्रभाव अधिक है। जैसे सतयुग से आत्मा में आत्मिक शक्ति तो होती है परन्तु आत्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है परन्तु देह और देह की दुनिया का पूरा ही ज्ञान होता है, जिससे आत्मा की शक्ति क्षीण होने लगती है और त्रेता के अन्त में आत्मा की आत्मिक शक्ति की 4 कलायें कम होते ही देहाभिमान आत्मिक शक्ति पर हावी हो जाता है और आत्मा विकारों के वशीभूत हो जाती है। ऐसे ही संगमयुग पर परमात्मा आकर जब यथार्थ आत्मिक ज्ञान देता है और जो आत्मा उस ज्ञान को समझकर, उसका अनुभव कर, उस पर निश्चय करता है तो वह सहज ही देहाभिमान पर विजय प्राप्त कर अपने को विकारों से मुक्त अनुभव करती है, जो बाद में पुरुषार्थ से पूरी रीति विजयी बनती है।

परमात्मा सत्य है, उनके हर महावाक्य सत्य हैं और सत्य होने वाले हैं भले ही उनकी सत्यता या भाव-अर्थ आज हम अनुभव करें या न करें, हम समझें या न समझें परन्तु देश, काल और परिस्थिति आने पर वे अवश्य ही सत्य होते हैं। इस सत्य को समझकर निश्चयबुद्धि होकर पुरुषार्थ करना ही निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा की निशानी है।

''जो जितना नॉलेजफुल होगा, उतना ही वह सक्सेसफुल होगा। सक्सेसफुल न होने का कारण क्या है? फेथफुल कम। फेथफुल अर्थात् निश्चयबुद्धि। अपने में, बापदादा में और सर्व परिवार की आत्माओं में फेथफुल होना पड़ता है।... सक्सेस तो होती है लेकिन सक्सेसफुल हैं?'' अ.बापदादा 11.7.70

''योगयुक्त और निश्चयबुद्धि बनकर कर्तव्य करने से सफलता प्राप्त हो ही जाती है।... समस्याओं का सामना करने से सफलता मिलती है। विघ्न तो आयेंगे लेकिन लगन की अग्नि से विघ्न भस्म हो जायेंगे।'' अ.बापदादा 11.7.70

''समस्या आपके लिए कोई नई बात नहीं है - नथिंग न्यू। अनेक बार विजयी बने हैं, बन रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे। यह है ड्रामा में निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा की निशानी।'' अ.बापदादा 14.11.2002

''अभी तुम्हारी है चढ़ती कला। बाप घड़ी-घड़ी कहते - मन्मनाभव। गीता में भी ये अक्षर हैं परन्तु उनका अर्थ कोई भी सुना नहीं सकेंगे। वास्तव में उसका अर्थ लिखा हुआ भी है - अपने को आत्मा समझ, देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो... पहले ये पक्का निश्चय करो कि हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। बाप ने हमको एडॉप्ट किया है।'' सा.बाबा 01.09.04 रिवा.

''निश्चय बुद्धि नम्बरवार नहीं होते, पुरुषार्थ में नम्बरवार होते हैं। पक्के निश्चयबुद्धि की निशानी है, उनकी दृष्टि सदैव निशान (आत्मा) की ओर होगी।''
अ.बापदादा 8.5.69

''यह ईश्वरीय नॉलेज है सोर्स ऑफ इन्कम।... याद में भी हारते हैं तो नॉलेज में भी हारते हैं। हारकर भागन्ती हो जाते हैं तो नॉलेज में भी भागन्ती हो जाते हैं।... निश्चय वाले को जरूर अपार खुशी होगी।... निश्चयबुद्धि माना विजयी आत्मा।''
सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

''निश्चयबुद्धि की परख कौनसी है?... उनके नयन, उनकी वृत्ति एक निशान अर्थात् बिन्दी की तरफ ही होगी।... निश्चयबुद्धि के नयनों से ऐसे महसूस होगा जैसे वे देखते हुए भी कुछ और देखते हैं। उनके बोल भी वही निकलेंगे।... निश्चयबुद्धि की परख है निशाना और स्थिति नशे वाली होगी।''
अ.बापदादा 8.5.69

''सिर्फ बाप, टीचर, सतगुरु में निश्चय नहीं लेकिन इस निश्चय के साथ-साथ उनके फरमान, उनकी पढ़ाई और उनकी श्रीमत पर भी सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि होकर चलना है।''
अ.बापदादा 26.5.69

''निश्चय की निशानी क्या है? विजय। जितना निश्चयबुद्धि होंगे, उतना ही सभी बातों में विजयी होंगे। निश्चयबुद्धि की कब हार नहीं होती। हार होती है तो समझना चाहिए कि निश्चय में कमी है।... निश्चय से विजय हो जाती है, संशय लाने से शक्ति कम हो जाती है।''
अ.बापदादा 24.1.70

''अपने में शक भी क्यों रखते हो कि ना मालूम परीक्षा में पास हों या फेल हों। होशियार स्टूडेण्ट्स सदैव निश्चय से कहते हैं कि हम तो नम्बरवन में आयेंगे। अगर पहले से ही अपने में संशय रखेंगे तो रिजल्ट क्या होगी? विजयी बन न सकेंगे।''
अ.बापदादा 28.9.69

''जब अपने को निश्चयबुद्धि कहते हो तो कोई भी बात में संशय वा विकल्प नहीं उठना चाहिए। न आप में, न बाप में, न बाप की नॉलेज में और न बाप के परिवार में संशय वा विकल्प नहीं उठना चाहिए।''
अ.बापदादा 28.9.69

''देखेंगे, करेंगे, सोचेंगे। हिम्मत है लेकिन फेथ नहीं है। फेथफुल के बोल ऐसे नहीं होते। फेथफुल का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि। मन, वचन, कम हर बात में निश्चयबुद्धि। सिर्फ बाप और ज्ञान तक निश्चय नहीं लेकिन उनका संकल्प भी निश्चयबुद्धि। निश्चयबुद्धि का बोल कब हिम्मतहीन का नहीं होगा।''
अ.बापदादा 26.3.70

परमात्मा का राज़

परमात्मा शब्द का भावार्थ - परमात्मा शब्द ही यह सिद्ध करता है कि आत्मायें अनेक हैं और उनमें जो परम अर्थात् सर्वोपरि है, वह परमात्मा है। परमात्मा भी एक आत्मा है परन्तु अन्य आत्माओं से विशेष है। उसकी विशेषता क्या है, किस तरह से अन्य आत्माओं से भिन्न है, उनका कर्तव्य क्या है, वह सब ज्ञान परमात्मा ही देते हैं। गीता में भी है - मैं अपना परिचय आप ही आकर देता हूँ।

''शिवबाबा 84 के चक्र में नहीं आते, फिर उनमें अनुभव कहाँ से आया? हमको तो अनुभव प्राप्त होता है, बाबा कहाँ से अनुभव लाते हैं, जो तुमको सुनाते हैं। ... बाबा खुद 84 के चक्र में नहीं आते हैं परन्तु तुमको सब समझाते हैं, यह भी कितना वण्डर है। ड्रामा अनुसार उनमें यह नॉलेज नूँधी हुई है, जो सुनाते हैं।''
सा.बाबा 26.10.04 रिवा.

परमात्मा ने स्वयं अपना परिचय अर्थात् अपने नाम-रूप, गुण-कर्तव्य, धाम, आने का समय, आने का विधि-विधान का ज्ञान और अपने अभोक्ता, अजन्मा, अयोनि आदि गुणों का राज़ भी स्वयं ही आकर बताया है।

नाम शिव, निराकार होते भी रूप ज्योति बिन्दु, ज्ञान का सागर, सर्व आत्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता, सर्वव्यापी नहीं परमधाम का वासी, कल्प-कल्प कल्प के संगमयुग पर ब्रह्मा तन में प्रवेश कर स्थापना, विनाश और पालना (आत्मा में ज्ञान-योग से) का कर्तव्य करते हैं।

''बेहद के बाप ने जरूर कोई सर्विस की होगी तब तो इतना गायन है ना। कितनी वण्डरफुल बात है। कितनी उनकी महिमा की जाती है।... जो शिवबाबा तुमको इतना ऊंच बनाते हैं फिर ड्रामा अनुसार तुम ही उनकी पूजा शुरू करते हो।''

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

''इस ड्रामा का राज़ बाप के सिवाए और कोई नहीं जानते हैं।... बाप सारी नॉलेज देते हैं। अपना भी परिचय देते हैं और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी समझाते हैं।... बाप ज्ञान का सागर नॉलेजफुल है। बाप नॉलेज में आप समान बनाते हैं।''

सा.बाबा 9.10.04 रिवा.

परमात्मा सर्व ज्ञान-गुण-शक्तियों का सागर है, उसका कल्याणमय हाथ सदा सर्व आत्माओं के ऊपर है, उसकी कल्याणमयी दृष्टि सर्व आत्माओं पर है। उसकी दृष्टि में कहाँ भी अंशमात्र भी पक्षपात नहीं है, इसीलिए उसको न्यायकारी समदर्शी कहा जाता है।

''एक परमात्मा को ही कहा जाता है सर्वशक्तिवान, वर्ल्ड आलमाइटी अथॉर्टी।... दूसरा कोई मनुष्य नहीं, जिसको हम सर्वशक्तिवान कहें। लक्ष्मी-नारायण को भी सर्वशक्तिवान नहीं कह सकते क्योंकि उनको भी शक्ति देने वाला परमात्मा है। आत्मा में जो शक्ति होती है, वह आहिस्ते-आहिस्ते डिग्रेड होती जाती है।'' सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

परमात्मा निराकार है, परन्तु निराकार का अर्थ ये नहीं कि उसका कोई आकार ही नहीं है। निराकार अर्थात् वह गर्भ से पंच तत्वों का आकार धारण नहीं करता। जब परमात्मा का नाम है, कर्तव्य है तो आकार होना भी निश्चित है। परमात्मा का स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु और नाम शिव है। परमात्मा के सभी नाम गुण-वाचक हैं।

परमात्मा सर्वव्यापी नहीं, एक देशवासी अर्थात् परमधाम का वासी है का ज्ञान

''कई बच्चे मूँझते हैं कि बाप को कैसे याद करें। बाप इतनी छोटी बिन्दी है, उनको कैसे याद करें।... जैसे आत्मा को देख नहीं सकते, ऐसे शिवबाबा भी किसको देखने में तो आ न सके।'' सा.बाबा 21.10.04 रिवा.

''एक तरफ कहते आत्मा अंगुष्ठे मिसल है और फिर कहते सितारा है। अभी तुमको तो एक बात पर ठहरना है।... बिन्दी समझना, इसमें ही मेहनत है। आत्मा को कोई देख नहीं सकते, उसको बुद्धि से जाना जाता है।... बाप भी ऐसे बिन्दी है परन्तु वह ज्ञान का सागर है।'' सा.बाबा 21.10.04 रिवा.

Q. परमात्मा के सर्वव्यापी के सिद्धान्त और अभी संगमयुग पर एक ही समय अनेक भाई-बहनें अनेक स्थानों पर आकारी रूप में ब्रह्मा बाबा का और परमात्मा की मदद का अनुभव करते - तो दोनों में क्या अन्तर है?

Q. परमात्मा क्या है, कैसे निराकार है, परमात्मा का अवतरण कब, कहाँ और कैसे होता है?

सर्वव्यापी अर्थात् हर कण में वह व्याप्त है, फिर उसको आने की आवश्यकता नहीं है। सर्वव्यापी है तो उसके गुण भी सर्वव्यापी होने चाहिए। परन्तु ऐसा देखने में नहीं आता, अनुभव में नहीं आता है। अभी आकारी ब्रह्मा और परमात्मा का कहाँ भी किसी भी बच्चे को अनुभव कराना, मदद करना, उनकी शक्ति और गति की तीव्रता पर निर्भर करता है, सर्वव्यापकता पर नहीं। वह सर्वशक्तिवान है, सर्वज्ञ है परन्तु सर्वव्यापी नहीं है। शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा साकार देह से न्यारे होने के कारण एक सेकण्ड के अंशमात्र में कहाँ भी जा सकते हैं। वास्तव में देखा जाये तो दुनिया में कोई भी चीज सर्वव्यापी नहीं है क्योंकि हर तत्व के परमाणु हैं और एक परमाणु में दूसरा परमाणु व्याप्त नहीं है। दो परमाणु एक साथ इकट्ठे तो हो सकते हैं परन्तु एक-दूसरे में व्याप्त नहीं हो सकते।

परमात्मा के सर्वज्ञ, जानी-जाननहार स्वरूप का राज़

परमात्मा के सर्वज्ञ है परन्तु सर्वव्यापी नहीं है। सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और जानी-जाननहार के अन्तर का राज़ भी परमात्मा ने बताया तब ही तीनों शब्दों के अन्तर का पता पड़ा। अल्पकाल की सिद्धि वाले भी अपनी सिद्धि के आधार पर किसके मन की

बात, छिपी हुई चीज को जान सकते हैं तो परमात्मा क्यों नहीं जान सकता है परन्तु वह स्वयं कहते हैं कि मुझको किसके दिलों को जानने की आवश्यकता ही नहीं है। मैं तो ड्रामा और कर्म के विधि-विधान को जानता हूँ।

परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है परन्तु सर्वज्ञ अवश्य है अर्थात् उनको इस सृष्टि का पूरा ज्ञान है, इसलिए वह एक स्थान पर होते हुए भी विश्व के किसी भी स्थान के विषय में जान सकता है परन्तु परमात्मा ड्रामा का पूर्ण ज्ञाता होने के कारण उसको किसी के दिल की बात को जानने की आवश्यकता न है और न होती है।

''यह कभी ख्याल नहीं करो कि बाबा तो सब कुछ जानते हैं। बाप को जानने की क्या दरकार है। जो करेंगे सो पायेंगे। बाबा साक्षी होकर देखते रहते हैं।'' सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

''रहमदिल बाप है, पाप में और पाप न बढ़ते जायें... हर बच्चे का हर घड़ी की धड़कन वा मन के संकल्पों का चार्ट बापदादा के सामने है... तिथि, स्थान, समय और क्या-क्या किया - सब बता सकते हैं लेकिन जानकर भी अन्जान रहते हैं।''

अ.बापदादा 2.11.87

''अगर मैं न जानता होता तो सुख-दुख का फल कैसे देता। जरूर जानता हूँ। परन्तु सारा दिन यह थोड़ेही बैठ सुनाऊंगा। समझ लो मैं भी जानता हूँ। **अगर कोई गफलत की और सच न बतलाया तो खाल उतारूँगा**। ऐसा न हो कि यहाँ आये खाना आबाद करने, उसके बदले और ही बर्बाद कर लो। यह मम्मा-बाबा करके न भी जाने। निराकार बाबा जिसको जानी-जाननहार कहा जाता है, वह तो सभी को जानते हैं। इसलिए छिपाना कब नहीं।'' सा.बाबा 12.9.73 रिवा.

''वह बाबा अन्तर्यामी है ना! यह बाबा बाहरयामी है। उस बाबा को तो झट पता पड़ जाता है कि पतित छुपा हुआ बैठा है, तो जिसने ऐसे पतित को लाया और पतित आकर बैठा होगा तो उन दोनों को ही सजा मिलेगी। इसलिए ही कब भी पतित को नहीं लाना चाहिए, ना ही आने के लिए कहना चाहिए।'' सा..बाबा 13.7.73 रिवा.

परमात्मा के न्यायकारी-समदर्शीपन का राज़

परमात्मा ज्ञान सूर्य है, उनकी ज्ञान, गुण, शक्तियों की बरसात सदा आत्माओं पर समान रूप से होती रहती है परन्तु हर आत्मा अपने समय, पार्ट और शक्ति के अनुसार उनको अनुभव करती है और धारण करती है। विश्व-नाटक के नियमानुसार जो आत्मा एक कदम उसकी ओर बढ़ाती है, परमात्मा उसको हजार कदम मदद अवश्य करता है, ये सिद्धान्त परमात्मा के न्यायकारी-समदर्शी पन पर आधारित सर्व आत्माओं के लिए समान है। परमात्मा के संग से ब्रह्मा बाबा ने भी इस स्थिति को प्राप्त किया है और उनका सहयोग भी सर्व आत्माओं के लिए समान रूप से है, जिसके कारण ही विश्व की सर्व आत्मायें उनको ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर कहकर याद करती हैं, प्यार करती हैं।

''बाप कहते हैं - आज तुमको बहुत गुह्य ते गुह्य बातें सुनाता हूँ। कुछ तो रहा हुआ है ना।... जब गुह्य से गुह्य प्वाइन्ट्स सुनाते हैं तो तुमको सुनकर बहुत खुशी होती है। पिछाड़ी में फिर कह देते हैं - मनमनाभव, मध्याजीभव। मूँझने की तो जरूरत नहीं है।''

सा.बाबा 25.9.04 रिवा.

''बरोबर बाप हमारे द्वारा स्थापना करा रहे हैं, फिर हम ही राज्य करेंगे।... यह भी ड्रामा में नूँध है। मैं भी इस ड्रामा के अन्दर पार्टधारी हूँ। ड्रामा में सबका पार्ट नूँधा हुआ है। शिवबाबा का भी पार्ट है, हमारा भी पार्ट है। थैंक्स देने की बात नहीं।''

सा.बाबा 2.11.04 रिवा.

परमात्मा के परकाया प्रवेश का राज़

''बाप कहते हैं - मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। और कोई भी आत्मा मेरे समान शरीर में प्रवेश नहीं कर सकती। भल धर्म स्थापक आते हैं तो उनकी आत्मा भी परकाया प्रवेश करती है परन्तु वह बात ही अलग है। हम आते हैं सबको वापस ले जाने के लिए, वे आते हैं यहाँ पुनर्जन्म ले पार्ट बजाने।'' सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

''ड्रामा अनुसार पूरे टाइम पर आत्मा को जाना ही है। ड्रामा कितना एक्यूरेट है, इसमें कोई इन्एक्यूरेसी है नहीं। यह तुम जानते हो बाप भी ड्रामा अनुसार बिल्कुल एक्यूरेट टाइम पर आते हैं। एक सेकेण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता है। यह कैसे मालूम पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है। जब नॉलेज देते हैं।... बाप ज्ञान का सागर नॉलेजफुल है। बाप नॉलेज में आप समान बनाते हैं।''
सा.बाबा 9.10.04 रिवा.

''बेहद का बाप नॉलेज भी बेहद की देते हैं।... यह नॉलेज और कोई दे न सके। बाबा कहते हैं - भल जाकर देखो कहाँ से भी यह नॉलेज मिलती है।... बाप का फर्ज है रचता और रचना की नॉलेज देना।''
सा.बाबा 5.10.04 रिवा.

शिवबाबा ने आत्मा और शरीर दोनों का ज्ञान और उनके सम्बन्ध का ज्ञान तो दिया ही लेकिन उस अवस्था का स्वरूप (Demonstration) भी दिखाया अर्थात् उसका अनुभव भी कराया कि कैसे आत्मा और देह अलग-अलग है और कैसे आत्मा शरीर में प्रवेश करती है और फिर निकल जाती है, देह में रहते भी देह से न्यारा होकर कर्म किया जा सकता है, इस सबका उदाहरण कर्म करते हुए दिखाया। आत्मा देह से न्यारा होकर कर्म करे तो देह के दुख-दर्द से मुक्त रह सकते हैं, आत्मा को थकावट की अनुभूति नहीं होती है - यह सब भी करके दिखाया है। अभी ब्रह्मा बाबा भी वह सब करके हमको दिखा रहे हैं। इससे इस सत्य को समझने, निश्चय करने और उस अनुरूप बनने, पुरुषार्थ करने में सहज हो जाता है।

''शान्तिधाम है आत्माओं का घर, जहाँ से आत्मायें यहाँ पार्ट बजाने आती हैं... इस दादा में बाप कैसे आते हैं, यह तुम बच्चे ही जानते हो।''
सा.बाबा 16.12.04 रिवा.

''जैसे बाप का रि-इन्कारनेशन होता है, वैसे तुम बच्चों का भी रि-इन्कारनेशन होता है। तुम भी अवतरित हुए हो। आत्मा यहाँ आकर साकार में पार्ट बजाती है। इसको कहा जाता है अवतरण।... बाप का जन्म दिव्य और अलौकिक है। वे प्रवेश करते हैं।''
सा.बाबा 29.1.05 रिवा.

''बच्चे, मैं इस बैल पर सदैव सवारी करूँ, इसमें मुझे सुख नहीं भासता है। मैं तो तुम बच्चों को पढ़ाने आता हूँ।... मेरा तो एक सेकेण्ड में आना-जाना होता है। सदैव बैठने का कायदा ही नहीं है।... सारा दिन शरीर में थोड़ेही बैठेगा।''
सा.बाबा 2.7.05 रिवा.

Q. यह कैसे कहा जा सकता कि इनमें भगवान आते हैं?

परमात्मा के अवतरण का राज़

परमात्मा अवतरित होकर सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं इसलिये आत्मा में निहित संस्कारों में वह स्मृति सूक्ष्म में रहती है, जिस कारण आत्मा दु:ख के समय उनको याद करती हैं। वह वर्णन तो शास्त्रों आदि में है, अन्य धर्मों में भी है परन्तु स्पष्ट नही है, वह राज़ ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने अभी आकर बताया। परमात्मा कल्प-कल्प बाप-टीचर-सतगुरु बनता है। ये विश्व एक नाटक है, खेल है जो कल्प-कल्प रिपीट होता है उसका यथार्थ राज़ अर्थात् Cause & effcet, Facts & Figures विधि-विधान सब परमात्मा ने बताये हैं।

''सभी आत्मायें अपने घर से यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग है जब बेहद का बाप आते हैं नई दुनिया में ले चलने के लिए।... बाप को बुलाते हैं। बाप भी देखते हैं बिल्कुल दुखी तमोप्रधान बन गये हैं, 5 हजार वर्ष पूरे हुए हैं तब फिर आते हैं।... ड्रामानुसार हमको फिर 5 हजार वर्ष के बाद आना पड़ता है।''
सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

''जब बहुत तमोप्रधान बन जाते हैं तब ही बाबा का प्रोग्राम है आने का। ऐसे नहीं कि ईश्वर जो चाहे सो कर सकते हैं या जब चाहे तब आ सकते हैं।... गीता के भगवान को भूल गीता को ही खण्डन कर दिया है। दूसरा फिर जगन्नाथपुरी में देवताओं के बड़े गन्दे चित्र बनाये हैं।''
सा.बाबा 8.12.04 रिवा.

''यह राज़ अभी तुम समझते हो। इस बेहद के ड्रामा को जब कोई अच्छी रीति समझे, तब बुद्धि में बैठे।... राजयोग प्रेरणा से तो नहीं सीखेंगे। यह सब बातें दिल में नोट करनी हैं। जैसे परमात्मा की बुद्धि में सारी नॉलेज है वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी बैठना चाहिए।''
सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

परमात्म मिलन का गुह्य राज / परमात्म मिलन कब, कहाँ और कैसे?

आत्मायें, परमात्मा से मिलने के लिए कठिन तपस्या भी करते हैं परन्तु परमात्मा से कब, कहाँ और कैसे मिल सकते, इसको जानते नहीं हैं। अन्धश्रद्धा से पुरुषार्थ करते रहते हैं। परमात्मा से कैसे, कहाँ और कब मिल सकते हैं, यह गुह्य राज़ भी परमात्मा ही बताते हैं, तब ही हम परमात्म-मिलन का परम सुख अनुभव करते हैं। परमात्म-मिलन का वह सुख ही हमको द्वापर सं दुख के समय परमात्मा की याद, परमात्मा से मिलन के लिए प्रेरित करता है।

निराकार आत्मायें साकार शरीर के द्वारा कैसे परकाया प्रवेश हुए निराकार परमात्मा से मिलन मनाती हैं। इस अद्भुत मिलन का राज़ और अनुभव परमात्मा स्वयं ही आकर कराते हैं। जिस मंगल मिलन को आत्मायें भक्ति मार्ग में याद करती हैं।

''गायन है - आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल... मूलवतन में अलग नहीं रहते हैं। वहाँ तो सब इकट्ठे रहते हैं। आत्मायें वहाँ से बिछुड़ती हैं, यहाँ आकर अपना-अपना पार्ट बजाती हैं।... बाप भी 5 हजार वर्ष के बाद आते हैं।''

सा.बाबा 31.10.04 रिवा.

परमात्मा के लिबरेटर-गाइड अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता का राज़

परमात्म को लिबरेटर और गाइड भी कहते हैं क्योंकि वही आकर सर्वात्माओं की गति-सद्गति करते हैं अर्थात् सर्वात्माओं को दुख से मुक्त कर मुक्तिधाम ले जाते हैं और सुख की दुनिया में आने के लिए गाइड करते हैं, भल वह स्वयं सुख की दुनिया में नहीं आते हैं। कोई भी आत्मा जब पहले-पहले परमधाम से आती है तो सद्गति में ही आती है।

''मुख्य बात है पावन बनने की। जितना पावन बनेंगे, उतना नॉलेज धारण होगी और खुशी भी होगी। बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए - हम सबका उद्धार करें। बाप ही आकर सबकी सद्गति करते हैं।'' सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

''गाते हैं बाबा हमको रावण के राज्य से लिबरेट करो।... स्मृति आती है ना! कोई भी यह नहीं जानते कि वे ऐसे क्यों कहते हैं।... अब बाप आया हुआ है, तो बहुत खुशी होनी चाहिए।'' सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

''बाप कहते हैं तुम पसन्द करो न करो मैं आया हूँ, तुमको जबरदस्ती भी ले जाऊंगा। छोड़ेंगे किसको भी नहीं। **न चलेंगे तो सजा देकर, मार-पीट कर भी ले चलूँगा**।... ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है। इसलिए अपनी कमाई कर चलो तो अच्छा है।''

सा.बाबा 18.1.72 रिवा.

परमात्मा के गुणों और कर्तव्यों का राज़

परमात्मा को याद तो सभी करते हैं और उनके गुणों और कर्तव्यों का वर्णन भी करते हैं परन्तु उनका यथार्थ ज्ञान औन अनुभव अभी ही परमात्मा कराते हैं, जिस अनुभव के आधार पर ही हम उनको याद कर उन गुणों को धारण कर गुणवान बनते हैं और कर्तव्यों को करके अपने भविष्य के लिए सुखों का खाता जमा करते हैं।

परमात्मा सर्व गुणों और शक्तियों का सागर है, कल्पान्त में वह ज्ञान आत्माओं को देता है, जिससे गुण, शक्तियां सर्व आत्माओं में आती हैं और आत्माओं की शक्ति पुन: जाग्रत होती है, जिसके आधार पर वे सारे कल्प पार्ट बजाती हैं।

परमात्मा के मुख्य गुण ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर, गुणों और शक्तियों का सागर, स्वर्ग का रचयिता, निराकार, निर्भय-निर्वैर, अयोनि, अकालमूर्त, साक्षी-दृष्टा, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिवान, प्रेम का सागर, रहमदिल, क्षमा का सागर, विश्व कल्याणकारी, सर्व का मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता, सर्व आत्माओं का अविनाशी पिता, दुखहर्ता-सुखकर्ता, सुख-दुख दोनों से न्यारे, पतित-पावन, अभोक्ता, सदा कर्मातीत, असोचता आदि आदि हैं, इन सभी गुणों और कर्तव्यों का ज्ञान परमात्मा ने स्वयं ब्रह्मा तन में आकर दिया और अनुभव कराया।

''बाप ही आकर सबको पवित्र बनाकर वापस ले जाते हैं। इसलिए उस एक की ही महिमा है। ब्रह्मा की वा तुम्हारी कोई महिमा नहीं है। बाबा न आता तो तुम भी क्या करते।'' सा.बाबा 26.5.05 रिवा.

''शिवबाबा को कोई भी श्रृंगार आदि करने की प्रैक्टिस ही नहीं है। उनको तो अविनाशी ज्ञान रत्नों से बच्चों को श्रृंगारने की ही प्रैक्टिस है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज समझाते हैं।'' सा.बाबा 18.8.05 रिवा.

ज्ञान का सागर

इस सृष्टि के आदि-मध्य अन्त का ज्ञान एक ज्ञान सागर परमात्मा के पास ही है, इसलिए उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। वही कल्पान्त में पुरुषोत्तम संगमयुग पर आकर आत्माओं को यह ज्ञान देते हैं, जिससे इस कल्प-वृक्ष की नई कलम लगती है, आत्मायें पतित से पावन बनती हैं, सृष्टि पुरानी से नई बनती है और इस सृष्टि का नया चक्र चालू होता है, इसलिए ही परमात्मा को सृष्टि का रचता भी कहा जाता है।

''तू प्यार का सागर है... बाप पहले-पहले तो ज्ञान का सागर है। बच्चों में थोड़ा भी ज्ञान है तो बहुत ऊंच पद प्राप्त कर सकते हैं।... यह भी वण्डर है ना! जहाँ जड़ यादगार है, वहाँ ही तुम चैतन्य में आकर बैठे हो।'' सा.बाबा 12.2.05 रिवा.

''यह संसार का चक्र कैसे चलता है, उसे जानना, इसी का नाम है ज्ञान। बाप कहते हैं - इसी का मैं नॉलेजफुल हूँ। मेरे पास इसकी फुल नॉलेज है। यह कर्मों का खाता कैसे चलता है, कैसे नम्बरवार सब आते हैं। इन सभी बातों को मैं जानता हूँ, जिसको कोई मनुष्य नहीं जान सकता क्यों कि सभी मनुष्य इस जन्म-मरण के चक्र में आने वाले हैं। जो इस चक्र में आने वाले हैं, वे इन बातों को नहीं जान सकते।... सभी मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में आकर अपनी पॉवर्स खो देते हैं।'' मातेश्वरी 24.6.65

''परमात्मा ज्ञान का सागर है तो जरूर ज्ञान सुनाने वाला होगा।... परमात्मा के लिए कहते हैं - वह ज्ञान का सागर है। सारा जंगल कलम बनाओ... तो भी अन्त नहीं हो सकता है।'' सा.बाबा 11.7.05 रिवा.

''सेकण्ड में जीवनमुक्ति भी गाया हुआ है और फिर यह भी गायन है कि ज्ञान का सागर है। सारा सागर स्याही बनाओ... तो भी अन्त नहीं आ सकती।'' सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

''ऊंच से ऊंच बाप है, उनको जादूगर, रत्नागर, ज्ञान का सागर भी कहते हैं। बाप की महिमा अपरमअपार है।''
सा.बाबा 15.7.05 रिवा.

''ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं परन्तु ब्रह्मा तो करते नहीं हैं। वह तो पतित से पावन बनते हैं।... ड्रामा प्लैन अनुसार शिवबाबा में ज्ञान है। ऐसे नहीं कहेंगे कि इनमें ज्ञान कहाँ से आया? नहीं, वह है ही नॉलेजफुल। वही तुमको पतित से पावन बनाते हैं।''
सा.बाबा 15.6.04 रिवा.

''परमात्मा को बीज कहा जाता है। वह सारे झाड़ की नालेज देता है। ज्ञान सागर कहते हैं ना। ज्ञान सागर है, तब ही पतित-पावन है। लिखते हो तो बड़ी समझ से लिखना चाहिए। पहले पतित-पावन कहें वा ज्ञान सागर कहें? जरूर ज्ञान है, तब तो पतित को पावन बनायेगा। तो पहले ज्ञान सागर, पीछे पतित-पावन लिखना चाहिए।'' सा.बाबा 13.10.72 रिवा.

प्रेम का सागर

परमात्मा प्रेम का अखुट भण्डार है, प्रेम का सागर है। हर आत्मा के प्रति उनका अगाध प्रेम है, इसलिए ही उनका कोई न शत्रु है और न ही मित्र है। सर्व आत्मायें उनको समान रूप से अति प्रिय हैं और वह सर्व आत्माओं को अति प्रिय है।

आनन्द का सागर

परमात्मा को सच्चिदानन्द सागर कहा जाता है। वह सृष्टि का पूर्ण ज्ञाता है और जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है, इसलिए वह आनन्द का सागर है। उनको सुख-दुख से न्यारा भी कहा जाता है। आनन्द आत्मा और परमात्मा दोनों का निजी गुण है परन्तु आत्मायें देहाभिमान में आकर विस्मृत में आ जाती हैं परन्तु परमात्मा कब विस्मृति में नहीं आते हैं क्योंकि वे कभी गर्भ से देह धारण नहीं करते हैं।

दया का सागर

परमात्मा की प्राणी मात्र पर दया है और उसकी दया का भण्डार कब खुटता नहीं है, इसलिए सर्व आत्मायें सदा ही उसकी दया का अनुभव करती हैं, उनकी दया की इच्छा रखती हैं। इसलिए उनको दयानिधि भी कहा जाता है।

Q. क्या आत्माओं को दुखी देखकर परमात्मा को फीलिंग आती है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो वह दया कैसे करता है?

साकार ब्रह्मा बाबा और निराकार परमपिता परमात्मा का पार्ट साथ-साथ चलता है। ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है अर्थात् उनको सारे चक्र के सुख-दुख का अनुभव है और परमात्मा ज्ञान का सागर है। दोनों मिलकर सृष्टि के कल्याण का कार्य करते हैं।

''मैं रहमदिल भी हूँ तो कालों का काल भी हूँ। मुझे बुलाते ही हैं पतित-पावन आकर पावन बनाओ। कैसे रहमदिल हूँ और फिर कैसे कालों का काल हूँ, वह पार्ट अभी बजा रहा हूँ... याद से तुम्हारे पाप नाश हो जायेंगे।'' सा.बाबा 5.5.05 रिवा.

असोचता, निंसंकल्प, बीजरूप का गुण

परमात्म असोचता, निंसकल्प, बीजरूप है अर्थात् उनको कब किसी बात पर विचार करने की न आवश्यकता है और न करता है। वह जब ब्रह्मा तन में प्रवेश करते हैं तो उनका संकल्प और कर्म साथ-साथ ही होता है। उनके द्वारा ब्रह्मा मुख से समयानुसार सारा ज्ञान स्वभाविक ही निकलता है और समयानुसार सारे कार्य स्वभाविक ही होते हैं अर्थात् जैसे ग्रामोफोन के चलते हुए रिकार्ड पर सुई का स्पर्श होते ही गीत बजने लगता है। ऐसे ही समय रूपी सुई अपने स्थान पर आने से परमात्मा के मुख से वह ज्ञान निकलने लगता है, इसलिए उनको किसी प्रकार का चिन्तन, संकल्प करने की आवश्यकता नहीं होती है। इसका अर्थ ये नहीं कि वह जड़ है, वह भी चैतन्य बीजरूप है, इसीलिए तो ब्रह्मा तन से सारा ज्ञान सुनाता है।

Q. क्या परमात्मा को परमधाम में साकार सृष्टि पर आने का संकल्प उठता है?
नहीं, क्योंकि परमधाम में संकल्प की भी गम नहीं है। संकल्प तो स्थूल या सूक्ष्म शरीर के साथ ही उठता है और उठ सकता है।

परमात्मा के बागवान स्वरूप का राज़

परमात्मा काँटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाते, पुराने झाड़ से नये मीठे झाड़ की कलम लगाते इसलिए उनको बागवान कहते आदि आदि सब राज यथार्थ रीति अभी परमात्मा के द्वारा पता पड़ा है।

''बाप की महिमा करते पतित-पावन आओ, वह खिवैया है, बागवान है, पाप कटेश्वर है।... बाप को रहम पड़ता है - बच्चे हमको याद करें तो उनके पाप कट जायें।'' सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

''तुम जानते हो अब इस कलियुगी दुनिया से हमारा पैर उठ गया है, हमारी बोट का लंगर उठा हुआ है।... बाप खिवैया भी है तो बागवान भी है।'' सा.बाबा 16.5.05 रिवा.

परमात्मा के पतित-पावन स्वरूप और कर्तव्य का राज़

परमात्मा को पतित-पावन कहा जाता है परन्तु वह कैसे पतित-पावन है अर्थात् आत्माओं को कैसे पावन बनाते हैं, इसका राज़ कोई भी नहीं जानते हैं, जो परमात्मा ने स्वयं ही बताया है कि मैं सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर और राजयोग सिखलाकर आत्माओं को पावन बनाता हूँ। ज्ञान-योग के अभ्यास से ही आत्मायें पावन बनती हैं। आत्मा के पावन बनने का एकमात्र उपाय है, परमात्मा की याद।

''बाप से तुमको ताकत मिलती है, जिससे तुम पावन बनते हो।... आत्मा कैसे पावन बनेंगी, यह कोई भी बता नहीं सकते हैं।'' सा.बाबा 9.9.04 रिवा.

''प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय... युनिवर्स से युनिवर्सिटी अक्षर निकला है।... बाप ही आकर सारे युनिवर्स को पावन बनाते हैं।'' सा.बाबा 2.2.05 रिवा.

''ईश्वर क्या रक्षा करते हैं, सो तो तुम बच्चे जानते हो। कर्मों का हिसाब-किताब तो हर एक को अपना चुक्तू करना ही है... बाप कहते हैं हम तो आते हैं पतितों को पावन बनाने।'' सा.बाबा 2.2.05 रिवा.

परमात्म के गरीब-निवाज कर्तव्य का राज़

परमात्मा को गरीब-निवाज कहा जाता है परन्तु वह कैसे गरीब-निवाज है, यह राज़ भी वह स्वयं ही आकर बताते हैं कि अभी जो गरीब-साधारण हैं, वे ही बाबा के बच्चे बनते हैं और वे ही भविष्य नई दुनिया में ऊंच पद पाते हैं क्योंकि वे ही तन-मन-धन से यज्ञ को मदद करते और वे ही बाबा की सेवा में अपने को समर्पित करते हैं। बाबा कहते हैं जो करोड़पति हैं या जो अपने को बहुत विद्वान समझते हैं, उनका नई दुनिया में पार्ट नहीं है। बाबा को तो भोले-भाले गरीब बच्चे, मातायें ही प्रिय है, जो सच्ची दिल से बाबा के बनते हैं।

''तुम्हारे पास अक्सर करके गरीब-दुखी ही आयेंगे, साहूकार नहीं आयेंगे।... जिनकी तकदीर में हैं, उनको झट निश्चय बैठ जाता है।... इसमें मूँझने की दरकार नहीं है। अपने ऊपर आपेही रहम करना है।'' सा.बाबा 22.10.04 रिवा.

''बाप बुद्धिमानों की बुद्धि है, तो क्या किसी अरब-खरबपति की बुद्धि को नहीं पलटा सकता है लेकिन ड्रामा का बहुत कल्याणकारी नियम बना हुआ है कि परमात्म कार्य में फुरी-फुरी से तलाब होना है, अनेक आत्माओं का भविष्य बनना है''

अ.बापदादा 16.12.2000

''बाप कहते - जो साहूकार हैं, उन्हें गरीब जरूर बनना है, बनेंगे ही क्योंकि उन्हों का पार्ट ऐसा है। वे कभी ठहर न सकें क्योंकि धनवान को अहंकार भी बहुत रहता है।... वे जब देने आयेंगे तो बाबा कहेंगे - दरकार नहीं है, अपने पास रखो, जब जरूरत होगी तो फिर ले लेंगे।'' सा.बाबा 23.11.04 रिवा.

''गरीब अपना अच्छा भाग्य बनायेंगे और समझने का पुरुषार्थ करेंगे। साहूकारों को तो पुरुषार्थ करना नहीं है। उनमें देहाभिमान बहुत है ना।... गरीब झट अपनी बैटरी भर सकते हैं क्योंकि बाप को बहुत याद करते हैं।'' सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

''शिव तो भगवान है, वही कल्प-कल्प भारत में आकर नर्कवासी से स्वर्गवासी, बेगर टू प्रिन्स बनाते हैं। पतित को पावन बनाते हैं। वे ही सर्व के गति-सद्गति दाता हैं।'' सा.बाबा 18.2.05 रिवा.

''बाप कहते हैं - साहूकार 10 हजार देता है, उनको भी उतना ही फल मिलेगा, जितना आठ आना देने वाले को। बाप गरीब निवाज है ना! गरीब के पास होगा ही एक रुपया, तो उनसे 10 पैसा देते हैं तो उनको 10 लाख के बराबरी में देना पड़े। इसलिए बाप का नाम है गरीब निवाज।'' सा.बाबा 29.10.71 रिवा.

परमात्मा के समदर्शी स्वरूप का राज़

परमात्मा को समदर्शी कहा जाता है अर्थात् उसकी दृष्टि सर्वात्माओं के लिए बराबर है, किसके लिए कोई पक्षपात नहीं है, इस सत्य का ज्ञान और अनुभव अभी परमात्मा कराते हैं।

''अन्त में बच्चों को यहाँ आकर रहना है। हमारा यादगार भी यहाँ है।...जैसे शुरू में बाबा ने तुम बच्चों को बहलाया है, फिर पिछाड़ी में बहलाना शुरू करेंगे। जैसे पहले वालों को प्यार किया था, पिछाड़ी वालों का भी हक है। उसी समय ऐसे फील करेंगे जैसे बैकुण्ठ में बैठे हैं।'' सा.बाबा 27.5.71 रिवा.

परमात्मा के खिवैया स्वरूप का राज़ / परमात्मा, नईया और खिवैया का राज

परमात्म आत्मा रूपी नैया को इस विषय सागर से पार करके क्षीर-सागर में ले जाता है। इसका कुछ वर्णन चन्द्रकान्त वेदान्त में भी है। कैसे आत्मायें स्टीमर में चढ़ती और जब कोई ऐसा समय आता है तो आत्मायें दुनिया के लोभ-लालच, मोह आदि के आकर्षण में उससे उतर जाती हैं और स्टीमर चला जाता है।

''अभी तुम बच्चे जानते हो हम संगमयुग पर बैठे हैं। यह भी वण्डर है कि जो संगमयुग पर आकर स्टीमर में बैठकर फिर उतर जाते हैं। अब तुम संगमयुग पर पुरुषोत्तम बनने के लिए आकर नांव में बैठे हो, पार जाने के लिए। फिर पुरानी दुनिया से दिल उठा लेनी होती है।'' सा.बाबा 28.6.05 रिवा.

''यह एक ही समय है जब तुमको अपने को आत्मा समझ कर एक बाप को याद करना है।... सच की स्थापना में कितने विघ्न पड़ते हैं परन्तु गाया हुआ है कि सच की नाव हिलेगी-डुलेगी लेकिन डूबेगी नहीं।'' सा.बाबा 8.6.05 रिवा.

''तुम जानते हो बाप हमारी नैया उस किनारे ले जाते हैं।... बाप का खिवैया नाम भी अर्थ सहित रखा है ना। महिमा करते हैं - नईया मेरी पार लगाओ।'' सा.बाबा 7.7.05 रिवा.

विषय वैतरणी नदी अर्थात् विषय सागर और क्षीर सागर का राज

दुनिया में मनुष्यों की मान्यता कि इस जगत से परे कोई विषय वैतरणी नदी है, जिसमें गन्द भरा रहता है और जिसमें गोते खाते हुए आत्मायें अपने पापों का पश्चाताप करते हैं, दण्ड भोगते हैं परन्तु अभी बाबा ने ज्ञान दिया है कि ऐसी कोई नदी नहीं है, ये सारा विश्व ही विषय वैतरणी नदी है, जिसमें सभी आत्मायें विषय-भोग के वशीभूत दुख पाते हैं। ये विषय-भोग ही विषय वैतरणी नदी है। परमात्मा आकर ज्ञान देकर और राजयोग सिखलाकर पावन बनाते हैं और हमको इस विषय वैतरणी नदी से पार करके सुख-शान्ति की दुनिया क्षीर सागर अर्थात् स्वर्ग में ले जाते हैं।

''ज्ञान देने वाला एक बाप के सिवाए दूसरा कोई है नहीं। ज्ञान से ही सद्गति होती है।... अभी हम विषय वासना के दुबन में एकदम फंस पड़ते हैं।... बाबा को भी ड्रामा अनुसार आना ही पड़ता है। बाप कहते हैं - मैं बंधायमान हूँ, इन सबको दुबन से निकालने के लिए। इसको कहा जाता है कुम्भी-पाक नर्क।'' सा.बाबा 23.10.04 रिवा.

''गरुड पुराण में भी विषय वैतरणी नदी का वर्णन है ना।... पतित हैं तब पुकारते हैं शिवबाबा हमको इस पतित दुनिया से छुड़ाओ। अभी जब बाप आये हैं तब तुमको समझ पड़ी है कि यह विकार में जाना पतित काम है। आगे यह नहीं समझते थे।'' सा.बाबा 4.11.04 रिवा.

''बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं, माया रावण श्राप देती है। यह भी खेल बना हुआ है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं शिवालय स्थापन करता हूँ। भारत शिवालय था, अभी वेश्यालय है। विषय सागर में गोता खाते रहते हैं।... अभी भारत कितना भिखारी बन गया है। भारत ही कितना साहूकार था, स्वर्ग में एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था।'' सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

''गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है।... इस मायावी विषय वैतरणी नदी में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है।'' सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

''अभी यह पतित पुरानी दुनिया है। विषय वैतरणी नदी में गोता खाते रहते हैं। यह भी नहीं समझते कि विकार में जाना पाप है।... बुलाते हैं हे पतित-पावन आकर इस पतित दुनिया को पावन बनाओ।'' सा.बाबा 15.8.05 रिवा.

परमात्मा के सौदागर स्वरूप का राज़

परमात्मा ज्ञान-रत्नों का अखुट भण्डार है, वह आकर ये ज्ञान रत्न सर्व आत्माओं को देते हैं। कैसे ज्ञान रत्न देते और कैसे आत्माओं के साथ सौदा करते हैं, जिससे आत्माओं की बुद्धि पुरानी दुनिया की वस्तु-व्यक्तियों से निकल जाये और अविनाशी ज्ञान रत्नों को धारण कर मालामाल बन जायें। ये सब पुरुषार्थ परमात्मा ही कराते हैं।

''शिवबाबा की ये सब दुकान हैं। हू-ब-हू जैसे दुकानदारी में होता है, इसमें भी है। परन्तु यह व्यापार कोई विरला करे। व्यापार तो सभी को करना है। छोटे बच्चे भी ज्ञान और योग का व्यापार कर सकते हैं।'' सा.बाबा 26.12.04 रिवा.

''तुम ब्राह्मणों के सिवाए और कोई को यह रुहानी नॉलेज मिल न सके।... यह अविनाशी ज्ञान रत्नों की जवाहरात है। जिनके पास अच्छे-अच्छे रत्न होंगे, वे साहूकार बनेंगे और औरों को भी बनायेंगे।... बाप को कहा जाता है सौदागर-रत्नागर, रत्नों का

सौदा करते हैं। फिर जादूगर भी है क्योंकि उनके पास ही दिव्य-दृष्टि की चाबी है।... कइयों को ब्रह्मा का और कृष्ण का साक्षात्कार होता है।'' सा.बाबा 1.2.05 रिवा.

''बाप अनाड़ी व्यापारी थोड़े ही है। जो किसका लेवे और काम में न आवे, और ही ब्याज भरकर देना पड़े। ऐसे का थोड़ेही लेंगे।... भोलानाथ है तब तो उनको सब याद करते हैं।'' सा.बाबा 13.5.05 रिवा.

''मनुष्य को देवता बनाने की जादूगरी कोई कर न सके। बाबा सौदागर भी है, पुराना लेकर नया देते हैं।... मैं तुमको नम्बरवन कर्म सिखलाता हूँ।... बाप जो मत देते हैं, उसमें टीचर की मत, गुरु की मत, सोनार की मत, धोबी की मत आदि सब मतें आ जाती हैं।'' सा.बाबा 31.5.05 रिवा.

''अब बाप तुमको यह ज्ञान रत्नों का व्यापार सिखलाते हैं। वह व्यापार तो इनके आगे कुछ भी नहीं है।... बाबा ने इनमें प्रवेश किया और फट से सब छोड़ दिया।... ये हैं ज्ञान रत्न। कोई विरला व्यापारी इनसे व्यापार करे।'' सा.बाबा 20.7.05 रिवा.

''यह भी सब धन्धा है। अपनी अविनाशी कमाई करनी है, इसमें बहुतों का कल्याण होगा। जैसे इस ब्रह्मा ने भी किया।...बाबा बिजनेसमैन भी तो है ना। तुमसे कखपन पाई-पैसे लेकिर एक्सचेन्ज में क्या देता है।'' सा.बाबा 30.7.05 रिवा.

परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप का राज़

परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप का भक्ति मार्ग में बहुत वर्णन है और इसके विषय में विभिन्न धर्मों और मान्यताओं में बहुत विरोधाभास भी है परन्तु यथार्थ क्या है, वह कोई नहीं जानता है। भारत भूमि में परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप दोनों का समान महत्व है। ज्ञान मार्ग में इसका क्या महत्व है, जिसके कारण भक्ति मार्ग में इतना महत्व है, इस रहस्य का ज्ञान भी अभी बाबा के द्वारा मिला है, जब निराकार परमात्मा ने स्वयं साकार ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर इस सत्य का ज्ञान दिया और अनुभव कराया। निराकार साकार के बिना कोई कार्य नहीं कर सकता और साकार निराकार परमात्मा के बिना सृष्टि के नव-निर्माण का कोई कार्य नहीं कर सकता। दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं, इसलिए मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए दोनों स्वरूपों की याद आवश्यक है। निराकार ज्ञान सागर है तो साकार अनुभवों का सागर है।

परमात्मा के निराकार और साकार दोनों स्वरूपों की स्मृति क्यों आवश्यक है? परमात्मा सर्व ज्ञान, गुण और शक्तियों का सागर है, सर्वशक्तिवान है, उनकी याद से ही आत्मा में ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा होती है और साकार को याद करते हैं तो उनके समान पुरुषार्थ की प्रेरणा मिलती है क्योंकि योग के नियमानुसार आत्मा जिसको याद करती है, उसके गुण-धर्म उस पर अवश्य ही प्रभावित होते हैं। हम आत्माओं को निराकार दुनिया में भी जाना है तो साकार में भी पार्ट बजाना है तो दोनों की सफलता के लिए परमात्मा को निराकार और साकार दोनों स्वरूपों से याद करना है क्योंकि निराकार ने साकार द्वारा कर्म करके दिखाये हैं। परन्तु यहाँ ये बात स्मरणीय है कि साकार को याद करते हुए भी उसमें निराकार की उपस्थिति को भूलना नहीं चाहिए क्योंकि साकार में निराकार की याद से ही आत्म-कल्याण सम्भव है।

निराकार परमात्मा और साकार ब्रह्मा बाप दोनों को देखें तो एक सारे कल्प परमधाम में रहता है और दूसरा सारे कल्प इस सृष्टि पर पार्ट में रहता है।

''तुम बच्चों को यह सारी नॉलेज बुद्धि में रखनी है।... बच्चों को यह अच्छी रीति निश्चय में रखना है कि हम आत्माओं को पढ़ाने वाला निराकार परमपिता परमात्मा है।'' सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

''प्रैक्टिकल में भगवान के जितना साकार सम्बन्ध में नजदीक आयेंगे, उतना पुरुषार्थ में भी नजदीक आयेंगे।... भिन्नता मिटाकर एकता लाने के लिए दो बातें लानी पड़ें। एक तो एकनामी बन सदैव हर बात में एक का ही नाम लो और एकॉनामी वाले बनना है। समय, संकल्प और ज्ञान के खजाने की भी एकॉनामी चाहिए।'' अ.बापदादा 21.5.70

‘‘ऐसे ही निराकार और साकार बाप दोनों को साथ वा सामने रखते हुए हर कर्म वा हर संकल्प करो तो यह चारो ही बातें अर्थात् हेल्थ, वेल्थ, हैप्पी और होली ऑटोमेटिकली आ जायेंगी। सिर्फ निराकार को वा सिर्फ साकार को याद करने से चारो बातें नहीं आयेंगी।’’ अ.बापदादा 14.6.72

‘‘जैसे बाप महान है, वैसे ही बाप के साथ जिन आत्माओं का हर कदम व हर चरित्र के साथ सम्बन्ध व पार्ट है, वह भी महान है। इस महानता को अच्छी रीति से जानते हुए हर कदम उठाने से हर कदम में पद्मों की प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है क्योंकि सारा आधार स्मृति पर है। ’’ अ.बापदादा 23.1.75

‘‘कोई की बुद्धि में रहता है कि परमात्मा तो सब कुछ जानते हैं। हम जो कुछ अच्छा या बुरा करते हैं, वह सब जानते हैं। इसको अन्धश्रृद्धा का भाव कहा जाता है।... मनुष्य जो कर्म करते हैं, उनका अच्छा या बुरा फल ड्रामानुसार उनको मिलता ही है। इसमें बाप का कोई कनेक्शन नहीं है।... जानी जाननहार अक्षर ही रांग है।’’ सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

‘‘भक्ति मार्ग में प्रार्थना करते हैं परन्तु भगवान को कान कहाँ हैं, जो सुने। बिगर कान, बिगर मुख, सुनेंगे, बोलेंगे कैसे?... तुम बाप को जितना याद करेंगे, उतना पाप नाश होंगे।... भक्ति मार्ग में भावना का भाड़ मिल जाता है, वह भी ड्रामा में नूँध है। शरीर बिगर बाप बात कैसे करेंगे, सुनेंगे कैसे?’’ सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

‘‘बहुत बच्चे छिपाते हैं, बाबा के आगे नहीं आते हैं। बाबा ने कहा है इन (साकार) से मत छिपाओ। इनको तुम सभी सुनाओ तो माफ हो जायेगा। फिर भी यह मेरा बच्चा है, इनको सच बता दो। मैं तो जानता ही हूँ, परन्तु इनको कैसे पता पड़े, इसलिए सभी इनको सुनाओ। आगे का जन्म-जन्मान्तर का हिसाब तो मेरे पास है। इस जन्म का जो है सो उनको सुनाओ तो मैं भी सुनूँगा।... माफ वह करेंगे, मैं नहीं।’’ सा.बाबा 19.11.72 रिवा.

Q. क्या परमात्मा परमधाम में होते हुए भक्ति मार्ग या ज्ञान मार्ग में किसी की बात को सुनता है?

परमात्मा सर्व आत्माओं का बाप का राज़

आत्मा और परमात्मा दोनों अविनाशी हैं। परमात्मा सर्व आत्माओं का अविनाशी बाप है, उनसे सर्व आत्माओं को पवित्रता-सुख-शान्ति, मुक्ति-जीवनमुक्ति, ज्ञान, गुण-शक्तियों का जन्मसिद्ध अधिकार मिलता है इसलिए सर्व आत्मायें उनको याद करती हैं और बाप भी सर्व आत्माओं को याद करते हैं क्योंकि उनको सर्व आत्माओं को वर्सा देना है, सर्वात्माओं का कल्याण करना है।

‘‘बाप का परिचय तो जरूर सबको मिलना चाहिए। पिछाड़ी में बाप को तो जानेंगे ना। विनाश के समय सभी को पता पड़ता है कि बाप आया हुआ है।’’ सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

‘‘बाप कहते हैं मैं तो सबका बाप हूँ, हमारा सब पर प्यार है। यहाँ बैठे भी बाप की नजर अनन्य बच्चों की तरफ जाती है, जो बाप को बहुत प्रेम से याद करते हैं और सर्विस भी करते हैं।... जो मुझे याद नहीं भी करते हैं तो भी मैं सबको याद करता हूँ क्योंकि मुझे तो सबको वापस ले जाना है।’’ सा.बाबा 24.11.04 रिवा.

परमात्मा के सर्वशक्तिवान स्वरूप का राज

प्राय: मनुष्य सर्वशक्तिवान का अर्थ समझते हैं कि परमात्मा जो चाहे सो कर सकता है या इस विश्व में जो कुछ भी हो रहा है, वह परमात्मा ही कर रहा है परन्तु मनुष्यों की ये मान्यता सत्य नहीं है। परमात्मा का भी इस विश्व-नाटक में निश्चित पार्ट है, वही आकर बजाता है। परन्तु वह किसी भी स्थान पर बिना किसी बाधा के जा सकता है, किसी भी स्थान के विषय में जान सकता है परन्तु वह ड्रामा के विधि-विधान के अनुरूप ही कार्य करता है। भले सृष्टि के नव-निर्माण के लिए ब्रह्मा बाबा का तन निश्चित है परनतु फिर भी वह किसी के भी तन में प्रवेश होकर कार्य कर सकता है। वह माया रावण पर जीत पहनाता है, इसलिए भी उसे सर्वशक्तिवान कहा जाता है क्योंकि बाबा कहता है - माया भी सर्वशक्तिवान है।

परमात्म सर्व समर्थ, सर्वशक्तिवान है और वह जो चाहे वह कर सकता है, चाहे तो किसके भी दिल की बात को जान सकता है परन्तु वह विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता, उसके विधि-विधान को जानने वाला और कर्म के विधि-विधान को जानने वाला होने के कारण उसके विधि-विधान के विपरीत कोई भी कार्य नहीं करता है और न ही उनको कोई ऐसी बात को करने या जानने की आवश्यकता है।

परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का राज़ और अनुभव

परमात्मा कितना रहमदिल है और कैसे आत्माओं का कल्याण करते हैं, इस सत्य का ज्ञान भी अभी उनकी ब्रह्मा तन में प्रवेशता से ही अनुभव होता है। कैसे परमात्मा अपकारी पर भी उपकार करते हैं।

''कई विकार में जाते रहते फिर भी बाबा के पास आते रहते हैं। उनसे पूछते क्यों आते हो ? तो कहते क्या करूँ, रह नहीं सकता हूँ। यहाँ आता हूँ शायद तीर लग जाये। आप बिगर हमारी सद्गति कौन करेगा।... निश्चय भी होता है कि बाबा हमको पतित से पावन गुलगुल बनाते हैं।... ऐसे सच बोलने वाले बच्चों पर बाबा को भी तरस पड़ता है। फिर भी ऐसे ही होगा, नथिंग न्यू।... राजधानी में सब चाहिए। बाबा कहते बच्चे हिम्मत नहीं छोड़ो।'' सा.बाबा 6.12.04 रिवा.

''अधम से अधम वेश्यायें हैं, उनकी भी सर्विस करनी चाहिए।... उनको ज्ञान देने से बेचारी बहुत खुश होंगी क्योंकि वे भी अबलायें हैं।... गरीबों का है ही भगवान।... गरीब ही कुछ न कुछ भेज देते हैं।... यह कोई नई बात नहीं। बाप साक्षी होकर देखते हैं।'' सा.बाबा 23.8.05 रिवा.

परमात्मा और ड्रामा का राज़

परमात्मा इस विश्व-नाटक का रचता नहीं है परन्तु इसका पुर्ण ज्ञाता अवश्य है। सभी आत्माओं की तरह परमात्मा का भी इस विश्व-नाटक में अनादि-अविनाशी पार्ट है परन्तु उनका पार्ट अन्य आत्माओं से विशेष है। मनुष्यों की यह भ्रान्ति है कि आत्माओं को सुख या दुख परमात्मा ही देते हैं। परमात्मा को दुखहर्ता-सुखकर्ता कहा जाता है। वास्तव में परमात्मा न सुख देता है और न दुख देता है। वह ड्रामानुसार सुख का रास्ता बताता है, जो चलता है, वह पाता है। दुनिया में किसको सुख अधिक है और किसको सुख कम है। यदि परमात्मा ने दिया तो उसका ये कर्म यथार्थ कैसे कहा जायेगा! क्योंकि वह तो समदर्शी न्यायकारी है। वह सबको एक समान ही रास्ता बताता है और उनकी मदद भी ड्रामा के नियमानुसार सबको समान रूप से मिलती है परन्तु हर आत्मा ड्रामा में अपने पार्ट अनुसार ही उसको ग्रहण है जीवन में लाता है।

''बाप कहते हैं - यह ड्रामा बना हुआ है, मैं भी ड्रामा के बन्धन में बँधा हुआ हूँ। इस ड्रामा से मैं भी छूट नहीं सकता हूँ।... मैं किसको थोड़े ही दुख देता हूँ। यह तो हर एक का अपना पार्ट है।'' सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

''अभी बाप आकर नॉलेज देते हैं। इस समय वे जानते हैं कि हमको ज्ञान देना है। भक्ति मार्ग में उनकी बुद्धि में यह बातें नहीं रहती हैं कि हमको जाकर ज्ञान देना है। यह सब ड्रामा में नूँध है। बाबा कुछ करते नहीं हैं। ड्रामा में दिव्य-दृष्टि मिलने का पार्ट है तो साक्षात्कार हो जाता है। बाप कहते हैं - ऐसे नहीं कि मैं बैठकर साक्षात्कार कराता हूँ। यह सब ड्रामा में नूँध है।... ड्रामा में नूँध होगी तो हो जायेगा। मैं भी ड्रामा में बांधा हुआ हूँ।'' सा.बाबा 01.02.05 रिवा.

Q. क्या परमात्मा भक्तिमार्ग में आता है या साक्षात्कार कराता है या बाप का पार्ट चलता है ?

''ऐसे नहीं कि मेरा मन्दिर लूटते हैं तो मैं कुछ करूँ। ड्रामा में लूटने का ही है, फिर भी लूट ले जायेंगे।... ड्रामा में विनाश की भी नूँध है, सो फिर भी होगा। मैं कोई फूंक नहीं देता हूँ कि विनाश हो जाये। यह भी ड्रामा में नूँध है।'' सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

''ड्रामा में पहले से ही नूँध है। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ कराता रहता है, तुम करते रहते हो। जानते हो ड्रामा में हमारा अविनाशी पार्ट है।... मेरा जो ड्रामा में पार्ट है, वही बजाने आता हूँ।'' सा.बाबा 1.6.05 रिवा.

परमात्मा और कर्म का राज़

दुनिया में किसी भी आत्मा उसके कर्म के आधार पर ही होती है। परमात्मा की इतनी महिमा है, तो जरूर उसने आकर ऐसे कर्म किये हैं, जिनसे आत्माओं को सुख मिलता है और आत्मायें दुख के समय उनको याद करती हैं। यह भी आत्माओं का परमात्मा के साथ कर्म का हिसाब-किताब है कि परमात्मा हमको सुख देता और हम भक्ति मार्ग में उसकी महिमा करते हैं। ''मेरी परम-आत्मा, सर्वशक्तिवान, जानी-जाननहार, ज्ञान का सागर... कहकर महिमा करते हैं। यह मेरी महिमा कोई मुफ्त की थोड़ेही है। मैंने काम किया है और मेरा कुछ कर्तव्य है, मैंने बहुत ऊंचा काम यहाँ किया है, इसलिए महिमा है।''

मातेश्वरी 24.06.65

Q. क्या परमात्मा परमधाम में किसकी पुकार को सुनता है?

Q. क्या परमात्मा भक्ति मार्ग में आकर भक्तों को साक्षात्कार कराता है? यदि हाँ तो कैसे?

Q. क्या परमात्मा भोग आदि स्वीकार करता है?

Q. क्या परमात्मा किसी आत्मा को अधिक और किसको कम देता है अर्थात् परमात्मा का किससे अधिक और किससे कम प्यार है? यदि हाँ तो कैसे?

Q. क्या परमात्मा को भी उसके किये हुए कर्मों का फल मिलता है?

आत्मा का राज / आत्मिक स्वरूप का राज़

आत्मा एक अनादि-अविनाशी सत्ता है। आत्मा न परमात्मा का अंश है, न आत्मा परमात्मा बन सकती है और न ही आत्मा परमात्मा में लीन होती है। आत्मायें और परमात्मा एक ही वंश की हैं, दोनों का स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है और अविनाशी है। परमात्मा भी एक आत्मा है परन्तु वह ज्ञान-गुण-शक्तियों में अन्य आत्माओं से भिन्न है। आत्मा जन्म-मरण के चक्कर में आकर पावन और पतित बनती है, परमात्मा सदा पावन है और वही आकर आत्माओं को पावन बनाते हैं। परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है, आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। जो आत्मा देह में रहते देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है, वह इस जीवन का परम-आनन्द अनुभव अवश्य करती है परन्तु ये एक विडम्बना है कि ड्रामानुसार देहभान और देहाभिमान आता ही है और देहाभिमान के वशीभूत आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में सदा काल स्थित नहीं हो पाती और न ही हो सकती है। इस विश्व-नाटक के यथार्थ राज़ समझने वाली निश्चयबुद्धि या दिल से समझने का पुरुषार्थ करने वाली आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस परमानन्द का यथा शक्ति अनुभव करती है। निश्चयबुद्धि अर्थात् अंशमात्र भी संशय न हो अर्थात् व्यर्थ संकल्प न हो, संकल्प करते ही उस स्थिति में स्थित हो जाये तो वह सदा इस परमानन्द को अनुभव करेगी। इस परम आनन्द की अनुभूति होना इस संगमयुग पर ही सम्भव है, यही संगमयुग की विशेषता है। आत्मा देह में भृकुटी में निवास करती है। आत्मा ही पतित और पावन बनती है। मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है, जो हर कल्प हर आत्मा को परमात्मा द्वारा मिलता ही है। हर आत्मा कल्पान्त में अपने घर परमधाम अर्थात् मुक्ति में जाती है और अपने समय पर पार्ट बजाने आती है। जो भी आत्मा जब भी इस धरा पर पार्ट बजाने आती है तो पहले जीवनमुक्ति का सुख भोगती है अर्थात् जीवन में रहते भी आत्मा को दुख की कोई अनुभूति नहीं होती है।

पवित्रता आत्मा का मूल गुण है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक दृष्टि-वृत्ति। जहाँ पवित्रता है वहाँ आत्मा को सर्व सुख स्वत: प्राप्त होते हैं, इच्छामात्रम अविद्या होती है। उसकी ब्रह्मचर्य की धारणा स्वभाविक होती है, उसके सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है। पवित्र आत्मा को समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: आता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है। इसलिए वह सदा निर्भय-निश्चिन्त रहती है और सदा सुख का अनुभव करती है।

परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है। आत्मा उनके वंश की उनकी सन्तान भी सच्चिदानन्द स्वरूप है अर्थात् आत्मा भी परमात्मा के समान ही सभी ज्ञान, गुण, शक्तियों परिपूर्ण है परन्तु जन्म-मरण में आने से देहभान और देहाभिमान के कारण देह के

गुण-धर्म आत्मा पर प्रभावित होने से आत्मा का ज्ञान, गुण, शक्तियां सुसुप्त हो गई, जो यथार्थ ज्ञान और परमात्मा के संग से पुन: जाग्रत होती हैं।

''बाप यह नॉलेज जानते हैं, जो नॉलेज तुम्हारे में भी इमर्ज हो रही है, जिस नॉलेज से ही तुम इतना ऊंच पद पाते हो। बाप है बीजरूप, उसमें झाड़ के आदि, मध्य, अन्त की नॉलेज है।... अभी संगम पर तुमको यह सारा ज्ञान मिल रहा है।''

सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

आत्मा के देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से सारे कार्य और सारे पुरुषार्थ स्वत: होते हैं। इसीलिए कहावत है - एकै साधे सब सधैं, सब साधे सब जायें।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को परमात्मा की याद स्वत: आती है और परमात्मा की यथार्थ याद से ही आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को आत्मिक स्थिति स्थाई होती है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति स्वत: होती है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा के द्वारा सेवा स्वत: होती है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को सेवा स्वत: होती है, जिससे भविष्य प्रालब्ध स्वत: बनती है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को ईश्वरीय गुणों और दैवी गुणों की धारणा स्वत: होती है अर्थात् जीवन से स्वत: प्रगट होते हैं।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को कब कोई दुख हो नहीं सकता।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को सर्व आत्माओं का सहयोग स्वत: मिलता है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा के सर्व संकल्प स्वत: सिद्ध होते हैं और आवश्यक पदार्थ स्वत: प्राप्त होते हैं, इसलिए उसकी इच्छा मात्रम अविद्या की स्थिति होती है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को ब्रह्मचर्य व्रत की धारणा स्वत: होती है।

परमपिता परमात्मा का अवतरण होता ही है आत्माओं को आत्मिक स्वरूप की अनुभूति कराने के लिए और उस स्थिति में स्थित होने का पुरुषार्थ कराने के लिए।

''जो भी बाप के गुण हैं उन गुणों का स्वरुप होना इसको कहते हैं - स्व-स्थिति वा अनादि स्थिति।... जिन चार बातों के होने से अनादि स्थिति आटोमेटिकली रहती है? सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम की स्थिति स्वत: ही रहती है। वे चार बातें हैं - हेल्थ, वेल्थ, हैप्पी और होली।'' अ.बापदादा 14.06.72

आत्मा और शरीर के अस्तित्व का राज़ और शरीर में आत्मा के स्थान का राज /
आत्मा और देह अर्थात् प्रकृति और पुरुष के सम्बन्ध का राज़ और अनुभव

आत्म-कल्याण के पुरुषार्थी को इस सत्य का ज्ञान और अनुभव परमावश्यक है कि आत्मा भृकुटी में रहती है, जहाँ से सारे शरीर को संचालित करती है। जैसे गीता में देह की वस्त्र से तुलना की गई है ऐसे ही बाबा ने आत्मा को ड्राइवर और देह को मोटर के रूप में स्पष्ट किया है।

गीता में भी लिखा है - देह आत्मा का वस्त्र है परन्तु आत्मा का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण इस सत्य को समझ नहीं पाते अर्थात् वस्त्र और वस्त्र धारणकर्ता का अलग-अलग यथार्थ रीति अनुभव भी नहीं कर पाते हैं। देह के बिना आत्मा कोई कर्म नहीं कर सकती और आत्मा के बिना देह निर्जीव है। इसीलिए परमात्मा को भी देह में आकर ही ज्ञान देना होता है, पतित से पावन बनाना होता है। जैसी आत्मा की स्थिति होती है, वैसी ही उसको देह मिलती है। सुख-दुख को भोगने वाली आत्मा है परन्तु दोनों के भोगने का आधार देह है। सूक्ष्म या स्थूल देह के बिना आत्मा कोई अनुभव नहीं कर सकती है। सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व भी स्थूल शरीर के आधार पर ही अस्तित्व में आता है।

''देह में भृकुटी है आकाल आत्माओं का तख्त। आत्मा एक तख्त छोड़कर झट दूसरा लेती है।... अभी है ब्राह्मण कुल का तख्त। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग का तख्त।'' सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

''गोल्डन एज, सिल्वर एज, कॉपर एज, आइरन एज यहाँ कहा जाता है, शान्तिधाम में तो है शान्ति।... गोल्डन एज्ड जीवात्मा बनती है।... पहला नम्बर भूत है देहाभिमान, इसके बाद ही और विकार आते हैं।'' सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

''बाप की श्रीमत है - अपने को आत्मा निश्चय करो। बच्चों को आत्मा का परिचय भी दिया है। आत्मा भृकुटी के बीच निवास करती है। आत्मा अविनाशी है, यह तख्त अर्थात् शरीर विनाशी है।'' सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

''जैसे बापदादा अशरीरी से शरीर में आते हैं ऐसे ही तुम सभी बच्चों को भी अशरीरी होकर के शरीर में आना है।''

अ. बापदादा 13.11.69

Q. आत्मा थकती है या शरीर थकता है?

वास्तव में थकता शरीर है लेकिन थकावट की महसूसता आत्मा करती है क्योंकि ड्राइवर को गाड़ी का ख्याल तो रहेगा ना।

''रात को भी जागते हैं परन्तु आत्मा थक जाती है तो सोना होता है। आत्मा के सोने से शरीर भी सो जाता है। आत्मा न सोये तो शरीर भी न सोये। थकती आत्मा है।... तुम बच्चों को आत्माभिमानी होकर रहना है, इसमें ही मेहनत है।''

सा.बाबा 7.2.05 रिवा.

आत्मा निर्लेप नहीं, आत्मा के पतित और पावन बनने का राज / आत्मा के लेप-क्षेप का राज

''तुम जानते हो विकर्मों का बोझ आत्मा पर है न कि शरीर पर। अगर शरीर पर बोझा होता तो जब शरीर को जला देते हैं तो उसके साथ पाप भी जल लायें। आत्मा अविनाशी है, खाद आत्मा में ही पड़ती है।'' सा.बाबा 16.5.05 रिवा.

भक्ति मार्ग में अज्ञानता के कारण आत्मा और परमात्मा का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण दोनों को एक ही समझने के कारण आत्मा को निर्लेप कह देते हैं जबकि शब्द भी कहते हैं पापात्मा-पुण्यात्मा। पापात्मा-पुण्यात्मा शब्द ही सिद्ध करते हैं कि लेप-क्षेप आत्मा पर ही चढ़ता है। आत्मा के कर्मों के हिसाब-किताब का लेप-क्षेप आत्मा पर ही चढ़ता है, इसलिए आत्मा निर्लेप नहीं है। ये सृष्टि कर्म और फल, सुख और दुख का खेल है, इसमें ड्रामा और कर्मानुसार सुख और दुख हर आत्मा को भोगना ही पड़ता है। आत्मा के अच्छे या बुरे कर्मों का प्रभाव आत्मा पर ही पड़ता है। आत्मा ही पावन और पतित बनती है। इस सत्य का ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है और पापात्मा से पुण्यात्मा बनने का अर्थात् लेप-क्षेप से मुक्त अर्थात् कर्मातीत होने का रास्ता बताया है।

''आत्मा निर्लेप नहीं है। आत्मा ही जैसे-जैसे अच्छे या बुरे कर्म करती है, ऐसा फल पाती है। बुरे संस्कारों से आत्मा पतित बन जाती है।'' सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

''अच्छे-बुरे संस्कार आत्मा में ही होते हैं। अच्छे संस्कार बदलकर बुरे संस्कार हो जाते हैं, फिर बुरे संस्कार योगबल से अच्छे होते हैं। बाप में भी पढ़ाने के संस्कार हैं ना। जो आकर समझाते हैं। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।... सतयुग में ये ज्ञान की पढ़ाई के संस्कार पूरे हो जाते हैं।'' सा.बाबा 25.9.04 रिवा.

''साधू-सन्त कहते आत्मा निर्लेप है। बाप समझाते हैं - संस्कार अच्छे या बुरे आत्मा ही ले जाती है, जिसके अनुसार जन्म लेती है।... आत्मा सतोप्रधान थी, फिर उसमें खाद पड़ते-पड़ते तमोप्रधान बनी है।'' सा.बाबा 29.1.05 रिवा.

आत्माओं के पूज्य और पुजारीपन का राज़ / आप ही पूज्य और आप ही पुजारी का राज़

पूज्य ही पुजारी बनते हैं, इस सत्य का ज्ञान भी अभी परमात्मा द्वारा मिला है। कैसे देवी-देवता घराने की आत्मायें सतयुग-त्रेतायुग में स्वयं ही देवता स्वरूप में पूज्य होती हैं और द्वापर-कलियुग में जब पतित बनती तो पहले निराकार शिवबाबा की शिवलिंग बनाकर पूजा करती हैं और बाद में अपने ही पूज्य स्वरूपों की पूजा करने लगती हैं। इसीलिए गायन है आपही पूज्य और आपही पुजारी। यह गायन आत्मा के लिए है परन्तु अज्ञानतावश मनुष्य परमात्मा के लिए समझ लेते हैं।

‘‘जितना यहाँ अपनी मूर्ति में सर्व बातें धारणा करेंगे उतना ही भविष्य राज्य तो मिलेगा ही लेकिन द्वापर में आपकी जो जड़ मूर्तियां बनेंगी वे भी इस संगम की मूर्ति प्रमाण ही बनेंगी।’’ अ.बापदादा 29.6.70

‘‘जो पूज्य देवी-देवता थे, फिर द्वापर से वे ही पुजारी बनते हैं। मनुष्य फिर परमात्मा के लिए कह देते आपही पूज्य और आपही पुजारी।’’ सा.बाबा 20.7.05 रिवा.

आत्मा रूपी बैटरी चार्ज और डिस्चार्ज होने का राज

आत्मा के सुख-दुख का आधार उसके कर्म हैं और कर्मों का आधार कर्म का ज्ञान और आत्मिक शक्ति है। आत्मा में आत्मिक शक्ति का खाता जमा होता है तो आत्मा के कर्म श्रेष्ठ होते हैं और जीवन सुखी होता है, आत्मा सुख का अनुभव करती है और जब आत्मिक शक्ति का ह्रास हो जाता है, आत्मा पर देहाभिमान प्रभावी हो जाता है तो आत्मा में विकारों की प्रवेशता हो जाती है और आत्मा के कर्म गिरने से आत्मा दुख-अशान्ति का अनुभव करती है। फिर कैसे आत्मा में आत्मिक शक्ति आती है अर्थात् आत्मा रूपी बैटरी कैसे चार्ज होती है, उसका ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है, जिससे हम अपनी आत्मा रूपी बैटरी को चार्ज करते हैं। सारे कल्प में आत्मा की शक्ति का ह्रास ही होता है। केवल पुरुषोत्तम संगमयुग पर जब आत्मा का सर्वशक्तिवान परमात्मा से मिलन होता है तब परमात्मा सारा ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखलाते हैं, जिस योग से ही आत्मा में शक्ति पुन: जाग्रत होती है। इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने अभी बताया है।

आत्मा और परमात्मा के निराकार स्वरूप का राज / आत्मा-परमात्मा का भेद और उनकी समानता का राज

आत्मा और परमात्मा दोनों का मूल स्वरूप एक समान ही निराकार ज्योतिर्बिन्दु है और दोनों के गुण-कर्तव्य भी समान है। दोनों के रूप, गुण-धर्म ऐसे ही समान हैं जैसे बाप और बच्चे के समान होते हैं। परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है और आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो अपने को परमात्मा के समान ही ज्ञान-गुण-शक्तियों से परिपूर्ण अनुभव करती है। इसीलए बाबा ने अनेक बार कहा है - मैं तुम बच्चों को आप समान बनाता हूँ। परन्तु परमात्मा सदा पावन है और आत्मायें पावन भी बनती हैं तो पतित भी बनती है। परमात्मा सुख-दुख से न्यारा है तो आत्मायें सुख-दुख दोनों का अनुभव करती हैं।

‘‘समा जाना अर्थात् समान स्वरूप का अनुभव करना।... जब स्वरूप बाप समान अर्थात् निराकार है तो गुण भी बाप समान होंगे।... बाप समान सर्व गुण स्वयं में अनुभव होते हैं, जैसे ब्रह्मा का अनुभव साकार में था।’’ अ.बापदादा 7.10.75

आत्मा की सच्ची कमाई का राज

परमात्मा आत्मा को ऐसी कमाई करने का रास्ता बताते हैं, जिसका फल सतयुग-त्रेतायुग अर्थात् आधे कल्प तक मिलता है। संगमयुग पर आत्मा परमात्मा के साथ रहकर ऐसी अविनाशी कमाई करती है, जिससे आधा कल्प सदा सुख पाती है। आत्मा ये सच्ची कमाई ही आत्मा के साथ जाती है और सब कमाई तो विनाश के समय मिट्टी में मिल जाती है। परमात्मा की याद में श्रेष्ठ कर्म करना ही सच्ची कमाई का साधन है। अपने तन-मन-धन को ईश्वरीय कार्य में लगाकर हम आधे कल्प के लिए सच्ची कमाई जमा कर सकते हैं, जो सभी आत्मायें नम्बरवार यथा शक्ति करते हैं।

आत्मा के 84 जन्मों का राज

शास्त्रों में लख चौरासी का गायन तो है परन्तु उसका यथार्थ अर्थ कोई नहीं जानता है, जो परमात्मा ही अभी आकर बताते हैं कि सारे कल्प में एक आत्मा के अधिक से अधिक 84 जन्म और कम से कम एक जन्म हो सकता है। अपने जन्मों और पार्ट के समय अनुसार हर आत्मा आधा समय सुख का और आधा समय दुख का पार्ट बजाती है।

आत्मा के अविनाशी संस्कारों का राज

आत्मा अविनाशी है तो उसमें संस्कार अर्थात् पार्ट भी अविनाशी नूँधा हुआ है, जो न घिसता है और न ही मिटता है, वह हर क्षण परिवर्तन अवश्य होता है और कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इस प्रकार कोई भी आत्मा इस विश्व-नाटक के पार्ट से सदा काल के लिए छूट नहीं सकती है।

आत्मा के संस्कार अविनाशी हैं, जो प्राय: सारे कल्प में एक ही स्तर के रहते हैं, भले वे सतोप्रधान या तमोप्रधान बनते हैं और उस स्तर पर रहते हुए ही आत्मा सुख या दुख का अनुभव करती है। आत्मा के मूल संस्कारों की प्रत्यक्षता संगमयुग पर होती है, जिससे आत्मा के सारे कल्प के संस्कार-स्वभाव की प्रत्यक्षता होती है। यथा राजा बनने वाले के संस्कार आदि से अन्त तक शालीनता के संस्कार और पद होंगे, जो दास-दासी, उद्योगी, कृषक स्तर की आत्मायें हैं या किसी अन्य योनि की आत्मायें भी हैं, उनके आदि से अन्त तक उसी स्तर के संस्कार-स्वभाव और प्राप्ति होगी परन्तु हर स्तर की आत्मा अपने स्तर पर ही सुख-दुख का अनुभव करेगी, जिस अनुभव में समानता अवश्य होगी। सुख-दुख का सम्बन्ध पद से नहीं है लेकिन आत्मा की पवित्रता की शक्ति पर निर्भर करता है। जैसे ब्रह्मा बाबा प्रथम नारायण, बीच में राजा विक्रमादित्य और अन्त में राजा न होते हुए भी संस्कार राजसी ही थे और संगम पर आने के बाद ब्रह्मा रूप में भी वही संस्कार रहे। संगम पर अपनी कर्मेन्द्रियों के भी पूर्ण राजा बनें, ऐसे ही हर आत्मा के संस्कार-स्वभाव का विधि-विधान है। विश्व-नाटक की विशेषता ये है कि हर स्तर की आत्मा अपने स्तर के संस्कारों में रहते हुए ही उनकी सतोप्रधानता और तमोप्रधानता के कारण सुख-दुख की स्थिति का अनुभव करती है क्योंकि ये विश्व-नाटक ही सुख और दुख का है, जिस अनुभव में हर आत्मा समान है। इसलिए ही ये विश्व-नाटक न्यायपूर्ण, सत्य और कल्याणकारी कहा जाता है। बाबा ने अनेकानेक मुरलियों में कहा है कि अभी तुम सारे कल्प के संस्कार भरते हो, अभी के संस्कार-स्वभाव से सारे कल्प के जीवन की प्रत्यक्षता होती है। संस्कारों अनुसार वही स्तर उनको अच्छा लगेगा।

''यहाँ जास्ती माया वा प्रकृति का दास बनेंगे तो उनको वहाँ भी दास-दासी बनना पड़ेगा क्योंकि संस्कार ही दास-दासी का हो गया।... अपने आप का स्वयं टीचर बन ऐसी प्रैक्टिस करनी है।'' अ.बापदादा 12.3.72

आत्मा की विभिन्न योनियों का राज

मनुष्यों की या शास्त्रों को लिखने वालों की ऐसी मान्यता है मनुष्यात्मा 84 लाख योनियों में भटकने के बाद मनुष्य योनि में जन्म लेती है परन्तु 84 लाख योनियों की किसने कैसे गिनती की, इसका कोई प्रमाण नहीं है। बाबा ने इसके विषय में कोई विशेष नहीं बताया है परन्तु ये अवश्य बताया है कि सारे कल्प में मनुष्यात्मा अधिक से अधिक 84 जन्म लेती है। बाबा के इन्ही महावाक्यों के आधार पर उन्होंने 84 लाख योनियों की बात लिख दी है।

मनुष्यात्मा और अन्य योनियों की आत्माओं का राज

भक्ति मार्ग में 84 लाख योनियों का गायन है परन्तु इनकी गणना कैसे की गई, इसका कोई प्रमाण नहीं है और इनकी गणना करके निश्चित करना न किसी मनुष्य के वश का है और न साइन्स के वश की बात है। इसका निर्णय करना दिव्य बुद्धि से ही सम्भव है, इसलिए बाबा ने भी इसके विषय में कुछ नहीं कहा है और न ही हमको इसकी आवश्यकता है। बाबा ने एक मनुष्यात्मा के अधिक से अधिक 84 जन्म होने की बात कही है, जिसके आधार पर ही 84 लाख योनियों की बात कही गई है। भले ही जीवात्माओं की 84 लाख योनियां हो सकती है।

बाबा ने यह भी बताया है कि हर योनि की आत्माओं की एक निश्चित संख्या है और हर आत्मा अपनी योनि में ही जन्म-पुनर्जन्म लेती है क्योंकि हर योनि की आत्माओं के अपने-अपने नैसर्गिक संस्कार होते हैं, अपने गुण-धर्म होते हैं, इसलिए हर योनि की आत्मा अपनी योनि में ही पुनर्जन्म लेकर पार्ट बजाती है, जिसके लिए बाबा ने आत्मा की बीज से तुलना की है। इसलिए मनुष्यात्मा आत्मा पशु योनियों में जन्म नहीं लेती है। जैसे आम के बीज में आम के संस्कार होते हैं ऐसे ही हर योनि की

आत्मा में उसके अविनाशी संस्कार भरे हुए हैं, जिस अनुसार वह उसी योनि में जन्म लेती है भले कर्मों अनुसार हर योनि की आत्मा सुखी-दुखी होगी परन्तु उसी योनि में। इस सत्य का ज्ञान भी अभी ही परमात्मा ने दिया है कि हर योनि की अपनी-अपनी आत्मायें हैं और उनका अपना-अपना पार्ट है। मनुष्यात्मा मनुष्य योनि में ही अपने किये हुए कर्मों का फल सुख या दुख के रूप में भोगती है, उसके लिए पशु योनियों में जन्म लेने की आवश्यकता नहीं है। प्राय: लोगों की ऐसी मान्यता है कि मनुष्यात्मा अपने विकर्मों का फल भोगने के लिए अन्य निकृष्ट योनियों में जन्म लेती है परन्तु अन्तर्दृष्टि से देखें तो मनुष्य योनि में भोग पशु योनियों से भी अधिक है क्योंकि जो जितना ही अधिक बुद्धिमान होगा, वह उतना ही चिन्तनशील होगा और उसको सुख या दुख की महसूसता भी उतनी ही अधिक होगी। इसलिए मनुष्य को अपने बुरे कर्मों का फल भोगने के लिए पशु योनि में जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मनुष्य विश्व का सबसे बुद्धिमान प्राणी है, इसलिए मनुष्य के उत्थान और पतन से विश्व का उत्थान और पतन होता है, अन्य योनि की आत्माओं का भी उत्थान और पतन होता है, इसलिए मनुष्य के ऊपर विशेष उत्तरदायित्व है, इसलिए परमात्मा मनुष्यों को ही सुधारता है, जिससे सारा संसार सुधर जाता है।

‘‘यह सभी राज़ बाप ही समझाते हैं कि अभी हर चीज बिगड़ चुकी है। अभी मैं आया हूँ तो हर चीज को सुधारता हूँ। इसके लिए पहले मैं मनुष्यात्माओं को सुधारता हूँ, उससे सब चीजें सुधर जाती हैं।’’ मातेश्वरी 24.6.65

‘‘ऐसे हमारे जन्म तो बहुत हैं लेकिन सबसे महत्व इस जन्म का है।... समझते हैं कि मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है। 84 लाख योनियों के बाद ही एक सुख का जन्म मिलता है। परन्तु ऐसा होता तो सभी मनुष्य सुखी होने चाहिए।... यह जन्म सबसे उत्तम है।’’ मातेश्वरी 24.6.65

Q. क्या यथार्थ में विश्व में मनुष्यों की वृद्धि हो रही है और जानवरों की संख्या कम हो रही है?

विवेक कहता है कि ऐसा होना नहीं चाहिए। जानवर भी सारे विश्व में इधर-उधर कहाँ न कहाँ जन्म लेते ही होंगे।

मनुष्यात्मा मनुष्य योनि में ही पुनर्जन्म लेती, पशु योनियों में नहीं का राज़

हर योनि की आत्मा में अविनाशी संस्कार हैं, जिनके अनुसार हर योनि की आत्मा अपनी यानि में ही जन्म और पुनर्जन्म लेकर कर्म करती और अपने कर्मों का फल सुख या दुख के रूप में भोगती है। आत्मा तो आत्मा परन्तु हर जड़ तत्वों के अणु-परमाणुओं में भी अपना अनादि-अविनाशी संस्कार भरा हुआ है, जिसके अनुसार ही वे कर्म करते हैं।

‘‘जो भी कर्मों का हिसाब-किताब है, वह भोगना ही है।... मनुष्य को अपने कर्मों का हिसाब मनुष्य जन्म में ही पाना है।’’

मातेश्वरी 24.6.65

विभिन्न योनि की आत्माओं के कर्मों और उनके सुख-दुख का राज़

हर योनि की आत्माओं की एक निश्चित संख्या है क्योंकि आत्मा अविनाशी सत्ता है। हर योनि की आत्मायें कर्म करती हैं और अपने कर्मानुसार सुख-दुख भोगती है। सभी योनि की आत्मायें कल्पान्त में परमधाम जाती हैं क्योंकि सभी आत्माओं का अविनाशी घर परमधाम ही है, जहाँ से अपने समय पर आकर इस सृष्टि रंगमंच पर जन्म लेती हैं। हर योनि की आत्मा मन-बुद्धि-संस्कार सहित है, भल उसकी योग्यता में अन्तर है। परमधाम में भी हर योनि की आत्मायें अपने-अपने सेक्शन में जाकर स्थित होती हैं। हर योनि की आत्मा अपनी योनि के अनुसार कर्म करती है और उस योनि के अनुसार उसके कर्मों का अच्छा या बुरा फल उसी योनि में मिलता है।

‘‘इसको क़यामत का समय कहा जाता है। सभी का हिसाब-किताब चुक्तू होना है। जानवरों का भी हिसाब-किताब चुक्तू होता है ना। कोई कोई राजाओं के पास रहते हैं, कितनी उनकी सम्भाल होती है।... यह भी ड्रामा में नूँध है।’’

सा.बाबा 11.3.69 रिवा.

‘‘जानवर भी किस्म-किस्म के होते हैं। कोई में क्रोध बहुत होता है। हर एक जानवर का स्वभाव अलग-अलग होता है।... सबसे पहले दुख देने का विकार है काम कटारी चलाना।’’ सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

आत्माओं के लिंग परिवर्तन का राज़

आत्माओं की लिंग परिवर्तन की क्रिया भी अपवाद के रूप में ही है, सामान्य रूप में नहीं। बाबा के महावाक्य पढ़ने पर और प्रसंग को देखने से प्रतीत होता है कि बाबा ने ये बात बहनों को उत्साहित करने के लिए, उनके दुखी जीवन के दुख को भुलाने के लिए कही है। परन्तु हमारा इसमें कोई वाद-विवाद नहीं है। बाबा ने कहा हम उसे स्वीकार करते हैं और वह अपवाद के रूप में अवश्य ही होता होगा।

सामान्य स्थिति में हम बहनों-भाइयों के मन के भावों और संस्कारों को अध्ययन करें तो देखेंगे हर आत्मा के अपने नैसर्गिक संस्कार हैं, उनमें ही वे खुश है और वे अपनी वर्तमान प्रकृति में रहना ही पसन्द करती हैं, जो उसके कर्म-संस्कारों और मन की भावनाओं से परिलच्छित होता है। ड्रामा के अनादि-अविनाशी न्यायकारी विधान के अनुसार किसी भी आत्मा के प्रति इस विश्व-नाटक में अन्याय नहीं है, दोनों को समान अधिकार मिले हुए हैं।

लिंग परिवर्तन की बात बाबा ने कही है और वह होती भी है और होती भी होगी परन्तु उसके लिए निम्नलिखित तथ्यों पर भी विचार करना आवश्यक है:-

1. पुरुष से स्त्री और स्त्री से पुरुष बनने के लिए बहुत दृढ़ इच्छा शक्ति की आवश्यकता है, तब ही यह सम्भव है और वह दृढ़ इच्छा शक्ति कितने प्रतिशत आत्माओं में देखी जाती है, यह विचारणीय है।

2. देखने में ऐसा आता है कि कुछ बहनें तो पुरुष बनने की इच्छा रखती हैं परन्तु कितने भाई बहन बनना चाहते हैं क्योंकि इस जगत में सामाजिक सन्तुलन को रखने के लिए ड्रामा और प्रकृति ने स्त्री और पुरुष की संख्या का पूर्ण सन्तुलन रखा है। यदि वह सन्तुलन बिगड़ता है तो अनेकानेक सामाजिक समस्यायें पैदा हो जायेंगी। इस सन्तुलन के कारण ही बाबा ने कहा है कि सतयुग में हर युगल को एक बच्चा और एक बच्ची होगी।

3. इस विश्व-नाटक और प्रकृति ने स्त्री और पुरुष दोनों के अधिकारों में भी पूर्ण सन्तुलन रखा है, जिस सन्तुलन के हिसाब-किताब के आधार पर ही परमात्मा ने संगमयुग पर बहनों को आगे रखा है। बाबा ने इस सम्बन्ध में अनेक बार ऐसे महावाक्य उच्चारे हैं। बाबा ने कहा है - माताओं ने द्वापर से अनेक सितम सहे हैं, इसलिए बाबा उनको आगे रखता है।

स्त्री-पुरुष दोनों के गुण, संस्कारों, प्रकृति की विशेषताओं को देखें तो देखेंगे कि पुरुषों में स्त्रियों की अपेक्षा कुछ विशेष अधिकार हैं परन्तु साथ में कुछ विशेष कमजोरियां भी हैं, जिनके कारण ही वे स्त्रियों के अधीन हो जाते हैं और स्त्रियों में भी कुछ विशेष अधिकार हैं, जिसके कारण पुरुष उनके अधीन हो जाते हैं या वे पुरुषों को अपने अधीन करने में सक्षम हैं। उन गुणों और विशेषताओं के कारण ही इस ईश्वरीय जीवन में भी भाइयों की अपेक्षा बहनें आगे हैं।

मन-बुद्धि-संस्कार और आत्मा के अस्तित्व का राज़

मन-बुद्धि-संस्कार सहित आत्मा एक चैतन्य सत्ता है। मन-बुद्धि आत्मा से अलग कोई स्वतन्त्र सत्तायें नहीं हैं बल्कि मन-बुद्धि आत्मा की दो कार्य शक्तियाँ है और आत्मा मन-बुद्धि-संस्कार सहित एक ही स्वतन्त्र सत्ता है। वास्तव में मन-बुद्धि-संस्कार तीनों एक साथ ही कार्य करते हैं, जिनके कार्य में भेद करना अति कठिन कार्य है। समझने के लिए ही उनको अलग-अलग नाम से जाना जाता है।

''आत्मा के ये खुशी के संस्कार ही फिर साथ चलेंगे। फिर थोड़ा-थोड़ा कम होता जायेगा।... यह बाप भी है, टीचर भी है तो सतगुरु भी है। तीनों ही याद रहें तो बहुत हर्षितमुख अवस्था रहे।'' सा.बाबा 20.11.04 रिवा.

''वह बीज अर्थात् संस्कार उन भक्तों की आत्मा में भरेगा, फिर उस संस्कार से मर्ज होंगे और फिर द्वापर में वही संस्कार इमर्ज होगा।... वैसे आप सभी के भक्त और प्रजा संस्कार ले जायेगी, फिर उस प्रमाण इमर्ज होंगे।... यह भी एक गुप्त रहस्य है कि किन्हों के भक्त ज्यादा होंगे और किन्हों की प्रजा जास्ती बनती है।'' अ. बापदादा 29.6.70

''कल्प पहले के चित्र भी उसमें स्पष्ट आ जाता है। यह जो मन है, यह भी एक बड़ी कैमरा है। हर सेकण्ड का चित्र इसमें खींचा जाता है।... फिर कोई भी समस्या, समस्या का रूप अनुभव होगा या खेल अनुभव होगा ?'' अ. बापदादा 3.10.71

''संस्कारों का परिवर्तन अनादि काल से है अर्थात् चक्र में आने से ही परिवर्तन में आते रहते हैं। तो आत्मा में संस्कार परिवर्तन का ऑटोमेटिकली अभ्यास है।... जबकि नॉलेजफुल हो, ऊंच-से-ऊंच स्टेज पर पार्टधारी बन पार्ट बजा रहे हो, पॉवरफुल भी हो, ब्लिसफुल भी हो, सर्वशक्तिवान् के वर्से के अधिकारी भी हो तो स्वभाव-संस्कार को समय-प्रमाण व सेवा-प्रमाण किसी के कल्याण के प्रति व स्वयं की उन्नति के प्रति परिवर्तन करना अति सहज अनुभव हो - यह है विशेष आत्माओं का अन्तिम विशेष पुरूषार्थ।'' अ. बापदादा 7.2.75

वृत्ति और वायब्रेशन का वातावरण पर प्रभाव तथा वातावरण का आत्मा की स्थिति पर प्रभाव का राज़

आत्मा शरीर में रहते जो संकल्प करती है, उससे वृत्ति और वायब्रेशन निर्मित होता है, जो वातावरण को प्रभावित करता है और वह वातावरण अन्य आत्माओं को प्रभावित करता है अर्थात् उनके ऊपर उसका प्रभाव पड़ता है। ऐसे ही मनुष्य जिस वातावरण में रहता है, उसमें निहित वायब्रेशन्स उस मनुष्य के मन अथवा आत्मा पर प्रभावित होते हैं। इसलिए अच्छे पुरुषार्थी को इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए अर्थात् पुरुषार्थ में मनवांछित सफलता पाने के लिए अच्छे वातावरण में रहना चाहिए, जिसमें देहाभिमान अर्थात् विकारी वायब्रेशन्स न हों अथवा हों तो कम से कम हों।

वृत्ति और वायब्रेशन से वातावरण का निर्माण होता है। हमारे वृत्ति और वायब्रेशन से जो वातावरण बनता है, उससे भी हमारा पाप या पुण्य का खाता प्रभावित होता है क्योंकि उससे अन्य आत्माओं के संकल्प प्रभावित होते हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है कि क्लास में किसी का बाहर का चिन्तन चलता है तो वह वातावरण को दूषित करता है और उससे उसका पाप का खाता बढ़ता है। इसलिए हमको सदा अच्छे संकल्पों द्वारा अच्छे वातावरण का निर्माण करना चाहिए।

''अभी वृत्ति द्वारा वृत्तियां बदलें, संकल्प द्वारा संकल्प बदल जायें।... यह सूक्ष्म सेवा स्वत: ही कई कमजोरियों से पार कर देगी।... जब इस सेवा में बिजी रहेंगे तो स्वत: ही वायुमण्डल ऐसा बनेगा जो अपनी कमजोरिया स्वयं को ही स्पष्ट अनुभव होंगी और वायुमण्डल के कारण स्वयं ही शर्मशार हो परिवर्तित हो जायेंगे।'' अ. बापदादा 18.1.86

''जैसे दादियों से मधुबन की रौनक है, ऐसे आप एक-एक विश्व में रौनक करने वाली आत्मायें हो। जिस भी स्थान पर हो वह रौनक का स्थान नजर आये। ... आप स्वयं खुशी, शान्ति, अतीन्द्रिय सुख की रौनक में होंगे तो स्थान भी रौनक में आ जायेगा क्योंकि स्थिति से स्थान में वायुमण्डल फैलता है।'' अ. बापदादा 2.11.04

''तीव्र पुरुषार्थ का स्लोगन है - जैसा संकल्प मैं करूँगा, मेरे संकल्प का वैसा ही वातावरण बनेगा। संकल्प का भी आधार वातावरण पर और वातावरण का आधार पुरुषार्थ पर है।... संकल्प है बीज।... अब आप सभी में विशेष न्यारापन होना चाहिए।... स्लोगन याद रखो - सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है।'' अ. बापदादा 8.10.75

आत्मा की संकल्प शक्ति का राज

संकल्प शक्ति आत्मा की मुख्य शक्ति है, जिसका प्रभाव अपने तन और मन दोनों पर तो पड़ता ही है, दूसरों पर भी पड़ता है। संकल्प से अन्य आत्माओं की सेवाभी कर सकते हैं तो अपने दूषित संकल्प से आत्माओं का अहित भी कर सकते हैं। **संकल्प शक्ति** - मन-बुद्धि-संस्कार तीनों मिलकर संकल्प शक्ति का निर्माण करते हैं। आत्मा के पतित और पावन दोनों में संकल्प शक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है। कहा गया है - कर्म से वाणी सूक्ष्म और शक्तिशाली है, वाणी से मन्सा सूक्ष्म और शक्तिशाली है। आत्मा के उत्थान और पतन में मन्सा का बड़ा योगदान है। मन्सा से पाप भी होता तो पुण्य भी होता है। किसी ने कोई बुरा कर्म किया और हमारे अन्दर आया कि अच्छा किया तो हम भी उस पाप के भागी बन जाते हैं। पुण्य में भी हमारी प्रेरणा से किसी ने कोई शुभ कार्य किया तो उस प्रेरणा का फल भी मिलता है। आध्यात्मिक जगत के पुरुषार्थी को अपने संकल्प पर

बहुत ध्यान रखना चाहिए। संकल्प ही कर्म का आधार है। किसी भी कार्य करने का बीज संकल्प के रूप में मन में ही आता है, फिर वह वाचा-कर्मणा में आता है।

''यह वेस्ट संकल्प का वज़न भारी होता है और बेस्ट थॉट्स का वज़न कम होता है। ये वेस्ट थाट्स दिमाग को भारी कर देते हैं, पुरुषार्थ को भी भारी कर देते हैं। इसलिए शुभ-संकल्प जो स्व-उन्नति की लिफ्ट है, वह कम होने के कारण मेहनत की सीढ़ी चढ़नी पड़ती है।... वेस्ट को खत्म करने के लिए अमृतवेले से लेकर रात तक दो शब्द याद रखो - स्वमान और सम्मान। स्वमान में रहना है और सम्मान देना है।... दोनों का बैलेन्स चाहिए।'' अ.बापदादा 15.10.2004

संकल्प शक्ति स्वर्ग और नर्क दोनों ही दुनियाओं में काम करती है। देहाभिमान के वशीभूत संकल्प शक्ति पतन का कार्य करती है और आत्म-ज्ञान से युक्त देही-अभिमानी स्थिति की संकल्प शक्ति उत्थान का कार्य करती है। संकल्प शक्ति ही आत्मा की और समग्र विश्व की चढ़ती कला का आधार बनती है। संकल्प शक्ति से जड़ तत्व और जंगम प्रकृति भी प्रभावित होते हैं।

''मन का मौन है ही ज्ञान सागर के तले में जाना और नये-नये अनुभवों के रत्न लाना। जो बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है - सबसे बड़ा खजाना, जो वर्तमान और भविष्य बनाता है, वह है श्रेष्ठ संकल्प का खजाना। ... संकल्प तो सबके पास हैं लेकिन श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ भावना, शुभ कामना की संकल्प शक्ति, मन-बुद्धि एकाग्र करने की शक्ति आपके पास ही है।'' अ.बापदादा 15.12.99

''यह अलौकिक ब्राह्मण जीवन है ही सदा स्वस्थ जीवन। वरदाता से 'सदा स्वस्थ भव' का वरदान मिला हुआ है।... 'मास्टर सर्वशक्तिवान' - यह श्रेष्ठ स्थिति भी है और साथ-साथ डायरेक्ट परमात्मा द्वारा 'परम टाइटिल' भी है।... इस एक टाइटिल की स्थिति रूपी सीट पर सेट रहो तो यह सर्वशक्तियाँ सेवा के लिए सदा हाजिर अनुभव होंगी।'' अ.बापदादा 29.10.87

''श्रेष्ठ कल्याण का संकल्प है, वह सिद्ध जरूर होता है और मास्टर सर्वशक्तिवान होने के कारण मन कभी मालिक को धोखा नहीं दे सकता है।'' अ.बापदादा 29.10.87

''बचत की स्कीम बनाना है।... कहते - बिन्दुरूप के अभ्यास या मनन करने का समय कम मिलता है। लेकिन समय कहाँ से आयेगा। दिन प्रतिदिन सर्विस भी बढ़ती जानी है, समस्यायें भी बढ़ती जानी हैं... संकल्पों की स्पीड तेज होती जायेगी।... इसलिए सुनाया कि अभी समय की, संकल्पों की, शक्ति की बचत की योजना बनाकर बीच-बीच में बिन्दु रूप की स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ।'' अ.बापदादा 24.7.70

''वर्तमान समय संकल्प और कर्म साथ-साथ होना ही आवश्यक है।... संकल्प ही ऐसे उत्पन्न होंगे, जो संकल्प उठा और सिद्ध हुआ। इससे अपनी स्टेज को परख सकते हो।... इसके लिए पहले कन्ट्रोलिंग पॉवर चाहिए।... व्यर्थ को कन्ट्रोल किया जाता है।'' अ.बापदादा 30.7.70

''जो स्वयं झुकाव में आते होंगे, उन्होंके आगे और कैसे झुकेंगे! सारे विश्व को अपने आगे झुकाने वाले हो ना! ... संकल्प भी जीवन का अनमोल खजाना है। ... एक-एक संकल्प से स्वयं का और सर्व का कल्याण होता है।'' अ.बापदादा 2.7.70

''कर्मभोग वा कर्म किसी भी प्रकार का चलता रहेगा लेकिन स्मृति नहीं रहेगी। वह अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा।... ऐसे संकल्प से सारे कारोबार चला सकती हो। साइन्स वाले नीचे पृथ्वी से ऊपर तक डायरेक्शन लेते रहते हैं तो क्या श्रेष्ठ संकल्प से कारोबार नहीं चला सकती हो ? साइन्स ने कापी तो साइलेन्स से ही किया है।'' अ.बापदादा 22.11.72

''व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय समाप्त हो जाने के बाद संकल्प वही उठेगा, जो होना है। आपकी बुद्धि में भी वही संकल्प उठेगा और जिसको करना है, उसकी बुद्धि में भी वही संकल्प उठेगा कि यह करना है।'' अ.बापदादा 22.11.72

''अगर संकल्प श्रेष्ठ है तो वचन और कर्म भी श्रेष्ठ होगा। इसलिए संकल्प को श्रेष्ठ बनाओ और सदैव सर्वशक्तिवान बाप के साथ बुद्धि का संग हो।... तो इस लोक का कोई भी व्यकित वा कोई भी वस्तु आकर्षित नहीं कर सकती। अगर आकर्षित करती है तो समझना चाहिए कि स्मृति में वा वृत्ति में वा दृष्टि में कमी है।'' अ.बापदादा 4.3.72

''ऐसे ही मन की शक्ति अर्थात् संकल्प शक्ति। मास्टर सर्वशक्तिवान के हर संकल्प में इतनी शक्ति है जो जिस समय जो चाहे वह कर सकता है और करा सकता है।... जहाँ श्रेष्ठ कल्याण का संकल्प है, वह सिद्ध जरूर होता है।''

अ.बापदादा 29.10.87

आध्यात्मिक ज्ञान और उसके महत्व का राज़

आध्यात्मिक ज्ञान क्या है और उसका मनुष्य के जीवन में क्या महत्व है, वह उसके सुख में कैसे सहयोगी बनता है, ये सब ज्ञान अभी परमात्मा ने दिया है। बाप ने आत्मा, परमात्मा, तीनों लोकों, सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष का, कर्म की गहन गति आदि का जो ज्ञान दिया है, वही यथार्थ में आध्यात्मिक ज्ञान है और तो दुनिया में आध्यात्मिक ज्ञान के नाम पर जो भी ज्ञान है, वह भक्ति का ज्ञान और कर्म-काण्ड हैं। वास्तव में वह सब अज्ञान ही है क्योंकि उससे आत्मा और समग्र विश्व की उतरती कला ही होती है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान से ही आत्मा की चढ़ती कला होती है।

''अभी तुम्हारी आत्मा शरीर छोड़ेगी तो जरूर ऊंच घर में जन्म लेगी नम्बरवार। थोड़े ज्ञान वाला साधारण कुल में जन्म लेगा, ऊंच ज्ञान वाला ऊंच कुल में जन्म लेगा।'' सा.बाबा 28.10.04 रिवा.

''अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं है तो वह नॉलेज ही किस काम की!... जब ज्ञान बुद्धि में समा जाता है तो बुद्धि के डायरेक्शन अनुसार कर्मेन्द्रियाँ भी वैसा ही कर्म करती हैं।... भोजन खाना और चीज है, हजम करना और चीज है। खाने से शक्ति नहीं आती है, हजम करने से शक्ति आती है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''यह नई दुनिया के लिए नया ज्ञान है। यह ज्ञान बुद्धि में रहने से बहुत खुशी होती है।... पुरानी दुनिया से तुम्हारा ममत्व निकलता जायेगा तो खुशी भी होगी।... कल्प-कल्प जो बने हैं वे ही बनेंगे और उनको ही खुशी होगी।'' सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

''परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर हमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना देते हैं।... ज्ञान सागर बाप के पास ही ज्ञान रत्न हैं। ये एक-एक रत्न लाखों रुपयों का है। रत्नागर बाप से ज्ञान रत्न धारण कर औरों को भी दान करना है। जितना जो लेवे और देवे, उतना ऊंच पद पाये।... सबको यह रास्ता बताना है।'' सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

''आध्यात्मिक विद्या और कोई सिखा न सके। तुम्हारी यह है आध्यात्मिक विद्या, जो तुमको रुहानी बाप ही आकर पढ़ाते हैं।... इसको रुहानी नॉलेज कहा जाता है। ... एक है जिस्मानी नॉलेज, दूसरी है आध्यात्मिक शास्त्रों की विद्या और तीसरी है यह रुहानी नॉलेज।... यह है नई दुनिया, नये धर्म के लिए नई नॉलेज।'' सा.बाबा 26.7.05 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान (Spiritual Knowledge) और धार्मिक ज्ञान के अन्तर का राज़

आध्यात्मिक ज्ञान और धार्मिक ज्ञान क्या है और दोनों में क्या अन्तर है, इसका ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान से नई दुनिया की स्थापना और पुरानी का विनाश होता है और उस ज्ञान को देने वाला परमात्मा है। धार्मिक ज्ञान से धर्म-विशेष की स्थापना होती है, जिसको उसका धर्म-पिता आकर देते हैं। धार्मिक ज्ञान में धारणाओं का ही ज्ञान होता है जब कि आध्यात्मिक ज्ञान में आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म की गहन गति आदि का सब ज्ञान होता है। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान से एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है और सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है। परमात्मा के द्वारा दिया सत्य आध्यात्मिक ज्ञान सर्व आत्माओं के लिए होता है। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान विश्व-प्रेम की भावना जाग्रत करता है।

''रुहानी बाप ही रुहानी नॉलेज पढ़ाते हैं, इसलिए उनको टीचर भी कहते हैं।... इस रुहानी नॉलेज से हम अपना आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं।... इससे और सभी धर्म विनाश को पायेंगे क्योंकि तुम पावन बनते हो तो तुमको नई दुनिया चाहिए।'' सा.बाबा 6.10.04 रिवा.

''बाप के सहारे बिगर तुम विषय वैतरणी नदी में गोते खाते थे। ज्ञान मिलने से तुम सतयुगी नई दुनिया में चले जाते हो।... यह सब संगमयुग पर ही होता है।'' सा.बाबा 6.12.04 रिवा.

''बाबा की तो सारी गीता पढ़ी हुई है परन्तु जब ज्ञान मिला तो विचार चला कि गीता में यह लड़ाई आदि की बातें क्या लिखी हैं?... भक्ति में गाते थे आप आयेंगे तो हम बलिहार जायेंगे परन्तु वह कैसे आयेंगे, कैसे बलिहार जायेंगे, यह थोड़ेही समझते थे।'' सा.बाबा 6.12.04 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान, मनोविज्ञान और दोनों के भेद का राज़

आत्मा एक स्वतन्त्र सत्ता है, मन उसकी एक कार्य शक्ति है। वैसे ही आध्यात्मिक ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान है और मनोविज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान का एक अंग मात्र है। परमात्मा अध्यात्मिक ज्ञान देता है, जिसमें मनोविज्ञान समाया हुआ है। दुनिया में जो मनोविज्ञान पढ़ते हैं, उसका अध्यात्मिक ज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं है, इसलिए उसके अध्ययन से किसी भी आत्मा की चढ़ती कला न हुई है और न ही हो सकती है। वास्तव में वह मनोविज्ञान भी नहीं है क्योंकि उसमें भी मन का ही यथार्थ ज्ञान नहीं है तो वह मनोविज्ञान कैसे कहा जायेगा। इसलिए वह मनोविज्ञान भी आत्मा और विश्व की उतरती कला का ही निमित्त बनता है।

आध्यात्मिक ज्ञान और दार्शनिक ज्ञान का राज़

जैसे आध्यात्मिक ज्ञान में मनोविज्ञान समाया हुआ है, वैसे आध्यात्मिक ज्ञान में सभी दर्शनों का सार समाया हुआ है। इसीलिए कहते हैं परमात्मा आकर सभी वेदों-शास्त्रों का सार सुनाते हैं। दर्शन में चेतन आत्मा के विषय में खोज या अनुमान के आधार पर वर्णन होता है, यथार्थ का वर्णन नहीं होता है। आत्मा की चेतनता और विश्व-नाटक के विषय में यथार्थ ज्ञान तो परमात्मा ही आकर देते हैं, जिससे आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है। परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, वह सभी दर्शनों का सार है अथवा यह कहें कि परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, उसके अंशमात्र पर सभी दर्शन आधारित हैं, समग्र रूप में नहीं। समग्र ज्ञान तो ज्ञान सागर परमात्मा ही देते हैं, जिसका कुछ अंश भक्ति मार्ग में विभिन्न दार्शनिक अंश रूप में वर्णन करते हैं। उसमें भी यथार्थता का अभाव ही होता है।

ईश्वरीय ज्ञान और धर्मपिताओं के ज्ञान का राज़ और अन्तर

ईश्वर आकर आत्मा को पावन अर्थात् सम्पूर्ण बनाने के लिए ज्ञान देते हैं और रास्ता बताते हैं। ईश्वरीय ज्ञान चढ़ती कला का ज्ञान है। धर्मपितायें आकर जो ज्ञान देते हैं, उससे उस धर्म वंश की स्थापना होती है। धर्मपितायें जो ज्ञान देते हैं, वह मुख्यता श्रेष्ठ गुणों की धारणाओं का ही ज्ञान होता है, जिससे आत्मा की उतरती कला की गति मन्द तो अवश्य हो जाती है परन्तु चढ़ती कला की कदापि नहीं होती। उसकी दिशा फिर भी उतरती कला की ही रहती है, चढ़ती कला की नहीं। परमात्मा आकर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते हैं, तब ही आत्माओं की चढ़ती कला होती है। धर्मपिताओं के ज्ञान में सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं होता है।

''धर्म पितायें भी आप लोगों के सामने बेगर रुप में आयेंगे। उनको क्या भिक्षा देंगे? यही संदेश। ऐसा पॉवरफुल संदेश होगा जो इसी संदेश के पॉवरफुल संस्कारों से धर्म स्थापन करने के निमित बनेंगे। वह संस्कार अविनाशी बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 15.4.71

आत्मा की कर्मातीत स्थिति का राज़

कर्मातीत स्थिति अर्थात् आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति अर्थात् विश्व-नाटक में पार्ट की समाप्ति, कर्म से अतीत। आत्मा की सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति तो अन्त में ही होती है, उसके बाद आत्मा परमधाम चली जाती है। परन्तु अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर कर्मातीत स्थिति का अनुभव आत्मा यहाँ ही करती है और उस स्थिति को बढ़ाते-बढ़ाते सदाकाल अर्थात् पूर्णता को प्राप्त करती है।

राग-द्वेष, लगाव-घृणा आदि की कोई भी महसूसता देह त्याग के समय है तो पुर्नजन्म लेना ही पड़ेगा वह स्थिति कर्मातीत या सम्पूर्णता की नहीं हो सकती। कर्मातीत या सम्पूर्ण आत्मा प्रभु-प्यार और घर के आकर्षण में, उसकी स्मृति में शरीर छोड़ेगी। भल उस समय कोई कर्मभोग भी हो परन्तु कर्मातीत-सम्पूर्ण अर्थात् स्व स्थिति में स्थित आत्मा उसके वशीभूत नहीं होगी। वह स्थिति ही मृत्यु-विजयी, अमरत्व को प्राप्त स्थिति है। विश्व-नाटक की सत्यता को जान कर देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा-स्मृति स्वरुप होकर दीर्घकाल का देह से सहज न्यारे होने का पुरुषार्थ और अभ्यास ही कर्मातीत स्थिति एकमात्र साधन है।
''आत्मा जीते जी मरकर एक बाप की बनें, और कोई याद न आये, देह-अभिमान छूट जाये - यह है ऊंची मंजिल।... यहाँ इस देह में होते हुए अपने को अशरीरी समझना है। अपने को आत्मा समझ कर्मातीत अवस्था में रहना है।''

सा.बाबा 12.2.05 रिवा.

आत्मा के मोक्ष का राज़

ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता है। सभी आत्मायें अनादि पार्टधारी हैं, इसलिए सदाकाल का मोक्ष किसी भी आत्मा को मिल नहीं सकता। सदा पावन परमात्मा को ही इस धरा पर पार्ट बजाने कल्प-कल्प आना पड़ता है तो आत्माओं को सदा काल का मोक्ष कैसे मिल सकता है। हाँ हर आत्मा कल्पान्त में परमधाम जाकर मोक्ष में रहती है। ईश्वरीय ज्ञान की धारणा और आत्मिक स्वरूप के अभ्यास से आत्मा मोक्ष अर्थात् मुक्त स्थिति का अनुभव यहाँ ही करती है और ये अनुभव ही मोक्ष अर्थात् मुक्ति का यथार्थ अनुभव है क्योंकि परमधाम में आत्मा को कोई अनुभव ही नहीं होता है। वह तो आत्मा की सुषुप्त स्थिति है।
''शिवबाबा भी जरूर शरीर द्वारा पार्ट बजायेंगे ना। शिवबाबा पार्ट न बजाये तो कोई काम का न रहा। वैल्यू ही नहीं हो। उनकी वैल्यू ही तब होती है जब सारी दुनिया को सद्गति देते हैं। फिर भक्ति मार्ग में उनकी महिमा गाते हैं।''

सा.बाबा 22.11.04 रिवा.

आत्माओं का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब का राज़

ये सारा सृष्टि-चक्र आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब का ही खेल है। आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब के आधार पर ही सारे कल्प में अच्छे या बुरे सम्बन्ध बनते हैं। कल्प के आदि से ही ये हिसाब-किताब शुरू हो जाता है, जो सारे कल्प चलता रहता है और कल्प के अन्त में सारा हिसाब-किताब का खाता पूरा होता है, जिससे आत्मा कर्मातीत बनती है। संगम पर परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं, जिसके आधार पर नये कल्प के लिए नया हिसाब-किताब निर्माण होता है, जिसके आधार पर ही सतयुग में कोई किसका बाप और कोई किसका बच्चा बनता है। कोई राज़ा-रानी, साहूकार, प्रजा, नौकर-चाकर, दास-दासी भी बनता है।

ड्रामा का पार्ट और हिसाब-किताब के खाते का घनिष्ट सम्बन्ध है। अभिमन्यु के मारे जाने पर मोह के वशीभूत अर्जुन को जब श्रीकृष्ण अभिमन्यु से मिलाने सूक्ष्म लोक में लेकर गये तो अभिमन्यु ने अर्जुन को पहचाना भी नहीं और जब अर्जुन ने उसके सामने अपना मोह प्रगट किया तो अभिमन्यु ने कहा - कौन किसका बाप और कौन किसका बच्चा। इस विश्व-नाटक में न मालूम आप हमारे कितने बार बाप बने और मैं आपका बाप बना।

ये सारा जगत का खेल हिसाब-किताब का है। हमको जो कुछ यहाँ मिला या जो कुछ हमारे पास है वह सब भविष्य में किसको देने का है और हमको जो कुछ मिलना है वह किससे मिलना है तथा अन्त में सबका हिसाब-किताब चुक्ता करके वापस घर परमधाम में जाना है। आत्मा जब जाती तो कुछ भी साथ नहीं जाता, हिसाब-किताब का खाता ही साथ जाता है इसलिये इस

सबसे नष्टोमोहा हो अपने आत्मिक स्वरुप में स्थित हो जाओ तो सुखमय हिसाब-किताब का निर्माण होगा। किसको अच्छी या बुरी दृष्टि से देखने, संकल्प करने का भी हिसाब-किताब बनता है और आत्मा के अच्छे या बुरे सम्बन्धों, सुख-दु:ख का कारण बनता है।

किसी भी परिस्थिति में, कर्मभोग में कोई आत्मा उतना ही सहयोग कर सकती है, जितना उसके साथ हमारा हिसाब-किताब है, उसका ड्रामा में पार्ट है। इसलिए इस आधार पर किसी आत्मा से राग-द्वेष की भावना रखना व्यर्थ है, अज्ञानता है, अपना आप ही अहित करना है। राग-द्वेष से युक्त संकल्पों से भी नया दुखदायी हिसाब-किताब बनता है। परमात्मा को बीच में रखकर आत्माओं के साथ व्यवहार करने से ही अच्छे हिसाब-किताब का निर्माण होता है।

आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों का राज़

ये विश्व एक सुख-दुख का खेल है। इस खेल को खेलने के लिए आत्मा के विभिन्न आत्माओं के साथ अच्छे-बुरे सम्बन्ध बनते और बिगड़ते हैं। सतयुग से ही ये सम्बन्धों के हिसाब-किताब बनने और चुक्ता होने की प्रक्रिया आरम्भ होती है और कलियुग अन्त तक सतत चलती रहती है। कलियुग अन्त में अर्थात् विनाश के समय सभी हिसाब किताब पूरा होता है। संगमयुग पर परमात्मा के साथ आत्मा का सम्बन्ध होता है और परमात्मा सतयुग-त्रेतायुग के लिए नये सुखमय सम्बन्धों का बीज बोने का ज्ञान देता है और सतयुग के लिए मधुर सम्बन्ध बनाने का रास्ता बताता है, जिससे आत्मा के सुखदायी सम्बन्धों का निर्माण होता है।

हर आत्मा इस कल्प का हिसाब-किताब पूरा करके, अगले कल्प के प्रथम जन्म के लिए संस्कार अभी इस संगमयुग पर ही भरती है, जो उसके प्रथम जन्म के सम्बन्धों का आधार बनते हैं।

''अभी जो मेहनत ली है, वह यहाँ चुक्तू न करेंगे तो फिर सतयुग में उस मेहनत का फल देना पड़ेगा इसलिए जो मेहनत ली है, उसे भरकर देना। हरेक सेवाकेन्द्र से समाचार आना चाहिए कि यह कुमार तो अवतरित होकर इस पृथ्वी पर पधारे हैं।''

अ.बापदादा 16.10.1969

''एक-दो के प्रति दिल में बिल्कुल सफाई हो।... जहाँ सच्चाई-सफाई होती है, वहाँ समीपता होती है।... वहाँ भी आपस में समीप सम्बन्ध में कैसे आयेंगे ? जब यहाँ दिल समीप होगी।'' अ.बापदादा 9.10.71

''शक्तियों के भक्त और बाप के भक्त अलग-अलग हैं।... जिन आत्माओं को जिन श्रेष्ठ आत्माओं वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा साक्षात्कार होता है या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, उस आधार पर वे उनकी प्रजा वा भक्त बनते हैं।'' अ.बापदादा 14.7.74

आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों के हिसाब-किताब और कल्पान्त में पूरा करके वापस घर जाने का राज़

ये विश्व-नाटक आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों के आधार पर चलता है। हर क्षण आत्माओं के परस्पर नये हिसाब-किताब बनते-बिगड़ते हैं। ये हिसाब-किताब बनने और बिगड़ने की क्रिया सतयुग आदि से कलियुग अन्त तक चलती रहती है। कल्पान्त में आत्मायें सारा हिसाब-किताब पूरा करके वापस परमधाम जाती हैं।

इस विश्व-नाटक में पार्ट के अनुसार सम्बन्ध बनते हैं परन्तु सम्बन्धों में भी सुख-दुख का हिसाब बराबर है। सम्बन्धों में आज मित्रता का है तो कल पार्ट के अनुसार शत्रुता का भी हो सकता है। परन्तु कल्पान्त में सुख-दुख का, मित्रता-शत्रुता का हिसाब-किताब पूरा अवश्य होता है। वास्तव में परमात्मा के साथ भी आत्माओं का हिसाब-किताब है, जिसके अनुसार परमात्मा आत्माओं को ज्ञान देते हैं, उनकी पालना करते हैं और आत्मायें उस सुख को याद कर भक्ति मार्ग में उनके मन्दिर आदि बनाती हैं, उनको याद करती हैं, उनकी महिमा गाती हैं।

''जो यह नॉलेज सुनेंगे, वे ही विश्व के मालिक बनेंगे।... मैं इस समय तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ तो पतित शरीर में आकर बैठता हूँ। फिर भक्ति मार्ग में तुम हमको हीरों के सोमनाथ के मन्दिर में बिठाते हो क्योंकि तुम जानते हो बाप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। इसलिए खातिरी करते हो। बाप ने यह सब राज़ समझाया है।'' सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता का राज़

सभी आत्माओं को कल्पान्त में शरीर छोड़कर परमधाम जाने के लिए सूक्ष्मवतन से तो पार करना ही पड़ता है परन्तु जो ब्राह्मण बनते हैं, उनको सूक्ष्मवतन का ज्ञान होता है, ब्रह्मा बाबा भी वहाँ है, उनसे भी ब्राह्मणों का प्यार है, कर्मों का रहा हुआ हिसाब-किताब भी सूक्ष्मवतन में पूरा करना ही है और सेवा के लिए भी फरिश्ता रूप ब्रह्मा बाबा के साथ सेवा करने की आकर्षण भी ब्राह्मण आत्माओं में होती ही है, इसलिए सभी ब्राह्मण आत्माओं को फरिश्ता बनकर सूक्ष्मवतन जाना ही है, भले ही सबका रूप और समय नम्बरवार अवश्य होगा।

''जैसे भविष्य स्वर्ग की दुनिया में सब देवता कहलायेंगे, वैसे वर्तमान समय संगम पर फरिश्ते समान सब बनते हैं लेकिन नम्बरवार।... हर पुरुषार्थी फरिश्तेपन की स्टेज को प्राप्त जरूर करते हैं।'' अ.बापदादा 7.02.76

''अगर सर्व रिश्ते एक के साथ हैं तो सहज और सदा फरिश्ते हैं। ... एक ही रास्ता, एक ही रिश्ता तो फिर फरिश्ता बन ही जायेंगे। ... बाप का यही फरमान है कि पहले तो सभी रास्ते बन्द करो, फिर मुश्किल से छूट जायेंगे।'' अ.बापदादा 4.07.71

''फरिश्ता बनने के लिए दो मुख्य क्वालिफिकेशन कौनसी हैं? एक लाइट और दूसरी माइट।... लाइट-माइट रूप बनने के लिए एक तो चाहिए मनन शक्ति चाहिए और दूसरी सहन शक्ति चाहिए। जितनी सहनशक्ति होगी, उतनी ही सर्वशक्तिवान की सर्वशक्तियाँ स्वत: प्राप्त होती हैं।'' अ.बापदादा 29.6.71

''फरिश्ते कब सदा इस साकारी सृष्टि पर ठहरते नहीं हैं। कर्म किया और गायब।... सर्व आकर्षणों वा लगावों के रिश्ते और रास्ते बन्द करो, तब कहेंगे कि आप स्नेही हो। यहाँ होते हुए भी यहाँ नहीं हैं - यह है लॉस्ट स्टेज।'' अ.बापदादा 2.02.76

''नॉलेज के दर्पण में अपने पुरुषार्थ से फरिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देती है?... फरिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देगी तो वह महाराजा-महारानी पन की झलक भी स्पष्ट दिखाई देगी।... जैसे साकार को देखा... जब स्वयं को अनुभव होता था तभी तो औरों को भी अनुभव होता था।'' अ.बापदादा 2.02.76

फरिश्ता आत्माओं और प्रेतात्माओं का राज़ तथा दोनों के गुण-धर्मों में अन्तर का राज़ /
फरिश्ता और सूक्ष्म शरीरधारी प्रेत आत्माओं के अस्तित्व का राज़

फरिश्ता और प्रेत दोनों का अस्तित्व है लेकिन दोनों के गुण-धर्मों में दिन और रात का अन्तर है। फरिश्ता और प्रेतात्मायें दोनों ही सूक्ष्म देहधारी होते हैं, उनकी हड्डी-मांस की देह नहीं होती है। परन्तु फरिश्ता पावन आत्मायें होती हैं अर्थात् जो आत्मायें संगमयुग पर ज्ञान-योग के पुरुषार्थ द्वारा पावन बनती हैं, वे फरिश्ता बनती हैं और जो प्रेत आत्मायें होती हैं, वे पतित आत्मायें होती हैं। अपने किन्हीं पतित कर्मों के फलस्वरूप, उनको साकार देह नहीं मिलती और वे सूक्ष्म देह में कुछ समय तक भटकती रहती हैं। फरिश्तों का साक्षात्कार प्राय: सफेद वस्त्रों में होता है जबकि प्रेतात्माओं का साक्षात्कार काली छाया के रूप में होता है। दोनों के ही अस्तित्व का यथा आवश्यक ज्ञान परमात्मा ने दिया है।

फरिश्ता आत्मायें और प्रेतात्मायें दोनों का ही अस्तित्व है और और दोनों में कुछ समानतायें भी हैं। दोनों को ही हड्डी-मांस की देह नहीं होती है, दोनों को सूक्ष्म देह होती है, जिसके आधार पर वे वातावरण में रहते हैं परन्तु फरिश्ता आत्मायें पवित्रात्मायें होती हैं, उनकी प्रकाशमय काया स्वेत रंग की होती है और वे आकाश तत्व के ऊपर सूक्ष्म वतन में रहते हैं और प्रेतात्मायें निकृष्ट कर्म-संस्कारों वाली आत्मायें होती हैं, उनकी सूक्ष्म काया भी काले-भद्दे रंग की होती है और वे आकाश तत्व के निचले भाग पृथ्वी के आसपास घूमती रहती हैं। कुछ धर्म-पिताओं को छोड़कर फरिश्ता स्वरूप आत्माओं को कल्पान्त में ही

प्राप्त होता है। धर्म-पिताओं के फरिश्ता स्वरूप और कल्पान्त के फरिश्ता स्वरूप में बहुत अन्तर होता है। कल्पान्त में फरिश्ता बनने वाली आत्माओं का प्रवाह परमधाम की ओर होता है जबकि धर्म-पिताओं का प्रवाह इस जगत की ओर होता है क्योंकि उनको यहाँ जन्म लेना है और अपने धर्मवंश की पालना करनी है।

ब्रह्मा बाबा की आत्मा ही ऐसी आत्मा है, जो अपने पुरुषार्थ से अब तक मनुष्य से फरिश्ता बनी है और फरिश्ता स्वरूप से सूक्ष्मवतन से अपना स्थापना का कर्तव्य कर रही है तथा निराकार शिवबाबा के साथ यहाँ साकार तन में भी प्रवेश होकर स्थापना का कार्य करते हैं।

''कहावत है ना कि फरिश्तों के पांव पृथ्वी पर नहीं होते। तो अभी यह बुद्धि पृथ्वी अर्थात् प्रकृति के आकर्षण से परे हो जायेगी फिर कोई भी चीज नीचे नहीं ला सकती है।'' अ.बापदादा 1.11.70

भूत-प्रेत आत्माओं का अस्तित्व है और वे सूक्ष्म शरीर के साथ अपना काम भी करती हैं परन्तु हमको उनसे भयभीत नहीं होना है क्योंकि बाबा ने इस सत्य का ज्ञान दिया है कि जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है। कोई भी आत्मा बिना हिसाब-किताब के किसी को सुख या दुख दे नहीं सकती। हर आत्मा का सुख-दुख उसके कर्म पर आधारित है। विचारणीय है कि सर्वशक्तिवान परमात्मा की छत्रछाया में रहने वाली आत्मा पर किसी भूत-प्रेत आत्मा का प्रभाव भला कैसे हो सकता है!

''दुनिया वाले अशुद्ध आत्माओं को भगाने के लिए अग्नि से काम लेते हैं, आप सभी को भी योग की अग्नि से काम लेना है। सर्व कर्मेन्द्रियों को योगाग्नि में तपाना है, फिर कोई वार नहीं कर सकेंगे।'' अ.बापदादा 18.05.1969

''अभी युद्ध में समय नहीं गँवाओ। विजयीपन के संस्कार इमर्ज करो।... दान दो, वरदान दो तो स्व का ग्रहण स्वतः ही समाप्त हो जायेगा। अविनाशी लंगर लगाओ क्योंकि समय कम है और सेवा आत्माओं की, वायुमण्डल की, प्रकृति की, भूत-प्रेत आत्माओं की, सबकी करनी है। उन भटकती हुई आत्माओं को भी ठिकाना देना है।... हर आत्मा को मुक्ति वा जीवनमुक्ति देनी ही है।'' अ.बापदादा 18.02.86

''पहले तुम सूक्ष्म वतनवासी फरिश्ता बनेंगे। अभी तुम फरिश्ते बन रहे हो। सूक्ष्मवतन का राज़ भी बच्चों को समझाया है।... जैसे घोस्ट को छाया का शरीर होता है ना। आत्मा को शरीर नहीं मिलता है तो भटकती है, उनको घोस्ट कहा जाता है। यह फिर हैं सूक्ष्म वतनवासी फरिश्ते।'' सा.बाबा 28.3.05

''वह है अव्यक्त और यह है व्यक्त। यह पतित है और वह है पावन। यह जब ज्ञान योग से पावन बन जायेंगे तो फिर वह सम्पूर्ण हो जायेंगे। वैसे तुम भी बनेंगे। सूक्ष्म वतन है ही फरिश्तों की दुनिया। वहाँ हड्डी-मांस नहीं होता है। वहाँ सूक्ष्म शरीर होते हैं सफेद। जैसे घोस्ट होते हैं ना।... छाया रूपी शरीर दिखाई पड़ता है, उनको पकड़ नहीं सकते।''

सा.बाबा 3.6.72 रिवा.

देह में रहते फरिश्ता स्वरूप का राज़

शरीर छोड़कर परमधाम जाते समय तो सभी आत्मायें फरिश्ता स्वरूप धारण करेंगी ही, भले ही वह एक सेकण्ड के लिए ही क्यों न हो परन्तु इस देह में रहते फरिश्ता स्वरूप का अनुभव अति अलौकिक और सुखदाई है। ऐसे स्वरूप का अनुभव वे ही आत्मायें कर सकेंगी, जिनको इस देह से न्यारे होने का सफल अनुभव होगा, जिसके लिए ही बाबा हमको पढ़ा रहा है और सदा ही कहते - तुमको सर्प के समान खाल बदलने का अभ्यास करना है।

''फरिश्ता अर्थात् न्यारा और प्यारा।... फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट स्वरूप।... सदैव यह याद रखो कि मैं अवतार हूँ, धर्म स्थापन करने अर्थ धर्मात्मा हूँ।... ऐसे को कहा जाता है फरिश्ता।'' अ.बापदादा 4.10.75

''ज्ञान-परियाँ व तीनों लोकों में उड़ने वाली-परियाँ कौनसी हैं? अपने को परियां समझती हो ना! ज्ञान और याद के दोनों पंख लगे हुए हैं ना! ... ऐसे फरिश्ते-समान परियों को एक सेकण्ड में जिस शक्ति की आवश्यकता हो, संकल्प किया व आह्वान किया और वह शक्ति स्वरूप में आ जाये।'' अ.बापदादा 30.1.75

‘‘अभी रहे हुए थोड़े समय में निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी, निरन्तर साक्षात्कार स्वरूप, निरन्तर साक्षात् बाप - इस विधि से सिद्धि प्राप्त करेंगे। ... अभी चलते-फिरते इसी अनुभव में चलो कि मैं फरिश्ता सो देवता हूँ। दूसरों को भी आपकी इस समर्थ स्मृति से आपका फरिश्ता रूप वा देवी-देवता रूप ही दिखाई देगा।’’ अ.बापदादा 18.02.86

Q. चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप कब, कैसे और क्यों दिखाई देगा ? इसका क्या विधि-विधान है ?

ईविल सोल्स एवं उनके प्रभाव का राज़

ईविल सोल्स सूक्ष्म शरीरधारी भी हो सकती हैं और साकार रूप में भी हो सकती हैं अर्थात् भूत-प्रेत के रूप में भी हो सकती है और साकार में ईविल संस्कार वाले मनुष्य भी ईविल सोल्स ही हैं। यदि हमको यथार्थ रूप से बाप की याद नहीं है अर्थात् हमारा योग सही नहीं है, उनके साथ हमारा हिसाब-किताब है तो दोनों ही प्रकार की ईविल आत्मायें हमारे दुख-अशान्ति का कारण बन सकती हैं। हमारे अपने ईविल संस्कार भी हमारे दुख का कारण हैं। सत्यता ये है कि हमारे ईविल संस्कारों के कारण ही ईविल सोल्स हमको दुखी-अशान्त करती हैं या हमारे ईविल संस्कारों के कारण ही ऐसी आत्माओं के साथ हमारा हिसाब-किताब बनता है, जिसके फल स्वरूप हमारा योग सही नहीं होता है और वे आत्मायें हमारे दुख-अशान्ति का निमित्त कारण बनती हैं। अपना हिसाब-किताब चुक्ता करती हैं। अन्यथा कोई भी आत्मा किसी आत्मा को दुखी-अशान्त नहीं कर सकती।

‘‘एक तरफ संकल्पों की स्पीड और दूसरी तरफ ईविल स्प्रिट्स की भी वृद्धि होगी।... ईविल स्प्रिट्स का कुछ गुप्त रूप भी होता है।... लेकिन आप लोगों के सामने स्पष्ट रूप में कम आयेंगी, गुप्त रूप में बहुत आयेंगी।... जितना बिन्दुरूप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्प्रिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा।... आप लोगों का शक्तिरूप ही उन्हों को मुक्त करेगा। ईविल स्प्रिट्स को भी मुक्त करना है।’’ अ.बापदादा 24.7.70

‘‘अभी युद्ध में समय नहीं गँवाओ। विजयीपन के संस्कार इमर्ज करो।... दान दो, वरदान दो तो स्व का ग्रहण स्वत: ही समाप्त हो जायेगा। अविनाशी लंगर लगाओ क्योंकि समय कम है और सेवा आत्माओं की, वायुमण्डल की, प्रकृति की, भूत-प्रेत आत्माओं की, सबकी करनी है। उन भटकती हुई आत्माओं को भी ठिकाना देना है।... हर आत्मा को मुक्ति वा जीवनमुक्ति देनी ही है।’’ अ.बापदादा 18.02.86

आत्मा के परमधाम से आने और वापस जाने का राज़

ब्रह्मलोक अर्थात् शान्तिधाम सर्वात्माओं का घर है। वहाँ आत्मायें शान्ति में रहती हैं अर्थात् वहॉ न कर्म है, न आवाज है, न कोई पार्ट है। वह आत्माओं की सुसुप्त स्थिति है। वहाँ संकल्प की भी गम नहीं है। आत्मायें वहाँ से इस कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजाने के लिए आती हैं। आत्माओं को वहॉ से इस कर्मक्षेत्र पर कोई भेजता नहीं है। ड्रामानुसार पार्ट का समय आने पर इन तत्वों और चेतन आत्माओं के आकर्षण से आत्मायें स्वत: ही यहॉ आ जाती है। फिर कल्पान्त में जब परमात्मा आकर घर का रास्ता बताते हैं और पावन बनने का ज्ञान देते हैं तब आत्मा पावन बनकर देहअभिमान से मुक्त होती तो आत्माओं को परमधाम में जाने की आकर्षण होती है और उस आकर्षण से परमधाम में जाती हैं।

सतयुग से कलियुग अन्त तक आत्मायें अपने पार्ट अनुसार यहाँ आती रहती हैं। फिर कल्पान्त में सभी आत्मायें वापस परमधाम जाती हैं। आत्मा ऊपर से पावन ही आती है और पावन बनकर ही वापस परमधाम जा सकती है।

परमधाम में आत्मा को कोई संकल्प नहीं होता है तो आत्मा को परमधाम से इस धरा पर लाने के लिए क्या-क्या बातें निमित्त बनती हैं और आत्मा की परमधाम जाते समय क्या स्थिति होती है, वह सब राज़ बाबा ने अभी बताये हैं।

‘‘पुरुषार्थ करने वाले को खुशी रहेगी। अभी हम पावन बनकर घर जा रहे हैं।... अभी बाप आये हैं हम आत्माओं को वापस घर ले जाने। बाप यह भी समझाते हैं - तुम घर कैसे जा सकते हो।’’ सा.बाबा 4.10.04 रिवा.

''स्वीट होम हमारा घर है, जहाँ जाने के लिए मनुष्य कितना माथा मारते हैं। बाप समझाते हैं - अभी सबको घर वापस जाना है फिर पार्ट बजाने के लिए यहाँ आना है।'' सा.बाबा 4.10.04 रिवा.

''आत्मायें जब शान्तिधाम में हैं तो वहाँ सब सच्चा सोना हैं। अलाए उनमें हो न सके। भल अपना-अपना पार्ट भरा हुआ है परन्तु सब आत्मायें पवित्र रहती हैं। ... बाप जब आये तब हम वापस शान्तिधाम में जायें।'' सा.बाबा 28.4.05 रिवा.

''कर्म-बन्धन से मुक्त, सम्पन्न हुई आत्मा, इस कल्प के जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करने वाली आत्मा, निराकार बाप की फर्स्ट नम्बर साथी आत्मा, विश्व के कल्याण प्रति निमित्त बनी हुई फर्स्ट आत्मा, स्वयं के प्रति और विश्व के प्रति सर्व सिद्धि प्राप्त हुई आत्मा, जहाँ चाहे और जितना समय चाहे, वह वहाँ स्वतन्त्र रुप में पार्ट बजा सकती है।'' अ.बापदादा 30.6.74

''आत्मा को निराकारी व अव्यक्त स्टेज से व्यक्त में लाने का कारण क्या होता है? एक कर्मो का बन्धन, दूसरा सम्बन्ध का बन्धन, तीसरा व्यक्त सृष्टि के पार्ट का बन्धन और देह का बन्धन - चोला तैयार होता है और आत्मा को पुराने से नये में आकर्षित करता है - तो इन सब के बन्धनों को सोचो।'' अ.बापदादा 30.6.74

''देहधारी बन कर्म-बन्धनों का बन्धन समाप्त कर लिया।... तो धरनी उनको खींच नहीं सकती। ऐसे ही जब तक नये कल्प में, नये जन्म और नई दुनिया में पार्ट बजाने का समय नहीं आया है, तब तक यह आत्मा (ब्रह्मा बाबा) स्वतन्त्र है और व्यक्त बन्धनों से मुक्त है।'' अ.बापदादा 30.6.74

''आत्मा तो अशरीरी है ना। कहते भी हैं - नंगे आये थे, नंगे जाना है। शरीर धारण कर पार्ट बजाया, फिर शरीर छोड़कर नंगे जाना है।... बाप आत्माभिमानी बनाते हैं।'' सा.बाबा 23.7.05 रिवा.

''बाप समझाते हैं - बच्चे, तुम ही सबसे जास्ती पतित बने हो। पहले-पहले तुम ही आये हो पार्ट बजाने, तुमको ही पहले जाना पड़ेगा। चक्र है ना। पहले-पहले तुम ही माला में पिरोये जायेंगे।... रुद्र माला और विष्णु की माला गाई जाती है।''
सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

''बाबा कहते- तुम पसन्द करो, न करो मैं आया हूँ तुमको ले चलने। जबरदस्ती भी ले जाऊंगा। छोड़ेंगे किसको भी नहीं। **न चलेंगे तो सजा देकर मार-पीट कर भी ले चलूँगा**। ... इसलिए अपना पुरुषार्थ करके चलो तो अच्छा है।''
सा.बाबा 21.1.72 रिवा.

आत्मा के सतयुग और कलियुग में देह त्याग का राज़

सतयुग में आत्मा को भविष्य जन्म का साक्षात्कार होता है, उसको अपना आगे वाला पार्ट आकर्षित करता है, वर्तमान जीवन का पार्ट पूरा हो जाने के कारण यहाँ से दिल उठ जाती है और मोहजीत होने के कारण यहाँ के सम्बन्धियों को भी कोई मोह आदि नहीं होता, इसलिए आत्मा सहज ही देह का त्याग कर देती है। द्वापर कलियुग में देह और देह की दुनिया से मोह होने के कारण, आत्माओं को जन्मते-मरते दुखी देखने के कारण आत्मा इस देह को छोड़ना नहीं चाहती है और उसके वर्तमान जीवन के सम्बन्धी भी उसको संकल्प से पकड़कर रखते हैं।
ये सब राज़ परमात्मा ने भिन्न-भिन्न शब्दों और भावों में समझाये हैं, जो बाबा के उपयुक्त महावाक्यों से स्पष्ट हो जाते हैं।

Q. अभी कलियुग में रोगी, असमर्थ, दुखी होते भी आत्मा शरीर को छोड़ना नहीं चाहती है, जबकि सतयुग में शरीर स्वस्थ, जीवन सुखी होते भी आत्मा देह को त्याग देती है तो उसके लिए क्या-क्या बातें निमित्त बनती हैं?

आत्मिक प्यार का राज़

आत्माओं का परमात्मा से तो प्यार अविनाशी है ही लेकिन आत्माओं का परस्पर प्यार भी उतना ही महत्वपूर्ण है क्योंकि सारे कल्प में तो आत्माओं का आत्माओं के साथ ही प्यार रहता है। परमात्मा का आत्माओं से और आत्माओं का परमात्मा के साथ प्यार अविनाशी है अर्थात् उसमें शत्रुता की बात नहीं होती परन्तु आत्माओं का परस्पर प्यार बदलता रहता है और उसमें मिठास भी आती है तो कब-कब कड़वाहट भी आ जाती है।

वास्तव में देखें तो ये विश्व-नाटक एक प्रेम-कहानी है। संगमयुग पर आत्मा का परमात्मा के साथ प्यार होता है, जिस प्यार के अनुभव के कारण ही भक्ति मार्ग में आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं। सतयुग की आदि से आत्माओं का आत्माओं के साथ प्यार होता है। सतयुग-त्रेतायुग दो युगों तक ये प्यार पवित्र होता है, द्वापर से देहाभिमान के कारण विकारों की प्रवेशता होती है और वह पवित्र प्यार अपवित्र अर्थात् विकारी हो जाता है। इस विकारी जगत में भी बच्चा जन्म लेता है तो जन्म से ही मां-बाप के साथ प्यार, मित्रों के साथ प्यार, स्त्री के साथ प्यार, बच्चों के साथ प्यार बदलता रहता है। इस प्रकार कल्प के आदि से अन्त तक और जन्म से मृत्यु तक आत्मा प्यार के बन्धन में बंधी रहती है। प्यार की ये कहानी या प्यार की प्रवृत्ति मनुष्यात्माओं तक ही सीमित नहीं है किन्तु हर योनि की आत्माओं में यह प्यार की प्रवृत्ति है, जो हर योनि की आत्माओं में देखने को मिलती है। मनुष्य का पशु-पक्षी की आत्माओं के प्रति और पशु-पक्षी की आत्माओं का मनुष्य के प्रति भी प्यार होता ही है क्योंकि प्यार आत्मा का एक मूल गुण है।

सभी आत्मायें इस विश्व-नाटक के पार्टधारी हैं और प्रेम आत्मा का मूल गुण है। परमात्मा प्रेम का सागर है, उनके प्रेम से प्रभावित आत्मायें दुख के समय उनको याद करती हैं और कल्पान्त में वह आकर आत्माओं को अपने प्रेम का अनुभव कराता है।

''आत्मिक प्यार की निशानी है - दूसरे की कमी को अपनी शुभ भावना, शुभ कामना से परिवर्तन करना। बापदादा ने अभी लास्ट सन्देश भी भेजा था कि वर्तमान समय अपना स्वरूप मर्सीफुल बनाओ, रहमदिल बनो।... रहम की खान बन जाओ।... बापदादा क्या चाहते हैं, इसका उत्तर दे रहा है।'' अ.बापदादा 15.10.04

''जाति-धर्म को न देख आत्मा को देखना है, आत्मा को समझाना है। प्रदर्शनी में जब समझाते हो तो यह प्रैक्टिस रहे कि हम आत्मा भाई को समझाते हैं। अपने को आत्मा समझ भाइयों को ज्ञान देते हैं।... अपने को आत्मा समझने की प्रैक्टिस डालो तो नाम-रूप, देह सब भूल जाये।'' सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

Q. आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य क्या है और उसको पाने के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है? उसके लिए साधन क्या है? क्या उसमें कोई वस्तु या व्यक्ति की आवश्यकता है या कोई वस्तु या व्यक्ति बाधक हो सकता है? यदि हाँ तो कैसे और नहीं तो कैसे?

Q. मनुष्य-योनि के अतिरिक्त अन्य जानवर, कीट-पतंगे आदि में आत्मा है या नहीं? यदि नहीं हैं तो उनमें क्या कमी है, जिससे उनको चेतन आत्मा नहीं कह सकते और यदि हैं तो विनाश के बाद वे परमधाम जायेंगी या नहीं? यदि परमधाम नहीं जायेंगी तो क्यों नहीं जायेंगी और वे बाद में कहाँ रहेंगी?

आत्मा की चेतनता की परख का राज़

परमात्मा ने आत्मा का जो ज्ञान दिया है, उससे ही आत्मा के असली स्वरूप को परखा जा सकता है। बाबा ने मुरलियों में जो ज्ञान दिया है, उसके आधार पर कुछ विचारों को यहाँ उद्धृत किया गया है, जिससे आत्मा और जंड़-जंगम के भेद को समझा जा सके। आत्मा मन-बुद्धि-संस्कारों सहित एक चेतन्य सत्ता है। इस जगत में तीन प्रकार की प्रकृतियाँ हैं - जड़, जंगम और चेतन। कोई सत्ता चेतन है या नहीं, उसके निर्णय के लिए चेतनता की क्या-क्या विशेषतायें होती हैं, उनकी जानकारी अति आवश्यक है। उसके लिए ही यहाँ विचार किया गया है और कुछ बातें नीचे लिखी गई हैं, इन बातों में से यदि 75 प्रतिशत बातें किसी में देखने में आती हैं तो कहा जायेगा कि उसमें चेतन आत्मा है।

1. सोचने, समझने और निर्णय करने की शक्ति आत्मा की पहली और मूल विशेषता है।
2. आत्मा प्रवेश करती और शरीर छोड़ती है।
3. आत्माओं में मादा गर्भ-धारण करती, वह भले अण्डे के रुप में हो या बच्चे के रुप में।
4. आत्माओं में नर-मादा का संयोग होता।
5. आत्मा स्मृति को संचित करती।

6. आत्मायें परस्पर प्यार करती हैं - मनुष्य और दूसरी योनि से प्यार-वैर भाव करते ईर्ष्या करते।
7. जब हम जानवरो का मां के समान दूध पी सकते, गोद में रख सकते तो परमाधाम जाने में क्या आपत्ति है।
8. जानवर भी कृत्य-अकृत्प का निर्णय करते हैं।
9. जानवर भी मान-अपमान की अनुभूति करते हैं।
10. बाबा ने गऊ का, मधुमक्खी का, बिछू का, सर्प का, मोर का, कछुये का, बन्दर का, शेर-शेरनी आदि का उदाहरण आत्मा के सन्दर्भ में दिया, तो हम कैसे कह सकते बाबा ने पशु योनियो के विषय में नहीं बताया, बाबा ने अनेक जगह 84 लाख योनियों की बात कही है।
11. बाबा ने हजारो जगह कहा कि परमधाम आत्माओं का घर है, जब आत्माओं का घर है तो जो भी आत्मायें हैं, उन सबका वह घर है और वे सभी घर में जायेंगी।
12. मनुष्य सृष्टि में सबसे अधिक बुद्धिमान और चिन्तनशील प्राणी है, इसलिये उसकी बात कही है क्योंकि उसके आधार पर सब में परिवर्तन हो जाता है। जैसे बाबा ने ब्रह्मा बाबा के 84 जन्मों की कहानी बता कर सारे चक्र का राज़ समझाया तो क्या हम ये कह सकते हैं कि फलाने व्यक्ति की आत्मा के विषय में बाबा ने नहीं बताया। फिर मनुष्यों में भी भिन्नता है कोई राजा-रानी, कोई दास-दासी के संस्कारों वाली है तो दोनों में कितना अन्तर है।
13. आत्मायें स्वतन्त्रता से स्थान परिवर्तन कर सकती हैं।
14. आत्मा में स्वतन्त्र रहने की प्रवृति है।
15. आत्माओं में कृतज्ञता के संस्कार होते हैं, जानवरों में भी स्वामि-भक्ति के संस्कार होते हैं - राणा प्रताप का घोड़ा, झांसी की रानी का घोड़ा, अनेक कुत्तों आदि के उदाहरण दुनिया में हैं।
16. हर योनि की आत्मा का शरीर धारण करने का विधि-विधान, प्रक्रिया अलग-अलग है, जिसमें गर्भ से बच्चे के रूप में, अण्डज, स्वेदज, जलज आदि हैं।
17. पशु-पक्षियों में कई योनियो में नर-मादा के जोड़े होते हैं या होकर रहते है।
18. आत्मा में संग्रह प्रवृति होती है, जो भी अनेक अन्य योनियों में होती है - चींटी, मधुमक्खी, चूहे आदि आदि में।
19. एक-दूसरे को अपने गुण धर्म सिखाते भी हैं, जैसे कुतिया अपने बच्चों को, शेरनी अपने बच्चों को आदि आदि।
20. जानवर भी मनुष्यों के समान मनोरंजन करते हैं। जैसे कुत्ते, बिल्ली, बन्दर, चिड़िया आदि सभी खेलते-कूदते हैं।
21. जानवर भी मनुष्यात्माओं के समान अपनी सुख-दुःख का इजहार करते हैं। जिससे भयभीत होना और बचने का पुरुषार्थ आदि करते हैं।

आत्मा की चेतनता की परख या कसौटी क्या है? / सृष्टि-चक्र का राज़

''बाप ने तो सारा ज्ञान दे दिया है। जिसने जितना कल्प पहले धारण किया था, उतना ही अभी करेंगे। पुरुषार्थ करना है, कर्म बिगर तो कोई रह न सके। ... कल्प-कल्प एक ही बार बाबा बतलाते हैं कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है।''

सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

''यह है बड़ा वण्डरफुल ड्रामा। अभी तुम बच्चे आदि से लेकर अन्त तक सब जानते हो। ... बाप के पास सारा ज्ञान है, तुम्हारे पास भी होना चाहिए। ... यह साक्षात्कार आदि सब ड्रामा में नूँध हैं, इसमें तुमको मूँझने की दरकार नहीं है।''

सा.बाबा 28.3.05 रिवा.

ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा। ये नाटक हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। परमात्मा ही इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है। ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी हमको सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज़, सृष्टि-चक्र के नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान, सृष्टि की अद्भुतता-दिव्यता का

ज्ञान दिया है, जिसको समझकर हम इस विश्व-नाटक के सच्चे सुख को अनुभव कर सकते हैं क्योंकि ये विश्व-नाटक परम सुखमय है। इसीलिए बाबा सदा कहते हैं - बच्चे स्वदर्शन चक्रधारी बनो, यह ज्ञान बुद्धि में सदा फिरता रहे तो तुम अपार खुशी में रहोगे। स्वदर्शन चक्र सदा फिरता रहे तो माया कब वार कर नहीं सकती।

ये सृष्टि-चक्र कहो, विश्व-नाटक कहो एक घटना-चक्र है, जो क्रिया-प्रतिक्रिया, कर्म-फल-कर्म, पुरुषार्थ-प्रालब्ध-पुरुषार्थ पर आधारित है, जो कल्प के आदि के प्रथम क्षण से आरम्भ होता है और अन्तिम क्षण तक सतत चलता है। सृष्टि की कब आदि-अन्त नहीं है, इसलिए सृष्टि को अनादि-अनन्त कहा जाता है परन्तु इस चक्र की आदि और अन्त है। सतोप्रधानता की चरम सीमा और तमोप्रधानता की चरम सीमा ही इसकी आदि और अन्त का समय है। इस विश्व-नाटक में कर्म और फल का अद्वितीय सन्तुलन है, जिसके आधार पर ये विश्व-नाटक 5000 वर्ष तक अबाध गति से सफलतापूर्वक चलता है और किसी भी व्यक्ति को अंशमात्र भी प्रश्न करने गुंजाइश नहीं है।

ये विश्व-नाटक परम सुखमय है, जो आत्मा इस नाटक की यथार्थता को जानकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर पार्ट बजाती है, इसको देखती है, वही इसके परम सुख को अनुभव करती है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान परमात्मा ही आकर देते हैं, जिससे आत्मा साक्षी होकर इसके परम सुख को अनुभव करती है। इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान ही साक्षी स्थिति का एकमात्र आधार है।

यह सृष्टि स्मृति-विस्मृति का एक खेल है। संगमयुग पर आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, तीनों लोकों, कल्प-वृक्ष, कर्म-सिद्धान्त, आत्मा की चढ़ती कला उतरती कला आदि का ज्ञान परमात्मा से मिलता है, जिसकी स्मृति से आत्मा की चढ़ती कला होती है, स्वर्ग की स्थापना होती है। सतयुग से ये सब ज्ञान विस्मृत हो जाता है, जिसके कारण सतयुग आदि से ही आत्मा की उतरती कला आरम्भ हो जाती है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान की विस्मृति के कारण सतयुग से ही आत्मा और सृष्टि की उतरती कला आरम्भ हो जाती है, द्वापर से ये विस्मृति देहाभिमान का रूप धारण लेती है, जिससे आत्मा में 5 विकारों की प्रवेशता हो जाती है और आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास होने लगता है।

कल्पान्त में जब परमात्मा पिता आकर ज्ञान देते हैं तो स्व-स्वरूप, स्व-पिता, स्व-देश, स्व-धर्म, स्व-कर्तव्य, स्व-राज्य, स्वदर्शन-चक्र की स्मृति से आत्मिक शक्ति का विकास होता है, जिससे आत्मिक शक्ति देहाभिमान पर विजय प्राप्त करती है, जिसके फलस्वरूप नर्क फिर से स्वर्ग बनता है। इन सबकी विस्मृति से आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, जिससे देहाभिमान आत्मिक शक्ति पर विजय प्राप्त कर लेता है और स्वर्ग नर्क बन जाता है। स्वर्ग से नर्क और नर्क से स्वर्ग का ये चक्र सतत चलता रहता है।

वास्तव में देखा जाये तो ये विश्व-नाटक एक प्रेम कहानी है क्योंकि प्रेम इस कहानी में मुख्य भूमिका निभाता है, जिसके आधार पर ये सारा नाटक चलता है। प्रेम आत्मा का परमात्मा से, आत्माओं का आत्माओं से, मां-बाप का बच्चों से, स्त्री-पुरुष का, मनुष्यात्माओं का पशु-योनियों की आत्माओं से और पशु-योनियों की आत्माओं का मनुष्यात्माओं से आदि से अन्त तक चलता है। परमात्मा को प्यार का सागर कहा जाता है। सतयुग के लिए गायन है कि शेर और गाय एक घाट जल पीते थे अर्थात् उनमें भी इतना प्रेम था।

''यह समझानी जो अभी तुमको दे रहा हूँ, यह हर कल्प देता आया हूँ। ... यह एक बेहद का नाटक है। इसमें कोई की निन्दा आदि की बात नहीं है। अनादि ड्रामा बना हुआ है, इसमें फर्क कुछ भी नहीं पड़ सकता। यह अनादि बना-बनाया बड़ा अच्छा नाटक है, जिसको बाप समझाते हैं। इस ड्रामा के राज़ को समझने से तुम विश्व के मालिक बन जाते हो।''

सा.बाबा 4.10.04 रिवा.

''यह ईश्वर की बारात है ना।... अभी नाटक पूरा हुआ, अब घर चलना है। पावन जरूर बनना है। तुम्हारे लिए ड्रामा अनुसार मैं कल्प-कल्प आता हूँ।''

सा.बाबा 4.10.04 रिवा.

‘‘यह आत्मा और जीव दो का खेल है।... यह तो पढ़ाई है, यह कोई दवाई नहीं है। दवाई है याद की यात्रा।... यह कैसा भूल-भुलैया का खेल है, जिस बाप से इतना बेहद का वर्सा मिलता है, उनको ही भूल जाते हैं।... यह दुर्गति और सद्गति का खेल बना हुआ है। अभी बाप ने तुमको सद्गति-दुर्गति के टाइम आदि का भी समझाया है।’’ सा.बाबा 20.11.04 रिवा.

‘‘मनुष्य से देवता और देवता से मनुष्य कैसे बनते हैं - यह राज़ बाप ने तुमको समझाया है।... इस अविनाशी ड्रामा के राज़ को जो ठीक रीति जानते हैं, वे सदा हर्षित रहते हैं।... हू-ब-हू सारी एक्ट फिर से रिपीट हो रही है। इसमें संशय कर नहीं सकते।’’

सा.बाबा 17.12.04 रिवा.

‘‘बाप आकर सारे सृष्टि चक्र की नॉलेज देते हैं।... यह चक्र फिरता रहता है। ये बड़ी सूक्ष्म बातें हैं समझने की। यह बना-बनाया खेल है।... देही-अभिमानी बनें तब खुशी का पारा चढ़े।... बाबा से कोई बात पूछते हैं तो बाबा कहते हैं - ड्रामा में जो कुछ बताने का है, वह बता देते हैं। ड्रामा अनुसार जो उत्तर मिलना था सो मिल गया, बस उस पर चल पड़ना है।’’

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

‘‘आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है, फिर वही पार्ट बजायेंगे। इसको कहा जाता है कुदरत।... शास्त्रों में भूल कर दी है। यह भी भूल हो तब तो हम आकर अभूल बनायें। यह भूलें भी ड्रामा में नूँध हैं।’’ सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

‘‘मनुष्य इस ड्रामा के एक्टर हैं। यह सारा खेल दो बातें पर ही बना हुआ है। हार और जीत, पवित्रता और अपवित्रता। भारत की हार और भारत की जीत। भारत में सतयुग के समय पवित्र धर्म था, इस समय है अपवित्र धर्म।’’ सा.बाबा 8.6.05 रिवा.

विश्व-नाटक की संरचना का राज़

विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता और सतत परिवर्तनशीलता का राज़ ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, इसलिए इसकी रचना का तो प्रश्न ही नहीं उठता है अर्थात् न इसकी कभी रचना हुई है और न ही विनाश होने वाला है परन्तु इसमें हर पल-विपल परिवर्तन अवश्य होता है। इसलिए जगत को परिवर्तनशील कहा जाता है। इस सतत परिवर्तन के आधार पर ही ये विश्व नाटक नित्य नया प्रतीत होता है। सृष्टि की तो कभी नई रचना नहीं हुई है परन्तु इसका चक्र नया-पुराना अवश्य होता है अर्थात् दुनिया नई और पुरानी होती है, चक्र का आदि-अन्त होता है सृष्टि का नहीं। परमात्मा सृष्टि-चक्र की रचना नहीं करता है परन्तु नये चक्र की रचना करता है अर्थात् पुराने से नये में बदलता है। हर पांच हजार साल के बाद परमात्मा पिता आकर ज्ञान देकर नये चक्र की कलम लगाते हैं, जिससे इसका नया चक्र चालू होता है। तमोप्रधानता की चरम सीमा और सतोप्रधानता की चरम सीमा ही इसके आदि-अन्त की पहचान है, जिसको स्वर्ग और नर्क के नाम से भी जाना जाता है। अभी वही संगम का समय चल रहा है, जब परमात्मा इसकी कलम लगा रहे हैं, आत्माओं को ब्रह्मा तन से एडॉप्ट कर ज्ञान देकर पावन बना रहे हैं। इस प्रकार हम देखें तो परमात्मा विश्व-नाटक की संरचना नहीं करता लेकिन नये चक्र की संरचना अवश्य करता है अर्थात् पुराने से नया बनाता है।

‘‘हर आत्मा अपना-अपना 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। एक सेकण्ड का पार्ट दूसरे सेकण्ड से मिल न सके।... अब बाप को रचता कहा जाता है परन्तु ऐसे नहीं कि वह ड्रामा का कोई रचता है। रचता अर्थात् इस समय आकर सतयुग को रचते हैं।’’ सा.बाबा 21.5.05 रिवा.

‘‘माला को तुम अच्छी रीति जान गये हो। जो बाप के साथ सर्विस करते हैं, उनकी यह माला है। शिवबाबा को रचता नहीं कहेंगे। रचता कहेंगे तो प्रश्न उठेगा कि कब रचना की ? प्रजापिता ब्रह्मा अभी संगम पर ही ब्राह्मणों को रचते हैं ना। शिवबाबा की रचना तो अनादि है ही। वे सिर्फ पतित से पावन बनाने के लिए आते हैं।... मनुष्य सृष्टि को रचने वाला हो गया ब्रह्मा, जो मनुष्य सृष्टि का हेड है।’’ सा.बाबा 25.5.05 रिवा.

''बाप आकर सत्य बात समझाते हैं।... भगवान मनुष्य सृष्टि की रचना कैसे रचते हैं, यह कोई नहीं जानते।... ब्रह्मा कोई क्रियेटर नहीं है, क्रियेटर तो एक निराकार ही है। निराकार आत्मायें तो अनादि हैं, उनको किसी ने क्रियेट नहीं किया है।''
सा.बाबा 15.7.05 रिवा.

''यह शास्त्र आदि सब ड्रामा में नूँध हैं। इस ड्रामा की आदि तो कह न सकेंगे। जो कुछ पास्ट होता आया है, वह ड्रामा में नूँधा हुआ है। उसको रिपीट जरूर करना है।'' सा.बाबा 14.12.73 रिवा.

विश्व-नाटक और परमात्मा-आत्मा का राज़

ये सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जिसमें आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का अनादि-अविनाशी पार्ट है। हर आत्मा एक स्वतन्त्र सत्ता है, जो इस विश्व-नाटक में पार्टधारी है। आत्मायें चेतन्य हैं और प्रकृति जड़ है। परमात्मा सहित सर्वात्मायें इस विश्व-नाटक में अविनाशी पार्टधारी हैं। परमात्मा ज्ञान का सागर है, इसलिए वह इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है परन्तु रचता नहीं। परमात्मा का भी इस विश्व-नाटक में अपना पार्ट है, जो वह कल्प-कल्प बजाता है। वह जब आकर इस विश्व-नाटक का ज्ञान देता है तब ही इसकी नई कलम लगती है, इसलिए ही उसको विश्व का रचता कहा जाता है और कह सकते हैं। विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता होते हुए भी ड्रामानुसार समय पर ही ये ज्ञान उनमें इमर्ज होता है, जिसके आधार पर विश्व-नाटक का नया चक्र आरम्भ होता है।

विश्व-नाटक के नियमानुसार हर आत्मा का कर्म और फल का, सुख-दुख का, आत्मा का आत्मा के साथ हिसाब-किताब का पूर्ण सन्तुलन है। आत्मा मूल स्वरूप में सच्चिदानन्द स्वरूप है परन्तु उसकी अनुभूति देह में रहते ही हो सकती है। जब देह में रहते देह से न्यारी स्थिति में होती है तो परमानन्द का अनुभव करती है। कल्पान्त में यह स्थिति ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों के आधार अनुभव होती है और कल्प के आदि में आत्मिक शक्ति के आधार पर हर आत्मा को अनुभव होती है।

''मनुष्य समझते कि भगवान तो बड़ा समर्थ है, वह जो चाहे सो कर सकते हैं लेकिन बाबा कहते हैं - मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ। ... मेरे पार्ट की भी लिमिट है।... ड्रामा में हर एक का एक्यूरेट पार्ट नूँधा हुआ है।'' सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

''यह है हाइएस्ट बाप की रि-इन्कारनेशन। फिर सब नम्बरवार आते हैं, कम ताकत वाले।... तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम्हारे में फुल फोर्स की ताकत आती है।... मुख्य है ड्रामा, जिसकी नॉलेज तुमको अभी मिलती है।... तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो और उस अनुसार ही पद पाते हो।'' सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

''ऊंच ते ऊंच कर्तव्य बाप का है। ऐसे नहीं कि ईश्वर तो समर्थ है तो जो चाहे सो करे। नहीं, यह तो ड्रामा अनादि बना हुआ है। सब कुछ ड्रामा अनुसार ही चलता है। लड़ाई आदि में कितने मरते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। इसमें भगवान क्या कर सकते हैं।... इसमें बचाने आदि की तो बात ही नहीं है।'' सा.बाबा 12.1.05 रिवा.

''बाप भारत में ही आते हैं। यह भी ड्रामा अनादि बना हुआ है। कब बना, कब पूरा होगा - यह प्रश्न नहीं उठ सकता है।... तुम अपने को आपही अपने को राजतिलक देते हो।... मन्मनाभव, जिससे अपने को आपही राजतिलक मिलता है, बाप नहीं देते हैं।'' सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

''हमको सभी बात पसन्द है क्योंकि यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। हार-जीत का खेल है। जो होता है सो ठीक। क्रियेटर को ड्रामा पसन्द तो होगा ना। जरूर क्रियेटर के बच्चों का भी ड्रामा में पार्ट है। ड्रामा सारा अच्छा है। ड्रामा को बुरा क्यों कहेंगे, ड्रामा का राज बुद्धि में है।... बहुत सुन्दर नाटक बना हुआ है। नाटक में सुख-दुख सभी पार्ट को देख खुशी होती है। यह भी बेहद का खेल बड़ा फाइन बना हुआ है। सो तो पसन्द ही आना चाहिए।... बहुत फर्स्ट क्लास खेल है। इसको जानने से बुद्धि पूर हो गई है। हम इस खेल को जान गये तो समझते हैं मजा ही मजा है।... सारा दिन बुद्धि में यह ख्याल चलना चाहिए - कैसा वण्डरफुल खेल है।... इस वण्डरफुल ड्रामा को भी नहीं जानते। जो अच्छी रीति जानते हैं और समझते हैं, उनको जरूर खुशी का पारा चढ़ता होगा। जो बहुत दान करते हैं उनको नशा भी होगा ना।'' सा.बाबा 21.4.72 रिवा.

''यह है बड़ी गुह्य बात। ड्रामा अनुसार जिस समय, जो बात जिस पर निकलती है, वह नूँध है। शिव बाबा ड्रामा अनुसार पढ़ाते हैं। ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ है। जल्दी विनाश नहीं करा सकते। कहते हैं हमारा भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है, इसमें चेन्ज नहीं हो सकती। बच्चे पूछते - बाबा आप किसके हुक्म पर चलते हैं। हम ड्रामा के हुक्म पर चलते हैं। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ हूँ। ड्रामा अनुसार जो सिखाया है, वही कल्प बाद सिखाऊंगा। कल मंगलवार है, वही वाणी निकलेगी, जो कल्प पहले मंगलवार के दिन निकली थी। कितनी गुह्य बातें हैं।'' सा.बाबा 6.4.73 रिवा.

''बाप जादूगर भी है ना। समझते हैं मैं भी ड्रामा के वश में हूँ। ऐसे नहीं कि ड्रामा के बगैर कुछ कर सकता हूँ। नहीं।... तुम जानते हो कल्प- कल्प ड्रामा अनुसार हम बाप से वर्सा लेते हैं।'' सा.बाबा 26.5.71 रिवा.

''यह बना-बनाया नाटक है, हम समझते हैं कि ये सभी एक्टर्स हैं। निन्दा तो कर नहीं सकते। नाटक की तो जरूर महिमा ही करनी पड़े। अपना ही नाटक है, हम उस नाटक के एक्टर्स हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर तुम खुश होते हो, निन्दा तो नहीं कर सकते। बाकी मनुष्यों को माया के फन्दे से छुड़ाने के लिए समझाते हैं।''

सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

''महल बनाने पड़ेंगे, राजाओं के पास जन्म होता है, क्या होता है सो तो आगे चलकर देखना है। अभी थोड़ेही बाबा बतायेंगे। वह तो फिर आर्टिफिशियल नाटक हो जाये। इसलिए बाबा अभी बताते कुछ भी नहीं हैं। ड्रामा में पहले से बताने की नूँध नहीं है। बाप कहते - मैं भी पार्टधारी हूँ। आगे की बातें पहले से ही जानता होता तो बहुत कुछ बतलाता।'' सा.बाबा 12.8.05 रिवा.

विश्व-नाटक के गुण-धर्मों (Characterstics) का राज़

ये सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इसमें हर आत्मा और जड़ तत्वों के हर कण में सारे कल्प की गति-विधि का विधि-विधान नूँधा हुआ है। ये विश्व-नाटक सुख-दुख, हार-जीत का खेल होते हुए भी सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी (Accurate, Just & Auspicious) है। इसके गुण-धर्मों को जानने वाली और अपने स्वधर्म में स्थित होकर पार्ट बजाने वाली आत्मा इसके परम सुख को अनुभव करती है। इसलिए इसके गुण-धर्मों का ज्ञान जो परमात्मा ने दिया है, उसमें से मुख्य-मुख्य का यहाँ वर्णन करते हैं।

1. परमात्मा सहित सर्व-आत्माओं और जड़ तत्वों के अणु-परमाणुओं की सारे कल्प की गति-विधि का अवनाशी पार्ट उनमें नूँधा हुआ है और परमात्मा को छोड़कर हर आत्मा और हर वस्तु की सतो, रजो, तमो स्थिति आती है।
2. परमधाम सर्व आत्माओं का घर है और ये आकाश तत्व के अन्दर ये साकार वतन एक ड्रामा स्टेज है। परमधाम से सभी आत्मायें अपने निश्चित समय पर पार्ट बजाने आती हैं और कल्पान्त में सभी आत्मायें वापस घर परमधाम जाती हैं। हर आत्मा को अपने पार्ट के समयानुसार मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है।
3. सारा विश्व एक ड्रामा स्टेज है और सूर्य-चाँद तारे इस विश्व-नाटक को प्रकाशित करने वाली बत्तियां हैं।
4. ये सृष्टि-चक्र चढ़ती कला और उतरती कला का खेल है। इसकी यथार्थता को भूलने और देह में आने से आत्माओं की उतरती कला होती है और परमात्मा द्वारा इसका यथार्थ ज्ञान मिलने पर उस ज्ञान की धारणा और परमात्म की याद से आत्माओं की चढ़ती कला होती है।
5. जब आत्मा पवित्र बनती हैं तब भी इसमें प्राक्रतिक आपदायें आती हैं, अणु-युद्ध, गृह-युद्ध आदि होता है, जिनसे इसका मूलभूत परिवर्तन होता है और जब द्वापर आदि में आत्मायें पतित बनती हैं अर्थात् काम-विकार में प्रवेश करती हैं तब भी प्राकृतिक आपदाओं से इसमें विशेष परिवर्तन आता है।
6. इस विश्व-नाटक में कोई किसका मित्र-शत्रु नहीं है, सभी पार्टधारी हैं। मित्रता-शत्रुता अज्ञानता जनित भ्रम है, जो भी विश्व-नाटक के अस्तित्व के लिए और आत्माओं के यथार्थ रीति पार्ट बजाने के लिए आवश्यक है।
7. सृष्टि-चक्र सतत परिवर्तनशील है परन्तु 5000 साल के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है।

8. सृष्टि-चक्र में और भी अनेक चक्र हैं, जो पुनरावृत्त होते हैं परन्तु हू-ब-हू नहीं। यथा दिन-रात का चक्र, मास का चक्र, वर्ष का चक्र, जन्म-मृत्यु का चक्र आदि आदि।

''स्वदर्शन चक्र के अन्दर फिर यह एक दिन का चक्र है।... यह बेहद का 5000 वर्ष का चक्र है, उसमें फिर छोटे-छोटे चक्र हैं। तो अपना यह दिनचर्या का चक्र सदैव क्लीयर रहे।'' अ.बापदादा 18.7.71

9. विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी (Eternal, Just, Auspicious) है।

10. सृष्टि-चक्र अनादि-अविनाशी है, जो चार समान भागों में विभाजित है। पहले दो भाग स्वर्ग और दूसरे दो भाग नर्क कहलाते हैं, जिनको ब्रह्मा के दिन और रात के रूप में भी जाना जाता है। इसको हार-जीत, रात-दिन का खेल भी कहा जाता है।

11. सृष्टि-चक्र के आधे भाग में एक देवी-देवता धर्म और आधे भाग में अनेक धर्म होते हैं।

12. विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है। इसकी न कभी रचना हुई है और न कभी विनाश होने वाला है। परमात्मा के द्वारा इसके चक्र की कलम लगती है।

13. यह विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, इसका एक दृश्य न मिले दूसरे से, एक क्षण का दृश्य न मिले दूसरे से, एक जीवात्मा के फीचर्स न मिलें दूसरे से अर्थात् हर बात में भिन्नता और विविधता अवश्य है।

14. विश्व-नाटक में आत्माओं के पार्ट और कर्म-फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध का अद्वितीय सन्तुलन है।

15. प्रेम इस विश्व-नाटक का मुख्य आधार है, इसलिए इसको प्रेम-कहानी भी कहा जाता है।

''इस सृष्टि में कोई भी चीज सदा कायम है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। बाकी सबको नीचे आना ही है।... यह सब राज़ ड्रामा में हैं।... बाप आकर ज्ञान और योग के पंख देते हैं। योग बल से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे और तुम पुण्यात्मा बन जायेंगे।'' सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्तों का राज़

इस विश्व-नाटक के विधि-विधान बड़े ही कल्याणमय हैं और सत्य हैं। कोई भी विधि-विधान के कार्य में कब भी कोई चूक नहीं हो सकती। सृष्टि का हर नियम अपने समय पर बिल्कुल एक्यूरेट कार्य करता है। आध्यात्मिक उन्नति और सुखमय जीवन के लिए विश्व-नाटक के मुख्य-मुख्य विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त, जिनके विषय में जानना अति आवश्यक है, वे निम्नलिखित है, जिनका ज्ञान परमात्मा ने दिया है:-

विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का सिद्धान्त,
सतत परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त
पुरुषार्थ और प्रालब्ध, कर्म और फल का सिद्धान्त,
सृष्टि-परिवर्तन का विधि-विधान,
आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब का विधि-विधान,
आत्माओं के पतित और पावन बनने का विधि-विधान,
परमधाम से आने और वापस जाने का विधि-विधान,
जन्म-पुनर्जन्म का विधि-विधान,
ज्ञान और भक्ति और उनके सम्बन्ध का विधि-विधान
विभिन्न धर्मों की स्थापना का विधि-विधान,
स्वर्ग और नर्क का विधि-विधान आदि आदि

सृष्टि के ये सब विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त बिल्कुल सही रीति अपने समय पर कार्य करते हैं। चैतन्य तो चैतन्य लेकिन जड़ प्रकृति भी अपने नियमानुसार समय पर अपना कार्य एक्यूरेट करती है। सृष्टि के इन नियम-सिद्धान्तों को न परमात्मा चलाता है, जैसी भक्ति में मनुष्यों की मान्यता है और न और कोई चलता है। ये सृष्टि के अनादि-अविनाशी नियमानुसार स्वतः चलते रहते हैं, परमात्मा तो आकर इन सब विधि-विधानों का राज़ समझाते, जिनको जानककर आत्मायें इस विश्व-नाटक का परम-सुख अनुभव करती हैं, पतित से पावन बनती हैं और ये विश्व-नाटक तमोप्रधान से सतोप्रधान में परिवर्तित होता है।

''विधि और विधान दोनों के साथ ही विधाता की याद आती है। अगर विधाता याद रहे तो विधि और विधान दोनों साथ स्मृति में रहेगा।... जब विधि और विधान दोनो साथ रहेंगे तब सफलता गले का हार बन जायेगी।'' अ.बापदादा 7.6.70

''भारत अभी कितना कंगाल है, रावण राज्य है। कितना ऊंच नम्बरवन था, अभी लास्ट नम्बर है। लास्ट में न आये तो नम्बरवन में कैसे जाये। ये भी हिसाब है ना। अगर धीरज से विचार सागर मंथन करें तो सब बातें आपेही बुद्धि में आ जायेंगी।''

सा.बाबा 13.7.05 रिवा.

''जरूर वहाँ का कायदा होगा। बच्चा किस आयु में आयेगा। वहाँ सब रेग्यूलर चलता है ना। वह आगे चलकर महसूस होगा।... वहाँ 150 वर्ष की आयु होती है, तो बच्चा तब आयेगा जब आधा लाइफ से थोड़ा आगे होंगे।... पहले बच्चे की, फिर बच्ची की आत्मा आती है। विवेक कहता है पहले बच्चा आना चाहिए। पहले मेल, पीछे फीमेल। आठ-दस वर्ष की देरी से आयेंगे।... रस्म-रिवाज भी जरूर सुनाते जायेंगे। आगे चलकर बहुत सुनायेंगे और सब साक्षात्कार होते रहेंगे।''

सा.बाबा 28.06.04 रिवा.

विश्व-नाटक के आध्यात्मिक नियम और सिद्धान्तों का राज़

परमात्मा ज्ञान का सागर है और इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, वही आकर इसके सर्व नियम और सिद्धान्तों का ज्ञान देता है। जो आत्मायें इन सब नियम और सिद्धान्तों को समझ लेते हैं, उनको समझकर उन पर निश्चय करते हैं और उन नियम-सिद्धान्तों को सदा बुद्धि में जाग्रत रखते हैं, उनको ये विश्व-नाटक परमानन्दमय, परम सुखमय अनुभव होता है क्योंकि ये नाटक हार-जीत का होते हुए भी परमानन्दमय है। परमात्मा ने ज्ञान दिया है कि ये विश्व नाटक सत्य अर्थात् अविनाशी, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। परमात्मा इसके नियम-सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह कभी इसकी किसी भी प्रिय-अप्रिय घटना से प्रभावित नहीं होता है। वह हमको भी अपने समान मास्टर ज्ञान-सागर बनाता है। जो बनते हैं, वे इसके परमानन्द को अनुभव करते हैं।

''कितना बड़ा बेहद का नाटक है, तो उसको जानना चाहिए ना। सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। हर एक का ड्रामा में जो पार्ट है, वही बजायेंगे। ड्रामा में कोई रिपलेस हो नहीं सकता।... यह सारी नॉलेज बुद्धि से समझने की है।''

सा.बाबा 14.09.04 रिवा.

''जो कुछ एक बार होता है, फिर कल्प बाद वही रिपीट होगा। कितनी अच्छी समझानी है। इसमें बहुत विशाल बुद्धि चाहिए।... क्रिश्चियन लोग भी कहेंगे - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले हेविन था। फिर जरूर अब होगा।'' सा.बाबा 03.11.04 रिवा.

''भारतवासी तो बिल्कुल तमोप्रधान हैं। विदेश वाले न इतना दुख उठाते हैं और न इतना सुख ही पाते हैं। भारतवासी सबसे अधिक सुखी बनते हैं तो सबसे अधिक दुखी भी बनते हैं। हिसाब है ना।... एक दिन आयेगा जो फॉरेनर्स सबसे जास्ती आबू में आयेंगे। वे चाहते हैं भारत का प्राचीन राजयोग सीखें, कौन है जिसने पैराडाइज स्थापन किया।'' सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

''कलियुग है, यहाँ भाई-बहन भी खराब हो पड़ते हैं। परन्तु लॉ मुजिब भाई-बहन के बुरे ख्यालात नहीं रहेंगे।... तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो तो यह ज्ञान पक्का हो जाना चाहिए कि हम भाई-बहन हैं। हम आत्मायें भगवान के बच्चे भाई-भाई हैं।... हम आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से अलग हैं।'' सा.बाबा 29.7.05 रिवा.

विश्व-नाटक के सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारिता के सिद्धान्त का राज़

ये अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक सुख-दुख, हार-जीत का होते हुए भी सत्यता, न्यायपूर्णता, कल्याणकारिता से परिपूर्ण है। सत्यता, न्यायपूर्णता, कल्याणकारिता इसके मूल गुण हैं।

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है अर्थात् ये न कभी बनाया गया है और न ही कभी इसमा अन्त होने वाला है। इसमें हर आत्मा और अणु-परमाणु सब अपने समय पर अपना बिल्कुल सही पार्ट बजाते हैं। अंशमात्र भी उनके पार्ट में कोई भूलचूक नहीं हो सकती।

''यह ड्रामा बना हुआ है, इसका आदि वा अन्त नहीं है। हाँ, जब झाड़ की जड़जड़ीभूत अवस्था होती है अर्थात् तमोप्रधान बन जाता है तब यह झाड़ चेन्ज होता है। ... पार्टधारी सब इकट्ठे कैसे आयेंगे! इकट्ठे आयें तो खेल ही बिगड़ जाये। यह खेल बड़ा एक्यूरेट बना हुआ है, इसमें कोई चेन्ज नहीं हो सकती।'' सा.बाबा 20.12.04 रिवा.

''ड्रामा बड़े कायदे अनुसार चलता रहता है। इस ड्रामा में कोई भूल नहीं है। अनादि-अविनाशी बना हुआ है। अभी जो एक्ट चलती है, फिर 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होगी।... हू-ब-हू रिपीट होता रहता है। इसको समझने की भी ब्रेन चाहिए।... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है ना।'' सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

इसमें कर्म और फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध तथा ड्रामा के पार्ट का अद्वितीय सन्तुलन है। पहले आने वाली और बाद में आने वाली हर आत्मा के प्रति इसमें पूर्ण न्याय है। इसलिए इसके यथार्थ राज़ को जानने वाले के मन में कभी भी ये संकल्प नहीं उठ सकता कि हम गरीब दूसरे साहूकार क्यों, हम दुखी दूसरे सुखी क्यों, कोई हमारे साथ अन्याय कर रहा है, कोई हमको दुख दे रहा है... आदि आदि। यदि किसके मन में ऐसा कोई संकल्प उठता है तो वह उसकी अज्ञानता का परिचायक है और ये भी उसका पार्ट है। हर आत्मा अपने पार्ट के समय अनुसार आधा समय सुख और आधा समय दुख भोगती है। इस विश्व नाटक में कर्म और फल, अधिकार और कर्तव्य, सुख और दुख का नियम समान रूप से सर्वात्माओं के ऊपर प्रभावित होता है। सभी आत्मायें परमात्मा की अविनाशी सन्तान है और इस विश्व नाटक के अनादि पार्टधारी हैं। हर आत्मा के साथ परमात्मा का समान प्यार है। परमात्मा की दृष्टि में हर आत्मा विशेष है, इसलिए उनकी किसी भी आत्मा के प्रति कब घृणा नहीं होती, सर्व के कल्याणार्थ कार्य करते हैं। हर आत्मा की अन्त में कर्मातीत स्थिति होती है अर्थात् हर आत्मा 'सुख - दुख = 0' स्थिति को प्राप्त करती है। आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों का हिसाब-किताब भी अन्त तक बराबर हो जाता है। यद्यपि कर्मभोग आत्मा को दुखी करता है परन्तु वास्तविकता ये है कि उससे आत्मा के ऊपर का बोझा हल्का होता है और आत्मा उसके बाद विशेष सुख का अनुभव करती है।

इस नाटक में सभी आत्मायें पार्टधारी हैं और परमात्मा की प्रिय सन्तान हैं। इसमें किसको राजा का पार्ट मिला या किसको भिखारी का पार्ट मिला, उसका महत्व नहीं है परन्तु वह उसको किस स्थिति में बजाता है, वह महत्वपूर्ण है। यदि वह अपने पार्ट को आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर बजाता और उसी स्थिति में अपने एवं सर्व के पार्ट को देखता है तो उसको कब हीनता या अहंकार की फीलिंग नहीं आ सकती क्योंकि सभी आत्मायें एक परमात्मा की अविनाशी सन्तान हैं। स्वरूप में स्थित आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है। किसी भी ड्रामा में महिमा उस एक्टर की होती है, जो अपने पार्ट को अच्छी रीति बजाता है। अनेक दुनियावी नाटकों को देखें तो उनमें ऊंचे पार्ट की अपेक्षा नीचे पार्ट बजाने वाले को नम्बरवन पार्ट बजाने का इनाम मिलता है। रामायण के सीरियल में रावण का पार्ट बजाने वाले को नम्बरवन एक्टर का इनाम मिला।

हर आत्मा को अपने कल्प-कल्प के पार्ट में ही रुचि है और वही उसको अच्छा लगता है। एक गन्द के कीड़े को फूलों के बीच में बिठाओ तो भी उसको फूल पसन्द नहीं आता, गन्द में ही रहना अच्छा लगता है क्योंकि वही उसका नैसर्गिक संस्कार है, इसलिए उसमें ही उसको सुख मिलता है।

''वे तुमको विष के लिए मार देकर शिवबाबा की याद दिलाते हैं। तुम बाप से वर्सा पाते हो, पाप कट जाते हैं। यह भी ड्रामा में तुम्हारे लिए गुप्त कल्याण है।'' सा.बाबा 16.5.05 रिवा.

''जैसे सूर्य की किरणों की सकाश स्वत: ही चारो ओर फैलती है, ऐसे ही ज्ञानसूर्य बापदादा की सर्व शक्तियों की किरणें सर्व आत्माओं के ऊपर पड़ रही थी और सभी आत्माओं में प्रसन्नता का वायुमण्डल फैल रहा था।''

अ.बापदादा का सन्देश - 26.5.05 दादी गुल्जार के द्वारा

''जब एक के ही द्वारा, एक ही जैसा, एक ही समय, एक ही विधि से सबको खजाने प्राप्त हैं फिर नम्बरवार क्यों? क्योंकि प्राप्त हुए खजाने को हर समय कार्य में नहीं लगाते हैं अर्थात् स्मृति में नहीं रखते, मुख से खुश होते लेकिन दिल से खुश नहीं होते, दिमाग की खुशी है लेकिन दिल की खुशी नहीं है।'' अ.बापदादा 5.10.87

ये विश्व-नाटक परम कल्याणकारी है। जैसे हद के नाटक मनोरंजन के लिए ही होते हैं, वैसे ही इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने वाले को ये नाटक बहुत आनन्दमय प्रतीत होता है। अर्न्तदृष्टि से देखें तो इसमें दुख-कर्मभोग भी कल्याणमय है क्योंकि कर्मभोग से आत्मा का बोझा हल्का होता है और भविष्य के लिए सुख का मार्ग प्रशस्त होता है। जैसे खेल में जीत भी होती तो हार भी होती है परन्तु खिलाड़ी और खेल भावना से देखने वाला दोनों में आनन्द का अनुभव करता है क्योंकि हार भी जीत के लिए उत्साहित करती है, हार से ही जीत का सुख अनुभव होता है। इस प्रकार जो इसके यथार्थ रहस्य को जानकर खेल की भावना से देखता, उसे यह बड़ा ही कल्याणमय अनुभव होता है। इस विश्व नाटक में दुख भी कल्याणकारी है क्योंकि दुख की अनुभूति के बाद ही सुख की यथार्थ अनुभूति होती है। बिना दुख की अनुभूति के सुख की अनुभूति हो नहीं सकती। इसीलिए कल्याणकारी शिवबाबा ने कहा है - जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा।

ये स्मृति-विस्मृति का खेल है। विस्मृति भी कल्याणकारी है क्योंकि विस्मृति से ही स्मृति का महत्व है। अनेक बातों की विस्मृति से आत्मा राहत अनुभव करती है। राहत के लिए कभी-कभी कृत्रिम रूप से भी विस्मृति कराने की आवश्यकता होती है। समय, निद्रा, मृत्यु, योग आदि आत्मा के भूतकाल की स्मृतियों को विस्मृत करने का आधार हैं, जिनके बाद आत्मा राहत अनुभव करती है। कल्पान्त में योग के अभ्यास और परमधाम जाने से आत्मा को सारे कल्प की संचित स्मृतियां विस्मृत हो जाती हैं और जब आत्मा ऊपर से इस धरा पर आती है तो पूर्ण ताजगी, पूर्ण सुख का अनुभव करती है।

''अगर कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनता है तो उसके प्रति घृणा-दृष्टि, व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकले।... हर बात में कल्याण दिखाई दे। कोई भी अकल्याण की बात हो नहीं सकती। यह निश्चय और स्मृति-स्वरूप हो जाओ तो आप कभी डगमग नहीं होंगे।'' अ.बापदादा 20.6.73

''अज्ञानी लोग जिसको अकल्याण समझते हैं लेकिन आपका उस अकल्याण में ही कल्याण समाया हुआ है। जैसे लोग विनाश को अकल्याण समझते हैं लेकिन आप समझते हो कि इससे ही गति-सद्गति के गेट्स खुलेंगे।'' अ.बापदादा 20.6.73

''बाप तो सबको एकरस पढ़ाते हैं परन्तु कइयों की बुद्धि बिल्कुल जड़ है, कुछ भी समझ नहीं सकते। यह भी ड्रामा में नूँध है। बाप कहते हैं इनकी तकदीर में नहीं है तो हम भी क्या कर सकते हैं। हम तो सबको एकरस पढ़ाते हैं।'' सा.बाबा 30.6.05 रिवा.

विश्व-नाटक में सतोप्रधानता और तमोप्रधानता के सिद्धान्त का राज़

विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियमानुसार जो आत्मायें सतोप्रधान बनती हैं, वे ही तमोप्रधान भी बनती हैं और फिर उनको ही सतोप्रधान बनना है। उनकी बुद्धि में ही सतोप्रधान बनने इच्छा या संकल्प जाग्रत होता है और उस अनुसार पुरुषार्थ करने की हिम्मत और शक्ति भी उसमें ही आती है। देश, काल और पार्ट के अनुसार हर आत्मा सतोप्रधान और तमोप्रधान बनती है क्योंकि परमधाम में आत्मा सतोप्रधान बनकर ही जा सकती है भले ही सतोप्रधानता की कलायें अपनी-अपनी होंगी।

''जिनको ये निश्चय नहीं कि हमने 84 जन्म लिए हैं, उनकी बुद्धि में ये बातें बैठेंगी नहीं। जो सतोप्रधान दुनिया में आये थे, वे ही अब तमोप्रधान में आये हैं और वे ही आकर जल्दी निश्चयबुद्धि बनेंगे।'' सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

हम समझते हैं, यहाँ बाबा का भाव दुनिया की सतोप्रधान और तमोप्रधान स्थिति से है।

''बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। तमोप्रधान बनने में आधा कल्प लगा है, बल्कि सारा ही कल्प कहें क्योंकि कला तो सतयुग से ही कम होती जाती है।'' सा.बाबा 25.7.05 रिवा.

विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति के सिद्धान्त का राज़

ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी, परमानन्दमय, अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। परन्तु सत्यता ये है कि जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा।

ये विश्व-नाटक एक काल-चक्र है, जिसमें अनेक चक्र हैं, जो देश-काल और परिस्थितियों के अनुसार पुनरावृत्त होते हैं यथा जन्म-मरण-जन्म का चक्र, बीज-झाड-बीज का चक, दिन-रात-दिन का चक्र, मास का चक्र, वर्ष का चक्र आदि आदि और कल्प का चक्र। 5000 वर्ष के बाद विश्व का अणु-परमाणु सहित पूरा चक्र हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। खगोलविदों के अनुसार विश्व की अनेक घटनायें एक निश्चित समय के बाद पुनरावृत्त होती हैं। इस जगत की प्राय: सभी घटनायें चक्रवत चलती हैं। सागर जल मूल है, सागर से बादल पानी खींचते हैं, जाकर बरसते हैं, फिर वही जल बहकर सागर में ही जाकर मिलता है। इसीलिए पानी कहाँ भी छोड़ेंगे तो उसका बहाव सागर की ओर ही होगा। ऐसी ही दिशा और दशा अन्य तत्वों की भी है।

हू-ब-हू पुनरावृत्ति के सिद्धान्त के अनुसार हर तत्व के अणु-परमाणु 5000 वर्ष के बाद अपने मूल स्थान पर स्थानान्तरित होते ही हैं, परन्तु ये आवश्यक नहीं कि वे कल्पान्त में एक साथ ही स्थानान्तरित हो जायें, जैसे कल्पान्त में आत्मायें परमधाम में एकत्र होती हैं। हर क्रिया सारे कल्प में 5000 में अपने समय पर हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है। स्थान परिवर्तन की ये क्रिया सारे कल्प चलती है और हर क्षण परिवर्तन होती है। 5000 वर्ष के बाद हर अणु-परमाणु अपने पूर्व स्थान पर आता ही है, ये अटल सत्य है।

''यह 5 हजार वर्ष का ड्रामा है, जो चलता रहता है। इसकी डिटेल तो बहुत है परन्तु मुख्य-मुख्य बातें समझाई जाती हैं।... तुम बच्चों को वण्डर लगना चाहिए कि जो फीचर्स, जो एक्ट सेकेण्ड बाई सेकेण्ड पास्ट हुई, वह फिर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू रिपीट होनी है। कितना वण्डरफुल यह नाटक है।'' सा.बाबा 21.10.04 रिवा.

''बच्चों की बुद्धि में ये वण्डरफुल बातें हैं। कैसा यह वण्डरफुल ड्रामा बना हुआ है, कल्प-कल्प हम वही पार्ट बजायेंगे। कल्प-कल्प बजाते रहते हैं।... बनी-बनाई बन रही... जो अनहोनी होये। यह चक्र फिर भी रिपीट होगा। इसमें मूँझने की बात नहीं।''
सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

''तीव्र पुरुषार्थी शुद्ध संकल्पों में पहले से ही मन को बिजी रखेंगे तो और संकल्प आयेंगे ही नहीं।... मन्थन करने के लिए तो बहुत खजाना है।... समय की कौन सी तेजी देखते हो? समय में बीती को बीती करने की तेजी है। वही बात को समय फिर कब रिपीट नहीं करता है?... ड्रामा में जो बात बीती, जिस रूप से बीती, वह फिर रिपीट नहीं होगी। फिर 5000 वर्ष के बाद ही रिपीट होगी।'' अ.बापदादा 26.01.70

''यह सब ड्रामा अनुसार चलता रहता है। भोग आदि यह सब ड्रामा में नूँध है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड जो एक्ट होती है, वह सब ड्रामा में नूँध है। ... जो ज्ञानी बच्चे हैं, वे कभी साक्षात्कार आदि की बातों में खुश नहीं होंगे।'' सा.बाबा 30.5.05 रिवा.

विश्व-नाटक के सतत परिवर्तनशीलता और विविधता का राज

यह अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, सतत परिवर्तनशील है अर्थात् इसमें हर क्षण परिवर्तन होता है। सारे कल्प में किन्हीं दो क्षणों के दृश्य या एक ही समय के दो दृश्य एक समान नहीं हो सकते हैं। परन्तु कल्प 5000 हजार वर्ष के बाद हर दृश्य हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। ये विविधता और सतत परिवर्तनशीलता ही इसकी शोभा है।

इस विश्व-नाटक में सारे कल्प में और किन्हीं दो स्थानों के या दो समय के दृश्य एक समान नहीं होते हैं। हर दृश्य में कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य होगी। दो व्यक्तियों के फीचर्स कितने भी समान हों परन्तु फिर भी उनमें भिन्नता अवश्य होगी।

परमात्मा ने अभी इस विश्व-नाटक की विविधता का भी ज्ञान दिया है। विविधता के कारण ही ये विश्व-नाटक नित्य नया प्रतीत होता है। जो इसकी विविधता को जानता है और इसको नाटक की दृष्टि से देखता और पार्ट बजाता है, उसे ये परमानन्दमय अनुभव होता है। विविधता ही इस नाटक की शोभा है। ये सतत परिवर्तन और भिन्नता ही इसकी विशेष विशेषता है और इसमें चार चांद लगा देता है। इनके विषय में विचार करें तो परम आनन्द की अनुभूति होती है।

विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता का राज़

परमात्मा ने ये भी राज़ बताया है कि ये विश्व-नाटक स्वत: गतिशील नाटक है, जो अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला एक घटना-चक्र है। इसकी एक घटना दूसरी घटना को जन्म देती है और यह चक्रवत स्वत: चलता रहता है। मैं इस नाटक का ज्ञाता हूँ, मैं न रचता हूँ और न ही इसको चलाने वाला हूँ। मेरा भी इस नाटक में अनादि-अविनाशी पार्ट है, जो मैं बजाता हूँ परन्तु मेरा पार्ट अन्य आत्माओं से भिन्न है। मैं आकर इसका ज्ञान देता हूँ, जिस ज्ञान से इस विश्व-नाटक का नया चक्र चालू होता है अर्थात् ये तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाता है।

विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी शूटिंग के री-शूटिंग का राज़

यद्यपि इस विश्व-नाटक की शूटिंग अनादि-अविनाशी है, जो कल्प-कल्प पुनरावृत्त होती है परन्तु आत्माओं को यथार्थ ज्ञान और स्मृति न होने के कारण जो पार्ट बजाते हैं, वह उनके पार्ट की रि-शूटिंग ही है अर्थात् रि-शूटिंग के समान ही प्रतीत होती है, जिससे बीते कल्प और आगे आने वाले कल्प में उनके पार्ट का साक्षात्कार होता है। इसलिए बाबा कहते हैं - अभी जो पार्ट बजा रहे हो, वह तुम्हारी कल्प-कल्प के लिए नूँध हो रही है। ये भी बाबा का बच्चों को पुरुषार्थ कराने का एक ढंग है और बाबा के महावाक्यों के अनुसार पुरुषार्थ करना भी हमारा कर्तव्य है। पुरुषार्थ आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है और उसके आधार पर ही उसके जीवन का सुख और दुख का पार्ट आधारित है।

''यह बना-बनाया ड्रामा है, इससे कोई छूट नहीं सकता। जो कुछ देखते हो, मच्छर उड़ा, कल्प बाद भी उड़ेगा। इसे समझने में बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। यह शूटिंग होती रहती है।... यह ड्रामा जूँ मिसल धीरे-धीरे चलता रहता है।'' सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

''जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो तो अब वह रिपीट नहीं करेंगे? वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि बना बनाया ड्रामा।'' अ.बापदादा 24.5.71

''बाप भी जानते हैं कि हर कल्प आप बच्चों ने यह बाप की आशा पूर्ण कर विजय माला का यादगार कायम किया है और अब भी करना ही है। बना हुआ ड्रामा सिर्फ रिपीट करना है।'' अ.बापदादा का सन्देश 26.5.05 दादी गुल्जार के द्वारा

''ड्रामा को भी अच्छी रीति समझना है। सभी प्वाइन्ट्स में डिफीकल्ट से डिफीकल्ट और वण्डरफुल प्वाइन्ट है आत्मा स्टार में कितनी बड़ी इम्पेरिशेबुल नॉलेज है, 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। न ड्रामा पूरा हो सकता है, ना पार्ट पूरा हो सकता है।... इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।'' सा.बाबा 25.3.72 रिवा.

''यह बना बनाया अविनाशी ड्रामा है। हरेक आत्मा में अपना अपना पार्ट नूँधा हुआ है, जो हरेक अपना पार्ट फिर रिपीट करते रहते हैं। इसमें जरा भी फर्क नहीं रहेगा। अविनाशी पार्ट है। फिल्म में जो पार्ट एक बार रिपीट हुआ वही फिर रिपीट होगा।''
सा.बाबा 14.3.72 रिवा.

विश्व-नाटक की परमानन्दमयता का राज़

ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है, परम सुखदायी है। जो आत्मा इसके यथार्थ रहस्य को जानती है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करती है और जो नहीं जानती है वह भी इससे मुक्त होना नहीं चाहती है। कुछ थोड़ी सी आत्मायें ही मुक्ति में जाने का संकल्प रखती हैं। वास्तव में वे भी जाना नहीं चाहती हैं क्योंकि कोई भी आत्मा दुख की स्थिति में होते हुए भी शरीर को छोड़ कर जाना नहीं चाहती, यहाँ ही रहने का संकल्प करती है। यद्यपि मृत्यु-शैय्या पर लेटी आत्मा भी देह का त्याग नहीं करना चाहती है। विश्व-नाटक की इस यथार्थता पर विचार करें तो अनुभव करेंगे कि आत्मा को सुख-दुख होते हुए भी ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है। वैसे भी देखें तो मोक्ष की स्थिति या परमधाम की स्थिति का कोई विशेष महत्व नहीं है। महत्व तो यहाँ पार्ट बजाने का है। यहाँ भी किसी व्यक्ति को बिठा दिया जाये और कोई काम न करने दिया जाये तो वह उसको सजा के समान अनुभव करता है। कोई भी व्यक्ति सदा सोते रहना नहीं चहता है। जैसे एक एक्टर को पार्ट बजाने में ही आनन्द का अनुभव होता है, ऐसे ही इस विश्व-नाटक को जानने वाला इसमें पार्ट बजाना ही अच्छा समझता है, उसमें ही सुख का अनुभव करता है।

''यह बना-बनाया नाटक है।... हम इस नाटक के एक्टर हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर खुश होते हो, निन्दा नहीं कर सकते। बाकी मनुष्यों को माया के फंदे से छुड़ाने के लिए समझाते हैं।'' सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

विश्व-नाटक और सुख-दुख एवं आनन्द का राज़

भगवानोवाच्य - यह सुख-दुख, स्वर्ग-नर्क, दिन-रात, जीत-हार का खेल है, जो आधा-आधा चलता है अर्थात् सुख-दुख इस विश्व-नाटक के दो पहलू हैं। परमात्मा इसका पूर्ण ज्ञाता है, जो सुख-दुख दोनों से न्यारा सच्चिदानन्द सागर है। वह किसको सुख-दुख नहीं देता है परन्तु सुख का रास्ता बताता है, इसलिए उनको सुख का सागर, दुखहर्ता-सुखकर्ता कहा जाता है। जो जितना उनके बताये रास्ते पर चलता है, वह सुख पाता है परन्तु इस विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियमानुसार समयान्तर में आत्मा उस रास्ते को भूल ही जाती है और उसके परिणाम स्वरूप दुख भी अवश्य पाती है।

वैसे तो ये विश्व-नाटक दो भागों में विभाजित है परन्तु इसको तीन भागों में विभाजित करके विचार करें तो अच्छा है, वे तीन भाग हैं - सुख, दुख और आनन्द अर्थात् दिन, रात और अमृतवेला अर्थात् संगमयुग। जब आत्मा को ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा आत्म-ज्ञान, परमात्म-ज्ञान, विश्व-नाटक और इसके विधि-विधान का ज्ञान मिलता है तो आत्मा अपने यथार्थ आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक के परमानन्द को अनुभव करती है और दुख तथा दुख के कारणों को भूलकर सुख के साधनों का निर्माण करती है, जिसके फल स्वरूप दुख की दुनिया परिवर्तन होकर सुख की बन जाती है। परन्तु विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी विधि-विधान के अनुसार दुख का समय भी आना ही है, इसलिए आत्मा परमात्मा के द्वारा दिये गये आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक और इसके विधि-विधानों के यथार्थ ज्ञान को भूल ही जाती है, जिससे समयान्तर में दुख का पार्ट भी चलता ही है।

आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक और विश्व-नाटक के विधि-विधान को भूलने के कारण आत्मा में देह-भान जन्म लेता है, जो ही बढ़ते-बढ़ते समयान्तर में देहाभिमान का रूप ले लेता है, जो दुख का मूल कारण है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को जानने वाला कभी भी इस सुख, दुख के खेल को देखकर भ्रमित नहीं होता है। जो इस सुख-दुख के खेल को यथार्थ रीति जानकर साक्षी होकर इसे देखता है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करता है और इसके विधि-विधान को जानने वाला इस सत्य को भी अवश्य अनुभव करता है कि बिना दुख के आत्मा को सुख की अनुभूति नहीं हो सकती और न ही सुख की अनुभूति के बिना दुख की कोई अनुभूति हो सकती, इसलिए इसमें दोनों का समान महत्व है।

अब प्रश्न उठता है कि जब सुख-दोनों का समान महत्व है और सुख-दुख दोनों का पार्ट चलना ही है तो हमारा कर्तव्य क्या है? संगमयुग पर जिन आत्माओं को परमात्मा द्वारा इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान मिला है, उनका ये परम कर्तव्य है कि वे इसको यथार्थ रीति जानकर इस जीवन के परमानन्द का अनुभव करें, जो त्रिलोक्य और त्रिकाल में कहाँ और कब भी सम्भव नहीं है और इस सत्य का ज्ञान अपने अन्य आत्मिक भाइयों को भी अवश्य दें, जिससे वे भी इसके परमानन्द को अनुभव कर सकें और भविष्य सुख के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकें।

एक कवि की भावना है - 'जाहि विधाता दारुण दुख देही, ताकी मति पहले ही हर लेही।' इस भावना के ऊपर विचार करें तो इसमें कुछ सत्य भी है और कुछ असत्य है अर्थात् यथार्थ नहीं है क्योंकि विश्व-नाटक के नियमानुसार दुख का समय आता ही है, आत्मा की मति भ्रमित हो ही जाती है और आत्मा विकर्मों में प्रवृत्त हो ही जाती है परन्तु विधाता किसको दुख नहीं देता है, वह किसकी मति को नहीं हरता है। वह तो दुख से छूटने और सुख को पाने का रास्ता बताता है।

''सतयुग में दुख का नाम नहीं, त्रेता में दो कला कम हो जाती है तो थोड़ा कुछ होता है, फिर भी हेविन कहा जाता है ना। तुम बच्चों को तो अथाह अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए।'' सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

''ड्रामा में जो शूट किया हुआ है, उसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता। यह भी बेहद का ड्रामा है।... किसी भी बात में दिल अन्दर दुख नहीं हो सकता। कोई को दुख है तो समझना चाहिए कि ड्रामा को नहीं समझा है।'' सा.बाबा 24.4.73 रिवा.

विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का राज़

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वही इस विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता है। इसका आदि काल में कैसा स्वरूप होता है, कैसा जीवन होता है, भूमण्डल की क्या स्थिति होती है, प्रकृति कैसी होती है और मध्य काल में इस सबकी क्या स्थिति होती है, क्या-क्या परिवर्तन होता है तथा अन्त में क्या स्थिति हो जाती है। फिर कैसे इस नाटक का नया चक्र चालू होता है। यह सब राज़ अभी परमात्मा ने बताये हैं। इस विश्व-नाटक को अनादि-अविनाशी कहते हुए भी मनुष्य इसकी अनादि-अविनाश्यता को नहीं समझते हैं, इसीलिए प्राय: सभी धर्मों में सृष्टि की रचना के विषय में अनेक मनगढ़ंत बातें लिखी हैं और मनुष्य उन्हीं पर विश्वास करके चलते रहते हैं।

यह विश्व-नाटक चक्रवत चलता है। एक चक्र आदि से अन्त तक चलता आता है, फिर इसकी आदि कैसे होती है, इस सत्य का ज्ञान भी अभी परमात्मा से मिला है कि पुनरावृत्ति के सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान सागर परमात्मा पिता आकर यथार्थ ज्ञान देकर इस नाटक के चक्र के आदि की पुनरावृत्ति करते हैं और सृष्टि के नियमानुसार कलियुगी दुनिया का विनाश होता है। फिर आदि से अन्त तक स्वत: चलता रहता है। सृष्टि के नियमानुसार इसका आदि काल सतोप्रधान होता है, मध्य काल सतो सामान्य और रजोप्रधान तथा अन्त काल तमोप्रधान होता है। सतोप्रधान समय पर आत्मायें और प्रकृति दोनों सतोप्रधान होती हैं।

''ड्रामा में एक पार्ट दो बार बज न सके। सारी दुनिया में जो पार्ट बजता है, वह एक-दो से नया। तुम विचार करो सतयुग से लेकर अब तक कैसे दिन बदलता जाता है।... अभी तुम इस ड्रामा के पास्ट, प्रैजेन्ट और फ्युचर को जानते हो।''
सा.बाबा 1.12.04 रिवा.

''यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया खेल है।... एक ही बार बाप आकर बेहद ड्रामा का राज़ समझाते हैं।... यह बेहद का ड्रामा कैसे चलता है, अभी तुम समझते हो।'' सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

''बाप कहते हैं तुमने वेद-शास्त्र तो बहुत सुने हैं। अभी तुम यह सुनो और जज करो कि शास्त्र राइट हैं या गुरु लोग राइट हैं या जो बाप सुनाते हैं वह राइट है?... सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनकर फिर औरों को सुनाते हो। इसे ही शंख-ध्वनि कहा जाता है।'' सा.बाबा 9.12.04 रिवा.

''अभी नाटक पूरा होता है। जो भी एक्टर्स हैं सभी चले जायेंगे। बाकी थोड़े रहेंगे। राम गयो रावण गयो... बाकी बचेंगे कौन? दोनों तरफ के थोड़े बचेंगे।... सभी कुछ बनाने वाले, सफाई करने वाले भी रहते हैं।'' सा.बाबा 28.4.72 रिवा.

विश्व-नाटक और पुरुषोत्तम संगमयुग का राज़

इस विश्व-नाटक में पुरुषोत्तम संगमयुग का विशेष महत्व है क्योंकि सारे विश्व-नाटक में यही एक समय ऐसा है, जब आत्माओं की चढ़ती कला होती है, आत्मायें निकृष्ट से पुरुषोत्तम बनती है और आत्माओं के साथ विश्व की भी चढ़ती कला होती है। और तो सारे कल्प में आत्माओं की और विश्व की उतरती कला ही होती है भले वह सतयुग हो या कलियुग। इस पुरुषोत्तम संगमयुग की घटनाओं का सभी वेद-शास्त्रों में वर्णन है, सभी धर्म की आत्मायें इसे किसी न किसी रूप में याद करती हैं क्योंकि अभी आत्माओं का परमात्मा से मिलन होता है, आत्मायें घर जाती हैं।

''यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जो एक ही बार आता है। मनुष्य पुरुषोत्तम संगमयुग का अर्थ भी नहीं समझते हैं तो यह भी लिखना है- कलियुग अन्त और सतयुग आदि का संगम। तो संगमयुग सबसे सुहावना, कल्याणकारी हो जाता है। बाप भी कहते हैं - मैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आता हूँ।'' सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

''इस संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग व सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो क्योंकि आत्मा के हर प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बन्धों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्वश्रेष्ठता अभी रिकार्ड के समान भरता जाता है। 84 जन्मों की चढ़ती कला और उतरती कला दोनों के संस्कार इस समय ही आत्मा में भरते हो।'' अ.बापदादा 30.5.73

विश्व-नाटक और सूर्य, चांद, तारों के सम्बन्ध का राज़

ये सूर्य, चांद और तारे इस विश्व-नाटक को, जो इस भूमण्डल पर चलता है, इसको प्रकाशित करने वाली बत्तियाँ हैं और ये सब आकाश तत्व में स्थित हैं। सूक्ष्म वतन और मूल वतन में इनकी गम नहीं है क्योंकि वहाँ न कोई नाटक चलता है और न ही रात-दिन होते हैं तथा न ही इनकी वहाँ कोई आवश्यकता है। इनका राज़ भी बाबा ने अभी ही बताया है।

विश्व-नाटक और सुखधाम, दुखधाम, शान्तिधाम का राज़

शान्तिधाम क्या है और सुखधाम क्या है, इसका यथार्थ ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है। शान्तिधाम है विश्व-नाटक के एक्टर्स आत्माओं की दुनिया, जहाँ आत्मायें साकार वतन के पार्ट से मुक्त स्थिति में रहती हैं। शान्तिधाम शान्ति का धाम है क्योंकि वहाँ कोई पार्ट नहीं होता है। उसको स्वीट-साइलेन्स होम भी कहा जाता है। कल्पान्त में फिर से सभी आत्मायें नम्बरवार उस धाम में जाती हैं। फिर नम्बरवार वहाँ से इस धरा पर पार्ट बजाने आती हैं। सुखधाम है जीवात्माओं की दुनिया, स्वर्ग, जहाँ जीवनमुक्त आत्मायें ही रहती हैं। वहाँ देहाभिमान अर्थात् पांच विकार अर्थात् रावण होता नही, इसलिए दुख-अशान्ति का नाम-निशान नहीं होता, इसलिए ही उसको सुखधाम कहा जाता है। सतयुग-त्रेता को सुखधाम कहा जाता है क्योंकि वहाँ किसी भी आत्मा को कोई दुख नहीं होता है।द्वापर-कलियुग दुखधाम कहलाता है क्योंकि वहाँ आत्माओं को दुख-सुख दोनों की अनुभूति होती है परन्तु सुख के तुलना में दुख की अनुभूति अधिक होती है। भल द्वापर-कलियुग में भी नई आत्मायें, जो ऊपर से उस समय आती हैं, वे कुछ समय सुख में ही होती हैं। इसका यथार्थ ज्ञान भी अभी ही परमात्मा के द्वारा मिला है।
संगमयुग है दुखधाम-सुखधाम-शान्तिधाम का संगम, जहाँ तीनों का ज्ञान है और तीनों से श्रेष्ठ सुख की अनुभूति होती है।
''सतयुग में बैरिस्ट्री आदि तो पढ़ते नहीं हैं। वहाँ तो सिर्फ हुनर सीखना होता है। हुनर न सीखें तो मकान आदि कैसे बनें। एक-दो को हुनर सिखलाते हैं।'' सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

विश्व-नाटक और साक्षी स्थिति का राज़

साक्षी स्थिति जीवन की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है और पुरुषार्थी जीवन के लिए परमावश्यक स्थिति है। प्राय: सभी धर्म-मठ-पंथ वाले किसी न किसी रूप में इसका वर्णन करते ही हैं परन्तु यथार्थ साक्षी स्थिति क्या है और उस स्थिति को कैसे पाया जा सकता है अर्थात् साक्षी स्थिति में कैसे स्थित हों, उसका राज़ आज तक किसी ने भी नहीं बताया, जो परमात्मा ही अभी बताते हैं।

परमात्मा इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह इस नाटक के यथार्थ रहस्य को जानता है और इसका साक्षी दृष्टा है क्योंकि उसको इस अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान है। परमात्मा निराकार और इस विश्व-नाटक के गुण-धर्मों को यथार्थ रीति समझने के कारण वह इसकी किसी घटना से प्रभावित नहीं होता है, सदा ही साक्षी-दृष्टा रहता है। जो आत्मायें परमात्मा के द्वारा इस विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को समझ लेतीं वे ही साक्षी होकर इसको देख सकती हैं अर्थात् इस नाटक को यथार्थ रीति समझने से ही आत्मा साक्षी स्थिति में स्थित हो सकती है और साक्षी स्थिति सुखमय जीवन का मूलाधार है।

ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी इस विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का जो ज्ञान हम आत्माओं को दिया है और हू-ब-हू पुनरावृत्ति का जो राज़ समझाया है, यह राज़ ही साक्षी स्थिति को धारण करने के लिए एकमात्र आधार अर्थात् सक्षम है। बिना इस राज़ को जाने कोई भी आत्मा यथार्थ रूप में साक्षी नहीं बन सकती है। हठ साधना के आधार पर जो आत्मायें साक्षी बनते भी हैं, उनकी वह स्थिति अस्थाई ही होती है क्योंकि समयान्तर में वह परिवर्तित हो जाती है और पतनोन्मुख स्थिति होने के कारण वे सभी आत्मायें तमोप्रधानता की ओर ही जाते हैं।

साक्षी स्थिति वाला ही राग-द्वेष, भय-चिन्ता से उत्पन्न अनेक विकर्मों से मुक्त हो अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकता है। इस विश्व-नाटक की सत्यता पर हम विचार करें तो जो हुआ, वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ, वह हो नहीं सकता परन्तु जो

हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा। इस विश्व-नाटक में न कोई हमारा मित्र है और न कोई शत्रु है। सभी आत्मायें इसमें अविनाशी पार्टधारी हैं। जो आज मित्र है, वही कल शत्रु होगा और जो आज शत्रु कल मित्र होगा। फिर कौन किसका मित्र और कौन किसका शत्रु है। यहाँ न कोई अपना है और न कोई पराया है। जो आज अपना है वही कल पराया होगा और पराया कल अपना हो जायेगा। इस सत्य को जानने वाले ज्ञानी पुरुष कब राग-द्वेष के वशीभूत होकर विकर्म में प्रवृत्त नहीं होते हैं। वे सदा ही साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते और पार्ट बजाते हैं तथा अपने आत्म-कल्याण के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करते हैं।

''आत्मा तो कभी विनाश नहीं होती। आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, वह कभी विनाश नहीं हो सकती।... यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इस ड्रामा की आयु 5 हजार वर्ष है। सेकण्ड भी कम-जास्ती नहीं हो सकता।... देही-अभिमानी होकर साक्षी होकर खेल को देखना है।... परमात्मा का भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है। जो नूँध है, वह बदल नहीं सकता।''

सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

''हर एक आत्मा अपना-अपना पार्ट बजा रही है। तुम साक्षी होकर देखते रहो। सारा नाटक तुमको साक्षी होकर देखना है और एक्ट भी करना है।... बाप कहते हैं - तुम जो कुछ देखते हो, यह सब विनाशी है। अभी तुमको तो घर जाना है।... ये सब कागविष्टा के समान सुख है।'' सा.बाबा 13.10.04 रिवा.

''जब नाम ही है वैरायटी ड्रामा।... तो उसमें वैरायटी संस्कार व वैरायटी स्वभाव व वैरायटी परिस्थितियाँ देखकर कभी विचलित होंगे क्या?... साक्षीपन की सीट पर सेट होकर वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे।'' अ.बापदादा 8.7.73

''साक्षीपन के तख्त की मुख्य निशानी... वह सदैव हर कदम, हर संकल्प में बापदादा को सदा साथी अनुभव करेंगे... दूसरा बाप के दिल-तख्तनशीन वह होगा, जो सपूत होगा अर्थात् बापदादा को मनसा-वाचा-कर्मणा व तन-मन-धन सब बातों में फॉलो करने का सबूत देगा। तीसरा है विश्व-महाराजन बन विश्व के राज्य के तख्तनशन बनने का। वह न सिर्फ कर्मेन्द्रियजीत लेकिन वह साथ-साथ प्रकृतिजीत भी होगा।'' अ.बापदादा 11.7.74

''तुमको कोई आंसू न आना चाहिए, सब साक्षी होकर देखना चाहिए। जानते हो ड्रामा है। इसमें रोने की क्या दरकार। पास्ट-प्रैजेन्ट का कब विचार भी न करना चाहिए। तुम आगे बढ़ते बाप को याद करते रहो और सभी को रास्ता बताते रहो।''

सा.बाबा 25.9.71 रिवा.

विश्व-नाटक और निर्दोष दृष्टि का राज़

निर्दोष दृष्टि व्यर्थ चिन्तन से बचने, सम्बन्धों में मधुरता और जीवन की सफलता के लिए परमावश्यक है। ये अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इसमें हर आत्मा का अनादि-अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, जो उसको बजाना ही है। हर आत्मा अपना पार्ट बजाने के लिए बाध्य है। इसमें किसी आत्मा का दोष नहीं है। इस विश्व-नाटक में ड्रामा का पार्ट और परस्पर के हिसाब-किताब का गहरा सम्बन्ध है, जिसके आधार पर ही आत्मायें एक-दूसरे के सुख या दुख का कारण बनती हैं। कोई आत्मा किसी दूसरी आत्मा के सुख या दुख का मूल कारण नहीं है, वह केवल निमित्त कारण है। मूल कारण तो हर आत्मा का अपना कर्म ही है और वह कर्म भी ड्रामा में नूंधा हुआ है क्योंकि यह नाटक ही जीत-हार, सुख-दुख का अनादि-अविनाशी बना हुआ है। इसलिए किसी आत्मा को दोषी समझना अज्ञानता का परिचायक है। ज्ञानी आत्मा किसी को दोष नहीं दे सकती। परमात्मा ज्ञान का सागर है, उनकी दृष्टि में हर आत्मा निर्दोष है, इसलिए परमात्मा का सर्वात्माओं से प्यार है और परमात्मा से सर्वात्माओं का प्यार है। परमात्मा हमको भी आप समान बनाते हैं। जो विश्व-नाटक के इस सत्य को समझते, अनुभव करते और निश्चयबुद्धि बनते, वे इस विश्व-नाटक का परम सुख अनुभव करते हैं। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानने वाला निर्दोष दृष्टि वाले को कब किस आत्मा के प्रति घृणा-द्वेष, क्रोध आ नहीं सकता, उसको तो और ही ऐसी आत्माओं के प्रति रहम आयेगा कि उनका भी कल्याण हो, वे भी सत्य को जानकर इस विश्व-नाटक का सुख अनुभव करें।

''बाप किसी को दोष नहीं देते हैं। वह यह तो जानते हैं - तुमको पावन से पतित बनना ही है और हमको पतित से पावन बनाना ही है। यह बना-बनाया ड्रामा है, इसमें कोई की निन्दा की बात नहीं। ... बाप तुम बच्चों को कितना समझदार बनाते हैं।''

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

''भारत जो शिवालय था, वही अब वेश्यालय बना है ना। इसमें ग्लानि की तो बात ही नहीं। यह खेल है, जो बाप समझाते हैं।... यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, वह नॉलेज देते हैं।'' सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

''तुम किसके पास भी जाओ। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तो क्या परन्तु हम आत्मा क्या चीज हैं, वह भी नहीं जानते हैं।... ड्रामानुसार उन्हों का भी कोई दोष नहीं है।... न आत्मा विनाश होने वाली है और न उनका पार्ट विनाश हो सकता है।''

सा.बाबा 12.5.05 रिवा.

''बच्चे अन्जान हैं, इसलिए उनका कोई दोष दिखाई नहीं पड़ता। ऐसे ही माया भी अगर किस आत्मा के द्वारा समस्या वा विघ्न वा परीक्षा पेपर बनकर आती है तो उन आत्माओं को निर्दोष समझना चाहिए।... इस दृष्टि से हर आत्मा को देखो तो फिर पुरुषार्थ की स्पीड कब ढीली नहीं हो सकती। 16 कला सम्पूर्ण बनने के लिए यह कला भी आनी चाहिए।'' अ.बापदादा 3.10.71

''प्रसन्नचित्त सदा निस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा। किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा। न भाग्यविधाता के ऊपर... न ड्रामा के ऊपर... न व्यक्ति पर... न प्रकृति के ऊपर... न अपने शरीर के हिसाब-किताब के ऊपर। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा निस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।'' अ.बापदादा 05.10.87

''ड्रामा अनादि बना हुआ है। न रावण का दोष है और न मनुष्यों का दोष है। चक्र को फिरना ही है।... बच्चे अन्तर्मुख होकर अपना चार्ट रखो तो जो भूलें होती हैं, उनका पश्चाताप कर सकेंगे। यह जैसे योगबल से अपने को माफ करते हो। बाबा कोई क्षमा या माफ नहीं करते। **ड्रामा में क्षमा अक्षर ही नहीं है**।... पाप का दण्ड भोगना ही पड़ता है। क्षमा की बात नहीं।''

सा.बाबा 7.7.05 रिवा.

''फिर भी कहते हैं आज दिन तक जो भी पास हुआ, वह ड्रामा अनुसार ही कहेंगे। इसमें हम किसका बुरा-भला कह न सकें। जो कुछ होता है, ड्रामा में नूँध है। बाकी बाप आगे के लिए समझाते हैं।'' सा.बाबा 26.8.71 रिवा.

''मनुष्य कड़े पाप तब करते हैं, जब बिल्कुल ही तमोप्रधान बनते हैं।... परन्तु बाबा कहते हैं यह विनाश करते हैं, यह तो बाप के प्रेरे हुए हैं इसलिए इन पर कोई दोष नहीं लगता। यह तो प्रेरे हुए हैं, नहीं तो विनाश कैसे हो ? बड़े कायदे कानून हैं।''

सा.बाबा 11.3.73 रिवा.

विश्व-नाटक और शुभ-भावना शुभ-कामना का राज़

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को यथार्थ रीति जानने वाले की सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना स्वत: ही हो जाती है क्योंकि इस विश्व-नाटक में किसी आत्मा के प्रति अशुभ-भावना और अशुभ-कामना का कोई स्थान ही नहीं है। अशुभ-भावना और अशुभ-कामना का कारण अज्ञानता और विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य की अनभिज्ञता है। नाटक में एक अच्छे एक्टर का दूसरे एक्टर के प्रति सहयोग ही होता है, घृणा-ईर्ष्या नहीं और फिर ये तो अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक और हम सभी एक्टर्स एक परमात्मा की सन्तान हैं फिर अशुभ भावना या अशुभ कामना का स्थान ही कहाँ है। विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी नियम है कि 'जो दूसरों के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखता है, दूसरे उसके प्रति अवश्य ही शुभ भावना शुभ कामना रखेंगे।' हम परमात्मा के बड़े बच्चे हैं, सर्व आत्माओं के पूर्वज हैं तो सर्व के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखना हमारा कर्तव्य है।

'जीवात्मा अपना आपेही मित्र है और आपेही अपना शत्रु है' का राज

ये विश्व-नाटक कर्म-फल और कर्म पर आधारित एक घटना-चक्र है। हर आत्मा का अपना कर्म ही उसके सुख या दुख का कारण बनता है अर्थात् वह अपने कर्म से अपना आप ही मित्र और आपही अपना शत्रु बनती है। विश्व-नाटक के इस सत्य को

जानने से आत्मा राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, दूसरों पर दोषारोपण आदि के कारण उत्पन्न होने वाले व्यर्थ चिन्तन और विकर्मों से बच जाती है। कोई भी आत्मा हमारे साथ सहयोग या असहयोग, दुर्व्यवहार उसी सीमा तक कर सकती है, जितना उसका ड्रामा में पार्ट है और हमारे साथ उसका हिसाब-किताब है। इस सत्य को जानकर राग-द्वेष के वशीभूत होकर हमको किसी भी आत्मा के साथ कोई नया हिसाब-किताब नहीं बनाना चाहिए, जो भविष्य में हमारे दुख का कारण बनें। अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए विश्व-नाटक के इस सत्य को जानकर श्रेष्ठ कर्म करके अपना मित्र बनकर जीवन में सच्चा सुख का निर्माण करना चाहिए।

स्वदर्शन चक्र और स्वदर्शन चक्रधारी बनने का राज़

शास्त्रों में स्वदर्शन चक्र को सबसे प्रभावी शस्त्र माना गया है, जिसके आगे कोई भी शस्त्र काम नहीं करता है अर्थात् जो सब पर विजय प्राप्त करता है। परन्तु स्वदर्शनचक्र क्या है और उसका उपयोग कैसे होता है, कौन कर सकता है, उसका ज्ञान किससे मिलता है, यह कोई नहीं जानता है। अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको सृष्टि-चक्र का जो ज्ञान दिया है, वह ज्ञान ही यथार्थ में स्वदर्शन-चक्र है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर उस ज्ञान को बुद्धि में रखें अर्थात् हमारा स्वदर्शन-चक्र चलता रहे तो हमारे ऊपर किसी भी माया के अस्त्र-शस्त्र का वार नहीं होगा और हम सदा विजय का अनुभव करेंगे। जिससे हमारा ये संगमयुगी जीवन सदा सुखमय होगा। स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा पर किसी भी विकार का प्रभाव हो नहीं सकता। यदि होता है तो कहाँ न कहाँ स्वदर्शन चक्र की धारणा में कमी है। धारणा का अर्थ केवल ज्ञान नहीं लेकिन उसका ज्ञान, उसका अनुभव और उस पर पूरा निश्चय हो अर्थात् वह ज्ञान जीवन की धारणा में हो।

‘‘ब्राह्मणों को ही स्वदर्शन-चक्र मिलता है, देवताओं को इस शिक्षा की दरकार ही नहीं।... तुम समझते हो बाबा हर कल्प आकर पतित से पावन बनाते हैं, फिर यह नॉलेज खलास हो जायेगी।’’ सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

‘‘स्वदर्शन-चक्र फिराना है। सबको वापस ले जाने वाला तो बाप ही है। ऐसे-ऐसे ख्यालात में रहना चाहिए। रात को सोते समय भी बुद्धि में यह नॉलेज घूमती रहे। सुबह उठते भी यही नॉलेज याद रहे।... रात को बाबा की याद का नियम बनायेंगे तो तुमको खुशी का पारा चढ़ा रहेगा।’’ सा.बाबा 4.12.04 रिवा.

‘‘अन्दर विचार चलना चाहिए - अभी हम संगमयुग पर हैं, पावन बन रहे हैं, बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। यह घड़ी-घड़ी सुमिरण करना है।... तुम ईश्वरीय मिशन हो ना। ईश्वरीय मिशन का काम है पहले तो शूद्र से ब्राह्मण और ब्राह्मण से देवता बनाना।... तुमको सर्व आत्माओं का कल्याण करने का शौक होना चाहिए।’’ सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

‘‘तुम्हारा नाम ही स्वदर्शन चक्रधारी। तो उसका चिन्तन चलना चाहिए। स्वदर्शन चक्र कब रुकता थोड़ेही है। तुम चैतन्य लाइट हाउस हो।... बहुतों की बुद्धि में ये बातें रहती नहीं हैं, जो उनका चिन्तन करें।’’ सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

‘‘आत्मा की ही दुर्गति और सद्गति होती है। ये सभी बातें विचार-सागर मंथन करने की हैं।... बाप कहते हैं - बच्चे बुद्धि को सदा बिजी रखो तो सदा सेफ रहेंगे। इसको ही स्वदर्शन चक्रधारी कहा जाता है।’’ सा.बाबा 18.12.04 रिवा.

‘‘बाप भी स्वदर्शन चक्रधारी है क्योंकि सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानना है स्वदर्शन चक्रधारी बनना।... ब्राह्मण ही स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं, देवता स्वदर्शन चक्रधारी कहला न सकें।... बाप तुम बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे हैं।’’

सा.बाबा 15.6.05 रिवा.

‘‘चक्र की निशानी लाइट का चक्र दिखाई देगा। ऐसा चक्रधारी सदैव माया के अनेक प्रकार के चक्रों से मुक्त होगा। अपनी देह की स्मृति के अनेक व्यर्थ संकल्पों के चक्र से, लौकिक और अलौकिक सम्बन्धों के चक्र से, अपने अनेक जन्मों के स्वभाव और संस्कारों के चक्र से और प्रकृति के अनेक प्रकार के आकर्षण के चक्र से वह सदैव मुक्त होगा। सिवाय स्वदर्शन चक्र के वह और कोई चक्र में आ नहीं सकेगा।’’ अ.बापदादा 18.9.75

विश्व-नाटक और स्वर्ग-नर्क, जीत-हार, दिन-रात का राज़

स्वर्ग-नर्क का वर्णन प्राय: सभी धर्मों में है परन्तु स्वर्ग और नर्क हैं क्या और कहाँ हैं, यह किसी ने भी नहीं बताया, इसलिए स्वर्ग-नर्क कल्पना की ही बातें रहीं। अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का यथार्थ ज्ञान दिया, जिससे स्पष्ट हुआ कि इस सृष्टि-चक्र का प्रथम आधा भाग अर्थात् सतयुग-त्रेता स्वर्ग कहलाता है, जहाँ आत्मायें सदा सुख का अनुभव करती हैं और पीछे का आधा भाग अर्थात् द्वापर-कलियुग नर्क कहलाता है, जहाँ आत्मायें कर्मों अनुसार सुख-दुख दोनों को प्राप्त करती हैं।

स्वर्ग में आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है, इसलिए उसका देह और देह के धर्मों पर अधिकार होता है, जिससे आत्मा को न मृत्यु का भय होता है और न ही किसी विकार का प्रभाव आत्मा पर होता है इसलिए स्वर्ग में सदा सुख-शान्ति होती है। मृत्यु का नाम-निशान ही नहीं होता है। इसलिए ही स्वर्ग को अमरलोक और नर्क को मृत्यु लोक कहा जाता है। स्वर्ग में सन्तानोत्पत्ति भी योगबल से होती है। सृष्टि के नियमानुसार धीरे-धीरे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता जाता है और त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में आत्मा पर देहाभिमान प्रभावी हो जाता है, जिससे विकारों की प्रवेशता होती है। सन्तानोत्पत्ति के लिए भोगबल की प्रक्रिया आरम्भ होती है, जिससे देहाभिमान के वशीभूत आत्मा को मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय सहन करना पड़ता है। स्वर्ग-नर्क में दिन और रात का अन्तर है, जिनका विस्तार से वर्णन करना यहाँ सम्भव नहीं है और आवश्यकता भी नहीं है।

''बाप आते हैं नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाने। स्वर्ग क्या होता है, यह भी किसको पता नहीं। और धर्म वाले तो स्वर्ग को देख भी नहीं सकते।'' सा.बाबा 21.7.05 रिवा.

''इस पाप की दुनिया से... यह गीत भी सिद्ध करता है कि दो दुनिया हैं। एक है पाप की दुनिया और दूसरी है पुण्य की दुनिया। दुख की दुनिया और सुख की दुनिया।'' सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

''बाप आते ही हैं नई राजधानी स्थापन करने, इसलिए इसको राजयोग कहा जाता है। राजयोग का बहुत महत्व है। भारत का प्राचीन राजयोग सीखना चाहते हैं।... समझते हैं - योग से ही पैराडाइज स्थापन हुआ था।'' सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

Q. स्वर्ग और नर्क की सीमा रेखा क्या है ?

पवित्रता अर्थात ब्रह्चर्य अर्थात् योगबल ही स्वर्ग और नर्क की सीमा-रेखा है और देवताओं तथा असुरों की मुख्य पहचान है। जब तक आत्मा में योगबल से सन्तानोत्पत्ति की शक्ति होती है, तब तक यह दुनिया स्वर्ग कहलाती है और द्वापर आदि से जब यह शक्ति खत्म हो जाती है तो भोगबल अर्थात् विषय-भोग से सन्तानोत्पत्ति होना प्रारम्भ होती है तो यह दुनिया नर्क कहलाती है।

''पतित उनको कहा जाता है, जो विकार में जाते हैं। पतित मनुष्य, पावन निर्विकारी देवताओं के आगे जाकर मन्दिर में उनकी महिमा गाते हैं।... यह खेल ही पतित से पावन और पावन से पतित होने का है।... पतित को अपने विकर्मों का दण्ड जरूर भोगना पड़ता है। पिछाड़ी में कोई जन्म देकर ही सजा देंगे। मनुष्य तन में ही सजा खायेंगे, इसलिए शरीर जरूर धारण करना पड़ता है।'' सा.बाबा 28.1.05 रिवा.

''नम्बरवन है काम, उनको ही पतित कहा जाता है। क्रोधी को पतित नहीं कहेंगे।... सतोप्रधान को पुण्यात्मा और तमोप्रधान को पापात्मा कहा जाता है। विकार में जाना पाप है। बाप कहते हैं अब पवित्र बनो।'' सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

Q. स्वर्ग की आकर्षण और स्मृति किन आत्माओं को आयेगी ?

जो आत्मायें स्वर्ग के निर्माण में सहयोगी होंगी, उनको ही यह स्मृति आयेगी और यह स्मृति उसी सीमा तक आयेगी, जिस सीमा तक वे स्वर्ग के निर्माण में सहयोगी होंगी। ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा की प्रवेशता होते ही या ब्रह्मा के रूप में जन्म लेते ही अपना तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क, समय-शक्ति सब स्वर्ग की स्थापना में अर्पण कर दिया, इसलिए उनको सदा ही स्वर्ग की स्मृति इमर्ज रूप में रही, अपना स्वर्गिक स्वरूप याद रहा।

''स्वर्ग को कल्पना तो नहीं समझते हो।... अभी जब दुख की दुनिया प्रैक्टिकल में है तो जरूर सुख की दुनिया भी प्रैक्टिकल में होनी चाहिए।... अपने विवेक और इस नॉलेज के बल से समझते हैं कि जब दुख की दुनिया है तो जरूर सुख की दुनिया भी होनी चाहिए।... उसका फाउण्डेशन अभी लग रहा है।'' मातेश्वरी 24.6.65

''कैसा यह विचित्र ड्रामा बना हुआ है। कोई भी इसके राज़ को नहीं जानते।... एक्टर होकर ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को न जानें तो उन्हें क्या कहेंगे।... सच से जीत, झूठ से हार। सच्चा बाप सचखण्ड की स्थापना करते हैं। रावण से तुमने हार खाई है। यह सब खेल बना हुआ है।'' सा.बाबा 26.5.05 रिवा.

स्वास्तिका का राज़ - चार युगों की आयु और उसकी दिशा और दशा का राज़

भारत में हर शुभ कार्य में स्वास्तिका का पूजन होता है। व्यापारी लोग भी अपने हिसाब-किताब के चौपड़ों पर स्वास्तिका को अंकित करते हैं। इसका राज़ क्या है, यह बात किसी को पता नहीं है, स्वास्तिका का यथार्थ राज़ अभी बाबा ने बताया है कि यह सृष्टि-चक्र के ज्ञान की दशा और दिशा को सिद्ध करता है। स्वास्तिका के चारो भाग बराबर बनाते हैं, जो चारो युगों की समान आयु के प्रतीक हैं। विश्व के सबसे बड़े आतंकवादी हिटलर के झण्डे पर भी स्वास्तिका का चिन्ह अंकित था परन्तु उसकी दिशा उल्टी थी अर्थात् वह बाई ओर को थी, इसलिए उसके सभी कार्य विश्व के लिए उल्टे ही हुये। भारत में जो स्वास्तिका अंकित करते हैं, उसकी दिशा दाई ओर को होती है, जो शुभ भाव का प्रतीक है। स्वास्तिका के रहस्य के और गहराई में जायें तो उसमें अनेक गुह्य रहस्य हैं। कैसे आधे कल्प तक सतोप्रधान से सतो सामान्य तक आते हैं और सतो सामान्य से रजो तक आते-आते उसकी दिशा विपरीत हो जाती है, जो रजो और फिर रजो से तमो की ओर मुड़ जाती है, जो बढ़ते-बढ़ते तमोप्रधान तक जाती है।

''ये सब चित्र (झाड़, त्रिमूर्ति, गोला) बाप ने दिव्य दृष्टि द्वारा बनवाये हैं। ये सब श्रीमत से बने हुए हैं, किसी मनुष्य मत से नहीं बने हैं। ये सब भी खलास हो जायेंगे, कुछ भी इनका नाम निशान नहीं रहेगा। नई दुनिया में सब कुछ नया होगा।''

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

''बच्चों को समझाया गया है - आत्मा भिन्न नाम-रूप धारण करते नीचे उतरती है। जब से काम चिता पर चढ़ती है तब से काला बनती है।... मुख्य बात है पवित्रता की।'' सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

विश्व-नाटक और पुरुषार्थ का राज़

पुरुषार्थ हर आत्मा के वर्तमान और भविष्य जीवन के सुख का आधार है। विश्व-नाटक का ज्ञान और पुरुषार्थ में क्या सम्बन्ध है, इसका ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है। विश्व-नाटक का ज्ञान हमारे पुरुषार्थ में बहुत सहयोगी है। कुछ लोगों की यह भ्रान्ति है कि किसको ड्रामा राज़ बताने से या जानने से आत्मा पुरुषार्थहीन बन सकती है। परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि ये विश्व-नाटक ही पुरुषार्थ-प्रालब्ध-पुरुषार्थ पर आधारित एक घटना-चक्र है। विश्व-नाटक का ज्ञान तो हमको निर्संकल्प होकर बाबा को याद करने में बहुत सहयोगी बनता है। इसको जानकर यदि कोई आत्मा पुरुषार्थहीन हो जाये तो ये उसका पार्ट ही कहा जायेगा या उसका पुरुषार्थ का इतना ही पार्ट है। नहीं तो विचारणीय है कि यदि उसका ड्रामा में पुरुषार्थ का पार्ट हो तो वह उस पार्ट से पीछे कैसे हट सकता है, उससे मुक्त कैसे हो सकता है। विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानना और उस ज्ञान को धारण करना भी बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। ड्रामा के ज्ञान से पुरुषार्थहीन वही बनता है, जो ड्रामा के यथार्थ राज़ को नहीं समझता है।

''कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ अच्छा करने के बाद प्रालब्ध को यहाँ ही भोगने की इच्छा रखते हैं।... प्रालब्ध की इच्छा को खत्म कर सिर्फ अच्छा पुरुषार्थ करो।... सम्पूर्णता की समीपता की निशानी है सफलता।'' अ.बापदादा 30.11.70

Q. ड्रामा पूर्व-निश्चित (Pre-ordained) होते हुए पुरुषार्थ का क्या महत्व है और अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है? क्या विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को जानने, समझने और निश्चय करने वाला पुरुषार्थहीन हो सकता है?

इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा को अभूतपूर्व शान्ति, शक्ति और सुख की अनुभूति होती है, उस सुख को अनुभव करने और परमात्मा पिता की याद से जो अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है तथा आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से आत्मा को जो शान्ति और सुख की प्राप्ति होती है, उस सुख को अनुभव करने के लिए पुरुषार्थ करना ही पड़ता है और करना ही होगा तथा ड्रामा करायेगा ही। उस सुख को अनुभव करने वाली आत्मा पुरुषार्थ के बिना रह नहीं सकती। परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि सबका पुरुषार्थ एक समान नहीं हो सकता। विश्व-नाटक के यथार्थ राज़ को यथार्थ रीति जानने और अन्य आत्माओं को भी समझाने के लिए भी पुरुषार्थ तो करना ही पड़ेगा। विश्व-नाटक को समझने का प्रयत्न भी बहुत बड़ा पुरुषार्थ है।

''ड्रामा बिगर बाप कुछ भी नहीं कर सकते हैं। कई बच्चे कहते हैं - ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ कर लेंगे, वे कभी ऊंच पद पा नहीं सकते।... कल्प पहले मुआफिक ड्रामा तुमको पुरुषार्थ कराता है। कोई ड्रामा पर ठहर जाते हैं कि जो ड्रामा में होगा। तो समझा जाता है कि इनकी तकदीर में नहीं है।'' सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

''ड्रामा की लकीर खींची हुई है, नई लकीर नहीं लगा रहे हो, जो सोचो कि पता नहीं सीधी होगी वा नहीं। कल्प-कल्प की बनी हुई प्रारब्ध को सिर्फ बनाते हो क्योंकि कर्मों के फल का हिसाब है।... हर संकल्प में दृढ़ता माना तपस्या।''

अ.बापदादा 11.4.86

''अगर कोई रचना की नालेज में पूरा नालेजफुल नहीं हैं, कमजोर है तो स्थिति डगमग होती है। रचता की भी पूरी नालेज को जानना है। जानना सिर्फ सुनने को नहीं कहते। जानना अर्थात् मानना और चलना। इसको कहते है नालेजफुल।''

अ.बापदादा 20.8.71

''ड्रामा के अनुसार निश्चित होते हुए भी निमित्त बनी हुई आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। इसी प्रकार अब इस मुक्ति और जीवनमुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेदारी बाप के साथ-साथ आप सबकी है। यह विनाश सर्व-आत्माओं की सर्व-कामनाएं पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा।'' अ.बापदादा 3.2.74

Q. क्या विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने वाली आत्मा पुरुषार्थहीन हो सकती है?

विश्व-नाटक और अहंकार-हीनता, ऊंच-नीच का भाव का राज़

इस विश्व-नाटक में अहंकार-हीनता और ऊंच-नीच के भाव का कोई स्थान नहीं है क्योंकि इसमें हर आत्मा का अनादि-अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, हर आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती है, अपने समय अनुसार हर आत्मा सुखी-दुखी होती है फिर अहंकार और हीनता का भाव क्यों? ये विश्व-नाटक पूर्ण न्यायपूर्ण है, इसलिए इसमें ऊंच-नीच, अहंकार-हीनता के भाव का कोई औचित्य नहीं है, फिर भी आत्मा में अज्ञानता के वश ये भाव जाग्रत होते हैं, जो उसके विकर्म और विकर्मों के परिणाम स्वरूप दुख का कारण बनते हैं। हर आत्मा परमात्मा की प्रिय सन्तान है और इस विश्व-नाटक में पार्टधारी है, फिर अहंकार और हीनता का भाव क्यों? क्या एक बाप के दो बच्चों में छोटा भाई, अपने बड़े भाई को देखकर हीनता अनुभव करेगा या बड़ा भाई, छोटे भाई के सामने अपने अहंकार को प्रगट करेगा? भाइयों में तो परस्पर प्रेम होता है, अहंकार-हीनता की भावना नहीं। ऐसे ही क्या एक बाप के दो बच्चे एक नाटक में दो पार्ट बजाने वाले परस्पर अहंकार-हीनता का भाव रखेंगे? वे तो अन्दर अहंकार हीनता का भाव न रखकर नाटक में पार्ट मात्र बजायेंगे।

विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने वाला व्यक्ति कब भी अहंकार और हीनता की भावना अपने में ला नहीं सकता।

विश्व-नाटक एवं योग का राज़

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से योग का अभ्यास सहज हो जाता है क्योंकि विश्व-नाटक के ज्ञान से आत्मा में निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति का अभ्यास सहज हो जाता है क्योंकि विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान से आत्मा निर्भय, निश्चिन्त, निर्मान, राग-द्वेष से मुक्त हो जाती है, जो योग की सिद्धि के लिए परमावश्यक है। इसलिए योग के सफल अभ्यास के लिए विश्व-नाटक का ज्ञान बहुत सहायक और परमावश्यक है, इसीलिए बाबा आकर विश्व-नाटक का ज्ञान देते हैं।

''यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। ड्रामानुसार उनको इस समय जाना ही था, इसमें कर ही क्या सकते हैं। जरा भी दुखी होने की बात नहीं। यह है योगबल की अवस्था। लॉ कहता है कि जरा भी धक्का नहीं आना चाहिए। सब एक्टर्स हैं, अपना-अपना पार्ट बजाते रहते हैं।... ऐसी अवस्था वाले ही जाकर निर्मोही राजा बनते हैं।'' सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

विश्व-नाटक कर्म, कर्म-फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध के सिद्धान्त का राज़

परमात्मा ने जो विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उससे ये पता चला और अनुभव हुआ कि इस नाटक में आत्मा के पार्ट, कर्म और फल का अद्भुत सन्तुलन है, जिससे कोई भी आत्मा किसी को दोष नहीं दे सकती है और कोई भी आत्मा कर्म के बिना रह नहीं सकती और कोई भी कर्म बिना कर्म-फल के होता नहीं है अर्थात् हर आत्मा को अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है। इसलिए गीता में कहा है - हे अर्जुन तू कर्म कर, फल की चिन्ता मत कर। विश्व-नाटक के अनादि नियमानुसार हर आत्मा कर्म करने के लिए और कर्मानुसार कर्मफल भोगने के लिए बाध्य है अर्थात् कर्म करने और कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। इस कर्म, कर्म-फल और फिर कर्म के आधार पर ही ये विश्व नाटक आदि से अन्त तक सफलता पूर्वक चलता है।

''यह सब ड्रामा में नूँध है, फिकर की कोई बात नहीं है। नहीं तो स्थापना कैसे होगी। दूसरी बात यह भी है कि जो करेगा, वह पायेगा।... किसको दान नहीं करेंगे तो फल भी कैसे मिलेगा।... किसी न किसी को सन्देश सुनाकर फिर भोजन खाना चाहिए।'' सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

''अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है क्योंकि यह कर्म-क्षेत्र है, कर्म-भूमि है, इसमें जो बोयेंगे सो पायेंगे। यह भी इसका नियम है। बाप कहते हैं - इस लॉ को तो मैं भी ब्रेक नहीं कर सकता हूँ भल मैं वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ।'' मातेश्वरी 24.6.65

विश्व-नाटक और हमारे कर्तव्य का राज़

बाबा ने अभी विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उससे हमको अपने कर्तव्य का भी ज्ञान हुआ है। ड्रामा की अनादि-अविनाशी नूँध के अनुसार हमारा कर्तव्य है कि हम विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने स्वरूप में स्थित होकर इसको साक्षी होकर देखें और ट्रस्टी होकर पार्ट बजायें। जैसे परमात्मा इसका साक्षी-दृष्टा है, वैसे हम भी बनने का पुरुषार्थ करें और इसका राज़ सर्वात्माओं को भी बतायें, जिससे वे भी इसका सुख अनुभव कर सकें।

विश्व-नाटक और मान-अपमान... जीत-हार में समान स्थिति का राज़

विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान जीवात्मा को एकरस स्थिति बनाने में बहुत सहयोगी है। वास्तविकता तो ये है कि विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान ही एकरस स्थिति का एकमात्र आधार है क्योंकि विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान हमको संकल्प-विकल्पों से मुक्त करके एकरस स्थिति में स्थित करता है। इसीलिए बाबा ने तीन बिन्दुओं की स्मृति की बात कही है। आत्मा बिन्दु, परमात्मा बिन्दु और ड्रामा बिन्दु। परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसने इस विश्व-नाटक का यथार्थ देकर संकल्प-विकल्पों से मुक्त कर एकरस स्थिति में स्थित होकर परम सुख को अनुभव करने का वरदान दिया है।

विश्व-नाटक और खेल-भावना का राज़

ये विश्व-नाटक एक अनादि-अविनाशी खेल है। इसको यथार्थ रीति जानने से आत्मा में खेल भावना जाग्रत होती है, जो ज्ञान अभी परमात्मा ने दिया है। खेल-भावना से खेल में खेलें और खेल को तो देखें तो खेल का यथार्थ आनन्द अनुभव होता है। खेल में जीत भी सुखदायी होती है तो हार भी सुखदायी होती है। वास्तव में हार ही जीत के लिए उत्साहित करती है, पुरुषार्थ कराती है। जो खेल की भावना से खेलते हुए हार से हतोत्साहित नहीं होते, वे ही जीत का अनुभव कर सकते हैं। जो हार से हतोत्साहित हो जाते वे कभी जीत का सुख अनुभव नहीं कर सकते। ऐसे ही इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने से हार-जीत दोनों समान सुखदायी हो जाती हैं परन्तु जब हम अपने खिलाड़ी स्वरूप की विस्मृति होने के कारण देहाभिमान में आ जाते हैं तो मन में विकारों की प्रवेशता होती है, जिससे जीत में सुख और हार में दुख की अनुभूति होती है और हार-जीत के चक्कर में अनेक विकर्म कर दुख का बीज बोते हैं।

''यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इसमें जीतते भी हैं और फिर हारते भी हैं। अब यह चक्र पूरा हुआ, अभी हमको घर जाना है।... बाबा हमको रावण पर जीत पहनाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें सवेरे-सवेरे उठकर अपने साथ करनी चाहिए।''

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

''यह बहुत मजे का खेल है। खेल हमेशा मजे का ही होता है। सुख भी होता है तो दुख भी होता है। इस बेहद के खेल को तुम बच्चे ही जानते हो। इसमें रोने-पीटने आदि की बात ही नहीं है।... हम आत्मायें इसके एक्टर्स हैं।... तुम बच्चे जानते हो - यह ड्रामा कैसे फिरता है। इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बाप ही समझाते हैं।'' सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

'मेला और खेला'... मेला और खेला, यह दो शब्द सदा याद रखो।... मेला शब्द याद आने संस्कारों का मिलन, बाप और बच्चों का मिलन और सर्व सम्बन्धों से सदा प्राप्ति का मिलन सभी इस मेले में आ जाते हैं। यह सृष्टि एक खेल है, यह तो मुख्य बात है।'' अ.बापदादा 8.07.73

''यह सृष्टि एक खेल है।... अगर इसको खेल समझो तो खेल में कभी परेशान नहीं होंगे, हँसते रहेंगे। तो परीक्षायें भी एक खेल हैं।... उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात् खेल नूँधा हुआ है, यह स्मृति आने से कभी भी अवस्था डगमग नहीं होगी।'' अ.बापदादा 8.07.73

''तुमको नशा है कि हम फिर से अपनी राजधानी स्थापन करेंगे, जैसे कल्प पहले की थी।... तुम वहाँ जायेंगे तो ऑटोमेटिक तुम वह मकान आदि बनाने लग पड़ेंगे क्योंकि वह संस्कार आत्मा में भरा हुआ है।... आत्मा में सब पहले से ही नूँध है।... नई-नई प्वाइन्ट्स निकलती है, वह भी ड्रामा में नूँध हैं। ...यह भी खेल है ना। खेल में हमेशा खुशी होती है।'' सा.बाबा 2.7.05 रिवा.

विश्व-नाटक और समय की विशेषता का राज़

विश्व-नाटक बिल्कुल एक्यूरेट चलता है। इसमें हर घटना नियमानुसार अपने समय पर ही घटती है और जो घटना एक बार होती है, वह सारे कल्प में दुबारा रिपीट नहीं होती है, फिर कल्प बाद ही पुनरावृत्त होती है। इसलिए समय से भी शिक्षा लें, तो भी हमारा पुरुषार्थ बहुत तीव्र हो सकता है।

''मंथन के लिए तो बहुत खजाना है, इसमें मन को बिजी रखना है। समय की रफ्तार तेज है या आपकी रफ्तार तेज है?... समय की कौनसी तेजी देखते हो? समय बीती को बीती करने में तेज है। वही बात को समय फिर कब रिपीट करता है? तो पुरुषार्थ की जो कमियां हैं, उनमें बीती को बीती समझ आगे हर सेकण्ड में उन्नति को लाते जाओ।... क्रियेटर के बच्चे क्रियेशन से ढीले क्यों? इसलिए एक बात का ध्यान रहे कि जैसे ड्रामा में हर सेकण्ड अथवा जो बात बीती, जिस रूप से बीत गई, वह फिर रिपीट नहीं होगी। पांच हजार साल बाद ही रिपीट होगी।'' अ.बापदादा 26.1.70

''साकार रूप में सम्पूर्णता का स्वरूप देखा। साकार सम्पूर्णता को प्राप्त कर चुके हैं।... पहली सीटी बज चुकी है, दूसरी भी बज गई। पहली सीटी थी साकार में मां की और दूसरी बजी साकार रूप की। अब तीसरी सीटी बजनी है।'' अ.बापदादा 25.1.70

''अगर फौरन फल नहीं निकलता है तो अधीर्य नहीं होना है कि फल तो निकलता ही नहीं। सभी फल फौरन नहीं मिलते हैं। कोई-कोई बीज फल तब देता है जब नेचुरल वर्षा होती है। पानी देने से भी नहीं निकलता है। यह भी ड्रामा की नूँध है।... कोई नेचुरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचुरल वायुमण्डल, वातावरण उस बीज का फल निकालेगी।''
अ.बापदादा 11.7.71

विश्व-नाटक, आत्मा, साधन-सम्पत्ति और परमानन्द का राज़

ये विश्व एक नाटक है, जहाँ सर्व आत्मायें परमधाम घर से अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजाने आती हैं और उस पार्ट बजाने के लिए साधन-सम्पत्ति एक साधन है। पार्ट के अनुसार आत्माओं के सम्बन्ध और साधन-सम्पत्ति पर स्वामित्व परिवर्तनशील है। इस सत्य को जानने, अनुभव करने और निश्चय करके उस अनुसार चलने वाला व्यक्ति इस विश्व-नाटक के परमानन्द को अनुभव करता है और जो अज्ञानतावश देहाभिमान के कारण अपने-पराये का भेद उत्पन्न कर, साधन-सम्पत्ति पर स्वामित्व जमाकर उचित-अनुचित कर्मों में प्रवृत्त होता है, वह परम-दुख को पाता है परन्तु सत्यता ये है कि सुख-दुख के इस नाटक में आत्माओं के दोनों ही पार्ट हैं, जिनको समयानुसार बजाने के लिए आत्मायें बाध्य हैं। अभी संगमयुग का सुहावना समय है, जब ज्ञान-सागर परमात्मा ने ये सत्य ज्ञान दिया है, जिसको धारण करके ही आत्मा परमानन्द का अनुभव कर सकती हैं। उस परमानन्द का अनुभव करना ही हम आत्माओं का पावन कर्तव्य है। 'अभी नहीं तो कभी नहीं' अर्थात् इस परमानन्द का अनुभव अभी ही प्राप्त हो सकता है, फिर न परमधाम में और न सतयुग में प्राप्त होगा।

विश्व-नाटक और कर्म के विधि-विधान का राज़

ये विश्व-नाटक कर्म-फल-कर्म पर आधारित एक घटना-चक्र है। विश्व-नाटक में कर्म का अटल विधि-विधान नूँधा हुआ है। जो जैसा कर्म करता है, उसके अनुसार उसको फल अवश्य मिलता है। कोई भी आत्मा इस कर्म-क्षेत्र पर कर्म के बिना रह नहीं सकती और कोई भी कर्म फल के बिना नहीं हो सकता। कर्म करना, कर्मानुसार उसका फल मिलना - ये सब बिल्कुल एक्यूरेट नूँधा हुआ है।

विश्व-नाटक और अधिकार एवं कर्तव्य का राज़

इस विश्व-नाटक में अधिकार और कर्तव्य का बड़ा सुन्दर सन्तुलन है। हर आत्मा स्वतन्त्र है, कोई किसके बीच में हस्तक्षेप (Enterfere) नहीं कर सकता। इसमें जिस आत्मा को जितना कर्तव्य मिला है, पार्ट मिला है, उस अनुसार अधिकार भी अवश्य मिला है। अधिकार और कर्तव्य दोनों एक ही गाड़ी के दो चक्र हैं, जो साथ-साथ चलते हैं। जो अपने अधिकार और कर्तव्य के सन्तुलन को भूल कर कार्य करती है, दुख को प्राप्त होती है।

विश्व-नाटक और मोक्ष का राज़

शान्तिधाम है मोक्ष का स्थान, हम वहाँ के रहने वाले हैं, इसलिए हर आत्मा दुख के समय मोक्ष की इच्छा करती है परन्तु ड्रामा अनुसार सदा काल का मोक्ष किसको मिल नहीं सकता क्योंकि हर आत्मा में अनादि-अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, जो हर आत्मा को अपने समय पर बजाना ही है परन्तु अपने पार्ट और समय के अनुसार हर आत्मा कल्प में एक बार मोक्ष में अवश्य जाती है।

''कल्प-कल्प हम बाप से वर्सा लेते हैं, फिर माया बिल्ली छीन लेती है। इसलिए इसको हार-जीत का खेल कहा जाता है।... कई समझते हैं मोक्ष पाना तो अच्छा है, फिर आयेंगे ही नहीं। ... एक्टर तो एक्ट जरूर करेगा। जो घर बैठ जाये, वह कोई एक्टर

थोड़ेही हुआ। मोक्ष होता नहीं है। यह ड्रामा अनादि बना हुआ है। ... तुम ड्रामा में बंधायमान हो। ... कर्म बिगर कोई रह नहीं सकता।''
सा.बाबा 25.5.05 रिवा.

Q. विश्व-नाटक में दुख बना ही क्यों ? और बना ही है तो उसका क्या महत्व है ?

ये बना-बनाया अनादि-अविनाशी नाटक है और इसमें जो भी बना है, वह व्यर्थ नहीं है। जो आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इसके विधि-विधान पर विचार करता है, वही इसके यथार्थ रहस्य को अनुभव करता है और निश्चयबुद्धि होकर इसके यथार्थ सुख को अनुभव करता है। ये अटल सत्य है कि बिना दुख के सुख का कोई अस्तित्व नहीं, कोई अनुभव नहीं होता है। बिना दुख के सुख का कोई महत्व नहीं होता है। इसलिए सुख के सही अनुभव के लिए दुख का होना अति आवश्यक है। भले ही किसी आत्मा को प्रत्यक्ष में कोई दुख न होते हुए भी सुख का अनुभव करती है परन्तु हमको ये भूलना नहीं चाहिए कि आत्मा में जन्म-जन्मान्तर के संस्कार संचित हैं और दुख होने पर ही दुख का अनुभव नहीं होता लेकिन देखकर, सुनकर भी दुख का अनुभव होता है। वह अनुभव भी सुख की अनुभूति में काम करता है।

''ऐसे नहीं कि ड्रामा बनाया ही क्यों ?... यह तो अनादि ड्रामा है ना। चक्र में न आओ तो फिर दुनिया ही न रहे।... 5 हजार साल बाद फिर ऐसे ही चक्र लगायेंगे।''
सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

Q. क्या इस विश्व-नाटक में कुछ परिवर्तन हो सकता है ?

''बच्चे, इस ड्रामा में हर एक को अनादि पार्ट मिला हुआ है। मैं भी क्रियेटर, डायरेक्टर, प्रिन्सीपल एक्टर हूँ परन्तु ड्रामा के पार्ट को हम कुछ चेन्ज नहीं कर सकते। ... परमात्मा तो खुद कहते हैं मैं भी ड्रामा के अधीन हूँ, इसके बन्धन में बांधा हुआ हूँ।''
सा.बाबा 12.12.04 रिवा.

Q. क्या इस विश्व-नाटक की कभी नई रचना हुई है ? यदि हुई तो कब और कैसे ?

अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक की रचना का कोई प्रश्न ही नहीं है लेकिन इसका चक्र बदलता है, जिसके अनुसार यह नया-पुराना होता है।

विश्व-नाटक और हीरो पार्ट का राज़

यद्यपि इस विश्व-नाटक में हीरो पार्टधारी तो लक्ष्मी-नारायण ही हैं, जिनका सारे सृष्टि-चक्र में पार्ट है परन्तु इसमें समय-समय के भी हीरो होते हैं अर्थात् भिन्न-भिन्न समय ऐसी विशेष आत्मायें सृष्टि-रंगमंच पर आती हैं और विशेष पार्ट बजाती हैं, उनको मनुष्य याद करते हैं और यथार्थ हीरो-हीरोइन को भूल से जाते हैं। देश-काल और परिस्थिति के अनुसार उनको स्वीकार करना ही पड़ता है और करना ही चाहिए।

''तुम बच्चों को अभी यह ज्ञान मिला है। तुम सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है, वे ही अब पढ़ेंगे। जिसने जो पुरुषार्थ किया होगा, वही करने लगेंगे और वैसा ही पद भी पायेंगे।... हर एक्टर को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है - किस समय किसको क्या पार्ट बजाना है। यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, जिसका राज़ बाप समझाते हैं।''
सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

विश्व-नाटक और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़

ये अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है। इसमें देश-काल-परिस्थिति और पार्ट के अनुसार हर आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है परन्तु सदा काल की मुक्ति किसको नहीं मिल सकती। जब तक आत्मा का इस नाटक में पार्ट नहीं है, तब तक वह मुक्ति में है परन्तु इस नाटक के पार्ट में आधा समय जीवनमुक्ति और आधा समय जीवनबन्ध का पार्ट बजाती है।

जो हुआ अच्छा हुआ ...जो होगा अच्छा होगा का राज़

ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इसमें जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह अच्छा होगा क्योंकि जैसे और नाटक मनोरंजन के लिए होते हैं वैसे ही ये विश्व-नाटक भी बहुत ही मनोहारी है परन्तु जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इसे देखती और पार्ट बजाती, उसको ही ये सदा अच्छा लगता है। विश्व-नाटक के इस सत्य को जानने से आत्मा निश्चिन्त और निर्भय हो जाती है।

''अगर कोई भी बात को देखते या सुनते हुए आश्चर्य अनुभव होता है तो यह फाइनल स्टेज नहीं है। ऐसा तो होना नहीं चाहिए, अच्छा जो हुआ वह होना ही चाहिए, अगर ऐसा संकल्प ड्रामा के होने पर भी उत्पन्न होता है तो इसको भी अंश मात्र की हलचल का रुप कहेंगे।'' अ.बापदादा 15.4.74

''बाप कहते हैं - मैं ब्रह्मा कुख कमल द्वारा रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बताता हूँ। ड्रामा में क्या है - यह मनुष्यों की बुद्धि में आना चाहिए। यह है बेहद का ड्रामा, हम एक्टर्स हैं। ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बुद्धि में रहना चाहिए।'' सा.बाबा 22.11.71 रिवा.

विश्व-नाटक और 'नथिंग न्यू' का राज़ / विश्व-नाटक और व्यर्थ चिन्तन का राज़

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान वाले के लिए विश्व की कोई भी घटना नई नहीं है, सब कल्प पहले वाली हैं और सब कल्याणकारी हैं, इसलिए उसको किसी भी घटना को देखते हुए प्रश्न या आश्चर्य नहीं होगा। अंशमात्र भी प्रश्न या आश्चर्य का संकल्प न आना ही नथिंग न्यू की स्थिति है, विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की पहचान है।

''विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना आवश्यक है अगर उतना यह बुद्धि में रहेगा तो उतना ही ऐसा महारथी हर्षित रहेगा। 'नथिंग न्यू' यह है फाइनल स्टेज।'' अ.बापदादा 15.4.74

''सभी तरफ अति दिखाई पड़ रही है। अन्त की निशानी अति है। तो जैसे प्रकृति समाप्ति की तरफ अति में जा रही है वैसे ही सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रुप में आयेंगे।'' अ.बापदादा 15.4.74

''चित्र आदि दिव्य दृष्टि से निकाले हुए हैं फिर बाप खुद ही आकर करेक्ट करते हैं। यह भी बाप ने समझाया है कि जो सेकेण्ड पास होता है, उसको ड्रामा समझते चलो, मूझो मत। पास्ट हुआ .. टाइम पास्ट हो गया फिर वह बातें याद क्यों करते हो। ड्रामा को भूल जाते हो। बीती को चितवो नहीं, आगे की कोई आश न रखो। बाप को याद करने से तुम्हारी सभी आशायें पूरी हो जायेंगी।'' सा.बाबा 15.11.69 रिवा.

विश्व-नाटक और अज्ञानता (Ignorance) का राज़

विश्व-नाटक की यथार्थता को देखें तो अनुभव होगा कि हर चीज अच्छी है क्योंकि हर चीज इस विश्व-नाटक को 5000 वर्ष तक सफलतापूर्वक चलने में सहयोगी है। ज्ञान भी अच्छा है तो अज्ञानता (Ignorance) भी अच्छी चीज है। यदि इस ज्ञान की विस्मृति न हो तो सारे कल्प में यह विश्व-नाटक सफलतापूर्वक चल नहीं सकता। अज्ञानता और अज्ञानता जनित विकारों की मारामारी में ही आधा कल्प तक ये नाटक चलता है। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है - अगर लक्ष्मी-नारायण को ये ज्ञान हो तो सतयुग के सुख की महसूसता ही न हो। फिर कल्पान्त में विश्व-नाटक के नये चक्र के आरम्भ के लिए ज्ञान भी अति आवश्यक है।

''इतनी छोटी सी आत्मा शरीर से निकल जाती है तो शरीर कोई काम का नहीं रहता। बस कहेंगे मर गया, जाकर दूसरा शरीर लिया। एक शरीर छोड़ दूसरा ले पार्ट बजाती है। फिर उसमें रोने की क्या दरकार है। जब ड्रामा को जाने तब ऐसे कहे कि इसमें रोने पीटने की दरकार ही नहीं। अब तुमको ज्ञान है हम यह पुराना शरीर छोड़ अपने निर्वाणधाम में जायेंगे।''

सा.बाबा 24.7.72 रिवा.

Q. क्या इस विश्व-नाटक में कोई परिवर्तन हो सकता है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों? यदि नहीं हो सकता है तो पुरुषार्थ की क्या आवश्यकता है?

Q. विश्व-नाटक में 5 हजार वर्ष के बाद अणु-परमाण सहित हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है या केवल आत्माओं का पार्ट ही पुनरावृत्त होता है? यदि अणु-परमाणु सहित हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो एक साथ एक ही समय पर परिवर्तन होते हैं या पांच हजार साल में परिवर्तन होते हैं?

तीनों लोकों का राज़

तीनों लोकों अर्थात् ब्रह्मलोक निराकार आत्माओं का घर, सुक्ष्मवतन फरिश्तों की दुनिया और स्थूलवतन अर्थात् साकारी आत्माओं की दुनिया का राज़ भी ज्ञान सागर बाप ने अभी बताया है। जिससे हमको पता पड़ा है कि यह हमारा घर नहीं है। घर तो हमारा शान्तिधाम-ब्रह्मलोक है, यह साकार लोक तो ड्रामा स्टेज है, जहाँ हम पार्ट बजाने आये हैं। घर हमारा मूल वतन है। अब ड्रामा पूरा होता है, अब हमको घर वापस जाना है। वहाँ कैसे जायेंगे, वहाँ हमारी स्थिति कैसी होगी, उसके लिए क्या तैयारी करनी है - यह सब ज्ञान परमात्मा ने अभी हमको दिया है, जिससे ही हम इस दुनिया से नष्टोमोहा होकर घर वापस जाने की तैयारी करने में समर्थ हुए हैं और कर रहे हैं। भक्ति मार्ग में भी तीन लोकों का गायन तो करते हैं परन्तु यथार्थ रीति उनके विषय में कुछ जानते नहीं हैं।

''तुम बच्चों को बाप ने समझाया है - अब घर वापस जाना है, जहाँ से पार्ट बजाने यहाँ आये हैं। यह बहुत बड़ा माण्डवा अथवा स्टेज है। स्टेज पर एक्ट करके पार्ट बजाकर फिर सबको वापस जाना है।... सारे कल्प 5 हजार वर्ष में निराकार भगवान बाप एक ही बार आकर पढ़ाते हैं। यह तो तुमको पक्का निश्चय है।'' सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

ब्रह्मलोक (ब्रह्माण्ड) का राज़

ब्रह्म महतत्व कहाँ है, कैसे आत्मायें वहाँ रहती हैं, कैसे वहाँ से आत्मायें आती है, फिर कैसे वापस जाती है - इस सबका ज्ञान परमात्मा ने दिया है कि ड्रामा अनुसार हर आत्मा अपने एक्यूरेट समय पर यहाँ पार्ट बजाने आती है और कल्पान्त में जब परमात्मा आकर पावन बनने का रास्ता बताते हैं तो फिर पावन बनकर वापस जाती है।

प्राय: सभी ब्रह्मलोक को ऊपर मानते हैं परन्तु ऊपर उसकी स्थिति क्या है, यह किसकी भी बुद्धि में नहीं आता है। प्रकृति के नियमानुसार आत्माओं की बुद्धि ऊपर की तरफ अनायास ही जाती है क्योंकि आत्मा वहाँ की रहने वाली है, इसलिए वह बुद्धि को खींचता है। वहाँ बुद्धि का जाना स्वभाविक है। ब्रह्मलोक का यथार्थ राज़ अभी परमात्मा के द्वारा हमको पता पड़ा है।

ब्रह्मलोक निराकार आत्माओं का घर है, जहाँ परमात्मा और आत्मायें अपने मूल स्वरूप में निवास करती हैं। वहाँ किसी भी तरह का आवाज या कर्म नहीं है। आत्माओं को देह न होने के कारण किसी प्रकार की अनुभूति भी नहीं है। वह आत्माओं की जैसेकि सुषुप्त अवस्था है।

ब्रह्माण्ड पृथ्वी के एक ओर नहीं बल्कि चारो ओर है। भूमण्डल आकाश तत्व से आवृत है और आकाश तत्व ब्रह्म तत्व से आवृत है। भूमण्डल और आकाश तत्व की सीमा है लेकिन ब्रह्माण्ड अर्थात् ब्रह्मतत्व अनन्त, असीम है। ब्रह्म महतत्व में सूर्य-चाँद-तारों की भी गम नहीं है। वह स्वत: प्रकाशित लोक है।

ब्रह्म लोक में आत्माओं का जो झाड़ दिखाया गया है, वह भी प्रतीकात्मक है, नक्शे मात्र है। आत्मायें पूरे ब्रह्माण्ड में अपने-अपने क्षेत्र में रहती हैं, जैसे इस भूमण्डल पर चारो ओर रही हुई हैं अर्थात् जैसे सारे आकाश में तारे हैं, ऐसे ही समस्त ब्रह्माण्ड में आत्मायें रहती हैं। ब्रह्मलोक सर्व आत्माओं का घर है, इसलिए सभी योनि की आत्मायें कल्पान्त में ब्रह्मलोक में जाती हैं और अपने-अपने सेक्शन में स्थित होती हैं, जहाँ से अपने समय पर पार्ट बजाने भूमण्डल पर आती हैं।

''इस आकाश तत्व से पार ब्रह्माण्ड है, जहाँ सूर्य-चाँद भी नहीं होते, हम वहाँ के रहने वाले हैं, यहाँ आये हैं पार्ट बजाने।... सभी आत्मायें इस ड्रामा के धागे में पिरोई हुई हैं।'' सा.बाबा 14.9.04 रिवा.

''अभी तुम्हारी बुद्धि में सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज़ है। जानते हो वह है शान्तिधाम अथवा परमधाम। हम आत्मायें भिन्न-भिन्न धर्म की सब नम्बरवार वहाँ रहती हैं, निराकारी दुनिया में। जैसे स्टार्स देखते हो ना - कैसे खड़े हैं। ऐसे ही आत्मायें ब्रह्माण्ड में रहती हैं।'' सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

''बच्चे सतोप्रधान बनने के लिए यहाँ बाप के पास आते हैं।... सर्व आत्माओं को विश्राम कब, कहाँ और कैसे मिलता है? तुम बच्चों का फर्ज है सबको बाप का ये पैगाम देना।... यह सारा राज़ बाप बैठ समझाते हैं।'' सा.बाबा 17.12.04 रिवा.

''मैं जो हूँ, जैसा हूँ, जैसे मैं पार्ट बजाता हूँ, यह और कोई नहीं जानते। तुम बच्चे ही अभी जानते हो।... आत्मा जब शरीर में है, तब ही सुन सकती है। परमात्मा भी शरीर में आता है। आत्माओं और परमात्मा का घर शान्तिधाम है, वहाँ चुरपुर कुछ भी नहीं होती है।'' सा.बाबा 18.7.05 रिवा.

''अभी मूलवतन से लेकर सारे ड्रामा का चक्र तुम्हारी बुद्धि में याद है। ... तुम बच्चों की बुद्धि में इस बेहद ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज़ रहना चाहिए।... इसमें जरा भी बदली-सदली नहीं हो सकती।... यह झाड़ सब धर्मों का नम्बरवार है। यह मनुष्यों का झाड़ बिल्कुल एक्यूरेट है।'' सा.बाबा 26.7.05 रिवा.

''आत्मायें निर्वाणधाम से यहाँ आये पार्ट बजाती हैं। बाबा भी आकर पार्ट बजाते हैं। वह है शान्तिधाम। वहाँ कोई संकल्प नहीं आता है कि यह देखें, वह देखें।'' सा.बाबा 22.7.72 रिवा.

''सूक्ष्म वतन में हैं फरिश्ते। वह है फरिश्तों की दुनिया, ... तीनों लोकों को जानते हो। सिवाये बाप के रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज और कोई बता ही नहीं सकता है। कोई भी त्रिकालदर्शी नहीं है। यह थोड़ेही कोई जानते हैं कि मूलवतन में आत्मायें कैसे रहती हैं। तुम जानते हो कि वहाँ पर आत्माओं का झाड़ है। वहाँ से फिर नम्बरवार आते हैं।'' सा.बाबा 12.12.72 रिवा.

''आधा कल्प मैं वहाँ आराम से बैठा रहता हूँ, वानप्रस्त। तुम मुझे पुकारते हो ऐसे भी नहीं कि मैं वहाँ सुनता हूँ, मेरा पार्ट ही इस समय का है। ड्रामा के पार्ट को मैं जानता हूँ।'' सा.बाबा 21.10.69 रिवा.

''बाप कल्प-वृक्ष का बीजरूप है। यह है कारपोरियल झाड़, ऊपर में है इन्कारपोरियल झाड़।... यह उल्टा झाड़ है। यह बड़ा बेहद का ड्रामा है।'' सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

''अन्त में सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पा लिया है। अभी तुम जानते हो - सारा झाड़ खड़ा है परन्तु देवी-देवता धर्म का फाउण्डेशन है नहीं।... सब धर्म वाले अपने-अपने सेक्शन में चले जायेंगे। आत्माओं का झाड़ भी दिखाते हैं ना। चित्रों में बहुत करेक्शन करते, बदलते जायेंगे।'' सा.बाबा 2.8.05 रिवा.

''परमधाम और सतयुग में पहले सब आत्मायें परफेक्ट ही हैं, भल पार्ट अलग-अलग है परन्तु परफेक्ट तो हैं ना। प्योरिटी बिगर तो वहाँ कोई जा न सके।... सतयुग में हैं सम्पूर्ण निर्विकारी।'' सा.बाबा 1.8.05 रिवा.

सूक्ष्म वतन का राज

सूक्ष्मवतन का अपना कोई अलग तत्व नहीं है। सूक्ष्मवतन ब्रह्म तत्व और आकाश तत्व का मिश्रित क्षेत्र है - वह क्षेत्र भी अविनाशी है। भल सारे कल्प सूक्ष्मवतन में पार्ट नहीं चलता है परन्तु वह क्षेत्र रहता ही है। पार्ट संगमयुग पर ही चलता है। कोई भी तत्व व क्षेत्र कब विनाश नहीं होता है, रूप परिवर्तन अवश्य होता है।

Q. सूक्ष्म वतन क्या है, कैसे कल्पान्त में संगमयुग पर वहाँ पार्ट चलता है?

सूक्ष्मवतन का क्षेत्र (Range) तो सारे कल्प रहता है क्योंकि इस सृष्टि में न कोई तत्व विनाश होता है और न ही कोई नया निर्माण होता है। सब तत्वों की एक निश्चित सीमा है। ऐसे ही न कोई स्थान विनाश होता है और न ही कोई नया स्थान निर्माण होता है। केवल समयानुसार सबका रूप और पार्ट परिवर्तन होता है। सूक्ष्मवतन में पार्ट सारे कल्प नहीं चलता है, पार्ट केवल

संगमयुग पर ही चलता है। वापस जाते समय आत्मायें सूक्ष्म शरीर के साथ वहाँ से पार करती हैं। आते समय भी आत्मायें वहाँ से ही पार करेंगी परन्तु उस समय उनको कोई सूक्ष्म शरीर आदि नहीं होगा, इसलिए कोई महसूसता नहीं होगी। सूक्ष्म शरीर जाते समय ही होता है और हर आत्मा को सूक्ष्म शरीर के साथ वहाँ से पार करना होता है। उस क्षेत्र को पार करते ही आत्मा अपने मूल स्वरूप में आ जाती है। आत्मायें वापस जाते समय स्थूल देह से सूक्ष्म देह में और फिर मूल स्वरूप में जाती हैं परन्तु आते समय आत्मायें अपने मूल स्वरूप से आती हैं इसलिए सूक्ष्म देह का प्रश्न नहीं उठता है। नाटक में भी एक्टर आते समय साफ-सुथरे आते हैं और जाते समय पार्ट का कुछ न कुछ लेप-क्षेप होता ही है।

''तुम बच्चे जानते हो मूलवतन है हम आत्माओं का घर। सूक्ष्मवतन तो है ही दिव्य दृष्टि की बात। बाकी सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग तो यहाँ ही होता है। पार्ट भी तुम यहाँ बजाते हो। सूक्ष्मवतन का कोई पार्ट नहीं है, यह साक्षात्कार की बात है।''

सा.बाबा 4.10.04 रिवा.

''बापदादा को अभी यह व्यक्त दुनिया नहीं है। ... वतन में समय नहीं होता, घड़ी नहीं होती। वहाँ जब सूर्य-चाँद ही नहीं तो रात-दिन किस हिसाब से हों? इसलिए वहाँ समय का बन्धन नहीं है।'' अ.बापदादा 22.1.70

''अव्यक्त वतन में तो एक सेकण्ड में बहुत कुछ रहस्य स्पष्ट हो जाते हैं।... सभी सोचते हैं बाबा बड़ा आवाज क्यों नहीं करते। लेकिन बहुत समय के संस्कार से अव्यक्त रूप से व्यक्त में आते हैं तो आवाज से बोलना जैसे अच्छा नहीं लगता है।... आप लोगों को भी यह प्रैक्टिस करनी है।'' अ.बापदादा 25.6.70

''यह भी बच्चों को समझाया है कि तुम जब ऊपर से आते हो तो वाया सूक्ष्मवतन से नहीं आते हो। अभी वाया सूक्ष्मवतन होकर जाना है। सूक्ष्मवतन बाबा अभी ही दिखाते हैं। सतयुग-त्रेता में इस ज्ञान की बात भी नहीं रहती है।'' सा.बाबा 19.3.05

''खेल सारा यहाँ है। सूक्ष्मवतन में नाटक कैसे चलेगा?... यह बहुत बड़ा माण्डवा है।... हमारी ग्लानि करते हैं। यह खेल है, जो फिर भी होगा। मैं आकर आदि से अन्त तक का सारा राज़ समझाता हूँ।'' सा.बाबा 14.5.05 रिवा.

Q. क्या संगमयुग के बाद सूक्ष्मवतन ही नहीं होता या सूक्ष्मवतन तो होता है परन्तु कोई एक्टिविटी नहीं होती है? बाबा के उपर्युक्त महावाक्यों का यथार्थ रहस्य क्या है?

''यह सूक्ष्मवतन की जो रमत-गमत है, यह भी टाइम पास करने के लिए है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो, तब तक टाइम पास करने के लिए यह खेलपाल है।'' सा.बाबा 14.7.05 रिवा.

सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का राज़

परमात्मा के स्थापना, विनाश और पालना तीन कर्तव्य गाये हुए हैं। ब्रह्मा के द्वारा स्थापना, शंकर के द्वारा पुरानी पतित सृष्टि का विनाश और विष्णु के द्वारा पावन सृष्टि की पालना। इस स्थापना, विनाश और पालना के कर्तव्य को स्पष्ट करने के लिए परमात्मा संगमयुग पर आकर सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की रचना रचते हैं और उनका साक्षात्कार कराते हैं। ये तीनों देवतायें परमात्मा के तीनों कर्तव्यों के प्रतीक हैं। उनकी अपनी कोई स्वतन्त्र आत्मायें नहीं हैं और न ही उनका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व या कर्तव्य है। ब्रह्मा तो साकार में है, जिस तन में प्रवेश होकर स्थापना का कर्तव्य करते हैं और ब्रह्मा ही विष्णु बनते हैं। पतित सृष्टि के विनाश का निमित्त शंकर को दिखाया है। वास्तव में ये तीनों कर्तव्य हर आत्मा भी करती है। दैवी स्वभाव-संस्कारों की स्थापना, उनकी पालना और आसुरी स्वभाव-संस्कारों का विनाश हर आत्मा को करना होता है।

''शंकर के लिए गायन है - आंख खोली और विनाश। कोई के भी ऊपर विकराल रूप बनकर दृष्टि डाली और उनके विकर्मी संस्कारों को भस्म कर दें।... अब अपने शक्ति रूप को प्रत्यक्ष करना है।'' अ.बापदादा 11.7.70

''बाप है करन-करावनहार। बाप कहते हैं - हम कोई कहते नहीं है कि विनाश करो। यह सारा ड्रामा में नूंधा हुआ है। शंकर कुछ करता है क्या? कुछ भी नहीं। यह सिर्फ गायन है कि शंकर द्वारा विनाश। बाकी विनाश तो वे आपही कर रहे हैं। यह अनादि बना हुआ ड्रामा है, जो समझाया जाता है।... बाप को रचयिता कहते हैं। बाप कहते हैं मैं क्रियेट नहीं करता हूँ, मैं चेन्ज करता हूँ,

कलियुग को सतयुग बनाता हूँ।... बाबा कोई निन्दा नहीं करते हैं। यह तो खेल बना हुआ है। यह तो सिर्फ समझाने के लिए कहा जाता है। खेल की निन्दा नहीं कर सकते हैं।'' सा.बाबा 05.02.05 रिवा.

''सदैव तीनों ही कार्य साथ-साथ चलते हैं। क्योंकि अगर पुराने संस्कार वा स्वभाव वा व्यर्थ सकंल्पों का विनाश ही नहीं करेंगे तो नई रचना कैसी होगी। और अगर नई रचना करते हो उनकी पालना न करेंगे तो प्रैक्टिकल कैसे दिखाई देंगे।''

अ.बापदादा 15.4.71

''जब से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-साथ यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई।... तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं तो उन्हों को ही सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को ? शंकर समान ज्वाला-रुप बन कर प्रज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है।'' अ.बापदादा 3.2.74

''विष्णु के दो रूप वही जगदम्बा-जगतपिता हैं। बाकी शंकर है सूक्ष्म वतनवासी। वह भी कल्याणकारी है। विनाश न हो तो नई दुनिया की स्थापना कैसे हो। भगवान तो करन करावनहार है ना। यह भी ड्रामा बना हुआ है, शंकर के द्वारा विनाश।''

सा.बाबा 15.3.72 रिवा.

स्थूल वतन का राज़

स्थूल वतन एक ड्रामा स्टेज है, जहाँ ये सारा नाटक चलता है। यहाँ आत्मायें परमधाम से आकर पार्ट बजाती हैं। सूर्य, चाँद और तारे इस माण्डवे को प्रकाशित करने वाली बत्तियां हैं। साइन्स वाले अन्य ग्रहों पर जीवन की बहुत खोज करते हैं परन्तु परमात्मा ने बताया है, ये साइन्स का अति घमण्ड है। वहाँ कोई जीवन नहीं है। जीवन इस भूतल पर ही है और इसकी ही सारी हिस्ट्री है। इस स्थूल वतन की हिस्ट्री-जाग्राफी बाबा ही बताते हैं कि कैसे यहाँ खेल चलता है। सारे कल्प में क्या-क्या पार्ट चलता है, सृष्टि में कब-कब मूलभूत परिवर्तन आदि होते हैं।

इस स्थूल वतन में जड़, जंगम और चेतन का अविनाशी खेल चलता रहता है। चेतन आत्माओं की विभिन्न योनियां हैं, जिन सबका पार्ट अविनाशी नूँधा हुआ है। जड़ तत्व भी चेतन आत्माओं को आकर्षित करते हैं तो चेतन आत्मायें भी जड़ तत्वों को आकर्षित करते हैं। सबका खेल यहाँ चलता है।

''यह सूर्य-चांद-तारे तो इस माण्डवे की बत्तियां हैं। यहाँ खेल होता है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन में यह होती नहीं क्योंकि वहाँ खेल ही नहीं। यह अनादि खेल चला आता है, चक्र फिरता रहता है, प्रलय होती नहीं है। भारत तो अविनाशी खण्ड है।''

सा.बाबा 22.7.05 रिवा.

Q. क्या परमधाम में आत्माओं का झाड़ ऐसा ही है जैसा कि तीन लोक के चित्र में दिखाया है या उसमें कोई अन्य रहस्य और स्थिति है ?

''ड्रामा अनुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइन्ट्स गुह्य होती जाती है तो चित्रों में भी चेन्ज होगी।... बाप कहते हैं - सब बातें पहले ही थोड़ेही समझाई जाती हैं। बाप ज्ञान का सागर है तो ज्ञान देते ही रहेंगे, करेक्शन होती रहेगी। पहले से ही थोड़ेही बता देंगे, फिर तो आर्टिफिशियल हो जाये। अचानक इत्तफाक आदि होते रहेंगे, फिर कहेंगे - ड्रामा।... ड्रामा में जो हुआ सो राइट, बाबा ने भी जो कहा सो ड्रामा अनुसार कहा। ड्रामा में मेरा पार्ट ऐसा है।'' सा.बाबा 24.10.01 रिवा.

Q. क्या परमधाम भूमण्डल के चारो ओर है या एक तरफ है अर्थात् ऊपर ही है ?

Q. ब्रह्मलोक में मनुष्यात्मायें ही जाती हैं या हर योनि की आत्मायें ब्रह्मलोक में जाती है अर्थात् वह सर्व आत्माओं का घर या मनुष्यात्माओं का ही घर है ?

Q. विनाश के बाद सूक्ष्मवतन (Region) रहता है या नहीं ?

Q. क्या आत्मायें सारे ब्रह्माण्ड में स्थित हैं और यदि सारे ब्रह्माण्ड में स्थित हैं तो उनका परमात्मा के साथ क्या और कैसे सम्बन्ध है ?

हाँ। जैसे आकाश में तारे सर्वत्र स्थित हैं और सबका सूर्य के साथ सम्बन्ध है, सभी सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हैं ऐसे ही ब्रह्माण्ड में आत्मायें और परमात्मा रहते हैं। जैसे इस साकार वतन में एक देश के एक कोने में बैठी आत्मा का मन्सा से सम्बन्ध दुनिया के किसी भी कोने में बैठी आत्मा से हो सकता है, परमात्मा भारत में आते भी विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण करते हैं, ब्रह्मा बाबा सूक्ष्म वतन में रहते भी विश्व की सर्व आत्माओं के साथ सम्बन्ध रखते हैं, ऐसे ही ब्रह्माण्ड में सर्वात्माओं का परमात्मा से सम्बन्ध है।

त्रिलोकीनाथ का राज़

भक्ति मार्ग में भी श्रीकृष्ण को त्रिलोकीनाथ कहते हैं परन्तु तीन लोक क्या हैं और तीनों लोकों का नाथ कौन है, यह राज़ कोई नहीं जानता, जो अभी परमात्मा ने बताया है। वास्तव में परमात्मा तीनों लोकों का ज्ञाता है परन्तु वह साकार लोक में आकर उसका मालिक तो बनता नहीं है और श्रीकृष्ण नारायण के रूप में इस सारी दुनिया का नाथ अर्थात् मालिक बनता है परन्तु उसको तीनों लोकों का यथार्थ ज्ञान ही नहीं तो वह नाथ कैसे हो सकता है। अब त्रिलोकीनाथ कौन है? ये एक विचारणीय प्रश्न है। अभी परमात्मा हमको ये ज्ञान देते हैं और कहते हैं तुम बच्चे भी मास्टर त्रिलोकीनाथ हो।

''निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी ये तीन बातों को याद रखने से क्या बन जायेंगे - त्रिकालदर्शी। अभी बनेंगे त्रिलोकीनाथ और त्रिकालदर्शी और भविष्य में बनेंगे विश्व के मालिक। जो तीनों लोकों के ज्ञान को स्मरण करते हैं, वे हैं त्रिलोकीनाथ।''

अ.बापदादा 8.05.69

''कृष्ण को त्रिलोकीनाथ कहा जाता है। ... त्रिलोकी के नाथ अर्थात् तीन लोक मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन।... वास्तव में त्रिलोकीनाथ कोई भी है नहीं। बाप राइट बात समझाते हैं। ब्रह्माण्ड का मालिक शिवबाबा भी है, तुम भी हो। सूक्ष्मवतन की तो बात ही नहीं। स्थूल वतन का भी शिवबाबा मालिक नहीं। न स्वर्ग का, न नर्क का।'' सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

कल्प वृक्ष का राज़

''मुख्य चित्र हैं त्रिमूर्ति और झाड़। सीढ़ी से भी झाड़ में जास्ती नॉलेज है।... ड्रामा और झाड़ की नॉलेज भी बाप देते हैं।... वास्तव में तुम कोई शास्त्र आदि को रेफर नहीं कर सकते हो।... ज्ञान देने वाला ज्ञान का सागर एक बाप ही है। इसको रुहानी ज्ञान कहा जाता है।''

सा.बाबा 28.1.05 रिवा.

इस कल्प-वृक्ष का गुह्य राज़ अभी परमात्मा ने बताया है। कल्प-वृक्ष का वर्णन गीता में भी है। कल्प की तुलना एक वृक्ष से की गई है, इसलिए इसको कल्प-वृक्ष कहा जाता है क्योंकि इसमें वृक्ष के समान ही गुण-धर्म हैं। जैसे कई वृक्षों के बीज है और कई वृक्षों की कलम लगती है। ऐसे ही इस कल्प-वृक्ष का कोई बीज तो नहीं है परन्तु इसकी कलम अवश्य लगती है। परमात्मा को इस कल्प-वृक्ष का बीजरूप रचता कहा जाता है क्योंकि वह ज्ञान देकर इसकी कलम लगाता है। कल्प-वृक्ष की कलम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के द्वारा लगती है, इसलिए इसको सनातन धर्म कहा जाता है क्योंकि इस धर्म वंश की आत्मायें सारे कल्प में इस सृष्टि-रूपी रंगमंच पर रहती है। अन्य सभी धर्मों की पुन: स्थापना होती है। उनकी सभी आत्मायें विनाश के समय परमधाम चली जाती हैं, फिर अपने समय पर इस सृष्टि रंगमंच पर आती हैं।

प्रकृति के नियमानुसार हर धर्म, हर आत्मा और हर वस्तु जो इस संसार में है, उसको सतो, रजो और तमो स्थिति से पास होना ही पड़ता है। वस्तुओं का रूप परिवर्तन होता है, आत्माओं के स्वभाव-संस्कार परिवर्तन होते हैं अर्थात् सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हैं। जब सभी आत्माओं और स्थूल प्रकृति की तमोप्रधान स्थिति हो जाती है, तब परमात्मा आकर इसकी कलम लगाते हैं, इसको नवीनता प्रदान करते हैं। अभी सब धर्मों की तमोप्रधान स्थिति है और नये वृक्ष की कलम बीजरूप परमात्मा के द्वारा लग रही है और पुराने वृक्ष के विनाश की तैयारियां भी जोर-शोर से हो रही हैं।

कल्प-वृक्ष के लिए गायन है कि जिसकी छाया में रहने वाले को कोई रोग-शोक नहीं व्याप्ता है। अभी परमात्मा ने हमको इस कल्प-वृक्ष का यथार्थ ज्ञान दिया है। अभी जो इस ज्ञान को बुद्धि में रखकर, इसकी छाया में कर्तव्य करता है, उसको वास्तव में कोई रोग-शोक सता नहीं सकता है।

ये कल्प-वृक्ष वैराइटी धर्मों का झाड़ है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म इसका मूल और तना है, अन्य धर्म इसकी शाखायें-प्रशाखायें हैं। सब धर्म एक ही वृक्ष के तना, शाखायें-प्रशाखायें हैं - इस सत्य को जानने वाला कब दूसरे धर्म वंश की आत्माओं से घृणा नहीं कर सकता। देवी-देवता धर्म की आत्मायें इस वृक्ष के तना हैं और आधार हैं, इसलिए परमात्मा बाप ने कहा है - तुम इस कल्प-वृक्ष की पूर्वज आत्मायें हो, तुमको अपने ज्ञान, गुण, शक्तियों, शुभ संकल्पों से सर्व आत्माओं की पालना करनी है, सबको शक्ति प्रदान करनी है, सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति की राह बतानी है। ये तुम्हारा परम कर्तव्य है।

परमात्मा सर्व आत्माओं का पिता और कल्प-वृक्ष का बीजरूप है, वही आकर ज्ञान देकर इस कल्प-वृक्ष की कलम लगाते हैं और बाद में पुराने वृक्ष का विनाश होता है। ब्रह्मा इस कल्प-वृक्ष का आदि पिता है, क्योंकि सभी धर्म वंश रूपी शाखायें आदि सनातन देवी-देवता धर्म से ही निकलती हैं, जिसकी स्थापना परमात्मा ब्रह्मा द्वारा करते हैं। जो उसके साकार में बच्चे बनते हैं उनको भी उसके समान गुण धारण कर कर्तव्य करना है - यही उनके बच्चा बनने की सार्थकता है अर्थात् ब्रह्मा बाबा के साथ हम आत्माओं को भी सर्व आत्माओं की सेवा करनी है।

''बीज है ज्ञान। इस कल्प-वृक्ष का बीज है बाबा। इस झाड़ की स्थापना, पालना और विनाश कैसे होता है, यह तुम जानते हो। यह है वैरायटी धर्मों का उल्टा झाड़।'' सा.बाबा 18.6.05 रिवा.

''यह है वैराइटी धर्मों का झाड़। (विभिन्न धर्मों की कलम लगती जाती है) ... सब धर्म कैसे नम्बरवार आते हैं, यह भी तुम जानते हो। सबको जाना है, फिर आना है। यह ड्रामा बना हुआ है। है भी कुदरती ड्रामा।'' सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

''झाड़ की उत्पत्ति कैसे होती है, मुख्य बात है यह। ... इस झाड़ को बनियन ट्री के मिसाल से बहुत अच्छा समझा सकते हैं। यह भी गीता का ज्ञान है, जो बाप तुम्हें सम्मुख बैठ सुनाते हैं, जिससे तुम राजाओं का राजा बनते हो, फिर भक्ति मार्ग में यह गीता शास्त्र आदि बनेंगे। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है।'' सा.बाबा 2.9.04 रिवा.

कल्प-वृक्ष की कलम का राज

इस कल्प-वृक्ष का बीजरूप परमात्मा है। इसका नया बीजारोपण तो नहीं होता परन्तु इसकी कलम लगती है। बीजरूप परमात्मा का साकार में आना ही इसकी कलम की स्थापना अर्थात् नींव अर्थात् जड़ है। कैसे इसकी कलम लगती है, इसका राज़ भी परमात्मा ने बताया है और इसकी कलम लगा रहे हैं। जो आत्मायें अपने संस्कारों को बदलकर इस कलम लगाने के कार्य में सहयोगी बनती हैं, वे ही पहले-पहले नई दुनिया में जाकर उसका सतोप्रधान सुख भोगती हैं। परमात्मा आकर आत्माओं में ज्ञान का बीज बोता है और योग सिखलाता है, जिसके आधार पर आत्माओं के स्वभाव-संस्कार परिवर्तन होते हैं और नये विश्व की कलम लगती है। जैसे किसी वृक्ष के विकास में बीज और भूमि दोनों का महत्व होता है ऐसे ही परमात्मा ज्ञान रूपी बीज तो सर्वात्माओं में एक समान ही बोता है परन्तु हर आत्मा उसको अपने अनादि संस्कारों के अनुसार धारण करती है और अपने जीवन में विकास करती है।

अन्त में सभी योनि की आत्मायें बीजरूप में ही बचेंगे, जिनसे आगे वृद्धि होगी।

''तुम बच्चे इस खेल को भी जानते हो। यह खेल कितना वण्डरफुल बना हुआ है। इस खेल का राज़ बाप बैठ समझाते हैं। बाप नॉलेजफुल, बीजरूप है, वही आकर सारे वृक्ष की नॉलेज देते हैं।'' सा.बाबा 21.12.04 रिवा.

''यह ज्ञान सब नहीं लेंगे। जो इस देवी-देवता धर्म के पत्ते होंगे, वे ही लेंगे। बाकी जो और धर्मों को मानने वाले होंगे, वे सुनेंगे नहीं।... हम पूज्य से पुजारी बने, अब फिर पूज्य बनते हैं।'' सा.बाबा 5.8.05 रिवा.

''तुमको सब धर्म वालों का कल्याण करना है। ... यह सबको समझाना पड़ता है। भल ड्रामा अनुसार होता है परन्तु तुम पतित तो बन गये ना।... यह भी ड्रामा बना हुआ है, जो बाप आकर समझाते हैं। यह ज्ञान सब धर्मों के लिए है।''

सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

Q. जो आत्मायें त्रेता के अन्त में आने वाली हैं, वे इस ज्ञान को सुनेंगी और जो द्वापर के आदि में 100-50 साल के अन्दर ही आने वाली होंगी, वे नहीं सुनेंगी। क्यों ?

आदि सनातन देवी-देवता धर्म और उसका विभिन्न धर्मों के साथ सम्बन्ध का राज़

परमात्मा सर्व धर्मों का अनादि पिता है और ब्रह्मा सर्व धर्मो का आदि पिता है तथा आदि सनातन देवी-देवता धर्म सर्व धर्मों की स्थापना का मूल श्रोत है। इसलिए कल्पान्त में सभी धर्म वंशों के धर्मपितायें परमात्मा से आकर सन्देश अवश्य लेते हैं, जो सन्देश वे अपने धर्म वंश की आत्माओं को देते हैं, जिसके आधार पर वे आत्मायें परमधाम जाती हैं और अपने समय पर उस धर्मवंश में आकर जन्म लेती हैं।

आदि सनातन धर्म को आदि सनातन धर्म क्यों कहा जाता है, इस सत्य का ज्ञान भी अपने को सनातन धर्म का कहलाने वालों को नहीं है और हमको भी नहीं था, जो परमात्मा ने अभी बताया है इस धर्मवंश की आत्माओं का इस विश्व-नाटक के चक्र में पूर्ण रूप से पार्ट कभी समाप्त नहीं होता है अर्थात् इस धर्मवंश की आत्मायें सारे कल्प में इस सृष्टि रंगमंच पर रहती हैं।

आदि सनातन धर्म का अन्य धर्मों से क्या सम्बन्ध है, इसका राज़ भी अभी परमात्मा ने बताया है। परमात्मा इस सृष्टि का बीजरूप है और आदि सनातन देवी-देवता धर्म तना है अर्थात् आदि सनातन देवी-देवता धर्म सभी धर्मों का आधार स्तम्भ है, जिसको कल्प-वृक्ष में तना के रूप में दिखाया गया है क्योंकि सभी धर्म इस कल्प-वृक्ष की शाखायें-प्रशाखायें हैं, जो इसी तना से निकलती हैं। सभी धर्मों की पालना आदि सनातन देवी-देवता धर्म से ही होती है। इसीलिए बाबा सदैव याद दिलाते हैं - तुम सभी धर्मों के पूर्वज हो, तुमको सभी धर्मवंश की आत्माओं की पूर्वजों के समान पालना करनी है।

''यह ब्राह्मण परिवार सर्वात्माओं का परिवार है। ब्राह्मण सभी धर्मों में बिखर गये हैं। ऐसा कोई धर्म नहीं, जिसमें ब्राह्मण न पहुंचे हों। अब सब धर्मों से निकल-निकल कर आ रहे हैं।... सेवा के निमित्त बनना कोई कम भाग्य नहीं है। यह बहुत श्रेष्ठ भाग्य है। बड़े से बड़े पुण्यात्मा बन जाते हैं।... यह लास्ट सो फास्ट जाने की विशेष गिफ्ट है।'' अ.बापदादा 25.2.86

''ऐसे भी नहीं कि सारी दुनिया स्वर्ग में जायेगी। जो कल्प पहले स्वर्ग में आये थे, वे ही भारतवासी फिर आयेंगे और सतयुग-त्रेता में देवता बनेंगे। वे ही फिर द्वापर से अपने को हिन्दू कहलायेंगे। यूँ तो हिन्दू धर्म में अब तक भी जो आत्मायें ऊपर से उतरती रहती हैं, वे भी अपने को हिन्दू कहलाती हैं लेकिन वे देवता नहीं बनेंगी और न ही स्वर्ग में आयेंगी। वे फिर भी द्वापर के बाद अपने समय पर ही उतरेंगी। देवता तुम ही बनते हो, जिनका आदि से अन्त तक पार्ट है। यह भी ड्रामा में बड़ी युक्ति है।''

सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

Q. द्वापर के बाद भी आत्मायें आती रहती हैं, जो हिन्दू कहलाती हैं, उनको किस धर्म कहा जायेगा ?

विचारणीय तथ्य यह है कि उनको देवी-देवता धर्म का कह नहीं सकते क्योंकि वे सतयुग-त्रेता में आती नहीं हैं और हिन्दू कोई धर्म है नहीं और न ही उसका कोई धर्मपिता है तो उन आत्माओं को किस धर्म का कहेंगे।

''सभी धर्मों के जो बड़े-बड़े हैं, उन्हों को यहाँ आना अवश्य है। ... यह भी ड्रामा में नूँध है। नहीं तो बाप को याद करना कैसे सीखे। बाप का परिचय तो सबको मिलना है।... यहाँ से दृष्टि मिलेगी या तो तुम्हारी मिशन बाहर जायेगी। तुम कहेंगे बाप को याद करो तो अपने धर्म में ऊंच पद पायेंगे।'' सा.बाबा 2.4.05

''साक्षात्कार कराया था कि धर्म स्थापक भी आते हैं दृष्टि लेने। याद करते करते विकर्म विनाश करते जायें तो पद ऊंचा पा सकते हैं। और धर्म वाले भी आयेंगे परन्तु पिछाड़ी में, सो भी जो धर्म के बड़े होंगे। ऐसे नहीं कि अभी का पोप कोई आयेंगे। ना, ना। पहला नम्बर का पोप जो दुर्गति को पाया है, वह आयेगा।'' सा.बाबा 25.11.72 रिवा.

संसार में विभिन्न धर्मों की स्थापना और सबके विलीन होकर एक सत् धर्म की स्थापना का राज़

कल्पान्त में परमात्मा आकर एक सत् देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं और सभी धर्म वंश की आत्मायें वापस परमधाम चली जाती हैं। दो युगों तक इस धरा पर एक आदि सनातन देवी देवता धर्म ही होता है। द्वापर के बाद अन्य धर्म पितायें आकर अपने-अपने धर्मवंश की स्थापना करते हैं और इस कल्प-वृक्ष से अनेक शाखायें-प्रशाखायें निकलती जाती हैं और सृष्टि रूपी वृक्ष वृद्धि को पाता जाता है। हर धर्म वंश की आत्मा पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्मा के तन में ही प्रवेश कर अपने धर्म की स्थापना करते हैं, फिर उनके धर्म वंश की आत्मायें ऊपर से आती जाती हैं। कल्पान्त में जब परमपिता परमात्मा आकर आदि सनातन देवी देवता धर्म की कलम लगाते हैं तो इस धर्म की आत्मायें जो अन्य धर्मों में कन्वर्ट हो गई हैं, वे पुन: अपने धर्म में वापस आ जाती है और विनाश के बाद एक आदि सनातन देवी देवता धर्म ही रह जाता है। इस सत्य का ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है अर्थात् सनातन शब्द का अर्थ भी अभी समझ में आया है। इसका सत्य का ज्ञान महाभारत आदि ग्रन्थों में भी अस्पष्ट रूप में वर्णित है।

''सर्व की सद्गति करने तो एक बाप ही आते हैं। क्राइस्ट, बुद्ध आदि किसकी सद्गति नहीं कर सकते। ब्रह्मा को भी सद्गतिदाता नहीं कह सकते। जो देवी-देवता धर्म का निमित्त है। भल देवी-देवता धर्म की स्थापना तो शिवबाबा करते हैं।''

सा.बाबा 04.07.05 रिवा.

''ये ड्रामा बड़ा वण्डरफुल बना हुआ है। ये बात किसको पहले नहीं समझानी है।... बाकी सभी तो ये ज्ञान नहीं लेंगे। भक्त सभी हैं भगवान के बच्चे, तो सभी को क्यों नहीं देता? क्या कोई कम प्रिय है? फिर कहा जाता है यह ड्रामा बना हुआ है। क्राइस्ट आदि का स्वर्ग में पार्ट ही नहीं है। क्यों नहीं? यह प्रश्न तो उठ नहीं सकता। ड्रामा में सभी का अपना अपना पार्ट है।''

सा.बाबा 12.1.73 रिवा.

परमात्मा और विभिन्न धर्म स्थापकों के धर्म-स्थापनार्थ परकाया प्रवेश का राज़

परमात्मा भी परकाया प्रवेश करते हैं और धर्मपितायें भी परकाया प्रवेश करते हैं परन्तु परमात्मा अपना कार्य करके वापस परमधाम चले जाते हैं, इस तन में सदा काल नहीं रहते हैं। परन्तु धर्मपितायें एक बार प्रवेश करके वापस परमधाम नहीं जा सकते क्योंकि उनको पुनर्जन्म लेकर यहाँ ही पार्ट बजाना है, अपने धर्म वंश की पालना करनी है। जैसे ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर का साक्षात्कार होता है, वैसे ही वे धर्म-स्थापक जिस तन में प्रवेश करते हैं, उस तन के सूक्ष्म शरीर का भी अनेक आत्माओं को साक्षात्कार होता है। इस सत्य का ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है।

''पवित्र आत्मा आती है अपना धर्म स्थापन करने। जैसे परमपिता परमात्मा कभी दुख नहीं भोग सकता।... क्राइस्ट की प्योर सोल तो दुख नहीं भोग सकती।... क्रिश्चियन का प्रजापिता हो गया क्राइस्ट, जिसमें प्रवेश कर बच्चे पैदा किये, वह हो गई माता। ये सब राज़ समझने के हैं।'' सा.बाबा 25.12.04 रिवा.

एक धर्म की आत्माओं का दूसरे धर्मों में परिवर्तित होने और कल्पान्त में अपने मूल धर्म में वापस आने का राज़

इस विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है। पांच हजार वर्ष के बाद हर चीज अणु-परमाणु के साथ और चेतन आत्मायें अपने पूर्व निश्चित स्थान पर पहुँच ही जाती हैं। यह गुह्य राज़ भी परमात्मा ने अभी बताया है कि कैसे देवी-देवता घराने की आत्मा के तन में ही सभी धर्म-पितायें प्रवेश होकर अपने धर्म-वंश की स्थापना करते हैं और उसमें देवी-देवता धर्म की कुछ आत्मायें परिवर्तित होती है, जिससे उस धर्म वंश की वृद्धि होती है। जो आत्मायें अन्य धर्मों में कन्वर्ट होती हैं वे पुन: कल्पानत में अपने मूल धर्म देवी-देवता धर्म में वापस आ जाती हैं। इस परिवर्तन का भी बहुत गुह्य रहस्य है। जब परमात्मा इस धरा पर आते हैं तो वे आत्मायें ही उस धर्मवंश की आत्माओं को परमात्मा का दिव्य सन्देश देने की निमित्त बनती हैं, परमात्मा के दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनती है।

सभी धर्म-वंशों की स्थापना आदि सनातन देवी-देवता धर्म वंश से ही होती है और जब परमपिता परमात्मा आकर विश्व का नव-निर्माण करते हैं तो सभी धर्म-वंश की आत्मायें आकर परमात्मा का सहयोग करती हैं अर्थात् इसमें आती हैं।

''उनको तो देही-अभिमानी बनकर बाप को याद नहीं करना है। याद भी वे ही करेंगे जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के भाती होंगे। भाती तो बहुत होते हैं ना परन्तु सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार होते हैं। ये बात बड़ी समझने और समझाने की है। ... जो देवी-देवता धर्म वाले और-और धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं, उन्होंको यह धर्म ही अच्छा लगेगा, वे फट से निकल आयेंगे। बाकी कोई को अच्छा नहीं लगेगा, तो वे पुरुषार्थ कैसे करेंगे।'' सा.बाबा 13.10.04 रिवा.

''तुम ही चक्र लगाकर अब फिर आये मिले हो। जो और-और धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं, वे भी आकर मिलेंगे।... कोई हिन्दू से मुसलमान बना तो उसी धर्म में आता रहेगा। बाद में आकर मिलेंगे।... तुम भी पहले माया के मुरीद थे ना। अब ईश्वर के बनते हो। वह भी ड्रामा में पार्ट है।'' सा.बाबा 21.4.05 रिवा.

''पार-निर्वाण गया। बाप समझाते हैं - एक भी वापस नहीं जा सकता। कायदा ही नहीं, जो कोई बीच में वापस जाये। झाड़ वृद्धि को जरूर पाना है। ... जो दूसरे धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं, वे फिर अपनी जगह पर आ जायेंगे।'' सा.बाबा 10.8.05 रिवा.

आदि सनातन देवी-देवता धर्म और हिन्दू धर्म का राज़

हिन्दू धर्म का मूल स्वरूप क्या है, उसका ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है। वास्तव में हिन्दू कोई धर्म नहीं है, इसलिए हिन्दू धर्म का कोई धर्म-स्थापक नहीं है और न ही हिन्दू धर्म का कोई धर्म-शास्त्र है। भारत का मूल धर्म है आदि सनातन देवी-देवता धर्म है, जो वाम मार्ग में जाने अर्थात् पतित बनने के बाद अर्थात् अपने दैवी गुणों से विहीन होने के बाद अपने को हिन्दू कहलाने लगते हैं। वास्तव में पहले शब्द आर्य और अनार्य के रूप में था, बाद में मुसलमानों के आने से हिन्दू शब्द अस्तित्व में आया। फिर कल्पान्त में परमात्मा आकर ब्रह्मा के द्वारा आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं।

''इस झाड़ से सभी को मालूम पड़ जाता है। झाड़ को अच्छी रीति देखो - सतयुग में बरोबर देवी-देवताओं का राज्य था।... फिर नम्बरवार दूसरे धर्म आते हैं।... हिसाब करना चाहिए कि कौन-कौन धर्म कब आते हैं।'' सा.बाबा 9.12.04 रिवा.

''कोई समय था जब एक ही धर्म था, एक ही खण्ड था। पीछे वैरायटी धर्म आये हैं। पहला-पहला आदि सनातन देवी-देवता धर्म है। सनातन धर्म भी यहाँ भारत में ही कहते हैं। परन्तु अर्थ तो समझते नहीं हैं।... शिवबाबा भारत में ही आते हैं, उनकी जयन्ति भी मनाते हैं।'' सा.बाबा 7.6.05 रिवा.

सनातन शब्द का राज़ अर्थात् हिन्दू धर्म से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम लगने का राज़

वास्तव में सनातन शब्द का अर्थ भी कोई यथार्थ रीति नहीं जानते हैं। देवी-देवता धर्म की आत्मायें सारे कल्प में इस धरा पर रहती हैं और पार्ट बजाती हैं। अन्य धर्मों की तरह आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कभी नई स्थापना नहीं होती है और न ही उसका कभी पूरा विनाश होता है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम लगती है, इसलिए इसको सनातन धर्म कहा जाता है। सतयुग-त्रेतायुग में जीवात्मायें देवी-देवता कहलाती हैं और द्वापर-कलियुग में वाम मार्ग में जाने के कारण वे अपने को हिन्दू कहलाने लगते हैं क्योंकि उनसे पवित्रता आदि दैवी गुण विलीन हो जाते हैं। कल्पान्त में परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर हिन्दू धर्म से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम लगाते हैं, जो अभी लग रही है।

''सतयुग में देवतायें थे, वे कहाँ गये - यह किसको पता नहीं है। समझते भी हैं कि सब पुनर्जन्म लेते हैं। बाप ने समझाया है देवतायें पुनर्जन्म लेते-लेते देवता से बदल हिन्दू बन गये हैं। पतित बने हैं ना। और किसका भी धर्म बदली नहीं होता है। देवताओं का धर्म क्यों बदली होता है, यह किसको पता नहीं है। बाप कहते हैं वे धर्मभ्रष्ट-कर्मभ्रष्ट हो गये।'' सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

''तुम कहेंगे हमारा राज्य अनादि है। राज्य वही है, सिर्फ पावन से बदल पतित होने से नाम बदल जाता है, देवता के बदले हिन्दू

कहलाते हैं। हैं तो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के ना।... पतित हैं तो नाम हिन्दू रख दिया है। पूछो हिन्दू धर्म कब, किसने स्थापन किया? तो बता नहीं सकेंगे।'' सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

''बाप मनुष्य सृष्टि का चेतन्य बीजरूप है।... इस सृष्टि रूपी झाड़ की उत्पत्ति, पालना, विनाश का सारा ज्ञान उनमें है। तुम जानते हो अभी उसका कलम लग रहा है।'' सा.बाबा 2.12.04 रिवा.

सृष्टि में जनसंख्या वृद्धि और कम होने का राज़

वर्तमान समय विश्व में जनसंख्या विस्फोट हो गया है अर्थात् विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या प्राय: सभी देशों के लिए सिरदर्द बनती जा रही है और सभी देश जनसंख्या वृद्धि से चिन्तित हैं। अनेक देश जनसंख्या न बढ़े, उसके लिए क्रत्रिम उपाय ढूँढते रहते हैं फिर भी जनसंख्या बढ़ती ही जाती है। जनसंख्या क्यों बढ़ रही है और कैसे कम होगी, जनसंख्या कम करना किसका काम है, जनसंख्या कब कम थी और फिर कब और कैसे कम होगी, इन सब रहस्यों का ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है। बाबा कहते - ये राज़ उन सभी को समझाओ, जो जनसंख्या वृद्धि से चिन्तित हैं और उसके लिए प्रयत्नशील हैं। सतयुग आदि में जनसंख्या 9 लाख 16 हजार एक सौ आठ होती है और कल्प के अन्त में 700 करोड़ के लगभग है। अभी फिर से वही 9 लाख 16 हजार एक सौ आठ होने वाली है और सब आत्मायें मुक्ति धाम में चली जायेंगी, फिर अपने समय पर अपने धर्म वंश में पार्ट बजाने आयेंगी।

''तुमको झाड़ को भी याद करना है तो चक्र को भी याद करना है। बाप कल्प-कल्प आकर कल्प-वृक्ष का सारा राज़ समझाते हैं।... यह मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ छोटे से बड़ा और बड़े से छोटा कैसे होता है, यह बाप समझाते हैं।''
सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

''कल्प-वृक्ष का मिसाल बड़ के झाड़ से देते हैं। सारा झाड़ खड़ा है, फाउण्डेशन है नहीं। यहाँ भी आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउण्डेशन है नहीं।... अभी तुम बाप को भी जान गये हो और सारे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, ड्यूरेशन आदि को भी जान गये हो।'' सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

''नई दुनिया से पुरानी और पुरानी से नई कैसे बनती है, यह कोई नहीं जानते हैं।... सतयुग-त्रेता में देवी-देवता धर्म के सिवाए और कोई भी धर्म होता नहीं।'' सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

''बाप ने हमको एडॉप्ट किया है। ज्ञान सागर बाप आया है और हमको सृष्टि-चक्र का राज़ समझाते हैं, दूसरा कोई समझा न सके। ... कहाँ इतनी करोड़ों मनुष्यात्मायें और कहाँ फिर 9 लाख। और सब कहाँ जायेंगे? अब तुम्हारी बुद्धि में है कि हम सब आत्मायें ऊपर ब्रह्मलोक में रहती हैं, फिर यहाँ आई हैं पार्ट बजाने। आत्मा को ही एक्टर कहेंगे।'' सा.बाबा 1.9.04 रिवा.

''इस समय दुनिया में इतने करोड़ों मनुष्य हैं, वहाँ तुम 9 लाख होंगे। सो भी एबाउट कहा जाता है।... बुद्धि कहती है - सतयुग में बहुत छोटा झाड़ होता है।... बुद्धि में यह सारा चक्र फिरता रहे।'' सा.बाबा 9.5.05 रिवा.

कल्प-वृक्ष की आयु का राज़ / कल्प की आयु लाखों वर्ष नहीं, 5000 वर्ष का राज़

साधारण मनुष्यों को तो कल्प की आयु का पता ही नहीं परन्तु विद्वानों ने शास्त्रों में कल्प की आयु लाखों वर्ष लिखी है और वैज्ञानिकों ने तो सृष्टि की आयु अरबों-खरबों वर्ष बता दी है और मनुष्य अज्ञानता से उस पर विश्वास क्रते हैं। वास्तव में सृष्टि तो अनादि-अविनाशी है, इसलिए उसकी आयु का प्रश्न नहीं उठता है परन्तु कल्प की आयु लाखों वर्ष नहीं, 5000 वर्ष है, इसका अंक और आंकड़ों (Fact and Figures) के साथ ज्ञान बाबा ने अभी समझाया है। उसके अनुसार अभी ये 5000 वर्ष पूरे होने वाले हैं। इस सत्य का भी अभी ही ज्ञान मिला है। हर 5000 वर्ष बाद इस कल्प वृक्ष की कलम परमात्मा के द्वारा लगती है और ये वृक्ष पुन: नया हो जाता है।

''यह वैरायटी धर्मों का झाड़ है।... इस सृष्टि रूपी कल्प-वृक्ष की आयु बिल्कुल एक्यूरेट है। पांच हजार वर्ष से एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं हो सकता है।... मजबूत तब होंगे जब पवित्र हो इस नॉलेज को धारण करेंगे।'' सा.बाबा 8.11.04 रिवा.

कल्प-वृक्ष के अक्षयपन अर्थात् अनादि-अविनाश्यता का राज़

इस कल्प-वृक्ष का कभी विनाश नहीं होता है, इसलिए इसे अक्षय-वृक्ष भी कहा जाता है। ये नया और पुराना तो होता है परन्तु इसके लिए इसका कोई नया बीजारोपण नहीं किया जाता है। परमात्मा के द्वारा इसकी कलम लगती है। इसलिए ये वृक्ष अनादि-अविनाशी है, जिसकी छाया में बैठने से आत्मा की सर्व मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं अर्थात् इसके द्वारा आत्मा में पुन: जागृति आ जाती है।

''बाप कहते हैं - मैं मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ। यह उल्टा झाड़ है। यह कल्प-वृक्ष है ना।... झाड़ खड़ा है लेकिन फाउण्डेशन है नहीं, इसलिए इसका बनियन ट्री से मिसाल दिया जाता है।'' सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

वृक्षपति और वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की दशा का राज़

परमात्मा इस कल्प वृक्ष का बीजरूप है, उनको ही वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति भी कहा जाता है। दुनिया में अनेक प्रकार की दशायें गाई जाती हैं, जिनका मनुष्य सुख-दुख से गहरा सम्बन्ध है। सभी दशाओं में बृहस्पति की दशा सबसे श्रेष्ठ गाई जाती है, जिसके लगने मनुष्य के जीवन मे सुख-शान्ति-समृद्धि आती है। इसका राज भी अभी बाबा ने बताया है कि जब वृक्षपति शिवबाबा इस दुनिया में आता है तब ही इस दुनिया पर वृक्षपति की दशा लगती है और ये दुनिया नर्क से बदल कर स्वर्ग बन जाती है। जो आत्मायें उनके साथ उनके कर्म में सहयोगी बनती हैं, उनके ऊपर इस दशा का विशेष प्रभाव होता है।

''अभी तुम्हारे पर बृहस्पति की दशा अविनाशी बैठती है, तब तुम अमरपुरी के मालिक बन जाते हो।... जिन बच्चों का यथार्थ योग है, उनकी सर्व कर्मेन्द्रियां योगबल से वश में होंगी।... स्वर्ग में ऊंच पद पाने को बृहस्पति की दशा अविनाशी दशा कहा जाता है। वह बाप मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है।'' सा.बाबा 6.6.05 रिवा.

योग अर्थात याद का राज़

सारी दुनिया में और विशेष भारत में योग की बहुत महिमा है, सब लोग योग सीखना चाहते हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि लोग योग का अर्थ भी नहीं समझते हैं। पहले तो हम लोग भी नहीं समझते थे। हठयोग की क्रियाओं को ही योग समझते थे। अभी बाबा ने योग शब्द का यथार्थ आध्यात्मिक अर्थ बताया है और राजयोग और हठयोग का अन्तर समझाया है। आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध या उनकी याद ही योग है। एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद ही यथार्थ योग है, जिससे आत्मा के जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते हैं और आत्मा पावन बनती है।

''चित्र के साथ विचित्र भी याद आया? ... विचित्र के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जायेंगे। अगर सिर्फ चित्र को और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आये।''

अ.बापदादा 18.1.70

''यह सब ज्ञान का मन्थन अन्दर में चलता रहे। बाप में ज्ञान और योग दोनों हैं, तुम्हारे में भी होना चाहिए। ज्ञान और योग दोनों साथ-साथ चलता है। ऐसे नहीं कि योग में बैठो, बाबा को याद करते रहो और नॉलेज भूल जाये।'' सा.बाबा 13.11.04 रिवा.

''ज्ञान और योग दोनों अलग चीज हैं। योग को ज्ञान नहीं कहेंगे।... बच्चों की बुद्धि में ज्ञान और योग का कन्ट्रास्ट स्पष्ट होना चाहिए। बाप कहते मुझे याद करो, यह ज्ञान नहीं हुआ।... ज्ञान है सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, उसकी नॉलेज।''

सा.बाबा 21.2.05 रिवा.

''बाप को ज्ञान का सागर कहा जाता है, योग का सागर तो नहीं कहेंगे ना।... अब बाप अते हैं तब सारी सृष्टि का कल्याण होता है। यह है भाग्यशाली रथ, इनसे कितनी सर्विस होती है।'' सा.बाबा 21.2.05 रिवा.

''यह बड़ी मंजिल है। अगर सच्ची मंजिल पानी है तो याद में रहना है। ध्यान से ज्ञान अच्छा है और ज्ञान से याद अच्छी है।... ज्ञान तो बड़ा सहज है। छोटा बच्चा भी समझा सकता है परन्तु बच्चा मैं जो हूँ, जैसा हूँ वैसे यथार्थ रीति जाने और अपने को आत्मा समझ याद थोड़ेही कर सकेंगे।'' सा.बाबा 17.6.05 रिवा.

''कहेंगे हम तो शिवबाबा को ही याद करते थे परन्तु सचमुच याद में थे ? बिल्कुल साइलेन्स में रहने से फिर यह दुनिया भी भूल जाती है। अपने को ठगना नहीं है कि हम तो शिवबाबा की याद में हैं। याद में देह के सब धर्म भूल जाने चाहिए। हमको शिवबाबा कशिश कर सारी दुनिया भुलाते हैं।... अपने को मियां मिट्ठू समझ ठगी नहीं करना है।'' सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

''बाप की याद के साथ-साथ घर की भी याद जरूर चाहिए क्योंकि अब वापस घर जाना है। घर में ही बाप को याद करना है। भल तुम जानते हो बाबा इस तन में आकर हमको सुना रहे हैं परन्तु बुद्धि परमधाम स्वीट होम से टूटनी नहीं चाहिए।... बाप तो सेकण्ड में कहां भी जा सकते हैं।'' सा.बाबा 13.8.05 रिवा.

योग के अर्थ और उसके महत्व का राज़

आत्मा का सम्बन्ध और उनकी स्नेहयुक्त स्मृति को ही योग कहा जाता है, जिससे आत्मा की शक्ति का विकास होता है। वास्तव में आत्मा का देह, भौतिक पदार्थों, आत्माओं का आत्माओं के साथ सम्बन्ध भी योग ही है परन्तु उस सबसे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, इसलिए उसको योग नहीं कहा जाता है, उसको वियोग कहा जाता है। यथार्थ योग क्या है ?

देह सहित देह के सर्व धर्म भूल अपने को आत्मा समझ एक बाप को याद करना ही यथार्थ योग है। देह सहित देह के सर्व धर्म भूल जायें और अपने बिन्दुरूप आत्मिक स्वरूप में स्थित हो एक बिन्दुरूप परमात्मा की ही याद रहे और कुछ भी याद न आये। अपने मूल स्वरूप अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित हो बिन्दु-रूप बाप की परमधाम में याद ही यथार्थ योग है, जिससे आत्मा के पाप कटते हैं। उसके बाद किसी भी रूप से परमात्मा की याद करना भी योग ही है परन्तु स्थिति नम्बरवार हो जाती है, उस अनुसार ही उसका प्रभाव होता है अर्थात् पाप कटते हैं और आत्मिक शक्ति का विकास होता है।

जीवात्मा स्थूल-सूक्ष्म इन्द्रियों से जो भी ग्रहण करता है, वह सब योग को प्रभावित करता है। उसकी स्मृति योग में आती है, इसलिए बाबा ने इन सब बातों के विषय में ज्ञान दिया है, जो जितना परहेज रखता है, उसका योग उतना ही सफल होता है।

''अभी शिवबाबा मिला है तो उनकी मत पर चलना चाहिए ना। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। कोई की भी याद न आये। चित्र भी कोई का नहीं रखना है। एक शिवबाबा की ही याद रहे।'' सा.बाबा 14.10.04 रिवा.

''इसको ही योग अग्नि कहा जाता है। यह भारत का प्राचीन राजयोग है, जो बाप ही हर 5 हजार वर्ष के बाद आकर सिखलाते हैं। बेहद का बाप ही भारत में, इस साधारण तन में आकर तुम बच्चों को यह योग सिखलाते हैं। इस याद से ही तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे।'' सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

''बच्चों की हर प्रकार की सम्भाल भी होती रहती है। बीमारी आदि में भी विकारी मित्र-सम्बन्धी आयें, यह तो अच्छा नहीं है। हम पसन्द भी नहीं करें। नहीं तो अन्तकाल वह मित्र-सम्बन्धी ही याद पड़ेंगे।... नहीं, उन्हों को बुलाना, कायदा नहीं है।... यह है होलीएस्ट ऑफ होली स्थान। पतित यहाँ ठहर न सकें।'' सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

''अपनी नसीब को बनाना अपने हाथ में है। तो अब लॉटरी के इन्तजार में नहीं रहना, इन्तजाम करते रहना। तो योग से ही एम पूरा होगा परन्तु दोनों बातों को न चाहने वाला ही निर्संकल्प होता है, उनको ही सच्चा योगी कहा जाता है।'' (दोनों की चिन्ता न हो, स्वभाविक पुरुषार्थ हो) अ.बापदादा 6.7.69

‘‘वह याद स्थाई ठहरती नहीं है। मैं आत्मा बिन्दी हूँ, बाबा भी बिन्दी है, वह हमारा बाप है।... आत्मा भी निराकार, परमात्मा भी निराकार है, इसमें फोटो की भी बात नहीं है। तुमको तो आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है और देहाभिमान छोड़ना है।’’

सा.बाबा 7.2.05 रिवा.

‘‘तुम बच्चों की याद यथार्थ है। तुम अपने को इस देह से न्यारा, आत्मा समझकर बाप को याद करते हो। तुमको कोई की भी देह की याद नहीं आनी चाहिए।... देही-अभिमानी होकर जितना बाप को याद करेंगे, उतना विकर्म विनाश होंगे। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है।’’ सा.बाबा 18.2.05 रिवा.

योग का जीवन में क्या महत्व है ?

आत्मा को पावन बनाने के लिए योग ही एकमात्र साधन है। भले कुछ आत्मायें अन्त समय सजायें खाकर पावन बनती हैं परन्तु वह कोई पुरुषार्थ नहीं है। योगबल से नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना होती है। योग से ही ज्ञान की और दैवी गुणों की धारणा होती है। भले योग के लिए भी ज्ञान की आवश्यकता होती है परन्तु ज्ञान की धारणा, ज्ञान तलवार में बल योग के द्वारा ही आता है। योग से ज्ञान के अनेक रहस्य बुद्धि में स्पष्ट होते हैं। योग से ही आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है। इस प्रकार हम देखें तो जीवन के हर क्षेत्र में योग आवश्यक है। योग विहीन होने से ही आत्मा स्वर्ग से नर्क में चली जाती है, फिर नर्क से स्वर्ग में ले जाने के लिए योग ही एकमात्र आधार है।

‘‘बाप को याद करने से ज्ञान आप ही इमर्ज हो जाता है। जो बाप को याद करता है, उनको हर कार्य में बाप की मदद मिल ही जाती है।... अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं तो वह नॉलेज ही किस काम की!... ईश्वरीय नॉलेज क्या बनायेगी ? ईश्वरीय स्थिति।’’ अ.बापदादा 24.1.70

‘‘भल बच्चे कहते हैं कि बहुत सहज है परन्तु मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा जानकर याद करते हैं!... मैं आत्मा बिन्दु हूँ और हमारा बाबा भी बिन्दी है।... मनुष्यों को यह कैसे समझायें, इस पर विचार सागर मंथन चलना चाहिए।’’ सा.बाबा 2.2.05 रिवा.

योग के विधि-विधान का राज़

योग का ज्ञान, उसके विधि-विधान का राज़ भी बाप ही बताते हैं, जिसको जानकर ही हम योग का यथार्थ अभ्यास कर सकते हैं और उसमें सफलता पा सकते हैं।

‘‘योगी वह है, जो अपनी दृष्टि से ही किसी को शान्त कर दे।... एकदम सन्नाटा हो जायेगा। जब तुम अशरीरी बन जाते हो फिर बाप की याद में रहते हो तो यही सच्ची याद है।’’ सा.बाबा 30.5.05 रिवा.

‘‘कोशिश कर अपने को आत्मा निश्चय करो तो बाप की याद भी रहेगी। देह में आने से फिर देह के सब सम्बन्ध याद आयेंगे। यह भी एक लॉ है। ... किसकी रग टूटती नहीं है। पूछते हैं - बाबा यह क्या है! अरे, तुम नाम-रूप में क्यों फँसते हो। एक तो तुम देहाभिमानी बनते हो और दूसरा फिर तुम्हारा कोई पास्ट का हिसाब-किताब है, वह धोखा देता है।’’

सा.बाबा 3.6.05 रिवा.

‘‘अगर योग नहीं लगता तो अवश्य ही इन्द्रियों द्वारा अल्पकाल के सुख प्राप्त कराने वाले और सदाकाल की प्राप्ति से वंचित कराने वाले कोई न कोई भोग भोगने में लगे हुए हैं, इसलिए अपने निजी कार्य को भूले हुए हैं। जैसे आजकल के सम्पत्ति वाले वा कलियुगी राजायें जब भोग-विलास में व्यस्त हो जाते हैं तो अपना निजी कार्य राज्य करना वा अपना अधिकार भूल जाते हैं। ऐसे ही आत्मा भी भोग भोगने में व्यस्त होने के कारण योग भूल जाती है। .. जहाँ भोग है, वहाँ योग नहीं।’’ अ.बापदादा 16.10.75

‘‘बाबा फोटो निकालने को भी मना करते हैं।... बाबा-मम्मा का चित्र देखने लग पड़ेंगे, शिवबाबा भूल जायेगा। तुम आत्माओं को तो निराकार बाप को याद करना है। इसलिए मैं फोटो आदि देखता हूँ तो फाड़ भी देता हूँ। समझते हैं यह मम्मा-बाबा के फोटो देखते रहते हैं। मरने समय अगर उनको ही देखते रहे तो दुर्गति हो जायेगी।... समझते हैं इनका शिवबाबा से योग टूटा

हुआ है, तब कहते हैं बाबा हमारे साथ फोटो निकालो। बाबा को यह फोटो आदि निकालना अच्छा नहीं लगता। कहाँ साकार में फंस कर मर न जायें।'' सा.बाबा 16.7.72 रिवा.

''तुमको नशा होना चाहिए गुप्त में बाप से हम वर्सा ले रहे हैं। कोई चित्र आदि को हम याद नहीं करते हैं। फोटो के लिए कहते हैं। मैं समझता हूँ पूरा ज्ञान नहीं उठाया है तब फोटो मांगते हैं।... कोई भी चित्र को याद नहीं करना है। शिवबाबा का फरमान है मामेकम् याद करो।... माँ की याद में शरीर छोड़ने से दुर्गति को पायेंगे।'' सा.बाबा 17.7.72 रिवा.

''बाबा आये हैं मुरली चलाकर चले जायेंगे। इनकी बुद्धि भी वहाँ रहती है।... इनमें शिवबाबा ही न होगा तो याद क्यों करेंगे।... तुम याद वहाँ करो।... ऐसे नहीं सिर्फ इनको बैठ देखना है। बाबा ने समझाया है शिवबाबा को याद कर फिर इनकी गोद में आना है। नहीं तो पाप हो जायेगा।'' सा.बाबा 12.11.73 रिवा.

योग में आंखें खोलकर अभ्यास करने का राज

बहुधा दुनिया में साधक आंखें बन्द करके ही ध्यान करते हैं परन्तु बाबा ने कहा है तुम्हारा कर्मयोग है अर्थात् तुमको कर्म करते हुए भी योगी जीवन धारण करना है और घर-गृहस्थ में रहते योगी अवस्था बनानी है। आंखें बन्द करके आत्मा कर्म नहीं कर सकती है और भविष्य नई दुनिया में जो भी प्राप्ति होने वाली है, वह अभी के कर्म पर ही आधारित है। इसलिए बाबा ने हमको आंखें खोलकर योग का अभ्यास करने की श्रीमत दी है। जब ये आदत पक्की हो जाती है तो कर्म करते भी योग की अवस्था रहती है, जिससे कर्म श्रेष्ठ होता है और श्रेष्ठ कर्म की प्रालब्ध भी श्रेष्ठ मिलती है।

दूसरी बात आंखें बन्द करके योगाभ्यास करने पर मन में अनेक प्रकार के संकल्प-विकल्प उठते हैं, जो आंखें खोलकर अभ्यास करने पर नहीं उठते हैं। भले ही आंखें खोलकर अभ्यास को पक्का करने में थोड़ा अधिक पुरुषार्थ करना होता है परन्तु वह बहुत ही हितकर है।

अपने को आत्मा समझने और दूसरे को भी आत्मिक स्वरूप में देखने से एक-दूसरे को शक्ति की अनुभूति होती है, शक्ति का आदान-प्रदान होता है, जो योग की सिद्धि में बहुत सहायक है। ये सब आंखें खोलकर अभ्यास करने पर ही सम्भव है। बाबा ने हमको अपने कल्याण के साथ औरों के कल्याण की भी श्रीमत दी है, जो हम आंखें खोलकर योगाभ्यास करने पर ही कर सकते हैं अर्थात् दूसरों को भी आत्मिक स्वरूप का अनुभव करा सकते हैं।

इस प्रकार हम देखें तो आंखें खोलकर योगाभ्यास करना ही यथार्थ योग है और योग की सिद्धि के लिए बहुत सहायक है।

राजयोग और हठयोग का अन्तर का राज़

दो प्रकार के योग का गायन है, एक है हठयोग और दूसरा है राजयोग। इन दोनों को ही भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है। हठयोग शारीरिक क्रियायें हैं अर्थात् हठयोग शरीर के साथ ही होता है जब कि राजयोग बुद्धि की क्रिया है। बुद्धि से अपने को आत्मा समझना और बुद्धि से परमात्मा को जानकर याद करना ही राजयोग है। भक्ति मार्ग में भक्ति-योग, सांख्य-योग, सन्यास-योग आदि सभी योग शरीर के साथ ही होते हैं, जो एक प्रकार के हठयोग ही हैं। हठयोग से आत्मा की कभी भी चढ़ती कला नहीं हो सकती, उतरती कला ही होती है। भले ही हठयोग में भी आत्म-कल्याण का लक्ष्य रखने से से उतरती कला की गति मन्द हो जाती है क्योंकि उसमें भी अपने कर्मों पर ध्यान रहता है। राजयोग से व्यक्तिगत आत्मा की चढ़ती कला होती और सामूहिम रूप से विश्व की भी चढ़ती कला होती है अर्थात् नये विश्व का निर्माण होता है। हठयोग से अल्पकाल के लिए शारीरिक स्वास्थ्य का लाभ होता है जबकि राजयोग से आत्मा स्वस्थ होती है और जब आत्मा स्वस्थ होती है तो शरीर भी अवश्य ही स्वस्थ होगा। इस प्रकार देखें तो दोनों ही योग एक-दूसरे के विपरीत हैं।

र्निसंकल्प समाधि - निर्विकल्प समाधि का राज़

हठयोग के मूल शास्त्र पतंजलि योग में दो प्रकार की सिद्धियां बताई गई हैं। एक निंसंकल्प समाधि और दूसरी है निर्विकल्प समाधि। ये निंसंकल्प और निर्विकल्प शब्दों का राजयोग में भी प्रयोग होता है। आत्मा की चढ़ती कला की ये दो मूल स्थितियां हैं। हर जीवात्मा का अभीष्ट लक्ष्य है सुख-शान्ति, जिसके लिए निर्विकल्प स्थिति का अभ्यास आवश्यक है परन्तु निर्विकल्प स्थिति की सिद्धि के लिए निर्संकल्प स्थिति का सफल अभ्यास परमावश्यक है। वैसे तो दोनो एक-दूसरे की पूरक स्थितियां हैं। जैसे सतयुग में जाने के लिए पहले मूलवतन जाना आवश्यक है ऐसे ही निर्विकल्प स्थिति के लिए निर्संकल्प स्थिति का सफल अभ्यास आवश्यक है। निंसंकल्प अर्थात् बीज रूप स्थिति और निर्विकल्प अर्थात् शुद्ध संकल्पों में रमण, अंशमात्र भी अशुद्ध संकल्प या व्यर्थ संकल्प न चले। जब निर्संकल्प स्थिति से आत्मिक शक्ति का विकास होता है तब ही आत्मा अशुद्ध संकल्पों, व्यर्थ संकल्पों, साधारण संकल्पों से ऊपर उठकर श्रेष्ठ संकल्पों में अर्थात् निर्विकल्प स्थिति में रहने में समर्थ होती है।

''कोई कुछ कहें तो सुना-अनसुना कर देना चाहिए।... तुमको तो कहा गया है - सारे दुनिया को भूल जाओ, अपने को आत्मा समझो। आत्मा कानों बिगर सुनेगी कैसे, अशरीरी हो जाओ। जैसे आत्मा रात को अशरीरी हो जाती है, सो जाते हैं तो कोई गला भी काट कर जाते हैं तो पता नहीं पड़ता है।... जब तक अशरीरी नहीं बने हो तब तक कुछ न कुछ माया की चोट लगती ही रहेगी।'' सा.बाबा 13.1.69

अन्तर्मुख अर्थात् निर्वाण स्थिति का राज़

वाणी से परे निर्वाण स्थिति क्या है, योग की सफलता के लिए अन्तर्मुखता कितनी आवश्यक है और अन्तर्मुखता से आत्मा को क्या-क्या लाभ होते हैं, क्या-क्या अनुभूतियां होती हैं - वह सब राज़ बाबा ने बताये हैं और उसके अभ्यास के लिए आवश्यक विधि-विधान भी बताये हैं।

''निर्वान स्थिति में स्थित होकर वाणी में आयेंगे तो वाणी में भी शब्द कम लेकिन शक्तिशाली ज्यादा होंगे।... आपके एक शब्द में हजारों शब्दों का रहस्य समाया हुआ होगा, जिससे व्यर्थ वाणी ऑटोमेटिकली समाप्त हो जायेगी।'' अ.बापदादा 26.10.71

''आप भी जितना अण्डरग्राउण्ड अर्थात् अन्तर्मुखी रहेंगे, उतना ही नई-नई इन्वेन्शन वा योजनायें निकाल सकेंगे। अण्डरग्राउण्ड रहने से एक तो वायुमण्डल से बचाव हो जायेगा, दूसरा एकान्त प्राप्त होने के कारण मनन शक्ति भी बढ़ती है और तीसरा कोई भी माया के विघ्नों से सेफ्टी का साधन बन जाता है।'' अ.बापदादा 24.6.71

''अन्तर्मुखी होकर के कार्य करने से एक तो विघ्नों से बचाव, दूसरा समय का बचाव और तीसरा संकल्पों का बचाव वा बचत हो जायेगी।... जब अमृतवेले प्रोग्राम सेट करेंगे तब ही समय की बचत और सफलता अधिक हो जायेगी।''

अ.बापदादा 24.6.71

''एक सेकेण्ड से भी कम समय में जैसी स्थिति में स्थित होना चाहें, उस स्थिति में टिक जायें। ... इस अभ्यास को सहज और निरन्तर बनाओ। ऐसे अभ्यासी अनेक आत्माओं को साक्षात्कार कराने वाले साक्षात् बापदादा दिखाई देंगे। जैसे वाणी में आना कितना सहज है, वैसे ही यह वाणी से परे जाना भी इतना ही सहज होना है।'' अ.बापदादा 18.6.71

बिन्दु अर्थात् बिन्दु रूप स्थिति का राज़

आत्मा बिन्दु है, परमात्मा भी बिन्दु है और ये विश्व-नाटक भी बिन्दु है। आध्यात्मिक पुरुषार्थ में सफलता प्राप्त करने के लिए बिन्दु का कितना महत्व है, इसकी सत्यता भी बाबा ने बताई है, जिससे हम अपने पुरुषार्थ में सहज सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आत्मा एक बिन्दु अर्थात् अणु है, अपने बिन्दुरूप में स्थित होने से आत्मा को क्या-क्या प्राप्तियां होती है, क्या अनुभूतियां होती है, इस सत्य को जानने से ही हम उसका लाभ उठा सकते हैं। बाबा भी हमको बिन्दुरूप स्थिति के अभ्यास के लिए सदा ही प्रेरित करते रहते हैं और उस स्थिति का सफल अभ्यास कैसे हो, उसके लिए युक्तियाँ बताते रहते हैं।

''समय की समीपता के प्रमाण स्व-परिवर्तन की शक्ति ऐसी तीव्र होनी चाहिए जैसे कागज के ऊपर बिन्दी लगाओ तो कितने में लगती है? सेकण्ड भी नहीं। ऐसी तीव्र गति है? ... सभी ने यादप्यार दिल से भेजा है।... बापदादा सभी को यादप्यार के साथ-साथ यही वरदान दे रहे हैं - बीती को बीती कर बिन्दी लगाये, बिन्दी बन, बिन्दु बाप को याद करो। यही सभी के याद वा समाचारों का रेस्पाण्ड बापदादा दे रहे हैं।'' अ.बापदादा 15.10.04

''जैसे आंखों में बिन्दी है ... ऐसे आत्मा वा बाप की स्मृति की बिन्दी दृष्टि-वृत्ति से गायब नहीं हो। फॉलो फादर करना है ना, तो जैसे बाप की दृष्टि-वृत्ति में हर बच्चे के लिए स्वमान है, सम्मान है, ऐसे ही अपनी दृष्टि-वृत्ति में भी हो।... जो मन में आता है कि यह बदल जाये... वह वृत्ति से बदलेंगे, बोलने से नहीं।'' अ.बापदादा 15.10.04

''अपने मन-बुद्धि को कहाँ तक एक सेकेण्ड में ब्रेक लगा सकते हो और मोड़ सकते हो?... बिन्दु रूप में स्थित रहने की कमी का कारण यही है कि पहला पाठ ही कच्चा है। कर्म करते हुए अपने को अशरीरी आत्मा महसूस करें, यह सारे दिन में बहुत प्रैक्टिस चाहिए।'' अ.बापदादा 23.7.69

''आत्मिक स्वरूप में बाबा की याद नहीं रहे, यह हो नहीं सकता है। जैसे बापदादा दोनों अलग-अलग नहीं हैं वैसे आत्मिक निश्चय बुद्धि से बाप की याद भी अलग नहीं हो सकती है। क्या एक सेकण्ड में अपने को बिन्दु रूप में स्थित कर सकते हो?''
अ.बापदादा 23.7.69

ये एक अविनाशी नियम है कि हर तत्व स्वतन्त्र होने पर अपने मूल तत्व की ओर स्वत: आकर्षित होता है। ऐसे ही जब आत्मा देहाभिमान से मुक्त अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाती है तो परमात्मा की याद स्वत: आती है, उसके लिए किसी पुरुषार्थ की आवश्यकता नहीं। इसीलिए बाबा बार-बार कहते हैं मेहनत से मुक्त हो जाओ अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाओ तो कोई मेहनत नहीं करनी होगी। सारे कार्य स्वत: सिद्ध होंगे।

''बिन्दु रूप की अवस्था में स्थित रहने से बोलने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। बिन्दु होकर बैठना कोई जड़ अवस्था नहीं है।... ऐसे बैठने से सब रसनायें आयेंगी।'' अ.बापदादा 24.7.69

''संकल्पों को ब्रेक लगाने का मुख्य साधन कौनसा है?... इस रीति जो कर्तव्य किया और जो परिणाम निकला, वह बाप को समर्पण कर स्वाहा कर दिया फिर कोई संकल्प नहीं। निमित्त बन कार्य किया और जब कार्य पूरा हुआ तो स्वाहा किया।''
अ.बापदादा 19.6.70

बिन्दु रूप स्थिति के अभ्यास का महत्व

अन्त समय बिन्दुरूप बनकर ही घर वापस जायेंगे, इसलिए अन्त मति सो गति के लिए अभी से बिन्दु रूप स्थिति में स्थित होने का अभ्यास अति आवश्यक है। अभी से बहुत समय का किया हुआ अभ्यास ही अन्त में उस स्थिति में स्थित होने में मददगार होगा।

''अभी पुरुषार्थ है विस्तार को समाने का... जिस समय बुद्धि को बहुत विस्तार में गई देखो, उसी समय यह अभ्यास करो कि इतने विस्तार को समा सकती हूँ।'' अ.बापदादा 5.4.70

''जन्म जन्मान्तर का देहाभिमान मिटाकर देही-अभिमानी बनें, इसमें बड़ी मेहनत है। कहना तो बड़ा सहज है परन्तु अपने को आत्मा समझें और बाप को बिन्दु रूप में याद करें, इसमें मेहनत है। बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा कोई मुश्किल याद कर सकते हैं।... आत्मा-परमात्मा दोनों एक जैसे बिन्दु हैं।'' सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

''कितना भी कोई कार्य में बुद्धि विस्तार में गई हुई हो लेकिन विस्तार को एक सेकेण्ड में समाने की शक्ति नहीं है, क्या ऐसे बोल वा यह संकल्प ऐसे मालिक के हो सकते हैं?... बाप के सामने बच्चा आकर कहे कि बाबा हमको मदद करना, शक्ति देना, सहारा देना, इसको क्या कहा जाता है। क्या इसको रॉयल भिखारीपन नहीं कहेंगे ?'' अ.बापदादा 23.6.73

‘‘एक सेकेण्ड में चोला धारण करें और एक सेकेण्ड में न्यारे हो जायें, जब यह प्रैक्टिस पक्की हो जायेगी, फिर यह कर्मभोग समाप्त हो जायेगा। जैसे इन्जेक्शन लगाकर दर्द को खत्म कर देते हैं।... उस अवस्था के बीच कोई भी कर्मभोग की भासना नहीं रहेगी।’’ अ.बापदादा 22.11.72

‘‘ऐसे बुद्धि को जब चाहो, जितना समय चाहो, जहाँ स्थित करना चहो, वहाँ स्थित नहीं कर सकते हो?... इस कला से ही अन्य सर्व कलायें स्वत: ही आ जाती हैं।’’ अ.बापदादा 12.11.72

‘‘देही-अभिमानी स्थिति सर्व विकारों को सहज ही शान्त कर देती है।... बापदादा अचानक डायरेक्शन दें कि इस शरीर रूपी घर को छोड़कर इस देह-अभिमान की स्थिति को छोड़ देही-अभिमानी बन जाओ, इस दुनिया से अपने स्वीटहोम में चले जाओ तो कर सकेंगे? ... युद्ध करते ही तो समय नहीं बिता देंगे ?’’ अ.बापदादा 12.11.72

‘‘जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियों का मालिक बन जब और जैसे चाहो कार्य में लगा सकते हो, वैसे ही संकल्प को वा बुद्धि को जब और जहाँ लगाने चाहो, वहां लगा सकते हो?... पढ़ाई का लास्ट पाठ कौनसा है और फर्स्ट पाठ कौनसा है? फर्स्ट पाठ और लास्ट पाठ यही अभ्यास है।... यह है बुद्धि की ड्रिल।’’ अ.बापदादा 18.6.71

‘‘योद्धे जो युद्ध के मैदान में रहते हैं, उनको जब भी और जैसा आर्डर मिलता है, वैसे ही करते जाते हैं। ऐसे ही रुहानी वारियर्स को भी जब और जैसा डायरेक्शन मिले, वैसे ही अपनी स्थिति को स्थित कर सकते हैं?... एक सेकण्ड से भी कम समय में जैसी स्थिति में स्थित होना चाहें, उस स्थिति में टिक जायें।’’ अ.बापदादा 18.6.71

बिन्दु रूप स्थिति और अव्यक्त स्थिति का राज़

बिन्दुरूप स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है, इसका ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है। ज्ञान मार्ग में सफलता प्राप्त करने के लिए दोनों ही परमावश्यक हैं और दोनों एक-दूसरे की पूरक हैं। जैसे परमात्मा के निराकार और साकार रूप का महत्व है, ऐसे ही योग की सफलता के लिए इन दोनों स्थितियों का भी महत्व है। दोनों के गुण-धर्मों में भी अन्तर है। इसके यथार्थ राज़ को समझेंगे तब ही हम उस रूप से याद कर अपने जीवन को सम्पूर्ण बना सकेंगे। बिन्दुरूप स्थिति है बीजरूप स्थिति विकर्म विनाश करने की स्थिति और अव्यक्त स्थिति अर्थात् फरिश्ता स्थिति है दैवी गुणों की धारणा करने की स्थिति।

‘‘विस्तार करना और विस्तार में जाना आता है लेकिन विस्तार को जब चाहें तब समेटना और समा लेना - यह प्रैक्टिस कम है। ज्ञान के विस्तार में जाना जानते हो लेकिन ज्ञान के विस्तार को समाकर ज्ञान स्वरूप बन जाना, बीजरूप बन जाना - यह प्रैक्टिस कम है।’’ अ.बापदादा 18.6.70

‘‘अव्यक्त स्थिति में सर्व संकल्प स्वत: सिद्ध हो जाते हैं।... अव्यक्त मूर्त को सामने देख समान बनने का प्रयत्न करना है। जैसा बाप वैसे बच्चे।... बिन्दु रूप में तब टिक सकेंगे जब पहले शुद्ध संकल्प का अभ्यास होगा।... एक्सीडेण्ट के समय ब्रेक नहीं लगती तो मोड़ना होता है। बिन्दु रूप है ब्रेक, शुद्ध संकल्पों से अशुद्ध संकल्पों को हटाना है मोड़ना।’’

अ.बापदादा 7.6.70 पार्टियों के साथ

‘‘बापदादा से मुलाकात करते समय बिन्दु रूप की स्थिति में स्थित रह सकते हो?... बिन्दुरूप स्थिति जब एकान्त में बैठते हो तब हो सकती या चलते-फिरते भी हो सकती है? अन्तिम पुरुषार्थ याद का ही है। इसलिए याद की स्टेज वा अनुभव को भी बुद्धि में स्पष्ट समझना आवश्यक है।’’ अ.बापदादा 24.7.70

‘‘बिन्दुरूप स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है, दोनों का अनुभव क्या-क्या है? क्योंकि जब नाम दो कहते हैं तो जरूर दोनों के अनुभव में भी अन्तर होगा।... फरिश्ता रूप की स्थिति अर्थात् अव्यक्त स्थिति जिसकी सदाकाल रहती है, वह बिन्दुरूप में भी सहज स्थित हो सकेगा।... कार्य करते बीच-बीच में समय निकालकर इस फाइनल स्टेज अर्थात बिन्दुरूप का पुरुषार्थ करना चाहिए।’’ अ.बापदादा 24.7.70

''जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी हैं तो भी अव्यक्त रूप के अव्यक्त देश के अव्यक्त प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को भी अनुभव कराने के लिए आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपनी अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ।''

अ.बापदादा 24.1.70

''अच्छा सारे दिन में अव्यक्त स्थिति कितना समय रहती है? बिन्दु रूप के लिए नहीं पूछते हैं, अव्यक्त स्थिति कितना समय रहती है? ... अव्यक्त स्थिति के लिए कह रहे हैं। अव्यक्त स्थिति आठ घण्टा बनाना बड़ी बात नहीं है। अव्यक्त की स्मृति अर्थात् अव्यक्त स्थिति। ... गीत है ना - न वो हम से जुदा होंगे ...। जब जुदा ही नहीं होंगे तो स्नेह दिल से कैसे निकलेगा।''

अ.बापदादा 18.6.70

''किसके संकल्पों को रीड करना - यह भी एक सम्पूर्णता की निशानी है। जितना-जितना अव्यक्त भाव में स्थित होंगे, उतना हर एक के भाव को सहज समझ जायेंगे। ... अव्यक्त स्थिति रूपी दर्पण को साफ और स्पष्ट करने के लिए तीन बातें सरलता, श्रेष्ठता और सहनशीलता की आवश्यकता है।'' अ.बापदादा 7.06.70

''जिनके व्यर्थ संकल्प नहीं चलते वे अपनी अव्यक्त स्थिति को ज्यादा बढ़ा सकते हैं। शुद्ध संकल्प भी चलने चाहिए लेकिन उनको भी कन्ट्रोल करने की शक्ति होनी चाहिए।... व्यक्त में अव्यक्त स्थिति का अनुभव क्या होता है, वह सभी को प्रैक्टिकल में पाठ पढ़ाना है।'' अ.बापदादा 23.1.70

विभिन्न प्रकार के योग और उनका राजयोग से सम्बन्ध का राज़ /
कर्मयोग, ज्ञान योग, भक्ति योग, सांख्य योग का राज़

योग तो एक ही है लेकिन उस योग की भिन्न-भिन्न स्थितियां हैं, जिनको भिन्न नामों से जाना जाता है।

ज्ञानयोग मार्ग

विश्व-नाटक की यथार्थता को समझकर जो आत्मा साक्षी होकर अपनी स्वस्थिति में स्थित होकर परमात्मा की याद में इस विश्व-नाटक को देखती और पार्ट बजाती है, उसके सारे कार्य समय और आवश्यकता अनुसार स्वत: सिद्ध होते हैं।

''ज्ञान तो बहुत ढेर चाहिए। बहुत रिफाइननेस आनी है। अभी तो कोई का योग बड़ा मुश्किल लगता है। योग के साथ नॉलेज भी चाहिए। ऐसे नहीं कि सिर्फ योग में रहना है। योग में नॉलेज जरूर चाहिए।'' सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

''ये सब बातें तुम्हारी बुद्धि में चलनी चाहिए।... तुम्हारी बुद्धि में ये सब बातें आनी चाहिए। तुम कितना ऊंच कार्य कर रहे हो। तुम सारे विश्व को पावन बना रहे हो।... तुम बच्चों को सदैव ज्ञान का सुमिरन कर हर्षित रहना चाहिए।... बाप की याद के साथ नॉलेज भी चाहिए।'' सा.बाबा 12.11.04 रिवा.

''जब चाहें तब मुख से बोलें, जब चाहें तब मुख को बन्द कर दें।... अगर इस बात का अभ्यास मजबूत होगा तो अपनी स्थिति भी मजबूत बना सकेंगे।'' अ.बापदादा 18.6.70

''व्यर्थ संकल्प व विकल्प जो चलते हैं तो एक ही शब्द बुद्धि में आता है कि यह क्यों हुआ। क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यू शुरू हो जाती है। इस क्यू की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी, फिर वह (सेवा की) क्यू लगेगी। जब क्यों शब्द निकलेगा फिर ड्रामा की भावी पर एकरस स्थीरियम रहेंगे।'' अ.बापदादा 5.3.70

''जब अपने अन्दर आसुरी संस्कारों और आसुरी संकल्पों का पहरा मजबूत होगा तब... फिर यह पाण्डव भवन एक जादू का घर बन जायेगा। कोई कैसी आत्मा आयेगी तो आते ही अपने आसुरी संस्कारों और व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो जायेंगे।''

अ.बापदादा 5.03.70

''जैसे कि किसी का बुद्धि का योग है लेकिन उसका कर्मयोग नहीं है या फिर किसी का कर्मयोग है तो वह सहजयोगी नहीं या जो ज्ञान में सदा नहीं रहता तो उसको ज्ञानयोगी नहीं कहेंगे। यहाँ भी एक ही टाइटल मिलेगा तो आप जो योग की महिमा औरों को सुनाते हो, तो वह स्वयं में धारण करो।'' अ.बापदादा 24.6.74

निष्काम कर्मयोग मार्ग

कर्म सिद्धान्त को समझकर स्वस्थिति में स्थित होकर जो आत्मा परमात्मा की मधुर याद में स्थित होकर कर्म करता है या करने का पुरुषार्थ करता है, उसका जीवन सदा सुखमय होता है। निष्काम कर्मयोग अर्थात् कर्म करते भी कर्म के फल की कामना न रखना। कर्म का अटल सिद्धान्त है कि हर आत्मा को अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है तो फिर उसकी कामना क्यों रखें। कर्म करने के लिए हर आत्मा स्वतन्त्र है और फल प्रकृति और परमात्मा के हाथ में है अर्थात् प्रकृति से उसके कर्म का फल अवश्य मिलता है। ये अटल निश्चय रख परमात्मा की याद के साथ सदा श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त रहना ही निष्काम कर्मयोग मार्ग है।

''वह दे तब मैं दूँ, यह भिखारीपन के संस्कार हैं। दाता के बच्चे कभी लेने का हाथ नहीं फैलाते। बुद्धि से भी यह संकल्प करना कि यह करे तो मैं करूँ, यह स्नेह दे तो मैं दूँ, यह मान दे तो मैं दूँ। यह भी हाथ फैलाना है। यह भी रॉयल भिखारीपन है। इसमें निष्काम योगी बनो।'' अ.बापदादा 16.2.86

''जिस सूरत द्वारा बाप के गुणों और कर्तव्यों की रूपरेखा दिखाई दे, इसको कहा जाता है - फॉलो फादर।... जो कर्म याद में रहकर करते हैं, वे कर्म यादगार बन जाते हैं।... क्या कर्मयोगी को कर्म आकर्षित करता है या योगी अपनी योगशक्ति से कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराता है।'' अ.बापदादा 30.6.73

''कर्मयोगी - कर्म के बिना तो एक सेकण्ड भी रह नहीं सकते। कर्म-इन्द्रियों का आधार लेने का अर्थ ही है - निरन्तर कर्म करना। तो जैसे कर्म के बिना नहीं रह सकते, वैसे याद अर्थात् योग के बिना भी एक सेकेण्ड रह नहीं सकते।... बुद्धि को नेचुरल याद कर अभ्यास होना चाहिए।'' अ.बापदादा16.10.75

राजयोग मार्ग

जो आत्मा स्वयं को, परमात्मा को और सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त के राज़ को जानकर परमात्मा के प्रति अटूट श्रृद्धा-भावना रखकर परिवार में रहते हुए परमात्मा की मधुर याद में रहना, उनकी श्रीमत का पालन करता है, उसको परमात्मा की मदद अवश्य मिलती है और उसका जीवन सदा सुखमय होता है। परमात्मा उसके सारे कार्य सिद्ध करता है अर्थात् उसके सारे कार्य स्वत: सिद्ध होते हैं। राजयोग अर्थात् साक्षी होकर इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाना और ट्रस्टी बनकर कर्म करना ही राजयोग है।

''खुशी का दीपक सदैव जगा रहे, उसके लिए दो बातें ध्यान में रखनी है। एक ज्ञान-घृत और दूसरा योग की बत्ती। अगर ये दोनों बातें ठीक हैं तो खुशी का दीपक अविनाशी रहेगा, कभी बुझेगा नहीं।'' अ.बापदादा 23.1.70

''योगबल और ज्ञानबल दोनों इकट्ठा होता है। अभी ज्ञान बल से सर्विस हो रही है, योगबल गुप्त है। लेकिन जितना-जितना ज्ञानबल और योगबल दोनों समानता में लायेंगे, उतनी-उतनी सफलता होगी।'' अ.बापदादा 23.1.70

''कर्म के वश होकर चलने वाले 'कर्मभोगी'। जो कर्मभोग के वश हो जाते हैं अर्थात् कर्म के भोग भोगने में अच्छे वा बुरे में कर्म के वशीभूत हो जाते हैं।... यह राजाओं का राजा बनने का योग है। आप सभी राजयोगी हो या राजाई भविष्य में प्राप्त करनी है? अभी संगमयुग में भी राजा हो या सिर्फ भविष्य में बनने वाले हो? जो संगमयुग में राज्य पद नहीं पा सकते, वे भविष्य में क्या पा सकते हैं।'' अ.बापदादा 30.6.73

सांख्य योग

सांख्य योग हठयोग की ही एक पद्यति है, जिसको तत्व योग भी कहा जाता है।

राजयोग, हठयोग, राजऋषि, ब्रह्मऋषि, राजयोगी, हठयोगी का राज़

इन सब शब्दों का सार दो ही शब्दों में आ जाता है, वे शब्द हैं - राजयोग और हठयोग। ये सब शब्द इन दो शब्दों के ही पर्यायवाची हैं।

''इसको कहा जाता है राजा बनने की पढ़ाई। राजयोग है ना। राजाई प्राप्त करने के लिए बाप से योग। और कोई मनुष्य यह राजयोग सिखला न सके। परमात्मा तुम आत्माओं को राजयोग सिखलाते हैं, फिर तुम औरों को सिखलाते हो।''

सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

''अभी ऐसा अभ्यास करो कि बुद्धि को जहाँ लगाना चाहें, वहाँ स्थित हो जाये। संकल्प किया और स्थित हुआ। यह रुहानी ड्रिल सदैव बुद्धि द्वारा करते रहो।... इसको कहा जाता है - संकल्प शक्ति को कन्ट्रोल करना।... वे हठयोगी हठ से करते और आप अधिकार से करते हो।'' अ.बापदादा16.10.75

''जैसे 'मधुबन'शब्द दो बातों को सिद्ध करता है - एक मधुरता को और दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति को, ऐसे ही राज-ऋषि शब्द है जिसका अर्थ है - राज्य करने वाले। तो राजऋषि हैं - 'बेगर टू प्रिन्स'। जितना ही अधिकार उतना ही सर्वत्याग। सर्व त्यागी अर्थात् समय के ऊपर, संकल्प के ऊपर, स्वभाव और संस्कार के ऊपर अधिकार प्राप्त करने वाले।''

अ.बापदादा 29.1.75

राजयोग और हठयोग, दोनों की समानताओं और असमानताओं का राज़ / रुहानी ड्रिल का राज़ और अभ्यास

जैसे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए शारीरिक एक्सरसाइज आवश्यक है, ऐसे ही रूह को शक्तिशाली बनाने के लिए रुहानी एक्सरसाइज आवश्यक है। रुहानी एक्सरसाइज क्या है और उसका कैसे अभ्यास करना चाहिए, यह सब राज़ भी बाप ही बताते हैं, जो अभी बताया है और उसका प्रैक्टिकल अभ्यास भी कराया है। ज्ञान का चिन्तन भी एक एक्सरसाइज है, जो ज्ञान को प्रशस्त करती है। कार्य करते हुए बीच-बीच में समय निकालकर अपने मन-बुद्धि को किसी एक स्थिति में टिकाने का अभ्यास करने से आत्मिक शक्ति का विकास होता है, आत्मा शक्तिशाली बनती है। यह रुहानी ड्रिल कार्य करते हुए बीच-बीच में कई बार करना चाहिए, जिससे आत्मा शक्तिशाली बनती है।

''रुहानी ड्रिल अर्थात् रूह को जहाँ चाहें, जैसे चाहें, जब चाहें तब वहाँ स्थित कर सकें।... प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जो एक सेकण्ड में अपनी स्थिति को जहाँ चाहो वहाँ टिका सको।'' अ.बापदादा23.10.70

योग की सफलता के लिए योगाभ्यास अर्थात् आध्यात्मिक ड्रिल का ज्ञान

योग में मनवांछित सफलता प्राप्त करने के लिए परमात्मा के बताये हुए विधि-विधान पर चलना और उस अनुसार अभ्यास करना अति आवश्यक है। रुहानी ड्रिल का अभ्यास कैसे करें, वह भी परमात्मा ने अभी बताया है। अपनी दिनचर्य में कार्य व्यवहार में रहते बीच-बीच में समय निकाल कर मन-बुद्धि को एकाग्र करना। ट्रेफिक कन्ट्रोल की विधि भी उसका का ही एक अंग है। ये अभ्यास जितना अधिक समय और अधिक बार करेंगे, उतनी योग में सफलता होगी अर्थात् आत्मिक शक्ति का विकास होगा, सुख-शान्ति, आनन्द की अनुभूति होगी।

''तो निरन्तर कर्म करते हुए भी सहज योगयगक्त बनने के लिए सदैव कमल आसन अर्थात् अपनी स्थिति कमल पुष्प के समान रखेंगे तो निरन्तर योगयुक्त बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 3.06.71

''अच्छा अभी सभी एक सेकेण्ड में, एक मिनट नहीं, एक सेकण्ड में 'मैं फरिश्ता सो देवता हूँ' - यह मन्सा ड्रिल सेकेण्ड में अनुभव करो। ऐसी ड्रिल दिन में बार-बार करो।... यह मन की ड्रिल मन को शक्तिशाली बनाने वाली है। मैं फरिश्ता हूँ, इस पुरानी दुनिया, पुरानी देह, पुराने देह के संस्कार से न्यारी फरिश्ता आत्मा हूँ।'' अ.बापदादा 2-11-04

ऐसे ही बाबा कहते हैं एक सेकेण्ड में निराकारी, एक सेकेण्ड में आकारी और एक सेकेण्ड में साकारी स्थिति का अभ्यास करो। कर्म करते भी इस अभ्यास के लिए समय अवश्य निकालो।

''अभी एक सेकेण्ड में मन के मालिक बनकर मन को जितना समय चाहे, उतना समय एकाग्र कर सकते हो ? कर सकते हो ? अभी यह रुहानी एक्सरसाइज करो। बिल्कुल मन की एकाग्रता हो, संकल्प में भी हलचल नहीं, अचल।''

अ.बापदादा 20.3.04

''एक सेकण्ड में अपना पूर्वज और पूज्य स्वरूप इमर्ज कर सकते हो ?... तो एक सेकेण्ड में सभी और संकल्प समाप्त कर अपने पूर्वज और पूज्य स्वरूप में स्थित हो जाओ।'' अ.बापदादा 17.2.04

''अगर आवाज से परे निराकार स्वरूप में स्थित हो फिर साकार में आयेंगे तो फिर औरों को भी उस अवस्था में लायेंगे। एक सेकेण्ड में निराकार और एक सेकेण्ड में साकार - ऐसी ड्रिल सीखनी है। जब ऐसी अवस्था हो जायेगी तब साकार रूप में हर एक को निराकार रूप का आपसे साक्षात्कार होगा।'' अ.बापदादा 15.9.69

''पहला पाठ ही पालिश है, उसकी बहुत आवश्यकता है। सारे दिन में यह आत्मिक दृष्टि, स्मृति कितना रहती है। इस स्थिति की परख अपनी सर्विस की रिजल्ट से भी देख सकते हो।... सभी से छोटा रूप बाप है और आप सभी का भी है। जीरो को याद करेंगे तो हीरो बनेंगे।'' अ.बापदादा 19.7.69

''मन को यह ड्रिल करानी है। एक सेकण्ड में आवाज में, एक सेकण्ड में आवाज से परे। एक सेकण्ड में सर्विस के संकल्प में आयें और एक सेकण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायें। इस ड्रिल की बहुत आवश्यकता है।''

अ.बापदादा16.10.69

''आत्माभिमानी होंगे तो बाप की याद आयेगी। अगर देहाभिमानी होंगे तो लौकिक सम्बन्धी याद आयेंगे।... अभी संगमयुग पर ही तुम बच्चों को आत्माभिमानी बनाया जाता है।'' सा.बाबा 06.06.05 रिवा.

''देह सहित देह के ... मामेकम् याद करो। अपनी देह में भी न फंसो। किसकी देह में भी फंसने से गिर पड़ते हैं। जैसे मम्मा से प्यार था तो मम्मा के जाने से कितने मर पड़े।... बाप तो कहते हैं तुम इन ब्रह्मा के शरीर को भी याद नहीं करो। शरीर के भान में आने से पूरा ज्ञान उठा नहीं सकेंगे... विकर्माजीत कैसे बनेंगे। योग में रहें तो पाप भी न करें। नहीं तो उस पाप का सौगुणा दण्ड हो जाता है।'' सा.बाबा 25.11.72 रिवा.

एकान्त और एकाग्रता का राज़

योग की सफलता और ज्ञान के रहस्यों को समझने के लिए एकान्त और एकाग्रता का बहुत महत्व है। एकान्त अर्थात् शान्त का स्थान (lonly place) और एकान्त अर्थात् एक के अन्त में खो जाना। दोनों का ही विशेष महत्व है और आध्यात्मिक जीवन की सफलता के अति आवश्यक हैं। एकाग्रता अर्थात् सब तरफ से बुद्धि को समेट कर एक बाप की याद में एकाग्र हो जाना या एक बाप की मधुर याद से बुद्धि सब तरफ से हटाकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना या किसी ज्ञान की प्वाइन्ट के मनन-चिन्तन बुद्धि का एकाग्र हो जाना और सब तरफ से बुद्धि का हट जाना। ऐसी एकाग्रता में स्थित होने से आत्मा को अनेक दिव्य शक्तियां प्राप्त होती है और ज्ञान के अनेक गुह्य राज़ स्पष्ट होते हैं। एकाग्रता के आधार पर प्रभु-प्यार की गहन अनुभूति होती है और आत्मा सर्व गुणों और शक्तियों से परिपूर्ण होती है। ये स्थिति नेचुरल रहे, इसके लिए एकान्त में इस अभ्यास को करने की बहुत आवश्यकता है। एकान्त में एकाग्रता का अभ्यास सहज होता है और एकाग्रता के अभ्यास वाले को एकान्त स्वभाविक अच्छी लगती है। इसलिए एकान्त और एकाग्रता का बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है।

हठयोगी भी अपने योग की सफलता के किसी एक प्वाइन्ट, दीप-शिखा, भृकुटी, नासिका के अग्रभाग आदि पर अपनी दृष्टि को एकाग्र करते हैं। भक्त अपने आराध्य या इष्टदेव की मूर्ति पर अपने मन-बुद्धि को स्थिर करते हैं। परमात्मा ने बताया कि तुमको अपने योग की सिद्धि और ज्ञान के गुह्य रहस्यों को समझने के लिए अपनी मन-बुद्धि को एक परमात्मा के स्वरूप, गुणों, कर्तव्यों में सकाग्र करना है। इस योगी जीवन की सफलता के लिए एकान्त और एकाग्रता के लिए विशेष ध्यान देना है।

‘‘कहा जाये कि एक सेकण्ड में साकारी से निराकारी बन जाओ तो बन सकेंगे?... प्रश्न का उत्तर देने वाले कौन हैं? वह तो बहुत नाम सुनाये, फिर प्रश्न-उत्तर से पार जाने वाले कौन हैं?... बाप समान भी बनना है और प्रजा भी बनानी है।’’

अ.बापदादा 20.10.69

‘‘मुख्य दो बातें याद रखना है - एक तो मणि को देखना है, देह रूपी सांप को नहीं देखना है और दूसरी बात अपने को अवतरित समझो। इस शरीर में अवतरित होकर कार्य करना है और एक स्लोगन याद रखना है कि बापदादा जो कहेंगे, जो करायेंगे, जैसे चलायेंगे, वैसे ही करेंगे, चलेंगे, बोलेंगे, देखेंगे।’’ अ.बापदादा 16.10.69

‘‘एकान्तप्रिय वह होगा जिसका अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ होगा और एक का प्रिय होगा। एकान्तप्रिय होने के कारण एक की याद में रह सकता।... एक के सिवाए दूसरा न कोई। जो ऐसी स्थिति वाला होगा, वह एकान्तप्रिय हो सकता है।’’

अ. बापदादा 25.10.69

‘‘हरेक के मस्तक की मणि की चमक बापदादा देखते हैं। ऐसे ही अगर आप सभी भी मस्तक की मणि को ही देखते रहो तो फिर यह दृष्टि और वृत्ति शुद्ध सतोप्रधान बन जायेगी। दृष्टि चंचल होती है, उसका मूल कारण यह है। मस्तक की मणि को न देख शारीरिक रूप को देखते हो।’’ अ.बापदादा 16.10.69

‘‘मस्तक की मणि को न देख जब रूप को देखते हो तो ऐसे ही समझो कि सांप को देख रहे हैं।... सांप को देखा और सांप ने काटा। सांप तो अपना कार्य करेगा ही। सांप में विष होता है।’ अ.बापदादा 16.10.69

‘‘मणि को देखने से सांप का जो विष है, वह हल्का हो जायेगा। अगर शरीर रूपी सांप को देखा तो फिर उसके बन जायेंगे और मणि को देखेंगे तो बापदादा की माला के मणि बन जायेंगे।... बापदादा से तो बहुत प्रतिज्ञायें कीं लेकिन आज अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि अब से लेकर सिवाए मणि के और कुछ नहीं देखेंगे और बाप की माला के मणि बनकर सारे सृष्टि के बीच चमकेंगे।’’ अ.बापदादा 16.10.69

‘‘एकाग्रता की शक्ति, मालिकपन की शक्ति सहज निर्विघ्न बना देती है, युद्ध नहीं करनी पड़ती है। एकाग्रता की शक्ति से स्वत: एक बाप दूसरा न कोई - यह अनुभूति होती है।... एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही एकरस फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति होती है।’’ अ.बापदादा 15.11.03

‘‘अव्यक्त स्थिति में रहकर फिर व्यक्त भाव में आओ... परन्तु यह तब होगा जब एकान्त में बैठ अन्तर्मुख अवस्था में रह अपनी चेकिंग करेंगे, इसका अभ्यास करेंगे।... जितना सर्विस का ध्यान है, उतना ही इस अभ्यास का भी ध्यान रहे।’’

सा.बाबा 18.01.69

‘‘एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही सर्व के प्रति स्नेह, कल्याण, सम्मान की वृत्ति रहती ही है क्योंकि एकाग्रता अर्थात् स्वमान की स्थिति। फरिश्ता स्थिति स्वमान है।’’ अ.बापदादा 15.11.03

‘‘सन्यासी भी एकान्त में चले जाते हैं। सतोप्रधान सन्यासी जो थे, वे बहुत निडर रहते थे।... सन्यासी जो सतोप्रधान थे, वे ब्रह्म की मस्ती में मस्त रहते थे, उनमें बड़ी कशिश होती थी।... ब्रह्म ज्ञानियों के श्वांस भी सुखाले हो जाते हैं, ब्रह्म की ही याद में रहते हैं।’’ सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

‘‘एकता और एकान्तवासी दोनों की बहुत आवश्यकता है। एकान्त के आनन्द के अनुभवी बन जायें तो बाहरमुखता अच्छी नहीं लगेगी।... अव्यक्त स्थिति को बढ़ाने के लिये इनकी बहुत आवश्यकता है। इसलिए एकान्त में ज्यादा रुचि रखनी है।’’

अ.बापदादा 16.6.69

‘‘एकता के साथ एकान्तप्रिय बनना है। ... एकता के साथ एकान्तवासी कैसे बनें, यह भी अपने में भरना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिसका अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ होगा और एक का प्रिय होगा। एकान्तप्रिय होने के कारण एक की याद में रह सकता।... एक के सिवाए दूसरा न कोई। जो ऐसी स्थिति वाला होगा, वह एकान्तप्रिय हो सकता है।’’

अ.बापदादा 25.10.69

''आप तो संकल्प को भी जज कर सकते हो। ऐसे जस्टिस जो अपने और दूसरी आत्माओं के भी संकल्प को जज कर सकें व परख सकें। ऐसे बन गये हो? ऐसा जस्टिस कौन बन सकता है, जिसकी बुद्धि का काँटा एकाग्र हो।... बुद्धि निर्विकल्प हो, जिसके बोल और कर्म में लव और लॉ हो तथा स्नेह और शक्ति में बैलेन्स हो।'' अ.बापदादा 21.7.73

''हम आत्मा छोटी सी बिन्दी हैं, हमारा बाप भी बिन्दी है, वह इस ड्रामा का मुख्य एक्टर है।... आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट अविनाशी नूँधा हुआ है। ये बहुत नई-नई बातें हैं। एकान्त में बैठकर अपने साथ ऐसी-ऐसी बातें करनी हैं।''

सा.बाबा 26.5.05 रिवा.

''अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर फिर व्यक्त भाव में आओ... परन्तु यह तब होगा जब एकान्त में बैठे अन्तर्मुख अवस्था में रहकर अपनी चेकिंग करेंगे, इसका अभ्यास करेंगे।... जितना सर्विस का ध्यान है, उतना ही इस अभ्यास का भी ध्यान रहे।''

सा.बाबा 18.1.69

''अन्तर्मुखी और एकान्तवासी के महत्व को जानने वाले को समय स्वत: ही मिल जाता है।... बीच-बीच में एक पॉवरफुल स्थिति में अपने मन को, बुद्धि को स्थित करना ही एकान्तवासी बनना है। जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा।... सुनते-सुनते एकान्तवासी बन जाते थे।'' अ.बापदादा 18.11.87

स्मृति और विस्मृति का राज

इस जगत का सारा खेल ही स्मृति और विस्मृति का है। परन्तु यहाँ स्मृति और विस्मृति का आशय उन स्मृतियों और विस्मृतियों से जो आत्मा उत्थान और पतन से सम्बन्धित हैं। स्मृति आत्मा के सुख का आधार है और विस्मृति दुख का मूल कारण है। स्मृति अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप की स्मृति, परमात्मा पिता की स्मृति, अपने मूल घर परमधाम की स्मृति, भविष्य दैवी स्वरूप की स्मृति, परमात्मा के गुण-कर्तव्यों की स्मृति, विश्व-नाटक के ज्ञान, उसके विधि-विधान की स्मृति आदि आदि। ये सभी स्मृतियां आत्मा के कल्याण का आधार हैं। ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी हमको इन सभी बातों का ज्ञान दिया है और ये सभी स्मृतियां दिलाई हैं, जिनके ज्ञान और उनकी सदा स्मृति के आधार पर ही आत्मा की चढ़ती कला होती है। देखा जाये तो सतयुग के आदि में लक्ष्मी-नारायण और वहाँ की सर्व आत्मायें सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण होते हुए भी उनकी उतरती कला ही होती है क्योंकि यथार्थ ज्ञान की ये सब स्मृतियां विस्मृत हो जाती हैं। अभी संगमयुग पर परमात्मा से जब ज्ञान मिलता है तब आत्मा कलाहीन होती है परन्तु ज्ञान मिलने से वे स्मृतियां जाग्रत होती हैं, जिससे उन स्मृतियों और परमात्मा की स्मृति से आत्मा की चढ़ती कला होती है।

वास्तव में एक परमात्मा को छोड़कर न किसी व्यक्ति की महिमा है। इस विश्व-नाटक में किसी की ग्लानि या दोष भी नहीं है। कोई भी आत्मा किसके सुख-दुख का निमित्त भी ड्रामा और उसके अपने कर्मों अनुसार ही बनता है, कर्म भी ड्रामा अनुसार ही होता है। कोई भी किसके सुख-दुख का निमित्त बनता है तो जब तक उसकी स्मृति रहती है तब तक ही उसकी महिमा या ग्लानि करते हैं। स्मृति-विस्मृति के आधार पर आज जिसकी महिमा करते हैं, कल उसकी ही ग्लानि करने लग पड़ते हैं।

''सारी सृष्टि में सबसे प्रिय वस्तु वही है तो उनकी याद भी स्वत: ही रहनी चाहिए। फिर उनकी याद भूलते क्यों हो? जरूर और कुछ याद आता होगा। कोई भी बात बिना कारण के नहीं होती। विस्मृति का भी कारण है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''जब अविनाशी आत्मिक स्थिति में रहेंगे तब ही अविनाशी सुख की प्राप्ति होगी। आत्मा अविनाशी है ना। अव्यक्त आनन्द, अव्यक्त शक्ति ... सदैव वरदाता की याद में रहने से यह वरदान अविनाशी रहेगा।... सारी सृष्टि में सबसे प्रिय वस्तु वही है तो उनकी याद भी स्वत: ही रहनी चाहिए।'' अ.बापदादा 24.1.70

''हमारा हर कर्म सुखदायी हो, यह है ब्राह्मण कुल की रीति।... अगर याद भूल जाते हैं तो बुद्धि कहाँ रहती है? एक तरफ से भूलते हैं तो दूसरे तरफ लगेगी ना। अपने को चेक करो कि अव्यक्त स्थिति से नीचे आते हैं तो किस व्यक्त तरफ बुद्धि जाती है। जरूर कुछ रहा है तब बुद्धि वहाँ जाती है।'' अ.बापदादा 25.1.70

''स्मृति को छोड़ेंगे ही नहीं तो विस्मृति कहाँ से आयेगी। सूर्यास्त हो जाता है तब अंधियारा हो जाता है। सूर्यास्त ही न हो तो अंधियारा कैसे आये। वैसे ही अगर स्मृति का सूर्य सदा कायम रखेंगे तो विस्मृति का अंधियारा आ नहीं सकता।''

अ.बापदादा 20.10.69

''सिर्फ भाग्यशाली बनने से भी मायाजीत नहीं बन सकेंगे। भाग्यशाली के साथ-साथ शक्तिशाली भी बनना है।... सदाकाल शक्तिशाली स्थिति में, स्मृति में स्थित नहीं होते तब हार होती है। जहाँ स्मृति है, वहाँ विस्मृति का आना असम्भव है।''

अ.बापदादा 21.6.72

''बलिहार जाने वाले की हार नहीं होती है। स्मृति समर्थी को लाती है और समर्थी में आने से ही कार्य सफल होते हैं। अथवा जो सुनाया - खुशी, मस्ती, नशा वा निशाना सभी हो जाता है।'' अ.बापदादा 27.2.72

''कल्प पहले भी पास किया था ... यह नहीं समझते कि अगर अनेक बार यह अनुभव नहीं किया होता तो आज इतने समीप कैसे आये। ... यह स्मृति स्पष्ट और सरल रूप में रहे, खैंचना न पड़े।... जरूर कोई माया की खिंचावट अभी है, इसलिए बुद्धि में कल्प पहले वाली स्मृति स्पष्ट और सरल रूप में नहीं आती है।'' अ.बापदादा 3.10.71

''त्रिमूर्ति के इस एक ही चित्र की स्मृति में सारे ज्ञान का सार समाया हुआ है। रचयिता और रचना के ज्ञान से यह प्राप्ति होती है।... मूंझो नहीं। बाप की याद वा बाप के कर्म द्वारा बाप की याद वा बाप के गुणों द्वारा बाप की याद है तो भी वह याद ही हुई ना।... याद के कोर्स को मुश्किल करते-करते फोर्स नहीं आता है, कोर्स में ही रह जाते हो।'' अ.बापदादा 4.07.71

''इस विश्व-नाटक में हम पार्टधारी हैं, अभी हमने 84 का चक्र पूरा किया है - यह तुम बच्चों की स्मृति में आना चाहिए।... भारत कितना सालवेन्ट था, भारत की ही सारी कहानी है, साथ-साथ अपनी भी - यह सारी स्मृति आई है।... सारा दिन यह स्मृति में लाना पड़े।'' सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

''जो समझते हैं कि हमारे सतयुगी संस्कार ऐसे ही मुझे स्पष्ट स्मृति में आते हैं जैसे इस जीवन के बचपन के संस्कार स्पष्ट स्मृति में आते हैं, वह हाथ उठाओ। यह स्पष्ट स्मृति में आना चाहिए। साकार रुप में स्पष्ट स्मृति में थे ना। यह स्मृति तब होगी जब अपने आत्मिक स्वरुप की स्मृति स्पष्ट और सदा काल रहेगी।'' अ.बापदादा 11.3.71

''अभी आत्मिक स्थिति की स्मृति कब-कब देह के पर्दे के अन्दर छिप जाती है। इसलिए यह स्मृति भी पर्दे के अन्दर दिखाई देती है। स्पष्ट नहीं दिखाई देती है। आत्मिक स्मृति स्पष्ट और बहुत समय रहने से अपना भविष्य वर्सा अथवा अपने भविष्य के संस्कार स्वरुप में सामने आयेंगे।'' अ.बापदादा 11.3.71

''जैसे अपना साकार स्वरूप, सदा और स्वत: याद रहता है, उसका अभ्यास नहीं करते हो बल्कि और हीउसको भुलाने का अभ्यास करते हो। ऐसे ही अपना निजी-स्वरूप व वरदानी-स्वरूप, सदा ही स्मृति में रहना चाहिए। अपवित्रता का और विस्मृति का नामोनिशान न रहे, इसको कहा जाता है - वरदानों का कोर्स करना। क्या ऐसा कोर्स किया है?'' अ.बापदादा 27.12.74

''आप सब अपने मस्तक की रेखाओं को जान और देख सकते हो, परन्तु कैसे? बाप-दादा के दिल-तख्तनशीन बनकर, स्मृति के तिलकधारी बनकर, नॉलेजफुल और पॉवरफुल स्टेज पर स्थित होकर देखेंगे तो स्पष्ट जान सकेंगे। अपनी पोज़ीशन को छोड़कर, माया की ऑपोज़ीशन की स्थिति में व स्टेज पर स्थित होकर अपने को व अन्य आत्माओं को जब देखते हो, तब स्पष्ट दिखाई नहीं देता।''

अ.बापदादा 26.6.74

''समस्या के सीट को सम्भालने नहीं लग जाओ। लेकिन सीट पर बैठकर समस्या का सामना करना है। अब तो समस्या सीट की याद दिलाती है।... इससे सिद्ध होता है कि दुश्मन ही शस्त्र की स्मृति दिलाते हैं लेकिन स्वत: और सदा स्मृति नहीं रहती।... दुश्मन आये ही नहीं, समस्या सामना न कर सके। शूली से कांटा बनना - यह भी फाइनल स्टेज नहीं है।'' अ.बापदादा 15.4.74

''जैसे अपना साकार स्वरूप सदा स्मृति में रहता है, क्या वैसे ही अपना निराकारी स्वरूप सदा और सहज स्मृति में रहता है? यह भी अपना निजी और अविनाशी स्वरूप है, यह भी सहज स्मृति में रहना चाहिए अब इसी स्मृति-स्वरूप के अभ्यास की गुह्यता में जाना चाहिए।'' अ.बापदादा 25.1.74

''सुहाग की निशानी तिलक गाया हुआ है। जो सदा बाप के साथ हैं, यह सदा विजय का तिलक अपने माथे पर लगा रहे।... सदा यह स्मृति रहे कि मैं कल्प-कल्प की विजयी हूँ, अभी की नहीं।'' अ.बापदादा 1.10.75

स्मृति से समर्थी का राज

स्मृति श्रेष्ठ होती है तो उस अनुसार आत्मा में शक्ति भी अवश्य आ जाती है। बाबा ने हमको श्रेष्ठ स्मृतियां दिलाकर श्रेष्ठ कर्म करने, श्रेष्ठ जीवन बनाने की शक्ति प्रदान की और उस स्मृति ने असम्भव लगने वाले कार्य को भी सम्भव करके दिखाया। इसका रामायण में भी बड़ा अच्छा उदाहरण है कि जब हनुमान को उनके किये हुए बड़े-बड़े कार्यों की स्मृति दिलाते थे तो उनको शक्ति आ जाती थी।

''निश्चय-बुद्धि की पहली निशानी है - विजयी। कहावत भी है - 'निश्चय बुद्धि विजयन्ति'। विजय मिलेगी कैसे? निश्चय से। तो निरन्तर इस निश्चय की स्मृति कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ यह स्मृति रहती है? स्मृति के बिना समर्थी थोड़ेही आयेगी? विजयी होने का आधार है - स्मृति। अगर स्मृति कमज़ोर होगी, निरन्तर नहीं होगी और स्मृति पॉवरफुल नहीं होगी तो विजयी कैसे होंगे? ... कोई सोचे कि मार्ग तय करने से पहले मंज़िल पर पहुंच जायें - यह हो सकता है? मार्ग तो जरूर तय करना ही पड़ेगा। तो विजय है मंज़िल और मार्ग है निरन्तर-स्मृति।'' अ.बापदादा 9.2.75

मौन का राज़ और योग की सफलता में उसके महत्व का राज़

योग की सफलता में मौन का विशेष महत्व है। मौन से योग की स्थिति दृढ़ होती है और आत्मा में दिव्य शक्तियों संचार होता है। इसलिए बाबा यज्ञ की स्थापना से ही समय-समय पर मौन-भट्ठी आदि के प्रोग्राम रखने की प्रेरणा देते आये हैं।

Q. एक सोते हुए व्यक्ति के मौन और जागृत व्यक्ति के मौन में क्या अन्तर है? और दोनों में कौन-सा मौन श्रेष्ठ है?

जागृत व्यक्ति ही पाप-पुण्य का निर्णय करके पुण्य कर्म करके अपने भविष्य के लिए पुण्य का खाता संचित कर सकता है, सोता हुआ व्यक्ति अपेक्षाकृत पाप और पुण्य दोनों से मुक्त होता है। यद्यपि सोते हुये व्यक्ति की स्वप्नावस्था का भी उसके स्वप्नानुसार उसके पाप-पुण्य का उसके जीवन पर प्रभाव पड़ता है। जागृत व्यक्ति ही मौन धारण कर गहन योग-साधना कर सकता है, सोता हुआ नहीं। जागृतावस्था का प्रभाव उसके सोने की स्थिति पर पड़ता है।

इन्द्रिय सुखों और अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति भी जाग्रत व्यक्ति ही कर सकता है। भावना और लक्ष्य से भक्ति मार्ग में रखे मौन में भी आत्मा को अतीन्द्रिय सुख अनुभूति होती है और जब यथार्थ ज्ञान के साथ मौन का अभ्यास हो तो सोने में सुहागा ही हो जायेगा अर्थात् विशेष आत्मिक सुख की अनुभूति होगी।

Q. बाबा कहता योगी और प्रयोगी बनो, तो प्रयोगी का भाव-अर्थ क्या है? प्रयोगी अर्थात् Experiment or Utilize?

माया, माया की प्रवेशता, माया से युद्ध और मायाजीत बनने का राज

माया किसको कहा जाता है और माया की प्रवेशता आत्मा में कैसे होती है, उसका ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है और माया-जीत बनने का रास्ता भी दिखाया है। दुनिया में तो माया धन-सम्पत्ति को समझते हैं परन्तु बाबा ने बताया है कि धन-सम्पत्ति तो सुख भोगने का साधन है परन्तु माया देहाभिमान और देहाभिमान जनित 5 विकारों को कहा जाता है। धन-सम्पत्ति सतयुग-त्रेता में भी सुख का साधन होती है और जब देहाभिमान वश धन-सम्पत्ति में लोभ वृत्ति बढ़ जाती है, तब भी वही धन-सम्पन्ति जो सुख का साधन थी, वह दुख का कारण बन जाती है और उसको लोग माया कहने लगते हैं। वास्तव में धन-सम्पत्ति माया नहीं है, उसमें हमारा जैसा भाव होता है, वैसा वह फल देती है।

पुरुषार्थी जीवन में ये आलस्य, अलबेलापन भी माया के ही रूप हैं, जो आत्मा को परमात्मा से विमुख करके श्रेष्ठ पद से वंचित कर देते हैं। आधे कल्प से आत्मा इनके वशीभूत रहती है और दुख पाती है, फिर जब संगमयुग पर परमात्मा आते हैं तो

जो आत्मायें परमात्मा के बनते हैं, उनका ये माया विरोध करती है अर्थात् ये मायावी संस्कार-स्वभाव दैवी स्वभाव-संस्कार धारण करने में बाधक बनते हैं। उनसे आत्मा की युद्ध चलती है।

भगवानुवाच - दिलाराम के दिल में आप समाये हुए रहेंगे और आपके दिल में दिलाराम समाया हुआ है तो किसी भी रूप की माया चाहे सूक्ष्म, चाहे रॉयल रूप में, चाहे मोटे रूप में आ नहीं सकती। स्वप्न और संकल्प मात्र भी माया का वार नहीं हो सकता।

द्वापर से माया की प्रवेशता आत्मा में कैसे होती है और अभी परमात्मा का बनने के बाद माया की आत्मा में कैसे प्रवेशता हो जाती है, यह भी एक गुह्य पहेली है। जिसमें प्रवेश करती है, उसको समझ में भी नहीं आता कि हमारे में माया प्रवेश कर रही है। माया प्रवेश करके जब ईश्वरीय प्राप्तियों अर्थात् ईश्वरीय सुख से वंचित होता है, तब महसूस करता है कि माया प्रवेश होगयी परन्तु उस समय इतनी देह हो जाती है कि उससे छूटना असम्भव नहीं तो अति कठिन अवश्य होता है। इसे भी एक ड्रामा ही कहेंगे कि ना चाहते भी माया के वशीभूत हो जाते हैं।

''जब कोई में माया प्रवेश करती है तो पहला रूप आलस्य का धारण करती है।... ज्ञानी तू वत्सों में छटे विकार सुस्ती के रूप से माया शुरू करती है।'' अ.बापदादा 25.6.70

''याद की अग्नि जली हुई होगी तो माया आ नहीं सकेगी। यह लगन की अग्नि बुझनी नहीं चाहिए। साथ रखने से शक्ति आपेही आ जायेगी। फिर विजय ही विजय है।'' अ.बापदादा 24.1.70

'''बाप और बच्चे', तीसरा कोई सम्बन्ध नहीं। सर्व सम्बन्ध एक से जोड़ना है। एक से दूसरा शिवबाबा - इस स्थिति को ही ऊंच स्थिति कहा जाता है।... ऐसी स्थिति रहने से ही मायाजीत बनेंगे। जो मायाजीत बनते हैं, वे ही जगतजीत बनते हैं।''

अ.बापदादा 24.1.70

''सर्व सम्बन्ध किससे हैं? एक से। तो एक से दो भी बनना है तो बाप और बच्चे, तीसरा कोई सम्बन्ध नहीं।... ऐसी स्थिति में रहने से मायाजीत बनते हैं। ... यह शुद्ध स्नेह सारे कल्प में एक ही बारमिलता है। ऐसे स्नेह को हम ही पाते हैं। जो और कोई को प्राप्त नहीं हो सकता, वह हमको प्राप्त हुआ है। इसी नशे और निश्चय में रहना है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''सारा मदार है याद की यात्रा पर। याद की यात्रा में ही माया की युद्ध चलती है। तुम युद्ध को भी समझते हो। यह यात्रा नहीं परन्तु जैसे कि लड़ाई है, इसमें ही बहुत खबरदार रहना है। नॉलेज में माया के तूफान आदि की बात नहीं।''

सा.बाबा 01.12.2004 रिवा.

''बाप यह भी बताते हैं कि माया विघ्न जरूर डालेगी क्योंकि उसकी ग्राहकी चली जायेगी।... उनको याद करें तो चेहरा ही चमकता रहे।... माया फथकायेगी भी बहुत। माया कोशिश करेगी, तुम्हारी याद को भुलाने की। तुम सदैव ऐसे हर्षित रह नहीं सकेंगे।'' सा.बाबा 20.11.2004 रिवा.

''सदैव बड़े से बड़े बाप की बड़ाई करते रहो। इसमें सारी पढ़ाई भी आ जाती है।... माया के आकर्षण से बचने के लिए एक तो सदैव अपनी शान में रहो, दूसरा माया को खेल समझ सदैव खेल में हर्षित रहो। सिर्फ दो बातें याद रहें तो हर कर्म यादगार बन जाये। जैसे साकार में अनुभव किया।'' अ.बापदादा 6.05.71

''जो सारा दिन अलबेले और आलस्य के वश होते हैं और उनका अटेन्शन कम होता है। ऐसी अलबेली आत्माओं को माया भी विशेष वरदान के समय बाप की आज्ञा पर न चलने का बदला लेती हैं और ऐसी आत्माओं का दृश्य बहुत आश्चर्यजनक दिखाई देता हैं।'' अ.बापदादा 8.7.74

''ऐसे ही भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से भिन्न-भिन्न अपने स्वरूप की स्मृति को इमर्ज कर अनुभव करो तो सदा साथ का अनुभव करेंगे।... सर्व सम्बन्ध निभाने में इतने बिजी रहेंगे जो माया को आने की भी फुर्सत नहीं मिलेगी।''

अ.बापदादा14.10.87

''माया का धर्म है तुम्हारे योग को तोड़ना।... माया के तूफान बहुत आते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। सबसे आगे तो यह है, तो इनको सब अनुभव होते हैं। मेरे पास आयें तब तो सबको समझाऊं।... माया के तूफान न आयें, योग लगा ही रहे तो कर्मातीत अवस्था हो जाये।'' सा.बाबा 9.6.05 रिवा.

''माया से डरती तो नहीं हो? जो डरता है, वह हार खाता है। जो निर्भय होता है, उससे माया माया खुद भयभीत होती है।... माया के परवश होना भी अपनी कमजोरी है। अपनी किसी कमजोरी के कारण ही परवश होता है।'' अ.बापदादा 24.10.75

''चारो ही सेवाओं (स्व-सेवा, विश्व-सेवा, यज्ञ-सेवा और मन्सा-सेवा) में से हर समय कोई न कोई सेवा करते रहो तो सहज ही निरन्तर सेवाधारी बन जायेंगे।... सेवा में बिजी रहने के कारण सहज मायाजीत बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 6.11.87

युद्ध और युद्ध के मैदान का राज़

बाबा कहते - यह युद्ध का मैदान है, इसमें राम के बच्चों की माया रावण से युद्ध है। जो इस युद्ध में जितना और जैसे जीतता है, उस अनुसार ही वह अभी ईश्वरीय सम्पत्ति का अधिकारी बनता है और भविष्य रामराज्य में राजाई पाता है। इसमें हर आत्मा राजाई पा सकती है। हर आत्मा अपने लिए राजाई पाने के लिए लड़ रहे हैं। वहां सिपाही राजा के लिए लड़ते हैं परन्तु यहाँ हर एक अपने लिए लड़ता है। ये लड़ाई भी गुप्त है, इसके अस्त्र-शस्त्र भी गुप्त है और राज़ाई भी गुप्त है। हर आत्मा की अपने अन्दर के आसुरी और दैवी संस्कारों के बीच युद्ध चलती है। आधे कल्प तक आसुरी संस्कारों का दैवी संस्कारों पर राज्य चलता है। परन्तु अभी समय है दैवी संस्कारों का आसुरी संस्कारों पर विजय पाने का।

''इसको कहा जाता है - युद्ध का मैदान। तुम हरेक इण्डिपेण्डेण्ट युद्ध के मैदान में सिपाही हो। अब हरेक जितना चाहे उतना पुरुषार्थ करे।... राजाई में ऊंच पद पाना - यह है पुरुषार्थ करना। बाकी बाप सेकेण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं।''

सा.बाबा 08.09.04 रिवा.

''अभी तुम माया पर जीत पाने के लिए युद्ध करते हो। युद्ध करते-करते फेल हो जाते हैं तो त्रेता में चले जाते हो।''

सा.बाबा 22.11.04 रिवा.

''रावण को जीतने का यह युद्ध का मैदान है। थोड़ा भी देह का अभिमान न आये 'मैं ऐसी सर्विस करता हूँ, यह करता हूँ...।' हम तो गॉडली सर्वेन्ट हैं, सबको पैगाम देना ही है।'' सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

''अभी तुम समझते हो - माया से युद्ध कैसे चलती है।... तुम ही जानते हो अभी हमको माया से युद्ध करनी है। बाप कहते हैं - तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है ही काम विकार। योगबल से इस पर विजय पाते हो।'' सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

''विघ्नों का सामना करने के लिए पहले चाहिए परखने की शक्ति, फिर चाहिए निर्णय करने की शक्ति।... निर्णय के बाद ही सहनशक्ति धारण कर माया का सामना कर सकेंगे।... हार से बचने के लिए परखने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति को बढ़ाना है।... अशरीरी, निराकारी और कर्म में न्यारापन निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए बहुत आवश्यक है।''

अ.बापदादा 26.6.69

''बाप कहते हैं - तुम बच्चे बनेंगे तो देहाभिमान की और काम-क्रोध आदि की बीमारी बढ़ेगी, नहीं तो परीक्षा कैसे हो।... यह युद्ध का मैदान है, इसमें डरना नहीं है कि पता नहीं तूफानों में ठहर सकेंगे या नहीं।'' सा.बाबा 13.12.04 रिवा.

''महारथी अर्थात् इस रथ पर सवार, अपने को रथी समझे। ... जैसे योद्धे सर्व व्यक्तियों, सर्व वैभवों का किनारा कर 'युद्ध और विजय' - इन दो बातों को सिर्फ बुद्धि में रखते हुए अपने लक्ष्य को पूर्ण करने में लगे हुए होते हैं।... ऐसे योद्धे बने हो?... योद्धे कभी भी आलस्य और अलबेलेपन की स्थिति में नहीं रहते। कभी शस्त्रों के बिना रहीं रहते।... भय के वशीभूत नहीं होते हैं।''

अ.बापदादा 13.6.73

''एक तो संग्रह करने की शक्ति और दूसरी संग्राम करने की शक्ति। संग्रह करने की शक्ति भी अति आवश्यक है। ... जिसमें जितनी ज्ञान रतनों को संग्रह करने की शक्ति है उतनी ही उसमें संग्राम करने की भी शक्ति रहती है।'' अ.बापदादा 18.3.71

रुस्तम से माया के भी रुस्तम होकर लड़ने का राज

बाबा कहते हैं बच्चे तुम अभी युद्ध के मैदान में हो और तुम्हारी युद्ध माया से है। माया भी रुस्तम से रुस्तम होकर लड़ती है। जैसे जो जैसा पहलवान होता है, वह अपने समान पहलवान से ही लड़ना पसन्द करता है। कोई भी पहलवान अपने से अति कमजोर से और अपने से बहुत अधिक बलवान से लड़ने की इच्छा नहीं रखता है, न ही लड़ता है। इसीलिए गायन है - वैर, भाव और प्रीत समान वाले से ही होती है और निभती है।

''इसमें कुछ भी खर्चा नहीं है। कुछ भी खर्चा आदि करते हैं सो तो अपने लिए ही करते हैं। इसमें पाई का भी खर्चा नहीं है।... तुम्हारी लड़ाई है गुप्त, योगबल की।... बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए परन्तु युद्ध का मैदान है, माया ठहरने नहीं देती है।'' सा.बाबा 24.9.04 रिवा.

''याद का पुरुषार्थ तो इनको भी करना है।... सबसे जास्ती मेहनत इनको करनी पड़ती है। युद्ध के मैदान में महारथी से... जितना बड़ा पहलवान, उतना जास्ती माया परीक्षा लेती है। माया बहुत तूफान लाती है।'' सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

''रुस्तम से माया भी रुस्तम होकर लड़ती है। बाबा अपना अनुभव भी बतलाते हैं। मैं रुस्तम हूँ, जानता हूँ मैं बेगर टू प्रिन्स बनने वाला हूँ तो भी माया सामना करती है। माया किसको छोड़ती नहीं है। पहलवानों से तो और ही लड़ती है।''
सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

''देह-अहंकार आया और ये फँसा। बाप समझाते हैं - जो भी पहलवान हैं, उन पर माया की चोट लगती है। माया भी बलवान से बलवान होकर लड़ती है।'' सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

''रुस्तम से माया भी अच्छी रीति रुस्तम होकर लड़ती है। कच्चे से क्या लड़ेगी!... माया भी समर्थ है ना। तुम बच्चों को उस्ताद मिला हुआ है। ... माया को पहलवान देखकर हार्ट फेल नहीं होना चाहिए।'' सा.बाबा 13.5.05 रिवा.

''बाबा कहते - बच्चे, यह युद्ध का मैदान है, इसमें होपलेस नहीं होना चाहिए। याद के बल से ही माया पर जीत पानी है।...जो करेगा सो पायेगा।'' सा.बाबा 9.7.05 रिवा.

''देह अहंकार बहुत आ जाता है, माया भी रुस्तम से रुसतम होकर लड़ती है। पहलवान जरुर पहलवान से ही लड़ेंगे। इसलिए बड़ा खबरदार रहना है। गम्भीर हो रहना है। माया तैयार हो बैठी रहती है - देखें कौन योग में ढीले हैं झट उनको वार करेगी।''
सा.बाबा 18.11.69 रिवा.

योगानन्द (परमानन्द) और विषयानन्द (निकृष्ट-आनन्द) का राज़ /
दोनों की समानताओं और असमानताओं का राज

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। आत्मिक स्वरूप में स्थिति अर्थात् देह में हो परन्तु देह और देह की दुनिया का आभास न हो अर्थात् जहाँ चेतन हो परन्तु चेतना न हो अर्थात् बीज हो परन्तु झाड़ न हो। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा के लिए ये स्थूल वतन भी मूलवतन के समान ही शान्तिमय हो जाता है। वह स्थिति परमानन्दमय है।

योगानन्द और विषयानन्द दोनों शब्दों को देखें तो देखते हैं कि दोनों को आनन्द से सम्बोधित किया गया है परन्तु दोनों के भाव-अर्थ को देखेंगे तो योगानन्द है आत्मा की चढ़ती कला का आधार और विषयानन्द है आत्मा की उतरती कला और दुख-अशान्ति का मूल कारण। स्वर्ग को नर्क में परिवर्तन करने वाला विषयानन्द ही है। नर्क को स्वर्ग में परिवर्तन करने का आधार योगानन्द है। योगानन्द का मूल परमात्मा और परमात्मा के द्वारा दिया हुआ ज्ञान है और विषयानन्द का आधार देह, देहाभिमान और देहाभिमान से जनित विषय-वस्तुयें हैं।

दोनों के शुभ-अशुभ परिणाम अर्थात् Cause and Effect को जानने वाला ही योगानन्द का यथार्थ अनुभव कर सकता है।

Q. जब दोनों को आनन्द से सम्बोधित किया गया है तो दोनों में क्या समानतायें हैं और क्या विषमतायें हैं? उनको भी जानना आवश्यक है।

दोनों के विषय में विचार करें तो हम देखते हैं कि दोनों की चरम सीमा अर्थात् अनुभूति निर्संकल्प स्थिति में ही होती है। एक में विदेही आत्मा का योग विदेही परमात्मा से होता है और दूसरे में देह का सम्बन्ध देह से होता है। दोनों का अनुभव करने वाली आत्मा ही है। एक में आत्मा को अपने अस्तित्व का ज्ञान होता है, आत्मिक स्थिति में स्थित होती है, जिससे उसका आकर्षण परमात्मा की ओर होता है और दूसरे में अपने अस्तित्व की विस्मृति होने के कारण देहाभिमान में दैहिक सुख की आकर्षण प्रबल होती है। एक का परिणाम सुखमय होता है तो दूसरे का परिणाम निश्चित ही दुखमय होता है।

विषयानन्द में विषय-वासना के वशीभूत विषय-भोग में प्रवृत व्यक्ति देह और देह की दुनिया को भूल जाता और विषय-भोग में एकाग्र हो जाता। वह क्षण ही विषयानन्द का होता है। उसमें आत्मा निर्संकल्प स्थिति में होता है परन्तु वह स्थिति क्षणिक होती है। इसलिए विषयानन्द को क्षणिक आनन्द कहा जाता है। उसके परिणाम में दुख अवश्य होता है, आत्म-ग्लानि अवश्य होती है। वह भी एक प्रकार की क्षणिक मूर्छा ही है।

योगानन्द के दो रास्ते हैं - एक है योग मार्ग अर्थात् एक परमात्मा के आकर्षण में उनकी अव्यभिचारी याद में तल्लीन होकर देह और देह की दुनिया को भूल जाना और अपने परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना और दूसरा है ज्ञानमार्ग अर्थात् विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान समझकर अपनी मन-बुद्धि को देह और देह की दुनिया से हटाकर परमपिता परमात्मा की याद के द्वारा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना। एक में परमात्मा के प्रति प्रेम प्रधान है, ज्ञान गौण है और दूसरे में ज्ञान प्रधान है, प्रेम उसके बाद होता है।

योग से तो सदा पुण्य ही होता है क्योंकि योग अर्थात् बाप के साथ बुद्धि योग। परन्तु यदि योग के संगठन में हमारी दृष्टि-वृति, संकल्प भटकता है तो बड़ा पाप हो जाता है।

योगानन्द आत्मिक शक्ति का विकास करता है तो विषयानन्द से तीव्रता से आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है। योगानन्द में जितना गहरा जाते हैं, वह उतना ही बढ़ता जाता है परन्तु विषयानन्द से क्षणिक आनन्द तो होता है परन्तु समयान्तर में वह भोगशक्ति को खत्म कर देता है और आनन्द की परणिति दुख में होती है।

Q. परमात्मा का बनने के बाद माया से युद्ध क्यों आरम्भ होती है, पहले नहीं ?

जो आत्मायें परमात्मा की बनती हैं, उनको योगानन्द का अनुभव होता है और विषयानन्द के अनुभव के संस्कार उनमें पहले से ही होते हैं, इसलिए योगानन्द अनुभव अपनी तरफ खींचता है और विषयानन्द का अनुभव भी अपनी तरफ खींचता है, अब आत्मा किधर जाये, इसके लिए अन्तर्मन में युद्ध चलती है। अन्त में विजय तो योगानन्द की ही होती है। जो आत्मायें परमात्मा का बनकर छोड़कर भी चली जाती हैं, उनमें भी यह युद्ध चलती रहती है।

''कोई भी देहधारी में संकल्प से वा कर्म से फंसना, इस विकारी देह रूपी साँप को टच करना अर्थात् अपनी की हुई अब तक की कमाई को खत्म करना। चाहे कितना भी ज्ञान का अनुभव हो, याद द्वारा शक्तियों की प्राप्ति का अनुभव किया हो या तन-मन-धन से सेवा की हो लेकिन सर्व प्राप्तियां इस देह रूपी साँप को टच करने से खत्म हो जाती हैं।'' अ.बापदादा31.10.75

''जैसे योग अग्नि पिछले पापों को भस्म करती है वैसे ही यह विकारी भोग भोगने की अग्नि पिछले पुण्य को भस्म कर देती है।'' अ.बापदादा31.10.75

कर्मों की गहन गति का राज़

कर्म और फल पर आधारित ये विश्व-नाटक एक स्वचालित खेल है, जिसका राज़ परमात्मा आकर बताते हैं, उस राज़ को जानकर स्व-स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की याद में कर्म करना ही श्रेष्ठ कर्मों और सुखी जीवन का आधार है।

कर्मों की गति अति गहन गाई हुई है, जिसको जानना बहुत कठिन कार्य है परन्तु उसको जानने के बाद ही आत्मा श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ हो सकती है। परमात्मा ज्ञान का सागर है और सुकर्म-अकर्म-विकर्म की गति को जानने वाला है, वे ही कल्पान्त में आकर उस गहन गति का ज्ञान देते हैं। लौकिक गीता में भी इसका वर्णन है परन्तु वह गहन गति क्या है, वह कोई नहीं जानते, वह गुह्य राज़ परमात्मा अभी बताया है।

‘‘63 जन्मों के हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं- इस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं।... याद रखो - सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी है तो सत्य की नाव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती।’’ अ.बापदादा 3.05.77

‘‘इसीलिए नाम है - कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्मेन्द्रियाँ, कर्मभोग, कर्मयोग।... कर्म श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ प्रालब्ध है, कर्म भ्रष्ट होने के कारण दुख की प्रालब्ध है। लेकिन दोनों का आधार कर्म है। कर्म आत्मा का दर्पण है।’’ अ. बापदादा 19.3.82

‘‘बाप को जान पहचान उनकी मत पर चलने से तुम श्रेष्ठ बन सकेंगे। नहीं तो बहुत सजायें खायेंगे। जैसे ईश्वर की महिमा अपरमअपार है वैसे सजा खाने की दुर्दशा भी अपरमअपार है। कयामत का समय है। बाबा कहते हैं मैं सबका हिसाब-किताब चुक्तू कराता हूँ।... कोई भी किसको दुख देते हैं तो दुखी होकर मरेंगे। जो काम कटारी चलाते हैं, वे दुखी होकर मरने वाले हैं - यह पक्का समझ लो।’’ सा.बाबा 17.04.73 रिवा.

कर्म के नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान का राज

सृष्टि एक कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मायें कर्म करने और उनका फल भोगने के लिए अवतरित होती हैं। इसीलिए तुलसीदास ने कहा है - कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा। जीवन को सुखमय बनाने के लिए श्रेष्ठ कर्म करना परमावश्यक है और श्रेष्ठ कर्म के लिए कर्म के विधि-विधान का ज्ञान परमावश्यक है, अन्यथा आत्मायें जो कर्म करती है, उसको वे तो समझती हैं अच्छा कर्म है लेकिन उसका परिणाम दुखदायी होता है। अभी परमात्मा ने कर्म के विधि-विधान का ज्ञान दिया है, जिससे हमारी बुद्धि विकर्मों से विमुख होकर श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त होती है।

‘‘धर्मराज के रजिस्टर में सब जमा हो जाता है ऑटोमेटिकली।... बाबा को लिखकर देने से बोझा हल्का हो जायेगा।’’

सा.बाबा 15.8.05 रिवा.

* हर आत्मा का अपना कर्म ही उसके सुख-दुख का मूल कारण है, दूसरे तो ड्रामा अनुसार केवल निमित्त कारण बनते हैं। इसीलिए गीता में भी कहा है - जीवात्मा आपेही अपना मित्र है और आपेही अपना शत्रु है।

* कर्म एक दर्पण है, जिसमें उसके कर्ता की अन्तर्भावना प्रतिबिम्बित होती है और जो उसकी वंश परम्परा को भी प्रदर्शित करता है एवं भूतकाल और भविष्य का भी साक्षात्कार कराता है। इसलिए हर आत्मा को कर्म के विधान और सिद्धान्त को समझकर कर्म करना चाहिए, जिससे उसका फल सुखमय हो।

* साधारण रूप से देखें तो जो कर्म दिल को खाता है वह विकर्म होता है, उसको करने से आत्मा को बचना चाहिए।

‘‘अपने कर्मों पर खबरदारी रखना है। कोई भी पाप कर्म न करना है।... अगर अपने घाटे और फायदे का पोतामेल न रखेंगे तो फेल हो जायेंगे। माया ऐसी है जो बहुतों को फेल कर देगी। युद्ध है ना।... जो कर्म दिल को खाता हो, उसे छोड़ते जाओ।’’

सा.बाबा 03.08.68

* पाप कर्म और गलत कर्म करने वाले की सुरक्षा या बचाने का प्रयत्न करने वाला, किसी भी रूप से सहयोग करने वाला भी उस पाप कर्म का भागी होता है। इसी तरह से श्रेष्ठ कर्म करने और श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले को भी उस श्रेष्ठ कर्म के फल में हिस्सा मिलता है।

‘‘दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए, जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।’’ सा.बाबा 14.08.69 रिवा.

* हर चेतन्य प्राणी में मन-बुद्धि-संस्कार है और वह अपनी श्रेणी अनुसार कर्म करता है और उसके कर्म अनुसार उसको फल मिलता है और उसके आधार पर उसका जन्म-पुनर्जन्म होता है। सभी चैतन्य प्राणी अपने कर्म अनुसार अपनी योनि में ही सुखी-दुखी होते हैं।

* मन्सा-वाचा-कर्मणा आत्मा जो भी कर्म करती, जिससे व्यक्ति सीधा प्रभावित होते, वातावरण प्रभावित होता है, जिससे वर्तमान में या भविष्य में आत्मायें प्रभावित होती अर्थात् सुख-दुख पाते, उसका फल कर्ता आत्मा को सुख या दुख के रूप में अवश्य मिलता है। भल फल के निर्णय में कर्म के स्वरूप से कर्ता की भावना प्रधान होती है। पेड़ लगाने, अस्पताल, धर्मशाला आदि बनाने से अच्छा फल और फैक्टरी, बारूद, गैस आदि से वातावरण को दूषित करने से भी कर्ता को उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है।

* कर्म-फल के निर्णय में कर्म के स्वरुप से कर्म करने वाले की भावना अधिक महत्वपूर्ण है।

''गरीब का भावना से दिया गया एक पैसे का फल भी साहूकार के एक हजार रुपये के बराबर हो सकता है ... कोई तो दो पैसा भी देते हैं, बाबा हमारी एक ईट लगा दो, कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना, तो दोनों को बराबर मिल जाता है।'' सा.बाबा 30.11.69 रिवा.

* देश, समाज, संगठन... के द्वारा कोई अनुचित या अन्यायपूर्ण किये गये कर्म में उस देश या संगठन के लोगों के द्वारा खुशी प्रकट करना भी सामूहिक कर्म हो जाता है और उसका सामूहिक फल सबको अवश्य ही भोगना पड़ता है।

* इस जगत में कर्म का अटल सिद्धान्त लागू है, जो स्वत: प्रभावित है, जिसके अनुसार हर आत्मा को अपने कर्म का फल स्वत: मिलता है। परमात्मा कर्म की गुह्य गति का पूर्ण ज्ञाता है। परमात्मा ही आकर कर्म की गुह्य गति का ज्ञान आत्माओं को देता है और श्रेष्ठ कर्मों का रास्ता बताता है, जिस पर चलकर आत्मा सुख-शान्ति पाती है। परमात्मा का फल को देने में कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। फल तो प्रकृति के विधि-विधान अनुसार मिलता ही है।

''जो पाप कर्म करते हैं, उसका दण्ड तो जरूर मिलेगा ना। बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता रहता है। बाप इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।'' सा.बाबा 19.02.69 रिवा.

''दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याण अर्थ ईश्वरीय लॉज (नियम) भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि-अविनाशी लॉ कौन सा है? ड्रामा के प्लॉन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना - यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता कि इस कर्म का यह लेना वा इस कर्म की ये सजा है, लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है।... इसलिए गाया हुआ है - 'कर्मों की गति अति गुह्य है'।'' अ.बापदादा 3.05.77

* ये कर्म क्षेत्र है, यहाँ कोई भी आत्मा स्थूल या सूक्ष्म कर्म के बिना रह नहीं सकती और जो जैसा कर्म करती, उस अनुरूप उसका फल अवश्य भोगती है। गायन है - ''तुलसी ये तन खेत है, मन्सा भया किसान। पाप-पुण्य दो बीज हैं, जो जस बुवै सो तस लुनै निदान।''

* ये विश्व ''कर्म-फल-कर्म, पुरुषार्थ-प्रालब्ध-पुरुषार्थ, क्रिया-प्रतिक्रिया'' के घटना-चक्र पर आधारित एक कर्मक्षेत्र है। यहाँ हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, जो उसके कर्ता पर उसके अनुरूप ही प्रभावित होती है।

* पाप कर्म करने वाले को साधन-सम्पत्ति या राय-सलाह के द्वारा पाप कर्म करने में सहयोग करने वाले पर भी पाप-कर्म का बोझ चढ़ता है।

* किसी के द्वारा किये गये पाप कर्म को अच्छा समझकर स्वीकार करने वाले या ऐसे कर्म के कर्ता की महिमा करने वाले पर भी उस पाप कर्म का प्रभाव पड़ता है और उसको भी उसका फल मिलता है।

* दुखी, अशान्त होना भी एक विकर्म है क्योंकि इससे देहाभिमान और दुख के वायब्रेशन प्रवाहित होते हैं, जो उस अनुरूप वातावरण का निर्माण करते हैं, जिससे वह अन्य आत्माओं को भी उसी अनुरूप प्रभावित करते हैं अर्थात् दुखी करते हैं।

''श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल शुद्ध होता है, तो व्यर्थ से दूषित होता है, जिसका बोझा आत्मा पर चढ़ जाता है।''

अ.बापदादा 5.07.74

* ये सृष्टि-चक्र भूत-वर्तमान-भविष्य के घटनाचक्र पर सतत गतिशील है। हर आत्मा का वर्तमान, भूतकाल के कर्म का फल और भविष्य का बीज या आधार-शिला है। वर्तमान ही हमारे हाथों में है। इसीलिए गायन है - बीती को चितवो नहीं, आगे की धरो न आश ... अर्थात् वर्तमान ही हमारे हाथों में है, जब हम श्रेष्ठ कर्म करके अपने सुखमय भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

* आत्माभिमानी स्थिति में किये गये कर्म अकर्म (सूक्ष्म ह्रास), देहाभिमानी स्थिति में किये गये कर्म विकर्म (आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास) और परमात्माभिमानी स्थिति में रहकर किये गये कर्म ही सुकर्म (आत्मिक शक्ति का विकास) होते हैं, जो आत्मा की चढ़ती कला एकमात्र आधार हैं। ये ज्ञान ज्ञान-सागर परमात्मा संगम युग में ही देते हैं, तब ही आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है।

''बाप (परमात्मा) को छोड़कर दूसरे को याद करना - यह भी विकर्म है।'' सा.बाबा 5.1.69 रात्रि क्लास

* जो जैसा कर्म करता है, वह उसका वैसा फल अवश्य ही पाता है। भगवानोवाच्य - दुख देंगे तो दुख पायेंगे, सुख देंगे तो सुख पायेंगे।

* हर कर्म कर्ता के संकल्प और भावना से प्रेरित होता है और उसके आधार पर ही उस कर्म का फल निर्धारित होता है। भक्ति में एक का एक गुणा, ज्ञान में एक का सौगुणा अर्थात् ज्ञान से कर्म का फल कई गुणा बढ़ जाता है, जो सिद्धान्त सुकर्म और विकर्म दोनों में लागू होता है।

* बिना कारण के कोई कार्य नहीं हो सकता। इसलिए बिना जाने मन्सा-वाचा किसी सम्बन्ध में कोई गलत निर्णय करने से आत्मा का पाप का खाता बढ़ता है। इसलिए ड्रामा की अटल भावी और जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है के अटल सत्य सिद्धान्त को जानकर साक्षी होकर हर आत्मा के कर्म को देखो और सर्व के प्रति कल्याण की भावना रखकर अपना पुण्य का खाता जमा करो। दूसरे के कर्मों का चिन्तन कर, उसके विषय में निर्णय कर अपना समय और शक्ति व्यर्थ न गँवाओ।

* समर्थ होकर पाप कर्म का प्रतिरोध न करना भी पाप कर्म है। पाप कर्म या पापी की सराहना करना भी पाप कर्म है। असमर्थ होते भी समय पर या यथास्थान सत्य को प्रगट न करना भी पाप कर्म है। इस विषय में महाभारत में द्रोपदी के चीरहरण के समय का वृतान्त भी इसकी सत्यता को स्पष्ट करता है, जिससे ये स्पष्ट होता कि दुनिया में भी मनुष्यों की ऐसी मान्यता है।

* पाप कर्म से अर्जित धन-सम्पत्ति या साधन का उपभोग भी पाप कर्म है।

* जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है अर्थात् हर आत्मा को अपने ही कर्म का फल सुख या दुख के रूप में मिलता है। श्रेष्ठ कर्म से मित्र बनती है और पाप कर्म से शत्रु बनती है। सुख और दुख दोनों में ही दूसरे तो केवल निमित्त कारण होते हैं, मूल कारण तो अपने ही पूर्व कर्म होते हैं।

* जब भावना कल्याण की होती है तो कर्म स्वत: ही श्रेष्ठ होता है।

* अज्ञानवश किये गये कर्म का फल और जानकर किये गये कर्म के फल में अन्तर होता है।

''अगर बाप (परमात्मा) का बनकर कोई पाप कर्म किया तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा।'' सा.बाबा 3.10.97 रिवा.

''बुरा कर्म करने से सौगुणा दण्ड हो जाता है। ज्ञान नहीं तो एक पाप का एक दण्ड। ज्ञान में आने के बाद फिर ऐसे कोई विकर्म करते हैं तो सौगुणा पाप लगता है।'' सा.बाबा 24.11.69 रिवा.

कर्म के विधि-विधान के ज्ञाता परमात्मा के महावाक्य हैं- ट्रिब्युनल ब्राह्मण बच्चों के लिए बैठेगी, अज्ञानी आत्माओं के लिए नहीं।

* यदि हम कोई अच्छा या बुरा कर्म करते हैं और उसे देखकर या सुनकर दूसरे भी करते हैं तो उनके द्वारा किये गये कर्म के फल में भी पूर्व कर्ता भागीदार बनता है।

* कल्प का संगमयुग ही सुकर्म करने का युग है, जो सारे कल्प के भाग्य का आधार है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा पिता की याद में किये गये कर्म ही सुकर्म हैं और आत्मा की चढ़ती कला का आधार हैं।

बाबा ने कहा है यदि ब्राह्मण आत्मा किसी ब्राह्मण आत्मा के प्रति कुदृष्टि रखती या कुदृष्टि जाती, तो ये महापाप के खाते में जमा होता है।

''अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है।... शुभ भावना के बजाये और कोई भी भावना है तो यह पाप का खाता जमा होता है क्योंकि यह भी दुख देना है।'' अ.बापदादा 3.12.78

* इस विश्व-नाटक में कर्म के अनादि-अविनाशी, अटल सिद्धान्त के अनुसार हर आत्मा को अपने अच्छे-बुरे कर्म का फल अवश्य मिलता है।

* हम दूसरे के लिए अशुभ या बुरा सोचते हैं, हीन भावना रखते तो उसका असर हमारे ऊपर भी अवश्य होगा।

* अधिक उपभोग, दूसरे के संसाधनों का उपयोग-उपभोग भी कर्मों का हिसाब-किताब बनाता है और कर्म-बन्धन का कारण बनता है। बुद्धिमान ज्ञानी पुरुष इस सत्य को जानकर जीवन में इसका अवश्य ध्यान रखते हुए ही हर कर्म करते हैं।

''बाप (परमात्मा) कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। अगर बाप की श्रीमत पर चलते रहें तो कब विकर्म न हो।''

सा.बाबा 1.10.97 रिवा.

* कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता है परन्तु कारण को छोड़कर एकाग्रता से कार्य में बुद्धि लगाने वाले के कार्य सफल होते हैं।

''जो बात अच्छी न लगे, वह करनी नहीं चाहिए। अच्छे-बुरे को तो अब समझते हो, आगे नहीं समझते थे।... अब अच्छी रीति पुरुषार्थ कर कर्मातीत बनना है।'' सा.बाबा 11.12.2000 रिवा.

* कर्मातीत बनने के बाद कोई आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती है।

* आवश्यकता से अधिक उपभोग भी एक विकर्म है, जिसका पश्चाताप रोग-शोक के रूप में मनुष्य को करना ही पड़ता है।

''बाबा हमेशा कहते मांगो मत।... दाता के बच्चे हो... और किससे लेंगे तो उनकी याद आती रहेगी।... औरों से मांगो मत। नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ जाता है क्योंकि वह शिव बाबा के भण्डारे में नहीं दिया। देना चाहिए शिव बाबा के भण्डारे में।'' सा.बाबा 25.01.72 रिवा.

* सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ परमात्मा का बनकर, अल्पज्ञ, यथाशक्ति सम्पन्न आत्माओं से कोई आशा रखना भी परमात्मा की निन्दा कराना है और उसका भी दण्ड समय पर पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

* बिना सोचे-विचारे कोई कर्म कर लेना, जिससे किसी आत्मा को दुख हो तो वह भी पाप है और उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है। रामायण के पात्र राजा दशरथ और श्रवण कुमार का वृतान्त इसका उदाहरण है, जिससे अनुभव होता कि दुनिया वालों में भी इस तरह की मान्यतायें हैं।

* दूसरों को शिक्षा देना और स्वयं न करना भी पाप-कर्म है, उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना पड़ता है क्योंकि इससे स्वत: सिद्ध होता है कि वह उस कर्म की गति और उसके शुभ-अशुभ परिणाम को जानता है।

''बुरा काम हुआ तो फौरन बताओ तो आधा माफ हो जायेगा। ऐसे नहीं कि मैं कृपा करूँगा। क्षमा वा कृपा पाई की भी नहीं होगी। सबको अपने आपको सुधारना है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे और पास्ट का भी योगबल से कटता जायेगा।''

सा.बाबा 05.05.2005 रिवा.

Q. ट्रिब्युनल में सबके लिए कोई निश्चित आत्मायें ही होंगी या हरेक के लिए ट्रिब्युनल में अलग-अलग कोई विशेष आत्मायें होंगी? अन्त समय अपने विकर्मों का साक्षात्कार उन निमित्त बनी हुई आत्माओं के समक्ष होना ही ट्रिब्युनल की सजा है या धर्मराज पुरी में कोई अलग से ट्रिब्युनल होगी? जैसे श्रवण कुमार की मृत्यु के विषय में अन्त समय राजा दशरथ का पश्चाताप।

* परमात्मा पिता से प्रतिज्ञा करके तोड़ना भी परमात्मा और ज्ञान का अपमान करना है, ये भी विकर्म है, जिसका दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

* तन-मन-धन परमात्मा बाप को समर्पित करके वापस लेना या लेने का संकल्प करना भी विकर्म है, उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना पड़ता है।

* जानकर या अलबेलेपन से यज्ञ की साधन-सम्पत्ति का नुकसान करना भी विकर्म है, उसका भी दण्ड आत्मा को भोगना पड़ता है।

* दाता-विधाता परमात्मा का बनकर मनुष्यात्माओं से किसी प्रकार की अपेक्षा रखना, मांगना भी परमात्मा की निन्दा कराना है, उसका दण्ड भी आत्मा को पश्चाताप के रूप में भोगना पड़ता है क्योंकि ये भी परमात्मा और ज्ञान की निन्दा कराना है। सेवा के लिए प्रेरणा देना अलग बात है परन्तु उसमें भी स्वार्थ भावना रखी तो दण्ड भोगना ही पड़ेगा।

* यज्ञ के Behalf पर किसी व्यक्ति से व्यक्तिगत लाभ उठाना भी चोरी है और उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

* बाबा के महावाक्यों के अनुसार हम जो पुरुषार्थ कर सकते हैं और वह नहीं करते तो यह भी पाप के खाते में जमा होता है और उसका दण्ड भी आत्मा को पश्चाताप के रूप में भोगना पड़ता है।

आत्मायें जो सामूहिक रूप से भोगना भोग रही हैं, उसके भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारण अवश्य हैं क्योंकि बिना कर्म के किसी आत्मा को कोई दुख नहीं मिल सकता है।

''कर्म और कर्म के फल के बन्धन में फंसने के कारण कर्म-बन्धनी आत्मा अपनी ऊंची स्टेज को पा नहीं सकती है।... ज्ञान स्वरुप होने के बाद वा मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो योगयुक्त नहीं है वह कर लेते हो तो इस कर्म का बन्धन अज्ञानकाल के कर्मबन्धन से पदमागुणा ज्यादा है।... इसलिए इसमें भी अन्जान नहीं रहना है कि यह छोटी-छोटी गलितयां हैं। यह तो होंगी ही।''

अ.बापदादा 20.5.72

''जो विकर्म किये हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।''

सा.बाबा 25.06.05 रिवा.

ये तो नाम-मात्र या अंश-मात्र ही बातें हैं, कर्म का विधि-विधान तो अति गुह्य है, जो परमात्मा ही जानता है।

विकर्म और विकर्म विनाश की प्रक्रिया का राज़

परमात्मा पतित-पावन है, आत्मा का अनादि स्वरूप पवित्र है। निराकार परमात्मा की याद से ही विकर्म विनाश होते हैं और आत्मा अपने मूल स्वरूप निराकार स्थिति को धारण करती है। अज्ञानता के वशीभूत देहाभिमान के कारण विकर्मों का बोझा आत्मा पर चढ़ जाता है। फिर कल्पान्त में परमात्मा आकर आत्माओं को विकर्मों से मुक्त होने का रास्ता बताते हैं, जिसके द्वारा ही आत्मा विकर्मों से मुक्त होती है और पुन: पावन होती है। आत्मा पर जो देहाभिमान का लेपक्षेप चढ़ा है, जंक चढ़ी वह परमात्मा की याद से खत्म होती है क्योंकि परमात्मा की याद में एक तो आत्मा सुकर्म करती तो विकर्मों का बोझा कम हो जाता है और पश्चाताप से भोग पूरा होता है तथा परमात्मा की याद से देहाभिमान रूपी अज्ञानता समाप्त होती है।

परमात्मा की याद के बिना देहाभिमान में आकर जो भी कर्म करते हैं, वे विकर्म ही होते हैं और उनका फल कर्मभोग के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

''बाप कहते हैं - तुम मेरी याद के बिना पवित्र बन ही नहीं सकते हो। भले तुम कोई देवता को याद करो। किसके भी योग से तुम पवित्र नहीं बनोंगे। पापों को दग्ध करने का बल मेरे पास ही है।''

मातेश्वरी 24.06.65

''बेहद का बाप कहते हैं - बच्चे, मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम्हें इस दादा वा मम्मा को भी याद नहीं करना है।... गायन है - सतगुरु मिला दलाल। सतगुरु कोई दलाल नहीं है। सत्गुरु तो निराकार है।... वर्सा तो बाप से ही मिलना है।''

सा.बाबा 9.02.05 रिवा.

''एक होता है डायरेक्ट विकर्म विनाश की स्टेज में स्थित हो फुल फोर्स से विकर्मों का नाश करना, दूसरा तरीका है जितना-जितना शुद्ध संकल्प वा मनन की शक्ति से अपनी बुद्धि को बिजी रखते हो... बुद्धि में यह भरने से वह पहले वाला स्वयं ही निकल जायेगा।''

अ.बापदादा 4.07.71

''विकर्म विनाश और शक्ति भरने की दो विधियां हैं। एक होता है पहले सारा निकाल कर फिर भरना, दूसरा होता है भरने से निकालना। अगर खाली करने की हिम्मत न है तो दूसरा भरते जाने से पहला आप ही खत्म हो जायेगा।'' अ.बापदादा 4.7.71

''कई समझते हम अपने को आत्मा समझ शान्त में बैठते हैं। परन्तु इससे भी कोई पाप भस्म नहीं होगा। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा निश्चय कर फिर मुझे याद करो।... जितना प्यार से बाबा को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और फिर वर्सा भी मिलेगा।''

सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

सुकर्म-अकर्म-विकर्म का राज़

सुकर्म से आत्मा की चढ़ती कला होती है। सुकर्म का समय पुरुषोत्तम संगमयुग ही है। परमात्मा की याद में किये गये कर्म ही सुकर्म होते हैं। वास्तव में अकर्म कोई होता नहीं है क्योंकि हर कर्म का फल आत्मा को अवश्य मिलता है। बाबा ने ये अकर्म शब्द सुकर्म और विकर्म की भेट में कहा है। सृष्टि के नियमानुसार हर कर्म का फल अवश्य होता है इसके कारण ही सतयुग-त्रेता में भी आत्मा की गिरती कला होती है, भले उसकी गति मन्द होती है। सतयुग-त्रेता के कर्मों को अकर्म क्यों कहा जाता है क्योंकि वहाँ आत्मा न सुकर्म करती है और न ही विकर्म अर्थात् सुकर्म से चढ़ती कला होनी चाहिए वह तो नहीं होती और विकार न होने से विकर्म भी नहीं होते परन्तु फिर भी कलायें उतरती हैं, इसलिए वहाँ के कर्मों को अकर्म कहा जाता है। द्वापर-कलियुग में आत्मा देहाभिमान के वशीभूत जो भी कर्म करती है, वह विकर्म ही होता है, क्योंकि विकारों के वशीभूत कर्म होते हैं, जो आत्मा की गिरती कला में तीव्रता का मूल कारण होता है।

''इन लक्ष्मी-नारायण ने कौन से कर्म किये जो ऐसा जन्म मिला ? यह बाप बैठ समझाते हैं।... बाप कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति भी समझाई है।... ये सब बातें वे ही समझ सकते हैं, जिन्होंने शुरू से भक्ति की होगी।''

सा.बाबा 17.08.2004 रिवा.

सुकर्म / सुकर्म करने के विधि-विधान का राज

''जो कर्म स्व के या सर्व के कल्याणार्थ किया जाता है और जिससे आत्मायें एवं प्रकृति पावन बनती है, उस कर्म को सुकर्म कहा जाता है।'' सुकर्म करने के लिए कर्म का ज्ञान अर्थात् कर्म और कर्म-फल (Cause and effect) का ज्ञान और कर्म करने की शक्ति का होना अति आवश्यक है, जो संगमयुग पर परमात्मा ही देते हैं।

ये सुकर्म की प्रक्रिया संगम पर ही चलती है, जब ज्ञान सागर परमात्मा इस धरा पर आते हैं और आत्माओं को अकर्म-विकर्म-सुकर्म की गहन गति का ज्ञान देते हैं और कर्मयोग की शिक्षा देते हैं। इस योग की प्रक्रिया से आत्मायें और प्रकृति दोनों पावन होते हैं। आत्माओं में आत्मिक भावना जाग्रत होती है, जिससे आत्मायें विश्व-कल्याण की भावना से कर्म करते हैं।

* श्रेष्ठ कर्म के लिए श्रेष्ठ संस्कार चाहिए। अपने को आत्मा और दूसरे को भी आत्मा देखना सबसे श्रेष्ठ संस्कार है, इस संस्कार को धारण करने से सदा ही श्रेष्ठ कर्म होंगे।

* जिसको कर्म का ज्ञान अर्थात् कर्म के कारण, कर्म के विधि-विधान, कर्म के फल का ज्ञान हो जायेगा, निश्चय हो जायेगा, उससे कब कोई अकर्तव्य हो नहीं सकता। शिव भगवानोवाच्य-''त्रिकालदर्शी होकर कर्म करो तो कब कोई विकर्म नहीं होगा।''

‘‘हर कर्म त्रिकालदर्शी बनकर करने से कभी भी कोई कर्म, विकर्म नहीं हो सकता। सदा सुकर्म होगा।... ऐसे ही साक्षी-दृष्टा बनकर कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म-बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे।’’ अ.बापदादा 30.1.79

‘‘दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए, जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।’’ सा.बाबा 14.08.69 रिवा.

* विचार करो - जिस कर्म, घटना, दृश्य के प्रति परमात्मा और निमित्त समर्थ आत्मायें तटस्त हैं, उनके लिए तुम व्यर्थ चिन्तन कर अपने ऊपर व्यर्थ बोझा रखकर अपने पुरुषार्थ को बाधित कर अपने भविष्य को अन्धकारमय क्यों बना रहे हो! अपने अधिकार में रहकर कर्तव्य करना ही जीवन की सफलता का प्रशस्त पथ है।

* किसी बात के विषय में निर्णय करने और विचार व्यक्त करने से पहले इस सत्य को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि बिना कारण के कार्य नहीं हो सकता और बिना अपराध के पुरुष या प्रकृति से दुख नहीं मिल सकता। भले ही कर्म फल का कुछ प्रतिशत आगे के लिए भी संचित होता है, जिससे ड्रामा का आगे का दृश्य घटित होता है और ये विश्व-नाटक सतत चलता है।

‘‘किसी भी विकार के अंशमात्र के वशीभूत हो कर्म करना अर्थात् विकर्म करना है।... सुकर्म अर्थात् श्रीमत के आधार पर कर्म करना। श्रीमत के आधार पर किया हुआ कर्म स्वत: ही सुकर्म के खाते में जमा होता है। सुकर्म और विकर्म को चेक करने की यह सहज विधि है।’’ अ. बापदादा 11.4.82

‘‘हर कर्म त्रिकालदर्शी बनकर करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता। सदा सुकर्म होगा।... ऐसे ही साक्षी-दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म-बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे।’’ अ.बापदादा 30.1.79

सुकर्म ही आत्मा की चढ़ती कला का आधार हैं। बाप ही श्रेष्ठ कर्म करने की विधि और विधान बताते हैं, जिसके अनुसार कर्म करने से आत्मा चढ़ती कला में जाती है और आत्मा के साथ विश्व की भी चढ़ती कला होती है।

‘‘जैसे आज के दिन को अवतरण का दिन कहते हो ना! तो रोज अमृतवेले ऐसे ही सोचो कि निद्रा से नहीं लेकिन शान्तिधाम से कर्म करने के लिए अवतरित हुए हैं और रात को कर्म करके शान्तिधाम में चले जाओ। अवतार अवतरित होते ही हैं श्रेष्ठ कर्म करने के लिए।’’ अ.बापदादा 7.03.86

‘‘ऊपर से नीचे आकर कर्म करना। ऊपर अर्थात् ऊंची स्थिति में स्थित होकर कोई भी साधारण कर्म करना लेकिन साधारण कर्म करते भी स्थिति ऊपर हो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा।’’ अ.बापदादा 7.03.86

‘‘बच्चों को यह स्लोगन सदा याद रखना चाहिए -‘जो कर्म हम करेंगे मुझे देख और सभी करेंगे।’ हर समय अपने को समझो हम ड्रामा स्टेज पर पार्ट बजा रहे हैं।’’ अ.बापदादा 18.5.69

‘‘हमको अभी राइट काम ही करना है। अंधों की लाठी बनना है अच्छे ते अच्छा काम।... बाप को याद नहीं करते, सर्विस नहीं करते तो रांग काम होता रहता है।’’ सा.बाबा 06.05.2005 रिवा.

‘‘चाहे कोई भी साधारण कर्म भी कर रहे हो तो भी बीच-बीच में अव्यक्त स्थिति बनाने का अटेन्शन रहे और कोई भी कार्य करो तो सदैव बापदादा को अपना साथी समझकर डबल फोर्स से कार्य करो।... ऐसे साथी रहने से वा बुद्धि को निरन्तर सत का संग बनाने से निरन्तर सतसंग होगा।’’ अ.बापदादा 4.07.71

अकर्म

‘‘वह कर्म जिसमें किसके हित-अहित की कामना न हो और जिसका प्रकृति पर भी अच्छा-बुरा प्रभाव न हो, वह कर्म अकर्म कहा जायेगा।’’

वास्तव में आत्माओं के द्वारा किया गया कोई भी कर्म, अकर्म नहीं होता है। हर आत्मा को अपने कर्म का अच्छा या बुरा फल अवश्य मिलता है। निराकार परमात्मा ही एक ऐसी सत्ता है, जिनके द्वारा किये गये कर्म, अकर्म होते हैं क्योंकि वह जन्म-मरण के चक्र से न्यारा सदा निराकार है, इसलिए कोई भी कर्म उसको प्रभावित नहीं करता है। वास्तव में परमात्मा के

कर्मों को अकर्म न कहकर सुकर्म ही कहा जायेगा क्योंकि परमात्मा विश्व-कल्याणार्थ अवतरित होते हैं और कर्म करते हैं परन्तु वे उसका फल नहीं भोगते इसलिए उनके कर्मों को अकर्म कह सकते हैं। परमात्मा के द्वारा किये गये कर्मों के अकर्म होने का कारण है कि परमात्मा निराकार है, ज्ञान के सागर हैं जिसके कारण वे निष्कामी हैं, अभोक्ता हैं। अन्य किसी भी आत्मा को अभोक्ता नहीं कहा जा सकता है और कोई भी आत्मा निष्कामी भी नहीं हो सकती है। हर आत्मा को जाने-अन्जाने अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है और देखा जाये तो जो भी देहधारी हैं, उनमें कर्म के पीछे सूक्ष्म रूप से कामना नीहित रहती ही है, भले ही वह आत्म-कल्याण की ही क्यों न हो। वास्तव में देखा जाये तो सत्य ये है कि परमात्मा ज्ञान सागर है और आकर आत्माओं को सारा ज्ञान देते हैं परन्तु विश्व-कल्याण के लिए आत्माओं को ही निमित्त बनाते हैं। इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि तुम बच्चों को ही राज करना है, मुझे तो राज करना नहीं है इसलिए विश्व-कल्याण का कर्तव्य भी तुमको ही करना है।

सतयुग-त्रेता में आत्माओं में देह-भान होता है लेकिन देहाभिमान नहीं होता है, जिसके कारण आत्मा का देह पर शासन होता है। देह-भान होने के आधार पर ही वे अपने-पराये का निर्णय करते हैं परन्तु सतयुग-त्रेता में सम्पत्ति-साधन अत्यधिक होते हैं और उपभोक्ता कम होते हैं, इसलिए किसको किसी व्यक्ति में मोह या वस्तु में आसक्ति नहीं होती है। इसलिए किसी में किसी के अहित की भावना भी नहीं होती है इसलिए कोई कर्म विकर्म नहीं होता है। साथ ही आत्माओं में किसी के कल्याण की भावना भी नहीं होती है क्योंकि वहाँ कोई गरीब-भिखारी, दुखी-अशान्त होता ही नहीं है इसलिए किसी का कर्म सुकर्म भी नहीं होता है। इस प्रकार वहाँ न विकर्म होते हैं और न ही सुकर्म होते हैं, इसलिए वहाँ के कर्मों को बाबा ने अकर्म कहा है। यदि अन्तर्दृष्टि से देखें तो वहाँ देवताओं की प्रालब्ध धीर2 कम होती जाती है, आत्मा की कलायें भी कम होती जाती हैं, इसलिए कर्म या उपभोग का प्रभाव तो होता ही है लेकिन बहुत सूक्ष्म। वहाँ आत्मायें संगम पर किये कर्मों के फल और परमात्मा से मिले वर्से का उपभोग करती हैं, इसलिए उनके कर्मों को अकर्म कहा जाता है।

''बाप कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझाते हैं ।... सतयुग में बुरे कर्मों का नाम भी नहीं होता है। यहाँ तो अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के कर्म होते हैं इसलिए सुख-दुख दोनों हैं।'' सा.बाबा 01.02.2005 रिवा.

Q. क्या सतयुग के कर्मां को अच्छे कर्म कहेंगे? यदि हाँ तो क्यों और कैसे, यदि नहीं तो क्यों? यदि नहीं तो सतयुग के कर्मो को क्या कहेंगे?

A. नहीं, क्योंकि वहाँ अच्छे-बुरे दोनों का प्रश्न ही नहीं क्योंकि अच्छे कर्म से आत्मा का कल्याण और चढ़ती कला होती है और बुरे कर्म से दुख होता है। सतयुग में ये दोनों बातें नहीं हैं, इसलिए वहाँ के कर्मों को न अच्छा कहा जा सकता है और न बुरा। वहाँ के कर्मों को सामान्य कर्म या व्यवहारिक कर्म कहा जायेगा। जिनको बाबा ने सुकर्म-विकर्म की तुलना में अकर्म कहा है।

विकर्म

जिन कर्मों के द्वारा व्यक्ति का, स्वयं का, अन्य आत्माओं का अहित हो या प्रकृति दूषित हो, जिससे अन्य आत्माओं को दुख-अशान्ति हो, आत्मा की शक्ति का अनुचित या अनियमित ह्रास हो वे कर्म विकर्म कहे जाते हैं। इसलिए जो कर्म देहाभिमान या 5 विकारों के वशीभूत होते हैं, वे कर्म विकर्म होते हैं।

द्वापर से दूसरे धर्म आने आरम्भ हो जाते हैं, धन-सम्पत्ति भी कम होती जाती है, आत्माओं में आत्मिक शक्ति का ह्रास होने के कारण देहाभिमान शक्तिशाली हो जाता है है, जिसके कारण आत्मा में 5 विकारों की प्रवेशिता होती है। आत्माओं में राग-द्वेष बढ़ जाता है, इन्द्रीयों के वशीभूत आत्माओं की इच्छायें-आकांक्षायें अधिक बढ़ती जाती हैं, इसलिए उनकी आपूर्ति के लिए आत्मायें जो भी कर्म करती हैं, वे प्राय: विकर्म होते हैं, जिससे आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास होता है। विकर्मों के कारण आत्माओं को दुख-अशान्ति होती है।

''तुम बहुत देहाभिमानी बन पड़े हो, बहुत विकर्म बन जाते हैं... एक मुख्य विकर्म यह करते हो कि बाप फरमान करते हैं कि अपन को आत्मा समझो, वह मानते नहीं हो तो जरूर विकर्म न होगा तब क्या होगा।'' सा.बाबा 10.3.69 रिवा.

''कई समझते हैं हम अपने को आत्मा समझ शान्त में बैठते हैं। परन्तु इससे भी कोई पाप भस्म नहीं होगा। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा निश्चय कर फिर मुझे याद करो।... जितना प्यार से बाबा को याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे और फिर वर्सा भी मिलेगा।'' सा.बाबा 20.6.72 रिवाइज

कर्म और कर्म फल का राज़

यह विश्व-नाटक कर्म-फल-कर्म पर आधारित एक घटना चक्र है। हर आत्मा को अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है और जाने-अन्जाने भोगना ही पड़ता है। इसलिए गीता में कहा है - हे अर्जुन तू कर्म कर, फल की इच्छा न रख। शिवबाबा भी फल की चिन्ता न कर श्रेष्ठ कर्म करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। कर्म ड्रामा अनुसार होता और कर्मो अनुसार आत्मा को सुख-दु:ख भोगना पड़ता है परन्तु ड्रामा समझकर पुरुषार्थहीन नहीं बनना है। पुरुषार्थ ही प्रालब्ध का आधार है।

ड्रामा अनुसार कोई भी कर्म फल के बिना नहीं होता अर्थात् हर कर्म का फल अवश्य होता है और कोई भी फल कर्म के बिना नहीं मिलता अर्थात् किसी भी आत्मा को कोई भी अच्छा या बुरा फल मिल रहा है, वह उसके पूर्व कर्मों का परिणाम है। इसलिए किसी की प्राप्तियों से न ईश्र्या हो और न ही घृणा इस सत्य को जानकर श्रेष्ठ कर्म करने का पुरुषार्थ ही श्रेष्ठ फल की आधार शिला है। फल की इच्छा करने से फल नहीं मिलेगा, कर्म करने से ही फल मिलेगा।

''यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के, निमित्त और निर्माण के, कर्म फिलॉसाफी के, अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।'' अ.बापदादा 20.01.1986

परमात्मा न किसको सुख देता है और न ही दुख देता है। वह सर्व आत्माओं को सुख का रास्ता बताता है, जो चलता है, वह पाता है। ड्रामा प्लेन अनुसार हर आत्मा को सुख-दुख उसके कर्मों अनुसार प्रकृति देती है।

इस विश्व-नाटक का अन्तर्जाल (Internet) इतना सूक्ष्म और शक्तिशाली है कि हर आत्मा के मन में उठने वाले संकल्प का भी फल उसको प्रकृति द्वारा मिलता है।

''कहते हैं - भूल हो गई, क्षमा करो। बाबा कहते हैं - इसमें क्षमा की बात नहीं।... कोई भी उल्टा-सुल्टा कर्म करते हो, वह जमा होता है, जिसका अच्छा-बुरा फल अवश्य मिलता है।'' सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

''बाप कर्मों की गुह्य गति बैठ समझाते हैं।... मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ।... मैं सभी आत्माओं का बाप हूँ, पढ़ाता भी आत्माओं को हूँ। इसको कहा जाता है स्प्रीचुअल फादर।... आत्मा को कर्मों अनुसार ही रोगी-निरोगी शरीर आदि मिलता है।'' सा.बाबा 5.10.04 रिवा.

अबोध व्यक्ति के द्वारा किये गये कर्म से जानकार व्यक्ति के द्वारा किये गये कर्म का फल कई गुणा अधिक होता है। ज्ञानी आत्मा को साधारण मनुष्य की अपेक्षा अच्छे कर्म का सौगुणा फल भी मिलता है तो विकर्म का सौगुणा दण्ड भी मिलता है।

''निमित्त बनने वाले का एक सेकण्ड में एक का पद्मगुणा बनना भी है, प्राप्ति का चान्स है और अगर निमित्त बने हुए कोई ऐसा कर्म करते हैं, जिसको देख और सभी विचलित हों, तो उसका पद्मगुणा उल्टी प्राप्ति भी होती है।'' अ.बापदादा 16.1.77

''निर्बल आत्मा है वा शक्तिशाली आत्मा है, सर्वशक्ति सम्पन्न है वा शक्ति सम्पन्न है - यह सब पहचान कर्म से ही होती है क्योंकि कर्म द्वारा ही व्यक्ति और परिस्थिति के सम्बन्ध वा सम्पर्क में आते हैं। इसीलिए नाम है - कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्मेन्द्रियाँ, कर्मभोग, कर्मयोग।'' अ. बापदादा 19.3.82

''यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के पुरुषार्थ और प्रालब्ध के निमित्त और निर्माण के कर्म फिलॉसाफी के अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।'' अ.बापदादा 20.1.86

‘‘कोई ने हॉस्पिटल बनाई तो दूसरे जन्म में रोग कम होगा। ऐसे नहीं कि पढ़ाई जास्ती मिलेगी, धन भी जास्ती मिलेगा। उसके लिए तो सब कुछ करो। कोई धर्मशाला बनाते हैं तो दूसरे जन्म में महल मिलेगा, ऐसे नही कि तन्दुरुस्त भी रहेंगे। बाप सब बातें समझाते हैं।’’ सा.बाबा 05.05.2005 रिवा.

‘‘ब्राह्मण विश्व की किसी भी आत्माओं को देखते हैं, उनको सिर्फ कल्याण की ही भावना से देखते हैं। सम्बन्ध और लगाव की भावना से नहीं। सिर्फ ईश्वरीय सेवा के भाव से देखते। पंचतत्वों को देखते हुए, प्रकृति को देखते हुए, प्रकृति के वश नहीं होंगे।... अभी जो प्रकृति को वश नहीं कर सकते, वे भविष्य में सतोप्रधान प्रकृति के सुख को नहीं पा सकते।’’

अ.बापदादा 13.6.73

‘‘पुरुषार्थी को कभी भी यह समझना नहीं चाहिए कि मेरे पुरुषार्थ करने के बाद कोई असफलता भी हो सकती है। सदैव समझना चाहिए कि जो पुरुषार्थ किया, वह कभी व्यर्थ नहीं जा सकता।’’ अ.बापदादा 27.4.72

‘‘जब बीज अविनाशी ही है तो फल न निकले, यह तो हो नहीं सकता। कोई पीछे आने वाले हैं तो अभी कैसे आयेंगे?... कब भी सर्विस करते यह नहीं देखना वा सोचना कि जो किया, वह व्यर्थ गया।’’ अ.बापदादा 11.7.71

‘‘अगर कोई अकर्तव्य कार्य देखता भी है तो देखने का असर हो जाता है। उसका भी हिसाब बन जाता है।... अशुद्ध संकल्प बुद्धि में भी अगर टच होते हैं तो भी सम्पूर्ण वैष्णव वा सम्पूर्ण प्योरिटी नहीं कहेंगे।’’ अ.बापदादा 22.6.71

सतयुग में जो कर्म करते, खाते-पीते, उसका फल तो होता है परन्तु उसे विकर्म या पाप नहीं कह सकते क्योंकि उससे किसी को दुख-सुख नहीं देते, अपनी जमा कमाई खाते रहते और खाकर खत्म कर देते।

‘‘यह भी तुम बच्चे अभी जानते हो - 21 जन्म तुम पुण्यात्मा रहते हो, फिर पापात्मा बनते हो। जहाँ पाप होता है, वहाँ दुख जरूर होगा। ... ये सब बातें उनकी बुद्धि में ही बैंठेंगी, जिनकी बुद्धि में कल्प पहले बैठीं होंगी।’’ सा.बाबा 21.8.04 रिवा.

‘‘परमपिता परमात्मा से स्वर्ग की राजाई का वर्सा पाना है। अगर यहाँ आकर और चले जाये तो सभी कहेंगे शायद ईश्वर नहीं है। जो ऐसे-ऐसे छोड़कर निकलते हैं, उनको देख कितने संशयबुद्धि बन पड़ते हैं, उन सभी का पाप चढ़ जाता है। उनकी गति बिल्कुल गन्दी हो जाती है।’’ सा.बाबा 2.5.73 रिवा.

‘‘यहाँ कोई भी गन्दी दृष्टि होनी न चाहिए। भाई-बहन समझ, फिर गन्दा नाता रखना, वह तो पता नहीं कितना सजायें खायेंगे! बड़ी कड़ी सजायें खाते हैं। गर्भ जेल में सजायें खानी पड़ती हैं ना! बीमारियाँ आदि होती हैं, वह अलग हैं। सजायें अलग हैं। गर्भ जेल में सजा बहुत मिलती हैं।... तुम श्रीमत पर न चले और नाम बदनाम कराया तो तुम्हारे जितना दुख दुनिया में कोई नहीं देखता।’’

सा.बाबा 14.12.73 रिवा.

परमात्मा के इन सब महावाक्यों को सुनने-समझने के बाद इस सत्य को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए कि जो आगे बढ़ रहा है, वह अपने ही कर्म के फल स्वरूप आगे बढ़ रहा है और जो कुछ दुख भी भोग रहा है, वह भी अपने कर्म से ही भोग रहा है, हमको राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा दोनों से मुक्त हो साक्षी होकर देखना है और अपना कर्म ऐसा करना है, जिसका फल अपने लिए भी हितकर हो और अन्य के लिए भी हितकर हो।

निष्काम कर्म का राज़

निष्काम कर्म का बहुत महत्व है, इसलिए निष्काम कर्मयोग का भी गायन है परन्तु प्रश्न है - क्या कोई कर्म निष्काम होता है? यदि होता है तो कब और कैसे? इसका राज़ अभी परमात्मा ने बताया है कि किसी भी आत्मा का कोई कर्म निष्काम हो नहीं सकता। कर्म करते समय कोई न कोई सूक्ष्म कामना मन में रहती ही है। भले ही वह कामना स्थूल हो या सूक्ष्म। एक परमात्मा ही निष्काम कर्म करते हैं क्योंकि उनको अपनी देह है ही नहीं, इसलिए वे फल भोग ही नहीं सकते और देह नहीं है तो कामना किस बात की। इसलिए एक परमात्मा के कर्म ही निष्काम होते हैं।

''राइट हैण्ड सेवाधारी अर्थात् सदा निष्काम सेवाधारी।... गुप्त सेवाधारी अर्थात् निष्काम सेवाधारी। तो एक हैं निष्काम सेवाधारी, दूसरे हैं नामधारी सेवाधारी।... जो निष्काम सेवाधारी हैं, वे अविनाशी नाम कमाने वाले सेवाधारी हैं, उनके दिल का आवाज दिल तक पहुँचता है।'' अ.बापदादा 22.2.86

बाबा के कहने का अर्थ कोई स्थूल चीज या मान-शान की कामना रखकर सेवा नहीं करनी है। कर्म करना हमारा कर्तव्य है, फल परमात्मा या प्रकृति के द्वारा मिलेगा ही। हमको इच्छा नहीं रखनी है क्योंकि इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी।

''ललकार न होने का कारण क्या है?... कई बातों को अंगीकार कर लेते हैं चाहे स्थूल में चाहे सूक्ष्म में।... मैंपन निकलकर बाबा-बाबा शब्द आयेगा तब ललकार होगी। परमात्मा में ही परम बल होता है।... साकार रूप में कब कहा कि मैं यह चला रहा हूँ, मैंने मुरली अच्छी चलाई।'' अ.बापदादा 2.04.70

''स्नेह और शक्ति दोनों की आवश्यकता है। शक्ति रूप से विजयी बनते हो और स्नेह रूप से सम्बन्ध में आते हो। ... बाप को भी सर्वशक्तिवान और प्यार का सागर भी कहते हैं।... अपने को सदा सफलता का सितारा समझना है। प्रत्यक्षफल की भी कामना नहीं रखने वाले सफलता को पाते हैं।'' अ.बापदादा 5.04.70

''सभी आत्माओं का बाप एक है, वह अभी आया हुआ है परन्तु सब तो मिल भी नहीं सकेंगे। इम्पॉसिबुल है।... याद फिर भी पतित-पावन को ही करते हैं।... एक बाप ही है जो तुम बच्चों को पढ़ाकर विश्व का मालिक बनाते हैं, खुद नहीं बनते हैं। इसलिए उनको कहा जाता है - निष्काम सेवाधारी। मनुष्य कहते हैं - हम फल की आश नहीं रखते, निष्काम सेवा करते हैं परन्तु ऐसे होता नहीं है।... कर्म का फल अवश्य मिलता है।'' सा.बाबा 21.5.05 रिवा.

विकर्माजीत सम्वत् और विकर्मी सम्वत् का राज़

भारत में दो संवत् मुख्य रूप से प्रचलित हैंङ एक है विक्रम सम्बत् और दूसरा है शक सम्वत्। परन्तु बाबा ने विक्रम सम्वत् की तुलना विकर्म सम्वत् से की है और उसके आधार पर विकर्माजीत और विकर्मी सम्वत् का राज समझाया है।

''विकर्माजीत सम्वत् को 5000 वर्ष हुए हैं, फिर बाद में शुरू होता है विकर्म सम्वत्।... बाप कहते हैं - मैं तुमको कर्म-अकर्म-विकर्म की गति समझाता हूँ।'' सा.बाबा 21.7.05 रिवा.

कर्म और ड्रामा के विधि-विधान के सम्बन्ध का राज

ये सृष्टि एक कर्म क्षेत्र है, जहाँ कोई भी आत्मा स्थूल व सूक्ष्म कर्म के बिना रह नहीं सकती। ड्रामानुसार हर आत्मा कर्म करती है और कर्मानुसार उसको फल मिलता है। कर्म और फल का विधि-विधान भी ड्रामा में अविनाशी नूँधा हुआ है, जिसके अनुसार आत्मा जो कर्म करती है, उसके अनुसार उसको फल अवश्य मिलता है। परमात्मा भी अपने निश्चित समय पर आकर इस विश्व-नाटक और कर्म के विधि-विधान का राज समझाता है।

कर्मातीत अवस्था का राज़

आत्मा की कर्मातीत अवस्था क्या और कब होती है। इस सृष्टि पर पार्ट बजाते भी कर्मातीत अवस्था का अनुभव क्या होगा, वह सब राज़ भी अभी बाबा बताते हैं। कर्मातीत अर्थात् कर्म करते भी कर्म के बन्धन से अतीत अर्थात् न्यारे। वास्तविकता तो ये है कि आत्मा की पूर्ण कर्मातीत अवस्था जब आत्मा परमधाम में होती है, तब ही होती है, उसके अतिरिक्त आत्मायें जो भी और जब भी कर्म करती हैं, उसका देश-काल और परिस्थिति अनुसार फल मिलता ही है। यहाँ आत्मा अपनी बीजरूप स्थिति में स्थित होकर कर्मातीत अवस्था का अनुभव ही करती है और उसकी निकटतम स्थिति अर्थात् जैसे कर्मातीत का अनुभव कर सकती है। इस कर्मक्षेत्र पर आते भी पूर्ण कर्मातीत स्थिति एक परमात्मा की ही होती है। वह कर्मातीत स्थिति परम सुखमय है, इसलिए बाबा सदा ही हमको उस स्थिति के अनुभव के लिए प्रेरणा देते हैं और उसको दीर्घकालिक बनाने की शिक्षा देते हैं,

जिससे अन्त समय हम पूर्ण कर्मातीत स्थिति को पा सकें, जो सर्व आत्माओं को पानी ही है, वह चाहे योगबल से हो या सजायें भोग कर हो क्योंकि परमधाम घर में तो कर्मातीत बन कर ही जा सकते हैं।

कर्मातीत स्थिति का अनुभव संगमयुग पर ही होता है और हो सकता है, जब हमको कर्म से परे स्थिति का ज्ञान होता है, परमात्मा द्वारा उसका अनुभव होता है और अभ्यास द्वारा वह स्थिति चिर-स्थाई होती है। और तो सारे कल्प में कर्मों के हिसाब-किताब के वशीभूत सुख-दुख, कर्म-सम्बन्ध, कर्म-बन्धन का ही अनुभव होता है।

''बच्चे में नॉलेज भी नहीं होती और कोई अवगुण भी नहीं होता, इसलिए उसे महात्मा कहा जाता है क्योंकि पवित्र है।... जितना छोटा बच्चा, उतना नम्बरवन फूल। बिल्कुल ही जैसे कर्मातीत अवस्था है। कर्म-अकर्म-विकर्म को कुछ भी नहीं जानते।''

सा.बाबा 01.12.2004 रिवा.

''आपके और बाप के मेहमान समझने में फर्क है। मेहमान उसको कहा जाता है जो आता है और जाता है।... जितना ऊपर की स्थिति में जायेंगे, उतना उपराम होते जायेंगे। शरीर में होते हुए भी इस उपराम अवस्था तक पहुँचना है। बिल्कुल देह और देही अलग महसूस हो।... ऐसी स्थिति की स्टेज को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।'' अ.बापदादा 26.1.70

Q. आत्मा पावन होगी, कर्मातीत स्थिति के निकट होगी, आत्मा पर पापों का बोझा नहीं होगा तो उसकी निशानी उस आत्मा को क्या अनुभव होगा और अन्य आत्माओं को क्या अनुभव होगा ?

आत्मा परमधाम की रहने वाली है, इसलिए जब आत्मा पापों से मुक्त, कर्मातीत स्थिति के निकट होती है तो उसे ये साकार वतन रास नहीं आयेगा। उसको स्वत: घर की आकर्षण होगी, याद करने की आवश्यकता नहीं होगी। वह इस जगत से उपराम होगी अर्थात् इस जगत की किसी वस्तु या व्यक्ति से लगाव नहीं होगा, जिससे विश्व की हर आत्मा के प्रति उसकी शुभ भावना और शुभ कामना होगी। आत्मा में आकर्षण होगा, जिससे अन्य आत्माओं की भी उसके प्रति शुभ भावना होगी।

वह स्वयं को देह के बन्धन से मुक्त अनुभव करेगी और मुक्त होने के कारण वह दूसरों के संकल्पों को सहज समझने में समर्थ होगी और अपने संकल्पों को दूसरों तक पहुँचाने में समर्थ होगी। उसके सानिध्य से, वचन से अन्य आत्मायें भी अल्प काल के लिए अपने को देह से मुक्त आत्मिक स्वरूप में अनुभव करेंगी।

हर कर्म में मेहनत कम और सफलता अधिक होगी। अपने-पराये की दृष्टि खत्म हो जायेगी, जिससे वह साक्षी होकर इस विश्व का सारा खेल देखेगा और ट्रस्टी होकर पार्ट बजायेगा।

कर्मभोग होते भी उसकी वेदना से मुक्त होगा। इसीलिए कहा गया है - Events can't be changed but we can change our attitude towards events. अर्थात् कर्मभोग तो होगा परन्तु उसकी वेदना की महसूसता नहीं या कम से कम होगी। कर्मातीत स्थिति अर्थात् आत्मा की स्थिति ऊर्ध्वमुखी हो जाये अर्थात् आत्मा को घर परमधाम की स्वभाविक आकर्षण हो, उसके लिए पुरुषार्थ न करना पड़े। इस दुनिया में रहते भी निमित्त मात्र पार्ट बजाये।

''मन अमन तब हो जब शरीर में नहीं हो। बाकी मन अमन तो कभी होता ही नहीं है। देह मिलती है कर्म करने के लिए तो फिर कर्मातीत अवस्था में कैसे रहेंगे? कर्मातीत अवस्था कहा जाता है मुर्दे को। जीते जी मुर्दा बनना अर्थात् शरीर से डिटैच। बाप तुमको शरीर से न्यारा बनने की पढ़ाई पढ़ाते हैं।'' सा.बाबा 18.12.04 रिवा.

''स्नेह और शक्ति वाली अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है। जिसके लिए स्नेह है, उसके समान बनना है, यही स्नेह का सबूत है। ... जितना समानता में समीप होंगे, उतना ही समझो कर्मातीत अवस्था के समीप होंगे।'' अ. बापदादा 9.11.69

''अभी-अभी शरीर में आये, फिर अभी-अभी अशरीरी बन गये, यह प्रैक्टिस करनी है। इसी को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। ... शरीर और आत्मा दोनों का न्यारापन चलते-फिरते भी अनुभव होना है।... शरीर की दुनिया, सम्बन्ध वा अनेक जो भी वस्तुयें हैं, उनसे बिल्कुल डिटेच होंगे, जरा भी लगाव नहीं होगा, तब न्यारा हो सकेंगे।'' अ.बापदादा 21.1.72

''इसमें चित्र आदि की कोई दरकार नहीं है। हमको कोई चित्र आदि याद नहीं करना है। अन्त में सिर्फ यह याद रहेगा कि हम आत्मा हैं, मूलवतन की रहने वाली हैं, यहाँ हमारा पार्ट है।... ये चित्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग की चीजें।''

सा.बाबा 14.7.05 रिवा.

कर्मातीत स्थिति और कर्म-बन्धन की स्थिति का राज

यथार्थ और सदाकाल की कर्मातीत स्थिति तो आत्मा की अन्त में ही होती है, जब आत्मा परमधाम जाती है। उससे पहले उस स्थिति का अनुभव आत्मायें अशरीरी बनकर कर सकती हैं। ये देह में रहते देह से न्यारी कर्मातीत स्थिति का अनुभव परमानन्दमय होता है। द्वापर से लेकर आत्माओं के जो भी कर्म हैं वे कर्म-बन्धन के ही निमित्त बनते हैं क्योंकि उनके फलस्वरूप आत्मायें दुख भोगती हैं। कर्मातीत स्थिति में न सुख का सम्बन्ध होता है और न ही कर्म के बन्धन का दुख होता है, न कर्म होता है और न कर्म का संकल्प होता है। वह निर्संकल्प स्थिति होती है, जिसको हठयोग में निर्संकल्प समाधि के नाम जाना जाता है और ज्ञान मार्ग में बीजरूप स्थिति के नाम से जाना जाता है

''कर्मातीत अर्थात् 1. लौकिक और अलौकिक कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त, 2. पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब-किताब और वर्तमान जीवन के कमजोर स्वभाव-संस्कार... इस बन्धन से भी मुक्त, 3. पुरानी दुनिया में इस पुराने अन्तिम शरीर में किसी प्रकार की व्याधि, जो श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये, उससे भी मुक्त।'' अ.बापदादा 18.1.87

कर्मभोग और कर्मयोग का राज़ और कर्मभोग से सहज मुक्त होने की विधि का राज़ /
कर्मभोग के सूली से कांटा बनने का राज़

कर्मभोग दुख का कारण है और कर्मयोग सुख का आधार है। कर्मभोग और कर्मयोग दोनों ही आत्मा के विकर्मों का खाता खत्म करने के आधार है। कर्मभोग अनेच्छा से और कर्मयोग स्वेच्छा से विकर्मों का खाता भस्म करने की प्रक्रियायें हैं। कर्मभोग और कर्मयोग की वास्तविकता को जानकर, स्वस्थिति में स्थित होकर कर्मभोग को चुक्तू करने से कर्मभोग की महसूसता कम हो जाती है अर्थात् शूली से कांटा हो जाती है। स्वस्थिति में स्थित होकर कर्मभोग को चुक्तू करना ही कर्मयोग है। परमात्मा की याद से ही आत्मा अपनी स्व-स्थिति अर्थात् आत्मिक स्वरूप की स्थिति में स्थित होने में समर्थ होती है। कर्मयोग ही कर्मभोग पर विजय पाने या उससे मुक्त होने का एकमात्र उपाय है। योग द्वारा देह से न्यारे हो जायें तो भी उसकी वेदना की महसूसूता से मुक्त हो जायेंगे अथवा योग में कर्मभोग से मुक्त होने का कोई उपचार भी टच हो सकता है जिसके द्वारा भी हम कर्मभोग से मुक्त हो सकते हैं। कलियुग के अन्त में कर्मभोग का आना अवश्यम्भावी है। कोई कर्मभोग न आये ये परिकल्पना भी निरर्थक है। कर्मभोग का कारण भी बाबा ने बताया है।

कर्मभोग आत्मा को अनुभवी भी बनाता तो अन्तिम परीक्षा में पास होने के लिए पथ प्रदर्शन भी करता है। आत्माओं के परस्पर के हिसाब-किताब चुक्ता करने में भी कर्मभोग का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्म भोग आये तब ही आत्मा के हिसाब किताब चुक्तू होने का अवसर आये और वह चुक्ता हो। भक्त कवि रहीम ने गाया है - रहिमन विपदा हू भली जो नारायण रत होये। जैसे कर्मयोग से कर्मभोग की वेदना कम होती है, वैसे ही कर्मभोग के समय कर्मभोग का अधिक चिन्तन करने से कर्मभोग की वेदना और भी बढ़ जाती है। कर्मभोग की वेदना को सहन करते भी मन में किसके प्रति कोई निगेटिव संकल्प न आये, यही कर्मयोग द्वारा कर्मभोग पर विजय पाने की कसौटी है। नेगेटिव संकल्प कर्मभोग की वेदना को भी बढ़ाते है तो आगे के लिये कर्मभोग का बीजारोपण भी करते हैं अर्थात् हमारा नया दुखदायी हिसाब-किताब भी आत्माओं के साथ बनाते हैं।

''बाप जो समझाते हैं, उसको उगारना चाहिए। यह भी बाप ने समझाया है - कर्मभोग की बीमारी उथल खायेगी, माया सतायेगी परन्तु मूँझना नहीं चाहिए। बीमारी में तो मनुष्य और ही भगवान को जास्ती याद करते हैं।... तुम और सब बातें भूल मुझे याद करो।''

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

हमारा अपना कर्मभोग ही हमको दूसरे की वेदना की महसूसता कराता है, हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन करता है और पीड़ितों के प्रति सद्भावना जाग्रत करता है। इसीलिए गायन है - जाके पैर न पड़े बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई। इस प्रकार हम देखें तो कर्मभोग भी हमको अनुभवी बनाता है।

यदि हमको कोई कडुआ फल खाने को मिल रहा है या हम खाने के लिए बाध्य हो रहे हैं तो जरूर हमने ऐसा बीज बोया है, जिसका ये फल निकला है। इस सत्य को ध्यान में रख हमको भूतकाल कर्मो को खुशी से चुक्ता करना है और वर्तमान में कोई ऐसा कर्म रूपी बीज नहीं बोना है, जिसका कडुवा फल भविष्य में खाना पड़े।

कर्मभोग आया है, आना अवश्यम्भावी है क्योंकि आधाकल्प से अनेक विकर्म आत्मा ने किये ही हैं और आना भी चाहिए क्योंकि ये कर्मभोग भी हमको अनेक अनुभव कराता है और अन्तिम परीक्षा में पास होने के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करता है। हम यहाँ पूर्ण और सदा काल के लिए स्वस्थ हो जायेंगे या कोई व्यक्ति या उपचार हमको सदा काल के लिए स्वस्थ कर देगा, ये आशा रखना या परिकल्पना करना भी अज्ञानता है अर्थात् भूल होगी। परन्तु कर्मभोग से मुक्त होने के लिए यथा सम्भव पुरुषार्थ करना, उपचार करना, सहयोग लेना और देना हमारा कर्तव्य है, जो करना है और करना भी चाहिये। ये भी विश्व-नाटक में हमारा एक पार्ट है जो बजाना ही है और बजाना ही होगा परन्तु वह पार्ट भी खुशी से बजायें यही ज्ञान है। आत्मिक-स्वरुप में स्थित होकर रहना और पार्ट बजाना ही सर्व श्रेष्ठ पुरुषार्थ और उपचार है।

राग-द्वेष के वशीभूत किये गये कर्म आत्मा के बन्धन अर्थात् कर्मभोग का कारण हैं और विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा, राग-द्वेष से मुक्त होकर साक्षी होकर पार्ट बजाना, यथोचित उपचार करना कर्मभोग से सहज मुक्त होने का साधन है।

कर्मभोग चुक्तू करने में भी आत्मा के परस्पर हिसाब किताब का महत्वपूर्ण स्थान है। ड्रामानुसार कर्मभोग का आना भी आवश्यक है। यदि कर्मभोग आये ही नहीं तो कर्मयोग की परीक्षा भी कैसे हो ? भले ही हम देखते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने कर्मयोग से कर्मभोग को चुक्ता किया परन्तु अन्त घड़ी तक कर्मभोग ने पीछा किया और बाबा को कर्मयोग के द्वारा कर्मभोग से युद्ध लड़ना पड़ा और अन्त में उन्होंने कर्मयोग से कर्मभोग पर जीत पाई।

''खेल तो सिर्फ 10-15 मिनट का ही था। उस थोड़े से समय में ही अनेक खेल चले। उसमें भिन्न-भिन्न अनुभव हुए। पहला अनुभव तो यह था कि पहले जोर से युद्ध चल रही थी। किसकी ? योगबल और कर्मभोग की। कर्मभोग भी फुल फोर्स में अपनी तरफ खींच रहा था और योगबल भी फुल फोर्स में ही था। ऐसे अनुभव हो रहा था कि जो भी शरीर के हिसाब-किताब रहे हुए थे, वे फट से योग-अग्नि में भस्म हो रहे थे और मैं साक्षी होकर देख रहा हूँ। जैसे अखाड़े में बैठ मल्लयुद्ध देखते हैं। मतलब तो दोनों का फोर्स पूरा ही था। कुछ समय बाद कर्मभोग तो बिल्कुल निर्बल हो गया, बिल्कुल दर्द गुम हो गया। ऐसे ही अनुभव हो रहा था कि आखरीन में योगबल ने कर्मभोग पर जीत पा ली। उस समय तीन बातें साथ-साथ चल रही थी। एक तरफ तो बाबा से बातें कर रहा था... तीसरी तरफ यह भी अनुभव हो रहा था कि कैसे शरीर से आत्मा निकल रही है।... डेड साइलेन्स का अनुभव हो रहा था। देख रहा था कि कैसे एक-एक अंग से आत्मा अपनी शक्ति छोड़ती जा रही है। मृत्यु क्या चीज है, वह अनुभव हो रहा था।''

अ.बापदादा का सन्देश 7वें दिन

बाबा का कमरा प्रभु प्यार का अनुभव भी कराता है, तो साकार तन द्वारा आत्माओं के प्यार और पालना की स्मृति भी दिलाता हैं और कमरे में बाबा की चारपाई उस युद्धक्षेत्र (Battle field) की भी याद दिलाती है और प्रेरणा देती है कि जहाँ ब्रह्मा बाबा ने कर्मभोग से कर्मयोग का युद्ध लड़ा और अन्तिम विजय पाई अर्थात् कर्मभोग पर कर्मयोग की विजय हुई और ब्रह्मा बाबा कर्मातीत बने।

स्व-स्वरूप की स्थिति परमानन्दमय भी है तो परम कल्याणमय भी है - जब कर्मभोग नहीं है या हल्का है तब इस आत्मिक स्वरूप की स्थिति का किया हुआ दृढ़ अभ्यास ही समय पर काम आता है अर्थात् कर्मयोग द्वारा कर्मभोग से मुक्त करने

में सहयोगी होता है। यदि पहले से अभ्यास न किया तो कर्मभोग के समय न ये स्थिति होगी और न इस स्थिति का अभ्यास सम्भव होगा। पहले से किया हुआ अभ्यास ही उस समय काम आता है अर्थात् उस दुख-दर्द की महसूसता से मुक्त होने में सहयोगी होता है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा देह का कठिन कर्मभोग होते भी उसकी महसूसता से मुक्त होगी और देहाभिमानी आत्मा हल्के कर्मभोग की पीड़ा भी अधिक महसूस करेगी।

''वाह-वाह के गीत गाओ। ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह-वाह! यह भी बोझ उतरता है।... मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है।'' अ.बापदादा 30.11.99

''कोई बीमारी वा दुख आदि है तो तुम सिर्फ याद में रहो। यह हिसाब-किताब अभी ही चुक्तू करना है।... गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं।'' सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

''इस समय के इस एक जन्म (पुरुषार्थ का फल) का अनेक जन्मों तक चलता है और वह अनेक जन्मों का (खाता) एक जन्म में खत्म होता है। तो अनेक जन्मों का हिसाब-किताब एक जन्म में खत्म करने के कारण कब-कब वह फोर्स रूप में आता है।... जब साक्षी होकर देखने लग पड़ते तो यह व्याधि बदलकर खेल रूप में हो जाती है।'' अ.बापदादा 23.3.70

आत्मा के लिए दैहिक भोगना, दुख-दर्द इतना दुखदायी नहीं है, जितना विकारों की बीमारी, व्यर्थ संकल्प की बीमारी, मानसिक बीमारी दुखदायी है। देह से न्यारा होकर ही इन सब भोगनाओं से निदान पा सकते हैं। इसमें व्यर्थ संकल्पों की सबसे बड़ी बाधा है, जो न उस स्थिति में स्थित होने देती है और न ही उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करने देती है। विकार ही कर्मभोग या दैहिक भोगना के मूल कारण हैं और यथार्थ ज्ञान की धारणा अर्थात् देह से न्यारा होने का पुरुषार्थ ही अभीष्ट पुरुषार्थ है, जो स्थिति सर्व प्रकार की कर्मभोग की वेदना से मुक्त है।

''मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की। चारों ही आवश्यक हैं।... तन का हिसाब-किताब होते भी स्व-स्थिति के कारण स्वस्थ अनुभव करता है। उनके मुख पर, चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते।... क्योंकि बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। वह कभी भी बीमारी के कष्ट का अनुभव नहीं करेगा, न दूसरे को कष्ट सुनाकर कष्ट की लहर फैलायेगा।'' अ.बापदादा

''तुम बच्चों को अपनी इस लाइफ से कभी तंग नहीं होना चाहिए क्योंकि यह हीरे जैसा जन्म गाया हुआ है। इसकी सम्भाल भी करनी होती है।... बीमारी में भी नॉलेज सुन सकते हैं, बाप को याद कर सकते हैं। जितने दिन जियेंगे कमाई होती रहेगी, हिसाब-किताब चुक्तू होता रहेगा।... कर्मातीत बनना है।'' सा.बाबा 10.02.2005 रिवा.

बिना कर्म के आत्मा को कोई भी प्रकार की भोगना हो नहीं सकती और कोई भी कर्म बिना फल के हो नहीं सकता अर्थात् आत्मा को कोई भी सुख या दुख उसके कर्म के फल स्वरूप ही मिलता है। कर्मभोग शब्द का प्रयोग बहुधा दुख की भोगना के लिए ही प्रयोग किया जाता है परन्तु यदि उसकी सत्यता पर विचार करें तो सुख या दुख दोनों ही कर्मभोग के रूप हैं। एक है सुख का भोग और दूसरा है दुख का भोग। दुख का कर्मभोग आत्मा का दुख या विकर्मों का खाता कम करता है और सुख का भोग आत्मा का श्रेष्ठ कर्मों के जमा का खाता कम करता है। इसीलिए तो सतयुग के 1250 साल में आत्मा की दो कलायें कम हो जाती हैं। कोई भी आत्मा अपने कर्म के भोग से बच नहीं सकती, इसलिए अच्छा यही है कि हम स्वेच्छा और शान्ति से उसको भोग कर पूरा करें, यही ज्ञान है। जैसे कर्मभोग आत्मा का विकर्मों का खाता खत्म करता है, सुख का भोग आत्मा का श्रेष्ठ कर्म के जमा का खाता कम करता है, ऐसे ही कर्मयोग आत्मा के श्रेष्ठ कर्म का खाता जमा करने का आधार है।

''यह पुराना शरीर है, कुछ न कुछ कर्मभोग चलता रहता है। इसमें बाबा मदद करे, यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।... बाप कहेंगे यह तुम्हारा हिसाब-किताब है। अपनी आप ही मेहनत करो, कृपा मांगो नहीं। जितना बाप को याद करेंगे, इसमें ही कल्याण है।''

सा.बाबा 18.1.05 रिवा.

''जब कर्मभोग का जोर होता है। कर्मेन्द्रियां बिल्कुल कर्मभोग के वश अपने तरफ आकर्षण करें, जिसको कहा जाता है बहुत दर्द है।... ऐसे समय कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाले, साक्षी हो कर्मेन्द्रियों को भोगवाने वाले जो होते हैं, उनको ही अष्ट रत्न कहा जाता है, जो ऐसे समय विजयी बन दिखाते हैं।'' अ.बापदादा 4.12.72

''ऐसे ही समझकर चलो कि अभी-अभी अल्पकाल के लिए नीचे उतरे हैं कार्य करने अर्थ लेकिन सदाकाल की ओरिजनल स्थिति वही है। फिर कितना भी कार्य करेंगे लेकिन कर्मयोगी के समान कर्म करते हुए भी अपनी निजी स्थिति और स्थान को भूलेंगे नहीं। यह स्मृति ही समर्थी दिलाती है। ... सर्व शक्तियां ही मास्टर सर्वशक्तिवान का जन्मसिद्ध अधिकार हैं।''

अ.बापदादा 22.6.71

''इस अलौकिक जीवन में आत्मा और प्रकृति दोनों की तन्दुरुस्ती आवश्यक है। जब आत्मा स्वस्थ है तो तन का हिसाब-किताब वा तन का रोग शूली से से कांटा बन जाता है।... उसके लिए वरदान अर्थात दुआ दवाई का काम कर देती है।... तन की शक्ति आत्मिक शक्ति के आधार पर सदा अनुभव कर सकते हो।'' अ.बापदादा 29.10.87

''बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है।... कर्मयोगी परिवर्तन की शक्ति से कष्ट को सन्तुष्टता में परिवर्तन कर सन्तुष्ट रह औरों में भी सन्तुष्टता की लहर फैलायेगा।... अर्जी डालने वाले कभी भी सदा राजी नहीं रह सकते हैं।'' अ.बापदादा 29.10.87

''निराकार और साकारी दोनों स्वरुप की स्मृति से स्वत: ही समर्थी-स्वरुप बन जायेंगे अर्थात् हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस का अनुभव हर समय होगा। चाहे शरीर का कर्मभोग सूली से कितना भी बड़े रुप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्म-भोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग सूली से कांटे समान अनुभव होगा।'' अ.बापदादा 27.1.76

दैहिक और मानसिक व्याधियों के कारण और उनके निदान का राज़

अनेक जन्मों के विकर्मों के फलस्वरूप मानसिक या दैहिक व्याधि का आना स्वभाविक है क्योंकि अभी आत्मा के सर्व हिसाब-किताब चुक्ता होते हैं परन्तु उसकी वेदना से मुक्त होने का सहज उपचार वैद्यराज परमात्मा ने हमको बताया है, जिससे हम उसकी वेदना से मुक्त हो सकते हैं। सर्व मानसिक और दैहिक व्याधियों की वेदना से मुक्त होने का एकमात्र सफल उपचार है देह से न्यारे अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाना क्योंकि आत्मिक स्वरूप सर्व व्याधियों से मुक्त है। इस स्थिति के लिए आत्मिक स्वरूप का बहुत समय का अभ्यास अनिवार्य है क्योंकि व्याधि के समय ये अभ्यास सम्भव नहीं है।

वास्तविकता को देखा जाये तो व्याधि का आना और वेदना की महसूसता ही हमको उसके उपचार के लिए बाध्य करती है, जो बाध्यता अनेक आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब को चुक्ता करने का साधन है। सबके साथ के हिसाब-किताब चुक्ता होने के बाद ही उसका पूर्ण निदान सम्भव है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना के वायब्रेशन देना भी एक सफल उपचार है, हिसाब-किताब चुक्ता करने का पुरुषार्थ है।

कर्म बन्धन और कर्म सम्बन्ध का राज़

बन्धन दुख का कारण है अर्थात् प्रतीक है और सम्बन्ध सुख का आधार अर्थात् प्रतीक है। कर्म ही आत्मा के बन्धन अर्थात् दुख का कारण बनता है और कर्म ही आत्मा के सुखदायी सम्बन्ध का आधार है। कर्मों के आधार पर ही दुखदायी या सुखदायी सम्बन्ध बनते हैं। कल्प के हिसाब से सतयुग-त्रेता कर्म-सम्बन्ध की दुनिया है और द्वापर-कलियुग कर्म-बन्धन की दुनिया है। सतयुग-त्रेता में आत्मा स्वतन्त्र होकर शरीर के द्वारा कर्म करती है, इसलिए बन्धन की बात नहीं लेकिन द्वापर-कलियुग में आत्मा देहाभिमान के वश होकर अर्थात् बन्धन में कर्म करती है इसलिए वे कर्म बन्धन अर्थात् दुख का कारण बन जाते हैं। सतयुग-त्रेता में कर्म-सम्बन्ध सुखदायी होते हैं क्योंकि इन कर्म-सम्बन्धों का बीज संगमयुग पर परमात्मा की श्रीमत के आधार पर बोया है। द्वापर से देहाभिमान के कारण विकारों के वशीभूत कर्म आत्मा के बन्धन का कारण बनते हैं अर्थात् उस

समय जो भी सम्बन्ध होते हैं, वे दुखदायी ही होते हैं, इसलिए उनको कर्म-बन्धन कहा जाता है। अभी फिर परमात्मा देही अभिमानी होकर सुखदायी कर्म-सम्बन्धों का बीज बोने की श्रीमत दे रहा है, रास्ता दिखा रहा है। जो करता है वह पाता है।

''बांधेली हैं। वास्तव में उनमें अगर ज्ञान की पराकाष्ठा हो जाये तो कोई भी उनको पकड़ न सके। परन्तु मोह की रग बहुत है।... शरीर सहित सबको भूल जाना है, अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना है।'' सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

''जो सच्चे बच्चे होते हैं, उनकी अवस्था पक्की रहती है, जरा भी विकार की तरफ ख्याल नहीं जाता है। ऐसे बच्चों पर अगर कोई जबरदस्ती जुल्म करते हैं तो उसका पाप उन पर नहीं चढ़ता है।... जितना जास्ती मारेंगे, तुम औरही नष्टोमोहा होती जायेंगी। मार भी अच्छा पद बना लेती है।... ये सितम भी कर्मभोग हैं। पुरुष, स्त्री को मारता है, ऐसे ही कोई मार सकता है क्या? तुमने भी उनको मारा होगा, वह हिसाब-किताब चुक्तू हो रहा है। यह सब कर्मों का हिसाब-किताब है।... अब तुम श्रीमत पर श्रेष्ठ कर्म कर रहे हो। सबसे श्रेष्ठ कर्म है सबको बाप का परिचय देना।'' सा.बाबा 30.6.02 रिवा.

''तीसरे नेत्र में कमजोरी आने की भी वही दो बातें हैं... एक लगाव और दूसरा पुराना स्वभाव।... अगर अपनी किसी विशेषता में भी लगाव है तो वह भी बन्धन-युक्त कर देगा, बन्धन-मुक्त नहीं करेगा क्योंकि लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा।''

अ.बापदादा 15.7.73

''अनेक संकल्पों की समाप्ति होकर एक शुद्ध संकल्प रह जाये, इस स्थिति का अनुभव कर रही हो? इस स्थिति को ही शक्तिशाली, सर्व कर्म-बन्धनों से न्यारी और अति प्यारी स्थिति कहा जाता है।'' अ.बापदादा 22.6.71

''जब बन्धनमुक्त हो जायेंगे तो जैसे टेलीफोन में एक दो का आवाज़ कैच कर सकते हैं, वैसे कोई के संकल्प में क्या है वह भी कैच करेंगे।'' अ.बापदादा 13.3.71

''दो शब्द हैं एक साक्षी और साथी। एक तो साथी सदैव साथ रखो। दूसरा साक्षी बनकर हर कर्म करो। तो साथी और साक्षी ये दो शब्द प्रैक्टिस में लायो। तो यह बन्धनमुक्त की अवस्था बहुत जल्दी बन सकती है।'' अ.बापदादा 13.3.71

साक्षी - कर्मातीत - मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का राज़

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा साक्षी होकर इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाते हुए और इसे देखते हुए परम सुख का अनुभव करती है। साक्षी स्थिति ही इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा का दर्पण है।

योग के द्वारा आत्मा पावन बनती है और अन्त में कर्मातीत स्थिति को धारण कर परमधाम जाती है, जो ही आत्मा की मुक्त स्थिति है। जो आत्मायें पुरुषार्थ से कर्मातीत बनती हैं, वे यहाँ भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती हैं और भविष्य नई जीवनुक्त दुनिया में भी श्रेष्ठ पद पाती हैं।

इस जीवन में ज्ञान से कर्मातीत और साक्षी स्थिति का अनुभव करना ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है। अभी का ये अनुभव यथार्थ और अति श्रेष्ठ अनुभव है। वास्तव में परमधाम में तो मुक्ति का कोई अनुभव ही नहीं होगा और सतयुग में सदाकाल का सुख तो होता है परन्तु जीवनमुक्ति क्या होती है, इसका भी वहाँ ज्ञान नहीं होगा। मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव अभी ही होता है, जब हमको सारा ज्ञान परमात्मा से मिलता है।

''यह कब भी नहीं समझना कि अन्तिम स्टेज का अर्थ यह है कि वह स्टेज अन्त में ही आवेगी। लेकिन अभी से उस सम्पूर्ण स्टेज को जब प्रैक्टिकल में लाते जावेंगे तब अन्तिम स्टेज को अन्त में पा सकेंगे। अगर अभी से उस स्टेज को समीप नहीं लाते रहेंगे तो दूर ही रह जावेंगे, पा न सकेंगे। इसलिये अब पुरुषार्थ में जम्प लगाओ।'' अ.बापदादा 9.11.72

''इस देह के भान को भी अर्पण करने से जब अपनापन मिट जाता है तो लगाव भी मिट जाता है।... ऐसे समर्पण होने वालों की निशानी क्या रहेगी? एक तो सदा योगयुक्त और दूसरा सदा बन्धनमुक्त। जो योगयुक्त होगा, वह बन्धन मुक्त जरुर होगा। योगयुक्त का अर्थ ही है देह के आकर्षण के बन्धन से भी मुक्त।'' अ.बापदादा 25.3.71

''जिन्होंने भी हाथ उठाया वह कभी संकल्प मात्र भी संकल्प वा शरीर के परिस्थितियों के अधीन वा संकल्प में थोड़े समय के लिए भी परेशानी व उसका थोड़ा भी लेशमात्र अनुभव करते हैं वा उससे भी परे हो गये हैं? जब बन्धनमुक्त हैं तो मन के वश अर्थात् व्यर्थ संकल्पों के वश नहीं होंगे।'' अ.बापदादा 13.3.71

''जब बन्धनमुक्त हैं तो मन के वश अर्थात् व्यर्थ संकल्पों के वश नहीं होंगे। व्यर्थ संकल्पों पर पूरा कन्ट्रोल होगा। परिस्थितियों के वश भी नहीं होंगे परिस्थितियों को सामना करने की सम्पूर्ण शक्ति होगी।... जो बन्धनमुक्त होगा वह सदैव योगयुक्त होगा।''

अ.बापदादा 13.3.71

''कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचने की निशानी जानते हो? समीपता की निशानी 'समानता'है। किस बात में? आवाज़ में आना व आवाज़ से परे हो जाना, साकार स्वरूप में कर्मयोगी बनना और साकार स्मृति से परे न्यारे निराकारी स्थिति में स्थित होना, सुनना और स्वरूप होना... इस सभी बातों में समानता। उसको कहा जाता है - कर्मातीत अवस्था की समीपता।''

अ.बापदादा 1.09.75

कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति का राज़

कर्मातीत अर्थात् कर्मो से अतीत, बीजरुप स्थिति अर्थात् मुक्त अर्थात् निर्सकंल्प स्थिति। विकर्माजीत अर्थात् जीवन-मुक्त स्थिति अर्थात् निर्विकल्प स्थिति अर्थात् विकर्मो से मुक्त और शुभ कर्मो में प्रवृत स्थिति। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा ही कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति का अनुभव कर सकती है। इसका ज्ञान भी अभी ही परमात्मा ने दिया है।

''माया पर जीत पाकर कर्मातीत अवस्था में जाना है। पहले-पहले तुम आये हो कर्म सम्बन्ध में। उसमें आते-आते फिर आधा कल्प बाद तुम कर्म बन्धन में आ गये। पहले-पहले तुम पवित्र थे। न सुख का कर्मबन्धन, न दुख का।... मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप मिट जायेंगे और तुम मेरे पास घर में आ जायेंगे।'' सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

''कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाये लेकिन वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा कि इसका यह पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले, यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता।... इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखो।'' अ. बापदादा 18.4.82

''तुम्हारी याद की यात्रा पूरी तब होगी जब तुम्हारी कोई भी कर्मेन्दियां धोखा न दें। कर्मातीत अवस्था हो जाये।... तुमको पूरा पुरुषार्थ करना है।'' सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

कर्मातीत स्थिति और विनाश के सम्बन्ध का राज़

जब आत्मा पावन होती है तो उसके लिए दुनिया अर्थात् प्रकृति भी पावन चाहिए। जैसे बाबा उदाहरण देते हैं कि जैसा व्यक्ति होता है, वैसा ही उसका फर्नीचर होता है। जब आत्मायें कर्मातीत अर्थात् पावन बन जायेंगी तो वे पतित दुनिया में रह नहीं सकती, उनके लिए दुनिया भी पावन चाहिए। जब दुनिया पावन बनेगी तो पतित दुनिया का विनाश भी अवश्य होगा। इस प्रकार देखें तो कर्मातीत स्थिति ही विनाश का आधार है। जो आत्मायें विनाश के पहले कर्मातीत बनेंगी, वे ही पावन दुनिया में पहले जायेंगी और जो विनाश के आधार पर पावन बनेंगी, वे अन्त में जन्म लेंगी।

''अगर ज्ञान की धारणा हो तो वह नशा सदा चढ़ा रहे। नशा कोई को बहुत मुश्किल चढ़ा रहता है। मित्र सम्बन्धी आदि सब तरफ से याद निकालकर एक बेहद की खुशी में ठहर जायें, यह है बड़ी कमाल। हाँ, यह भी अन्त में होगा, पिछाड़ी में सब कर्मातीत अवस्था को पा लेते हैं।'' सा.बाबा 09.02.2005 रिवा.

''बाप ने याद की यात्रा सिखलाई है, जिससे हम कर्म-बन्धन से न्यारे हो कर्मातीत हो जायेंगे।... अन्त में सब साक्षात्कार होंगे, फिर कुछ कर नहीं सकेंगे। ... अफसोस करेंगे, फिर भी सजा तो खानी ही पड़ेगी।'' सा.बाबा 06.05.2005 रिवा.

''ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि अब सर्व-आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दुखी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें। यह स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज होनी चाहिए क्योंकि इस संकल्प से ही और इस स्मृति से ही विनाश ज्वाला भड़क उठेगी और सर्व का कल्याण होगा।''

अ.बापदादा 3.02.74

''जो गायन है कि करते हुए अकर्ता। सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत। क्या ऐसी स्टेज रहती है? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो, इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 3.02.74

''स्टडी पूरी तब होगी, जब विनाश के लिए सामग्री तैयार होगी। फिर समझ जायेंगे कि आग जरूर लगेगी।... पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है। इस समय किसकी कर्मातीत अवस्था होना असम्भव है। कर्मातीत अवस्था हो जाये फिर तो यह शरीर भी न रहे।'' सा.बाबा 29.06.2005 रिवा.

धर्म और कर्म का राज़

सतयुग-त्रेतायुग में धर्म-सत्ता और राज्य सत्ता साथ-साथ रहती है, इसका विधि-विधान परमात्मा संगमयुग पर ही सिखाते हैं। परमात्मा ब्राह्मण जीवन में धर्म और कर्म को साथ-साथ करना सिखाते हैं, जिससे कर्म श्रेष्ठ होते हैं और ये संस्कार ही आत्मा सतयुग में लेकर जाती है। द्वापर से अन्य धर्म जब स्थापन होते हैं तो धर्म-सत्ता और राज्य सत्ता अलग-अलग हो जाती है।

''संगम पर ही ब्राह्मण धर्म और कर्म को कम्बाइण्ड करते हैं ... धर्म का अर्थ है - दिव्य गुण धारण करना। ... धर्म भी हो और कर्म भी हो, इसका ही अभ्यास परमात्मा सिखलाते हैं।... धर्म और कर्म का प्रवृत्ति मार्ग कहो या कर्म और योग का प्रवृत्ति मार्ग कहो, बात एक ही हो जाती है।'' अ.बापदादा 3.02.76

पतित और पावन का राज़ / पावन से पतित और फिर पतित से पावन बनने का राज़

आत्मा ही पावन और आत्मा ही पतित बनती है, इसलिए पुण्यात्मा, पापात्मा कहा जाता है। जब आत्मा पंच तत्वों के सम्पर्क में आती है, पंच तत्वों से बना शरीर धारण कर पार्ट बजाती है तब से ही आत्मा की पवित्रता की कलायें (Degree) गिरना आरम्भ हो जाती हैं। ये गिरती कला की प्रक्रिया सतयुग के प्रथम जन्म के आदि काल से प्रारम्भ हो जाती है परन्तु सतयुग-त्रेता में ये गति मन्द होती है क्योंकि आत्मा में आत्मिक शक्ति होने के कारण इन्द्रियों पर आत्मा का अधिकार होता है, इसलिए विकार और विकारों के वशीभूत विकर्म नहीं होते। द्वापर से आत्मिक शक्ति का ह्रास होने के कारण आत्मा पर देहाभिमान हावी हो जाता है और आत्मा विकारों के वशीभूत हो जाती है, जिससे गिरती कला की गति तीव्र से तीव्रतर होती जाती है। काम विकार आत्मा के पतित बनने में मुख्य भूमिका निभाता है।

परमात्मा पतित-पावन है। कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगमयुग पर जब परमात्मा आते हैं और आत्माओं को आत्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म का ज्ञान देकर राजयोग सिखलाते हैं, तब ही आत्मा के पावन बनने की प्रक्रिया आरम्भ होती है और राजयोग के सतत अभ्यास से आत्मा पावन बनती है। जो आत्मायें राजयोग के द्वारा पावन नहीं बनती, वे कर्मभोग के रूप में सजायें खाकर पावन बनती है।

''तुम यह 84 जन्मों का स्वदर्शन चक्र फिरायेंगे तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे। चक्र को भी याद करना है, यह ज्ञान किसने दिया, उनको भी याद करना है। बाबा हमको स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे हैं।... बाप को याद करने और स्वदर्शन चक्र को फिराने से ही तुम्हारे पाप कटते हैं।'' सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

''यह फायदा और घाटा तब देखने में आता है जब आत्मा शरीर के साथ है।... बाप समझाते हैं - देहाभिमान होने के कारण विकारों का कितना किचड़ा है।... आत्मा में कितनी मैल है, यह अभी पता पड़ा है।... तुम पवित्र बन जायेंगे तो फिर कोई अपवित्र की शक्ल देखने की भी दिल नहीं होगी।'' सा.बाबा 14.10.04 रिवा.

''हम क्या थे, फिर क्या से क्या बन जाते हैं, ये बातें तुम बच्चे ही समझते हो।... अभी तुम बच्चे जानते हो हमारी आत्मा में कैसे किचड़ा भरता गया है।... तुम बच्चों को ज्ञान मिला है कि अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो आत्मा से किचड़ा निकल जायेगा।'' सा.बाबा 14.10.04 रिवा.

''सुखधाम में बाप नहीं ले जायेंगे। उनकी लिमिट हो जाती है घर तक पहुँचाना। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए।... काल को हुक्म नहीं है नई दुनिया में आने का।... बाप कहते - मुझे भी नई दुनिया में आने का हुक्म नहीं है। मैं तो पतितों को ही पावन बनाने आता हूँ।'' सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

परमपिता परमात्मा आत्मा को पावन बनाता नहीं है परन्तु पावन बनने का रास्ता बताता है अर्थात् वह ज्ञान देता है और उनकी याद से आत्मा में ज्ञान की धारणा होती है देहाभिमान खत्म होता है और आत्मा की मूल (Original) स्वभाव-संस्कार, गुण-शक्तियां जागृत हो जाती हैं।

''अभी बाप को याद करना है क्योंकि बाप की याद से बैटरी को चार्ज करना है। ... मूलवतन में तो हैं ही आत्मायें, शरीर तो है नहीं, इसलिए बैटरी कम होने की बात नहीं। मोटर जब चले तब बैटरी चालू होगी।'' (शरीर के साथ ही बैटरी डिस्चार्ज होती तो चार्ज भी शरीर के साथ ही होती है।) सा.बाबा 30.8.04 रिवा.

''बाप ने बताया है - यह युद्ध का मैदान है, टाइम लगता है पावन बनने में। इतना ही समय लगता है कि जब तक लड़ाई पूरी हो। ऐसे नहीं कि जो शुरू में आये हैं, वे पूरे पावन हो गये।'' सा.बाबा 19.11.04 रिवा.

''विकारी नाम ही विशश का है। पतित ही बुलाते हैं आकर पावन बनाओ। क्रोधी नहीं बुलाते हैं।... तुम बच्चों को कितना अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए। तुम यहाँ अविनाशी ज्ञान-धन से बहुत साहूकार बन रहे हो।'' सा.बाबा 13.7.05 रिवा.

''कट चढ़ती है आहिस्ते आहिस्ते, जैसे आटे में लून। फिर द्वापर में बहुत कट चढ़ती है। विकारों की कलायें आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ती हैं। 16 कला से 14 कला होने में 1250 वर्ष लग जाते हैं।'' सा. बाबा 16.1.72 रिवा.

पाप-पुण्य का राज़

मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध अर्थात् तन-मन-धन आत्मा के पाप और पुण्य के दरवाजे हैं अर्थात् इससे ही आत्मा का पाप या पुण्य बनता है अर्थात् इनसे ही आत्मा कर्म करके पुण्यात्मा या पापात्मा बनती है।

''जन्म-जन्मान्तर का पापों का बोझा सिर पर रहा हुआ है, यह कैसे पता पड़े।... देखना है - बाप से हमारी दिल लगती है या देहधारियों से। कर्म सम्बन्धियों आदि की याद आती है तो समझना चाहिए हमारे विकर्म बहुत हैं।... बाप को याद कर अपने सिर से पापों का बोझा उतारना है।'' सा.बाबा 30.04.05 रिवा.

''अगर कोई भी कमजोर वा पतित वायुमण्डल का वर्णन भी करते हैं तो यह भी पाप है। क्योंकि उस समय बाप को भूल जाते हैं।... वायुमण्डल का वर्णन करना - यह भी व्यर्थ हुआ ना। जहां व्यर्थ है वहां समर्थ की स्मृति नहीं।... कितना भी कोई माफी ले लेवे लेकिन जो कोई पाप कर्म वा व्यर्थ कर्म भी हुआ तो उसका निशान मिटता नहीं। निशान पड़ ही जाता है।''

अ.बापदादा 10.5.72

''जैसा संकल्प वैसा स्वरूप बनने वाले सच्चे वैष्णव हो, ऐसे सच्चे वैष्णवों को क्या कोई छू सकने का साहस कर सकता है? अगर छू लेते हैं, तो छोटे मोटे पाप बनते जाते हैं। ऐसे सूक्ष्म पाप, आत्मा को ऊंच स्टेज पर जाने से रोकने के निमित्त बन जाते हैं क्योंकि पाप अर्थात् बोझा, वह फरिश्ता बनने नहीं देते बीज रूप स्थिति व वानप्रस्थ स्थिति में स्थित नहीं होने देते।''

अ.बापदादा 23.5.74

''पाँच विकारों के वश किये हुए कर्म, विकर्म या पाप कहे जाते हैं - यह है पापों का मोटा रूप। ऐसे ही महीन पुरूषार्थ अर्थात् महारथी के सामने पाँच तत्व अपनी तरफ, भिन्न-भिन्न रूप से आकर्षित कर महीन पाप बनाने के निमित्त बनते हैं। पाँच विकारों

को समझाना और उन्हों को जीतना सहज है लेकिन पाँच तत्वों के आकर्षण से परे रहना, यह महारथियों के लिए विशेष पुरूषार्थ है।'' अ.बापदादा 23.5.74

परमधाम की शान्ति या स्थिति पाप-पुण्य दोनों से परे है, सतयुग-त्रेतायुग की शान्ति और स्थिति सुखमय है परन्तु वह भी पाप-पुण्य से परे हैं। द्वापर-कलियुग की स्थिति पाप-पुण्य दोनों से युक्त है लेकिन उसमें पाप की स्थिति अधिक है, पुण्य की कम। संगमयुग की अर्थात् हमारी वर्तमान स्थिति ही पुण्यमय है। संगमयुग अर्थात् जब हमारी बुद्धि का कांटा परमधाम में परमपिता परमात्मा के साथ लटका हुआ हो और हमारे संकल्प कर्म विश्व-कल्याण के कार्य में रत हों। उसके अतिरिक्त समय की स्थिति तो कलियुग की ही है अर्थात् पापमय ही है। ये पुरुषोत्तम संगमयुग का समय ही परमानन्दमय है।

''कोई चीज छिपाकर खा लेते हैं। समझते थोड़े ही हैं कि यह भी पाप है। चोरी हुई ना। सो भी शिवबाबा के यज्ञ की चोरी करना बहुत खराब है।'' सा.बाबा 21.7.05 रिवा.

Q. हमारे सिर पर पापों का बोझा कितना है, उसकी कसौटी क्या है? आत्मा पर पापों का बोझा कितने जन्मों से चढ़ा है और आत्मा पर जंक कितने जन्मों से चढ़ी है?

आत्मा के पुण्यात्मा और पापात्मा बनने का राज़ / पुण्यात्मा, पवित्रात्मा और पापात्मा का राज़

ये विश्व-नाटक गिरने और चढ़ने का खेल है। आत्माओं की गिरती कला तो सतयुग की आदि अर्थात् पहले जन्म के पहले क्षण से ही आरम्भ हो जाती है, जिसके फल स्वरूप त्रेता के अन्त तक आत्मा की शक्ति की 4 कलायें कम हो जाती हैं परन्तु तब तक आत्माओं के द्वारा कोई पाप-कर्म नहीं होता है, इसलिए वे न पापात्मा बनती हैं और न ही आत्मा को किसी प्रकार का दुख होता है। द्वापर से आत्मा देहाभिमान के वश काम विकार में जाती है, तब ही उसको पापात्मा कहा जाता है और इस पापात्मा बनने की भी डिग्री है।

पुण्यात्मा, पवित्रात्मा और पापात्मा का राज़ भी बाबा ने अभी बताया है। बाबा ने ये भी कहा है कि क्रोधवाले को पातात्मा नहीं कहते हैं, पापात्मा काम विकार वाले को कहा जाता है। क्रोध तो सन्यासियों में भी होता है परन्तु वे ब्रह्चारी रहते हैं तो उनको पवित्रात्मा कहते हैं, उनको सिर झुकाते हैं। पुण्यात्मा और पवित्रात्मा का अन्तर भी परमात्मा ने बताया है।

''विकार में जाने से ही पापात्मा बनते हैं।... मनुष्यों को पता नहीं है कि देवतायें, जो पुण्यात्मा हैं, वे ही फिर पुनर्जन्म में आते-आते पापात्मा बनते हैं।... तुम बच्चों को यह बात सबको समझानी है, सर्विस करनी है।'' सा.बाबा 1.11.04 रिवा.

पुण्य क्या है और पाप क्या है, पुण्यात्मायें कहाँ होती हैं और पापात्मायें कहाँ होती है। पुण्यात्मा कैसे बनते हैं, पापात्मा कैसे बनते हैं, ये सब राज़ भी परमात्मा ने अभी बताये हैं। सतयुग में भल आत्मा पवित्र होती है, सुख-शान्ति में होती है परन्तु वहाँ पाप या पुण्य की बात ही नहीं है और देवताओं को पाप-पुण्य शब्दों का भी ज्ञान नहीं है। ये शब्द द्वापर से ही निकलते हैं, जब आत्मा देहाभिमान के वशीभूत पाप-कर्म में प्रवृत्त होती है। पाप के कारण आत्मा को दुख होता है और पापों से मुक्त पुण्यात्मा बनने के लिए पुरुषार्थ भी करते हैं परन्तु फिर भी दिनोंदिन पापात्मा ही बनते जाते हैं क्योंकि जो भी कर्म करते, उसमें देहाभिमान के कारण विकारों का अंश होता ही है।

पांच विकारों के वशीभूत आत्मा जो भी कर्म करती है, वह पाप ही होता है और उससे आत्मा की गिरती कला होती है। पतित-पावन परमात्मा की याद में जो भी कर्म करते हैं वे ही पुण्य कर्म होते हैं क्योंकि उससे ही आत्माओं की चढ़ती कला होती है, उससे दूसरी आत्माओं का भी कल्याण होता है। केवल आत्मिक स्थिति में जो कर्म होते हैं, वे पाप और पुण्य दोनों से परे होते हैं, इसलिए ही सतयुग-त्रेता में आत्माओं के कर्मों को अकर्म कहा जाता है क्योंकि उनसे न पाप होता है और न ही पुण्य होता है।

भक्ति-मार्ग में जो दान-पुण्य करते हैं, उनसे अल्पकाल के लिए पुण्य होता है परन्तु अन्तिम परिणाम पाप का ही होता है क्योंकि उनसे गिरती कला ही होती है।

''अभी बच्चे चलते-फिरते अथवा यहाँ बैठे-बैठे जन्म-जन्मान्तर के जो पाप सिर पर हैं, उन पापों को याद की यात्रा से विनाश करते हैं।... बच्चे समझते हैं - हम याद की यात्रा से अपने पाप काट रहे हैं, गोया अपना कल्याण कर रहे हैं।''

सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

पापात्मा बनने का मूल कारण क्या है? बाबा ने अनेक बार मुरली में कहा है - क्रोधी को पापात्मा नहीं कहेंगे। भल क्रोध से भी आत्मा का पतन होता है। इसीलिए सन्यासियों में क्रोध होते भी काम विकार को छोड़ने के कारण उनको पतित मनुष्य सिर झुकाते हैं।

''यह भी तुम जानते हो - कब से पाप शुरू किये हैं, जब से काम चिता पर चढ़े हो। तो तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है।... तुम बाजोली वा 84 के चक्र को भी जानते हो।... यह चक्र बुद्धि में सदैव फिरता रहना चाहिए। यह नालेज अभी तुम ब्राह्मणों के पास ही है, न शूद्रों के पास और न देवताओं के पास है।'' सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

Q. आत्मा में अविनाशी संस्कार हैं - तो आत्मा ओरिजिनली पुण्यात्मा है या पापात्मा? और है तो कैसे है?

आत्मा परमधाम से सतयुग में आती हैं, जहाँ पवित्र होती हैं परन्तु वहाँ पुण्य-पाप का कोई प्रश्न ही नहीं उठता और परमधाम में भी पुण्य-पाप का प्रश्न नहीं है। द्वापर से जब आत्मायें देहाभिमान के वशीभूत होती हैं, तब ही पुण्यात्मा-पापात्मा का प्रश्न उठता है और आत्माओं का पाप बढ़ता जाता है, जिससे आत्मा कल्प के अन्त में पूरी पापात्मा बन जाती हैं। संगमयुग पर परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है, जिस ज्ञान प्रकाश में आत्मा सुकर्म करके पापात्मा से पुण्यात्मा बनती हैं। संगमयुग पर आत्मा जब अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है, तो उसके विचार, स्वभाव-संस्कार सदा श्रेष्ठ और सर्व के कल्याणार्थ होते हैं, इसलिए आत्मा ओरिजनली पुण्यात्मा है।

''तुम जानते हो हम ही पहले पुण्यात्मा थे, फिर पापात्मा बने, अब फिर पुण्यात्मा बनते हैं। यह तुम बच्चों को नॉलेज मिल रही है, फिर तुम औरों को दे आप समान बनाते हो।... अभी तुमको सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है।''

सा.बाबा 2.11.2004 रिवा.

''स्मृति से है फायदा और विस्मृति से है घाटा। अपनी यह जाँच करनी है।... चैक करो हमने जीवन में क्या-क्या किया, कोई भी बात दिल अन्दर खाती तो नहीं है?... यहाँ तो पाप होते ही हैं। मनुष्य जिसको पुण्य का काम समझते हैं, वह भी पाप ही है। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। यहाँ तुम्हारी लेन-देन भी पापात्माओं के साथ ही है।'' सा.बाबा 18.11.2004 रिवा.

''सन्यासियों को कहेंगे पवित्र-आत्मा और जो दान आदि करते हैं, उनको कहेंगे पुण्यात्मा।... आत्मा निर्लेप नहीं है।''

सा.बाबा 12.07.2005 रिवा.

आत्मा का खाता जमा और ना (-) होने का राज़ / पापों का बोझ चढ़ने और पाप भस्म कर पावन बनने का राज

सारे कल्प में आत्मा को सुख या दुख उसके अपने ही पुण्य-पाप के कर्मो के फलस्वरूप मिलता है। आत्मा जो भी कर्म करती है, उसका खाता संचित होता जाता है, जो समय पर सुख या दुख के रूप में फल देता है। पाप-पुण्य दोनों ही कर्मों से आत्मा का खाता बनता है परन्तु पुण्य के खाते को जमा का खाता कहा जाता है और पाप के खाते को ना का खाता कहा जाता है क्योंकि उससे उसका पुण्य कम हो जाता है। आत्मा का पुण्य का खाता कैसे और कौन से कर्मों से जमा होता है और पापों का खाता कैसे बढ़ता है अर्थात् आत्मा का पुण्य का खाता कैसे खत्म होता है और आत्मा पर पाप का बोझ कैसे चढ़ता है - ये सब राज़ भी अभी परमात्मा ने बताये हैं और पाप का बोझ खत्म करके पुण्य का खाता जमा करने की विधि भी बताई है। सतयुग-त्रेता में आत्मायें कोई पाप कर्म नहीं करती हैं लेकिन जो साधन-सम्पत्ति का उपभोग करती हैं, उससे उनका पुण्य का जमा खाता

कम होता जाता है। अभी संगमयुग और सारे कल्प में आत्मायें जो भी साधन-सत्ता का उपभोग करती हैं, उससे उनका पुण्य का खाता कम होता है। इसीलिए बाबा कहते हैं अभी तुम किससे सेवा न लो, व्यर्थ उपभोग न करो, जिससे तुम्हारा पुण्य का खाता खत्म हो जाये। दुआयें दो, दुआयें लो, सुख दो, सुख लो तो तुम्हारा खाता जमा होता रहेगा। यथार्थ रीति देखा जाये तो सारे कल्प में खाता जमा करने का समय अभी संगमयुग ही है और तो सारे कल्प खाता खत्म ही होता जाता है। भल भक्ति मार्ग अर्थात् द्वापर-कलियुग में आत्मायें पुण्य करने का पुरुषार्थ करती हैं परन्तु पुण्य से पाप अधिक होने के कारण पुण्य का संचित खाता कम ही होता जाता है, जो कलियुग के अन्त में ना के बराबर रह जाता है।

''सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही संगमयुग है।... इस युग और इस जीवन की विशेषता है कि अब ही जो जितना जमा करना चाहे, वह कर सकते हैं।... इस समय ही श्रेष्ठ कर्मों का, श्रेष्ठ ज्ञान का, श्रेष्ठ सम्बन्ध का, श्रेष्ठ शक्तियों का, श्रेष्ठ गुणों का खाता जमा करते हो।''

अ.बापदादा 6.01.86

आत्मा के ऊपर अनेक जन्मों के पापों की मैल जमी हुई है, बोझा चढ़ा हुआ है, वह कैसे भस्म होता है और आत्मा कैसे पावन होती है, वह राज़ और उसका विधि-विधान का ज्ञान भी परमात्मा अभी संगमयुग पर देते हैं, तब ही आत्मा पावन बनती है। प्रश्न है कि आत्मा अविनाशी है, उस पर मैल कैसे चढ़ती है और वह मैल क्या है?

वास्तव में अपने मूल स्वरूप को भूलने से आत्मा देह-भान और फिर देहाभिमान में आ जाती है। यह देह-भान और देहाभिमान ही आत्मा पर मैल अर्थात् खाद है, जो दिनोदिन गहरी होती जाती है। देहभान से जब आत्मा देहाभिमान में आती है उसके वशीभूत आत्मा से अनेक प्रकार के विकर्म अर्थात् पाप-कर्म होते हैं, जो आत्मा के दुख का कारण बनते हैं। संगमयुग पर परमात्मा आत्माओं को आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र, कर्मों आदि का यथार्थ ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखाते हैं। उस ज्ञान और योग के अभ्यास से आत्मा को पुनः अपने आत्मिक स्वरूप की स्मृति जाग्रत हो जाती है और उसके सतत अभ्यास करने से वह स्मृति पक्की होती जाती है। यथार्थ ज्ञान और आत्मिक स्वरूप की स्थिति से कर्मभोग भी सहज समाप्त होता है और आत्मा पावन बन जाती है।

हर आत्मा इस जगत में सुख या दुख अपने जमा के खाते के अनुसार ही पाती है। हमारा जीवन सदा सुखमय हो, इसके लिए हर आत्मा को अपने श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। इसके लिए हमारा श्रेष्ठ कर्मों का खाता किस विधि-विधान के अनुसार जमा होता है और किस अनुसार ना अर्थात् खत्म होता है, उसका ज्ञान भी होना अति आवश्यक है। परमात्मा पिता ने हमको श्रेष्ठ कर्मों के खाते को जमा करने का विधि-विधान बताया है, जिसके अनुसार अभी अपना खाता जमा करते हैं और उसके फलस्वरूप सतयुग में श्रेष्ठ पद पाते हैं।

आत्मा जो कर्म करती है, उससे जो खाता जमा होता, उसका फल आत्मा को इस जन्म में भी मिलता है और अनेक जन्मों तक मिल सकता है। संगमयुग पर किये गये श्रेष्ठ कर्मों का फल आत्मा को 21 जन्म तक तो मिलता ही है बाद में भी वह जमा का खाता रहता है।

जड़ तत्वों का उपभोग हो या चेतन आत्माओं के साथ व्यवहार, सबके लिए हमको उतना ही अधिकार है जितना हमारे और समस्त विश्व के लिए आवश्यक और उपयोगी है, उसके अतिरिक्त उपयोग या व्यवहार से हमारा सुख का खाता कम होता है और यदि हम साधनों का दुरुपयोग करते हैं तो जमा का खाता ना होता है अर्थात दुख का खाता शुरू हो जाता है।

श्रेष्ठ कमों का खाता जमा करने का समय ये संगमयुग ही है और तो सारे कल्प में अन्तिम परिणाम में खाता कम ही होता है क्योंकि सतयुग-त्रेता में कोई श्रेष्ठ कर्म नहीं करते क्योंकि श्रेष्ठ कर्मों का न ज्ञान होता है और न ही आवश्यकता होती है, इसलिए वहाँ के कर्म अकर्म कहलाते हैं परन्तु वे भी आत्मा के पुण्य का खाता कम अवश्य करते हैं। द्वापर-कलियुग में मनुष्य अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के कर्म करता है परन्तु अन्तिम परिणाम बुरे का ही भारी होता है क्योंकि देहाभिमान के वशीभूत आत्मा से बुरे कर्म ही अधिक होते हैं, अच्छे बहुत कम होते हैं।

''मुख्य यह तीनों खजाने - संकल्प, समय और श्वांस आज्ञा प्रमाण सफल होते हैं? व्यर्थ तो नहीं जाते?... जमा का खाता इस संगम पर ही जमा करना है।... सारे कल्प के लिए जमा इस संगम पर ही करना है।... इस छोटे से जन्म के संकल्प, समय और स्वांस कितने अमूल्य हैं!''
अ. बापदादा 15.11.1999

''जमा करने की विधि बहुत सहज है। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ।... आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो बीत चुका, वह भी फुल-स्टॉप अर्थात् बिन्दी।... जमा का खाता बढ़ाने की विधि है 'बिन्दी' और गँवाने का रास्ता है क्वेश्चन मार्ग, आश्चर्य की मात्रा लगाना।''
अ.बापदादा 30.11.99

''इस समय जो कुछ करते हैं, वह ईश्वरीय सर्विस में शिवबाबा को देते हैं। ब्रह्मा को नहीं देते हो। तुम शिवबाबा को देते हो। बाबा कहते हैं - इनको देने से तुम्हारा कुछ भी जमा नहीं होगा। जमा वह होता है, जो तुम शिवबाबा को याद कर इनको देते हो।''
सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

Q. आत्मा पर पापों का बोझा कितने जन्मों का है और जंक कितने जन्मों की चढ़ी है?

आत्मा पर पापों का बोझा 63 जन्मों अर्थात् द्वापर य्रुग से पापों का बोझा चढ़ना आरम्भ हुआ और जंक तो सतयुग के आदि जन्म से ही चढ़ना आरम्भ होगई, जब से आत्मा अपने असली स्वरूप को भूलकर देह-भान में आई। इसलिए सतयुग के आदि से ही आत्मा की कलायें गिरना आरम्भ हो गई परन्तु आत्मिक शक्ति संचित होने के कारण दो युगों तक पापकर्म नहीं हुए।

Q. हमारे सिर पर पापों का बोझा कितना है, उसकी कसौटी क्या है? आत्मा पर पापों का बोझा कितने जन्मों से चढ़ा है और आत्मा पर जंक कितने जन्मों से चढ़ी है?

''जन्म-जन्मान्तर का पापों का बोझा सिर पर रहा हुआ है, यह कैसे पता पड़े।... देखना है - बाप से हमारी दिल लगती है या देहधारियों से। कर्म सम्बन्धियों आदि की याद आती है तो समझना चाहिए हमारे विकर्म बहुत हैं।... बाप को याद कर अपने सिर से पापों का बोझा उतारना है।''
सा.बाबा 30.04.2005 रिवा.

''अभी तो अनेक आत्माओं के अनेक जन्मों के बने हुए खाते, जिसको पाप-कर्मों का खाता कहा जाता है, उसको भस्म कराने के आप निमित्त हो। जो अन्य के व्यर्थ खाते को भस्म कराने वाले हैं, वे स्वयं अपना ऐसा खाता बना नहीं सकते। यह तो पुराने खाते हैं। आप तो पुराने खाते समाप्त कर नया जन्म, नये खाते बनाने वाले हो। पुराने खाते सब खत्म हो रहे हैं - ऐसा अनुभव होता है?''
अ.बापदादा 4.02.75

''बुद्धि को अपनी तरफ क्या खींचता है, क्यों खींचता है? बोझा है कोई, जो अपनी तरफ खींचता है? हल्की चीज कभी भी नीचे नहीं आयेगी, वह चढ़ती कला में ही होगी। किसी भी प्रकार का बोझ है तो कितना भी ऊपर करना चाहें तो ऊपर नहीं जायेगा, बल्कि नीचे ही आयेगा। ऐसे ही सारे दिन में मन्सा, वाचा, कमर्णा में, सम्पर्क और सेवा - इन बातों से चैक करो।''
अ.बापदादा 4.02.75

Q. आत्मा में खाद क्या पड़ती है और कैसे पड़ती है?

(अज्ञानता ही खाद है, अज्ञानतावश आत्मा देहाभिमान के वशीभूत विकर्म, विकर्मों के वशीभूत दुख)

ये देह आत्मा का वस्त्र है। आत्मा इस देह में भृकुटी में रहती है। आत्मा के देह में प्रवेश होने से ही आत्मा की चेतनता सिद्ध होती है। देह में आने से ही आत्मा पर अज्ञानता के वशीभूत देहाभिमान की कट चढ़ती है। जैसी आत्मा की स्थिति होती है, वैसा ही आत्मा को शरीर मिलता है। जिसको बाबा कहते हैं जैसा आसामी, उस अनुसार ही उसका फर्नीचर होता है।

''सिर्फ घर को याद करेंगे तो पाप विनाश नहीं होंगे। बाप को याद करेंगे तो पाप विनाश हो और तुम अपने घर चले जायेंगे।''
सा.बाबा 6.5.05 रिवा.

Q. पाप नाश होने की प्रक्रिया क्या है?

''दूसरों को देना, वह खर्चा नहीं है। यह तो एक देना फिर लाख पाना है।... जब अपने विघ्नों के प्रति शक्ति का प्रयोग करते हो, वह होता है खर्च।... अब बचत की स्कीम बनाओ। खर्चे को फुल स्टॉप लगाओ। अभी तो देते रहो, अभी लेने को कुछ रहा है

क्या? अगर रहा हुआ है तो सिद्ध होता है कि बाप ने पूरा वर्सा दिया नहीं है। बाप ने अपने पास कुछ रखा नहीं है। वह तो एक सेकण्ड में ही पूरा वर्सा दे देते हैं। जो कुछ लेने को रहता ही नहीं है।'' अ.बापदादा 8.7.73

''अभी के समय प्रमाण मास्टर रचयिता को कौनसा पोतामेल देखना है? क्या-क्या गलती की? यह तो बचपन का पोतामेल है... आप मास्टर रचयिता हर शक्ति को सामने रखते हुए यह पोतामेल देखो कि आज के दिन सर्व शक्तियों में से कौन-सी शक्ति और कितनी परसेन्टेज में जमा की।'' अ.बापदादा 8.07.73

''ऐसे ही स्थूल धन भी अगर ईश्वरीय कार्य में, हर आत्मा के कल्याण के कार्य में वा अपनी उन्नति के कार्य में न लगाकर अन्य कोई स्थूल कार्य में लगाया तो व्यर्थ लगाया ना।... यज्ञ निवासियों के लिए यज्ञ की सेवा, यज्ञ की वस्तु की एकानॉमी रुपी धन स्थूल धन से भी ज्यादा कमाई का साधन है।'' अ.बापदादा 15.3.72

Q. सृष्टि-चक्र और जीवन में सुख-दुख, पुण्य-पाप के संचित का क्रम क्या चलता है?

सतयुग-त्रेतायुग में	**द्वापर-कलियुग में**	**संगमयुग पर**
पुण्य - सुख पुण्य का खाता कम होता जाता	पुण्य - सुख एवं प्लस माइनस पाप और पुण्य परिणाम में पाप अर्थात् दुख प्लस होता जाता	पाप-दुख प्लस माइनस पाप और पुण्य, पुण्य अर्थात् सुख प्लस होता
नेचुरल	नेचुरल	पुरुषार्थ से

धर्मराज़ और धर्मराजपुरी का राज़

Q. क्या धर्मराज सजायें देता है? उसका कोई अलग स्वरूप है, कोई अलग धर्मराजपुरी है, जहाँ आत्माओं के कर्मों का निर्णय होता है और उनकी सजायें मिलती हैं?... वास्तविकता क्या है?

वास्तविकता को देखा जाये तो न धर्मराज का कोई अलग अस्तित्व और न ही अलग कोई धर्मराज पुरी है। ब्रह्मा तन में अवतरित हुए परमात्मा का ही अन्त में धर्मराज का स्वरूप बन जाता है क्योंकि जब परमात्मा सारा ज्ञान दे देता है तो अन्त समय साक्षी होकर धर्मराज के रूप में कर्मों का हिसाब-किताब करता है और आत्मायें अन्त समय स्थूल और सूक्ष्म शरीर से अपने कर्मों का हिसाब-किताब पूरा करती हैं, उसको भोगती हैं।

मनुष्य समझते हैं कि धर्मराज पुरी का कोई विशेष स्थान है और वहाँ धर्मराज का दरबार लगता है और धर्मराज कर्मों अनुसार अच्छा या बुरा फल देता है। ब्रह्मा तन में अवतरित परमात्मा का स्वरूप ही अभी बाप का है अर्थात् प्यार का है और बाद में वही न्यायकारी रूप अर्थात धर्मराज का बन जाता है अर्थात् न्याय-प्रधान स्थिति हो जाती है। कल्पान्त में परमधाम जाने के समय आत्माओं को अपना सारा हिसाब-किताब चुक्ता करना होता है। इस साकार शरीर से लेकर सूक्ष्म शरीर और सूक्ष्म वतन तक आत्मा अपने कर्मों का हिसाब-किताब भोग सकती है और अन्त में उसके सारे कर्म उसके सामने आते हैं और उनकी सजायें भोगनी होती हैं - यही धर्मराजपुरी की सजायें हैं।

''ऊंच से ऊंच बाप है, उनके साथ धर्मराज भी है। धर्मराज द्वारा बहुत कड़ी सजा खाते हैं।... बाबा के पास पूरा हिसाब रहता है।... धर्मराज पूरा हिसाब लेंगे।'' सा.बाबा 4.7.05 रिवा.

धर्मराजपुरी के विधि-विधान का राज़

जैसे दुनिया में पाप-कर्म की सजा के लिए विधि-विधान हैं, वैसे इस विश्व में भी विकर्मों की सजाओं के अदृश्य विधि-विधान, जिनके अनुसार हर आत्मा को अपने कर्मों का फल स्वत: ही मिलता है। परमात्मा कोई हिसाब रखता नहीं है लेकिन हर आत्मा का सेकेण्ड बाई सेकेण्ड का कर्म और उसका फल नूँधा हुआ है और नूँध होता रहता है। परमात्मा, प्रकृति और आत्मायें हर आत्मा के कर्म के गवाह बनते हैं अर्थात् सजा के समय उनका साक्षात्कार होता है।

''चलते-फिरते भी विचार-सागर मन्थन करते रहना है।... योग नहीं होगा तो एकदम गिर पड़ेंगे।... कई बच्चे डिससर्विस कर अपने को श्रापित करते हैं।... भूल का पश्चाताप करते हैं। फिर भी पश्चाताप से कोई माफ नहीं हो सकता है।''

सा.बाबा 4.07.05 रिवा.

''इस जन्म में कोई पाप कर्म तो नहीं किये हैं?... इस जन्म के पाप बाप को बता दो तो हल्के हो जायेंगे, नहीं तो दिल अन्दर खाता रहेगा।... हमारा बच्चा बनकर फिर भूल करने से सौगुणा वृद्धि हो जाती है।'' (सौगुणा दण्ड पड़ जाता है)

सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

''बहुतों को बहुत खराब ख्यालात आते हैं, फिर इनकी सजा भी बहुत कड़ी है।... अवस्था गिर जाती है। अवस्था का गिरना ही सजा है।'' सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

''बेकायदे चलन से नुकसान बहुत होता है। हो सकता है फिर कड़ी सजायें भी खानी पड़े। अगर अपने को सम्भालेंगे नहीं तो बाप के साथ-साथ धर्मराज भी है, उनके पास बेहद का हिसाब-किताब रहता है।'' सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

''अभी थोड़े समय में धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे।... फिर अनुभव करेंगे कि एक संकल्प की भूल से एक का सौगुणा दण्ड कैसे मिलता है।'' अ.बापदादा 22.10.70

''जरा भी सम्पूर्ण आहुति की कमी रह गयी तो सम्पूर्ण सफलता नहीं होगी। जितना और इतना का हिसाब है। हिसाब करने में धर्मराज भी है। उनसे कोई भी हिसाब रह नहीं सकता।... सिर्फ निश्चय और हिम्मत चाहिए। निश्चय वालों की विजय कल्प पहले भी हुई थी और अभी भी हुई पड़ी है।'' अ.बापदादा 25.1.70

''मैं निराकार रूप में तो कुछ देख नहीं सकता हूँ। आरगन्स बिगर आत्मा कुछ भी कर न सके।... यह तो अन्धश्रद्धा है, जो कहते हैं ईश्वर सब कुछ देखता है।... अच्छा या बुरा काम हर एक ड्रामा अनुसार करते हैं। मैं थोड़ेही बैठ इतने करोड़ों मनुष्यों का हिसाब रखूँगा। मुझे शरीर है तब सब कुछ करता हूँ। करन-करावनहार भी तब कहते हैं, जब शरीर में आते हैं। नहीं तो कह न सकें।... पार्ट बिगर कोई कुछ कर न सके। शरीर बिगर आत्मा कुछ कर नहीं सकती।'' सा.बाबा 1.2.05 रिवा.

ये विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित है। हर आत्मा का कर्म और फल का विधि-विधान ड्रामा में नूंधा हुआ है, जिस अनुसार आत्मा कर्म भी करती है और उसका फल भी पाती है। बाबा इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, वही आकर इसका ज्ञान देता है। कर्म और उसका फल ड्रामा अनुसार चलता है, उसके लिए परमात्मा की आवश्यकता नहीं है। सृष्टि के नियमानुसार कर्म का अच्छा या बुरा फल मिलना धर्मराज का स्वरूप है, जो विधि-विधान कल्प के आदि से अन्त तक चलता रहता है क्योंकि धर्मराज माना सुप्रीम जज अर्थात् मुख्य न्यायाधीश। कल्प के अन्त में सारे कल्प का हिसाब-किताब चुक्ता होता है और अन्त में बुरा दुखदाई हिसाब-किताब अधिक होता है, इसलिए उसको धर्मराज के नाम से जाना जाता है। बाबा ने भी धर्मराज का नाम लिया है क्योंकि उस समय अनेक प्रकार के साक्षात्कार आदि भी होते हैं।

ब्राह्मण जीवन में कर्मों का फल कई गुणा बढ़ जाता है, जो अच्छे का भी होता है तो बुरे कर्मों का भी होता है क्योंकि ब्राह्मण जीवन में परमात्मा से सब प्रकार का ज्ञान मिलता है। ब्राह्मण जीवन परम सुखमय जीवन है, उस जीवन का सच्चा सुख अनुभव न होना भी धर्मराज की सजा ही है। योगानन्द परमानन्द है और योग में बैठते समय या चलते-फिरते योग का आनन्द अनुभव न होना भी धर्मराज की सजायें ही हैं। विशेष रूप से योग में बैठने के समय संकल्प-विकल्प चलना, योग के आनन्द का अनुभव न होना भी धर्मराज की सजायें ही हैं। बाबा ने ये भी कहा है कि धर्मराज की ट्रिब्युनल भी ब्राह्मणों के लिए ही बैठेगी क्योंकि उनको बाबा ने सारा ज्ञान दिया फिर भी उन्होंने नहीं माना और विकर्म किये।

''यह सब वायदे बाप के पास चित्रगुप्त के रूप में हिसाब के खाते में नूँधे हुए हैं।... पत्र जो लिखकर दिया वह पत्र वा संकल्प सूक्ष्मवतन में बापदादा पास सदा के लिए रिकार्ड में रह गया।'' अ.बापदादा 31.3.86

''चोरी की, उसका सौगुणा दण्ड हो ही जाता है। बाप जानकर क्या करेंगे।... ईश्वर का बच्चा बनकर फिर चोरी करता, शिव बाबा जिनसे इतना वर्सा मिलता है, उनके भण्डारे की चोरी करता है, यह तो बहुत बड़ा पाप है।'' सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

''लगाव वाले को धर्मराज को सलाम भरना ही पड़ेगा। लगाव वाले सम्पूर्ण फर्स्ट जन्म का राज्यभाग्य पा न सकें। इसी प्रकार पुराने स्वभाव वाले नये जीवन, नये युग का सम्पूर्ण और सदा सुख का अनुभव नहीं कर पाते।... अब सभी प्रकार के लगाव और स्वभाव को समाप्त करो।'' अ.बापदादा 15.7.73

''अभी फिर भी कोई व्यर्थ अथवा अशुद्ध संकल्प चलने की प्रत्यक्ष रुप में कोई सजा नहीं मिल रही है, लेकिन थोड़ा आगे चलेंगे तो कर्म की तो बात ही छोड़ो लेकिन अशुद्ध वा व्यर्थ जो संकल्प हुआ, किया उसकी सजा का भी अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 3.5.72

''सूक्ष्म सजायें सूक्ष्म में मिलती रहती हैं और दिन प्रतिदिन ज्यादा मिलती जायेंगी लेकिन ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रमाण कोई भी अगर अमर्यादा का कर्तव्य करते हैं, मर्यादा का उल्लंघन करते हैं तो ऐसी अमर्यादा से चलने वाले को स्थूल सजायें भी भोगनी पड़ेंगी।'' अ.बापदादा 3.5.72

धर्मराज की सजायें और सजाओं से बचने का राज़

बाबा ने ये भी ज्ञान दिया है कि धर्मराज पुरी की सजायें क्या हैं और कैसे धर्मराज की सजाओं से बच सकते हैं, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना चाहिए। अन्त समय आत्मा को अपने जीवन के सभी पाप कर्मों का साक्षात्कार होता है और आत्मा उस समय पश्चाताप करती है, वह पश्चाताप और दुख की महसूसता ही धर्मराज की सजायें हैं।

''पुरुषार्थ सजाओं से बचने का करना है। नहीं तो बाप के आगे सजा खानी पड़ेगी।... बाप के साथ धर्मराज भी तो है ना। वह तो जन्मपत्री जानते हैं।... बाप का बनने के बाद यह विचार हर बच्चे को आना चाहिए कि हम बाप का बने हैं तो स्वर्ग में चलेंगे ही परन्तु हम स्वर्ग में क्या बनेंगे।'' सा.बाबा 1.03.05 रिवा.

''स्वयं ही स्वयं का जज बनो। धर्मराजपुरी में जाने से पहले जो स्वयं, स्वयं का जज बनता है, वह धर्मराजपुरी की सजा से बच जाता है।... सोच-समझ कर कर्म करो।... कर्म से पहले संकल्प उत्पन्न होता है। यह संकल्प बीज है।... यह संकल्प जीवन का श्रेष्ठ खजाना है।'' अ.बापदादा 27.9.75

''शरीर तो जड़ है, उसमें जब चेतन्य आत्मा प्रवेश करती है, उसके बाद गर्भ में सजा खाने लगती है। आत्मा सजा खाती है। सजायें भी कैसे खाती है? भिन्न-भिन्न शरीर धारण कर जिन-जिन को जिस रूप से दुख दिया है, वह साक्षात्कार करते जाते हैं और दण्ड मिलता जाता है। त्राहि-त्राहि करते हैं, इसलिए गर्भ जेल कहते हैं। ड्रामा कैसा अच्छा बना हुआ है।''

सा.बाबा 19.5.72 रिवा.

''जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर है। साक्षात्कार कराते सजा देते जायेंगे। बहुत सजायें हैं, जिनका पारावार नहीं। एक-एक जन्म के पापों का साक्षात्कार कराकर सजा देते हैं। वह तो जैसे जन्म-जन्मान्तर की सजायें हो गई। होता बिजली मुआफिक है परन्तु उसकी भासना ऐसी होती है जैसेकि सेकण्ड में हजारों वर्ष की सजा खाते हैं।'' सा.बाबा 5.12.73 रिवा.

धर्मराज की ट्रिब्युनल का राज़

कर्म का फल तो हर आत्मा को मिलता ही है, यह इस विश्व-नाटक का अनादि नियम है परन्तु जो आत्मा जानते हुए, परमात्मा के मना करने पर भी कोई गलत कर्म करता है, उसके लिए ट्रिबुनल बैठती है और उसका कई गुणा दण्ड मिलता है। जिसके लिए बाबा ने कई बार कहा है कि ट्रिब्युनल उन बच्चों के लिए बैठेगी, जिनको बाबा ने ज्ञान दिया है, सावधान किया है फिर भी वे विकर्म करते हैं, बाप का नाम बदनाम करते हैं। बाबा ने ये भी कहा है कि उस समय धर्मराज ये सब साक्षात्कार करायेगा कि तुमको ब्रह्मा द्वारा अमुख रूप से, अमुख स्थान पर सावधान किया, फिर भी तुमने पाप कर्म किये, अब उन कर्मों की

सजा खानी ही पड़ेगी। कर्म के विधि-विधान अनुसार विधान को जानते हुए विकर्म करना, परमात्मा के मना करने पर भी विकर्म करना, उसकी सजा अधिक मिलती है, यह राज़ भी ड्रामा में नूँधा हुआ है कि ऐसे कर्मों का अन्त समय साक्षात्कार होता है, जिससे पश्चाताप की महसूसता बढ़ जाती है।

''तुम्हारे लिए तो ट्रिब्युनल बैठेगी। खास उन बच्चों के लिए जो सर्विस लायक बनकर फिर ट्रेटर बन जाते हैं।... दान देकर फिर बहुत खबरदार रहना है। फिर ले लिया तो सौगुणा दण्ड पड़ जाता है।'' सा.बाबा 3.11.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - एक-दो से सेवा मत लो। कोई अहंकार नहीं आना चाहिए। दूसरे से सेवा लेना, यह भी देह-अहंकार है। बाबा को समझाना तो पड़े ना। नहीं तो जब ट्रिब्युनल बैठेगी तब कहेंगे, हमको पता थोड़े ही था कायदे-कानून का। इसलिए बाप समझा देते हैं, फिर साक्षात्कार कराये सजा देंगे।'' सा.बाबा 5.3.2001 रिवा.

''श्रीमत पर न चलते तो नाम बदनाम करते हैं। भल बच्चे हैं परन्तु बच्चों को ऐसे थोड़े ही छोड़ेंगे। हाँ ट्रिब्युनल बैठती है बच्चों को तो और ही कड़ी सजा मिलती है क्योंकि धोखा देते हैं।... बाप तो उस समय मुस्कराते हैं। कहते हैं इनको कुल्हाड़ी से टुकड़ा-टुकड़ा करो। फांसी की सजा देने वाले रोते हैं क्या? ऐसे थोड़ेही बच्चों पर दया कर देंगे।'' सा.बाबा 22.11.73 रिवा.

कब्रदाखिल और कब्र से जगाने का राज़ / कयामत अर्थात् विनाश का राज़

कुछ धर्मों में मृत्यु के बाद शव को जलाते हैं और कुछ धर्मों में दफनाते हैं अर्थात् कब्रदाखिल करते हैं। जो कब्रदाखिल करते उनकी मान्यता है कि क्यामत के समय परमात्मा आकर उनको जगाते हैं और उनके कर्मों का हिसाब-किताब करते हैं। इस सत्य का भी अभी पता पड़ा कि अपने आत्मिक स्वरूप को भूलकर देहाभिमान के वशीभूत होना ही वास्तव में कब्रदाखिल होना है और अभी विनाश के समय परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देकर इस देहाभिमान से जगाते हैं और पावन बनाते हैं। यह सब ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है और हम सभी आत्माओं को देहाभिमान रूपी कब्र से जगाया है और हमको अपने कर्मों के हिसाब-किताब चुक्ता करने का रास्ता बता रहा है, उसके अनुसार जो अपने हिसाब-किताब को चुक्ता नहीं करेंगे, उनका हिसाब-किताब विनाश के समय धर्मराज के दरबार में पूरा होगा अर्थात् अन्त समय सजायें खाकर पूरा करना होगा।

''अभी है ही कयामत का समय। सबका हिसाब-किताब चुक्तू होता है।... यह बना-बनाया अनादि ड्रामा है, जिसको साक्षी होकर देखते हैं कि कौन अच्छा पुरुषार्थ करते हैं।... माया का तूफान अथवा कुसंग पीछे हटा देता है, खुशी गुम हो जाती है।''

सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

''भारत में ही रामराज्य था, भारत में ही रावण राज्य है। रावण राज्य में 100 परसेन्ट दुखी बन जाते हैं। यह खेल है।... ड्रामा में जो नूँध है, वह फिर भी होगा। हम किसकी ग्लानि नहीं करते हैं। यह तो बना-बनाया अनादि ड्रामा है।''

सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

''यह है कयामत का समय, सभी का पुराना हिसाब-किताब चुक्तू होना है और नया जन्म होना है। चौपड़ा होता है धन का, यहाँ फिर चौपड़ा है कर्मों के खाते का। आधाकल्प का खाता है। मनुष्य जो पाप कर्म करते हैं, वह खाता चलता आया है।''

सा.बाबा 20.8.02 रिवा.

''समझते नहीं कि बाप के साथ में धर्मराज भी है। अगर कुछ ऐसा करते हैं तो हमारे ऊपर बहुत भारी दण्ड पड़ता है।... जब समय आयेगा तो बाप इन सबसे हिसाब लेंगे। कयामत के समय सबका हिसाब-किताब चुक्तू होता है ना।''

सा.बाबा 25.4.05 रिवा.

Q. धर्मराज का स्वरूप क्या है और वह कैसे सजायें देगा?

Q. धर्मराज की सजायें क्या हैं और कब और कैसे मिलेंगी?

Q. क्या कर्मों का हिसाब-किताब धर्मराज के पास है और वह कर्म का फल देता है? यदि है और देता है तो कैसे, यदि नहीं तो हर आत्मा को कर्म का फल कैसे मिलता है?

Q. क्या धर्मराज की सजायें कल्पान्त में विनाश के समय ही मिलेंगी या अभी भी जीवात्मा को जो कर्मभोग आदि के रूप में दण्ड मिलता है, वह भी धर्मराज के विधि-विधान के अनुसार ही मिलता है अर्थात् वे भी धर्मराज की सजायें ही हैं?

Q. क्या धर्मराज सजायें देता है? धर्मराज का कोई अलग स्वरूप है, कोई अलग धर्मराज पुरी है, जहाँ आत्माओं के कर्मों का निर्णय होता है और सजायें मिलती हैं?... वास्तविकता क्या है?

Q. क्या देवतायें कर्मातीत होंगे या उनको कर्मातीत कहा जायेगा?

A. नहीं। देवतायें विकर्माजीत होते हैं, कर्मातीत नहीं क्योंकि सतयुग-त्रेतायुग में विकार नहीं होता परन्तु कर्म तो होते हैं और कर्म का फल भी होता है, इसलिए उनको कर्मातीत नहीं कहा जा सकता है। कर्मातीत आत्मा परमधाम में ही होती है या परमपिता परमात्मा कर्म में आते भी कर्मातीत हैं क्योंकि वे निराकार हैं, उनको अपना शरीर नहीं है, इसलिए उनका कोई भी कर्म उनकी स्थिति को प्रभावित नहीं करता है। चार शब्द हैं - कर्मातीत - विकर्माजीत - विकर्मी - सुकर्मी

Q. क्या देवताओं के कर्मों को सुकर्म कहा जा सकता है?

A. नहीं। सुकर्म उनको ही कहा जाता है, जिससे किसी आत्मा का कल्याण हो, चढ़ती कला हो। सतयुग में किसी प्रकार अकल्याण ही नहीं तो कल्याण किसका और सतयुग में आत्मा की चढ़ती कला भी नहीं होती इसलिए देवताओं के कर्मों को सुकर्म भी नहीं कहा जा सकता है। देवताओं से कोई विकर्म नहीं होता है, इसलिए उनको विकर्माजीत कहा जाता है।

Q. क्या पावन या कर्मातीत आत्मा को दूसरी आत्माओं के सुख-दुख की फीलिग होगी?

A. नहीं, कर्मातीत आत्मा साक्षी होकर इस सारे खेल को देखती है परन्तु उसके सभी कर्म आत्माओं के कल्याणार्थ स्वत: ही होते हैं। वह सुख-दुख दोनों से न्यारी होती है परन्तु कोई भी आत्मा जिसने शरीर धारण कर यहाँ पार्ट बजाया, वह यहाँ साकार वतन में या सूक्ष्मवतन में शत प्रतिशत कर्मातीत स्थिति में नहीं हो सकती। शत प्रतिशत कर्मातीत तो एक परमात्मा ही है। ब्रह्मा सूक्ष्मवतन में हैं, उनको बच्चों के सुख-दुख की महसूसता होती है, इसलिए उनको रहम पड़ता है। परमात्मा दोनों से न्यारा है।

''मूसलाधार वरसात, अर्थ-क्वेक आदि सब होना है। अभी तुम बच्चों ने ड्रामा का सब राज समझा है।... तुम बच्चों को अच्छी रीति समझकर औरों को भी समझाना है, खुशी में भी रहना है।... भल कितने भी दुख, मौत आदि होंगे, तुम उस समय खुशी में होंगे। तुम जानते हो मौत तो होना ही है। कल्प-कल्प का यह खेल है, फिकरात की कोई बात नहीं।''

सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

Q. दोषी अर्थात् उत्तरदायी कौन?

इस जगत में एक बड़ी पहेली है। इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान, कर्मों के यथार्थ ज्ञान पर विचार करें और इस पहेली का हल सोचें, तो उसका क्या उत्तर निकलता है। किसी दुर्घटना से पीड़ित व्यक्ति की उस समय की परिस्थिति को ही देखते हैं तो अनुभव होता है कि विरोधी पक्ष ही दोषी है परन्तु इस विश्व-नाटक, कर्म-सिद्धान्त और अनेक जन्मों के हिसाब-किताब को विचार करें तो यही परिणाम निकलता है कि पीड़ित आत्मा स्वयं ही दोषी है।

पवित्रता का राज़

पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य इस ब्राह्मण जीवन का अर्थात् इस पुरुषार्थी जीवन का मूलाधार है। जैसे आधार के बिना भवन नहीं बन सकता वैसे ही ब्रह्मचर्य के बिना पुरुषार्थ की सफलता हो नहीं सकती परन्तु ब्रह्मचर्य केवल काम विकार को छोड़ना ही नहीं लेकिन ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्म में स्थित आत्माओं के समान पवित्र स्थिति। आत्मा के पतित और पावन होने में काम-विकार की मूल भूमिका है, उसके आधार ही आत्मा को पतित या पावन कहा जाता है।

''पवित्रता आत्मा की सुख-शान्ति का मुख्य आधार है। पवित्र आत्मा को कब दुख-अशान्ति हो नहीं सकती। ... मुख्य बात है पवित्रता की। ... बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पहनो। इस पर जीत पाने से ही तुम पवित्र बनेंगे। ... जब आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी तो फिर यह पतित शरीर नहीं रहेगा। फिर जाकर पावन शरीर लेंगे।'' सा.बाबा 11.10.04 रिवा.

''मूल बात है पतितों को पावन बनाने की। वैसे दुनिया में पावन तो बहुत होते हैं। सन्यासी भी पवित्र रहते हैं।... वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते हैं। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बनें और दुनिया को पावन बनायें।... शिवबाबा की याद बिगर हम सम्पूर्ण पावन बन नहीं सकते।'' सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

Q. सम्पूर्ण पवित्रता क्या है? क्या ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले को पवित्र कहेंगे? यदि हाँ तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों? क्या देवताओं को सम्पूर्ण पावन कहेंगे? यदि देवतायें सम्पूर्ण पावन हैं तो कब तक और कहाँ तक? क्या सम्पूर्ण निर्विकारी और सम्पूर्ण पवित्र में कोई अन्तर है? सतयुग में जो आत्मा दूसरा जन्म लेती है, उसको सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे? निर्विकारी और सम्पूर्ण निर्विकारी में कोई अन्तर है?

''पवित्रता की शक्ति के कारण जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है। पवित्रता फाउण्डेशन है। पवित्रता को माता कहते हैं और सुख-शान्ति उनके बच्चे कहते हैं। तो जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है। इसलिए हैप्पी भी हो।... जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति-खुशी स्वत: ही आती है।'' अ.बापदादा 22.3.86

''आपको स्व-धर्म, स्व-देश, स्व का पिता और स्व स्वरूप, स्व कर्म सबकी नॉलेज मिली है तो नॉलेज की शक्ति से मुश्किल अति सहज हो गया।... सारे विश्व के आगे चेलेन्ज से कह सकते हो कि पवित्रता तो हमारा स्व-स्वरूप है।''

अ.बापदादा 22.3.86

''आप सभी पवित्रता को धारण करना कितना सहज समझते हो क्योंकि बापदादा द्वारा नॉलेज मिली और नॉलेज की शक्ति से जान लिया कि मुझ आत्मा का अनादि और आदि स्वरूप है ही पवित्र।... वास्तविक को अपनाना सहज हो गया ना।''.

अ.बापदादा 22.3.86

''आप जो श्रेष्ठ आत्मायें हो वह सदैव वैष्णव अर्थात् तमोगुणी संकल्प वा तमोगुणी संस्कारों को भी टच नहीं कर सकते हो।... इसी प्रकार अगर अपनी कमजारी के कारण कोई भी पुराना तमोगुणी संस्कार वा संकल्प भी टच कर देते हैं तो विशेष रुप से ज्ञान-स्नान करना चाहिए अर्थात् बुद्धि में विशेष रुप से बाप की याद अथवा बाप से रुहरिहान करनी चाहिए।''

अ.बापदादा 15.5.72

''पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है - स्मृति। स्मृति है कि यह देवी है तो स्मृति दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाते हैं। जब स्मृति है कि यह फीमेल है तो वह स्मृति वृत्ति और दृष्टि अपवित्रता की तरफ खींचती है।'' अ.बापदादा 25.8.71

''बाप से सर्व सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझाना चाहिए और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान और कहाँ मैं।'' अ.बापदादा 11.7.74

''पवित्रता के श्रृंगार की अनुभूति चेहरे से, चलन से औरों को हो। दृष्टि में, मुख में, हाथों में, पांवो में सदा पवित्रता का श्रृंगार प्रत्यक्ष हो।... जैसे कर्मों की गति गहन है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी बड़ी गुह्य है। पवित्रता ही फाउण्डेशन है।''

अ.बापदादा 17.10.1987

Q. पवित्रता और ब्रह्मचर्य में क्या अन्तर है?

पवित्रता अर्थात् आत्माभिमानी स्थिति। एक बच्चा और सन्यासी ब्रह्मचारी हो सकते हैं परन्तु वे पवित्र भी हो, यह आवश्यक नहीं। आत्मा पूर्ण पवित्र तो परमधाम घर जाते और घर से आते समय ही होती है। देह में आते ही आत्मा की पवित्रता की कलायें कम होने लगती हैं। इसलिए अनेक बार बाबा ने कहा पूर्ण पवित्र श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, लक्ष्मी-नारायण को भी नहीं।

सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता का राज़ / सच्ची पवित्रता अर्थात् आत्मिक पवित्रता का राज़

आत्मा की सच्ची पवित्रता है ब्रह्मचारी और ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के समान आत्मिक स्वरूप स्थित। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा की दृष्टि-वृत्ति भी आत्मिक होती है। परमात्मा से प्राप्त यथार्थ ज्ञान की धारणा और एक परमात्मा की

अव्यभिचारी याद ही सच्ची पवित्रता का एकमात्र साधन और साधना है। यथार्थ आत्मिक ज्ञान और परमात्मा की याद ही पवित्रता का आधार है। परमधाम में पवित्र आत्मायें ही जा सकती हैं। सभी आत्मायें अन्त समय तक योगबल से या सजायें खाकर पवित्र बननी ही हैं परन्तु जो योगबल से पवित्र बनता वह भविष्य नई दुनिया में ऊंच पद पाता है। आत्मा का मूल स्वरूप ही पवित्रता है।

पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: आता है और उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना और शुभ कामना होती है, जिसके फलस्वरूप दूसरों की उसके प्रति शुभ भावना और शुभ कामना स्वत: होती है। उसमें जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति का नाम-निशान भी नहीं होता है। ''अपनी ऐसी श्रेष्ठ वृत्ति बनाओ जो कैसा भी विकारी, पतित आपकी वृत्ति के वायुमण्डल से परिवर्तन हो जाये।... वृत्ति बदल गई है? सम्पन्न पवित्रता, यह सच्चा-सच्चा व्रत लेना वा प्रतिज्ञा करना है।... कितने बार सम्पूर्ण बने हो, याद है? कोई नई बात नहीं है। कल्प-कल्प बने हो, बनी हुई है, सिर्फ रिपीट करना है। बनी को बनाना है, इसलिए कहा जाता है बना-बनाया ड्रामा। बना हुआ है, सिर्फ अभी रिपीट करना अर्थात् बनाना है।'' अ.बापदादा 7.03.05

Q. सम्पन्न पवित्रता से बाबा का भाव-अर्थ क्या है? सम्पन्न पवित्रता की स्थिति क्या है, उसकी अनुभूति क्या है?

'सम्पूर्ण पवित्रता, सम्पन्न पवित्रता' आदि शब्द अभी संगमयुग पर ही बाबा ने कहे हैं। देवताओं की महिमा 'सर्वगुण सम्पन्न... अहिंसा परमो देवी-देवता धर्म' कहते हैं परन्तु 'सम्पूर्ण पवित्रता' या 'सम्पन्न पवित्रता' शब्द प्रयोग नहीं करते हैं, जिससे सिद्ध है कि अभी की पवित्रता देवताओं की पवित्रता से भी श्रेष्ठ है। अभी ही पवित्र बनकर फरिश्ता बनते हैं, चढ़ती कला में जाते हैं। अभी की पवित्रता में ज्ञान, गुण, शक्तियां, सुख-शान्ति-आनन्द सब समाया हुआ है, इसलिए फरिश्ते देवताओं से भी ऊंच हैं। जब देवता बनते हैं तो वहीं से ही देहभान आरम्भ हो जाता है, जिससे गिरती कला आरम्भ हो जाती है। देवतायें भी शादी करते हैं, बच्चों को जन्म देते हैं, भले ही वे विकार से जन्म नहीं देते हैं परन्तु दैहिक आकर्षण तो जरूर होता ही है, जिसके आधार पर ही शादी आदि करते हैं परन्तु उनके जीवन में आत्मिक शक्ति होने के कारण इन्द्रियों पर शासन होता है, जिससे प्रकृति उनकी दासी होती है और सुख के अनन्त साधन प्राप्त होते हैं परन्तु ज्ञान और आनन्द उनके जीवन में नहीं होता है। ज्ञान और आनन्द संगमयुग की ही प्राप्ति है, जिसके कारण ही आत्मा की चढ़ती कला है। देवतायें भले ही स्वभाविक देही-अभिमानी होते हैं परन्तु वे एक-दूसरे को आत्मा रूप में भी नहीं देखते हैं क्योंकि आत्मा का यथार्थ ज्ञान तो रहता नहीं है। उनकी स्वभाविक आत्मिक स्थिति होती है। इन सब बातों पर विचार करें तो सम्पन्न पवित्रता संगम युग की विशेष प्राप्ति है क्योंकि इसमें ज्ञान, गुण, शक्तियां, आनन्द सब समाया हुआ है। जब हम अपने यथार्थ आत्मिक स्वरूप में स्थित होते हैं तो ये सब अनुभव आत्मा को होता है।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता बाप का वर्सा है और यथार्थ में बाप अभी मिला है तो बाप का वर्सा भी अभी ही मिलना चाहिए। सतयुग का वर्सा तो इस संगमयुग के वर्से का प्रतिफल है। जब आत्मा इस ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों के साथ देह में रहते देह से न्यारी बाप समान अव्यक्त स्थिति धारण करती है तो देव-दुर्लभ परमानन्द का अनुभव करती है, जो अब के सिवाए त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ भी अनुभव नहीं हो सकता। इसका अनुभव परमात्मा हर आत्मा को वर्से के रूप में कराता है, जिसको दीर्घकाल और सदा काल बनाना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है। यही सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता की यथार्थ अनुभूति है। बाप का हाथ सदा हमारे सिर पर है और बाप हमारे साथ है, जो इस सत्य का अनुभव करके निराकार और अव्यक्त बाप की स्मृति में होगा तथा जिसकी दृष्टि-वृत्ति आत्मिक होगी, वही इस सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता की अनुभूति कर सकता है। यदि निराकार या अव्यक्त बाप की स्मृति नहीं होगी तो किस न किस वस्तु-व्यक्ति की याद अवश्य होगी क्योंकि मन-बुद्धि कब खाली नहीं होते और वह आत्मा सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता की स्थिति, चढ़ती कला का अनुभव कर नहीं सकती। वह अवश्य ही उतरती कला में होगा।

फरिश्ता स्थिति ही सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति है, सम्पूर्ण पवित्र स्थिति है, जो सतयुगी देवताओं से भी ऊंच है। जब सूक्ष्म वतन में जाते, जैसे ब्रह्मा बाबा हैं, तब ही वह स्थिति सदा काल होती है परन्तु यहाँ स्थूल वतन में जब आत्मिक स्थिति में आत्मा स्थित होती है तो उस स्थिति का अनुभव करती है, जिसको सदा काल बनाने का पुरुषार्थ किया जाता है।

आनन्द, अतीन्द्रिय सुख सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता वाला ही अनुभव कर सकता है। देवताओं के जीवन में सुख होगा लेकिन आनन्द संगमयुग की प्राप्ति है।

''यही प्योरिटी सबसे श्रेष्ठ और सहज पब्लिसिटी है और यही अन्तिम पब्लिसिटी का रुप है। जो अन्य कोई भी आत्माऐं कर नहीं सकतीं। विश्व परिवर्तन के कार्य में सबसे पॉवरफुल पब्लिसिटी का साधन आप विशेष आत्माओं का यही है।''

अ.बापदादा 24.4.74

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है।... किसी भी कारण से दुख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।'' अ.बापदादा 14.11.87

ब्रह्मचर्य व्रत और ब्रह्मचारी जीवन का राज़

धर्म की स्थापना और जीवन में दिव्य गुणों की धारणा के लिए ब्रह्मचर्य का पालन परमावश्यक है। जो भी परमात्मा के बच्चे बनते हैं, उनके लिए इस व्रत की धारणा परमावश्यक है। बिना ब्रह्मचर्य की धारणा के कोई भी ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहला नहीं सकता और जब तक ब्रह्मा के बच्चे नहीं बनें तब तक परमात्मा से स्वर्ग का वर्सा भी नहीं मिल सकता है। सभी धर्म-पिताओं और महापुरुषों ने ब्रह्मचर्य को अपनाया है और उसके लिए दूसरों को भी प्रेरणा दी है, जिसके आधार पर ही उनके धर्मवंश की स्थापना होती है, कोई महान कार्य करने में समर्थ हुए हैं। हम ब्राह्मणों के लिए ब्रह्मचर्य एक व्रत ही नहीं है लेकिन हमारी जीवन ही ब्रह्मचारी जीवन है अर्थात् यह व्रत सारी जीवन के लिए है।

''कई कुमारियाँ अथवा कुमार कहते हैं बाबा मात-पिता बहुत नाराज होते हैं शादी न करने पर। बाबा कहते हैं जाकर शादी करो। पूछते हो ना, खुद तुम्हारी दिल है।... शिव बाबा को याद करते मर भी गये तो तुम्हारा बहुत ऊंच पद होगा।''

सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

ब्रह्मचर्य व्रत और पवित्रता में अन्तर का राज़

ब्रह्मचर्य व्रत और पवित्रता में बहुत बड़ा अन्तर है। पवित्रता की धारणा वाले निश्चित ही ब्रह्मचारी होंगे परन्तु ये आवश्यक नहीं कि ब्रह्मचारी पवित्र भी हो। एक बच्चा ब्रह्मचारी हो सकता है, परन्तु पवित्र नहीं। आत्मा में पूर्ण पवित्रता तो उसी समय होती है, जब आत्मा परमधाम से इस धरा पर आती है तथा जब कल्पान्त में परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं और आत्मा अभीष्ट पुरुषार्थ कर अपने विकर्मों का खाता खत्म कर कर्मातीत अर्थात् पावन बनती है और घर जाती है। उसके बाद तो स्थिति नम्बरवार और समय अनुसार ही होती है। बाबा ने अनेक बार कहा है सम्पूर्ण पवित्र श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, उसके बाद जैसे बड़े होते हैं पवित्रता की कलायें कम होती जाती हैं।

''ऐसे बहुत हैं, जो जन्म से बाल ब्रह्मचारी रहते हैं। वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते। मदद तब हो जब पावन बन दुनिया को भी पावन बनायें श्रीमत पर। बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से।'' सा.बाबा 17.10.69 रिवा.

''आलस्य और अलबेलापन भी विकार है। जो यथार्थ कर्म नहीं है, वह सब विकार है।... पवित्रता के आधार पर ही कर्म की गति-विधि का आधार है। ब्रह्मचारी रहे या निर्मोही रहे - सिर्फ इसको ही पवित्रता नहीं कहेंगे। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है।''

अ.बापदादा 17.10.87

''स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित होता है... ईर्ष्या वा आवेश के वश कर्म होता है... इसको भी पवित्रता का खण्डन माना जायेगा। जब स्वप्न का भी प्रभाव पड़ता है तो साकार में किये हुए कर्म का कितना प्रभाव पड़ता होगा।'' अ.बापदादा 17.10.87

''सफलतामूर्त बनने के लिए मुख्य दो ही विशेषतायें चाहिए - एक प्योरिटी और दूसरी युनिटी। अगर प्योरिटी में कमी है तो युनिटी में भी कमी होगी। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं कहा जाता है। संकल्प, स्वभाव, संस्कार में भी प्योरिटी।''

अ.बापदादा 31.10.75

संगमयुग की पवित्रता और उसका भक्ति मार्ग के पूज्य स्वरूप से सम्बन्ध का राज़

जो आत्मायें संगमयुग पर जितनी पवित्र बनती हैं, वे उतने ही सतयुग में श्रेष्ठ पद के अधिकारी बनते हैं और भक्ति मार्ग में उतने ही पूज्य बनते हैं क्योंकि अभी की पवित्रता की धारणा से ही स्वर्ग की प्रजा और भक्ति मार्ग के भक्त बनते हैं। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति। आत्मिक स्वरूप की स्थिति में स्थित होने से ही आत्मायें हमारे जीवन से प्रेरणा लेते हैं। जो प्रेरणा लेकर धारणा करते वे प्रजा और जो उसकी महिमा मात्र करते हैं, वे भक्त बन जाते हैं। इस विधि-विधान का राज भी परमात्मा ने अभी बताया है।

''आप पूज्य आत्मायें संसार के लिए नई रोशनी हो।... ब्राह्मण बनना अर्थात् पूज्य बनना क्योंकि ब्राह्मण सो देवता बनते हैं और देवतायें अर्थात् पूजनीय।... पूजनीय बनने का विशेष आधार पवित्रता के ऊपर है। जितना सर्व प्रकार की पवित्रता को अपनाते हो, उतना ही सर्व प्रकार से पूजनीय बनते हैं।... सर्व प्रकार की पवित्रता क्या है? हर संकल्प, बोल, कर्म में सर्व ज्ञानी-अज्ञानी आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा पवित्र वृत्ति-दृष्टि, वायब्रेशन सहज और स्वतः हो।... स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित न हो।... क्रोध के अंश को भी पवित्रता का खण्डन माना जायेगा।''

अ.बापदादा 17.10.87

''भक्त आप प्राप्तिस्वरूप आत्माओं का सुमिरण करते-करते उसमें खो जाते हैं... वह अल्पकाल का अनुभव उन आत्माओं के लिए कितना न्यारा और प्यारा होता है अर्थात् लवलीन हो जाते हैं।... क्योंकि आप आत्मायें बाप के स्नेह में सदा लवलीन रही हैं, प्राप्तियों में सदा खोई हुई रही हैं।''

अ.बापदादा 14.10.87

स्वर्ग की स्थापना और स्वर्ग की राजधानी की स्थापना का राज़

परमपिता परमात्मा राजयोग सिखलाकर धर्म और राज्य दोनों की स्थापना करते हैं। कलियुग के अन्त में प्रायः सभी देशों में प्रजातन्त्र अर्थात् प्रजा का प्रजा पर राज्य हो गया है। जब ऐसी स्थिति हो जाती है तब परमात्मा आकर दैवी राज्य की स्थापना करते हैं। दुनिया में तो राज्य की स्थापना के लिए अनेक प्रकार से रक्तपात होता है परन्तु परमात्मा जिस राज्य की स्थापना करते हैं वह किसी हिंसक लड़ाई या रक्तपात से नहीं स्थापन होती, वह राजयोग की पढ़ाई से स्थापन होती है। जो आत्मायें अपने तन-मन-धन से परमात्मा के इस दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनती हैं, राजयोग के सतत अभ्यास के कर्मेन्द्रियों के राजा बनती हैं, सृष्टि-चक्र के ज्ञान को धारण कर अन्य आत्माओं की सेवा करती हैं, वे आत्मायें ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपनी त्याग-तपस्या-सेवा के फलस्वरूप सतयुग का राजभाग प्राप्त करती हैं अर्थात् राजा बनती हैं। बाबा ने कहा है - द्वापर-कलियुग में राजा स्थूल धन का दान करने से बनते हैं और सतयुग-त्रेतायुग के राजायें इस राजयोग की पढ़ाई और अविनाशी ज्ञान रत्नों के दान करने से बनते हैं। दैवी दुनिया में राज्य सत्ता और धर्म सत्ता एक के ही हाथ में होती है।

स्वर्ग में ऊंच पद पाने का राज़

परमात्मा हमको स्वर्ग में राजपद पाने के लिए पढ़ा रहे हैं। जो अच्छी रीति पढ़ते अर्थात् योग्य बनते और तन-मन-धन से जितना स्वर्ग की स्थापना में मददगार बनते, वे उस अनुसार ही वहाँ राजपद पाते हैं। नियम है जो करेगा सो पायेगा, जो स्थापना करेगा, वही पालना करेगा। स्वराज्य अधिकारी ही विश्व का राज्य अधिकारी बनेगा क्योंकि स्वराज्य अधिकारी अर्थात् स्व-स्थिति वाला ही दूसरों को स्व-स्थिति का अनुभव कराकर सच्ची सेवा कर स्वर्ग के योग्य बना सकता है। जो यहाँ दूसरों की सेवा करता, वे ही वहाँ उसकी प्रजा में आते हैं और उसको राजा मानते हैं।

''याद से पावन हो जायेंगे परन्तु पद भी पाना है। पावन तो मोचरा खाकर भी सबको होना ही है परन्तु बाप आये हैं विश्व का मालिक बनाने। पढ़ाई अच्छी रीति पढ़ना है।... बाप कहते हैं - देह सहित जो कुछ देखते हो, उस सबको भूल जाओ।... सिवाए एक शिवबाबा के और कुछ भी याद न आये।'' सा.बाबा 19.8.04 रिवा.

''तुम बच्चे सभी को पैगाम दो, टीचर बनकर औरों को भी समझाओ। जो टीचर नहीं बनते, उनका पद कम होगा। टीचर बनने बिगर किसकी आशीर्वाद कैसे मिलेगी।'' सा.बाबा 6.12.68

पुरुषार्थ का राज़

''पुरुषार्थ शब्द का अर्थ क्या करते हो? इस रथ में रहते अपने को पुरुष अर्थात् आत्मा समझकर चलो, इसको कहते हैं पुरुषार्थी।... ऐसा पुरुषार्थी कब हार नहीं खा सकता।... पुरुषार्थहीन हो जाते हैं तब हार होती है।... शव को देखने से शिव को भूल जाते हैं।'' अ.बापदादा 3.5.72

पुरुषार्थ किसको कहा जाता है, यथार्थ पुरुषार्थ क्या है और कैसे किया जा सकता है? इसका ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है और परमात्मा ने ही यथार्थ पुरुषार्थ की विधि भी बताई, जिससे आत्मा पावन बनती है और सदा सुख-शान्ति को पाती है। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने को आत्मा समझ देह और देह की दुनिया को भूलकर एक परमात्मा को याद करना ही सच्चा पुरुषार्थ है, जिससे ही पुरुष अर्थात् आत्मा पावन बनती है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को पाती है।

परमात्मा ने सहज पुरुषार्थ की विधि बताई है, जो कोई भी आत्मा कर सकती है। वह विधि है - अपने मूल आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की स्नेहमयी याद। हम देह नहीं, आत्मा हैं - इस सत्य को समझकर देह और देह के सर्व सम्बन्धों को भूलकर अपने परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा पिता को स्नेह से याद करना ही सहज पुरुषार्थ है। ये वैराइटी ड्रामा है, इसमें हर आत्मा का पार्ट अलग-अलग है, इसलिए पुरुषार्थ भी हर एक का नम्बरवार होता है। मूल पुरुषार्थ है इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने को आत्मा समझ अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना। फिर बाप की याद स्वत: आयेगी, जिससे देह और देह की दुनिया स्वत: भूल जायेगी, ब्रह्मचार्य की धारणा स्वत: होगी, सर्व के प्रति आत्मिक दृष्टि स्वत: रहेगी।

आत्मा एक स्वतन्त्र सत्ता है इसलिए आध्यात्मिक उन्नति के लिए हर आत्मा स्वतन्त्र है और उसका व्यक्तिगत पुरुषार्थ है क्योंकि आध्यात्मिक पुरुषार्थ और पुरुषार्थ का आधार है - नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। इसमें न कोई आत्मा किसका साधक है और न ही बाधक। स्वर्ग नई दुनिया की स्थापना में आत्माओं का संगठित पुरुषार्थ होता है परन्तु परमात्मा और प्रकृति नियमानुसार कर्म और फल का अटल विधान है अर्थात् जो आत्मा अपने तन-मन-धन से नये विश्व की रचना में जितना और जैसा सहयोग करता है, उस अनुसार उसको फल अवश्य मिलता है। इसलिए ज्ञानी पुरुष कब राग-द्वेष के वशीभूत नहीं होते हैं।

देह में रहते देह से न्यारी आत्मिक स्वरूप की स्थिति सर्व दुखों से मुक्त, सर्व सुखों से सम्पन्न सर्वश्रेष्ठ स्थिति है, जिस स्थिति में आत्मा कर्मभोग के होते भी कर्मभोग की वेदना से मुक्त अनुभव करती है। उस स्थिति के लिए दृढ़ संकल्प और सतत अभ्यास की साधना आवश्यकता है, जिस साधना में कोई भी व्यक्ति साधक या बाधक बन नहीं बन सकता है। इसलिए आत्मा को किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता, संकल्प-विकल्प की आवश्यकता नहीं है।

''सेफ्टी फर्स्ट। सेफ्टी क्या है? याद की यात्रा से तुम बहुत सेफ रहते हो। मूल बात है यह... एक बाप ही विदेही है, वह तुम बच्चों को कहते हैं - तुमको भी विदेही बनना है। मैं आया हूँ तुमको विदेही बनाने... बाप तो शिक्षा देते रहेंगे। भल ड्रामा भी कहते रहेंगे। ड्रामानुसार पुरुषार्थ बिल्कुल ठीक ही चल रहा है, फिर आगे के लिए भी समझाते रहेंगे।''

सा.बाबा 27.9.04 रिवा.

''बच्चे, पहले-पहले यह प्रैक्टिस करो कि हम आत्मा हैं, न कि शरीर। जब अपने को आत्मा समझेंगे तब ही परमपिता परमात्मा को याद कर सकेंगे।... जब ये प्रैक्टिस पक्की होगी कि मैं आत्मा हूँ तब ही रुहानी बाप की याद ठहरेगी।''

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

''अपने को पक्का-पक्का आत्मा समझेंगे तब बाप भी पक्का याद रहेगा। देहाभिमान होगा तो बाप को याद कर नहीं सकेंगे।... यह देही-अभिमानी बनने की शिक्षा बाप अभी ही देते हैं, सतयुग में ये शिक्षा नहीं मिलती है।'' सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

''विकार भी अधर्म है ना। सब अधर्मों का विनाश और एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करने मुझे आना पड़ता है। भारत में जब सतयुग था तो एक ही धर्म था, वही धर्म फिर अधर्म बनता है।... जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। अपने को आत्मा निश्चय करना है।'' सा.बाबा 1.9.04 रिवा.

''कितना बाबा की सर्विस में जीवन सफल करते हैं। ऐसे नहीं कि इस ब्रह्मा ने घरबार छोड़ा है, इसलिए नारायण बनते हैं। ये भी मेहनत करते हैं ना। ... तुम बच्चों में जिसने जितना ज्ञान उठाया है, उस अनुसार ही सर्विस कर रहे हैं। मुख्य बात है ही गीता के भगवान की।... यह बाबा भी पुरुषार्थी है, पुरुषार्थ कराने वाला तो बाप है।'' सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

''जैसे इस शरीर को लेने और छोड़ने का अनुभव सभी को है वैसे ही जब चाहो तब शरीर का भान बिल्कुल छोड़कर अशरीरी बन जाना और जब चाहो तब शरीर का आधार लेकर कर्म करना - इस अनुभव को अब बढ़ाना है।'' अ.बापदादा 22.1.70

''चरित्र को देखो और चेतन अर्थात् विचित्र को देखो। अगर ये दो बातें देखो तो देह की आकर्षण जो न चाहते भी हुए भी खींच लेती है, वह दूर हो जायेगी।... व्यक्त में होते भी अव्यक्त में रहो। यह पहला पाठ ही भूल जायेंगे तो फिर ट्रेनिंग क्या करेंगे।''

अ.बापदादा 18.9.69

''साक्षी-दृष्टा होकर अपने को महीन रूप से स्व को चेक करो कि कहाँ ईश्वरीय प्रवृत्ति में सूक्ष्म में मैं और मेरापन तो नहीं छिपा हुआ है।... अमृतवेले संगठित रूप में अब ऐसे सर्व आत्माओं को सर्व किरणें देने का अभ्यास करो। फिर जहाँ भी जाओ, वहाँ यह अभ्यास समय को, स्वयं को और सर्व को मुक्त कर मुक्ति के पात्र बनायेगा।''

अ.बापदादा का सन्देश 04.04.05 गुल्जार दादी के द्वारा

आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है क्योंकि आत्मा सच्चिदानन्दसागर परमात्मा की वंशधर है। देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा स्वत: ही परमानन्द का अनुभव करती है। आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो यह जीवन परमानन्दमय अनुभव होगा। पुरुषार्थ है अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का न कि आनन्द के लिए।

''बोलते हुए बोलने से परे की स्थिति हो सकती है?... अब हो सकती है या कुछ मास वा कुछ वर्ष चाहिए?... अगर हो सकती है तो अब से ही हो सकती है? प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल साथ-साथ होना चाहिए।'' अ.बापदादा 26.3.70

''84 जन्मों के संस्कार प्रबल हैं या इस सुहावने संगमयुग के एक सेकेण्ड में अशरीरी, वाणी से परे अपनी अनादि स्टेज का अनुभव प्रबल है? क्या समझते हो?... ज्यादा आकर्षण कौन करता है, वाणी में आने का संस्कार या वाणी से परे होने का अनुभव? वास्तव में यह एक सेकेण्ड का अनुभव बहुत समय के अनुभव का आधार है।... श्रीमत है - एक सेकेण्ड में साक्षी अवस्था में स्थित हो जाओ।... एक सेकेण्ड में अपने को स्थित करने के इस पुरुषार्थ को ही तीव्र पुरुषार्थ कहा जाता है।''

अ.बापदादा 4.5.73

''सिद्ध करने वाला कभी भी प्रसिद्ध नहीं हो सकता। वास्तव में प्रसिद्ध होने वाला कोई भी बात को सिद्ध नहीं करेगा अर्थात् जिद्द करने वाला कभी भी प्रसिद्ध नहीं हो सकता। जिद्द करने वाला कभी सिद्धि को पा नहीं सकता। सिद्धि को पाने वाले, स्वयं को नम्रचित, निर्मान, हर बात में अपने आपको गुणग्राहक बनायेगा।'' अ.बापदादा 16.5.74

यम अर्थात् संयम और नियम का राज

योग मार्ग में सफलता का आधार है ज्ञान और यम-नियम की पालना। जो बाबा के बताये नियम-संयम को सदा पालन करता है, उसकी किसी कार्य में असफलता हो नहीं सकती। नियमों में भी मूल नियम है पवित्रता का, ज्ञान का अध्ययन और अन्न एवं संग की शुद्धि। जो आत्मा नित्य मुरली का अध्ययन करता और अन्न एवं संग की विधिपूर्वक परहेज रखता, वह अपने पुरुषार्थ में अवश्य सफल होता है।

''अगर बीच में यह संयम रख दो तो यह देह की आकर्षण आकर्षित नहीं करेगी। इसके लिए तीन बातों को याद रखना है - एक स्वयं की याद, दूसरा संयम और तीसरा समय। ये तीनों बातें याद रखेंगे तो क्या बन जायेंगे - त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी और त्रिलोकीनाथ। यह है तुम्हारा संगमयुग का टाइटिल।'' अ.बापदादा 18.9.69

''स्वयं को और सर्वशक्तिवान बाप को पूर्ण रीति से जानने के लिए संयम चाहिए। जब संयम को भूलते हो तो स्वयं को भी भूलते हो और सर्वशक्तिवान बाप को भी भूलते हो।... अगर संयम ठीक है तो स्वयं की स्थिति भी ठीक है और जब स्वयं की स्थिति ठीक है तो सब बातें ठीक हैं।'' अ.बापदादा 18.9.69

''मैं जो हूँ, जैसा हूँ - ऐसे मानकर चलेंगे तो क्या स्थिति होगी? देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फरिश्ता वा कर्मातीत। क्योंकि जब स्वयं को अच्छी तरह से जान और मान लेते हैं; तो जो स्वयं को जानता है उस द्वारा कोई भी संयम नियम नीचे-ऊपर नहीं हो सकता। संयम को जानना अर्थात् संयम में चलना।'' अ.बापदादा 3.02.72

''स्वयं की स्थिति में स्थित होने वाला जो कर्म करता है, जो बोल बोलता है, जो संकल्प करता है वही संयम बन जाता है। जैसे साकार में स्वयं की स्मृति में रहने से जो कर्म किया, वही ब्राह्मण परिवार का संयम हो गया ना। तो स्वयं की स्मृति में रहने से हर कर्म संयम बन ही जाता है और साथ-साथ समय की पहचान भी उनके सामने सदैव स्पष्ट रहती है।'' अ.बापदादा 3.02.72

''महारथी अर्थात् ऐसा महान पुरूषार्थ करने वाले, विघ्न को दूर से भगाने का पुरूषार्थ ही महारथीपन की निशानी हैं।... कोई भी विघ्न आने वाला होगा तो बुद्धि में संकल्प आयेगा कि कुछ होने वाला है। फिर जितना-जितना योग-युक्त और युक्ति-युक्त होगा उसे उतना ही आने वाला विघ्न स्पष्ट रूप में नज़र आयेगा। ऐसा दर्पण तैयार हो जायेगा।'' अ.बापदादा 6.02.74

''जैसे भक्ति मार्ग में भी दान की हुई वस्तु अपने प्रति नहीं लगाते हैं, ठीक इसी प्रकार यहाँ भी हिसाब-किताब हैं। स्वयं की कमजोरी प्रति व स्वयं के पुरूषार्थ के प्रति वस्तु लगाना यह जैसे कि अमानत में ख्यानत हो जाती है। ऐसा महीन पुरूषार्थ महारथी की निशानी है।'' अ.बापदादा 6.2.74

पुरुषार्थ और प्रालब्ध का राज

ये विश्व-नाटक पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित एक घटना-चक्र है। पुरुषार्थ आत्मा का निजी स्वभाव है क्योंकि यह कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मा कर्म के बिना रह नहीं सकती। पुरुषार्थ और प्रालब्ध दोनों एक दूसरे के पीछे चलते हैं। बिना पुरुषार्थ के कोई प्रालब्ध नहीं मिलती है और पुरुषार्थ भी ड्रामा अनुसार ही आत्मा करती है। कोई भी आत्मा एक क्षण भी पुरुषार्थ के बिना नहीं रह सकती। इसीलिए किसी महापुरुष ने कहा है - पुरुषार्थ ही जीवन है और पुरुषार्थ हीनता ही मृत्यु है।

पुरुषार्थ ही प्रालब्ध का आधार है। कोई भी प्रालब्ध अर्थात् फल बिना पुरुषार्थ के नहीं मिलता है। सच्चा पुरुषार्थ तो संगमयुग पर ही होता है, जब परमात्मा आकर पुरुषार्थ और प्रालब्ध का ज्ञान देते हैं, जिस पुरुषार्थ से आत्माओं की और विश्व की चढ़ती कला होती है। इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि ये संगमयुग केवल पुरुषार्थ के लिए ही नहीं है लेकिन अभी का पुरुषार्थ भी प्राप्ति है अर्थात् पुरुषार्थ भी परम सुखमय है। यथार्थ पुरुषार्थ है ही विश्व-नाटक को जानकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का और आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। जो यथार्थ पुरुषार्थी होगा, वह सदा ही इस जीवन में परमानन्द का अनुभव करेगा।

‘‘देवताओं को वहाँ पता थोड़े ही रहता है कि हमने यह राज्य कैसे पाया?... ये बड़ी समझने की गुह्य बातें हैं। समझदार ही समझें। बाकी जो बूढ़ी मातायें हैं, उनमें इतनी बुद्धि तो है नहीं। यह भी ड्रामा प्लेन अनुसार हर एक का अपना पार्ट है। ऐसे तो नहीं कहेंगे - हे ईश्वर बुद्धि दो। हम सबको एक जैसी बुद्धि दें तो सब नारायण बन जायें।’’ सा.बाबा 18.09.2004 रिवा.

‘‘बहुतों को मित्र-सम्बन्धी आदि याद पड़ते हैं, बाप की याद है नहीं। अन्दर ही घुटका खाते रहते हैं।... बाप तो फिर भी बच्चों से पुरुषार्थ कराते रहते हैं।... इसमें विचार सागर मंथन करना पड़ता है।... यह तो जानते हो, महाराजा-महारानी बनेंगे तो उन्हों के दास-दासियां भी चाहिए, वे भी यहीं से बनेंगे।’’ सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

‘‘हर एक का वही पार्ट बजता है, जो कल्प-कल्प बजता है। उसमें कोई फर्क नहीं हो सकता। यह सारा बना-बनाया खेल है। कोई पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी? अब पुरुषार्थ बिगर प्रालब्ध मिलती नहीं है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध मिलती है।’’ सा.बाबा 27.12.04 रिवा.

Q. लॉस्ट पेपर ‘नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप’ सेकेण्ड का होना है, इसमें पास लास्ट सो फास्ट भी हो सकता है और बहुत समय से ज्ञान में आया भी हो सकता है तो दोनों की प्रालब्ध में मूलभूत अन्तर क्या होगा? और बहुत समय से चलने वाले परन्तु सेकण्ड के इस लास्ट पेपर में नापास और लास्ट सो फास्ट में पास होने वाले की प्रालब्ध में क्या अन्तर होगा?

Q. सतयुग के प्रथम जन्म में आने वाले महाराजा-महारानी, राजा-रानी, दास-दासी, प्रजा और त्रेता के चक्रवर्ती राजा-रानी, साधारण राजा-रानी, प्रजा, दास-दासी में क्या मूलभूत अन्तर होगा और उसका आधार क्या बनेगा?

‘‘लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ की विधि है - प्रतिज्ञा।... संकल्प किया और स्वरूप हुआ।... लास्ट पेपर का समय क्या मिलेगा? एक सेकण्ड। लास्ट पेपर का टाइम भी फिक्स है और पेपर भी फिक्स है। पेपर सुनाया था ना - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप। एक सेकण्ड में आर्डर हुआ - नष्टोमोहा बन जाओ तो एक सेकेण्ड में अगर नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप न बने... फेल।’’

अ.बापदादा 23.6.73

‘‘अगर विधि यथार्थ है तो विधि से सिद्धि अर्थात् सफलता और श्रेष्ठता अवश्य ही दिन प्रतिदिन वृद्धि को पाते हुए अनुभव करेंगे। इस परिणाम से अपने पुरुषार्थ की यथार्थ स्थिति को परख सकते हो।’’ अ.बापदादा 25.8.71

‘‘अविनाशी प्राप्ति होते भी विनाशी अल्प-काल की प्राप्ति अब भी आकर्षित करती है।... श्रेष्ठ ठिकाना जानते हुए भी अल्पकाल के ठिकाने आइवेल के लिए बना कर रखे हैं... बाप से चतुराई करते हैं... कर्मों की गति को जानने वाले को भी... लेने में पूरा लेना और छोड़ने में कुछ न कुछ छुपाना।’’ अ.बापदादा 01.02.76

‘‘बाप से चतुराई करते हैं... ऐसे चतुर बच्चों के साथ ड्रामानुसार कौनसी चतुराई होती है... स्वर्ग के अधिकारी तो सब बन जाते हैं लेकिन राजधानी में नम्बरवार तो होते ही हैं ना।... ड्रामानुसार जैसा पुरुषार्थ वैसा पद स्वतः प्राप्त हो जाता है।’’

अ.बापदादा 1.02.76

‘‘मेहनत बिगर फल थोड़ेही मिल सकता है। बाप तो पुरुषार्थ कराते रहते हैं। भल होता ड्रामा अनुसार ही है परन्तु पुरुषार्थ तो करना होता है।... पुरुषार्थ तो तुमको करना ही है। पुरुषार्थ और प्रालब्ध होती है। मनुष्य पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध? अब बड़ी तो प्रालब्ध है परन्तु पुरुषार्थ को बड़ा रखा जाता है, जिससे प्रालब्ध बनती है।’’ सा.बाबा 06.08.2004 रिवा.

‘‘संगमयुग पर ही बाप यह सब समझाते हैं।... बाप रास्ता बताते हैं, ऐसे नहीं कि बाप सुख देते हैं। सुख का रास्ता बताते हैं। रावण भी दुख देते नहीं हैं लेकिन दुख का उल्टा रास्ता बताते हैं। बाप न दुख देते हैं, न सुख देते हैं, सुख का रास्ता बताते हैं। फिर जो जितना पुरुषार्थ करे।... अगर बाप देता हो तो फिर सबको एक जैसा वर्सा मिलना चाहिए।’’

सा.बाबा 13.07.2004 रिवा.

पुरुषार्थ और भाग्य का राज़

पुरुषार्थ करना हर आत्मा का कर्तव्य है और पुरुषार्थ अनुसार ही फल मिलता है। भूतकाल में किये गये पुरुषार्थ का फल ही वर्तमान का भाग्य है और वर्तमान में किये गये पुरुषार्थ का फल ही भविष्य का भाग्य होगा। ये पुरुषार्थ और भाग्य का अटूट और अविनाशी सम्बन्ध है तथा विश्व-नाटक का अटल नियम है कि ड्रामा में भाग्य निश्चित होते हुए भी उसके लिए पुरुषार्थ अवश्य करना होगा। कोई भी आत्मा बिना पुरुषार्थ के भाग्य को पा नहीं सकती। भाग्य विधाता बाप के भाग्य देने का विधान है - एक कदम पुरुषार्थी का और हजार कदम बाप की मदद अर्थात् बिना पुरुषार्थ के भाग्य विधाता बाप भी कोई भाग्य नहीं देता है।

''धारणा नहीं कर सकते तो बाप कहेंगे, इनकी तकदीर में राज्य-भाग्य नहीं है।... राजाई यहाँ ही बनती है। राजधानी में नौकर-चाकर, चण्डाल आदि सब चाहिए। यह राजधानी स्थापन हो रही है।'' सा.बाबा 3.11.04 रिवा.

''सुहाग और भाग्य कहा जाता है।... सुहाग सदा कायम रहे, उसके लिए चार बातें - एक तो सदैव जीवन का उद्देश्य, दूसरा बापदादा का आदेश, तीसरा सन्देश और चौथा स्वदेश।... पुरुषार्थ की कमी को भरने के लिए ये चार शब्द सदा सामने रखो।''

अ.बापदादा 14.5.70

पुरुषार्थ, प्राप्ति (सुख-दुख) और ड्रामा का राज़

पुरुषार्थ आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है और पुरुषार्थ अनुसार प्राप्ति अवश्य होती है। परन्तु ड्रामा में पुरुषार्थ और प्राप्ति की अविनाशी नूँध है। ड्रामानुसार आत्मा को जिस समय जो सुख या दुख मिलना होता है, उस अनुसार पुरुषार्थ अर्थात् कर्म अवश्य होता है या कहें कि ड्रामानुसार आत्मा का जो पुरुषार्थ चलता है अर्थात् कर्म होता है, उस अनुसार ही उसको सुख-दुख की प्राप्ति होती है। परन्तु विश्व-नाटक में आत्मा का पार्ट, पुरुषार्थ और प्राप्ति का अनूठा सन्तुलन है, कुछ भी ऊपर-नीचे नहीं हो सकता। परन्तु आध्यात्म में पुरुषार्थ शब्द आत्म-कल्याणार्थ किये गये कर्म के लिए प्रयोग किया जाता है। यथार्थ पुरुषार्थ है ही ड्रामा के यथार्थ राज़ को समझकर देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा होकर, न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना, जो स्थिति सुख और दुख दोनों से परे है अर्थात् कर्मभोग होते भी कर्मभोग की वेदना से मुक्त परमानन्दमय है।

Q. संगमयुग सुखों और सतयुग के सुखों के लिए एक ही पुरुषार्थ है या अलग-अलग पुरुषार्थ है?

जो संगमयुग के सुखों का उपभोग करता है, वही सतयुग के सुखों का उपभोग कर सकता है। सतयुग के सुख तो संगमयुग के सुखों का प्रतिबिम्ब मात्र हैं अर्थात् संगमयुग के सुख ही सतयुग के सुखों का बीज हैं। संगमयुग के सुख अति महान हैं, जो संगमयुग के सुखों का उपभोग कर लेता है, उसे सतयुग के सुखों के पुरुषार्थ की कोई आवश्यकता नहीं होती है। इसीलिए गायन है - स्टूडेण्ट लाइफ इज दि बेस्ट। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, जिसका यथार्थ ज्ञान और स्थिति तथा उस परम-आनन्द की अनुभूति संगमयुग पर ही होती है। सतयुग में तो आत्मा को आत्मिक ज्ञान नाममात्र होता है बाकी आत्मिक शक्ति होती है, इसलिए प्रकृति दासी होती है

''अगर अपने अन्दर भी पुरुषार्थ का वा सफलता का कोई अरमान रह जाता है तो इसका कारण कहाँ न कहाँ कोई न कोई फरमान नहीं पालन होता है।... संकल्प रूप में अरमान अर्थात् उलझन आये तो चेक करो कि कौनसे फरमान की कमी है।... हर कर्म और हर समय के लिए फरमान मिला हुआ है।'' अ.बापदादा 15.9.71

ज्ञानी तू आत्मा और योगी तू आत्मा का राज़

यथार्थ ज्ञानी वह है, जिसकी धारणा में ज्ञान हो। ज्ञान का यथार्थ सुख अनुभव करे, व्यवहार में ज्ञान हो। ऐसे ही योगी आत्मा वह है, जिसको योग का पुरुषार्थ न करना पड़े अर्थात् योग स्वभाविक हो। योग सदा लगा रहे, सदा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो। यथार्थ ज्ञानी योगी अवश्य होगा और यथार्थ योगी ज्ञानी भी अवश्य होगा क्योंकि ज्ञान और योग एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं, जो समानान्तर चलते हैं।

''तो चेक करो - हर सब्जेक्ट को अनुभव में लाया है? ज्ञान सुनना-सुनाना तो सहज है लेकिन ज्ञान स्वरूप बनना है। ज्ञान को स्वरूप में लाया तो स्वत: ही हर कर्म नॉलेजफुल अर्थात् नॉलेज की लाइट-माइट वाला होगा। नॉलेज को कहा ही जाता है लाइट और माइट।''

अ.बापदादा 30.11.2003

''मास्टर नालेजफुल के मुख से 'ना मालूम' शब्द नहीं निकलना चाहिए। जब सृष्टि के आदि,मध्य,अन्त को तीनों कालों को जान गये हो, मास्टर नालेजफुल बन गये हो तो ऐसे मास्टर नालेजफुल के मुख से यह शब्द नहीं निकल सकता कि ना मालूम।''

अ.बापदादा 5.03.71

मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् गति-सद्गति का राज

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। हर आत्मा परमधाम में मुक्ति में रहती है और सतयुग त्रेता में सभी आत्मायें भी जीवनमुक्ति में होती हैं और कल्प के हिसाब से भी जीवनमुक्ति का समय होता है। वैसे तो हर आत्मा का अपने पार्ट के हिसाब से आधा समय जीवनमुक्ति का होता है अर्थात् जीवन में होते भी दुख-अशान्ति से मुक्त होती हैं।

मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव संगमयुग पर ही आत्माओं को होता है। वास्तव में मुक्तिधाम अर्थात परमधाम में आत्मा को मुक्ति का कोई अनुभव नहीं होता है, वह आत्माओं की सुसुप्त अवस्था है और सतयुग-त्रेता में यथार्थ ज्ञान न होने के कारण जीवनमुक्ति का कोई विशेष अनुभव नहीं होता है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर जब ज्ञान सागर परमात्मा अवतरित होते हैं और उनसे विश्व-नाटक का ज्ञान मिलता है, तब आत्मायें ज्ञान सहित अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित देह और देह की दुनिया से न्यारी बीजरूप स्थिति अर्थात् निर्संकल्प स्थिति में स्थित हो मुक्ति का अनुभव करती हैं और कर्मयोगी बनकर ईश्वरीय सेवा के कर्तव्य को करते हुए, निर्विकल्प स्थिति में रहकर जीवनमुक्ति का अनुभव करती हैं। ये संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही यथार्थ अनुभव है, जिसको आत्मायें दुख के समय भक्ति मार्ग में याद करती है।

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है परनतु ये विश्व-नाटक सुख-दुख, जीत-हार का अनादि-अविनाशी सतत परिवर्तनशील खेल है, जो कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता है इसलिए सदा काल के लिए मुक्ति या जीवन-मुक्ति में कोई भी आत्मा नहीं रह सकती परन्तु कल्प में इस स्थिति का अनुभव हर आत्मा को अवश्य होता है, जो आत्माओं को परमात्मा पिता का वर्सा है।

परमपिता परमात्मा सर्व आत्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है। वह हर आत्मा को किस न किस रूप में ये अनुभव अवश्य कराता है। भले ही हम उसको जाने या न जाने। वह सर्व आत्माओं का बाप है, तो उसे ये अनुभव सर्व आत्माओं को कराना ही है, इसलिए ही आत्मायें भक्ति मार्ग में उसको याद करती हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति का ज्ञान इस संगमयुग पर ही परमात्मा द्वारा मिलता है, जिससे हम मुक्ति और जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करते हैं। ये अनुभव मुक्तिधाम की मुक्ति और सतयुग-त्रेता की जीवनमुक्ति से पदमगुणा श्रेष्ठ और आनन्दमय है।

''सभी आत्मायें शान्ति चाहती हैं। अभी तुम शिवबाबा से शान्ति का वर्सा ले रहे हो। बाप को याद करते-करते तुमको शान्तिधाम जाना है जरूर। नहीं याद करेंगे तो भी सब आत्मायें शान्तिधाम जायेंगी जरूर।... जो योगबल से पावन बनेंगे, वे सतयुग में आयेंगे।''

सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

''सतयुग की जीवनमुक्ति का वर्सा तो प्राप्त होगा ही लेकिन अभी के जीवनबन्ध से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव सतयुग से भी ज्यादा श्रेष्ठ है। तो अभी भी अपने ज्ञान और योग की शक्ति से जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करते हो।''

अ.बापदादा 5.12.78 पार्टी

''विश्व की सर्व आत्माओं के मुक्तिदाता निमित्त आप हो क्योंकि बाप के साथी हो। तो समय की रफतार प्रमाण अभी एक ही समय इकट्ठा तीन सेवायें करनी है। एक वाणी, दूसरा स्व की शक्तिशाली स्थिति और तीसरा श्रेष्ठ रुहानी वायब्रेशन से।''

अ.बापदादा 17.3.03

''दिलाराम के दिल में आप समाये हुए रहेंगे और आपके दिल में दिलाराम समाया हुआ है तो किसी भी रूप की माया चाहे सूक्ष्म, चाहे रॉयल रूप में, चाहे मोटे रूप में आ नहीं सकती। स्वप्न और संकल्प मात्र भी माया आ नहीं सकती। मेहनत से मुक्त हो जायेंगे ना।... मेहनत-मुक्त ही जीवनमुक्त का अनुभव कर सकते हैं।'' अ.बापदादा 19.03.2000

''यह तो बच्चों को पक्का है ना कि जितना हम बाप को याद करेंगे, उतना पवित्र बनेंगे। जितना हम अच्छा टीचर बनेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। बाप तुमको पढ़ाना सिखाते हैं, तुमको फिर औरों को सिखाना है।... टीचर रूप में सृष्टि-चक्र की नॉलेज देनी पड़ती है।... देह सहित देह के सर्व धर्म छोड़ मुझे याद करने से तुम पावन बनेंगे और अपने घर मुक्तिधाम चले जायेंगे।... जीवनमुक्ति का मदार पढ़ाई पर है, मुक्ति का मदार याद पर है।'' सा.बाबा 23.11.04 रिवा.

''एक आंख में मुक्ति, एक में जीवनमुक्ति। तो विनाश मुक्ति का गेट और स्थापना जीवनमुक्ति का गेट हैं, तो दोनों आंखों से यह दिखाई दें कि यह पुरानी दुनिया जाने वाली है - आपके नैन और मस्तक यह बोलें।'' अ.बापदादा 19.7.72

''मुक्ति की अवस्था का अगर अनुभव करते हो तो मुक्त होने के बाद जीवन-मुक्ति का अनुभव ऑटोमेटिकली हो जाता है।... मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अभी करना है न कि भविष्य में।... वह है श्रेष्ठ कर्मों की प्रारब्ध लेकिन श्रेष्ठ कर्म तो अभी होते हैं ना, तो प्राप्ति का भी अनुभव अभी होगा ना।'' अ.बापदादा 11.7.72

ब्रह्मा का राज / ब्रह्मा के अस्तित्व अर्थात् कैसे शिवबाबा की ब्रह्मा तन में प्रवेशता और ब्रह्मा नामकरण का राज़

ब्रह्मा को सृष्टि का रचता कहा जाता है परन्तु ब्रह्मा कौन है, ब्रह्मा सृष्टि का रचता है तो ब्रह्मा का भी तो कोई रचता होगा, वह कौन है? सृष्टि को अनादि-अविनाशी कहा जाता है तो ब्रह्मा उसका रचता कैसे है? ये सब बातें उलझी हुई थी, जिनका यथार्थ ज्ञान किसको भी नहीं है। केवल कहने मात्र ही कहते रहते हैं। अभी परमात्मा ने ही ये सब ज्ञान दिया है कि मैं इस तन में प्रवेश होकर इस सृष्टि की नई कलम लगाता हूँ और इनका नाम ब्रह्मा रखता हूँ। ब्रह्मा का ही एडम, आदम, आदि-देव के रूप में अन्य धर्मों में भी वर्णन है परन्तु यथार्थता का किसको पता नहीं है।

''बाप कहते हैं - दिन-प्रतिदिन तुमको गुह्य ते गुह्य बातें सुनाता हूँ। आगे मालूम था क्या कि मात-पिता किसको कहा जाता है? पिता से वर्सा मिलता है ब्रह्मा द्वारा। माता भी चाहिए ना क्योंकि तुम बच्चों को एडॉप्ट करना है।'' सा.बाबा 24.9.04 रिवा.

''प्रजापिता ब्रह्मा को कहते हैं अर्थात् प्रजा को रचने वाला। परन्तु उनको भगवान नहीं कह सकते। भगवान प्रजा नहीं रचते हैं। भगवान के तो सब आत्मायें बच्चे हैं।... तुमको भगवान ने ब्रह्मा बाप द्वारा एडॉप्ट किया है।... इनको प्रजापिता ब्रह्मा तब कहते हैं, जब इनमें शिवबाबा ने प्रवेश किया है।'' सा.बाबा 18.09.04 रिवा.

ब्रह्मा, ब्रह्मा तब ही कहलाता है, जब इस तन में परमात्मा प्रवेश करते हैं। ब्रह्मा बाबा की आत्मा Next to God है अर्थात् आत्माओं में दूसरा नम्बर ब्रह्मा का ही है, इसलिए उनके कर्म-संस्कार भी परमात्मा के समान ही होने चाहिए और हैं भी। सारे कल्प में पार्ट बजाने के बाद जब परमात्मा उनके तन में प्रवेश करते हैं तो वे तुरन्त अपनी उस स्थिति को प्राप्त कर लेते हैं। शिवबाबा ने ही ब्रह्मा बाबा का ब्रह्मा नाम रखा है और ब्रह्मा के द्वारा हम ब्राह्मणों को जन्म दिया है। ब्रह्मा सारे कल्प-वृक्ष का आदि पिता है, इसलिए अन्य धर्म वाले भी ब्रह्मा को किसी न किसी रूप में मानते हैं। ब्रह्मा को ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर कहते हैं। ब्रह्मा द्वारा ही शिवबाबा नई सृष्टि की रचना रचते हैं। पहले ब्राह्मणों की रचना रचते हैं और ब्राह्मण ही देवता बनते हैं। नई दुनिया रचने के लिए ब्रह्मा द्वारा ही शिवबाबा रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ की स्थापना करते हैं और यज्ञ की सम्भाल के लिए ब्राह्मणें की रचना रचते हैं।

''आज बापदादा की आपस में वतन में रूहरुहान चली। कैसे दोनों एक-दो में रूह-रुहान करेंगे? जैसे यहाँ इस दुनिया में आप लोग 'मोनो एक्टिंग' करते हो ना!... साकारी दुनिया में एक आत्मा दो पार्ट बजाती है वैसे ही बाप-दादा दो आत्मायें एक शरीर से रूहरुहान करते हैं।'' अ.बापदादा 19.03.2000

''प्रजापिता ब्रह्मा का नाम तो बाला है।... ब्रह्मा का दिन और रात गाई जाती है क्योंकि ब्रह्मा ही पूरे चक्र में आते हैं। अभी तुम ब्राह्मण हो, फिर देवता बनेंगे। मुख्य तो ब्रह्मा हुआ ना।'' सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

‘‘अगर यह ब्रह्मा नहीं होता तो शिवबाबा भी नहीं होता। अगर कोई कहे कि हम तो शिवबाबा को याद करते हैं, ब्रह्मा को नहीं। परन्तु शिवबाबा बोलेंगे कैसे ?... अभी तुम शिवबाबा के सम्मुख बैठे हो। फिर जो समझते हैं ब्रह्मा तो कुछ नहीं तो उनकी क्या गति होगी ? दुर्गति को पा लेते हैं। मनुष्य तो पुकारते हैं - ओ गॉड फादर, फिर गॉड फादर सुनता है क्या ? कहते हैं - ओ लिबरेटर आओ तो क्या वहाँ से ही लिबरेट करेंगे ? कल्प-कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाप आते हैं। जिसमें आते हैं उनको ही उड़ा दें तो क्या कहेंगे ?’’ सा.बाबा 21.12.04 रिवा.

ब्रह्मा के 84 जन्मों और परमात्मा के ब्रह्मा तन में प्रवेश होने का राज

परमात्मा ही ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर ब्रह्मा बाबा के 84 जन्मों का राज़ बताते हैं। ब्रह्मा के साथ ब्राह्मणों के 84 जन्मों का राज़ भी समझ में आ ही जाता है। लौकिक गीता में इसका वर्णन है कि परमात्मा आकर ब्रह्मा के जन्मों का राज़ बताते हैं, भले ही उसमें नाम अर्जुन का दिखाया है। ब्रह्मा ही अर्जुन है और परमात्मा को श्रीकृष्ण के रूप में दिखाया है। एक आत्मा के सारे कल्प में अधिक से अधिक 84 जन्म हो सकते हैं, उसमें भी पूरे 84 जन्म और पूरा समय ब्रह्मा बाबा का ही है। और तो सभी के जन्म का समय नम्बरवार कम होता जाता है।

‘‘मैं इनके तन में प्रवेश करता हूँ, जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। अब ये भी पावन बनने का पुरुषार्थ करते हैं।... ये जानते हैं बाबा हमारे बाजू में बैठा है, मेरा बाबा है ना, मेरे घर में बैठा है।... फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट।’’ सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

‘‘यह 84 जन्मों की कहानी है। भगवानुवाच है ना अर्जुन के प्रति कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। एक को ही क्यों कहते हैं ? क्योंकि एक की गारन्टी है।... सब बच्चे तो पूरे 84 जन्म लेने वाले नहीं है।... इनकी तो सर्टेन है।... मैं इनके लिए कहता हूँ, जिनके लिए तुमको भी सर्टेन है।’’ (एक के बाद हर आत्मा पूरे 84 जन्म से कुछ न कुछ समय कम तो अवश्य हो जायेगा) सा.बाबा 19.02.2005 रिवा.

आत्मायें अविनाशी हैं और परमात्मा भी अविनाशी है तो परमात्मा पिता कैसे है, उसका राज़

परमात्मा इस धरा पर आकर ब्रह्मा द्वारा आत्माओं को गोद का बच्चा बनाते हैं और उनको वर्से में स्वर्ग का राजभाग देते हैं, मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार देते हैं इसलिए परमात्मा सर्व आत्माओं का बाप कहलाता है और आत्मायें बच्चे कहलाती हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा हर आत्मा को जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में परमात्मा से मिलता है। जो आत्मायें डायरेक्ट ब्रह्मा के बच्चे नहीं बनते, वे भी इन्डायरेक्ट ब्रह्मा के बच्चे ही हैं और शिवबाबा द्वारा मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा पाते ही हैं।

परमात्म के मात-पिता बनने का राज़

गाते हैं - तुम मात-पिता हम बालक तेरे। परन्तु परमात्मा कैसे मात-पिता है, यह कोई नहीं जानते हैं। कोई आत्मा का तन या तो माता का होगा या पिता का होगा अर्थात् वह या तो माता होगी या पिता होगा, दोनों नहीं हो सकता परन्तु परमात्मा को माता-पिता कहते हैं तो वह कैसे मात-पिता दोनों है, इसका राज़ भी बाप ही बतलाते हैं इस तन में परमात्मा प्रवेश करते हैं तो परमात्मा इस तन से पिता के रूप में वर्सा भी देते हैं तो माता के रूप में बच्चों को एडॉप्ट कर पालना भी करते हैं। फिर शिवबाबा को पिता कहते हैं तो ब्रह्मा को माता भी कहते हैं परन्तु दोनों का तन एक ही है, इसलिए माता-पिता दोनों है।

‘‘बाप ने इस माता द्वारा तुम सबको एडॉप्ट किया है। शिवबाबा कहते हैं मैं इस मुख द्वारा तुम बच्चों को ज्ञान-दूध पिलाता हूँ।’’ सा.बाबा 08.9.04 रिवा.

‘‘भारत में ही तुम परमात्मा को मात-पिता कहकर बुलाते हो।... भारत को ही मदर कन्ट्री कहा जाता है क्योंकि यहाँ ही शिवबाबा मात-पिता के रूप में पार्ट बजाते हैं।’’ सा.बाबा 8.7.05 रिवा.

''एक-एक बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए।... बच्चा फादर कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता! बाप सारी दुनिया के बच्चों की आश पूर्ण करते हैं। सबकी कामना रहती है कि हम शान्तिधाम जायें। आत्मा को अपना घर याद पड़ता है।'' सा.बाबा 22.7.04 रिवा.

Q. सर्व आत्मायें बाप के बच्चे हैं तो वे सब कब और कहाँ और कैसे बाप से मिलती हैं?

जगतपिता और परमपिता का राज़

परमपिता परमात्म है सर्व आत्माओं का बाप और जगतपिता ब्रह्मा है सर्व जीवात्माओं का बाप। यह राज भी बाप ने समझाया है। ब्रह्मा को सभी धर्मों का आदि पिता पितामह कहा जाता है।

''जगतपिता का टाइटिल ब्रह्मा का ही है। जितना ही जगत का प्यारा, उतना ही जगत से न्यारा बन अभी अव्यक्त रूप में फॉलो अव्यक्त स्थिति भव का पाठ पढ़ा रहे हैं। किसी भी आत्मा का ऐसा और इतना न्यारापन का पार्ट नहीं होता।''

अ.बापदादा 19.12.85

जगदम्बा और जगतपिता का राज़

जगत इस विश्व को ही कहा जाता है, तो जगदम्बा और जगतपिता भी यहाँ ही होंगे। ये ब्रह्मा और सरस्वती ही जगत पिता और जगदम्बा हैं। आत्माओं का अनादि पिता निराकार परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रवेश कर ब्रह्मा, सरस्वती और बच्चों को रचते हैं और ब्रह्मा-सरस्वती को जगतपिता और जगदम्बा के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। ब्रह्मा और सरस्वती नाम भी शिवबाबा ने ही उनको दिये हैं।

''यह हैं जगत-अम्बा और जगत-पिता। भारतवासी ही याद करते हैं - तुम मात-पिता... बरोबर अभी सुख घनेरे मिल रहे हैं, फिर जो जितना पुरुषार्थ करे।'' सा.बाबा 9.12.04 रिवा.

''ब्रह्मा को क्रियेटर कहते हैं तो जो भी भक्त हैं, ज्ञानी हैं, अज्ञानी हैं लेकिन ब्रादरी तो वे भी हैं ना।... परिवर्तन में लाने के लिए क्या करना पड़ेगा? हर चीज को लौकिक से अलौकिक में परिवर्तन करना है।... अपनी दृष्टि-वृत्ति, स्मृति, सम्पत्ति, समय सबको परिवर्तन में लाओ।'' अ. बापदादा 28.11.1969

ब्रह्मा और ब्रह्मा-सरस्वती का राज़

ब्रह्मा को ज्ञान का देवता और सरस्वती को ज्ञान की देवी कहा जाता है। इसलिए ही ब्रह्मा के हाथ में चारो वेद दिखाते हैं, उनके चार मुख दिखाते हैं और सरस्वती के हाथ में ज्ञान का प्रतीक वीणा दिखाते हैं। परन्तु ब्रह्मा-सरस्वती का आपस में क्या सम्बन्ध है, इसके विषय में किसको यथार्थ ज्ञान नहीं है, इसलिए व्यर्थ की भ्रामक मनगढंत बातें बताते हैं। अभी शिवबाबा ने दोनों कि विषय में यथार्थ ज्ञान दिया है कि सरस्वती ब्रह्मा की एडॉप्टेड बच्ची है, उनका सम्बन्ध बाप और बच्ची का है, जो ही सतयुग में नारायण और लक्ष्मी बनते हैं। अभी शिवबाबा ने ज्ञान का कलष माताओं-बहनों पर रखा है, जिनमें मुख्य सरस्वती है।

''जगदम्बा को माता-माता तो कहते परन्तु वह कौन है?... जगदम्बा है ब्राह्मणी, ब्रह्मा की बेटी सरस्वती। मनुष्य थोड़े ही यह राज़ जानते हैं।'' सा.बाबा 4.12.04 रिवा.

बेहद के दिन और रात अर्थात् ब्रह्मा के दिन और ब्रह्मा की रात का राज़

बेहद के दिन और रात को ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात भी कहा जाता है परन्तु ये दिन और रात क्या है और क्यों इनको दिन और रात की संज्ञा दी गई है, इसका ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है। इस सृष्टि-चक्र का पहला आधा भाग अर्थात् सतयुग-त्रेता दिन अर्थात् ज्ञान प्रकाश का समय और दूसरा आधा भाग अर्थात् द्वापर-कलियुग रात अर्थात् अज्ञान अंधकार का समय कहलाता है। इसको ही ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात के रूप में गायन करते हैं। ब्रह्मा का दिन और रात सो ब्राह्मणों का

दिन और रात। रात और दिन के बीच होता है कल्याणकारी संगमयुग अर्थात् अमृतवेला का सुहावना समय, जब ज्ञान-सूर्य परमात्मा उदित होकर ज्ञान प्रकाश से रात को दिन बनाते हैं।

इस विश्व-नाटक के खेल को दिन-रात, जीत-हार, सुख-दुख का खेल कहा जाता है। दिन ज्ञान अर्थात् प्रकाश का प्रतीक है और रात अज्ञानता अर्थात् अंधकार का प्रतीक है। संगमयुग है अमृतवेला जब दिन और रात दोनों का संगम होता है, दोनों का ज्ञान होता है। संगमयुग पर ज्ञान सागर बाप आकर ब्रह्मा को इस सत्य का ज्ञान देते हैं, इसलिए ब्रह्मा का ही दिन और रात कहा जाता है, विष्णु का नहीं क्योंकि विष्णु को इस सत्य का ज्ञान ही नहीं होता है। ब्रह्मा के द्वारा ही हम सबको ये ज्ञान मिलता है।

परमधाम में तो दिन और रात का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि वहाँ सूर्य-चांद ही नहीं हैं, दिन और रात इस साकार सृष्टि में होते हैं। वास्तव में बेहद का दिन और बेहद की रात हर आत्मा के लिए उसके पार्ट के अनुसार होता है क्योंकि हर आत्मा का अपने समय और पार्ट के अनुसार सुख-दुख का पार्ट चलता है। सृष्टि-चक्र के हिसाब से ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात होती है क्योंकि पूरे चक्र में उनका ही पार्ट है।

''यह जो 5 हजार वर्ष का चक्र है, उसमें सुख और दुख का खेल है। सुख को कहा जाता है दिन, दुख को कहा जाता है रात और दिन के बीच में आता है संगम।'' सा.बाबा 9.10.04 रिवा.

''अब विष्णु की रात अथवा दिन क्यों नहीं कहते। वहाँ इनको भी ज्ञान ही नहीं। तुमको वहाँ यह पता नहीं रहता है। ब्राह्मणों को मालूम है तब बताया जाता है - ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात।... शिव बाबा का दिन और रात नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 28.6.72 रिवा.

ब्रह्मा सो विष्णु और विष्णु सो ब्रह्मा अर्थात् ब्रह्मा और कृष्ण का राज़

ब्रह्मा की आत्मा ही सतयुग के प्रथम जन्म में श्रीकृष्ण और गद्दी पर बैठने के बाद नारायण बनती है और नारायण को विष्णु का अवतार कहा जाता है। वही विष्णु की आत्मा अन्तिम जन्म में ब्रह्मा बनती है। इस प्रकार ब्रह्मा सो विष्णु और विष्णु सो ब्रह्मा बनता है। इस सत्य का ज्ञान अभी ही परमात्मा ने दिया है और ब्रह्मा को विष्णु बनने का पुरुषार्थ कराते हैं।

''बाप ने तुम्हारी बुद्धि का ताला खोला है। ब्रह्मा और विष्णु का राज़ भी समझाया है।... प्रजापिता ब्रह्मा आदि देव है, उनको अंग्रेजी में कहेंगे ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर।... यह जरूर सबको मालूम होना चाहिए कि भारत बड़े ते बड़ा तीर्थ है, जहाँ बेहद का बाप आते हैं और सर्व आत्माओं की गति-सद्गति करते हैं।'' सा.बाबा 25.9.04 रिवा.

''बाप ने स्वर्ग का फाउण्डेशन तो लगा दिया है।... सतयुग की स्थापना बाप ने की है, फिर तुम आयेंगे तो स्वर्ग की राजधानी मिल जायेगी। बाकी स्वर्ग की ओपनिंग सेरीमनी कौन करेगा? बाप तो वहाँ आते नहीं।'' सा.बाबा 09.09.2004 रिवा.

''शास्त्रों में लिखा है विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला, फिर ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दे दिये हैं। अब विष्णु की नाभी से ब्रह्मा कैसे निकलते हैं, कितना राज है। ब्रह्मा सो विष्णु और विष्णु सो ब्रह्मा बनते हैं। ब्रह्मा को विष्णु बनने में सेकेण्ड लगता है।''

सा.बाबा 20.07.2005 रिवा.

Q. स्वर्ग की ओपनिंग सेरीमनी कौन करेगा?

जरूर स्वर्ग का फर्स्ट प्रिन्स श्रीकृष्ण ही करेगा।

श्याम-सुन्दर का राज़

जब आत्मा परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने आती है तो सतोप्रधान पूर्ण पावन अर्थात् सुन्दर होती है परन्तु पंच तत्वों की देह में प्रवेश करते ही आत्मा की कलायें कम होने लगती हैं और अन्त में वह तमोप्रधान पतित अर्थात् श्याम बन जाती है। श्रीकृष्ण सृष्टि-चक्र के आदि में परमधाम से आने वाला अर्थात् सतयुग के आदि में प्रथम राजकुमार है, जो पहले-पहले योगबल से जन्म लेता है। श्रीकृष्ण को ही सम्पूर्ण पावन कहेंगे और उनकी आत्मा ही अन्तिम जन्म में सबसे पतित बनती है परन्तु पतित बनने का भाव-अर्थ क्या है, वह अलग बात है। इसलिए श्याम-सुन्दर श्रीकृष्ण को ही कहा जाता है।

श्रीकृष्ण की आत्मा जो अपने 84वें जन्म में तमोप्रधान श्याम बनती है, उनको ही परमात्मा पिता आकर फिर सुन्दर बनाते हैं। अभी ब्रह्मा बाबा ही प्रथम मनुष्य हैं, जो मनुष्य से फरिश्ता बने हैं और फिर देवता बनेंगे अर्थात् श्रीकृष्ण बनेंगे।

वास्तव में जब श्याम हैं तो उनको ब्रह्मा भी नहीं कह सकते, उस समय उसका नाम दादा लेखराज ही कहेंगे क्योंकि दादा लेखराज के तन में जब परमात्मा प्रवेश करते हैं, तब उनका नाम ब्रह्मा रखते हैं और जब ब्रह्मा बनते हैं तब तो श्याम से सुन्दर बनने का पुरुषार्थ करते हैं। इसलिए श्याम-सुन्दर ब्रह्मा बाबा को कहा जा सकता है क्योंकि वे ही श्याम हैं और सुन्दर बनने का पुरुषार्थ करते हैं तो उस समय उनमें दोनों गुणों का समावेश है।

''श्याम और सुन्दर, इनका नाम भी ऐसा रखा हुआ है। परन्तु मनुष्य अर्थ नहीं समझते हैं। कृष्ण की भी क्लीयर समझानी मिलती है।... भगवान कितना नॉलेजफुल, समझदार बनाते हैं।... पावन हैं तो लक्ष्मी-नारायण नाम है और पतित हैं तो ब्रह्मा नाम है। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात कहा जाता है।'' सा.बाबा 17.11.04 रिवा.

''बाप ने श्याम और सुन्दर का भी राज़ समझाया है। तुम भी समझते हो - अभी हम सुन्दर बन रहे हैं, पहले श्याम थे।... तुम अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर आ गये हो।'' सा.बाबा 27.06.2005 रिवा.

''श्रीकृष्ण को श्यामसुन्दर क्यों कहते हैं? इसका अर्थ बाप के सिवाए कोई बता नहीं सके।... कृष्ण सांवरा थोड़े ही होता है। नाम-रूप तो बदल जाता है ना। आत्मा सांवरी बनती है।... बाप ने 84 जन्मों का राज़ भी समझाया है। बाप ही आकर सब राज़ समझाते हैं।'' सा.बाबा 11.10.04 रिवा.

''बाप ने समझाया है - ज्ञान से होती है सद्गति। सद्गति भी सबकी होती है, दुर्गति भी सबकी होती है। ... जो नम्बरवन सुन्दर, वही नम्बर लास्ट तमोप्रधान श्याम बना है। ... तुम आये हो स्वर्गवासी सुन्दर बनने के लिए।'' सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

''बाप ने श्याम और सुन्दर का भी राज़ समझाया है। तुम भी समझते हो - अभी हम सुन्दर बन रहे हैं, पहले श्याम थे।... तुम अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर आ गये हो।'' सा.बाबा 27.06.2005 रिवा.

ब्रह्मा की अनेक भुजाओं और चतुर्मुख का राज़

ब्रह्मा की अनेक भुजायें दिखाते हैं, ब्रह्मा को मुख भी चार दिखाते हैं परन्तु इसकी वास्तविकता क्या है - यह कोई नहीं जानता है, जो अभी बाबा ने बताई है। बच्चे को भी बाप की भुजा कहा जाता है। सारी दुनिया की आत्मायें ब्रह्मा बाबा के बच्चे हैं और जो साकार में उनके गोद के बच्चे बनते हैं, वे प्रत्यक्ष में बच्चे कहलाते हैं, जो उनके दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनते हैं, वे सभी बच्चे उनकी भुजायें हैं। ब्रह्मा को चारो युगों और चारो दिशाओं का ज्ञान है, इसलिए उनके चार मुख दिखाये गये हैं। कहाँ ब्रह्मा के तीन मुख का भी गायन है अर्थात् ब्रह्मा को ही संगमयुग पर भूतकाल, वर्तमान संगमयुग और भविष्य का ज्ञान परमात्मा के द्वारा मिलता है।

''साकार बाप ब्रह्मा की अनेक भुजायें प्रसिद्ध हैं। ... राइट हेण्ड की विशेषता सदा स्वच्छ अर्थात् शुद्ध और श्रेष्ठ है।... राइट हेण्ड सदा श्रेष्ठ कार्य अर्थ स्वयं को निमित्त समझकर चलते हैं।'' अ.बापदादा 6.02.76

साकार ब्रह्मा बाप के साकार साथ का राज़

साकार ब्रह्मा बाप के साकार साथ का कितना महत्व है और साकार का साथ क्या और कैसे है, उसका राज़ भी बाबा ने अभी बताया है।

''जो यहाँ अपने जीवन में जीवन के आदि से अन्त तक बाप के साथ रहे हैं अर्थात् बुद्धियोग से साथ रहे हैं, साकार रूप में साथ रहना - यह तो लक है।... फर्स्ट आत्मा के समान नशा और खुशी होगी।... अभी का साथ निभाने का आधार सारे कल्प के साथ का आधार बन जाता है।'' अ.बापदादा 12.10.75

ब्रह्मा बाबा की सम्पूर्णता और समर्पणता का राज़

शिवबाबा इस धरा पर अवतरित होकर ज्ञान देकर और राजयोग सिखलाकर देवता बनने का पुरुषार्थ कराते हैं, जिस पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाबा सबसे अग्रणी हैं और सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ करके सबसे पहले सम्पूर्ण बनते हैं। इसलिए शिवबाबा पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाबा को फॉलो करने की प्रेरणा देते हैं। ब्रह्मा बाबा के महान त्याग, अखण्ड तपस्या और सेवा तथा तन-मन-धन की समर्पणता, जिसके द्वारा ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्णता को पाया है, उसका राज़ भी परमात्मा ने बताया है।

''तुमको पुरुषार्थ कराने वाला शिवबाबा है। देहधारी सब पुरुषार्थ करते हैं। यह भी देहधारी है, इनको भी शिवबाबा पुरुषार्थ कराते हैं।... तुमको श्रीमत देने वाला शिवबाबा है। यह ब्रह्मा की मत नहीं है। यह तो पुरुषार्थी है परन्तु इनका पुरुषार्थ जरूर इतना ऊंच है, तब तो नारायण बनते हैं। तो बच्चों को यह फॉलो करना है।'' सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

''विल पॉवर कैसे आ सकेगी? विल पॉवर आने का साधन कौनसा है?... साकार में कर्म करके दिखाया। पहला-पहला कदम कौनसा उठाया? सभी कुछ विल कर दिया, विल करने में देरी तो नहीं की।... अगर कोई सोच-सोच कर विल करता है तो उसका इतना फल नहीं मिलता।'' अ.बापदादा 18.1.70

''कोई पूछते हम स्वाहा कैसे हों? बाबा कहते - बच्चे, तुम इस बाबा को देखते हो ना। यह खुद करके सिखा रहे हैं। जैसा कर्म हम करेंगे, हमको देख और करेंगे। बाप ने इनसे कर्म कराया ना। सारा यज्ञ में स्वाहा कर दिया।'' सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

''याद है ब्रह्मा बाप ने आदि में कितने समय में सब सफल किया? अन्त तक अपना समय-संकल्प सब सफल किया।... लास्ट दिन भी मुख से महावाक्य उच्चारण किये। लास्ट दिन तक सब सफल किया, इसीलिए सफलता को प्राप्त हो गये। तो फॉलो फादर।'' अ.बापदादा 31.12.02

''यह ब्रह्मा साकारी है, यही फिर सूक्ष्मवतनवासी फरिश्ता बनते हैं। वह अव्यक्त, यह व्यक्त। बाप कहते हैं - मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में प्रवेश करता हूँ। जो नम्बरवन पावन था, वही फिर नम्बरवन पतित। इनको ही फिर नम्बरवन पावन बनना है।'' सा.बाबा 08.01.2005 रिवा.

''साथ कैसे रहेंगे, समान बनने से। समानता कैसे लायेंगे? साकार बाप के समान बनने से। अभी बापदादा कहते हो ना। उनमें समानता कैसे आई? समर्पणता से समानता सेकण्ड में आई। ऐसे समर्पण करने की शक्ति चाहिए।'' अ.बापदादा 1.11.70

''फोटो निकालते समय सभी प्रकार का ध्यान दिया जाता है। ऐसे ही हर समय अपने ऊपर ध्यान रखना है। एक-एक सेकण्ड इस सर्वोत्तम पुरुषोत्तम संगमयुग पर ड्रामा रूपी कैमरे में आप सभी का फोटो निकलता जाता है। यही चित्र फिर चरित्र के रूप में गाये-पूजे जाते हैं।'' अ.बापदादा 5.11.70

''ऐसे ही समझो कि हम बेहद की स्टेज पर पार्ट बजा रहे हैं। सारे विश्व की आत्माओं की नजर मेरी तरफ है। ऐसे समझने से सम्पूर्णता को जल्दी धारण कर सकेंगे।'' अ.बापदादा 5.11.70

ब्रह्मा बाबा ने अपने ऊपर ऐसा ध्यान रखकर पुरुषार्थ किया, तब ही सम्पूर्णता को पाया है। ब्रह्मा बाबा ही इस सृष्टि में पहले मानव हैं, जिन्होंने पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता को पाया है, फरिश्ता बने हैं।

ब्रह्मा बाबा की महानता का राज़

ब्रह्मा बाबा के तन में परमात्मा की प्रवेशता थी और उनके कर्मों का सारा श्रेय परमात्मा के लिए हो सकता है परन्तु ब्रह्मा बाबा पहले मनुष्य जो सम्पूर्ण अर्थात फरिश्ता बनें। यह सत्य इस बात का प्रमाण है कि ब्रह्मा बाबा ने कितनी महान तपस्या की जो मनुष्य से फरिश्ता बनें और साकार में एवं फरिश्ता बनकर भी हम आत्माओं की उन्नति के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। इन सब राज़ों को भी परमात्मा ने बताया है और ब्रह्मा बाबा के समान पुरुषार्थ करने की श्रीमत दी है।

''जैसे संकल्प शक्ति है, बुद्धि की निर्णय शक्ति है, वैसे ही संस्कार भी एक शक्ति है।... साकार के लिए गायन है - 'जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और करेंगे' - यह निराकार के बोल नहीं है।'' अ.बापदादा 15.10.75

''इतनी हिम्मत भी तो चाहिए ना। इस बाप के सामने कितने हंगामें हुए। बाबा को कभी रंज हुआ देखा!... 'नथिंग न्यू', यह तो कल्प पहले मुआफिक होता है, इसमें डर की बात क्या है। हमको तो अपने बाप से वर्सा लेना है। बाप समझाते हैं कि बच्चे कोई भी बात में डरो मत। डरने से इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।'' सा.बाबा 10.10.2001 रिवा.

''यह तो झट स्वाह हो गया। सभी कुछ जो इनके पास था सभी दे दिया। बाबा बोला बेगर बन जाओ, तो फिर ऐसा प्रिन्स बनाऊंगा।...सपूत बच्चे माँ-बाप को फॉलो करते हैं। बाप पावन बने, बच्चा न बने तो वह कपूत ठहरा। इसलिए बाबा ने भी ऐसे किया ना। बच्चों को कह दिया तुम पतित बनने चाहते हो तो अपना रास्ता लो। पैसे तो सब ईश्वर अर्थ दे दिये। अभी एक भी पैसा नहीं दे सकते। इसमें तो नष्टोमोहा बनना होता है। मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई।'' सा.बाबा 17.09.71 रिवा.

फॉलो फादर का राज़

फॉलो फादर क्या करना है और कैसे करना है, यह ज्ञान भी बाबा ही देते हैं। जैसे ब्रह्मा बाप ने शिवबाबा को फॉलो किया, ऐसे ही हमको भी शिवबाबा को फॉलो करना है परन्तु उसके लिये ब्रह्मा बाबा ने क्या पुरुषार्थ किया, वह भी फॉलो करना है। हमको निराकार शिवबाबा और साकार ब्रह्मा बाबा दोनों को फॉलो करना है। स्थिति में निराकार शिवबाबा को और पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना है।

''यह बूढ़ा बाबा पढ़कर इतना ऊंच पद पाते हैं तो हम क्यों नहीं बनेंगे। यह भी पढ़ाई है।... कहते सब थोड़ेही राजा बनेंगे।... क्या स्कूल में ऐसे कहते सब थोड़ेही स्कॉलरशिप पायेंगे? पढ़ने लग पड़ते हैं।'' सा.बाबा 15.6.05 रिवा.

''ब्रह्मा बाप की विशेषता - निर्णय-शक्ति सदा फास्ट रही।... जब साथ चलना ही है तो फॉलो ब्रह्मा बाप। कर्म में फॉलो ब्रह्मा बाप और स्थिति में निराकारी शिव बाप को फॉलो करना है।... मन स्वच्छ और बुद्धि क्लीयर।'' अ.बापदादा 15.2.2K

''क्या फॉलो करना है? गुरु रूप से मुख्य फॉलो यही करना है - अशरीरी, निराकारी, न्यारा बनना है।... जैसे पढ़ाई के समय टीचर साथ रहते हैं, वैसे अभी साथ नहीं हैं। अभी ऊपर से अच्छी रीति देख रहे हैं।... दूर से ही सकाश देते हैं।''
अ.बापदादा 26.6.69

''साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी-दृष्टा यह साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इन गुणों से सर्व के दिलों पर विजयी होंगे। जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है, वही भविष्य में विश्व-महाराजन बनता है।'' अ.बापदादा 2.4.70

''जब समय बदल गया तो अपने पुरुषार्थ को भी बदलेंगे ना। अब बाप ने सफलता का रूप दिखला दिया तो बच्चे भी... स्मृति शक्तिवान है तो स्थिति और कर्म भी शक्तिवान होंगे।'' अ.बापदादा 26.1.70

''जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी हैं तो भी अव्यक्त रूप के, अव्यक्त देश के, अव्यक्त प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को भी अनुभव कराने के लिए आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपनी अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ।''
अ.बापदादा 24.1.70

''शुरू में वाणी का बल नहीं था लेकिन अलौकिक स्थिति का बल था। अभी तुमको वाणी का बल है लेकिन अलौकिक स्थिति का बल गुप्त हो गया है।... जैसे साकार रूप के लिए वर्णन करते हैं। कोई भी अन्जान समझ सकता था कि यह कोई अलौकिक व्यक्ति है। हजारों के बीच में वह हीरा चमकता था। तो फॉलो फादर।'' अ.बापदादा 20.12.69

फॉलो फादर कब और कैसे?

निराकार बाप समान गुण एवं कर्तव्यों में और फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता स्वरूप के गुण-कर्तव्यों में अर्थात् बीजरूप स्थिति में और अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप में स्थित होने के लिए दोनों के गुण-कर्तव्यों को धारण करना है। देही-अभिमानी स्थिति में स्थित होंगे तब ही दोनों निराकार और साकार बाप समान बन सकेंगे और दोनों के गुण-कर्तव्यों को ध्यान में

रखकर पुरुषार्थ करेंगे तब ही देही-अभिमानी स्थिति में स्थित रह सकेंगे। देही-अभिमानी स्थिति अर्थात् ये स्थूल वतन ही मूलवतन और सूक्ष्मवतन हो जाये। हर आत्मा अपने मूल स्वरूप में या फरिश्ता स्वरूप में ही दिखाई दे।

''ब्रह्मा बाबा सदैव बच्चों को पहले लाये, इस दृष्टि-वृत्ति को आगे रखा। इस प्रकार 'फालो फादर' करने वाली हर आत्मा इस बात में फॉलो फादर करेगी तो सफलता सौ प्रतिशत गले की माला बनेगी।'' अ.बापदादा 23.9.73

''तुम जानते हो यह मम्मा बाबा भविष्य में लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं, इसलिए कहा जाता है फॉलो मदर-फादर। जैसे यह पुरुषार्थ करते हैं तुम भी करो।... औरों को भी मैसेज देना है कि ऐसे पतित से पावन बना जाता है, कर्मातीत अवस्था को पाने के लिए पुरुषार्थ किया जाता है।'' सा.बाबा 28.6.71 रिवा.

''किसी बात में फेल न हों, इसके लिए एक बात याद रखना - फॉलो फादर। साकार रूप में जो करके दिखाया वह फॉलो करो तो कोई भी बात में फेल नहीं हो सकते।'' अ. बापदादा 25.10.69

'''मैं कौन हूँ?' - जानना, मानना और चलना।... लास्ट स्टेज को अण्डरलाइन करके एवर-लास्टिंग बनाओ।... जैसा बाप वैसे बच्चे। जो स्वभाव-संस्कार या संकल्प बाप का है क्या वही बच्चों का है?... लायक बच्चे का फर्ज कौनसा होता है - फॉलो फादर।'' अ.बापदादा 30.6.73

''विष्णु का सिम्बल तो है भविष्य का लेकिन संगम का सिम्बल तो साकार बाप ही है ना। तो सिम्बल को सामने देखते हुए समानता लाते रहते हैं ना। सर्विसएबुल, सेन्सीबुल और इसेन्सफुल तीनों गुणों में समानता अनुभव करते हो ?''
अ.बापदादा 4.08.72

''साकार रुप में देखा मस्तक से और नयनों से प्युरिटी के क्राउन का साक्षात्कार अनेकों को हुआ। तो फालो फादर करना है। अगर ऐसे ही स्वरुप का साक्षात्कार आत्माओं को कराओ तो सर्विस में सफलता आप के चरणों में झुकेगी।''
अ.बापदादा 18.4.71

''जब आत्मा कमाई में जागृत होती है तो उसे थकावट भी नहीं होती। तो जैसे मां-बाप ने नींद को योग में बदला तो आप भी फर्स्ट ग्रेड के महारथियों को ऐसा ही फॉलो करना है। अब ऐसा अनुभव तो करते हो कि नींद कम होती जाती है, लेकिन ऐसी अवस्था बनानी है।'' अ.बापदादा 24.6.74

''सब प्रश्नों का जबाब ब्रह्मा बाप की जीवन है।... आप साइलेन्स वालों के लिए ब्रह्मा की जीवन ही एक्यूरेट कम्प्यूटर है। इसलिए क्या-कैसे के बजाये जीवन के कम्प्यूटर से देखो।... साकार रचना के निमित्त साकार श्रेष्ठ जीवन का सेम्पुल ब्रह्मा ही बनता है।'' अ.बापदादा 19.12.85

''सदा शान में रहने का, सदा प्राप्ति स्वरूप स्थिति में स्थित होने का सहज साधन है - 'फॉलो फादर'।... सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही बात है - 'फॉलो फादर'। ... कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को चुक्तू करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में, साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने।'' अ.बापदादा 19.12.85

''अखबार में समाचार बहुत आते हैं। बाबा अखबार पढ़ते हैं, रेडियो सुनते हैं। कारण होगा ना। बच्चों को शौक नहीं अखबार पढ़ने का। फालो करना चाहिए। परन्तु फॉलो करने का भी अकल नहीं है। अखबार पढ़कर उससे फिर सर्विस करनी है। पूछना चाहिए बाबा आप तो मालिक हो फिर रेडियो क्यों सुनते हो। अब मालिक तो शिवबाबा है, हमको कैसे पता पड़े वायुमण्डल क्या है?'' सा.बाबा 19.04.1972 रिवा.

सन शोज फादर और फादर शोज सन का राज

जैसे ब्रह्मा बाबा ने बच्चों को आगे रख बच्चों का नाम बाला किया ऐसे ही बच्चों को भी अपने गुणों और कर्तव्यों से बापदादा का नाम बाला करना करना है। बाप को प्रत्यक्ष करना है। इसीलिए गायन है - सन शोज फादर और फादर शोज सन।

जैसे ब्रह्मा बाप ने अपने गुण-कर्तव्यों से शिवबाबा को प्रत्यक्ष किया और शिवबाबा ने ब्रह्मा बाप के गुण-कर्तव्यों को स्पष्ट करके, उनकी महानता को बताकर, उनको प्रत्यक्ष किया। ऐसे ही बच्चों को दोनों बाप का शो करना है।

''यह पार्ट भी बहुत थोड़ों का है। अन्त तक भी बाप की प्रत्यक्षता करते जायेंगे।... प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जो एक सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें। सेकेण्ड भी बहुत है। सोचना और करना साथ-साथ चले।'' अ.बापदादा 20.12.69

''पीछे ऐसे-ऐसे अनोखे मृत्यु बच्चों के होने हैं, जो सन शोज फादर करेंगे। सभी का एक जैसा नहीं होगा। कई ऐसे बच्चे भी हैं जिन्होंका ड्रामा में इस मृत्यु के अनोखे पार्ट का गायन है - सन शोज फादर।'' अ.बापदादा 20.12.69

''फॉलो फादर कहा जाता है। जैसे बाप (ब्रह्मा बाबा) याद करते हैं, ऐसे याद करो। यह (शिवबाबा) तो पुरुषार्थ करते नहीं हैं। ये करते हैं, इसलिए इनको फॉलो करने वाले ही ऊंच पद पाते हैं।'' सा.बाबा 04.12.68

ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के गुण-कर्तव्यों का राज़

ब्रह्मा बाबा पुरुषार्थ करके पतित से पावन बनते हैं और शिवबाबा सदा पावन है, उनको पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं है। वह पुरुषार्थ कराने वाला है। ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान धारण किया है परन्तु शिवबाबा ज्ञान का सागर है, ज्ञान देने वाला है। ब्रह्मा बाबा ज्ञान का चिन्तन करते हैं, अपने अनुभव से बच्चों को प्रेरणा देते हैं परन्तु शिवबाबा को चिन्तन करने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए उनका एक गुण असोचता भी है। ब्रह्मा बाबा में सारे चक्र के सुख-दुख का अनुभव है, जबकि परमात्मा को सुख-दुख का कोई अनुभव नहीं है लेकिन वह ज्ञान का सागर है इसलिए सुखधाम, दुखधाम का सारा ही ज्ञान सुनाता है। एक ज्ञान का सागर है और दूसरा पूरा ही अनुभवी मूर्त है, इसलिए दोनों मिलकर नये विश्व की रचना करते हैं क्योंकि उसके लिए दोनों बातों की आवश्यकता है।

''हीरे-जवाहरों के महल होंगे। यह निश्चय भी सर्विसएबुल बच्चों को ही होगा। जो कम पद पाने वाले होंगे, उनको कभी ऐसे-ऐसे ख्याल आयेंगे ही नहीं कि हम महल आदि कैसे बनायेंगे।... जैसे यह बाबा है, बाबा को ख्यालात रहती है ना।... शिवबाबा की तो एक ही एक्ट है - बच्चों को पढ़ाना, सिखलाना।'' सा.बाबा 10.1.05 रिवा.

''बाप बैठकर बच्चों को सारे सृष्टि-चक्र का गुह्य राज़ समझाते हैं, जो और कोई नहीं जानते। इसको गुह्य भी कहा जाता है, गुह्यतम् भी कहा जाता है। यह भी तुम जानते हो बाप कोई ऊपर से बैठ नहीं समझाते हैं, यहाँ आकर समझाते हैं।''
सा.बाबा 24.12.04 रिवा.

''तदवीर कराने वाला तो एक बाप ही है। किसी की तकदीर में नहीं है तो तदवीर भी क्या करे। इसमें कोई की पास-खातिरी भी नहीं हो सकती।... बाप तो सबको एक ही महामन्त्र देते हैं - मन्मनाभव। याद करना तुम बच्चों के हाथ में है।''
सा.बाबा 25.12.04 रिवा.

''शिवबाबा कहते हैं - मैं पढ़ाने आता हूँ।... यह बाबा कहते हैं - हमने जो देखा है, वह बतलाते हैं। शिवबाबा कहते हैं - मैं तो सिर्फ नॉलेज देता हूँ। शिवबाबा ज्ञान की बातें सुनाते हैं, यह अपने अनुभव की बातें सुनाते रहते हैं। दो हैं ना।''
सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्यों की विशेषताओं का राज़ अर्थात् ज्ञान

ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्य क्या है, उनमें क्या विशेषतायें हैं, वे भी सागर के समान हैं। जैसे शिवबाबा के गुण-कर्तव्यों की सागर से तुलना होती है, वैसे ही दूसरे नम्बर की आत्मा के गुण-कर्तव्य भी तो समान ही होंगे। उनका वर्णन करें तो एक शास्त्र बन जायेगा और उनके विषय में तो हम सब अनुभवी हैं ही। बाबा कितने निर्माण और महान थे, वह मुरली के निम्न महावाक्यों से ही अनुभव हो जाता है।

''तुम जास्ती याद कर सकते हो क्योंकि इनके ऊपर तो मामला बहुत है। भल ड्रामा कहकर छोड़ देते हैं, फिर भी कुछ लैस जरूर आती है।... लैस आ जाती है। उस समय यह नहीं समझते कि यह भी ड्रामा बना हुआ है। यह फिर बाद में ख्याल आता है कि यह तो ड्रामा में नूँध है ना।'' सा.बाबा 2.11.04 रिवा.

''अब फॉलो किसको करना चाहिए। गायन है ना फॉलो फादर। जैसे यह बाप को याद करते हैं, पुरुषार्थ करते हैं, इनको फॉलो करो। पुरुषार्थ कराने वाला तो बाप है, वह तो पुरुषार्थ करते नहीं, पुरुषार्थ कराते हैं।'' सा.बाबा 5.11.04 रिवा.

''आगे फीमेल पढ़ती नहीं थीं। मुसलमानों के राज्य में एक आंख खोलकर बाहर निकलती थीं। यह बाबा अनुभवी है। बाप कहते हैं - मैं यह सब नहीं जानता, मैं तो ऊपर में रहता हूँ। यह सब बातें यह ब्रह्मा तुमको सुनाते हैं। यह अनुभवी है। मैं तो मन्मनाभव और सृष्टि-चक्र का राज़ समझाता हूँ, जो यह नहीं जानते।'' सा.बाबा 5.11.04 रिवा.

''आत्माओं को परमपिता परमात्मा ने एडॉप्ट किया है? नहीं, तुमको एडॉप्ट किया है ब्रह्मा ने। अभी तुम हो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियाँ। शिवबाबा एडॉप्ट नहीं करते हैं क्योंकि आत्मायें अनादि-अविनाशी हैं।'' सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

''बाबा को यह सब पढ़ने का बहुत शौक रहता था। छोटेपन में वैराग्य आता था। फिर एक बार बाइस्कोप देखा, बस वृत्ति खराब हुई, साधूपना बदल गया।... बाबा ने इसमें प्रवेश किया तो कितनी गाली खाई।... बाबा ने कहा - इतनी बड़ी स्थापना करनी है, सब इस सेवा में लगा दो। एक पैसा भी किसको देना नहीं है। नष्टोमोहा इतना चाहिए।'' सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

''इस बाबा को उछल आई ना। ओहो! बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, फिर यह धन-माल क्या करेंगे, छोड़ो सब।... धन्धा आदि सब छोड़कर आ गये। खुशी का पारा चढ़ गया।... राजाई मिलनी है, कैसे मिलेगी, क्या होगा? यह कुछ भी पता नहीं। फिर धीरे-धीरे नॉलेज मिलती रहती है।'' सा.बाबा 25.5.05 रिवा.

कमालासन और कमलासनधारी का राज़ / न्यारे और प्यारे बनने का राज़

हठयोग में भी अनेक प्रकार के आसनों का वर्णन है, उनमें एक कमलासन भी है। कमलासन का यथार्थ राज भी अभी बाबा ने बताया है। बाबा ने कहा है - जो जितना कमलासनधारी बनते है वे उतना राज सिंहासनधारी बनते हैं।

''कमलासन विशेष ब्रह्मा बाप समान अति न्यारी और अति प्यारी स्थिति का सिम्बल है। आप ब्राह्मण बच्चे फॉलो फादर करने वाले हो।... देहभान से न्यारा, देह के सर्व सम्बन्धों में दृष्टि-वृत्ति और कृत्ति में न्यारा, देह के विनाशी पदार्थों में भी न्यारापन और पुराने स्वभाव-संस्कार से भी न्यारा - इन चारों बातों में न्यारे बनना है।'' अ.बापदादा 25.10.87

''ब्रह्मा बाप भी कमल-आसनधारी बने तब नम्बरवन बाप के प्यारे बने, ब्राह्मणें के प्यारे बने।... चारों ओर के न्यारेपन ने विश्व का न्यारा बना दिया। तो ऐसे ही चारो ओर के न्यारे और सर्व के प्यारे बनो।'' अ.बापदादा 25.10.87

''कमलासनधारी अर्थात देहभान से न्यारा अर्थात् नेचुरल आत्माभिमानी स्थिति, देह अपनी तरफ आकर्षित न करे।... देह के सर्व सम्बन्ध से न्यारे अर्थात् दृष्टि-वृत्ति और कृत्ति में उन सबसे न्यारा। देही का सम्बन्ध ही स्मृति में रहे।... देह के विनाशी पदार्थों में भी न्यारापन अर्थात् कोई भी पदार्थ कर्मेन्द्रियों को विचलित न करे।... मायाजीत के साथ प्रकृतिजीत भी बनना है।... लकीर रह जाती है, वह भी समय आने पर धोखा दे देती है।... कोई भी पुराना स्वभाव-संस्कार अंशमात्र भी न रहे।''

अ.बापदादा 25.10.87

ब्रह्मा बाबा - सतयुग के प्रथम नारायणऔर द्वापर में राजा विक्रमादित्य का राज

शिवबाबा ज्ञान का सागर है, वे आकर सृष्टि-चक्र का सारा ज्ञान देते हैं, ब्रह्मा बाबा के 84 जन्मों की कहानी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह सारे कल्प की कहानी का आधार है। जैसे हंडे में चावल पकाते हैं तो एक चावल को देखकर हंडे के चावलों का पता चलता है। ऐसे ही शिवबाबा एक ब्रह्मा बाबा के 84 जन्मों की कहानी बताकर 84 जन्मों का राज़ बताते हैं। ब्रह्मा के आदि-मध्य-अन्त के जन्म का राज़ समझाकर सारे कल्प का राज़ समझाते हैं। ब्रह्मा ही प्रथम जन्म में श्रीकृष्ण और गद्दी पर बैठने के बाद श्रीनारायण अर्थात् पूज्य स्वरूप में, मध्य में राजा विक्रमादित्य के रूप में भक्ति मार्ग का आरम्भ और अन्त में दादा लेखराज

के रूप में साधारण रूप में, जो शिवबाबा की प्रवेशता के बाद ब्रह्मा बनते हैं। आपेही पूज्य और आपेही पुजारी के राज़ का आधार भी ब्रह्मा बाबा का ही जीवन मुख्य है।

आदि देव, आदम, एडम का राज़

शिवबाबा सर्व आत्माओं का अनादि पिता है और ब्रह्मा बाबा इस मनुष्य-सृष्टि का आदि पिता है, इसलिए उनको पितामह या ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर कहते हैं और विभिन्न धर्मों में भिन्न नामों से उनको जाना जाता है। जैसे जैन धर्म में आदिदेव के रूप में, मुसलमान उनको आदम के नाम से और क्रिश्चियन धर्म में एडम कहते हैं। अन्य धर्मों में भी ऐसे ही भिन्न नाम से जाना जाता है। इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने ही दिया है कि किस तरह से ब्रह्मा सर्व धर्मवंशों का आदि पिता है। शिवबाबा ब्रह्मा के द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं और अन्य धर्मपितायें आदि सनातन देवी-देवता धर्मवंश की ही किसी आत्मा के तन का आधार लेकर अपने धर्मवंश की स्थापना करते हैं और आदि सनातन देवी-देवता धर्म वंश की कुछ आत्मायें उसमें परिवर्तित होकर उस धर्मवंश की वृद्धि के निमित्त बनती हैं। ये सब राज़ भी अभी परमात्मा ने बताया है कि ब्रह्मा ही सर्व धर्मों का आदि पिता है।

ब्राह्मण और ब्राह्मणों के द्विज जन्म का राज़ / ब्रह्माकुमार-कुमारियों का राज

लौकिक दुनिया में ब्राह्मणों को द्विज कहा जाता है अर्थात् एक ही शरीर में रहते दूसरा जन्म लेने वाले। यज्ञोपवीत होने के बाद उनका दूसरा जन्म माना जाता है परन्तु द्विज का यथार्थ रहस्य क्या है, यह कोई नहीं जानता है, जो अभी परमात्मा ने बताया है कि हम पहले शूद्र सम्प्रदाय के थे, अभी परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा के द्वारा एडॉप्ट करके दूसरा जन्म दिया है, ब्राह्मण बनाया है। ये हमारा द्विज जन्म है। सारे कल्प में यह जन्म सर्वश्रेष्ठ जन्म है, इसीलिए ब्राह्मणों को सबसे ऊंच चोटी माना जाता है।

''यह भाग्यशाली रथ है ना। नाम भी ब्रह्मा रखा है। ... मैं तुम बच्चों (आत्माओं) को एडॉप्ट नहीं करता हूँ, तुम आत्मायें सदैव मेरे बच्चे हो ही।... ब्रह्मा ने ही तुमको एडॉप्ट किया है।'' सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

''ब्रह्माकुमार वा शिवकुमार यह दोनों स्मृति रखने से कब भी फेल नहीं होंगे। क्योंकि ब्रह्माकुमार समझने से ब्रह्माकुमार के कर्तव्य, ब्रह्माकुमार के गुण क्या हैं, वे भी स्मृति में रहते हैं।'' अ.बापदादा 28.7.71

''जब सन्यास करते हैं तो नाम बदलते हैं। भारत में रिवाज है कि शादी में कुमारी का नाम बदलते हैं।... ब्राह्मण भी शूद्र बन जाते हैं, इसलिए नाम नहीं रखते हैं। ... प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण ठहरे।'' सा.बाबा 8.8.05 रिवा.

योगबल - भोगबल का राज़

जैसे आत्माभिमानी और देहाभिमानी शब्द हैं, वैसे ही योगबल और भोगबल शब्द भी हैं। सतयुग में देहाभिमान होता नहीं, सभी आत्माभिमानी होते हैं, इसलिए वहाँ सारे कार्य योगबल से सम्पन्न हुए माने जाते हैं और द्वापर से जब देहाभिमानी बनते तो सारे कार्य भोगबल से होते हैं।

''तुम योगबल से विश्व पर राज्य करते हो।... तुम कहते हो - बाबा, हम कल्प-कल्प आपसे सतयुग का स्वराज्य लेते हैं, फिर गँवाते हैं, फिर लेते हैं।... यह रचता और रचना का ज्ञान तुमको अभी मिला है। इन लक्ष्मी-नारायण को भी यह ज्ञान नहीं होगा।'' सा.बाबा 2.5.05 रिवा.

योगबल - भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति का राज़

योगबल अर्थात् आत्मिक बल और भोगबल अर्थात् शारीरिक बल अर्थात् भौतिक बल। इस विश्व के व्यवहार में सारे कल्प में दोनों प्रकार के बलों का प्रभाव है। सतयुग-त्रेता में योगबल प्रधान होता है और द्वापर-कलियुग में भोगबल प्रधान होता

है। वास्तव में योगबल संगमयुग की प्राप्ति है परन्तु उस योगबल से जो आत्मिक शक्ति का विकास होता है, वही आत्मिक शक्ति सारे कल्प में काम करती है परन्तु सतयुग-त्रेता में वह आत्मिक शक्ति प्रधान होती है, इसलिए सतयुग-त्रेता की दुनिया को और वहाँ के क्रिया-कलापों को योगबल से सम्पन्न हुये कहा जाता है। द्वापर-कलियुग में आत्मिक शक्ति का ह्रास हो जाता है अर्थात् योगबल कम हो जाता है तो भोगबल प्रधान हो जाता है।

इन दोनों शब्दों का प्रयोग और स्पष्टीकरण के लिए इन दोनों का प्रयोग सन्तानोत्पत्ति के क्षेत्र में विशेष रूप से जाना जाता है। सतयुग-त्रेतायुग में सन्तानोत्पत्ति योगबल से होती है और द्वापर-कलियुग में सन्तान भोगबल अर्थात् विषय-भोग के द्वारा होती है। योगबल से सन्तानोत्पत्ति के विषय में बाबा ने मोर का, पपीते आदि का उदाहरण भी दिया है। बाबा ने मुख के प्यार आदि से सन्तानोत्पत्ति की बात भी कही है। कहने का तात्पर्य कि सतयुग-त्रेतायुग में सन्तानोत्पत्ति विषय-भोग से नहीं होगी, इसीलिए उसको स्वर्ग कहा जाता है और भोगबल की दुनिया को नर्क कहा जाता है।

श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर पंख का राज़

दुनिया में किसी राजकुमार या महाराजा-महारानी के मुकुट में या किसी देवी-देवता के मुकुट में किसी पंक्षी के पंख को नहीं दिखाते हैं परन्तु श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर पंख को दिखाते हैं। इसका क्या रहस्य है, यह किसको पता नहीं है, जो अभी बाबा ने बताया है कि मोर एक ऐसा पक्षी है, जिसकी सन्तानोत्पत्ति विकार से नहीं होती। सन्तानोत्पत्ति के लिए मोर-मोरनी विषय-भोग में न जाकर मोरनी, मोर के अस्त्रु पीकर गर्भ धारण करती है। श्रीकृष्ण ही नई पावन सृष्टि के प्रथम राज़कुमार होते हैं, जिनका जन्म भोगबल से न होकर योगबल से होता है, उसके बाद उनके समकक्ष सभी राजकुमारों और राजकुमारियों और साधारण प्रजा का जन्म भी योगबल से ही होता है। इसलिए श्रीकृष्ण के मुकुट में मोरपंख दिखाते हैं और श्रीकृष्ण को मोरमुकुटधारी के नाम से पुकारते हैं। आधा कल्प तक सारी सृष्टि में योगबल के जन्म की यह प्रथा चलती है। दो युगों के बाद जब आत्माओं में यह योगबल कम हो जाता है और वे योगबल से सन्तानोत्पत्ति में असमर्थ हो जाते हैं, तब भोगबल से सन्तानोत्पत्ति की प्रथा आरम्भ होती है। इस सत्य का ज्ञान भी अभी मिला है कि सतयुग में सन्तान योगबल से होगी, भोगबल से नहीं। स्वर्ग और नर्क की पहचान में इस सत्य की अहम् भूमिका है।

''तुम हो डबल अहिंसक। न काम कटारी, न वह लड़ाई।... श्रीकृष्ण का चित्र तो कॉमन है – मोर मुकुटधारी। तुम बच्चों ने साक्षात्कार भी किया है कि वहाँ जन्म कैसे होता है।'' सा.बाबा 4.2.05 रिवा.

योगबल से देह-धारण करने और देह-त्याग का राज़

जैसे श्रीकृष्ण का जन्म योग बल से होता है, भोगबल से नहीं, ऐसे ही सतयुग में मृत्यु शब्द नहीं होता है अर्थात् कर्मभोग के वशीभूत देह का त्याग नहीं करते। देह का त्याग भी योगबल से करते हैं अर्थात् देह के त्याग के समय भी त्यागने वाले को साक्षात्कार होता है कि अब हमको ये पुराना वस्त्र छोड़कर नया धारण करना है और सहर्ष देह का त्याग करते हैं तथा उसके परिवार वाले भी सहर्ष उनको विदाई देते हैं। दोनों को ही दुख की कोई अनुभूति नहीं होती है। इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है कि कैसे स्वर्ग में योगबल से देह धारण करते और देह का त्याग करते हैं। इसलिए उस सृष्टि को नष्टोमोहा सृष्टि कहा जाता है क्योंकि उनको देह का भी मोह नहीं होता है।

योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति और उसके विश्व पर प्रभाव का राज़

सतयुग में देवतायें स्वेच्छा से शरीर छोड़ते हैं, वहाँ मृत्यु का नाम नहीं होता है और शरीर धारण भी योगबल से करते हैं, भोगबल से नहीं। इस सत्य का वर्णन रामायण और महाभारत में भी है और अन्य धर्म ग्रन्थों में भी है।

ये विश्व नाटक 5000 वर्ष बाद हू-ब-हू पुनरावृत होने वाला अनादि अविनाशी नाटक है जो चार समान भागों अर्थात् सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग में विभाजित है। सतयुग-त्रेता स्वर्ग और द्वापर-कलयुग नर्क कहलाता है। स्वर्ग में आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है, इसलिए सन्तानोत्पति योगबल से होती, मृत्यु का नाम नही होता और द्वापर कलियुग में आत्मा देह अभिमान के वशीभूत हो जाती, जिससे विकारो की प्रवेशता होने के कारण योगबल खत्म हो जाता है और सन्तानोत्पति भोगबल से होती है और फलस्वरूप आत्मा को दुख-अशान्ति होती है। ये योगबल और भोगबल ही सृष्टि को अर्थात् सृष्टि-चक्र को दो भागों में विभाजित करता है।

जैसे दुनिया में आत्म-बल और बाहुबल का गायन है, ऐसे ही सन्तानोत्पत्ति के लिए भी विश्व-नाटक में योगबल और भोगबल का गायन है। शास्त्रों में भी दो प्रकार सन्तानों का गायन है, परन्तु उसका यथार्थ अर्थ कोई नहीं जानता है, इसलिए अभी जब परमात्मा योगबल से सन्तानोत्पत्ति का वर्णन करते हैं तो किसको सहज विश्वास नहीं होता है। अभी परमात्मा ने बताया है कि योगबल और भोगबल का विश्व-नाटक में क्या प्रभाव है। स्वर्ग और नर्क की सीमा रेखा को रेखांकित करने वाले ये ही दो शब्द हैं। रेखा के एक तरफ योगबल है, जिसे स्वर्ग कहा जाता है और जब योगबल खत्म हो जाता है तो उस रेखा को लांगते हैं और भोगबल का आरम्भ होता है तो उसको नर्क कहा जाता है। इस सत्य का ज्ञान भी बाबा ने अभी हमको दिया है, जिससे हम भोगबल को छोड़कर योग बल को धारण करने का सफल पुरुषार्थ करते हैं।

योगबल से जो आत्मायें पावन बनती हैं, वे स्वर्ग में जाकर जीवनमुक्ति का सुख भोगती हैं और जो भोगबल अर्थात् कर्मभोग को दण्ड के रूप में भोगकर पावन बनती वे द्वापर-कलियुग में अल्पकाल का सुख भोगती हैं।

बाबा ने स्वर्ग और नर्क का जो ज्ञान दिया है, उसके विधि-विधानों का जो ज्ञान दिया है, उसमें यह भी स्पष्ट किया है कि सतयुग में सन्तानोत्पत्ति भोगबल से नहीं होगी। वहाँ सन्तान योगबल से होती है, जिसके लिए बाबा ने पपीते की प्रजनन क्रिया, मोर की प्रजनन क्रिया आदि का उदाहरण भी दिया है और ये भी कहा है कि मुख के प्यार से भी बच्चा पैदा हो सकता है।

भोगबल की विकारी प्रक्रिया का अध्ययन करें तो स्पष्ट होता है कि विकार की उत्पत्ति पहले दृष्टि से ही होती है, उसके बाद ही इन्द्रियों की चंचलता, मुख का प्यार, स्पर्श आदि की चेष्टा और प्रक्रिया होती है। अनेक विकारी प्यार वालों को प्यार में चुम्बन, एक-दूसरे की जिव्हा आदि को टच करते हुये देखा जाता है, जो इस बात का संकेत है कि उससे भी एक-दूसरे के सेल्स ट्रान्सफर होते हैं, जो सन्तानोत्पत्ति का साधन बन जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति के अतिरिक्त योगबल की भी सन्तानोत्पत्ति हो सकती है, जो पहले दृष्टि से, बाद में मुख के प्यार से, उसके बाद स्पर्श आदि से होती होगी अर्थात् इस प्रकार से सेल्स ट्रान्सफर होते होंगे।

हर योनि की मादा में गर्भ धारण के समय नर को अपने संकल्प, दृष्टि, वृत्ति से आकर्षित करने की प्रवृत्ति होती है, जो किसी न किसी रूप में सतयुग में भी अवश्य होगी, जिसके कारण नर के अपनी दृष्टि-वृत्ति, मुख के प्यार, स्पर्श आदि से सेल्स ट्रान्सफर होते होंगे, जो द्वापर से विकार के रूप में होते हैं।

''सतयुग को स्वर्ग कहा जाता है।... सतयुग को कहा जाता है योगी दुनिया क्योंकि वहाँ भोग-विलास होता नहीं। कलियुग है भोगी दुनिया, नर्क।'' सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

''जब दो युग पास्ट हुए फिर आता है द्वापरयुग, रावण का का राज्य। देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं तो विकार का सिस्टम बन जाता है। सतयुग-त्रेता में सभी निर्विकारी रहते हैं।'' सा.बाबा 16.11.04 रिवा.

Q. नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना कौन करता है, शिवबाबा और ब्रह्माबाबा के पार्ट में क्या अन्तर है या दोनों का पार्ट एक ही है?

भारत का राज़

भारत भूमि की महिमा महान, जहाँ आते शिव भगवान।

''यह सारा नाटक भारत पर ही बना हुआ है, बाकी सब हैं बाई-प्लॉट्स।... अब भारत रंक-भिखारी है, सतयुग में डबल सिरताज महाराजा-महारानी का राज्य था।... भारत में ही कौरवों और यवनों की लड़ाई लगी। गाया भी हुआ है रक्त की नदियां बहती हैं।... ऐसी चीजें बनाई हैं, जो फट से खलास कर देंगे। तुम बच्चे जानते हो ड्रामानुसार अब बड़ी लड़ाई लग नहीं सकती क्योंकि राजाई स्थापन होनी है।'' सा.बाबा 16.6.05 रिवा.

भारत विश्व की धुरी है अर्थात् विश्व का केन्द्र बिन्दु भारत है। सारे विश्व का इतिहास भारत के उत्थान और पतन पर ही आधारित है। भारत को अविनाशी खण्ड कहा जाता है। भारत कोई वर्तमान भारत या इण्डिया या हिन्दुस्तान नहीं लेकिन सतयुग-त्रेता में सारा विश्व ही एक था, इसलिए भारत या दूसरे किसी खण्ड का कोई अलग नाम नहीं था। द्वापर से जब अन्य धर्म स्थापन हुए अन्य सभ्यतायें अस्तित्व में आई और देश-दुनिया का भौगोलिक कारणों और ऐतिहासिक कारणों से विभाजन होना आरम्भ हुआ तो दुनिया का जो केन्द्र बिन्दु था या जो चक्रवर्ती राज्य था, जिसकी राजधानी वर्तमान भारत में दिल्ली या दिल्ली के आस पास थी, वह राजाई और राज्य भारत कहलाया, जो सतत विभाजन के कारण उसकी सीमायें बराबर संकुचित होती गई और परिणाम स्वरूप भारत की वर्तमान स्थिति हो गई। अब समय आ गया है जब भारत अपने पूर्व अस्तित्व को पुनः प्राप्त करेगा।

''भारत गिरा है तो सब गिरे हैं। भारत ही रेस्पान्सिबुल है अपने को गिराने और सबको गिराने के लिए।... यह हार-जीत की कहानी भी सारी भारत की ही है। भारत में ही डबल सिरताज और सिंगल ताज वाले राजायें बनते हैं।''

सा.बाबा 9.8.05 रिवा.

''ये चित्र साथ में रहना चाहिए। बताना है भारत में इनका राज्य था और कोई धर्म नहीं था।... तुम सिद्ध कर सकते हो पहले एक ही भारत था, एक ही राज्य था, एक ही भाषा थी।... सिद्ध कर सकते हो आज का नक्शा यह है, कल का नक्शा यह है।... भारत अविनाशी खण्ड है।... और कोई में भी यह बताने की ताकत नहीं है।... इसमें मूँझने की दरकार नहीं है।''

सा.बाबा 24.11.04 रिवा.

भारत और भगवान का राज़

भारत और भगवान का गहरा सम्बन्ध है। भारत भूमि महान है, भारत में आबू तीर्थ महान है, जहाँ शिव भगवान ने आकर नई दुनिया बनाने का दिव्य कर्तव्य किया। जीवात्मा जहाँ रहती है, जहाँ कर्म करती है जहाँ पंच तत्वों में पंच तत्व की देह विलीन होती है, उसका प्रभाव उस वातावरण में, उस भूमि में रहता ही है, जिसको सभी आत्मायें अनुभव करती हैं, इसलिए वे अच्छी आत्मायें जहाँ देह धारण करती, कर्म करती, देह का त्याग करती, वे तीर्थ बन जाते हैं। शिव परमात्मा ब्रह्मा तन में आये, जहाँ उस तन से परमात्मा ने अपना दिव्य कर्तव्य किया, जहाँ वह पंच तत्वों बना भाग्यशाली तन पंच तत्वों में विलीन हुआ, तो वह तीर्थ बनना स्वभाविक है। इसीलिए भारत भूमि और आबू महान तीर्थ गाये हुए हैं, जो विश्व की सर्व आत्माओं को आकर्षित करते हैं और करते रहेंगे। परमात्मा अविनाशी है और नये विश्व का रचयिता है, वह भारत में ही आते हैं इसलिए भारत भूमि भी अविनाशी है अर्थात् इस भूमि का, यहाँ सभ्यता या जनसंख्या का पूर्ण विनाश नहीं होता है। अन्त में यहाँ ही जनसंख्या बचती है और यहाँ ही स्वर्ग की स्थापना होती है।

''भारत की ही बात है। बाप आते ही भारत में हैं। भारत ही इस समय पतित बना है, भारत ही पावन था।... भारत को सचखण्ड कहा जाता है। झूठखण्ड ही फिर सचखण्ड बनता है। सच्चा बाप ही आकर सचखण्ड बनाते हैं।'' सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

''भारत को तो भाग्य है ही लेकिन डबल विदेशी दूर रहते प्यार में सब पास हैं। देखो भारत को तो भाग्य मिला है, सबसे बड़ा भाग्य मिला है कि बाप भारत में ही आये हैं। बाप को अमेरिका पसन्द नहीं आई, लेकिन भारत पसन्द आया है।''

अ.बापदादा 15.10.04

‘‘भारत में बाप का कर्तव्य चला है इसलिए बाप के साथ आप सबके चित्र भी भारत में ही हैं। ज्यादा मन्दिर भारत में बनाते हैं।... विदेश में बड़े फल होते हैं लेकिन टेस्टी नहीं होते। भारत के फल छोटे होते लेकिन टेस्ट अच्छी होती है। फाउण्डेशन तो सब यहाँ ही पड़ता है।’’ अ.बापदादा 4.03.86

‘‘भारत कितना ऊंच था, विकार का नाम-निशान नहीं था। वह था वाइसलेस भारत, अभी है विशश भारत।... आज से 5 हजार वर्ष पहले मैंने भारत को शिवालय बनाया था।’’ सा.बाबा 6.8.05 रिवा.

भारत और स्वर्ग-नर्क का राज़

सृष्टि के अनादि-अविनाशी नियमानुसार जो सतोप्रधान बनता है, वही तमोप्रधान भी बनता है। ऐसे ही भारत ही स्वर्ग बनता है तो भारत ही नर्क बनता है। भारत में ही घी-दूध की नदियां बहती हैं तो खून की नदियां भी भारत में ही बहनी हैं। इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने अभी हमको दिया है।

‘‘अभी तुम समझ गये हो - ज्ञान, भक्ति और फिर है वैराग्य। ... बाप कहते हैं - भारत तो बहुत पवित्र था। इतना पवित्र और कोई खण्ड होता नहीं। भारत की तो बहुत ऊंची महिमा है, जो भारतवासी खुद नहीं जानते हैं।’’ सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

ये भारत भूमि ही सतयुग-त्रेता में स्वर्ग बनती है अर्थात् भारत में स्वर्ग होता है और यहाँ ही द्वापर-कलियुग में नर्क बनता है अर्थात् सबसे पतित, दुखी भी भारत ही बनता है।

‘‘ऐसे भी नहीं कि सारी दुनिया स्वर्ग में जायेगी। जो कल्प पहले स्वर्ग में आये थे, वे ही भारतवासी फिर आयेंगे और सतयुग-त्रेता में देवता बनेंगे। वे ही फिर द्वापर से अपने को हिन्दू कहलायेंगे। यूँ तो हिन्दू धर्म में अब तक भी जो आत्मायें ऊपर से उतरती रहती हैं, वे भी अपने को हिन्दू कहलाती हैं लेकिन वे देवता नहीं बनेंगी और न ही स्वर्ग में आयेंगी। वे फिर भी द्वापर के बाद अपने समय पर ही उतरेंगी। देवता तुम ही बनते हो, जिनका आदि से अन्त तक पार्ट है। यह भी ड्रामा में बड़ी युक्ति है।’’
सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

‘‘भारतवासी ही देवी-देवता थे, जिन्होंने 82,83,84 जन्म लिए हैं। वे ही पतित बने हैं। भारत ही अविनाशी खण्ड गाया हुआ है। जब भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तब इसे नई दुनिया, नया भारत कहा जाता था।... यह रावण है भारत का आधा कल्प का दुश्मन। ... गीता में भी है भगवानुवाच - काम महाशत्रु है। भारत का वास्तविक धर्मशास्त्र है ही गीता।... एक ही सोमनाथ के मन्दिर में कितने हीरे-जवाहरात थे, भारत कितना सालवेन्ट था। अभी तो इन्सालवेन्ट है।... यह रावण है भारत का नम्बरवन दुश्मन।’’ सा.बाबा 13.9.04 रिवा.

‘‘भारत ने विदेश को हेण्ड्स दिये हैं। भारत भी बहुत बड़ा है। स्वर्ग तो भारत को ही बनाना है, विदेश तो पिकनिक स्थान बन जायेगा। ... बाप द्वारा आर्डर होना ही है। कब करेंगे, वह डेट नहीं बतायेंगे। डेट बतायें तो सब नम्बरवन पास हो जायें। अचानक ही क्वेश्चन आयेगा। एवर-रेडी हो ना।’’ अ.बापदादा 27.02.86

‘‘कहते हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत ही था, उसको स्वर्ग कहा जाता था।... इस चक्र में सारा ज्ञान भरा हुआ है।... 5000 वर्ष का हिसाब तुम क्लीयर समझाते हो।... चक्र की भी सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में है तो इतनी खुशी रहनी चाहिए।’’
सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

‘‘बाप तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं - भारत में ही घोर अंधियारा हुआ है, अब भारत में ही सोझरा चाहिए। तुम अज्ञान नींद में सोये पड़े थे, बाप आकर फिर से जगाते हैं।... सब बातों का अर्थ समझना चाहिए ना। यह है सबसे बड़ी पढ़ाई।’’
सा.बाबा 08.9.04 रिवा.

''यूरोपवासी भी इसको समझना चाहते हैं। भारत पैराडाइज़ था, तो किसका राज्य था? यह पूरा कोई नहीं जानते हैं। भारत ही हेविन स्वर्ग था। तुम सबको समझा सकते हो। यह सहज राजयोग है, जिससे भारत स्वर्ग बनता है।... स्वर्ग के देवी-देवताओं की राजाई सहज राजयोग से भारत को ही प्राप्त होती है।'' सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

''ये फिर बेहद के आज और कल का ड्रामा है। आज भारत पुराना नर्क है, कल नया स्वर्ग होगा।... 5 हजार वर्ष पहले आदि सनातन देवी-देवताओं का धर्म था... अभी तो डेविल वर्ल्ड है। डेविल वर्ल्ड की इण्ड और डिटी वर्ल्ड की आदि का अब है संगम।'' सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

''तुम सब सन्देशी हो। तुमको खास भारत और आम सारी दुनिया को यह सन्देश पहुँचाना है कि भारत अब फिर से स्वर्ग बन रहा है अथवा स्वर्ग की स्थापना हो रही है। भारत में बाप को हेविनली गॉड फादर कहते हैं, वह स्वर्ग की स्थापना करने आये हैं। ... तुमको अन्दर में यह खुशी रहनी चाहिए।'' सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

बाप कहते हैं - मै आया हूँ तुम्हारी सेवा में, तुम सब बच्चे भी भारत की अलौकिक सेवा में हो।... तुम बच्चों को भारत के लिए कितना लव है। सच्ची सेवा तो तुम करते हो, खास भारत की और आम सारी दुनिया की। तुम भारत को फिर से रामराज्य बनाते हो, जो बापू जी चाहते थे। सा.बाबा 15.1.05 रिवा.

''इस सुख-दुख के खेल को भी तुम जानते हो।... ये मूसल आदि सब ड्रामा में नूँध हैं। गीता में भी मूसल अक्षर है।... स्वर्ग-नर्क भारत की ही बात है।... यहाँ ही स्वर्गवासी थे, यहाँ ही फिर नर्कवासी बनते हैं। यह नॉलेज है नर से नारायण बनने की।'' सा.बाबा 28.4.05 रिवा.

''तुम बच्चों के साथ-साथ भारत खण्ड भी सबसे सौभाग्यशाली है। इन जैसा सौभाग्यशाली दूसरा कोई खण्ड नहीं है। यहाँ बाप आते हैं। भारत ही हेविन था, जिसको गार्डर ऑफ अल्लाह कहते हैं। बाप अभी फिर से भारत को फूलों का बगीचा बना रहे हैं।'' सा.बाबा 17.5.05 रिवा.

''2500 वर्ष तक इन देवताओं की डायनेस्टी चली।... लक्ष्मी-नारायण दि फर्स्ट, दि सेकेण्ड, ऐसे चला आता है।... भारत 5 हजार वर्ष पहले कितना साहूकार था।... तुम जानते हो शिवबाबा भारत को हेविन बनाते हैं।'' सा.बाबा 23.5.05 रिवा.

''भारतवासी अपने धर्म को बिल्कुल नहीं जानते और सब अपने धर्म को जानते हैं। भारतवासी कहते - हम धर्म को मानते ही नहीं।... अभी तुम झाड़ और सृष्टि-चक्र को जानते हो।... ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कराता हूँ।'' सा.बाबा 20.6.05 रिवा.

''भारत की चढ़ती कला और उतरती कला कैसे होती है।... भारत जैसा पवित्र देश और कोई होता नहीं है।... नर्क से स्वर्ग बाप ही बनायेगा।'' सा.बाबा 23.7.05 रिवा.

भारत की सम्पन्नता और महानता का राज़

परमात्मा में परमात्मा का अवतरण होता है, भारत ही स्वर्ग बनता तो भारत ही नर्क बनता है। भारत की प्राकृतिक स्थिति भी सारी दुनिया से विशेष है, जिससे भारत में सभी ऋतुयें और प्राय: सभी प्रकार के फल-फूल भी पैदा होते हैं। यहाँ फलों की परमात्मा भी ब्रह्मा तन से महिमा करते हैं। भारत जितना सम्पन्न देश और कोई नहीं बनता है परन्तु बाबा ये भी कहते हैं कि भारत ही सिरताज बनता है तो भारत ही मोहताज भी बनता है। भारत की सम्पन्नता से ही प्रभावित होकर अनेक विदेशियों ने भारत पर आक्रमण किये और लूटा तथा अनेकों ने भारत के साथ व्यापार आदि किया।

भारत की वीर गाथा भी अन्य देशों से विशेष है। दिल्ली के अन्तिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान ने अफगानिस्तान के शासक मोहम्मद गौरी को 16 बार कैद करने के बाद भी क्षमादान दिया और अन्त में मोहम्मद गौरी ने 17वीं बार पृथ्वीराज को हरा दिया और उनको कैद कर लिया, उनकी आंखें फोड़ दी तो भी उसके ही घर में उसके कर्म का फल उसको चखाया। स्वर्ग का वर्णन तो सभी जानते हैं और सब धर्मों में स्वर्ग का वर्णन है। जिसको भी बाबा याद करते हैं। राजा विक्रमादित्य, जिन्होंने

भक्ति मार्ग का आरम्भ किया, राजा पोरस और सिकन्दर महान का इतिहास भी भारत की वीरगाथा की एक अद्वितीय कहानी है। महाराणा प्रताप, शिवाजी भगतसिंह का हंसते हुए फांसी पर झूल जाना, जौहर, झांसी की रानी, आदि-आदि भारत की महानता और वीरगाथा के अद्वितीय उदाहरण हैं, जिनमें अनेकों को बाबा भी मुरलियों में याद करते हैं। सिकन्दर, मोहम्मद गौरी, मुहम्मद गजनवी आदि ने भारत की सम्पन्नता से प्रभावित होकर भारत पर आक्रमण किया। कोलम्बस, वास्कोडिगामा आदि ने भी भारत की सम्पन्नता से प्रभावित होकर उसकी खोज का संकल्प किया।

''भारत में ही शिव जयन्ती मनाई जाती है। निराकार जरूर साकार में आयेगा ना। शरीर बिगर आत्मा कुछ कर सकती है क्या ?... भारत ही अविनाशी खण्ड है।... भारत ही स्वर्ग और भारत ही नर्क बनता है।'' सा.बाबा 1.7.05 रिवा.

''बाहर वाले भी जानते हैं कि भारत ही प्राचीन बहिश्त था। इसलिए भारत को बहुत मान मिलता है।... बाप है ज्ञान का सागर, वे ही वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझा रहे हैं।... महिमा सिर्फ एक बाप की ही है।'' सा.बाबा 1.7.05 रिवा.

''भारत जिसको सोने की चिड़िया कहते थे, अभी तो वह ठिक्कर की भी नहीं है। भारत 100 परसेन्ट सॉलवेन्ट था, अभी 100 परसेन्ट इन्सॉलवेन्ट है।'' सा.बाबा 16.7.05 रिवा.

''भारत बाप की अवतरण भूमि है और भारत प्रत्यक्षता का आवाज बुलन्द करने के निमित्त भूमि है। आदि से अन्त तक भारत में ही पार्ट है। विदेश का सहयोग भारत में प्रत्यक्षता करायेगा और भारत की प्रत्यक्षता का आवाज विदेश तक पहुँचेगा।... भारतवासी बच्चों के भाग्य का सभी गायन करते हैं।'' अ.बापदादा 10.11.87

''भारत ही ऊंच खण्ड है, जो भी मनुष्य मात्र हैं, उनका यह तीर्थ है। सर्व की सद्गति करने बाप यहाँ ही आते हैं।... भारत कितना सालवेन्ट था... भारत शिवालय था, जिसको वण्डर ऑफ वर्ल्ड कहा जाता है।'' सा.बाबा 23.7.05 रिवा.

''एक भारत ही है, जिसने कोई का राज्य छीना नहीं है क्योंकि भारत असल में अहिंसक है ना। सारी दुनिया का भारत मालिक था। वह संस्कार तो आत्मा में हैं इसलिए थोड़े राज्य के लिए कब भारत लड़ता नहीं है। तुम भारतवासियों को बाप विश्व का मालिक बनाते हैं।'' सा.बाबा 07.09.69 रिवा.

भारत खण्ड की अविनाश्यता का राज़

भारत ही अविनाशी खण्ड है क्योंकि यहाँ पर अविनाशी परमात्मा का अवतरण होता है। इस सत्य का शास्त्रों में भी वर्णन है परन्तु यथार्थ सत्यता का ज्ञान अभी ही परमात्मा देते हैं। शास्त्रों में भी विनाश के समय मनु, सत्यरूपा और सप्त-ऋषियों के बचने का गायन है, जो भारत में ही बचे दिखाते हैं।

''गायन है - अपने कुल का विनाश करते हैं। यह भारत तो अलग कोने में है। बाकी सब खलास हो जाने हैं। योगबल से तुम सारे विश्व पर विजय पाते हो।... भारत ही पैराडाइज अर्थात् स्वर्ग था।'' सा.बाबा 24.9.04 रिवा.

''सच बाप सच सुनाते हैं, जिससे तुम बच्चे सच बन जाते हो और सच खण्ड भी बन जाता है। भारत सचखण्ड था। नम्बरवन ऊंच तें ऊंच तीर्थ भी यह है क्योंकि सर्व की सद्गति करने वाला बाप भारत में ही आते हैं। ... ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। वैराग्य है रात का।... वह है हद का वैराग्य, तुमको तो सारी बेहद की दुनिया से वैराग्य है। संगम पर ही बाप आकर तुम्हें बेहद की बातें समझाते हैं।'' सा.बाबा 2.9.04 रिवा.

''यह है सबसे बड़ा तीर्थ, जहाँ बेहद का बाप बैठकर बच्चों को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं और सबकी सद्गति करते हैं। भारत की महिमा अपरमपार है परन्तु यह भी तुम समझ सकते हो। भारत है वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड।... भारतवासी ही चाहते हैं कि विश्व में शान्ति भी हो और सुख भी हो। स्वर्ग में दोनो होते हैं।'' सा.बाबा 27.7.04 रिवा.

''तुम जानते हो इस विनाश में ही खास भारत और आम सारी दुनिया की भलाई है। यह बात दुनिया वाले नहीं जानते। विनाश होगा तो सब चले जायेंगे मुक्तिधाम।... बाप कहते हैं- जब-जब भारत में धर्म की ग्लानि होती है, तब मैं आता हूँ। जो भारतवासी

हैं, बाप उन्हों से ही बात करते हैं। बाप आते भी भारत में ही हैं, और कोई जगह नहीं आते हैं। भारत ही अविनाशी खण्ड है, बाप भी अविनाशी है।'' सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

''अभी तुम बाप द्वारा ज्ञान की अथॉर्टी बने हो।... यह सारा खेल तुम भारतवासियों पर ही है। 84 का चक्र भारत पर ही है। भारत है अविनाशी खण्ड।... शिवबाबा भारत को राज्य देकर गया था, ये लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे।''

सा.बाबा 13.5.05 रिवा.

''भारत ही अविनाशी खण्ड है। भारत ही स्वर्ग बनता है।... भारतवासी ही फिर नर्कवासी बनते हैं, फिर वे ही स्वर्गवासी बनेंगे। और सभी खण्ड विनाश हो जायेंगे, बाकी भारत ही रहेगा। भारत खण्ड की महिमा अपरमअपार है।... भारत जितना सुखी, धनवान, पवित्र और कोई खण्ड है नहीं।'' सा.बाबा 14.4.05 रिवा.

भारत के उत्थान-पतन और उसके विश्व के उत्थान-पतन से सम्बन्ध का राज़

ये सारा विश्व-नाटक भारत के उत्थान और पतन की एक कहानी है। इस उत्थान और पतन की सीढ़ी का राज़ अभी बाबा ने बताया है। यह भारत में ही स्वर्ग बनता है और भारत ही सबसे अधिक नर्क बनता है। यहाँ पवित्र देवी-देवताओं का राज्य था और यहाँ ही सबसे अधिक आसुरी गुणों वाले मनुष्य हैं। भारत में ही दूध-घी की नदियां बहती हैं अर्थात् सबसे अधिक सम्पन्नता होती है और भारत में खून की नदियाँ बहेंगी क्योंकि यहाँ ही सिविल वार में सबसे अधिक रक्तपात होगा। इस सत्य का ज्ञान भी अभी परमात्मा ने बताया है कि तुमको स्वर्ग की खुशी भी होनी चाहिए तो अन्त समय खूनी-नाहेक खेल को देखने के लिए अपने अन्दर योगबल की शक्ति भी जमा करनी चाहिए, तब ही तुम विनाश का अन्तिम दृश्य देख सकेंगे।

भारत के उत्थान और पतन का विश्व के उत्थान और पतन से सीधा सम्बन्ध है। भारत स्वर्ग बनता है तो सारा विश्व स्वर्ग बनता है और भारत नर्क बनता तो सारा विश्व ही नर्क बन जाता है। भल दूसरे खण्ड जो बाद में अस्तित्व में आते हैं अर्थात् जहाँ बाद में सभ्यता का विकास होता है, वहाँ अपेक्षाकृत सुख होता है परन्तु वह सुख नाममात्र ही होता है। अनेक खण्ड जो विनाश के समय जलमग्न हो जाते हैं, वे बाद में बाहर आते हैं, इसलिए वहाँ प्राकृतिक सम्पदा होती है, जिसके कारण भौतिक सुख होता है परन्तु नर्क के सब चिन्ह वहाँ रहते ही हैं। जन्म-मृत्यु का प्रभाव भी नर्क के समान ही होता है। इसलिए सारा विश्व ही नर्क बन जाता है।

''बाप समझाते हैं - बच्चे, ड्रामा के प्लेन अनुसार अब बाकी थोड़ा समय है। सारा हिसाब तुम्हारी बुद्धि में है। कहते हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत ही था, उसको स्वर्ग कहा जाता था।... तुम्हारा नाम विलायत से ही निकलेगा क्योंकि उन्हों की बुद्धि फिर भी भारतवासियों से तीखी है। वे भारत से पीस भी मांगते हैं।... भारतवासियों से वे ये ज्ञान-योग सीखेंगे। उन्होंका जब आवाज निकलेगा तब भारतवासी जागेंगे।'' सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

''तुम्हारा नाम विलायत से ही निकलेगा।... भारतवासी एकदम घोर नींद में सोये हुए हैं। वे थोड़ा कम सोये हैं, इसलिए उन्हों का आवाज अच्छा निकलेगा।'' सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

''सीढ़ी के चित्र से तुम किसको भी समझायेंगे कि भारत की यह गति है। लिखा हुआ भी है उत्थान और पतन की कहानी।... भारत के लिए सीढ़ी का चित्र मुख्य है। भारत में ज्ञान था तो बहुत धनवान था, अभी भारत में अज्ञान है तो कितना कंगाल है।''

सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

''देवी-देवता भारत में ही राज्य करके गये हैं ना। फिर बाद में कितने मन्दिर बनाते हैं।... भारत ही सतोप्रधान सो भारत ही तमोप्रधान बनता है।'' सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''बाप तुम बच्चों को ज्ञान रतनों से सजाते रहते हैं।... भारत कितना सिरताज था, सब भूल गये हैं।... कितनी बड़ी-बड़ी मणियां राजाओं के ताज में रहती थीं।'' सा.बाबा 7.1.05 रिवा.

''सभी पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार पद पाते हैं। सबको नम्बरवार पार्ट मिला हुआ है। यह ड्रामा बना हुआ है।... इस समय सबसे जास्ती इन्सालवेन्ट भारत है। यह खेल ही भारत पर है।'' सा.बाबा 25.7.05 रिवा.

भारत की सीमाओं और भारत की सीमाओं के विस्तार और संकुचन का राज़

भारत की सीमाओं का विस्तार अर्थात् स्वर्ग की सीमाओं का विस्तार क्योंकि पहले-पहले भारत ही स्वर्ग बनता है और बाद में या धीरे-धीरे उसकी आवासीय सीमाओं का विस्तार होता जाता है, जो त्रेता अन्त तक चलता है क्योंकि त्रेता अन्त तक देवताओं की राजाई की वृद्धि होती है। फिर द्वापर दुनिया नर्क बन जाती है और नर्क की सीमाओं का विस्तार आरम्भ होता है और भारत की सीमाओं का संकुचन आरम्भ हो जाता है क्योंकि विश्व में नर्क का आरम्भ होता है या ऐसे कहें कि स्वर्ग ही नर्क बन जाता है। नर्क की सीमाओं का ये विस्तार कलियुग के अन्त तक होता रहता है परन्तु नर्क की सीमाओं के विस्तार के साथ भारत की सीमाओं का संकुचन आरम्भ हो जाता है, जो कलियुग अन्त तक चलता है और अन्त में भारत की वर्तमान स्थिति हो जाती है। अन्त में भी हम देखें तो सन 1947 तक भारत वर्तमान भारत से बड़ा था, 1947 में भारत हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रूप में विभाजन हुआ और भारत वर्तमान स्थिति में आ गया। फिर संगमयुग पर परमपिता परमात्मा भारत में आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं और ड्रामा अनुसार अणु-युद्ध, प्राकृतिक आपदायें और गृह-युद्ध के द्वारा नर्क का विनाश होता है और भारत अर्थात् सारा विश्व स्वर्ग बन जाता है। विश्व-नाटक की ये प्रक्रिया अनादि काल से चलती आ रही है और अनन्त काल तक चलती रहेगी।

यद्यपि सतयुग-त्रेता में कोई दूसरा देश नहीं होता है, समस्त विश्व पर एक ही चक्रवर्ती राज-सत्ता होती है, जिसका केन्द्र बिन्दु भारत में इन्द्रप्रस्थ होता है। परन्तु सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक भारत की आवासीय सीमाओं का विस्तार होता रहता है क्योंकि निरन्तर जनसंख्या की वृद्धि होती जाती है अर्थात् भारतीय सभ्यता का विस्तार होता है। द्वापर से अन्य धर्म आते हैं, देहाभिमान के वशीभूत आत्माओं में अहंकार-लोभ आदि के संस्कार जाग्रत होते हैं, जिससे विभाजन की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है और धीरे-धीरे भारत की सीमायें संकुचित होती जाती है। अन्य देशों और सभ्यताओं का जन्म होता है, जिससे जो एक देश, एक राज्य था, वह विभाजित होता जाता है और कलियुग के अन्त में भारत की वर्तमान स्थिति बन जाती है।

''वहाँ गांव कोई दूर-दूर नहीं होते हैं। एक-दो के नजदीक ही होते हैं क्योंकि वहाँ ट्रेन आदि तो नहीं होगी ना। एक-दो के नजदीक रहते होंगे फिर अहिस्ते-अहिस्ते सृष्टि फैलती जाती है।'' सा.बाबा 7.10.04 रिवा.

''ऐसे नहीं कि सतयुग में चीन, यूरोप आदि नहीं होंगे। होंगे परन्तु वहाँ मनुष्य नहीं होंगे। सतयुग में सिर्फ देवता धर्म वाले ही होंगे, अन्य धर्म वाले होते नहीं हैं।'' सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

आर्य और अनार्य का राज़

भारत का प्राचीन नाम आर्यावर्त ही था। बाबा ने आर्य और अनार्य शब्द का राज़ भी बताया है कि आर्य अर्थात् सुधरे हुए मनुष्य। सुधरे हुए मनुष्य तो देवतायें ही थे।

Q. क्या आर्य भारत में मध्येशिया से आये?

वास्तव में आर्यों का मूल स्थान भारत ही है और भारत का एक नाम आर्यावर्त भी है। द्वापर से जब अन्य धर्म स्थापन हुए और आत्मायें देहाभिमान के कारण पांच विकारों के वशीभूत हो गई। विकारों के कारण विश्व जो एकछत्र था, उसमें विभाजन होने लगा तो खण्ड भारत से अलग हुए और उनमें रहने वालों में जिनका भारतीय धर्म और सभ्यता से स्नेह था, वे वहाँ से भारत में आ गये। ऐसे ही कुछ मध्येशिया के देशों से भी भारत में आये होंगे परन्तु इसका अर्थ ये नहीं कि आर्य भारत में नहीं थे। आर्यों का मूल स्थान भारत ही है।

भारत और भगवान के सम्बन्ध का राज़ /भारत और विभिन्न धर्म और सभ्यताओं का भारत से सम्बन्ध का राज़ / भारत भूमि पर विभिन्न धर्मों और सभ्यताओं के शासन का राज़

भारत सर्वात्माओं के बाप की अवतरण भूमि है और परमात्मा पिता ने भारत में स्वर्ग की स्थापना की तो सर्व आत्माओं को परमात्मा का वर्सा मिलना भी स्वाभाविक ही था। इसीलिए प्राय: सभी धर्मवंश और सभ्यताओं ने जाने-अन्जाने भारत भूमि पर राज्य किया ही और परमात्मा पिता के सम्बन्ध से करना भी था ही क्योंकि वह उनका जन्मसिद्ध अधिकार था। परन्तु अभी भारत स्वतन्त्र है, भारत में धर्म-निर्पेक्षता का राज्य है और अभी फिर से भगवान भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही सर्व धर्मों और सभ्यताओं का आधार स्तम्भ है, जो राज़ परमात्मा ने कल्प-वृक्ष के चित्र से स्पष्ट किया है। इसीलिए परमात्मा सर्वात्माओं को बाप का सन्देश देने के लिए हम बच्चों को प्रेरित करते हैं। भारतीय सभ्यता का प्राण ही है- 'वसुधैव कुटम्बकम्' की भावना।

परमात्मा ने भारत में ही स्वर्ग की स्थापना की, इसीलिए प्राय: सभी धर्मों और सभ्यताओं का भारत के प्रति आकर्षण भी रहा है और उन्होंने राज्य भी किया, जो ड्रामा में नूँधा हुआ है कि कैसे जाने-अन्जाने पिता की सम्पत्ति में सभी अपना भाग ले ही लेते हैं।

''इस दुखधाम से वैराग्य। ऐसे भी नहीं सन्यासियों मिसल घरबार छोड़ना है। बाप समझाते हैं उनका वैराग्य एक तरफ अच्छा है तो दूसरी तरफ बुरा भी है। तुम्हारा तो अच्छा ही अच्छा है। जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो भारत को थमाने के लिए पवित्रता जरूर चाहिए। उसमें वे मदद करते हैं।'' सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

''भारत ही अविनाशी खण्ड है, जहाँ बेहद का बाप आते हैं। यह सबसे बड़ा तीर्थ हो गया। सर्व की सद्गति बाप ही आकर करते हैं, इसलिए भारत ऊंच से ऊंच देश है।... क्रिश्चियन डिनायस्टी का कृष्ण डिनायस्टी से कनेक्शन है।''

सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

''भारतवासी वास्तव में हैं ही देवी-देवता घराने के। परन्तु भारतवासियों को अपने घराने का मालूम न होने के कारण हिन्दू कह देते हैं।... शास्त्र भी भारत का एक ही है। डिटी डिनायस्टी की स्थापना होती है, फिर उसमें भिन्न-भिन्न ब्रान्चेज हो जाती हैं। बाप स्थापन करते हैं देवी-देवता धर्म। मुख्य हैं 4 धर्म। फाउण्डेशन देवी-देवता धर्म का ही है, रहने वाले सब मुक्तिधाम के हैं।''

सा.बाबा 22.11.04 रिवा.

''भारत को बेहद का वर्सा था और किसको ये वर्सा होता नहीं। भारत को ही सचखण्ड कहा जाता है और बाप को ट्रुथ कहा जाता है।... ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है, जो भारत को ही आकर स्वर्ग बनाते हैं। भारत ही पहला देश है।... नया भारत था, अब पुराना भारत कहेंगे।... भारत में बेहद का राज्य था, ये लक्ष्मी-नारायण बेहद का राज्य करते थे।''

सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

तुम्हारे मन्दिरों को बहुतों ने लूटा है। यह भी ड्रामा में पार्ट है, फिर जरूर उन्हों से ही वापस मिलना है।... भारत अविनाशी खण्ड है।... ड्रामा में नूँध है, कर्जा उठाते ही रहते हैं। रिटर्न हो रहा है। तुम जानते हो हमारी राजधानी से बहुत पैसे ले गये हैं, सो फिर दे रहे हैं... सा.बाबा 27.4.05 रिवा.

भारत और विश्व-परिवर्तन का राज़

परमात्मा नये विश्व का रचयिता और पुरानी दुनिया और अनेक अधर्मों का विनाश कराने वाला है। सत्यता ये है कि परमात्मा कोई विनाश कराता नहीं है, जब नई दुनिया की स्थापना परमात्मा के द्वारा हो जाती है तो पुरानी दुनिया का विनाश ड्रामा अनुसार स्वत: होता है। विश्व परिवर्तन का ये दिव्य कर्तव्य परमात्मा भारत भूमि पर आकर ही करते हैं। अविनाशी बाप की अवतरण भूमि होने के कारण भारत भी अविनाशी भूमि बन जाती है। विश्व-परिवर्तन का आधार भारत ही बनता है। जब आत्मायें पवित्र बनती हैं तो उनके लिए पवित्र दुनिया चाहिए, इसलिए विनाश भी होना अवश्य सम्भावी है।

द्वापर से जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं अर्थात् पतित बनते हैं तो भी दुनिया में परिवर्तन होता है, भूकम्प आदि होते हैं, जिसमें दैवी सभ्यता विलीन हो जाती है और नई सभ्यता का जन्म होता है। पहले विश्व में जो सदा बहार मौसम होता है, वह भी परिवर्तन होता है क्योंकि पहले पृथ्वी 90 अंश के कोण पर सीधी थी वह 23.5 अंश एक तरफ झुक जाती है, जिससे सारे विश्व की भौगोलिक स्थिति परिवर्तन हो जाती है।

''बाप भी भारत में ही आते हैं। दुनिया में पीस कब थी फिर वह पीस कब और कैसे होगी - यह बात तो तुम बच्चे ही बता सकते हो। नई दुनिया में भारत ही पैराडाइज़ था।... सबसे जास्ती पत्थरबुद्धि ये भारतवासी ही बने हैं। यह गीता शास्त्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग के।'' सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

'आबू तीर्थ महान' का राज़

परमात्मा विश्व-परिवर्तन और सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति देने का दिव्य कर्तव्य भारत में और भारत में आबू पर्वत से ही करते हैं, इसलिए ही भारत भूमि और उसमें भी ये आबू पर्वत महान भूमि है, महान तीर्थ है। भले इस ज्ञान यज्ञ की स्थापना सिन्ध हैदराबाद में हुई लेकिन वहाँ सबने तपस्या की और उन तपस्वी आत्माओं ने विश्व में सन्देश देने का कर्तव्य आबू पर्वत से आरम्भ किया।

''सर्व का सद्गति दाता आबू में ही आते हैं, इसलिए बड़े से बड़ा तीर्थ आबू ठहरा। जो भी धर्म-स्थापक अथवा गुरु आदि हैं, सबकी सद्गति बाप यहाँ ही आकर करते हैं।'' सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

''गीता में भी कोई सार नहीं है। भल गीता को सर्व शास्त्रमई शिरोमणी कहते हैं।... वैसे ही सर्व तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ आबू है। सारे वर्ल्ड के तीर्थों में यह है सबसे बड़ा तीर्थ है, जहाँ बाप बैठ सबकी सद्गति करते हैं।... तुमको यहाँ बैठे दिल में बड़ी खुशी होनी चाहिए कि हम हेविन की स्थापना कर रहे हैं।'' सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

''बहुत कुछ समझने का है। बाप ने आबू की महिमा पर समझाया है, इस पर ख्याल करना चाहिए। तुम्हारी बुद्धि में आना चाहिए- तुम यहाँ बैठे हो। तुम्हारा यादगार देलवाड़ा मन्दिर कब बना, कितने वर्ष बाद बना है।... इन बातों पर सोच तो चलता है ना... बाप जो समझाते हैं, उसको उगारना चाहिए।'' सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

''यहाँ आबू में ही बाप सारे विश्व को नर्क से स्वर्ग बना रहे हैं तो यही सबसे ऊंच ते ऊंच तीर्थ ठहरा।... अब दुनिया को कैसे पता पड़े कि यह आबू सबसे ऊंच तीर्थ है।'' सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

मधुबन (पाण्डव भवन) का राज़ / मधुबन निवासियों के भाग्य का राज़

जीवात्मा की स्थिति का जड़ तत्वों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जिसका आभास अन्य आत्माओं को भी वहाँ आने से ही होने लगता है। इसी सन्दर्भ में तुलसीदास की रामायण की एक पंक्ति याद आती है-

धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहाँ जहाँ नाथ पांव तुम धारा।

इसी सन्दर्भ में अव्यक्त बापदादा ने अनेक बार मधुबन के महत्व का वर्णन किया है और उस महत्व को जानकर उस नशे और निश्चय में रहने की प्रेरणा दी है और उसके महत्व को बढ़ाने और स्थिर रखने के लिए कर्तव्य का भी ज्ञान दिया है।

मधुबन की भूमि पर शिवबाबा ने ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर अपना दिव्य कर्तव्य किया, उसका प्रवाह इस भूमि के कण-कण में व्याप्त है और शिवबाबा के रथ ब्रह्मा बाबा ने अखण्ड तपस्या से इस भूमि को सींचा और वह पंच तत्व का शरीर इस भूमि में ही पंच तत्वों में विलीन हो गया, इसलिए उस तपस्या का प्रभाव भी इस भूमि में है और सदा रहेगा। भले यज्ञ का विस्तार हो रहा है और होता रहेगा परन्तु इस भूमि की महत्ता अपनी ही रहेगी, जिसका शिवबाबा स्वयं वर्णन करते हैं। भल अन्य तपस्वी आत्मायें भी जहाँ-जहाँ रहती हैं, उसका भी महत्व होता ही है।

''मधुवन अर्थात् जितना स्नेही (मधु) होंगे, उतना बेहद का वैराग्य (वन) होगा। तो नम्बरवन टीचर बन सकते हो क्योंकि जैसी अपनी धारणा होगी वैसे औरों को अनुभव में ला सकेंगे। इन दोनों गुणों की अपने में धारणा करनी है।... जब स्वयं सफलता स्वरूप बनेंगे तब दूसरी आत्माओं को भी सफलता का मार्ग बता सकेंगे।'' अ.बापदादा 26.1.70

''मधुबन है सर्व प्राप्तियों की खान।... एक-एक सेकण्ड में पदमों की कमाई कर सकते हो। पदमापदम भाग्यशाली तो हो लेकिन इस भाग्य को सदा कायम रखने के लिए पुरुषार्थ सदा सम्पूर्णता का रखना।'' अ.बापदादा 23.1.70

''आत्मा की असली स्थिति क्या है?... वैसे अपनी असली स्थिति का अनुभव करने के लिए यहाँ आये हो। मधुबन में आये हो उस स्थिति की टेस्ट करने। टेस्ट करने के बाद उसे सदा के लिए अपनाने का पुरुषार्थ करना है।'' अ.बापदादा 23.1.70

''हर एक का चेहरा चैतन्य म्युजियम बन जाये।... आपके चैतन्य म्युजियम में तीन मुख्य चित्र हैं। भृकुटी, नयन और मुख। उन द्वारा ही आपकी स्मृति, वृत्ति, दृष्टि और वाणी का मालूम पड़ता है।'' अ.बापदादा 6.12.69

''इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा यहाँ पाँव नहीं रख सकता। मधुबन है सौभाग्य की लकीर।... इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता। भले कोई अपना शीश भी उतार कर रख दे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है। आगे चलकर जब लोगों का रोना देखेंगे, तब आप लोगों को उसकी वैल्यू का मालूम पड़ेगा।... ड्रामा में इतने ऊंच भाग्य को सदैव सामने रखना।'' अ. बापदादा 6.12.69

''मधुबन के फूलों में क्या विशेषतायें होनी चाहिए? पहली विशेषता है मधुरता।... मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला करेंगे।... तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए, फिर इससे सारी बातें आ जायेंगी।... ये दो विशेषतायें धारण करनी है - मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहेंगे स्नेह और शक्ति।'' अ. बापदादा 9.11.69

''मधुबन निवासियों से मधुवन की शोभा है। फिर भी बहुत लक्की हो। अपने को जानो या न जानो फिर भी लक्की हो। स्थान के महत्व को, संग के महत्व को, वायुमण्डल के महत्व को भी जानो तो एक सेकण्ड में महान बन जायेंगे।''
अ.बापदादा 22.11.72 मधुबन वासियों से

''आप सभी से श्रेष्ठ स्थान पर हो तो इसका भी असर स्थिति पर होना चाहिए। श्रेष्ठ वरदान भूमि के निवासी हैं तो अपनी स्थिति भी सदा सभी को देने वाली बनानी चाहिए।'' अ.बापदादा 28.7.71

''सबसे ज्यादा विधिपूर्वक ब्रह्मा-भोजन भी मधुबन में ही होता है।... सबसे ज्यादा डायरेक्ट मुरलियाँ मधुबन वाले ही सुनते हैं। तो मधुबन निवासी सदा श्रेष्ठ भाग्य के अधिकारी आत्मायें हैं। सेवा भी दिल से करते हैं।... ब्राह्मणों की मन से आशीर्वाद प्राप्त होती है।'' अ.बापदादा 5.10.87

''इस मधुबन का नाम है महायज्ञ, परिवर्तन भूमि और वरदान भूमि। तो जैसा नाम वैसा काम करो।... इस भूमि के महत्व को भी अच्छी रीति जानो। इस भूमि को साधारण भूमि नहीं समझना।... महान बनना अर्थात् महत्व को जानना।''
अ.बापदादा 24.10.75

''मधुबन की क्या महिमा करते हो? कहते हो कि यह परिवर्तन भूमि है। आप सभी परिवर्तन भूमि या वरदान भूमि में आये हुए हो। स्वयं में व अन्य में वरदान का अनुभव करते हो? यहाँ आना अर्थात् वरदान पाना, परिवर्तन करना।... ऐसी अग्नि का रूप बनाओ कि जिस अग्नि में सर्व व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुए पुराने संस्कार भस्म हो जाएं।''
अ.बापदादा 18.1.75

देलवाला, अचलगढ़ मन्दिर और तीर्थराज आबू का राज़

परमात्मा के दिव्य कर्तव्य का यथार्थ यादगार दिलवाला मन्दिर भी आबू में ही है और ड्रामा अनुसार इस ज्ञान यज्ञ का मुख्यालय भी आबू में ही बना है। भारत में आबू को तपोभूमि माना जाता है क्योंकि यहाँ भक्तिमार्ग में अनेक ऋषि-मुनियों ने तपस्या की है, जिनकी यादगार में विभिन्न मन्दिर और आश्रम आदि हैं और राजयोग का यादगार दिलवाला मन्दिर भी है। ज्ञान मार्ग में भी सभी राजयोगी आत्माओं ने कुछ न कुछ तपस्या यहाँ अवश्य की है। ऊंच ते ऊंच शिवबाबा की कर्मभूमि और मम्मा-

बाबा तथा ब्रह्मा वत्सों की तपस्या भूमि यह आबू है, इसीलिए इसको तीर्थराज कहा जाता है। दिलवाला अर्थात् सर्व आत्माओं की दिल लेने वाला, दिल को राहत देने वाला तो एक परमात्मा ही है। वह जब ब्रह्मा तन में आता है, तब ही सबकी दिल लेता है और दिल को राहत देता है। इसलिए बाबा ने कहा है - यह ब्रह्मा तन ही सच्चा दिलवाला मन्दिर है, यह पाण्डव भवन सच्चा दिलवाला मन्दिर है क्योंकि यहाँ बैठकर दिलवाला परमात्मा सर्व आत्माओं की दिल लेता है, सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ कार्य करता है। वह दिलवाला मन्दिर तो इसका यादगार है। यह है सच्चा-सच्चा चैतन्य दिलवाला मन्दिर। दोनों ही यहाँ आबू में हैं।

''दिलवाला राजयोग का एक्यूरेट मन्दिर है।... बिल्कुल एक्यूरेट यादगार है। बुद्धि से काम ले ठीक बनाया है।... यह स्वर्ग और संगमयुग के राजयोग का मॉडल रूप में बनाया है।... आदि संगमयुग को कहो या सतयुग को कहो।''

सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''देलवाला मन्दिर में जगतपिता-जगदम्बा, आदि देव, आदि देवी बैठे हैं।... यह एडम-ईव अब तपस्या कर रहे हैं। ये मनुष्य सृष्टि के सिजरे के हेड हैं। यह राज़ भी बाप ही समझाते हैं। परमपिता परमात्मा को ही ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर कहा जाता है।'' सा.बाबा 14.12.04 रिवा.

''बहुत कुछ समझने का है। बाप ने आबू की महिमा पर समझाया है, इस पर ख्याल करना चाहिए। तुम्हारी बुद्धि में आना चाहिए- तुम यहाँ बैठे हो। तुम्हारा यादगार देलवाड़ा मन्दिर कब बना, कितने वर्ष बाद बना है।... इन बातों पर सोच तो चलता है ना।... बाप जो समझाते हैं, उसको उगारना चाहिए।'' सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

यह भी ड्रामा की विशेषता है कि सत्य ज्ञान न होते भी भक्ति मार्ग में आत्माओं को सत्यता की टचिंग होती अवश्य है, जिसके यादगार में शास्त्र लिखते हैं, मन्दिर आदि बनाते हैं।

''तुम बच्चे जानते हो कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है? विनाश तो होना ही है।... भारत तो अविनाशी पवित्र खण्ड है। उसमें भी आबू सबसे पवित्र तीर्थ स्थान है, जहाँ बाप आकर सर्व की सद्गति करते हैं। देलवाड़ा मन्दिर कितना अच्छा यादगार है, कितना अर्थ सहित है। परन्तु जिन्होंने बनवाया है, वे यह नहीं जानते। फिर भी अच्छे समझदार तो थे ना।... तुम जानते हो हम हैं चेतन्य में, वह हमारा ही जड़ यादगार है।'' सा.बाबा 21.12.04 रिवा.

''सदैव नशे में स्थित रहने का यादगार कौन सा है? अचलघर। सदैव उस नशे में रहने से अचल, अडोल बन जायेंगे। फिर माया संकल्प रुप में भी हिला नही सकती।... यह मेरा यादगार है, ऐसा निश्चय बुद्धि बनने से विजय अवश्य प्राप्त हो जाती है।''

अ.बापदादा 24.5.71

दिल्ली दरबार - इन्द्रप्रस्थ का राज़

भारत अविनाशी खण्ड है और दिल्ली कल्प के आदि से लेकर अभी अन्त तक राजधानी रही है। सतयुग-त्रेता में देवताओं की राजधानी रही और इन्द्रप्रस्त के नाम से विख्यात थी और द्वापर-कलियुग में दिल्ली के नाम से जानी जाने लगी। सतयुग-त्रेता के चक्रवर्ती राजाओं की राजधानी दिल्ली ही थी, उसके अतिरिक्त अन्य और भी राजायें थे, जो दिल्ली दरबार के सहयोगी राजायें थे। बाबा ने अनेक बार मुरलियों कहा है कि बच्चे राज तो दिल्ली में ही करना है तो दिल्ली की सेवा तो करनी होगी।

''रुहानी बाप यह रुहानी नॉलेज भारत में ही आकर देते हैं। वास्तव में हिन्दुस्तान कहना तो रांग है। तुम जानते हो भारत ही स्वर्ग था तो सिर्फ हमारा ही राज्य था और कोई धर्म नहीं थे। न्यू वर्ल्ड थी। नई देहली कहते हैं ना। देहली का नाम असल देहली नहीं था। परिस्तान कहते थे। वहाँ न पुरानी और न नई देहली होगी। परिस्तान कहा जायेगा। देहली को केपिटल कहते हैं। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा।'' सा.बाबा 9.10.04 रिवा.

''देहली की दो विशेषतायें हैं - एक देहली दिलाराम की दिल है और दूसरा गद्दी का स्थान है।... अभी के स्वराज्य अधिकारी सो भविष्य में विश्व राज्य अधिकारी।'' अ.बापदादा 14.10.87

भारत और भारत के प्राचीन राजयोग का राज़

विदेशों में भारत के प्राचीन राजयोग की बहुत महिमा है, इसलिए भारत से अनेक संत-महात्मायें भारत के प्राचीन राजयोग के नाम पर अनेक प्रकार के हठयोग सिखाते हैं। विदेशों से अनेक गणमान्य व्यक्ति भी भारत का प्राचीन राजयोग सीखने भारत में आते हैं परन्तु वह राजयोग क्या है, यह यथार्थ बात स्वयं भारतवासी भी नहीं जानते हैं, जो बात अभी परमात्मा ने आकर बताई है कि वह कौन सा योग है, जिससे भारत में स्वर्ग की स्थापना हुई, देवी-देवताओं की राजाई स्थापन हुई। अभी परमात्मा वही राजयोग सिखला रहे हैं और दैवी राजाई की स्थापना हो रही है। परमात्मा का ये सन्देश सर्व आत्माओं को देना है।

''भारत का प्राचीन राजयोग भी गाया हुआ है। खास विलायत वालों को जास्ती उत्सुकता रहती है राजयोग सीखने की। भारतवासी तो तमोप्रधान बुद्धि हैं।... भारत का प्राचीन राजयोग नामीग्रामी है, जिससे ही भारत स्वर्ग बना था।... हेविन या पैराडाइज है - सबसे वण्डर आफ वर्ल्ड।'' सा.बाबा 27.9.04 रिवा.

भारत की राजनैतिक एवं आध्यात्मिक स्वतन्त्रता-परतन्त्रता का राज़

भारत में जब स्वर्ग होता है तो आत्मायें देही-अभिमानी स्थिति में होती हैं और भारत में राजनैतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की स्वतन्त्रता होती है, इसलिए सर्वत्र शान्ति और सुख का साम्राज्य होता है। द्वापर से आत्मायें देहाभिमान के वशीभूत हो जाती हैं, जिससे आत्माओं की व्यक्तिगत और भारत की सामूहिक आध्यात्मिक स्वतन्त्रता खत्म हो जाती है। आध्यात्मिक स्वतन्त्रता ही भौतिक या राजनैतिक स्वतन्त्रता का आधार है। इसीलिए जब भारत में आध्यात्मिक स्वतन्त्रता खत्म हो जाती है तो राजनैतिक स्वतन्त्रता भी खत्म होने लगती है। अनेक विदेशी सभ्यताओं के भारत पर आक्रमण शुरू हो जाते हैं, जिसके फलस्वरूप सदियों तक भारत को राजनैतिक परतन्त्रता का सामना करना पड़ता है। भले अभी भारत के बापू गांधी जी ने भारत को राजनैतिक स्वतन्त्रता तो दिलाई परन्तु आध्यात्मिक स्वतन्त्रता न होने के कारण राजनैतिक स्वतन्त्रता भी परतन्त्रता के समान ही दुखदायी है। सर्वत्र दुख-अशान्ति का वातावरण है, सिविल वार के आसार बनते जा रहे हैं। पुनः सुख-शान्ति का साम्राज्य पाने के लिए आध्यात्मिक स्वतन्त्रता परमावश्यक है और ये आध्यात्मिक स्वतन्त्रता दिलाना किसी मनुष्यात्मा के वश की बात नहीं है, वह कार्य विश्व के बापू परमपिता परमात्मा का है। वह कार्य विश्व का बापू परमपिता परमात्मा अभी कर रहा है। अभी परमात्मा ने सारी सृष्टि की जो हिस्ट्री-जॉग्राफी बताई है और राजयोग सिखा रहे हैं, उससे ही खास भारत में और आम सारे विश्व में आध्यात्मिक स्वतन्त्रता आने वाली है, जिससे सारे विश्व में सुख-शान्ति का साम्राज्य पुनः स्थापन होने वाला है, जिसे स्वर्ग कहा जाता है। वहाँ आत्माओं को आध्यात्मिक, राजनैतिक और भौतिक तीनों ही प्रकार की स्वतन्त्रता होगी।

भारत और स्थापना-विनाश के सम्बन्ध का राज़ / भारत और विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया का राज़

ये विश्व आत्मा और प्रकृति का खेल है। जब आत्मा पवित्र होती है तो प्रकृति भी पवित्र बनती है, विश्व में आमूलभूत परिवर्तन होता है, जिसको स्थापना और विनाश का नाम दिया जाता है परन्तु जब आत्मा पतित बनती अर्थात् विकारी बनती तो भी प्रकृति में कुछ विशेष परिवर्तन होते हैं। भूकम्प आदि आते हैं। इसका भी बाबा ने ज्ञान दिया है।

''यह हार-जीत का खेल है। तुम बच्चे श्रीमत पर चलकर अभी माया रूपी रावण पर जीत पाते हो। फिर आधा कल्प बाद रावण राज्य शुरू होता है (रावण जीत पा लेता है)।... बाप को नॉलेजफुल कहा जाता है।'' सा.बाबा 29.1.05 रिवा.

''भारत पहले सबसे पवित्र था फिर जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो फिर अर्थक्वेक आदि में सब स्वर्ग की सामग्री, सोने के महल आदि खलास हो जाते हैं।... उपद्रव होते हैं जब रावण राज्य शुरू होता है।'' सा.बाबा 10.2.05 रिवा.

''तुमको अनगिनत बार पढ़ाया है, फिर 5 हजार वर्ष बाद तुमको ही पढ़ायेंगे।... सर्वशास्त्र शिरोमणि गीता भगवान ने गाई है परन्तु भगवान किसको कहा जाता है, यह भारतवासियों को पता नहीं है।... भारत जो सोने की चिड़िया था, वह अब क्या बन पड़ा है?'' सा.बाबा 16.12.04 रिवा.

''पुरानी दुनिया का विनाश होना ही है। यह एटामिक लड़ाई अन्तिम लड़ाई है। यह लड़ाई शुरू होगी तो रुक नहीं सकती। यह लड़ाई शुरू ही तब होगी जब तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे और स्वर्ग में जाने के लायक बन जायेंगे।''

सा.बाबा 16.12.04 रिवा.

''यहाँ से जो संस्कार ले जायेंगे, वहाँ वह सब बनाने लग पड़ेंगे। तुम्हारे में भी राजाई के संस्कार भरे जाते हैं, तुम राजाई करेंगे। वे फिर उस राजाई में आकर जो हुनर सीखते हैं, वही करेंगे।... वही संस्कार ले जायेंगे।'' सा.बाबा 27.4.05 रिवा.

भारत और खूने नाहेक खेल का राज़

बाबा ने विनाश और स्थापना का सारा राज़ समझाया है और ये भी बताया है कि अन्त समय बहुत दर्दनाक दृश्य सामने आने वाले हैं। सिविल वार, नेचुरल केलेमिटीज, एटॉमिक वार आदि में करोड़ों मनुष्य, पशु-पक्षी मरेंगे। खून की नदियां बहेंगी। इन सब दृश्यों को देखने और अपनी अवस्था को एकरस रखने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए। बुद्धि एक परमात्मा के साथ लगी होगी तो ये दृश्य प्रभावित नहीं करेंगे।

''तुम जानते हो अभी खूने नाहेक खेल होना है।... नेचुरल केलेमिटीज होंगी, सबका मौत होगा। इसको देखने की बड़ी हिम्मत चाहिए। डरपोक तो झट बेहोश हो जायेंगे। इसमें निडरपना बहुत चाहिए।'' सा.बाबा 29.1.05 रिवा.

''भारतवासी ही शिव-जयन्ति नहीं मनाते हैं, इसलिए ही भारत की यह बुरी गति हुई है। भारतवासियों का मौत भी बुरी गति से होता है। वे तो गैस निकला और खलास।... विनाश का समय जब होगा तो ड्रामा प्लेन अनुसार बॉम्बस एक्ट में आ जायेंगे। ड्रामा विनाश जरूर करायेगा। रक्त की नदियां यहाँ बहेंगी।'' सा.बाबा 26.1.05 रिवा.

''यह है खूने नाहेक खेल, नेचुरल केलेमिटीज भी होंगी।... बहुत आफतें आयेंगी। तुम बच्चों को अभी ऐसी प्रैक्टिस करनी है, जो अन्त में एक शिवबाबा ही याद रहे।... नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा।'' सा.बाबा 13.4.05

''हाय-हाय के बाद फिर जय-जयकार होनी है। भारत में ही रक्त की नदी बहनी है। सिविलवार के आसार भी दिखाई दे रहे हैं।... तुम ब्राह्मण अभी भारत को स्वर्ग बना रहे हो।'' सा.बाबा 14.4.05 रिवा.

''इन नेचुरल कैलेमिटीज की भी नूँध है ड्रामा में। कल्प पहले भी हुई थीं। जब यह झाड़ जड़जड़ीभूत हो जाता है तब सारे भंभोर को आग लग जाती है। बच्चों को ख्याल करना चाहिए कितना हाहाकार होगा। बहुत मरेंगे। बहुत खूनरेजी होगी।... भारत में यह लड़ाई बहुत कड़ी है। और जगह इतनी कड़ी लड़ाई नहीं लगती है। यह यवनों की लड़ाई गाई हुई है। चीड-फाड़ होगी... बहुत खराब लड़ाई है। देख भी न सकेंगे। भारत में रक्त की नदी बहनी है।'' सा.बाबा 19.3.73 रिवा.

''यह भी तुम जानते हो कि पिछाड़ी को यहाँ रक्त की नदियाँ बहती हैं। उस तरफ तो अर्थ क्वेक से मरते हैं। उसमें कोई रक्त की नदियाँ नहीं बहती। यहाँ तो एक दो को खून करते हैं तो रक्त की नदियाँ बहती हैं। यह बहुत खराब भयभीत करने वाला नजारा होता है। कोई सहन कर न सके। कमजोर तो फाँ हो जायेंगे।'' सा.बाबा 7.4.73 रिवा.

सोमनाथ मन्दिर, राजा विक्रमादित्य और भक्ति मार्ग के प्रारम्भ होने का राज़

द्वापर से जब भक्ति मार्ग का आरम्भ हुआ तो राजा विक्रमादित्य ने पहले-पहले सोमनाथ का शिवबाबा का विश्वविख्यात मन्दिर बनवाया, जिसमें हीरे का शिवलिंग बनाया। सोमनाथ के मन्दिर में अपार धन-सम्पत्ति थी, जिसका अन्दाज इसी से लगाया जा सकता है कि अफगानिस्तान के शासक महमूद गजनवी ने उसके प्रलोभन में जोखिम भरा इतना लम्बा सफर तय करके सोमनाथ के मन्दिर को लूटा और वह प्रचुर धन-सम्पत्ति लूटकर अफगानिस्तान ले गया। जैसे ज्ञान मार्ग के आदि के लिए निराकार शिवबाबा के साकार माध्यम ब्रह्मा बाबा बने और अपनी स्थूल धन-सम्पत्ति से यज्ञ की स्थापना की, ऐसे ही ब्रह्मा बाबा की आत्मा ने ही राजा विक्रमादित्य के रूप में पहले सोमनाथ का मन्दिर बनवाकर भक्ति मार्ग का आरम्भ किया। उसके बाद तो

अनेक अन्य राजाओं ने भी शिव के मन्दिर बनाकर भक्ति आरम्भ की। पहले भक्ति भी अव्यभिचारी थी अर्थात् एक शिवबाबा की ही भक्ति करते थे, जो बाद में व्यभिचारी हो गई अर्थात् अनेकों की भक्ति होने लगी।

कृष्ण और क्रिश्चियन्स के सम्बन्ध का राज़

विश्व का नम्बरवन धर्म है आदि-सनातन-देवी देवता धर्म, जिसका प्रथम राजकुमार है श्रीकृष्ण और अन्तिम विस्तार को पाया हुआ धर्म है क्रिश्चियन, जिनके हाथ में सारी सत्ता है। विनाश में क्रिश्चियन्स की सत्ता समाप्त होती है और कृष्ण के हाथ में सत्ता आती है। कृष्ण की कर्मभूमि या राजभूमि भारत पर क्रिश्चियन्स ने राज्य किया और यहाँ से विपुल धन-सम्पत्ति लूटकर ले गये, वह फिर उनको वापस करनी ही है। इस सत्य का ज्ञान बाबा ने अभी हमको दिया है। सृष्टि-चक्र इस सत्य राज़ को जानने से उनके प्रति भी हमारा घृणा भाव समाप्त हो जाता है।

पुरुषोत्तम संगमयुग का राज़

पुरुषोत्तम संगमयुग अर्थात् कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगमयुग। सारे कल्प में पुरुषोत्तम संगमयुग महान युग है, जब आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है और परमात्मा से सर्व प्राप्तियों का अनुभव होता है। पुरुषोत्तम संगमयुग का अनुभव ही महान है क्योंकि उस समय दुख-सुख, ऊंच-नीच, प्राप्ति-अप्राप्ति, नर्क-स्वर्ग, रात-दिन दोनों का ज्ञान होता है और अनुभव होता है। अप्राप्ति के सामने ही प्राप्ति का महत्व है।

पुरुषोत्तम संगमयुग ही सारे कल्प के लिए भाग्य का, सारे कल्प की रीति-रिवाजों का का बीज बोने का युग है। पुरुषोत्तम संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभव के आधार पर ही सभी धर्म वाले परमात्मा को याद करते हैं।

''उन्हों का भी आधार तिथि और वेला पर होता है। वैसे ही यहाँ भी मरजीवा जन्म की तिथि, वेला और स्थिति है। ... आप लोग भी इन तीनों बातों तिथि, वेला और स्थिति को जानते हुए अपने संगमयुग की प्रारब्ध व संगमयुग की भविष्य स्थिति और भविष्य जन्म की प्रारब्ध को अपने आप भी जान सकते हो।'' अ.बापदादा 24.4.73

''बहुत समय का मतलब ये नहीं कि स्थूल तारीखों व वर्षों के हिसाब से है लेकिन जब से जन्म लिया तब से बहुत समय की लगन हो।... अगर कोई 35 वर्ष के बदले 15 वर्ष से आ रहे हैं लेकिन 15 वर्ष में बहुत समय पुरुषार्थ की सफलता में रहा है तो उनकी गिनती जास्ती में आयेगी। बहुत समय सफलता के आधार पर गिना जाता है।'' अ.बापदादा 24.4.73

''इसको कहेंगे चढ़ती कला का परिवर्तन। परिवर्तन तो द्वापर में भी होता है परन्तु वह है गिरती कला का परिवर्तन। अभी संगम पर है चढ़ती कला का परिवर्तन।'' अ.बापदादा 11.4.73

''संगमयुग का असली संस्कार है जो सदा नॉलेज देता और लेता रहता है, उसको सदा ज्ञान स्मृति में रहेगा और वह सदा हर्षित रहेगा।... अपने जन्म और समय के महत्व को जानो तब ही महान कर्तव्य कर सकेंगे।'' अ.बापदादा 16.6.72

'' जितना त्याग करेंगे, उतना ही भाग्य प्राप्त करेंगे। वर्तमान में भी और भविष्य में भी। ऐसे नहीं समझना कि संगमयुग में सिर्फ त्याग करना है और भविष्य में भाग्य लेना है। ऐसे नहीं है। जो जितना त्याग करता है और जिस घड़ी त्याग करता है, उसी घड़ी जितना त्याग उसके रिटर्न में उनको भाग्य जरुर प्राप्त होता है।'' अ.बापदादा 15.3.72

''अभी जो भाग्य बनाया वह सारे कल्प में भोगना पड़ता है - चाहे श्रेष्ठ, चाहे नीच। लेकिन यह संगमयुग ही है जिसमें भाग्य बना सकते हो। जितना चाहो उतना बना सकते हो क्योंकि भाग्य बनाने वाला बाप साथ है।'' अ.बापदादा 15.3.72

''जैसे लोगों को प्रदर्शनी में संगम के चित्र पर खड़ा करके पूछते हो कि अभी आप कहां हो और कौन हो?...क्योंकि संगम है ऊंच ते ऊंच स्थान वा युग। इसी प्रकार अपने आप को ऊंची स्टेज पर खड़ा करो और फिर अपने आप से पूछो कि मैं सदा प्रीत बुद्धि हूँ?'' अ.बापदादा 2.2.72

''जैसे बाप आकार में निराकार आत्माओं को ही देखते हैं, वैसे ही बाप समान बने हो?... आकार में निराकार देखने आये, इसमें अन्त तक भी अगर अभ्यासी रहेंगे तो देही-अभिमानी का अथवा अपने असली स्वरूप का जो आनन्द वा सुख है, वह संगमयुग पर अनुभव नहीं करेगे! संगमयुग का वर्सा कब प्राप्त होता है, संगमयुग का वर्सा कौनसा है ?'' अ.बापदादा 28.7.71

पुरुषोत्तम संगमयुग और उसकी यादगार पुरुषोत्तम मास का राज़

इस सृष्टि-चक्र में संगमयुग का समय सबसे श्रेष्ठ और सुहावना होता है क्योंकि उस समय परमात्मा द्वारा सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान मिलता है, जिससे इसके आदि-मध्य-अन्त तीनों कालों को जानते हुए हम पुरानी दुनिया को भूलकर नई दुनिया के लिए पुरुषार्थ करते हैं। वर्तमान समय कल्प का पुरुषोत्तम संगमयुग है, जो कल्प का सर्वोत्तम समय है। अभी का समय और सुख सतयुग से भी महान है। अभी का मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव है। परमधाम में आत्मा को मुक्ति का कोई अनुभव नहीं है और सतयुग की जीवनमुक्ति एवं जीवनबन्ध का ज्ञान न होने के कारण यथार्थ अनुभव नहीं होता अर्थात् उसका उतना महत्व नहीं रहता है। इस पुरुषोत्तम संगमयुग का अनुभव ही यथार्थ अनुभव है। प्राय: सभी धर्मों में भक्ति मार्ग में इसी समय के अनुभव को ही आत्मायें याद करती हैं।

यह पुरुषोत्तम संगमयुग विश्व-नाटक की तमोप्रधानता और सतोप्रधानता, स्वर्ग और नर्क, रात-दिन का संगम है। अभी ही आत्मा और परमात्मा का मंगल मिलन होता है और परमात्मा से सारे कल्प का ज्ञान मिलता है, जिससे हम सारे कल्प को जान जाते हैं। जिस ज्ञान और परमात्मा के संग के आधार पर अभी ही आत्मायें और सारी सृष्टि तत्वों सहित तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है। यही आत्माओं की और सृष्टि की चढ़ती कला का युग है।

''इस ज्ञान से तुम्हारी आत्मा भरपूर रहती है, फिर खाली हो जाती है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, फिर आते हैं इस स्वीट संगम पर। इनको स्वीट कहेंगे। शान्तिधाम कोई स्वीट नहीं है। सबसे स्वीट है पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगमयुग। ड्रामा में तुम्हारा भी अच्छे ते अच्छा पार्ट है। तुम कितने लकी हो जो बेहद के बाप के तुम बनते हो।'' सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग की यादगार में ही भारत में पुरुषोत्तम मास को सर्व मासों से श्रेष्ठ मास समझते हैं और उस मास में भक्ति-भावना, दान-पुण्य, त्याग-तपस्या, व्रत-नियम आदि विशेष करते हैं और उसका फल भी विशेष माना जाता है। भक्ति भावना वाली आत्मायें पुरुषोत्तम मास में विकार में जाना भी बड़ा पाप समझते हैं, इसलिए पवित्र रहते हैं। ये सब नियम-संयम, कर्म-काण्ड इस पुरुषोत्तम संगमयुग की ही यादगार हैं। इस संगमयुग पर आत्मा, परमात्मा के संग से पावन बनती है, जिसकी यादगार में विभिन्न नदियों के संगम पर और गंगा सागर का मेला लगता है।

ये पुरुषोत्तम संगमयुग बहुत ही महत्वपूर्ण समय है। ये संगमयुग पर ही सर्व प्रकार के ज्ञान के चरमोत्कर्ष का संगम होता है अर्थात् अभी आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में भौतिक विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान, आदि के ज्ञान का भी संगम है। आत्मा और परमात्मा का भी संगम है, स्थापना-विनाश का भी संगम है, कल्प के दिन-रात का भी संगम है, कल्प के आदि-अन्त का भी संगम है, स्वर्ग-नर्क का भी संगम है। देवताओं और असुरों का भी संगम है अर्थात् दैवी और आसुरी संस्कारों का भी संगम है। इन सब सत्यों पर विचार करें तो इन सबकी अभी चरम सीमा है। स्मृति-विस्मृति का भी संगम है अर्थात् अभी परमात्मा से अनेक प्रकार की स्मृतियां मिलती हैं, जो सतयुग के प्रथम जन्म से विस्मृति में चली जाती हैं। विज्ञान के क्षेत्र में सर्व प्रकार की महत्वपूर्ण अनुसंधान इस संगमयुग पर ही हुये हैं, जो ही सतयुग के निर्माण में काम आती है और वहाँ से ही समयान्तर वह ज्ञान लोप होने लगता है, जो त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के संगमयुग तक पूरा ही लोप हो जाता है।

Q. यथार्थ संगम क्या और कब है?

कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगम प्वाइन्ट, जब हम सब परमधाम जाते हैं और सतयुग में आते हैं, वह प्वाइन्ट ही यथार्थ संगम का है। वैसे तो जब से परमात्मा आते हैं और पावन बनाकर परमधाम जाते हैं, वह पूरा ही समय संगम-युग का है, जो सौ साल के लगभग होता है।

''अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग पर। तुम पुरुषोत्तम बन रहे हो।... तुम बच्चों को बाप का नाम बाला करना है, तुम्हारा मुखड़ा सदैव हर्षित रहना चाहिए। मुख से सदैव रत्न निकलें... अभी तुम जो ज्ञान रत्न लेते हो, वे फिर सच्चे हीरे-जवाहरात बन जाते हैं।... ज्ञान रत्नों की माला इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बनती है।'' सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

''तीनों लाइट्स का साक्षात्कार होगा तो अभी से ही अपना गायन सुनेंगे। द्वापर का गायन कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन ऐसे साक्षात्कारमूर्त और साक्षात मूर्त बनने से अभी ही अपना गायन सुनेंगे। आपके आगे आने से लाइट ही लाइट देखने में आये।''

अ.बापदादा 19.6.70

पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन के महत्व का राज़ / ब्राह्मण जीवन की महानता का राज़

ब्राह्मण जीवन कितना महान है, उसका सारे कल्प क्या महत्व है, इसका राज़ भी बाबा ने बताया है और यदि हम उस महत्व को समझकर चलें तो जीवन परम सुखमय अनुभव होगा और हमारे कर्म-संस्कार भी श्रेष्ठ रहेंगे।

यह ब्राह्मण जीवन परम-शान्ति, परमानन्द, परम-सुख को अनुभव करने की जीवन है। जो अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होता, परमात्मा को साथ रखकर चलता, विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानकर उस स्थिति में स्थित होता, ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य में संलग्न रहता वह परम-शान्ति, परमानन्द, परम-सुख को अनुभव करता है।

''यह ईश्वरीय गोद एक ही बार मिलती है।... यह जन्म दुर्लभ है। हीरे जैसा तुम यहाँ संगमयुग पर बनते हो।... भारत में ही गाया जाता है - हीरे जैसा जन्म अमोलक।'' सा.बाबा 18.8.05 रिवा.

''यह अलौकिक, अव्यक्ति मिलन भविष्य स्वर्ण युग में भी नहीं हो सकता। सिर्फ इस समय इस विशेष युग को वरदान है बाप और बच्चों के मिलने का। इसलिए इस युग का नाम ही है संगमयुग।... बापदादा भी ऐसे कोटों में कोई श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को देख हर्षित होते हैं और स्मृति दिलाते हैं।'' अ.बापदादा 14.10.87

''बाप ने कितनी स्मृतियां दिलाई हैं, याद करो तो लम्बी लिस्ट निकल आयेगी।... जो भक्त आप स्मृति-स्वरूप आत्माओं के हर कर्म की विशेषता का सुमिरण करते रहते हैं।... मग्न हो जाते हैं।'' अ.बापदादा 14.10.87

''भक्त आप प्राप्ति-स्वरूप आत्माओं का सुमिरण करते-करते उसमें खो जाते हैं... वह अल्पकाल का अनुभव उन आत्माओं के लिए कितना न्यारा और प्यारा होता है अर्थात् लवलीन हो जाते हैं।... क्योंकि आप आत्मायें बाप के स्नेह में सदा लवलीन रही हैं, प्राप्तियों में सदा खोई हुई रही हैं।'' अ.बापदादा 14.10.87

''सतयुग में यह ज्ञान नहीं रहेगा। वहाँ तुमको यह थोड़े ही मालूम रहता है कि हम फिर गिरेंगे। यह मालूम हो तो सुख की भासना ही न आये। यह ड्रामा का ज्ञान सिर्फ अभी तुम्हारी बुद्धि में है। ब्राह्मण ही अधिकारी हैं इस ज्ञान के। ब्राह्मणों को ही बाप ज्ञान सुनाते हैं।... बुद्धि में रहे तो अपार खुशी रहे।'' सा.बाबा 09.06.2005 रिवा.

''जब डायरेक्ट साथ निभाने का वायदा है तो वायदे का फायदा उठाओ। इस समय दो बाप के साथ व्यक्तिगत अनुभव हो सकता है, जो फिर सारे कल्प में नहीं होगा। यह सिर्फ अभी की ही प्राप्ति है। तो उसका पूरा-पूरा लाभ उठाओ। कोई भी बात हो सदा बाबा ही याद रहे। इसको कहा जाता है, 'निरन्तर योगी'।'' अ.बापदादा 23.1.76

''स्वयं को सर्व शक्तियों से सम्पन्न अनुभव करो क्योंकि सम्पन्नता का वरदान संगमयुग पर ही मिलता है। सिवाए संगमयुग सम्पन्न स्वरूप का अनुभव और कहीं भी नहीं कर सकेंगे। दैवी जीवन में सर्वगुण सम्पन्न होने का, 16 कलाओं का गायन है लेकिन सम्पन्न स्वरूप क्या होता है, गुणों और कलाओं की नॉलेज इस ईश्वरीय जीवन में ही है। इसलिए सम्पन्न बनने का आनन्द इस ईश्वरीय जीवन में ही प्राप्त कर सकते हो।'' अ.बापदादा 21.9.75

''संगमयुग की विशेषता है कि इस युग में ही बाप भी प्रत्यक्ष होते हैं, ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण भी प्रत्यक्ष होते हैं। आप सबके 84 जन्मों की कहानी भी प्रत्यक्ष होती है। श्रेष्ठ नॉलेज भी प्रत्यक्ष होती है। इस कारण ही प्रत्यक्ष फल मिलता है।''

अ.बापदादा 10.9.75

''यह कब भूलो मत कि हम पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं।... तुमने प्रतिज्ञा की है कि हम सिवाए एक बाप के और कोई को याद नहीं करेंगे।... इस दुनिया के सुख भी काग विष्टा के समान हैं, तुम पढ़ते हो नई दुनिया के लिए।'' सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

''हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान हैं तो जरूर नई दुनिया के हुए ना। सतयुगी देवतायें नई दुनिया के हैं या ब्राह्मण नई दुनिया के हैं। ब्राह्मणों की चोटी है ना। चोटी नई या माथा नया।'' सा.बाबा 12.6.72 रिवा.

''विधाता द्वारा आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं विधान बनाने वाली बनी हो।... क्योंकि इस समय तुम ब्राह्मणों का जो श्रेष्ठ कर्म है वही विश्व के लिये सारे कल्प के अन्दर विधान बन जाता है। ऐसे अपने को विधान के रचयिता समझ कर हर कर्म करना है।''

अ.बापदादा 24.12.72

सिद्धि-स्वरूप स्थिति का राज़

सिद्धि-स्वरूप स्थिति क्या है और सिद्धि-स्वरूप कैसे बनें, यह सब राज़ भी बाबा ने अभी बताये हैं, जिससे हम सिद्धि स्वरूप स्थिति को प्राप्त कर सकें।

''कोई भी सिद्धि को प्राप्त करने के लिए सिद्धि की विधि में मुख्य दो बातें करते हैं - एक तो एकान्त और दूसरी एकाग्रता।... आपके संकल्प रूपी बीज के कारण ही प्रत्यक्ष सिद्धि नहीं होती है क्योंकि संकल्प में अनेक प्रकार के साधारण संकल्प होते हैं।''

अ.बापदादा 1.10.75

''सिद्धि स्वरूप अर्थात प्रत्यक्ष फल पाने के लिए संकल्प रूपी बीज को दृढ़ निश्चयरूपी जल से कि ये तो हुआ ही पड़ा है, होना ही है - इस जल से पॉवरफुल बनाओ।... एकाग्रता कम होने के कारण दृढ़ निश्चय की कमी होती है और एकान्तवासी कम होने के कारण ही साधारण संकल्प बीज को कमजोर बना देता है।'' अ.बापदादा 1.10.75

ब्राह्मण जीवन की सिद्धियों का राज़

''तुम्हारी कितनी विशाल बुद्धि और खुशी रहनी चाहिए। ऊपर से लेकर सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। ब्राह्मण ही ज्ञान उठाते हैं। यह ज्ञान न शूद्रों में है और न देवताओं में है।'' सा.बाबा 13.6.05 रिवा.

सारे कल्प में संगमयुग विशेष युग है। संगमयुग पर हम जो भी कार्य करते हैं, उसका फल कई गुणा अधिक मिलता है क्योंकि डायरेक्ट परमात्मा की श्रीमत पर परमात्मा के साथ कर्म करते हैं। संगमयुग सारे कल्प के लिए कमाई का समय है। सारा कल्प उतरती कला का समय है, संगमयुग का समय ही चढ़ती कला का समय है। अभी की कमाई ही सारे कल्प चलती है। संगमयुग पर ही आत्मा ज्ञान, गुण, शक्तियों के गहनों से सजती है।

ब्राह्मण जीवन के महत्व को समझने और उसका सुख अनुभव करने के लिए ब्राह्मण जीवन की प्राप्तियों का जानना और उनका अनुभव होना अति आवश्यक है।

परमात्म-प्राप्तियाँ

परमात्मा से सत्य ज्ञान की प्राप्ति

ब्राह्मण परिवार के संग की प्राप्ति

पुरुषार्थ की विधि की प्राप्ति

अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति

परमात्मा की गोद की प्राप्ति

परमात्म-सहयोग की प्राप्ति

अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के जीवन में

परमात्मा ज्ञान का सागर है, उससे प्राप्त ज्ञान ही सत्य ज्ञान है और वही आत्मा का चढ़ती कला का एकमात्र आधार है। सारे कल्प में ये ब्राह्मण जीवन चढ़ती कला का जीवन है।

''अभी तुम संगमयुग पर खड़े हो। संगम पर ही तुम दोनों तरफ देख सकते हो।... उठते-बैठते सारा कल्प-वृक्ष बुद्धि में याद रहे, यह है पढ़ाई।'' सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

''जितना अटूट स्नेह होगा, उतना ही अटूट सहयोग मिलेगा। सहयोग नहीं मिलता, उसका कारण स्नेह में कमी है।... संकल्प और समय दोनों ही संगमयुग के विशेष खजाने हैं, जिनसे बहुत कमाई कर सकते हो।... अगर समय प्रमाण युक्ति न होती है तो समझना चाहिए योगबल नहीं है।'' अ.बापदादा 26.1.70

''बाप को तो गम और खुशी की बात ही नहीं। यह ड्रामा बना हुआ है। तुमको भी कोई गम नहीं होना चाहिए। बाप मिला और क्या चाहिए।... सतयुग में तो ज्ञान की बात ही नहीं। यहाँ तुमको बेहद का बाप मिला है तो तुमको स्वर्ग से भी जास्ती खुशी होनी चाहिए।'' सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

''ज्ञान तुमको अभी संगम पर ही मिलता है। महिमा सारी इस संगमयुग की है, जब कि बाप बैठ तुमको ज्ञान समझाते हैं।... इस समय तुम बच्चे बहुत सौभाग्यशाली हो क्योंकि तुम यहाँ ईश्वरीय सन्तान हो।... अभी तुम ईश्वरीय बुद्धि वाले हो।''

सा.बाबा 29.4.05 रिवा.

''इस समय की विशेषताओं को निकालो तो अनेकानेक विशेषतायें दिखाई देंगी।... समय की श्रेष्ठता क्या है, जो और कोई समय की नहीं हो सकती? इस संगमयुग की विशेषता यह है कि संगमयुग का हर सेकण्ड मधुर मेला है।... यह बाप से मधुर मेले की विशेषता और कोई भी युग में नहीं है।'' अ.बापदादा 11.7.72

''सदा यह स्मृति में रखना कि यह पुरुषोत्तम श्रेष्ठ संगमयुग का समय कम होता जाता है। इस थोड़े से संगम के समय को वरदाता द्वारा वरदान मिला हुआ है कि कोई भी आत्मा अपने तीव्र पुरुषार्थ से जितना वरदान लेना चाहे ले सकते हैं।''

अ.बापदादा 1/30.11.71

''अगर अपनी ही मुक्ति-जीवनमुक्ति को प्राप्त करने की आश अभी तक पूर्ण न करेंगे तो दूसरों की कैसे करेंगे! मुक्ति-जीवन मुक्ति का वास्तविक अनुभव क्या होता है, वह क्या मुक्तिधाम वा जीवनमुक्तिधाम में अनुभव करेंगे? मुक्ति में तो अनुभव करने से परे होंगे और जीवनमुक्ति में जीवनबन्ध क्या होता है, वह अविद्या होने के कारण हम जीवनमुक्ति में हैं, वह भी क्या अनुभव करेंगे! बाप द्वारा जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त होता है, उसका अनुभव तो अभी ही कर सकते हैं।''

अ.बापदादा 24.10.71

''आज डबल ताजधारी, तिलकधारी, तख्तनशीन, राजऋषि दरबार देख रहे हैं। भविष्य की दरबार तो इस दरबार के आगे फीकी लगती है।... अभी अपना संगमयुगी ताज, तिलक और तख्तनशीन मर्यादा पुरुषोत्तम सम्पन्न स्वरूप देखो और साथ-साथ अपना भविष्य स्वरूप भी देखो तो दोनों में कौनसा रूप स्पष्ट, आकर्षक, अलौकिक, दिव्य वा रुहानी देखने में आयेगा?''

अ.बापदादा 11.9.71

''डबल प्राप्ति कौनसी है? अतीन्द्रिय सुख प्राप्ति, उसमें शान्ति और खुशी समाई हुई है। यह हुआ संगमयुग का वर्सा। अभी जो प्राप्ति है, वह फिर सारे कल्प में कब भी प्राप्त नहीं हो सकता। तो डबल प्राप्ति है - बाप और वर्सा। बाप अभी प्राप्त है और बाप द्वारा वर्सा भी अभी मिलता है, फिर कब नहीं मिलेगा।'' अ.बापदादा 20.8.71

''यह संगमयुग का सुहावना समय जितना ज्यादा हो, उतना अच्छा है क्योंकि समझते हो सारे कल्प में यह बाप और बच्चों का मिलन फिर नहीं होगा।... सदैव यही लक्ष्य रखो कि एवर-रेडी रहें। बाकी यह अतीन्द्रिय सुख का वर्सा निरन्तर अनुभव करने के लिए रहे हुए हैं न कि अपनी कमजोरियों के लिए।'' अ.बापदादा 28.7.71

''अगर अभी भी माया का वार होता रहेगा तो फिर अपना अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कब करेंगे? वह तो अभी करना है ना। राज्य भाग्य का तो भविष्य में अनुभव करेंगे। लेकिन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव तो अभी करना है ना।'' अ.बापदादा 30.5.71

''ताज, तिलक और तख्त यह तीनों ही संगमयुग की बड़ी से बड़ी प्राप्ति के आगे भविष्य राज्य कुछ भी नहीं। जिसने संगमयुग का ताज तख्त न लिया उसने कुछ भी नहीं लिया।'' अ.बापदादा 24.5.71

''जो गायन है प्रकृति दासी बनती है, वह क्या सतयुग में होनी है? सतयुग में तो यह मालूम ही नहीं पड़ेगा कि प्रकृति के ऊपर विजय प्राप्त करने से यह प्राप्ति हुई है।... प्रकृति पर विजय का फल वा प्राप्ति इस श्रेष्ठ जन्म में ही देखेंगे।... अधिकारी बनकर प्रकृति के कर्तव्य को देखेंगे।'' अ.बापदादा 18.4.71

''जब चित्रों के आगे सिर झुक जाता है तो क्या चैतन्य चरित्रवान सर्व गुणों में बाप समान चेतन्य मूर्ति के सामने सिर नहीं झुकायेंगे या समझते हो कि यह रिजल्ट भविष्य की है।... यह ईश्वरीय रुहाब धारण कर किसके भी सामने जाओ तो देखो रिजल्ट क्या निकलती है।'' अ.बापदादा 18.4.71

''महानता कम् अर्थात् ज्ञान की महीनता का अनुभवी कम... महान आत्मा का कर्तव्य क्या होता है, यह स्मृति में रखो। महान आत्मा उसको कहते हैं, जो महान कर्तव्य करके दिखाये।'' अ.बापदादा 18.4.71

सारे कल्प में ब्राह्मण जन्म ही सबसे ऊंच और श्रेष्ठ है, इसलिए ब्राह्मणों को चोटी कहा जाता है। इस जीवन की क्या-क्या महानता है, वह सब राज़ भी बाबा ने बताया है।

''यह एक ही ब्राह्मण जन्म है जो परमपिता परमात्मा द्वारा डायरेक्ट होता है। देवता जन्म भी श्रेष्ठ आत्माओं के द्वारा ही होता है... जो बाप के गुण हैं, वे ही ब्राह्मण आत्माओं के गुण होने चाहिए।... जैसे इस ब्राह्मण जीवन में त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री, ज्ञान स्वरूप बनते हो वैसे और किसी जन्म में बनेंगे क्या?'' अ.बापदादा 13.6.73

''इस समय हो परमात्म-प्रिय ब्राह्मण आत्मायें, सतयुग-त्रेता में होंगे राज्य अधिकारी परम श्रेष्ठ दैवी आत्मायें और द्वापर से अब कलियुग तक बनते हो पूज्य आत्मायें। तीनों में श्रेष्ठ अभी हो, इस समय हो परमात्म-प्रिय ब्राह्मण सो फरिश्ता आत्मायें। इस समय की श्रेष्ठता के आधार पर ही सारा कल्प श्रेष्ठ रहते हो।'' अ.बापदादा 4.03.86

''सर्विस की जिम्मेवारी का ताज है... संगम की दरबार सतयुगी दरबार से भी ऊंची है... संगमयुग के श्रृंगार सारे सतयुगी श्रृंगार से भी श्रेष्ठ हैं। सतयुगी ताज इस ताज के आगे कुछ नहीं है। संगमयुग का ताज पड़ा हुआ है?'' अ.बापदादा 14.5.70

''बाप बह्मा तन में प्रवेश करते हैं, इसलिए इनको भागीरथ कहा जाता है... तुम जानते हो अभी हम ईश्वरीय सन्तान हैं, फिर दैवी सन्तान बनेंगे तो डिग्री कम हो जायेगी। इन लक्ष्मी-नारायण की भी डिग्री कम हैं क्योंकि इनमें ज्ञान नहीं है। ज्ञान ब्राह्मणों में ही है।'' सा.बाबा 11.6.05 रिवा.

''संगमयुग की विशेषता सन्तुष्टता है और सन्तुष्टता की निशानी प्रसन्नता है। यह है ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति... ब्राह्मण जीवन का है ही सन्तुष्टता, प्रसन्नता... ब्राह्मण जीवन का वर्सा एवं प्रॉपर्टी सन्तुष्टता है और ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी प्रसन्नता है।'' अ.बापदादा 5.10.87

''यह रुहानी ड्रिल सदैव बुद्धि द्वारा करते रहो।... जब ऐसे स्मृति-स्वरूप हो जायेंगे तो जो सोचेंगे, जो बोलेंगे, वही प्रैक्टिकल में देखेंगे। इसको कहते हैं - 'सिद्धि-स्वरूप'।'' अ.बापदादा 16.10.75

''अभी सीजन है सिद्धि-स्वरूप बनने की। हर बोल और संकल्प सिद्ध हों, वह तब होंगे जब उनका हर बोल और हर संकल्प ड्रामानुसार सत् और समर्थ हो।'' अ.बापदादा 16.10.75

Q. अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर आत्मा को क्या-क्या प्राप्तियां हैं?

A. विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान, सृष्टि-चक्र के वर्तमान, भूत और भविष्य को जानने की शक्ति। सन्तुष्टता, संगमयुग की सबसे बड़ी प्राप्ति है।

Q. क्या अभी जो पुरुषार्थ करते हैं, वह भविष्य के लिए ही है?

A. अभी की प्राप्तियां भविष्य की प्राप्तियों से कई गुणा श्रेष्ठ और सुखदायी हैं।

व्यक्त में अव्यक्त मिलन का राज़ / अव्यक्त होकर अव्यक्त मिलन के सुख का राज़

अव्यक्त मिलन का अलौकिक सुख इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर आत्मा को अनुभव होता है, जब परमात्मा व्यक्त में आकर अव्यक्त मिलन का ज्ञान देते और उस सुख का अनुभव कराते हैं।

परमात्मा जो ब्रह्मा तन में अवतरित हुए, वे ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त हो गये हैं और सूक्ष्म वतन में अव्यक्त रूप में स्थित हैं तो उनसे मिलन मनाने के लिए भी अव्यक्त अर्थात फरिश्ता बनकर ही उनसे मिलन मना सकते हैं। अतीन्द्रिय सुख का अनुभव अव्यक्त बनकर अव्यक्त मिलन के लिए प्रेरित करता है और अव्यक्त मिलन में अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है। ये अव्यक्त मिलन और अतीन्द्रिय सुख एक-दो के आधार हैं और एक-दो के पीछे चलते हैं क्योंकि दुनिया कर हर खेल चक्रवत है।

''आज मैं आप सभी बच्चों से अव्यक्त रूप में मिलने आया हूँ। जो मेरे बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित होंगे वे ही इसको समझ सकेंगे।... अगर व्यक्त में देखेंगे तो बाप को नहीं देख सकेंगे।... अभी भी ऐसा नहीं समझना कि बाप है दादा नहीं है या दादा है तो बाप नहीं है। हम दोनों एक-दो से एक पल भी अलग नहीं हो सकते। ऐसे ही आप अपने को त्रिमूर्ति (बाप, दादा और मैं) ही समझो।'' अ.बापदादा 23.1.69

''व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन, यह सभी तीव्रता से परिवर्तन होने हैं। इस कारण अव्यक्त मिलन का विशेष अनुभव विशेष रूप से कराया है और आगे भी अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन के विचित्र अनुभव बहुत करेंगे।'' अ.बापदादा 23.1.73

''अव्यक्ति मिलन का मूल्य है - व्यक्त भाव को छोड़ना... उनके हर कर्म में एक तो अलौकिकता और हर कर्मेन्द्रिय से अतीन्द्रिय सुख की महसूसता आयेगी।'' अ.बापदादा 17.5.69

''जैसे बाप अव्यक्त है वैसे अव्यक्त बनकर ही अनुभव कर सकते हो। यह अलौकिक अनुभव करने के लिए सदा व्यक्त भाव से, व्यक्त देश की स्मृति से उपराम अर्थात् साक्षी बनने से ही हर समय साथी का अनुभव कर पायेंगे।'' अ.बापदादा 29.4.71

''यह अवस्था ऐसी है जैसे बीज में सारा वृक्ष समाया हुआ होता है, वैसे ही इस अव्यक्त स्थिति में जो भी संगमयुग के विशेष गुणों की महिमा करते हो वह सर्व विशेष गुण उस समय अनुभव में आते हैं।'' अ.बापदादा 9.04.71

''बापदादा के पास सारे दिन में पाँच प्रकार की क्यू लगती है एक क्यू होती हैं भिन्न-भिन्न प्रकार की अर्जी ले आने वालों की। कभी स्वयं के प्रति हमें शक्ति दो, सहयोग दो... दूसरी क्यू होती है कम्पलेन्ट करने वालों की, उन्हों की भाषा ही ऐसी होती है - यह क्यों, यह कैसे, कब और क्यों होगा?... तीसरी क्यू बापदादा को ज्योतिषी समझकर क्यू लगाते हैं। क्या हमारी बीमारी मिटेगी, क्या सर्विस में सफलता होगी?... चौथी क्यू होती है उल्हना देने वालों की आप ऐसे टाइम पर क्यों आये जब हम बुढ़ी बन गई... पाँचवी क्यू भी होती है वह अब कम होती जा रही है वह है रॉयल रूप से मांगने की।'' अ.बापदादा 8.7.74

मुक्ति-जीवनमुक्ति और संगमयुगी मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का राज़

मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा को मुक्ति, जीवन मुक्ति, जीवन बन्ध और सारे चक्र का ज्ञान होता है। संगमयुग का अनुभव ही यथार्थ अनुभव है क्योंकि परमधाम में मुक्ति का कोई अनुभव नहीं होगा क्योंकि वहाँ देह ही नहीं होती तो अनुभव कहाँ से और सतयुग में जीवनबन्ध का ज्ञान हीं नहीं तो जीवनमुक्ति का अनुभव कैसा क्योंकि किसी चीज का अनुभव उसके विपरीत चीज के अनुभव के होते हुए ही होता है।

''सन्यासी आदि आते... बताना चाहिए तुम राजाई को मानते ही नहीं हो अगर मुक्तिधाम, निर्वाणधाम में जाना चाहते हो तो अपने को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करो। अपने को परमात्मा नहीं, आत्मा समझ बाप को याद करोगे तो तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे और तुम मुक्तिधाम चले जायेंगे।'' सा.बाबा 04.09.1969 रिवा.

परमात्मा और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़

परमात्मा सदा मुक्त है और सर्वात्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है। सर्व आत्मायें उनके बच्चे हैं, इसलिए मुक्ति-जीवनमुक्ति सर्व आत्माओं का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। देश-काल-परिस्थिति के अनुसार ये अधिकार परमात्मा सर्व आत्माओं को देता ही है और सर्व आत्मायें उसे अनुभव करती हैं। इसलिए ही आत्मायें परमात्मा को प्यार से याद करती हैं। भिन्न-भिन्न भाषाओं में मुक्ति-जीवनमुक्ति को भिन्न-भिन्न शब्दों से याद करते हैं, उसके लिए पुरुषार्थ करती हैं। परमात्मा को भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता, लिबरेटर-गाइड आदि के रूप में याद करते हैं।

''बाबा कल्प-कल्प आकर हमको यह नॉलेज देते हैं। बरोबर भारत स्वर्ग था, वहाँ कितने थोड़े मनुष्य होंगे... वहाँ होता ही है एक धर्म, बाकी सब आत्मायें चली जाती हैं परमधाम... बाप भारत में ही आकर सबको ज्ञान देते हैं... भारत ही सच्चा तीर्थ है, जहाँ बाप आकर सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं।'' सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

''वे उपद्रवों को मिटाने के लिए यज्ञ रचते हैं, समझते हैं कि यह लड़ाई आदि न लगे। अरे लड़ाई नहीं लगेगी तो सतयुग कैसे आयेगा... जरूर पुरानी दुनिया का विनाश कराना होगा। सबको मुक्तिधाम ले जाता हूँ... तुमको मुक्ति में जाकर फिर जीवन मुक्ति में आना है।'' सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

''मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा बाप ही आकर देते हैं परन्तु किसको डायरेक्ट और किसको इन्डायरेक्ट... बाप कहते हैं मैं बच्चों के ही सम्मुख होता हूँ। दिन प्रतिदिन देखेंगे बाबा मधुवन के बाहर कहाँ जायेंगे ही नहीं। इस पुरानी दुनिया में रखा ही क्या है। शिवबाबा कहते हैं हमको स्वर्ग में जाने अथवा स्वर्ग को देखने की भी खुशी नहीं होती, बाकी इस दुनिया में कहाँ जायेंगे।''

सा.बाबा 29.11.72 रिवा.

आत्मा और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है और हर आत्मा ने मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव किया है तथा हर कल्प करती ही है, इसीलिए ही जीवनबन्ध या दुख के समय सर्व आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति की चाहना करती हैं। वर्तमान जीवनबन्ध की दुनिया में कितनी भी बड़ी प्राप्ति हो फिर भी आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति की इच्छा रखती ही है क्योंकि वही शान्ति और सुख का चरमोत्कर्ष है। साधन-सम्पत्ति की प्राप्ति मुक्ति-जीवनमुक्ति का मापदण्ड नहीं है परन्तु ये आत्मा की आन्तरिक प्यास है, जो आत्मा यथार्थ ज्ञान की धारणा और स्वरूप में स्थित होने से ही कर सकती है, जो ज्ञान परमात्मा ही देते हैं। कल्प-कल्प परमात्मा आकर हर आत्मा को उसके पार्ट और पार्ट के समय अनुसार मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कराता ही है।

''तुम संगमयुग के प्राप्तियों के वरदानी समय के अधिकारी हो... प्राप्ति स्वरूप के भाग्य को सहज अनुभव करो... मेहनत में लगे रहेंगे तो प्राप्ति-स्वरूप का अनुभव कब करेंगे ?'' अ.बापदादा 9.10.87

''ऐसे नहीं कि हम पार्ट से छूट जायें, आयें ही नहीं। पार्ट से छूटना हो नहीं सकता। ड्रामा अनुसार आयेंगे जरूर... पिछाड़ी वालों को मुक्तिधाम में जास्ती रहने के कारण मुक्तिधाम ही जास्ती याद पड़ेगा। तुमको जीवनमुक्तिधाम याद पड़ता है... इसमें भी कल्याण है। निर्वाणधाम में रहने चाहते हैं, सुखधाम में नहीं आने चाहते तो इससे समझ जायेंगे कि इनका पार्ट नहीं दिखता है।''

सा.बाबा 20.9.73 रिवा.

संगमयुग और अमृतवेला का राज़

जैसे दिन-रात के हिसाब से प्रात:काल रात-दिन का सन्धिकाल अमृतवेला माना जाता है, वैसे काल-चक्र के हिसाब से ये संगमयुग कल्प की अमृत-वेला है। अमृत-वेला का समय सबसे श्रेष्ठ और शुभ माना जाता है, जिस समय विशेष रूप से भक्त लोग भक्ति, साधना, गंगा स्नान आदि करते हैं, उसका विशेष फल होता है। कल्प के संगमयुग अर्थात् अमृतवेला पर परमात्मा आकर आत्माओं को ज्ञान देकर, उनकी विशेष पालना करते हैं। परमात्मा ने भी रात-दिन के सन्धिकाल को विशेष महत्व दिया है और कहा है कि यह समय विशेष ब्राह्मण बच्चों के लिए है, इस समय बाबा विशेष पालना करते हैं। काल-चक्र और पृथ्वी की गति को देखें तो हर क्षण अमृत-वेला का होता है क्योंकि किसी न किसी देश में सूर्योदय का समय होता ही है,

इसलिए परमात्मा हर क्षण आत्माओं की ज्ञान-गुणों और शक्तियों से पालना करते ही हैं परन्तु वह समय उस देश के लिए विशेष महत्वपूर्ण है, सबके लिए नहीं। हर स्थान और देश का अमृतवेला का समय उस स्थान के व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वहाँ पर परमात्म-पालना का वह सबसे अच्छा समय है।

जैसे कल्प की अमृतवेला की विशेष विशेषतायें हैं, विशेष प्राप्तियां हैं, वैसे ही इस रात-दिन के संधिकाल की भी विशेष विशेषतायें हैं, जिससे साधना में विशेष सहायता मिलती है। जिस व्यक्ति को उन विशेषताओं का जितना ज्ञान होगा, निश्चय होगा, वह उतना ही उनका लाभ उठा सकेगा।

''अमृतवेले पॉवर हाउस से फुल पॉवर लेने का जो नियम है, उसको बार-बार चेक करो।... उठकर बैठ गये, यह तो नियम पालन किया लेकिन कनेक्शन ठीक है अर्थात् प्राप्तियों का अनुभव होता है?... अमृतवेले का कनेक्शन अर्थात् सर्व पॉवर्स का और सर्व प्राप्तियों का अनुभव होना।... अगर आदि काल ठीक न होगा तो मध्य और अन्त भी ठीक न होगा।''

अ.बापदादा 8.07.73

''अखुट खजाने के बालक सो मालिक हो और ऐसे फिर दूसरों से शक्ति का उधार लेवे तो उनको क्या कहा जाये... बजट बनाना अर्थात् अपनी बुद्धि का, वाणी का और फिर कर्म का, सभी का अपना हर समय का प्रोग्राम फिक्स करो... शक्तियों को जमा करने की सहज युक्ति यही है कि रोज अमृतवेले अपना मन्सा, वाचा, कर्मणा का प्लेन बनाओ।'' अ.बापदादा 8.07.73

''सहज युक्ति कौनसी है, जो रिवाइज कोर्स में भी बहुत रिवाइज हो रही है? वह है अमृतवेले अपने आपसे और बाप से रूहरुहान करना वा अमृतवेले को महत्व देना... अमृतवेले के समय अपनी आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से सारा दिन कर्म भी ऐसे ही होंगे। कर्म और संकल्प भी सारा दिन श्रेष्ठ होगा।... अमृतवेला सारे दिन के समय की फाउण्डेशन वेला है।''

अ.बापदादा 24.6.72

''अमृतवेला को ब्रह्म-मुहूर्त कहते हैं। ब्रह्मा-मुहूर्त शब्द राइट है क्योंकि ब्रह्मा समान दिन का आरम्भ करते हो। ... उस समय का वायुमण्डल ऐसा होता है जो आत्मा सहज ही ब्रह्म-निवासी बनने का अनुभव कर सकती है।'' अ.बापदादा 24.6.72

बाबा के उपर्युक्त महावाक्यों से हम अमृतवेले के महत्व समझ सकते हैं और समझकर लाभ उठाना ही हमारा पावन कर्तव्य है।

सांयकाल के सन्धिकाल का राज

गायन है नुमाशाम के समय देवतायें चक्र लगाते हैं। जैसे अमृतवेले का समय का विशेष महत्व है, वैसे सांयकाल का सन्धिकाल भी विशेष महत्वपूर्ण है। उस समय भी विशेष भक्ति भावना, आध्यात्मिक पुरुषार्थ आदि करते हैं। बाबा ने भी योग साधना के लिए इस समय विशेष महत्व बताया है और तपस्या कराई है। अनुभव भी यही कहता है कि इस समय बुद्धि को एकाग्र करने में वातावरण का विशेष सहयोग होता है।

''बच्चे जितना बाप को याद करते हैं उतना बाप-दादा भी रिटर्न में करते हैं।... जैसे बच्चे बाप का आह्वान करते हैं, वैसे विश्व की आत्मायें आप सब सर्वश्रेष्ठ आत्माओं का आह्वान कर रहीं हैं। ऐसे आलाप कानों में सुनाई देते हैं। विशेष इस 'नुमाशाम' के समय जब सूर्य के साथ लक्की सितारों को, अन्धकार मिटाने वाले ज्योति स्वरुप समझकर इस हद की लाइट को नमस्कार करते हैं... ऐसे नमस्कार-योग्य स्वयं को अनुभव करते हो?'' अ.बापदादा 22.1.76

भूतकाल और भविष्यकाल का वर्तमान से सम्बन्ध का राज़

वर्तमान भूतकाल का फल और भविष्य की आधार शिला है अर्थात् तीनों कालों का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है, उनका क्या और कैसा सम्बन्ध है, वह राज़ भी परमात्मा ने बताया है।

वर्तमान ही भविष्य का आधार है। हमारे वर्तमान के कर्म-संस्कार ही भविष्य जीवन के सम्बन्धों का निर्माण करते हैं। अभी हमारे जिन आत्माओं के साथ तन-मन-धन से जैसे हिसाब-किताब बनेंगे, उस अनुसार ही भविष्य में भी हमारे सम्बन्ध होंगे।

अभी के ही सम्बन्धों के लेनदेन का हिसाब भविष्य में चलता है। इस सत्य को विचार कर दूसरी आत्माओं के साथ सद्-व्यवहार करने से हम अपने भविष्य के लिए अच्छे सम्बन्धों का निर्माण कर सकते हैं। इस संगमयुग का महत्व और इस सत्यता का स्पष्ट ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है। भविष्य हमारे वर्तमान के कर्मों का ही फल होगा।

''इस समय सब दिलतख्तनशीन स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चा हो। इतना रुहानी नशा रहता है ना! क्योंकि इस समय के स्वराज्य से ही भविष्य विश्व का राज्य प्राप्त होता है। यह संगमयुग बहुत-बहुत-बहुत अमूल्य और श्रेष्ठ है।''

अ.बापदादा 31.12.2002

''अगर अब तक आत्मिक स्वरूप का अल्प काल का ही अनुभव है तो फिर क्या होगा। संगमयुग का वर्सा और भविष्य का वर्सा दोनों ही अल्प समय प्राप्त होगा। समझा। जो पूरा समय वर्सा प्राप्त करने का है वह नहीं कर सकेंगे। अल्प समय करेंगे।''

अ.बापदादा 11.3.71

''अभी टीचर्स को सिखलाती हो... जैसे भविष्य में ताज, तख्त धारण करके फिर छोड़कर चलते जायेंगे, तब दूसरे उस स्टेज पर आयेंगे। भविष्य की रूपरेखा यहाँ ही चलेगी ना।'' अ.बापदादा22.11.72

''यह सहज योग वहाँ भी सहज राज्य करायेगा। वहाँ भी कोई मुश्किल नहीं होगी। यहाँ के संस्कार ही वहाँ ले जायेगे।''

अ.बापदादा 4.07.71

''बापदादा संगम पर ही ताज व तख्तनशीन बना बना देते हैं। इस ताज और तख्त के आधार से भविष्य ताज तख्त मिलता है। अभी धारण न करेंगे तो भविष्य में कैसे धारण करेंगे।'' अ.बापदादा 24.5.71

''जब अभी यह सिर झुकायेंगे तब आप के जड़ चित्रों के आगे स्थूल सिर झुकायेंगे। जो जितनो का अभी सिर झुकायेंगे, उतने ही आप के जड़ चित्रों के आगे सिर झुकायेंगे।'' अ.बापदादा 18.4.71

भूत, वर्तमान और भविष्य स्थिति के दर्पण का राज

वर्तमान हर आत्मा के भूत काल और भविष्य काल का दर्पण है। इस सत्य का ज्ञान अंशमात्र में तो पहले भी था परन्तु अभी बाबा ने हमको स्पष्ट दर्पण दिया है, जिसमें हम अपने भूतकाल के जीवन और भविष्य के जीवन को देख सकते हैं। हम अपने वर्तमान जीवन के कर्म, संस्कार-स्वभाव से समझ सकते हैं कि हमारा भूतकाल कैसा रहा है क्योंकि वर्तमान हमारे भूतकाल का ही फल है। जैसे किसी वृक्ष के फल से उसके बीज का पता चलता है। ऐसे ही किसी बीज को बोते समय उससे उत्पन्न होने वाले भविष्य के फलों को हम वर्तमान में तो नहीं देखते हैं परन्तु उस बीज के गुण-धर्मों से भविष्य में पैदा होने वाले फलों का साक्षात्कार कर सकते हैं। ऐसे ही हम अपने वर्तमान जीवन के कर्म, स्वभाव-संस्कार से अपने भविष्य जीवन का साक्षात्कार अवश्य कर सकते हैं। ये दर्पण अभी बाबा ने हम सभी को दिया है और अपने भविष्य को श्रेष्ठ बनाने का साधन भी बताया है।

''ऐसी ज्ञानी तू आत्मा और योगी तू आत्मा का भक्ति मार्ग में गायन और पूजन चलता रहता हैं। वर्तमान समय में भी वह आत्मायें पूजनीय और गायन-योग्य हैं। पूजनीय अर्थात् ऊंची आत्मायें और गायन-योग्य आत्माएंअर्थात् ऐसी आत्माओं के गुणों का गायन व वर्णन अब भी सब करते हैं। भविष्य के गायन और पूजन का आधार वर्तमान पर है।'' अ.बापदादा 10.2.75

''जो यहाँ संगम युग पर तख्त नशीन बनते हैं, वही वहाँ सतयुग में तख्त नशीन बनते हैं - संगमयुग में कौनसा तख्त मिलता है। बापदादा के दिल का तख्त।'' अ.बापदादा13.11.69

वर्तमान प्राप्तियों का भविष्य प्राप्तियों से सम्बन्ध का राज

अभी परमात्मा से हमको जो ज्ञान, गुण, शक्तियां मिलती हैं, उनके द्वारा जो आत्मा जितना इस जीवन की प्राप्तियों का सुख अनुभव करती है, उसके अनुसार ही भविष्य सतयुग में उसको स्थूल प्राप्तियों की प्राप्ति होती है और उनका सुख अनुभव

होता है। अभी का सुख ही भविष्य सुख का आधार है क्योंकि जो आत्मा अभी इस जीवन का सुख अनुभव करती है, उसके आधार पर ही वह विश्व-कल्याण की सेवा में सहयोग करता है और प्रकृति के तत्वों और चेतन आत्माओं को परिवर्तन करने में सहयोग करता है, उसके आधार पर ही भविष्य की प्राप्तियां मिलती हैं।

''नींद में भी प्रभु-मिलन मना सकते हो। योग-निन्द्रा अर्थात् अशरीरीपन की स्थिति की अनुभूति... सारे कल्प के मिलन का हिसाब इस छोटे से युग में पूरा करते हो... इसलिए कहते श्वांसों-श्वांस सिमरो।'' अ.बापदादा14.10.87

''बाप ब्रह्मा तन में प्रवेश करते हैं, इसलिए इनको भागीरथ कहा जाता है... तुम जानते हो अभी हम ईश्वरीय सन्तान हैं, फिर दैवी सन्तान बनेंगे तो डिग्री कम हो जायेगी। इन लक्ष्मी-नारायण की भी डिग्री कम हैं क्योंकि इनमें ज्ञान नहीं है। ज्ञान ब्राह्मणों में ही है।'' सा.बाबा 11.6.05 रिवा.

Q. जीवन जीने का अर्थ क्या है?

Q. जीवन सार्थक कैसे हो?

जीवन में सच्ची खुशी अर्थात् सच्ची सुख-शान्ति का राज

परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है और आत्मा उनकी सन्तान सच्चिदानन्द स्वरूप है। आत्मा जब अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो सदा सम्पन्नता की अनुभूति करती और सम्पन्न आत्मा परमानन्द की अनुभूति करती है। सम्पन्नता खुशी का एकमात्र आधार है। सम्पन्नता अर्थात् स्थूल और सूक्ष्म सम्पत्ति से परिपूर्ण इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति। गायन है —

गौधन, गजधन, बाजिधन और रत्न-धन खानि, जो आवे सन्तोष धन सब धन धूरि समान।

ज्ञान परम धन है, जिससे ही आत्मा सम्पूर्णता - सम्पन्नता - सन्तुष्टता का अनुभव करती है। सम्पूर्णता के लिए ज्ञान की सत्यता का अनुभव, उस पर निश्चय परमावश्यक है। ज्ञान सागर बाप ने हमको जो ज्ञान दिया है, वह कितना महान और जीवन के लिए कितना उपयोगी है, उस सत्य का अनुभव और उस पर निश्चय वाला ही उसके सच्चे सुख को अनुभव कर सकता है। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। जो यथार्थ ज्ञान को धारण कर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होता है, वही जीवन में सच्चे सुख को अनुभव करता है। अन्यथा स्थूल धन होते भी आत्मा दुख-अशान्ति का अनुभव करती है।

Q. जीवन में सर्वोत्तम सुख क्या है और उसका आधार क्या है?

देह से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरुप में स्थित होकर विश्व नाटक की यथार्थता को जानकर साक्षी होकर देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाने में ही सबसे श्रेष्ठ सुख है इसके लिये किसी साधन-सुविधा की आवश्यकता नहीं है इसके लिये यथार्थ ज्ञान की धारणा चाहिये, जिसके लिये संकल्प की दृढ़ता परमावश्यक है। जब यथार्थ ज्ञान की धारणा होती है तो आत्मा परमात्मा के प्यार में और आत्माओं की सेवा में सच्ची खुशी अनुभव करती है, जो सच्चे सुख का दर्पण है।

''मुख्य बात है पावन बनने की। जितना पावन बनेंगे, उतना नॉलेज धारण होगी और खुशी भी होगी। बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए - हम सबका उद्धार करें। बाप ही आकर सबकी सद्गति करते हैं। बाप को तो गम और खुशी की बात ही नहीं। यह ड्रामा बना हुआ है। तुमको भी कोई गम नहीं होना चाहिए। बाप मिला और क्या चाहिए... सतयुग में तो ज्ञान की बात ही नहीं। यहाँ तुमको बेहद का बाप मिला है तो तुमको स्वर्ग से भी जास्ती खुशी होनी चाहिए।'' सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

''तुम समझते हो - हम ही बाप से बादशाही लेते हैं और फिर गंवाते हैं... उठते-बैठते, चलते-फिरते अन्दर में यह ज्ञान टपकना चाहिए। जैसे बाबा के पास ज्ञान है ना। तुमको भी ऐसे धारण करना है। बाप आये ही हैं तुमको पढ़ाकर देवता बनाने। तो इतनी अथाह खुशी बच्चों को रहनी चाहिए।'' सा.बाबा 01.10.2004 रिवा.

''बच्चों को याद रखना है बाप हमको अथाह धन देते हैं। बच्चे गफलत करते हैं, तो भूल जाते हैं, जिससे जो पूरी खुशी होनी चाहिए वह कम हो जाती है... अभी हम संगमयुग पर बैठे हैं, यह याद तो जरूर बच्चों को होनी चाहिए।''

सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

''खजाने को मनन करने से मग्न अवस्था आटोमेटीकली श्रेष्ठ होती। खुशी भी मिल जाती है। खुराक भी मिलती है और खजाने की स्मृति भी आ जाती है। तीनों ही बातें स्मृति में हैं। इस जीवन को श्रेष्ठ जीवन कहा जाता है।'' अ.बापदादा 8.06.71

''बच्चे कहते हैं बाबा खुशी नहीं रहती। अरे बाबा तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं और तुम कहते हो खुशी नहीं रहती! तो जहाँ से खुशी मिले वहाँ जाकर धक्का खाओ। डायरेक्शन पर अमल नहीं करते हो तो खुशी फिर कहाँ से आयेगी। जब कोई दुख हो तो बाबा को लिखो हमारा मन भटक रहा है। फिर बाबा सवाल पूछेंगे क्या तुम बाप को भूल जाते हो। जरूर कहाँ बुद्धि फंसी हुई है। .. तुम्हारा तो इन्जाम है - मेरा तो एक शिव बाबा, दूसरा न कोई।'' सा.बाबा 07.07.1972 रिवा.

सुख - दुख का राज

सुख तीन प्रकार के होते हैं। एक है ईश्वरीय सुख, दूसरे हैं दैवी सुख और तीसरे हैं आसुरी सुख। ईश्वरीय सुख हैं चढ़ती कला के सुख और दैवी सुख एवं आसुरी सुख हैं उतरती कला के सुख। ईश्वरीय सुख पराभौतिक अर्थात् जिनका आधार भौतिक पदार्थ न होकर ईश्वरीय संग, ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियां हैं और दैवी एवं आसुरी सुख हैं भौतिक सुख जो देहधारी व्यक्तियों के संग और भौतिक पदार्थों से मिलते हैं अर्थात् जिनका आधार भौतिक पदार्थ होते हैं। ईश्वरीय सुख का परिणाम दैवी सुखों की प्राप्ति है, दैवी सुखों का परिणाम आसुरी सुख हैं क्योंकि दैवी सुखों का उपभोग करते-करते आत्मा गिरती जाती है और आत्मिक शक्ति कम होने से वे दैवी सुख भी कम होते जाते हैं और अन्त में आत्मा आसुरी सुखों में फंस कर दुख का अनुभव करती है। आसुरी सुख होते भी आत्मा ईश्वरीस सुखों के लिए परमात्मा को याद करती है।

Q. क्या ये विश्व-नाटक सुख-दुख का है? यदि है तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों?

नहीं, वास्तव में यह विश्व-नाटक तो परमानन्दमय है परन्तु आत्मायें अपने कर्मों के फलस्वरूप सुख-दुख का अनुभव करती हैं। आत्माओं के दुख का कारण अज्ञानता और अज्ञानता के वशीभूत विकर्म हैं, सुख का आधार ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियां और ज्ञान के प्रकाश में किये गये सुकर्म हैं। ज्ञान, ज्ञान सागर परमात्मा का आत्माओं को परम वरदान है। यदि विश्व-नाटक ही सुख-दुख का होता तो परमपिता परमात्मा को भी सुख-दुख होना चाहिए परन्तु वे सुख-दुख दोनों से न्यारे हैं क्योंकि उनको इसका पूर्ण ज्ञान है। आत्मा भी अगर यथार्थ ज्ञान की धारणा कर देह से न्यारी अपनी मूल स्थिति में स्थित हो तो वह भी सुख-दुख से न्यारी परमानन्दमय स्थिति का अनुभव करेगी। ऐसी स्थिति का ज्ञान और हमारी ऐसी स्थिति बनाने के लिए ही पर-मात्मा का अवतरण होता है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति सुख-शान्ति का आधार है। यह विश्व-नाटक सुखमय है लेकिन सुख और दुख का आत्माओं का पार्ट है, जो उनको बजाना ही पड़ता है।

Q. सुख और दुख की परिभाषा क्या है?

इच्छाओं-आशाओं और प्राप्तियों में सन्तुलन ही सुख है। इच्छाओं और आशाओं की अधिकता और प्राप्तियों की कमी एवं विकर्म ही आत्मा के दुख का कारण है। सतयुग-त्रेता में प्राप्तियां अधिक और इच्छायें-आशायें कम इसलिए सदा सुख होता है। द्वापर-कलियुग में विकारों के कारण इच्छायें-आशायें अधिक और प्राप्तियां कम होने के कारण दुख होता है। संगमयुग पर परमात्म प्राप्ति और उनसे ज्ञान धन की प्राप्ति से आत्मा अपने स्वरूप में स्थित होती है तो उसकी सर्व इच्छायें और आशायें पूर्ण होती हैं और आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है, जो सतयुग के सुख से भी श्रेष्ठ है और उसकी अनुभूति सतयुगी सुख का मूलाधार बनती है।

वर्तमान जगत में साधन-सम्पत्ति को ही सुख-शान्ति का मापदण्ड माना जाता है परन्तु ये एक वैरायटी ड्रामा है, इसमें सभी आत्माओं को एक समान साधन-सम्पत्ति मिलना कभी भी सम्भव नहीं है। सुख-शान्ति आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है और साधन-सम्पत्ति उस लक्ष्य को प्राप्त करने के अनेक साधनों में एक साधन मात्र है। परमात्मा सुख-शान्ति का दाता है, उसने सुख-

शान्ति का मार्ग सर्व आत्माओं को बताया है और अनुभव कराया है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा पूर्ण सुख-शान्ति का अनुभव करती है, उसमें किसी स्थूल साधन-सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं है।

ये विश्व-नाटक सुख-दुख का अनादि-अविनाशी खेल है। हर आत्मा को अपने पार्ट का आधा समय सुख और आधा समय दुख का पार्ट बजाना ही पड़ता है। इसलिए आत्मा को कर्मभोग या दुख में हताश नहीं होना चाहिए। सत्य ज्ञान को धारण कर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो अपने सुखमय पार्ट की स्मृति करके दुख के पार्ट को धैर्य से पूरा करना चाहिए।

ये सतत परिवर्तनशील विश्व-नाटक है, इसलिए इसमें सदा काल एक समान स्थिति और परिस्थिति नहीं रहती है। देश काल-परिस्थिति के अनुसार अपने में परिवर्तन करना ही मनुष्य की बुद्धिमानी है और सुख का आधार है।

''यह सुख और दुख का खेल है। सुख माना राम, दुख माना रावण। रावण पर जीत पाते हो तो फिर रामराज्य आता है, फिर आधा कल्प बाद रावण रामराज्य पर जीत पहन रावण राज्य होता है, फिर तुम रावण पर जीत पाते हो... पहले होता है सुख, पीछे दुख। जो भी नई आत्मायें ऊपर से आती हैं, उनको पहले दुख हो नहीं सकता।'' सा.बाबा 22.11.04 रिवा.

''नई आत्मा ऊपर से आती है, उनको दुख तो हो नहीं सकता। लॉ नहीं कहता। आत्मा सतो, रजो, तमो में आये तब दुख हो। लॉ भी है ना... अभी तो कोई सम्पूर्ण बने नहीं है। सम्पूर्ण बनेंगे तो फिर शरीर छोड़ देंगे। कर्मातीत अवस्था वाले को कोई दुख हो न सके।'' सा.बाबा 18.11.04 रिवा.

''राज्य-सत्ता, धर्म-सत्ता, भक्ति की सत्ता और प्रजा की सत्ता - यह चारो ही सत्तायें बिल्कुल शक्तिहीन, खोखली दिखाई दीं... मानव जीवन में जो सारे दिन की थकावट का, संकल्पों को समाने का साधन निद्रा का नियम बना हुआ है, आज वह अल्पकाल का चैन भी भाग्य में नहीं है।'' अ.बापदादा 19.10.75

''सुखदाता बाप के बच्चे बनकर भी अगर दुख की फीलिंग आती है तो बाप कहते हैं - बच्चे, यह तुम्हारा बड़ा कर्मभोग है। जब बाप मिला तो दुख की फीलिंग आनी नहीं चाहिए। जो पुराने कर्मभोग हैं, उसे योगबल से चुक्तू करो।''
सा.बाबा 12.8.05 रिवा.

दुख-अशान्ति की पहेली के हल का राज

दुख का कारण और निवारण का राज़ भी बाप ने बताया है। अज्ञानता के कारण देहाभिमान और देहाभिमान के वश विकारों की प्रवेशता और विकारों के वशीभूत विकर्म ही दुख का कारण हैं और ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वर का संग ही देहाभिमान और देहाभिमान जनित दुख से मुक्त करता है।

प्राय: संसार का हर प्राणी दुख-अशान्ति से मुक्त होने का पुरुषार्थ करता है परन्तु दुख-अशान्ति से मुक्त कोई होता नहीं है, और ही दुनिया में दुख-अशान्ति दिनोंदिन बढ़ती ही जाती है। इसलिए दुख-अशान्ति एक पहेली बन गई है, जिसका हल किसी भी मनुष्य के पास नहीं है। परमात्मा ने अभी इस पहेली का हल बताया है कि दुख-अशान्ति का मूल कारण आत्मा के अपने ही विकर्म हैं, विकर्मों का कारण पांच विकार हैं, विकारों का कारण देहाभिमान है और देहाभिमान का कारण अज्ञानता है। अज्ञानता का निराकरण सत्य ज्ञान से ही किया जा सकता है। सत्य ज्ञान अभी कल्पान्त में संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा दे रहा है। जो उस ज्ञान को धारण करेगा, उसके अनुसार जीवन बनायेगा, वह अवश्य ही दुख-अशान्ति से मुक्त हो जायेगा। 'अब नहीं तो कब नहीं।'

''यह भी समझते हो - दुख भी अथाह हैं तो सुख भी अथाह हैं। बाप अथाह सुख देते हैं। सुखी बनने की दवाई है - सिर्फ मुझे याद करो तो पावन सतोप्रधान बन जायेंगे, सब दुख दूर हो जायेंगे... बेहद के बाप को याद करने से अन्दर में खुशी होती है कि हम विश्व का मालिक बनेंगे।'' सा.बाबा 20.11.04 रिवा.

''कलियुग में सदा सुखी तो हो न सकें, दुख तो जरूर भोगना ही है। सीढ़ी उतरनी ही है। बाप नई दुनिया के आदि से पुरानी दुनिया के अन्त तक के सब राज़ समझाते हैं। बाप अविनाशी बैद्य है, वह समझाते हैं - सब दुखों की दवाई एक है - तुम अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो।'' सा.बाबा 20.11.04 रिवा.

Q. सुख का सर्वश्रेष्ठ पथ क्या है?

परमात्मा सुख का सागर है, दुखहर्ता-सुखकर्ता है, उसको देखना और उसने जो दिया है, उसको देखना और धारण करना। मनुष्य न कुछ दे सकता है और न ही कुछ ले सकता है, इसलिए मनुष्य का दिया और लिया न देखना है, न याद रखना है और न मनुष्य से कोई आशा रखना है। ड्रामा की वास्तविकता को समझकर सब भूल जाना और परमात्मा का दिया सदा याद रखना। परमात्मा सागर है, उसकी एक बूँद अर्थात् 'हम आत्मा हैं' भी जीवन में परम सुख को देने वाली है। सदा चेक करो - उसने हमको क्या दिया है और हमने क्या लिया है अर्थात् धारण किया है। मनुष्य स्वयं ही लेने वाला है, वह किसको क्या दे सकता है! मनुष्य जो कुछ भी देता-लेता है वह सब ड्रामा अनुसार हमारे हिसाब-किताब की सीमा तक ही देता और लेता है। इसलिए उसको संकल्प मात्र भी याद नहीं करना चाहिए।

परम सुख और परम दुख का राज

संगमयुग है परम-दुख और परम-सुख के संगम का समय। परम-दुख के समय ही परमात्मा आकर परम-सुख का मार्ग बताते हैं। संगम पर ही परमात्मा से परम सुख की प्राप्ति होती है, जो सतयुग के भौतिक सुख से अनन्त गुणा श्रेष्ठ है। अभी संगमयुग पर ही आत्माओं को परम दुख भी होता है। जो आत्मायें परमात्मा की बन जाती हैं, उनके बताये मार्ग पर चलती हैं, वे परम-सुख का अनुभव करती हैं और जो परमात्मा को जानकर भी उनके बताये मार्ग पर नहीं चलती, वे परम-दुख का अनुभव अवश्य करती हैं। संगमयुग दोनों के मेल का समय है। अभी दुख का समय बीत रहा है और परमात्मा से परम सुख मिल रहा है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित और परमात्मा के साथ से आत्मा परम सुख का अनुभव करती है।

''इन लक्ष्मी-नारायण जैसा हर्षितमुख होने के लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। इनमें ज्ञान तो है नहीं, तुमको तो ज्ञान भी है तो कितनी खुशी रहनी चाहिए... नॉलेज की भी खुशी होती है और बाप के मिलने की भी खुशी होती है।'' सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

''ऐसे भी नहीं सोचना कि अभी समय पड़ा है, पुरुषार्थ कर लेंगे। लेकिन समय के पहले समाप्ति करके और इस स्थिति का अनुभव प्राप्त करना है। अगर समय आने पर इस अव्यक्त स्थिति का अनुभव किया... समय समाप्त तो अव्यक्त स्थिति का अनुभव भी समाप्त हो जायेगा।'' अ.बापदादा 24.1.70

जीवन की परम प्राप्ति का राज

परमात्मा ने जो ज्ञान, गुण, शक्तियां हर आत्मा को देश-काल और पार्ट के अनुसार समान रूप से दी हैं। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इनका उपयोग करता है, वह वर्तमान में परमशान्ति, परमानन्द और परम सुख का अनुभव करता है और भविष्य के लिए अनन्त स्थूल सुखों का खाता संचित करता है। जो स्थूल साधनों और स्थूल प्राप्तियों के लिए चिन्तन करता है वह वर्तमान और भविष्य दोनों की प्राप्तियों से वंचित रह जाता है।

प्राय: कर्मभोग आत्मा को दुखी करता है परन्तु कर्मभोग से ऊब कर जीवन से विमुख होना कर्मभोग का समाधान नहीं है क्योंकि किये हुए कर्मों से कोई भी आत्मा बच नहीं सकती, वह इस जीवन में नहीं तो भविष्य जीवन में भोगना ही पड़ेगा, इसलिए इस जीवन में भोग कर पूरा करना ही बुद्धिमानी है। भविष्य भी वहीं से आरम्भ होगा, जहाँ से अभी हम छोड़ेंगे।

ये वर्तमान जीवन और समय ही सारे कल्प की कमाई का एकमात्र समय है, जिसका आधार ईश्वरीय ज्ञान है। इस ज्ञान के प्रकाश में अभीष्ट पुरुषार्थ करके आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम सुख, परमानन्द और परमशान्ति का अनुभव करना और श्रेष्ठ कर्म करके भविष्य के लिए खाता जमा करना ही जीवन की सफलता है, जिसके लिए परमात्मा ने हमको पूरा अवसर दिया है, उसका लाभ उठाना हर आत्मा का अपना कर्तव्य है। अब नहीं तो कब नहीं। परम सुख, परमानन्द, परम शान्ति के लिए स्थूल साधनों और स्थूल प्राप्तियों का कोई अस्तित्व नहीं है, जो हमारे परमादर्श ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन से स्पष्ट कर दिया है। परम शान्ति, परमानन्द और परम सुख के अनुभव में मूल बाधक काम-क्रोध आदि विकार हैं, जिनसे मुक्ति आत्मिक स्वरूप में

स्थित होकर ही पायी जा सकती है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा ही दूसरों को भी आत्मिक स्वरूप में देख सकती है और दूसरों को आत्मिक स्वरूप में देखना ही इन काम-क्रोधादि विकारों से मुक्ति का एकमात्र साधन है। इसके पुरुषार्थ में न कोई आत्मा साधक है और न ही बाधक है। ये हर आत्मा का अपना स्वतन्त्र पुरुषार्थ है।

जो दूसरों की प्राप्तियों को देखता है, वह सदैव दुखी रहता है और जो अपनी प्राप्तियों को देखकर उनका सुख लेता है और अभीष्ट पुरुषार्थ करता है, वह जीवन का परम सुख पाता है। परमात्मा सर्व आत्माओं का पिता है, उसने जो दिया है, वही आत्मा को परम सुख, परमानन्द, परम शान्ति को देने वाला है। उसमें न किसी आत्मा को अधिक और न किसी आत्मा को कम मिला है। देश, काल और पार्ट की आवश्यकता अनुसार हर आत्मा को पूरा-पूरा प्राप्त है। ईश्वरीय ज्ञान, गुण,शक्तियाँ ही ईश्वरीय प्राप्तियां हैं, जो वर्तमान में परम सुख, परमानन्द, परम शान्ति को देने वाली और भविष्य की प्राप्तियों का एकमात्र आधार हैं। इस सत्य को जानकर परम सुख, परमानन्द और परमशान्ति को अनुभव करो और कराओ, यही जीवन की सार्थकता है।

''पहले नम्बर के चात्रकों की स्थिति सदा यही रहती कि 'पाना था सो पा लिया'... वर्तमान समय प्रमाण स्थिति हर समय सर्वप्राप्ति के अनुभव की होनी चाहिए क्योंकि बाप ने सर्व शक्तियों का मास्टर बना दिया।'' अ.बापदादा 8.12.75

''तुमको कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है... जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी। तुम्हारे सिवाए कोई नहीं, जो यह नॉलेज समझ सके। गॉड फादर को ही वर्ल्ड आलमाइटी अथॉर्टी, नॉलेजफुल कहा जाता है... तुमको नॉलेज देने वाला बाप है... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।''

सा.बाबा 03.10.2001 रिवा.

सुख, परम सुख और पुरुषोत्तम संगमयुग के सुख का राज

सुख आत्मा की मूलभूत इच्छा है, जिसके लिए आत्मा सतत प्रयत्नशील है परन्तु यथार्थ सुख क्या है और आत्मा को कब और कैसे प्राप्त होता है। यह राज़ किसको पता नहीं है, जो परमात्मा बताता है। अतीन्द्रिय सुख सबसे श्रेष्ठ सुख है और विषय-सुख सबसे निकृष्ट सुख है। संगमयुग पर इन दोनों का ही सबसे बड़ा युद्ध होता है। परमात्मा सुखदाता है और आत्मा का परम मित्र है, इसलिए परमात्मा ने भी काम को महाशत्रु कहा है और उस पर जीत पाने की प्रेरणा दी है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा से प्राप्त परमसुख अर्थात् अतीन्द्रिय सुख का देव-दुर्लभ अनुभव प्राप्त होता है, जिससे ही आत्मा को कलियुग के सबसे निकृष्ट सुख विषय-सुख पर जीत पाने की शक्ति प्राप्त होती है। इस भावना से ही यहाँ पर संगुयुग के कुछ विशेष सुखों का वर्णन करते हैं, जिनका ज्ञान हमको संगमयुग के इन सुखों का अनुभव करने में सहयोग देगा और जिससे हम कलियुग के सुखों से उपराम होकर इस जीवन को सफल बना सकते हैं, जो आत्मिक शक्ति के पतन के कारण हैं।

अतिन्द्रिय सुख या आनन्द, जो संगमयुग का ही अनुभव है और किसी युग में सम्भव नहीं है।

सुखदाता परमात्मा के सानिध्य का सुख

ईश्वरीय ज्ञान के विभिन्न बिन्दुओं के ज्ञान और चिन्तन का सुख

ईश्वरीय सेवा का सुख क्योंकि ईश्वरीय सेवा से परमात्मा और आत्माओं की दुआयें प्राप्त होती हैं, जो भी आत्मा को सुख का अनुभव कराती हैं।

देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सुख

त्रिलोकी के ज्ञान से तीनों लोकों में सैर करने का सुख

त्रिकालदर्शी बन इस विश्व-नाटक को देखने का सुख

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान से साक्षी बनकर इस नाटक को देखने और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाने का सुख

इस सुख-दुख के खेल को खेल-भावना से देखने का सुख

युद्ध का सुख - योद्धा को युद्ध ही सुख देता है क्योंकि उसका लक्ष्य युद्ध और विजय ही होता है। ऐसे ही इस माया रावण के युद्ध में जो योद्धा विजय का लक्ष्य लेकर परमात्मा को साथ में रखकर युद्ध करता है, उसको इस युद्ध में भी सुख का अनुभव होता है।

पढ़ाई और परीक्षा का सुख - स्टूडेण्ट लाइफ इज दि बेस्ट - स्टूडेण्ट को पढ़ाई और परीक्षा में ही सुख भासता है।

विश्व परिवार का सुख

ईश्वरीय परिवार का सुख

निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि का सुख अर्थात् योगानन्द

प्रकृति का भी अपेक्षाकृत सुख- जैसी आत्मा की स्थिति होता वैसा ही प्रकृति भी सुख देती है। भले वह कोई भी युग हो।

ईश्वरीय और आत्मिक गुण और शक्तियों का सुख

डायरेक्ट ईश्वरीय सन्तान बनने का सुख

ईश्वरीयगोद का सुख-बच्चे को माँ की गोद का सुख-स्वर्णिम सिंहासन और किसी भी भौतिक सुख से महत्वपूर्ण होता है।

परमात्मा के दिलतखनशीन होने का सुख

साइन्स के भी सभी सुखों का अनुभव संगमयुग पर अवश्य होता है।

दान भी आत्मा को बहुत सुख देता है और ज्ञान दान से आत्मा को सुख अनुभव होता है।

ईश्वरीय वरदानों का सुख

इस प्रकार हम देखें तो संगमयुग के सुखों की लिस्ट बहुत लम्बी है और जो संगमयुग पर प्राप्त होता है, वह त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ और कब भी प्राप्त नहीं हो सकता। संगमयुग के सुखों का ऐसा महत्व जानकर उनका सुख अनुभव करना और कराना ही संगमयुगी जीवन की सफलता है।

''आपने सतयुगी सुखों की और कलियुगी दुखों की लिस्ट तो लगाई है लेकिन संगम के सुखों की लिस्ट बनायेंगे तो इससे भी दोगुणी हो जायेगी... हर वक्त सुखों की लिस्ट, रत्नों की लिस्ट बुद्धि में दौड़ाते रहो, सुखों रूपी रत्नों से खेलते रहो तो कब भी ड्रामा के खेल में हार न हो।'' अ.बापदादा 17.5.69

''भविष्य का ताज और तख्त इस ताज और तख्त के आगे कुछ भी नहीं है... विश्व के महाराजन बनने से भी अभी का ताज और तख्त श्रेष्ठ है। अगर संगमयुग के राजा नहीं बने तो भविष्य के भी नहीं बन सकते।'' अ.बापदादा 6.06.73

भौतिक सुख, इन्द्रिय सुख और अतीन्द्रिय सुख, ज्ञान का सुख, परमात्म मिलन के सुख का राज

परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है, उनकी स्मृति परमानन्दमय है। आत्मा परमात्मा की अविनाशी सन्तान है, इसलिए आत्मिक स्वरूप भी सच्चिदानन्दमय है। आत्मा सर्व ईश्वरीय गुणों, शक्तियों से परिपूर्ण है। जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो परमानन्द का अनुभव अवश्य करती है। यथार्थ ज्ञान और परमपिता परमात्मा की यथार्थ याद से आत्मा उस स्थिति का अनुभव करती है और सतत अभ्यास से उसको चिर स्थाई बना सकती है।

सतयुग में आत्मा पावन होती है परन्तु यथार्थ ज्ञान और परमात्मा का साथ न होने के कारण वहाँ अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं हो सकता है। सतयुग में आत्मा को देहाभिमान नहीं परन्तु देह-भान तो होता ही है, फिर भी आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है इसलिए आत्मा का देह अर्थात् इन्द्रियों पर शासन होता है, जिससे प्रकृति दासी होती है। वहाँ जनसंख्या कम होती है, भौतिक सुख-साधन अर्थात् इन्द्रिय सुख प्रचुर मात्रा में होते हैं, दुख का नाम-निशान नहीं होता है।

जब आत्मा देहाभिमान के वशीभूत हो जाती है तो दुख आरम्भ होता है और कलियुग के अन्त में आत्मा परम दुख का अनुभव करती है। द्वापर-कलियुग में आत्मायें सुख और दुख दोनों को ही अनुभव करती है परन्तु निरन्तर दुख की वृद्धि होती जाती है और अन्त में आत्मा परम दुख को अनुभव करती है।

पुरुषोत्तम संगमयुग है परम दुख और परम सुख का संगम। अतिन्द्रिय सुख आत्मा को संगमयुग पर ही मिलता है, जब आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है और परमात्मा से सत्य आत्मिक ज्ञान मिलता है। ज्ञान का भी अपना विशेष सुख है, जो ज्ञान के मनन-चिन्तन से आत्मा अनुभव करती है।

Q. अतिन्द्रीय सुख और इन्द्रिय सुखों की विषय-वस्तु, गुण-धर्म, प्रभाव में क्या अन्तर है? अतिन्द्रिय सुख का अनुभव होते और महत्व को जानते हुए भी ब्राह्मण जीवन में इन्द्रिय सुख इन्द्रियों से परे आत्मा को क्यों आकर्षित कर लेते हैं?

व्यक्त भाव को छोड़ना और अपने मूल आत्मिक स्वरूप में स्थित होना ही इस पुरुषार्थी जीवन की आधार-शिला है। नियम-संयम इस ब्राह्मण जीवन अर्थात् पुरुषार्थी जीवन का श्रृंगार हैं, उनकी कमी या उनका उलंघन ही आत्मा को अतीन्द्रिय सुख से वंचित कर देता है और अतीन्द्रिय सुख से वंचित आत्मा को इन्द्रीय सुख अवश्य ही आकर्षित करेंगे। अन्न और संग के नियम-संयम को पालन करने वाला कब माया से धोखा खा नहीं सकता। यदि कोई धोखा खाता है तो अवश्य ही उसके सही नियम-संयम की कमी है।

आत्मा की परमात्मा से मिलन की प्यास जन्म-जन्मान्तर की है परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने के कारण वह पूरी नहीं हुई। अभी परमात्मा द्वारा आत्मा और परमात्मा का यथार्थ ज्ञान मिला है, तब ही आत्मा उनसे मिलन मना सकती है परन्तु इन्द्रिय सुखों के वशीभूत आत्मा कब उस मिलन को नहीं मना सकती है क्योंकि उस मिलन के लिए इन्द्रीय सुखों से परे होना आवश्यक है।

''यहाँ बैठे हो तो भी तुम बच्चों को अन्दर में बहुत गद्‌गद होना चाहिए। इन आंखों से जो कुछ देखते हो, वह सब कुछ विनाश होने वाला है... अभी बाबा आया है घर ले जाने के लिए।'' सा.बाबा 6.12.04 रिवा.

''यह सब बातें सुन-सुन कर गदगद होना चाहिए। अगर छी-छी बनें तो वह खुशी आयेगी ही नहीं, भल कितना भी माथा मारे। वह फिर हमारे जाति भाई नहीं... यह गीता एपीसोड है, जिसमें पवित्रता मुख्य है।'' सा.बाबा 6.12.04 रिवा.

''ईश्वरीय सर्विस के प्रत्यक्ष फल का अनुभव होता है? भविष्य तो बनता ही है लेकिन भविष्य से भी ज्यादा अभी की प्राप्ति है। अभी जो ईश्वरीय अतीन्द्रिय सुख मिलता है, वह भविष्य में नहीं मिल सकता है... ऐसा खजाना अभी बाप द्वारा मिलता है।''

अ.बापदादा 23.1.70

Q. अतिन्द्रिय सुख और आनन्द में क्या अन्तर है तथा सुख और आनन्द में क्या अन्तर है?

अतिन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द संगमयुग की विशेष प्राप्ति है, जो संगमयुग पर ही प्राप्त होती है। अतिन्द्रिय सुख और आनन्द दोनों पर्यायवाची शब्द हैं। सुख में शान्ति-अशान्ति और उसके ज्ञान की बात नहीं होती परन्तु आनन्द सुख-शान्ति और ज्ञान के साथ ही अनुभव होता है क्योंकि आनन्द में सुख-दुख, शान्ति-अशान्ति दोनों का ज्ञान रहता है परन्तु वे उसे प्रभावित नहीं करती हैं।

''पवित्रता की प्रत्यक्ष निशानी है - हैप्पी अर्थात् खुशी। अगर खुशी नहीं है तो अवश्य कोई अपवित्रता है अर्थात् संकल्प वा कर्म यथार्थ नहीं हैं तब खुशी नहीं है... रुहानी आन्तरिक खुशी वा अतिन्द्रिय सुख सारे कल्प में प्राप्त नहीं हो सकता है, वह प्राप्त करने के लिए ब्राह्मण बने हो।'' अ.बापदादा 13.01.86

''जब तक अतीन्द्रिय सुख की, सर्व प्राप्तियों की भासना नहीं तब तक अल्पकाल की कोई न कोई वस्तु अपने तरफ जरुर आकर्षण करेगी... पढ़ाई का लक्ष्य ही है देह-अभिमान से न्यारे हो देही-अभिमानी बनना। देह-अभिमान से छूटने के लिए मुख्य युक्ति यह है - सदा अपने स्वमान में रहो।'' अ.बापदादा 21.1.72

''अभी तो आत्मिक स्वरूप का सिर्फ थोड़ा-सा अनुभव किया है। सिर्फ चख कर देखा है। जब उसमें खो जाओगे तब कहेंगे खाया भी और स्वरुप में भी लाया। अभी बहुत अनुभव करने की आवश्यकता है। जब इस अनुभव में चले जाओगे तो फिर यह छोटी-छोटी बातें स्वत: ही किनारा कर लेंगी।'' अ.बापदादा 25.1.74

''अनेकों को प्रश्न उठता है - जबकि ज्ञान गुह्य हो रहा है, समय समीप आ रहा है, सेवा के साधन भी बहुत प्राप्त हो रहे हैं, फिर भी पहला जैसा अनुभव क्यों नहीं होता? मैजारिटी का यह अनुभव देखा। इसका कारण क्या?... कोई हद की पोजीशन में आ

जाते... हमशरीक साथियों की ऑपोजीशन करने में लग जाते... स्थूल सैलवेशन लेने में लग जाते... कोई क्वेश्चन और करेक्शन में लग जाते... कोई दूसरे के दृष्टान्त से अपना सिद्धान्त बनाने लग जाते हैं। इन पांचों में से कोई न कोई उल्टा मार्ग अपना लेते हैं... आधार गलत होने के कारण उन्हें अपनी उन्नति का अनुभव नहीं होता... इन बातों में आने के कारण जो आदि का नशा और खुशी का अनुभव होता है, वह खत्म हो जाता है।'' अ.बापदादा 27.10.75

''आत्माओं से स्नेह समाप्त हो, साधनों से प्यार बढ़ता जा रहा है। इसलिए कई प्रकार की प्राप्ति के होते हुए भी स्नेह की अप्राप्ति के कारण सन्तुष्ट नहीं। और भी दिन प्रतिदिन यह असन्तुष्टता बढ़ेगी। महसूस करेंगे कि यह साधन मंजिल से दूर करने वाले, भटकाने वाले हैं... जैसे कल्प पहले का गायन है कि अन्धे की औलाद अन्धे, मृग तृष्णा के समान सर्व-प्राप्ति से वंचित ही रहे।''

अ.बापदादा 29.8.75

''समझ मिल जाती है तो फिर रात-दिन खुशी रहनी चाहिए। हम ईश्वर के सन्तान हैं। वहाँ विष्णु के दैवी सन्तान को इतनी खुशी नहीं होगी, जितनी खुशी अभी है। देवतायें ईश्वरीय सन्तान से ऊंचे नहीं हैं। तो ईश्वरीय सन्तान को कितनी खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 11.3.72 रिवा.

परमात्मा के दिलतख्त और दिल तख्तनशीन होने का राज

परमात्मा को दिलाराम भी कहा जाता है क्योंकि वह आत्माओं की दिल लेने वाला, आत्माओं की दिल को आराम देने वाला है। जो आत्मायें सच्ची दिल से परमात्मा की बनती हैं, परमात्मा के विश्व-कल्याण के कर्तव्य में दिल से सेवा करती हैं, वे आत्मायें परमात्मा के दिल-तख्त पर विराज़मान होती हैं अर्थात् परमात्मा भी उनको दिल से याद करता है। वर्तमान में परमात्मा के दिल-तख्त नशीन आत्मा ही भविष्य राज-तख्त नशीन बनती है। तीन प्रकार के तख्तों का विशेष गायन है - एक सतयुग की राजाई का तख्त, दूसरा हैशरीर में आत्मा का निवास स्थान भृकुटी का अकाल तख्त और तीसरा है परमात्मा का दिल-तख्त। परमात्मा का दिल-तख्त सबसे श्रेष्ठ और सुखदायी है, जो सतयुग के राजाई-तख्त से भी पदमगुणा श्रेष्ठ और सुखमय है।

''परमात्म दिलतख्त सारे कल्प में अब आप सिकीलधे, लाड़ले बच्चों को ही प्राप्त होता है। भृकुटी का तख्त तो सर्वात्माओं को है लेकिन परमात्म दिलतख्त ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए कोई को भी प्राप्त नहीं है। यह दिलतख्त ही विश्व का तख्त दिलाता है।'' अ.बापदादा 30.11.2002

''दिलाराम को पसन्द है सच्ची दिल वाले... दिमाग वाले नाम कमाते हैं परन्तु दिल वाले दुआयें कमाते हैं।''

अ.बापदादा 18.01.1986

''जितना-जितना जो अमूल्य रतन होगा, उतना-उतना वह बापदादा के दिल-तख्तनशीन बनेंगे... यह सारे जहान के तख्तों से श्रेष्ठ है... इस तख्त पर रहने से माया के सर्व बन्धनों से मुक्त रहेंगे।'' अ. बापदादा 13.11.69

''चाहे प्रवृत्ति में हो, चाहे सेन्टर पर हो लेकिन दिल से कहा - 'मेरा बाबा' तो बाबा ने अपना बनाया। यह दिल का सौदा है। मुख का स्थूल सौदा नहीं है। सरेण्डर माना श्रीमत के अण्डर रहने वाले।'' अ.बापदादा 20.3.87

''बाप के दिल-तख्तनशीन की यादगार निशानी कौनसी है? जहाँ बैठे हो वही यादगार है। दिलवाला है ना... दिल-तख्तनशीन कौन हो सकता है? जो दिलाराम को दिल देने वाला और बाप का दिल लेने वाला है। सिर्फ देना नहीं, लेकिन जिसको देना और लेना दोनों आता है, वह है दिल-तख्तनशीन।'' अ.बापदादा 6.6.73

''जो बाप के दिल का श्रेष्ठ संकल्प हो, उस संकल्प को पूरा करना अर्थात् दिल लेना... वास्तव में अगर देना आता है तो लेना ऑटोमेटिकली आ जाता है।'' अ.बापदादा 6.6.73

''सभी से श्रेष्ठ तख्त तो बापदादा के दिल तख्त नशीन बनना ही है। साथ-साथ इस तख्त पर बैठने के लिये भी अचल अडोल, एकरस स्थिति का तख्त चाहिए। अगर इस स्थिति के तख्त पर स्थित नहीं हो पाते तो बापदादा के दिल रुपी तख्त पर स्थित भी नहीं हो सकते हैं।'' अ.बापदादा 20.8.71

''अपने इस भृकुटी के तख्त पर अकालमूर्त बन स्थित होंगे तो एकरस स्थिति के तख्त पर और बापदादा के दिल तख्त पर विराजमान हो सकेंगे।''
अ.बापदादा 20.8.71

''तीन तख्त कौन-से हैं? एक है- बेगमपुर के बादशाह बनने का साक्षी स्थिति में स्थित होने वाला, साक्षीपन का तख्त। दूसरा है- पॉवरफुल मास्टर सर्वशक्तिमान बाप समान सबूत बनाने वालों का, बाप का दिल रूपी तख्त। तीसरा है- भविष्य विश्व महाराजन का तख्त।''
अ.बापदादा 11.7.74

अकाल तख्त का राज

सिक्खों के स्वर्ण मन्दिर के अकाल तख्त का बहुत गायन है, जिसके लिए गायन है कि जो उस तख्त पर बैठकर निर्णय करता है, वह सब सिक्खों को मान्य होता है परन्तु सच्चा-सच्चा अकाल तख्त यह भृकुटी है, जहाँ अकाल आत्मा, जिसको कब काल खाता नहीं है, वह विराजमान होती है। आत्मा अपने अकाल तख्त पर बैठकर अर्थात् देही-अभिमानी स्थिति में स्थित होकर जो निर्णय करती है, वह सत्य ही होता है, सदा सफल होता है। यह राज़ भी बाप ने अभी बताया है और आज्ञा भी दी है कि सदा अपने अकालतख्त पर विराजमान होकर ही कोई भी कार्य करो।

''महाकाल का भी मन्दिर है। सिक्ख लोगों का भी अकालतख्त है। वास्तव में अकालतख्त यह भृकुटी है, जहाँ अकाल आत्मा विराज़मान होती है।''
सा.बाबा 4.2.2005 रिवा.

''क्या आप बच्चे अपने को त्रिमूर्ति तख्तनशीन समझते हो? आज की सभा त्रिमूर्ति तख्तनशीन की है। अपने त्रिमूर्ति तख्त को जानते हो ना! एक है अकालमूर्त आत्मा का यह भृकुटी रूपी तख्त। दूसरा है - विश्व के राज्य का तख्त। तीसरा है - सर्वश्रेष्ठ बापदादा का दिल रूपी तख्त।''
अ.बापदादा 2.09.75

''सत बाप को क्या प्रिय लगता है? सच्चाई। जहाँ सच्चाई है अर्थात् सत्यता है वहाँ स्वच्छता व सफाई अवश्य ही होती है। गायन भी है 'सच्चे दिल पर साहब राज़ी'। दिल तख्तनशीन सर्विसएबुल अवश्य है - लेकिन सर्विसएबुल की निशानी सम्बन्ध और सम्पर्क में सच्चाई और सफाई हर संकल्प और हर बोल में दिखाई देगी।''
अ.बापदादा 2.09.75

पाण्डव-कौरव और यादव सेना का राज

भारत में महाभारत का बहुत मान है, उसका ही एक अध्याय गीता है। महाभारत में पाण्डव, कौरव और यादव सेना का गायन है परन्तु महाभारत में वर्णित पाण्डव-कौरव और यादव सेना क्या है, कौन उस सेना में हैं, यह राज़ यथार्थ रीति कोई नहीं जानता है, जो अभी परमात्मा ने बताया है और आत्माओं को कौरव और यादव सम्प्रदाय से निकलकर पाण्डव सम्प्रदाय में आने अर्थात् परमात्मा से प्रीतबुद्धि होकर विजयी बनने का ज्ञान दिया है क्योंकि अन्त समय विजय पाण्डवों की ही होने वाली है। विप्रीतबुद्धि यादव और कौरव तो विनाश को ही प्राप्त होंगे। जो कौरव और यादव सेना से निकलकर पाण्डव सेना में आयेंगे अर्थात् यथार्थ सत्य को समझकर परमात्मा से प्रीतबुद्धि बनेंगे, वे ही विजय को पायेंगे, स्वर्ग के राजभाग को पायेंगे।

''गायन है पाण्डव पहाड़ों पर गल गये। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊंची स्थिति अर्थात् निचाई से बिल्कुल ऊपर अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये अर्थात् अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए... सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् तन-मन-धन, समय और सम्बन्ध सब अर्पण।''
अ.बापदादा 3.10.69

''यह है युधिष्ठिर, युद्ध के मैदान में बच्चों को खड़ा करने वाला... पहली मुख्य हिंसा है काम कटारी की। इसलिए काम महाशत्रु कहा है, इन पर ही विजय पानी है।''
सा.बाबा 19.2.05 रिवा.

''पाण्डवों के लिये जो कल्प पहले का गायन है, क्या वह सब विशेषतायें वर्तमान समय जीवन में अनुभव होती हैं? यह जो गायन है कि उन्होंने पहाड़ों पर स्वयं को गलाया - इसका रहस्य क्या है? किस बात में गलाया?... जिसको निजी संस्कार व नेचर कहा जाता है। तो ऐसे निजी संस्कारों को गलाना।''
अ.बापदादा 11.2.75

गीता, गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता का राज

गीता महाभारत का एक अंग है। गीता में है भगवानुवाच, परन्तु भगवान कौन है, गीता क्या है, गीता ज्ञान क्या है, इस सबका राज़ परमात्मा ही आकर बताते हैं। यथार्थ गीता ज्ञान तो परमात्मा ने सम्मुख में आकर दिया होगा, कोई गीता पढ़कर नहीं दिया होगा, इसलिए अभी जो प्रचलित गीता है, वह यथार्थ गीता नहीं है। वह तो द्वापर युग से भक्ति मार्ग में गीता ज्ञान और गीता ज्ञान दाता की यादगार में बनाई गई है। मनुष्य गीता ज्ञान-दाता श्रीकृष्ण को समझते हैं परन्तु गीता को पढ़ने से पता चलता है कि गीता-ज्ञानदाता कोई देहधारी मनुष्य नहीं हो सकता। गीता-ज्ञानदाता तो ज्ञान-सागर निराकार परमात्मा शिव है, वही भगवान है। किसी देहधारी को भगवान नहीं कहा जा सकता है। श्रीकृष्ण तो दैवीगुणों से सम्पन्न एक मनुष्य तनधारी देवता थे, जिन्होंने गीता ज्ञान के द्वारा ये पद पाया है। इन सब राज़ों को अभी परमात्मा ने बताया है, तब ही हम मन्मनाभव-मध्याजीभव, नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप स्थिति को धारण करते हैं, जो ही गीता ज्ञान का सार है।

''गीता में लिखा है - मन्मनाभव। यह अक्षर मशहूर है... अब वही गीता का भगवान बैठ राजयोग सिखलाते हैं तो तुम पतित से पावन बन जाते हो। अभी हम भगवान से गीता सुनते हैं, फिर औरों को सुनाते हैं।'' सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

''तुम सन्यासियों से भी पूछ सकते हो कि गीता में जो भगवानुवाच है कि देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। क्या ये कृष्ण कहते हैं - मामेकम् याद करो ?... वास्तव में एक गीता ही है, जो शिवबाबा ने सुनाई है।''

सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

''तुम अपने तन-मन-धन से अपने लिए राजधानी स्थापन करते हो। जो करेगा, वह पायेगा। जो नहीं करते, वे पायेंगे भी नहीं। कल्प-कल्प तुम ही करते हो। तुम ही निश्चयबुद्धि होते हो। तुम समझते हो बाप, बाप भी है, टीचर भी है, वही गीता का ज्ञान भी यथार्थ रीति सुनाते हैं... यह लिखें - गीता का भगवान कृष्ण नहीं, परमपिता परमात्मा शिव है।'' सा.बाबा 3.9.04 रिवा.

''गीता में कृष्ण का नाम लिख दिया है, वह तो हो नहीं सकता। अभी ड्रामा अनुसार तुम्हारी बुद्धि में बैठा है... तुमने कितनी बड़ी भूल की है। बाप समझाते हैं - ड्रामा में ऐसा है। जब ऐसे बनो तब तो मैं आऊं।'' सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

''कर्म-अकर्म-विकर्म की गहन गति परमात्मा आकर बताते हैं - गीता में भी ये अक्षर हैं। मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ, इसलिए इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है। खुद कहते हैं - मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में आता हूँ। गीता में अक्षर एक्यूरेट हैं। गीता को ही सर्व शास्त्र शिरोमणी कहा जाता है... गीता में भी है - देह सहित देह के सब धर्म छोड़ अपने को आत्मा समझो।''

सा.बाबा 16.11.04 रिवा.

''बच्चों को समझाया गया है - यह है सर्वशास्त्र शिरोमणी गीता का ज्ञान। श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ मत। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मत है एक भगवान की, जिसकी श्रेष्ठ मत से तुम देवता बनते हो... पहली-पहली रिलीजस बुक है गीता... इस गीता ज्ञान द्वारा ही मनुष्य से देवता बने हैं, जो अभी बाप दे रहे हैं। इसको ही भारत का प्राचीन राजयोग कहा जाता है। गीता में ही काम महाशत्रु लिखा हुआ है।'' सा.बाबा 2.12.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - काम विकार तुम्हारा महाशत्रु है। आगे भी यह गीता का ज्ञान सुनते थे तब यह सभी बातें समझ में नहीं आती थीं। अभी बाप डायरेक्ट गीता सुनाते हैं। अभी बाप ने तुम बच्चों को दिव्य-बुद्धि दी है, तब तुम समझते हो।''

सा.बाबा 20.12.04 रिवा.

''हर बच्चे का संकल्प है कि जल्दी से जल्दी बाप को प्रत्यक्ष करें। लेकिन ड्रामा में राज यह है कि जब तक बच्चे अपने आपको बाप समान जीवन में प्रत्यक्ष नहीं करते तब तक बाप प्रत्यक्ष हो नहीं सकता।'' अ.बापदादा का सन्देश 4.4.05 गुल्जार दादी के द्वारा

Q. बाबा कहते तुम्हारी जीत तब होगी जब गीता का भगवान सिद्ध हो, तो गीता का भगवान कब और कैसे सिद्ध होगा ?

''गीता ज्ञान का पहला पाठ है अशरीरी आत्मा बनो और अन्तिम पाठ है - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनो... पहले इस पाठ को स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फिर औरों को निमित्त बन पढ़ाना... निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना।'' अ.बापदादा 18.1.87

‘‘श्रीमद्भगवत गीता माता गाई जाती है। भगवान के मुख-कमल से निकला हुआ गीता का ज्ञान... यह है संगमयुग, कलियुग से सतयुग, पतित से पावन बनने का युग। इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है।’’ सा.बाबा 23.5.05 रिवा.

‘‘गीता की प्वाइन्ट्स से या तो हाहाकार होगा या जयजयकार होगी... होना तो ड्रामानुसार ही है लेकिन जो निमित्त बनता है, उसका सारे ब्राह्मण कुल में नाम बाला होता है।’’ अ.बापदादा 31.10.75

‘‘बाप आकर सारा राज़ समझाते हैं। पहले-पहले तुम बच्चे इस बात पर जीत पायेंगे कि भगवान एक निराकार है, न कि साकार... श्रीकृष्ण कह नहीं सकता कि देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो... यह नॉलेज और कोई नहीं जानते, बाप आपही आकर अपना परिचय देते हैं। वही गीता का भगवान है। यह तुम सिद्ध कर बतायेंगे तो तुम्हारा नाम बहुत बाला हो जायेगा।’’ सा.बाबा 27.07.2005 रिवा.

‘‘गीता के भगवान वाला चित्र है मुख्य। उस गीता पर कृष्ण का चित्र हो और इस गीता पर त्रिमूर्ति का चित्र होने से मनुष्यों को समझाने में सहज होगा... बाप तो स्थापना और विनाश दोनों कराते हैं। होता है सब ड्रामा अनुसार ही।’’

सा.बाबा 05.08.2005 रिवा.

यदा यदाहि... सृजाम्यहं का राज

बाप ही आकर बताते हैं कि जब-जब दुनिया में धर्म की ग्लानि होती और अधर्म बढ़ जाता है तब मैं आकर अनेक अधर्मों का विनाश एक सत्य धर्म की स्थापना करता हूँ। धर्म की ग्लानि अर्थात् आत्मिक गुण-धर्मों का ह्रास और अधर्म की वृद्धि अर्थात् देहाभिमान और उसके गुण-धर्मों अर्थात् 5 विकारों की वृद्धि। आत्मा के स्वाभाविक गुण-धर्म ज्ञान, आनन्द, पवित्रता, अहिंसा, प्रेम, दया, आदि हैं। जब आत्मायें उनसे विमुख होकर देह के धर्मों को सबकुछ समझ लेते हैं, जिससे दुनिया में दुख-अशान्ति बढ़ती है, तब परमात्मा आकर अधर्म का नाश कर सत धर्म की स्थापना करते हैं।

‘‘काला मुंह कर लेते हैं। यह है ही काँटों की दुनिया। ... बाप कहते हैं - जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, तब मैं आता हूँ। अभी सब हैं तमोप्रधान, आपस में लड़ते रहते हैं... बच्चे देही-अभिमानी बनो।’’ सा.बाबा 19.01.2005 रिवा.

जीवात्मा अपना आपेही मित्र है और आपेही अपना शत्रु है का राज

मित्र-शत्रु का राज भी परमात्मा ने बताया है। अज्ञानतावश जीवात्मा दूसरों को अपना मित्र या शत्रु मानकर व्यवहार करता है परन्तु सत्यता तो ये है कि जीवात्मा अपना आपेही मित्र और आपेही अपना शत्रु है। परमात्मा ने विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान और कर्मों का ज्ञान देकर इस सत्यता का आभास करा दिया है कि ड्रामानुसार हर आत्मा के अपने कर्म ही उसके सुख या दुख का मूल कारण होते हैं, दूसरे तो निमित्त मात्र ही होते हैं। ज्ञानी पुरुष कब किसी दूसरे को मित्र-शत्रु मानकर व्यवहार नहीं करते हैं। लौकिक गीता में भी इस सत्य का वर्णन है परन्तु विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण उस राज़ को यथार्थ रीति कोई समझ नहीं सकता है, जो अभी परमात्मा ने समझाया है क्योंकि परमात्मा इस विश्व-नाटक और कर्म दोनों का ज्ञान देते हैं।

मन्मनाभव-मध्याजी भव, नष्टोमोहा - स्मृति लब्धा का राज़

गीता ज्ञान का सार है ‘नष्टोमोहा, स्मृति-स्वरूप’ परन्तु लौकिक गीता में यह सब पढ़ते हुए न इसका यथार्थ अर्थ समझ में आया, इसलिए आज तक किसी ने भी इस स्थिति को नहीं पाया। गीता ज्ञान का आदि है स्मृति स्वरूप और अन्त अर्थात् पूर्णता है नष्टोमोहा। जो अभी गीता ज्ञान-दाता परमात्मा शिव ने बताया है। जिस राज़ को जानने से हम स्मृति स्वरूप - नष्टोमोहा बने हैं और बन रहे हैं। लौकिक गीता में जब यथार्थ रीति आत्मा का ही ज्ञान नहीं तो स्मृति स्वरूप किस बात में! जब आत्मा और परमात्मा का यथार्थ ज्ञान होगा, उसकी स्मृति होगी तब ही अपनी देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा बन सकेंगे। वास्तव में नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप स्थिति भी चक्रवत (Cyclic) है अर्थात् नष्टोमोहा होंगे तो स्मृति स्वरूप बनेंगे और स्मृति स्वरूप बनेंगे तो नष्टोमोहा होंगे।

मनमनाभव-मध्याजी भव गीता के आदि के महावाक्य हैं और नष्टोमोहा-स्मृतिलब्धा अन्त के महावाक्य हैं। मनमनाभव-मध्याजी भव की स्थिति के सफल अभ्यास से ही आत्मा नष्टोमोहा-स्मृतिलब्धा स्थिति प्राप्त करती है।

''अभी बाप कहते हैं तुम सिर्फ दो अक्षर अर्थ सहित याद करो। गीता में है मनमनाभव, मामेकम्... अभी तुम रचयिता और रचना दोनों को जान गये हो, तो अभी आस्तिक बन गये हो।'' सा.बाबा 4.11.04 रिवा.

''सदैव अपने आपको देखो कि मैं निराकारी और अलंकारी हूँ - यही है मनमनाभव, मध्याजीभव... कोई भी प्रकार का अहंकार होता है तो वह अलंकारहीन बना देता है।'' अ.बापदादा 3.12.70

''तुम बच्चों को कभी भी कोई फिकरात नहीं होनी चाहिए। सब एक्टर्स हैं, सबको एक शरीर छोड़कर दूसरा लेकर पार्ट बजाना ही है। यह बना-बनाया ड्रामा है। ... आत्मा में ही सारा पार्ट नूँधा हुआ है, जो समय पर इमर्ज होता है।'' सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

''जितना नष्टोमोहा बनेंगे, उतना स्मृति स्वरूप बनेंगे। ... जितना जो स्वयं को बाप के आगे समर्पण करते हैं, उतना ही बाप भी उन बच्चों के आगे समर्पण होते हैं अर्थात् जो बाप का खजाना है, वह स्वत: ही उनका बन जाता है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''जिसने मन दे दिया, उसकी अवस्था क्या होगी ? मनमनाभव... जो मन्मनाभव होगा, उसमें मोह हो नहीं सकता है। तो मोहजीत बनने के लिए अपने वायदे को याद करो।'' अ.बापदादा 18.9.69

''जितना-जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे तो कोई मुख से बोले न बोले लेकिन उनके अन्दर के भाव को पहले से ही जान लेंगे... अपने को मेहमान समझेंगे तो फिर व्यक्त में होते हुए भी अव्यक्त में रहेंगे। मेहमान का किसी भी वस्तु या व्यक्ति के साथ लगाव नहीं होता है।'' अ.बापदादा 17.7.69

''व्यक्त भाव में आ जाते हैं, उसका कारण है जो अपने को मेहमान नहीं समझते हैं। वस्तुओं पर भी अपना अधिकार समझते हैं। इसलिए उनमें अटेचमेन्ट हो जाती है। अगर अपने को मेहमान समझो तो फिर यह सभी बातें आपही खत्म हो जायें।''

अ.बापदादा 17.7.69

''हंस और बगुले इकट्ठे रह न सकें। बहुत मुश्किल है... फिर क्या करना पड़े। इसमें बड़ी नष्टोमोहा स्थिति चाहिए।''

सा.बाबा 19.5.05 रिवा.

''सर्व आकर्षण समाप्त हो जायें, इसको कहा जाता है - सम्पूर्ण नष्टोमोहा। जिस वस्तु से मोह अर्थात् लगन होती है, वह अपनी तरफ बार-बार आकर्षित करती है।'' अ.बापदादा 24.4.73

''स्मृति-स्वरुप का सुख वा स्मृति-स्वरुप की खुशी का अनुभव क्यों नहीं होता है ? उसका मुख्य कारण क्या है ? अभी तक सर्व रुपों से नष्टोमोहा नहीं हुए हो... नष्टोमोहा ना होने कारण समय और शक्तियां जो बाप द्वारा वर्से में प्राप्त हो रही हैं, उन्हों को भी नष्ट कर देते हो, काम में नहीं ला सकते हो।'' अ.बापदादा 24.5.72

''बाप समझाते हैं अगर विकार के लिए जबरदस्ती करते हैं, तुम कुछ नहीं कर सकती हो, तुम तो अबला हो। ऐसे नहीं कि वह कोई तुम्हारे ऊपर पाप चढ़ता है... गवमेन्ट को रिपोर्ट करे। परन्तु नष्टोमोहा चाहिए... भल उनको पकड़ कर ले जाये, परवाह न रहनी चाहिए।...परन्तु सच्ची दिल चाहिए।'' सा.बाबा 21.6.71 रिवा.

''कोई2 मोह का कीड़ा होने के कारण फिर धारणा नहीं होती। तुम गाते हो 'और संग तोड़ आप संग जोड़ेंगे' बाप कहते हैं मुझे याद करो तो अन्त मते सो गति हो जायेगी। ये बातें बुद्धि में क्यों नहीं बैठती। देहाभिमान बहुत है इसलिए धारणा नहीं होती।''

सा.बाबा 25.4.71 रिवा.

श्रीमत अर्थात् ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत का राज

श्रीमत अर्थात् ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत का राज़ परमात्मा ही बताते हैं। श्रीमत से ही आत्मा पावन बनती है। दैवी मत और आसुरी मत दोंनो ही उतरती कला की मतें हैं परन्तु दैवी मत से पाप नहीं होता है, आसुरी मत से पाप-कर्म होते हैं और आत्मा को पाप कर्मों के फलस्वरूप दुख भोगना होता है। दैवी मत वालों को दुख की महसूसता हो नहीं सकती। अभी

संगमयुग पर देवी-देवतायें तो हैं नहीं, इसलिए दैवी मत मिल नहीं सकती। अभी है ईश्वरीय मत और आसुरी मत। ईश्वरीय मत से चढ़ती कला और आसुरी मत से गिरती कला होती है।

श्रीमत और चिन्तन, स्वाध्याय, स्व-चेकिंग - चार्ट, सेवा - मन्सा सेवा, वाचा सेवा, कर्मणा सेवा, सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग, प्रवृत्ति, ट्रस्टी जीवन, कुमार-कुमारी जीवन, वानप्रस्त जीवन, समर्पित जीवन, टीचर्स जीवन, मृत्यु अर्थात् अन्त घड़ी आदि आदि सब बातों के लिए बाबा ने श्रीमत दी है। जो जितना उसका पालन करता, वह उतना ही श्रेष्ठ बनता है।

''भगवानुवाच है भी गीता। गीता-ज्ञान का पुस्तक है गीता परन्तु भगवान कोई पुस्तक हाथ में उठाकर नहीं पढ़ाते हैं। यह तो डायरेक्ट भगवानुवाच है... इसको 84 के चक्र का नाटक कहा जाता है। यह बना-बनाया खेल है। ये बड़ी समझने की बातें हैं क्योंकि अभी ऊंच ते ऊंच भगवान की मत मिलती है।'' सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

''सर्व शास्त्र शिरोमणी श्रीमद्भगवत गीता है ईश्वरीय मत की। ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत का राज़ एक ईश्वर ही बताते हैं, राजयोग की नॉलेज देते हैं... सतयुग-त्रेता है ज्ञान का फल, ऐसे नहीं कि वहाँ ज्ञान मिलता है। बाप आकर भक्ति का फल ज्ञान देते हैं। अब एक बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे, रचना के आदि-मध्य-अन्त को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे।'' सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

''गीता में भी है मनमनाभव। परन्तु बाप कोई संस्कृत में नहीं बतलाते हैं। बाप मनमनाभव का अर्थ बताते हैं। देह सहित देह के सर्व धर्म छोड़ अपने को आत्मा निश्चय करो और मुझ बाप को याद करो।'' सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को श्रीमत मिल रही है, श्रेष्ठ बनने के लिए। मनुष्य मत क्या कहती है, ईश्वरीय मत क्या कहती है तो जरूर ईश्वरीय मत पर चलना पड़े... तुम आसुरी मत पर थे, अभी तुमको ईश्वरीय मत मिलती है।'' सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

''एक ईश्वर की मत को ही लीगल मत कहा जाता है, मनुष्य मत को इल्लीगल मत कहा जाता है... सबसे इल्लीगल काम है विकार का भूत। देहाभिमान का भूत तो सब में है ही... बाप तो है विदेही, बच्चे भी विचित्र हैं। यह समझ की बात है

सा.बाबा 22.10.04 रिवा.

''बाबा अपना भक्ति मार्ग का अनुभव सुनाते हैं... बुद्धि और तरफ क्यों जाती है? आखरीन विनाश भी देखा, स्थापना भी देखी। साक्षात्कार की आश पूरी हुई, समझा अब नई दुनिया आती है, हम यह बनेंगे। बाकी यह पुरानी दुनिया तो विनाश हो जायेगी। पक्का निश्चय हो गया... यह हुई ईश्वरीय बुद्धि। ईश्वर ने प्रवेश कर यह बुद्धि चलाई। ज्ञान कलष माताओं को मिलता है, तो माताओं को ही सब कुछ दे दिया।'' सा.बाबा 16.11.04 रिवा.

''गाया जाता है - मनुष्य मत, ईश्वरीय मत, दैवी मत। अब तुम्हें मिलती है ईश्वरीय मत, जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो... अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जब तुमको श्रीमत मिलती है। सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

''श्रेष्ठ कर्म से श्रेष्ठ जीवन स्वत: ही बनती है, इसलिए हर कार्य के पहले अपनी चेकिंग करनी है कि वह कर्म श्रीमत के अनुसार है?'' अ.बापदादा 24.1.70

''एक बार अपनी कमियों को बाप के आगे रखने के बाद अगर दुबारा कर लिया तो क्षमा के सागर के साथ 100 गुणा सजा भी ड्रामा प्रमाण स्वत: ही मिल जाती है... हर कार्य और संकल्प को अव्यक्त बल से अव्यक्त रूप द्वारा वेरीफाय कराओ। जैसे साकार में वेरीफाइ कराते थे।'' अ.बापदादा 23.10.70

''इनकी एक्टिविटी का मैं ही रेस्पान्सिबुल हूँ... कदम-कदम ईश्वरीय डायरेक्शन समझकर चलेंगे तो कभी घाटा नहीं होगा। निश्चय में ही विजय है।'' सा.बाबा 17.1.05 रिवा.

''तुमको एक बाप की मत पर ही चलना है। बी.के. की मत मिलती है, सो भी जांच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रांग है? अब तुम बच्चों को राइट और रांग की समझ मिली है।'' सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

''अभी तुम ने अनेक मतों और ईश्वरीय मत को भी समझा है। कितना फर्क है... कोई भी दैवी मत वा मनुष्य मत से वापस नहीं जा सकते। दैवी मत से भी तुम उतरते ही हो क्योंकि कलायें कम होती जाती हैं। आसुरी मत से भी उतरते हो। परन्तु दैवी मत में सुख है और आसुरी मत में दुख है... श्रीमत ही श्रेष्ठ बनाती है।'' सा.बाबा 23.12.04 रिवा.

''पूछते हैं - बच्चे की शादी करायें... पूछते हैं तो इससे ही समझा जाता है कि हिम्मत नहीं है, तो बाबा कह देते हैं भल कराओ... मोह भी तो है ना... यह तो समझने की बात है कि हमको फल बनना है तो पवित्र के हाथ का खाना है। उसके लिए अपना प्रबन्ध करना है। इसमें पूछना थोड़ेही होता है।'' सा.बाबा 22.6.05 रिवा.

''अब श्रीमत मिलती है ड्रामा अनुसार। जो कुछ कहा सो ड्रामा अनुसार। उसमें जरूर कल्याण ही होगा। नुकसान होता है, उसमें भी कल्याण ही है। हर बात में कल्याण है। शिवबाबा है ही कल्याणकारी। उनकी मत अच्छी है, अगर उस पर कोई चलता रहे तो।'' सा.बाबा 24.10.73 रिवा.

''भोजन भी शुद्ध लेना है। अगर लाचारी है, नहीं मिलता है तो राय पूछो... तुम जितना श्रीमत पर चलेंगे, उतना श्रेष्ठ बनेंगे... बाप तुमको ऐसे कर्म सिखलाते हैं, जो कोई भी विकर्म न बनें। किसी को दुख न दो, पतित का अन्न मत खाओ, विकार में मत जाओ।'' सा.बाबा 3.8.05 रिवा.

विनाशकाले परमात्मा से प्रीतबुद्धि विजयन्ति और विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति का राज

निश्चय में सदा विजय समाई होती है। इतिहास में ऐसे अनके उदाहरण हैं, जिनमें असम्भव जैसे कार्य को भी निश्चय के आधार पर सम्भव कर दिखाया। परमात्मा ने भी इस ज्ञान मार्ग में सफलता में निश्चय का महत्वपूर्ण स्थान बताया है। निश्चय के लिए बाबा ने कहा है कि परमात्मा में निश्चय, अपने आप में निश्चय, ड्रामा में निश्चय के साथ-साथ परमात्मा के हर महावाक्य में भी निश्चय परमावश्यक है। निश्चय के आधार पर विष भी अमृत हो जाता है और अमृत भी विष का काम करता है। ऐसे ही जिस कार्य में अपने अन्दर संशय होता है, वह सहज कार्य भी कठिन हो जाता है और उसमें पूर्ण सफलता नहीं होती है। ज्ञान मार्ग में सफलता पूर्वक जीवन उसका ही चलेगा, जिसको ये सब निश्चय होंगे अन्यथा जीवन में उतार-चढ़ाव आते ही रहेगे।

जीवन में सच्चे सुख और सफलता के लिए उपर्युक्त चारो बातों में निश्चय के साथ इस दैवी परिवार में भी निश्चय आवश्यक है, जिससे दैवी परिवार का सहयोग और दुआयें भी मिलती हैं फिर भी सहारा एक बाप को ही बनाना है, दैवी परिवार की किसी आत्मा को नहीं।

''अगर एक बाप से सर्व प्राप्ति का सम्बन्ध, सर्व सम्बन्धों का अनुभव और सदा सहारे-दाता का अटल विश्वास और निश्चय है तो बापदादा निराकार-आकार होते भी स्नेह के बन्धन में बाँधे हुए हैं... भक्ति मार्ग में भी मीरा को साक्षात्कार नहीं लेकिन साक्षात् अनुभव हुआ तो क्या ज्ञान सागर के डायरेक्ट ज्ञान स्वरूप बच्चों को साकार रूप में सर्व प्राप्ति के आधार मूर्त, सदा सहारे दाता बाप का अनुभव नहीं हो सकता। फिर सर्वशक्तिवान को छोड़कर यथाशक्ति आत्माओं को सहारा क्यों बनाते हो। यह भी एक गुह्य कर्मों का हिसाब बुद्धि में रखो। कर्मों का हिसाब कितना गुह्य है, इसको जानो।'' अव्यक्त बापदादा 8.4.82

यदि परमात्मा का बनकर भी यथाशक्ति आत्माओं का सहारा लेते हैं तो ये भी परमात्मा का नाम बदनाम करना है और उस विकर्म का भी फल उस आत्मा को मिलेगा और परमात्मा का सहारा भी छूट जायेगा क्योंकि परमात्मा की मदद उसको ही मिलती है, जो उस पर श्रृद्धा और विश्वास रखते हैं।

''यह जो लक्ष्य रखते हो कि कहाँ-कहाँ सर्विस के कारण झुकना पड़ेगा। यह लक्ष्य ही राँग है। इस लक्ष्य में ही कमजोरी भरी हुई है। जब बीज ही कमजोर है तो फल क्या निकलेगा। कोई भी नई स्थापना करने वाला यह नहीं सोचता है कि कुछ झुककर के करना है।'' अ.बापदादा 18.4.71

''अगर निश्चय हो कि भगवान बाप हमको पढ़ाते हैं तो अपार खुशी रहनी चाहिए... अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो मैं गारन्टी करता हूँ कि तुम 21 जन्म कभी रोगी नहीं बनेंगे... इस याद से पाप भस्म होते जायेंगे'' सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

''पढ़कर ऊंच बनना चाहिए। दिलशिकस्त क्यों होते हो कि सभी थोड़ेही राजायें बनेंगे! यह ख्याल आया, फेल हुआ। स्कूल में बैरिस्टरी, इन्जीनियरिंग आदि पढ़ते हैं तो ऐसे कहेंगे क्या कि सब थोड़ेही बैरिस्टर बनेंगे।'' सा.बाबा 9.5.05 रिवा.

किसी भी कार्य की सफलता-असफलता में निश्चय की महत्वपूर्ण भूमिका है। ऐसे ही इस पुरुषार्थी जीवन में सफलता के लिए परमात्मा से प्रीतबुद्धि होना भी आवश्यक है। परमात्मा से प्रीत उसकी ही जुटेगी, जिसको उस पर पूरा निश्चय होगा। परमात्मा से प्रीतबुद्धि होने के कारण उसको सर्वशक्तिवान परमात्मा की मदद मिलेगी, जिससे उसके जीवन में असफलता कभी हो नहीं सकती अर्थात् उसके जीवन में कभी दुख की महसूसता आ नहीं सकती।

''रुहानी सेना सदा विजय के निश्चय और नशे में रहते हैं ना!... रुहानी सेना, शक्ति सेना सदा इस निश्चय के नशे में रहते हैं कि न सिर्फ अब के विजयी हैं लेकिन कल्प-कल्प के विजयी हैं... अभी भी भक्त गायन करते हैं... प्रीतबुद्धि विजयन्ति।''

अ.बापदादा 27.02.86

''गाया भी जाता है विनाशकाले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति... अभी तुम्हारी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार प्रीतबुद्धि है। पूरी नहीं है क्योंकि माया घड़ी-घड़ी भुला देती है।'' सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

''किसी भी प्रकार की परिस्थिति या प्रकृति या कोई व्यक्ति निश्चय के आसन को कितना भी हिलाने का प्रयत्न करे, लेकिन वह हिला न सके - ऐसा अचल-अडोल आसन है? निश्चय के आसन में सदा अचल रहने वाला निश्चय-बुद्धि विजयन्ति गाया हुआ है। तो अचल रहने की निशानी है - हर संकल्प, बोल और कर्म में सदा विजयी। ऐसे विजयी रत्न स्वयं को अनुभव करते हो?''

अ.बापदादा 8.2.75

''निश्चय-बुद्धि बनने की मुख्य चार बातें हैं... 1. बाप का निश्चय - जो है, जैसा है, जिस स्वरूप से पार्ट बजा रहे, उसको वैसा ही जानना और मानना। 2. बाप द्वारा प्राप्त हुई नॉलेज को अनुभव द्वारा स्पष्ट जानना और मानना। 3. स्वयं भी जो है, जैसा है अर्थात् अपने अलौकिक जन्म के श्रेष्ठ जीवन को व ऊंचे ब्राह्मण जीवन के श्रेष्ठ पार्ट को जानना और मानना... 4. वर्तमान श्रेष्ठ पुरूषोत्तम, कल्याणकारी, चढ़ती कला के समय को जानना और जान करके हर कदम उठाना... इसको कहा जाता है- 'निश्चय बुद्धि विजयन्ति'।'' अ.बापदादा 8.2.75

''बाप के साथ वर्सा भी याद आना चाहिए... बेहद के बाप का वर्सा है ही स्वर्ग। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े... बाप आते हैं विनाशकाले प्रीत बुद्धि बनाने... बाप आते ही हैं संगमयुग पर जब दुनिया को बदलना है।''

सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

''विनाश काले प्रीत बुद्धि और विप्रीत बुद्धि - यह याद के लिए कहा जाता है... प्रीत भी अव्यभिचारी चाहिए... बाबा से प्रीत रखते-रखते जब कर्मातीत अवस्था होगी तब यह शरीर छूटेगा और लड़ाई लगेगी... जब सबकी प्रीत बुद्धि हो जाती है, उस समय फिर विनाश होता है।'' सा.बाबा 12.5.05 रिवा.

''पूरा निश्चयबुद्धि बनना है। बाप हमारा साथी है, बाबा सदा मददगार है। निश्चयबुद्धि विजयन्ति... यह सदा स्मृति में रख कदम उठाओ तो फिर सदा सिद्धि-स्वरूप हो जायेंगे। अगर विधि यथार्थ है तो कोई संकल्प, बोल वा कर्म में सिद्धि न हो, यह हो ही नहीं सकता।'' अ.बापदादा 6.08.72

''चैलेन्ज की है ना 4 वर्ष की। जब यह बातें सुनते हो तो थोड़ा-बहुत संकल्प चलता है कि - 'अगर सचमुच नहीं हुआ तो, यह भी हो सकता है कि 4 वर्ष में ना हो'... इसका मतलब यह है कि संकल्प में कुछ है तब तो आता है... ऐसे नहीं कि 4 वर्ष में कम्पलीट विनाश हो जायेगा। नहीं, 4 वर्ष में ऐसे नजारे हो जायेंगे, जिससे लोग समझेंगे कि बरोबर यह विनाश हो रहा है।''

अ.बापदादा 2.8.72

''जब विजय निश्चित है तो निश्चिन्त रहेगा ना। कोई भी बात में चिन्ता की रेखा दिखाई नहीं देगी। ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी, निश्चित और सदा निश्चिन्त रहने वाले हो?...बाप में निश्चयबुद्धि के साथ-साथ अपने आप में भी निश्चयबुद्धि होने चाहिए और साथ-साथ जो

भी ड्रामा के हर सेकण्ड की एक्ट रिपीट हो रही है, उसमें भी 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि चाहिए- इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि।''

अ.बापदादा 27.2.72

''जैसे प्रीत बुद्धि चलते-फिरते बाप, बाप के चरित्र और बाप के कर्तव्य की स्मृति में रहने से बाप के मिलने का प्रैक्टिकल अनुभव करते हैं, वैसे विपरीत बुद्धि वाले विमुख होने से सूक्ष्म सजाओं का अनुभव करेंगे।... उनके सीरत से हरेक अनुभव कर सकेंगे कि इस समय यह आत्मा सजा भोग रही है। कितना भी अपने को छिपाने की कोशिश करेंगे लेकिन छिपा नहीं सकेंगे।''

अ.बापदादा 2.02.72

''अगर जरा भी गफलत की तो जैसे कहावत है - एक का सौ गुणा लाभ भी मिलता है और एक का सौ गुणा दण्ड भी मिलता है, यह बोल अभी प्रैक्टिकल में अनुभव होने वाले हैं। इसलिए सदा बाप के सम्मुख, सदा प्रीत बुद्धि बनकर रहो।''

अ.बापदादा 2.02.72

''जब माया से हार खाते हो तो क्या प्रीत बुद्धि हो? प्रीत बुद्धि अर्थात् विजयी।...प्रीत बुद्धि बाला कब श्रीमत के विपरीत एक संकल्प भी नहीं उठा सकता... प्रीत बुद्धि अर्थात् बुद्धि की लगन वा प्रीत एक प्रीतम के साथ सदा लगी हुई हो। जब एक के साथ सदा प्रीत है तो अन्य किसी भी व्यक्ति वा वैभवों के साथ प्रीत जुट नहीं सकती, क्योंकि प्रीत बुद्धि अर्थात् सदा बापदादा सम्मुख अनुभव करेंगे।'' अ.बापदादा 2.02.72

''जो अपने में 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि हैं, उनकी कब हार नहीं हो सकती... हिम्मत के साथ उल्हास भी चाहिए, जिससे दूर से ही मालूम हो कि इन्हों के पास कोई विशेष प्राप्ति है।'' अ.बापदादा 1.08.71

''अगर अटेन्शन कम रहता है तो चेहरे पर टेन्शन की रेखायें दिखाई पड़ती हैं... कोई भी बात मुश्किल लगती है तो कोई कमी है जरूर। अपने आप में निश्चय बुद्धि बनने में कब कुछ कमी कर लेते हो।'' अ.बापदादा 11.7.71

''सपूत तो हो ही... सपूत बच्चे हैं तब तो श्रीमत पर चल रहे हैं। बाकी रही सबूत दिखाने की बात, वह तो यथाशक्ति दिखा रहे हैं और दिखाते रहेंगे। जितना बाप बच्चों में निश्चयबुद्धि हैं, बच्चे अपने में निश्चयबुद्धि कम हैं। इसलिए हर कार्य में विजय हो, वह रिजल्ट कब-कब दिखाई देती है।'' अ.बापदादा 22.6.71

''भट्ठी में पड़े पूंगर सेफ रहे, आप इस निश्चय से क्यों नहीं कहते? अगर योगयुक्त हैं, तो भल नजदीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जायेगा लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वे सेफ रह जायेंगे, यदि अपनी गफलत नहीं है तो। अगर अभी तक कहीं भी नुकसान हुआ है, तो वह अपनी बुद्धि की जजमेन्ट की कमजोरी के कारण हुआ है।''

अ.बापदादा 13.9.74

''कमजोर संकल्प करना अर्थात् स्वयं में संशय का संकल्प... कमजोरियों के रूप में एक भूत के साथ और माया के भूतों का आह्वान करते हो अथवा बुद्धि में स्थान देते हो... भय के भूत को भी जब तक बुद्धि से नहीं निकाला तब तक इस भूत के साथ बाप की याद बुद्धि में कैसे रह सकती है?... निश्चयबुद्धि विजयन्ति।'' अ.बापदादा 4.7.74

''निश्चयबुद्धि की निशानी है - वह हर बात वा हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिन्त होगा... याद की यात्रा को पॉवरफुल बनाओ और ज्ञान-स्वरूप के अनुभवी बनो।'' अ.बापदादा 7.2.76

''विनाश के आधार पर ठहरने वाले बच्चों से बापदादा का प्रश्न है कि पहले स्थापना करने वाले विनाश के आधार पर रहेंगे तो स्थापना करने वालों का भविष्य क्या होगा?... होगा, नहीं होगा, क्या होगा... सम्पूर्ण निश्चय के आगे यह अति सूक्ष्म रूप का रॉयल संशय है।'' अ.बापदादा 23.10.75

''तुम भी कहते हो हम भारत को श्रेष्ठाचारी बनाकर ही छोड़ेंगे। निश्चय वाले ही कहते हैं। कई तो समझते हैं 5 वर्ष में कैसे होगा। वास्तव में यह कब संशय न आना चाहिए। संशय में आने से सर्विस में ढीले पड़ जायेंगे। अगर सर्विस न की तो क्या पद मिलेगा।'' सा.बाबा 8.8.71 रिवा.

‘‘ऐसे कब नहीं समझना है 5 वर्ष कहा है, पता नहीं होगा व नहीं होगा। यह महान संशय है - इस संशय में आया तो फिर सर्विस नहीं कर सकेंगे, घुटका खाते रहेंगे।’’ सा.बाबा 13.8.71 रिवा.

‘‘कौरव गवर्मेन्ट की विनाश काले विपरीत बुद्धि। बाप कहते हैं मैं सत्य कहता हूँ उन्हों का विनाश हो जायेगा और तुम्हारी है बाप से प्रीत बुद्धि। तुम विश्व पर राज्य पाते हो। कई बच्चे डरपोक भी बहुत हैं। समझते हैं हम ऐसा लिखेंगे तो गवर्मेन्ट जेल में डाल देगी। इसी डर से अगर लिखेंगे तो सचमुच जेल में चले जायेंगे। निडर होकर लिखेंगे तो कब जेल में डाल न सकेंगे।’’

सा.बाबा 03.05.1971 रिवा.

परमात्मा और सत्य ज्ञान की प्रत्यक्षता का राज

परमात्मा हमारा पिता है, हम सभी आत्मायें भाई-भाई हैं। सर्व आत्माओं को अपने बाप का परिचय होगा तब ही सभी उनसे अपना वर्सा ले सकेंगी, इसलिए उसका सबको सन्देश देना, उसकी प्रत्यक्षता करना हम आत्माओं का परम कर्तव्य है। परन्तु वह प्रत्यक्षता तब होगी, जब इस ज्ञान की प्रत्यक्षता होगी। रचता और रचना के ज्ञान की सत्यता ही बाप को प्रत्यक्ष करेगी और ज्ञान तब प्रत्यक्ष होगा, जब वह हमारी धारणा में होगा। परमात्मा को याद तो सभी आत्मायें करती हैं परन्तु परमात्मा के विषय में अनेक भ्रान्तियां हैं, जिसके कारण परमात्मा के साकार में आये हुए भी आत्मायें उनको पहचानने में असमर्थ हैं। उनकी वह असमर्थता सत्य ज्ञान के स्पष्ट होने से ही निकलेगी। ज्ञान की प्रत्यक्षता करना हमारा परम कर्तव्य है, जो परमात्मा की प्रत्यक्षता का एकमात्र आधार है।

‘‘साकार ब्रह्मा बाप को देखा!... आपका कर्म, चलन, चेहरा स्वत: ही सिद्ध करेगा। यह भाषण से नहीं सिद्ध होगा। भाषण तो एक तीर लगाना है लेकिन प्रत्यक्षता तब होगी, जब अनुभव करेंगे - इनको बनाने वाला कौन! रचना, रचता को प्रत्यक्ष करती है।’’ अ.बापदादा 15.12.2003

‘‘अभी कोई ऐसी निमित्त आत्मा बनाओ जो कोई विशेष कार्य करके दिखाये, जो आपकी तरफ से आपके समान बाप को प्रत्यक्ष करे। परमात्मा की पढ़ाई है, यह मुख से निकले, बाबा-बाबा शब्द दिल से निकले... यही एक है, यही एक है... यह आवाज फैले... बेधड़क होकर बोले। जिस परमात्मा बाप को सभी पुकार रहे हैं, यह वह ज्ञान है।’’ अ.बापदादा 15.10.04

‘‘अनुभवों के सागर में तले में जाओ... और अन्तर्मुखी बन गुह्य अनुभवों के रत्नों से बुद्धि को भरपूर बनाओ क्योंकि प्रत्यक्षता का समय समीप आ रहा है। सम्पन्न बनो, सम्पूर्ण बनो तो सर्व आत्माओं के आगे से अज्ञान का पर्दा हट जाये।’’

अ.बापदादा 08.01.86

‘‘जब आपको अपने बदलने की महसूसता आयेगी तब आप दुनिया को बदल सकेंगे... वैसे ही आप सभी भी समझो कि हम लोन लेकर सर्विस के निमित्त आये हैं थोड़े समय के लिए। जब ऐसी स्थिति होगी तब बाप का प्रभाव दुनिया के सामने आयेगा।’’

अ.बापदादा 16.10.1969

‘‘वे भाषण करने वाले भले ही सभा को हँसा लेते हैं या रुला देते हैं लेकिन अशरीरीपन का अनुभव नहीं करा सकते हैं और न बाप से स्नेह पैदा करा सकते हैं... हम आत्मा हैं और वह परमात्मा है - जब तक यह अनुभव नहीं कराओ तब तक यह बात सिद्ध कैसे होगी ?’’ अ.बापदादा 2.8.73

‘‘सिर्फ प्वाइन्ट्स से गीता का भगवान परमात्मा शिव है, उनकी बुद्धि में नहीं बैठेगा... भाषण के साथ अनुभव कराते जाओ तो अनुभव के आगे कोई बात जीत नहीं सकती।’’ अ.बापदादा 2.8.73

‘‘ईश्वरीय स्नेह का बीज सर्व को सहयोगी सो सहजयोगी प्रत्यक्षरूप में समय प्रमाण प्रत्यक्ष कर रहा है और करता रहेगा... जब सर्व सत्तायें मिलकर एक आवाज बुलन्द करें, तब ही प्रत्यक्षता का पर्दा विश्व के आगे खुलेगा... सभी मिलकर कहेंगे कि श्रेष्ठ सत्ता ईश्वरीय सत्ता, आध्यात्मिक सत्ता है तो एक परमात्म सत्ता ही है।’’ अ.बापदादा 1.10.87

‘‘प्रत्यक्षता ड्रामानुसार जो होना है, वह तो हो ही जाना है लेकिन निमित्त बने हुए को निमित्त बनने का फल दिखाई दे, वह नहीं होता। भावी करा रही है।’’ अ.बापदादा 9.12.75

''प्रत्यक्षता का आधार है सत्यता और निर्भयता - जब आत्म ज्ञान वाली आत्मायें... अपनी अल्पमत को प्रत्यक्ष करने में निर्भय होती हैं। झूठ को सच करके सिद्ध करने में अटल और अचल रहती हैं तो सर्वज्ञ बाप के श्रेष्ठ मत व अनादि आदि सत्य को प्रत्यक्ष करने में संकोच करना भी भय है।'' अ.बापदादा 28.12.78

प्रत्यक्षता और प्रत्यक्ष प्रमाण का राज

किसी चीज की वास्तविकता को सिद्ध करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है। ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वरीय पालना, ईश्वरीय स्नेह को सिद्ध करने के लिए किस प्रमाण की आवश्यकता है? प्रत्यक्ष प्रमाण सबसे बड़ा प्रमाण है, इसलिए कहा गया है प्रत्यक्ष को प्रमाण की भी आवश्यकता नहीं होती है। अपने जीवन से ईश्वरीय ज्ञान का फल, ईश्वरीय पालना का फल दिखाई दे तब प्रत्यक्षता होगी।

''आपकी जीवन परिवर्तन को देखकर उन्हों में भी परिवर्तन की प्रेरणा आ रही है। प्रत्यक्ष प्रमाण देखा ना। शास्त्र प्रमाण से भी, सबसे बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्ष प्रमाण के आगे और सब प्रमाण समा जाते हैं।'' अ.बापदादा 1.10.87

''नास्तिक भी अनुभव करते हैं अलौकिक प्यार है वा ईश्वरीय स्नेह है... ईश्वरीय प्यार है तो वह कहाँ से आया? किरणें सूर्य को स्वत: ही सिद्ध करती हैं। ईश्वरीय प्यार, अलौकिक स्नेह, निस्वार्थ स्नेह स्वत: ही दाता बाप को सिद्ध करता है।''

अ.बापदादा 1.10.87

''ब्रह्माकुमारी अर्थात् ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष करने वाली कुमारी जो टीचर्स बनती हैं उन्हों को सिर्फ प्वाइन्ट बुद्दि में नहीं रखनी है वा वर्णन करनी है लेकिन प्वाइन्ट रुप बनकर प्वाइन्ट वर्णन करनी है। अगर स्वयं पवाइन्ट स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो प्वाइन्ट का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।'' अ.बापदादा 25.3.71

Q. ईश्वरीय स्नेह का आधार क्या है?

''गीता ज्ञान का पहला पाठ है अशरीरी आत्मा बनो और अन्तिम पाठ है - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनो... पहले इस पाठ को स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फिर औरों को निमित्त बन पढ़ाना... निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना।'' अ.बापदादा 18.1.87

''आवाज़ में आकर आत्माओं की जो सेवा करते हो, उससे अधिक आवाज़ से परे स्थिति में स्थित होकर सेवा करने से सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण देख सकेंगे... जैसे इस साकार सृष्टि में छोटे बच्चों को लोरी देते हैं, वह भी आवाज़ होता है लेकिन वह आवाज़, आवाज़ से परे ले जाने का साधन होता है।'' अ.बापदादा 18.1.71

''प्रत्यक्षता वर्ष मनाने का अर्थ है, स्वयं को बाप के समान बनाना। यह स्थूल साधन तो निमित मात्र साधन हैं। सदाकाल का साधन सिद्धि स्वरुप का है। सिद्धि स्वरुप स्वत: सिद्ध करेगा कि ऐसा ऊंचा बनाने वाला ऊंचा भगवान है। तो साधनों के साथ-साथ सिद्धि स्वरुप को अपनाओ।'' अ.बापदादा 23.1.76

''जैसे आदि स्थापना में ब्रह्मा रूप में सदैव श्रीकृष्ण दिखाई देता था... जो सदा बाप की याद में होंगे और मैं-पन की त्याग-वृत्ति में होंगे, उन्हों से ही बाप दिखाई देगा।'' अ.बापदादा 28.10.75

आस्तिक और नास्तिक का राज

भक्ति मार्ग में आस्तिक-नास्तिक अपनी परिभाषा है परन्तु अभी बाबा आस्तिक और नास्तिक का यथार्थ राज़ बतलाते हैं, जिस राज़ को जानकर ही हम आस्तिक बनते हैं और जिससे आत्मा और की चढ़ती कला होती है।

''सतयुग में हैं आत्म-अभिमानी और इस संगम पर तुम आत्म-अभिमानी भी बनते हो और परमात्मा को भी जानने वाले आस्तिक बनते हो। आस्तिक उनको कहा जाता है, जो परमपिता परमात्मा और उनकी रचना को जाने। आस्तिक न कलियुग में,

न सतयुग में होते हैं। आस्तिक संगम पर ही होते हैं, जो आस्तिक बन बाप से सतयुग-त्रेता के लिए वर्सा पाकर फिर सतयुग में राज्य करते हैं।'' सा.बाबा 26.6.72 रिवा.

निश्चय, नशे और सिद्धि-स्वरूप का राज़

निश्चयबुद्धि विजयन्ति का गायन है। निश्चय, नशे से हर कार्य में सिद्धि-स्वरूप बन जाते हैं।

''भक्ति में भी कहते हैं कि विष भी अमृत हो गया। तो यह तो छाछ थी। निश्चय और नशा हर परिस्थिति में विजयी बना देता है... आप सिद्धि-स्वरूप की शान में हो तो कोई भी परेशान नहीं कर सकता... जिद्द से सिद्ध करने वाले कभी भी सिद्धि स्वरूप नहीं बन सकते हैं। यह भी चेक करो कि पुराना स्वभाव-संस्कार अंशमात्र भी छिपा हुआ रहा तो नहीं है?''

अ.बापदादा 25.10.87

''जब हठयोगियों के आगे शेर बिल्ली बन जाता, सांप खिलौना बन जाता तो आप सहज राजयोगी, सिद्धि-स्वरूप आत्माओं के लिए यह सब कोई बड़ी बात नहीं है।'' अ.बापदादा 25.10.87

''बाबा आया हुआ है, निश्चय हो जाये तो जेल भी कूदकर भागने की कोशिश करे, बाप से मिलने की... निश्चय बात बिल्कुल और है। इसमें बहाना चल न सके। बाप से वर्सा लेकर फिर मरे। इसको कहा जाता है निश्चय। विश्व का मालिक बनाने वाला आ जाये, उनसे मिलने से कोई रोक न सके। निश्चय हो तो वह रात को भी टिकट ले भागे। बाबा को बाबा मिला तो झट सब कुछ छोड़ दिया ना।'' सा.बाबा 27.5.71 रिवा.

विनाश और विनाश की प्रक्रिया का राज

विनाश के भय से सारा जगत भयभीत है परन्तु विनाश कैसे होगा और कैसा होगा, यह यथार्थ ज्ञान किसको नहीं है। सभी धर्मों और धर्मशास्त्रों में विनाश का कुछ-कुछ वर्णन है ही। विनाश का यथार्थ राज़ परमात्मा ने अभी बताया है कि कल्प के अन्त में इस पतित दुनिया का विनाश सिविल वार, प्राकृतिक आपदाओं, और अणु-युद्ध के द्वारा होता है। अणु-युद्ध अधिकतर पाश्चात्य और उत्तरी-पूर्वी देशों में होता है। भारत और भारत के आसपास के देशों में विनाश सिविल वार के रूप में होता है। भारत में ही खून की नदियां बहती हैं तथा उसके बाद प्राकृतिक आपदाओं, समुद्र का जल-स्तर बढ़ने से सारी सृष्टि की सफाई होती है। विश्व का बहुत बड़ा भाग जलमग्न हो जाता है। ज्वालामुखी आदि से लावे के पृथ्वी के ऊपर आने से भूमि उपजाऊ हो जाती है।

अणु विस्फोट, भूकम्प, ज्वालामुखी आदि से पृथ्वी कम्पित होती है और जो अभी अपनी धूरी पर जो साढ़े तेईस अंश झुकी हुई है, वह 90 अंश में सीधी हो जाती है, जिससे सागर का जल-स्तर, नदियों का बहाव आदि बदल जाता है। विश्व के अनेक भूभाग जो अभी अस्तित्व में हैं, वे पानी में डूब जाते हैं और नये भूभाग अस्तित्व में आ जाते हैं। इस प्रकार से ये विनाश की प्रक्रिया चलती है।

वास्तव में ये विनाश भी कल्याणकारी है क्योंकि इसके बाद ही नई दुनिया अस्तित्व में आती है, स्वर्ग की स्थापना होती है, आत्मायें पावन बनकर मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाती हैं। कल्प का नया चक्र आरम्भ होता है। सृष्टि की जलवायु सुखदायी हो जाती है। इस विनाश के बाद ही भारत महान बनता है। बड़े-बड़े महाद्वीप टापू मात्र रह जाते हैं।

विश्व की जनसंख्या से अधिकांश आत्मायें शरीर छोड़कर परमधाम चली जाती हैं। बहुत थोड़ी देवी-देवता घराने की आत्मायें भारत में ही बचती हैं, जिनसे नई दुनिया की कलम लगती है। भारत अविनाशी खण्ड है, इसका सम्पूर्ण विनाश नहीं होता है परन्तु इसका भी बहुत बड़ा भाग जलमग्न हो जाता है।

''शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियां ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है... स्थापना का कर्तव्य किया है, अब यह रूप दिखाओ।'' अ.बापदादा 9.10.71

''दादियों ने कहा - बाबा आपने ही कहा है ना कि अचानक होना है, तो हम डेट कैसे बतायें... बाबा के शब्द बाबा को ही दे रही हैं कि अचानक होना है तो डेट कैसे दें। बाबा ने कहा अच्छा अचानक तो होना है लेकिन आप एवर-रेडी हो ?... अभी आपके रहमदिल, मर्सीफुल की क्वालीफिकेशन इमर्ज होनी चाहिए।'' अ.बापदादा का सन्देश 07.10.2004

''पूछते हैं कि विनाश में बाकी कितना समय है। बोलो, यह पूछने की बात नहीं है। पहले तो यह हमको किसने समझाया है, उनको जानो... यह हमारा बाप-टीचर-गुरु है। जब कम्पलीट दैवीगुण आ जायेंगे तो लड़ाई भी लगेगी। समय अनुसार तुम खुद समझेंगे कि अब कर्मातीत अवस्था को पहुँच रहे हैं। अभी कर्मातीत अवस्था हुई कहाँ है। अभी बहुत काम है। बहुतों को पैगाम देना। बाप से वर्सा लेने का तो सबको हक है।'' सा.बाबा 01.01.2004 रिवा.

''थोड़ा समय आगे चलेंगे तो मनुष्य खुद भी समझ जायेंगे कि अब विनाश होता है। अब नई दुनिया की स्थापना होनी है क्योंकि आत्मा तो फिर भी चेतन्य है ना। बुद्धि में आ जायेगा, बाप आया हुआ है।'' सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

''यह तो स्थापना के समय से ही जानते हो कि भारत में सिविल वार होनी ही है... भारत का पार्ट ही सिविल वार का है। इसलिए नथिंग न्यू... ड्रामा की बनी हुई भावी को शक्तिशाली बन देखते-सुनते और औरों को भी शक्ति देना - यही काम है आप सबका... तो शान्तिदाता के बच्चे सदा शान्तिदाता बनो।'' अ.बापदादा 9.4.86

''यह लड़ाई भी अन्तिम लगनी है, इससे स्वर्ग का द्वार खुलना है... यज्ञ भी यह लास्ट है, फिर आधा कल्प कोई यज्ञ होगा ही नहीं। सारा किचड़ा इसमें स्वाहा हो जाता है। इस यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है। ... इसको कहा जाता है राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ।'' सा.बाबा 24.3.05

''जिस समय विनाश का किसको समझाते हो तो यह स्पष्ट समझाना चाहिए कि ऐसे नहीं कि दो वर्ष में कम्पलीट विनाश हो जायेगा। नहीं, दो वर्ष में ऐसे नजारे हो जायेंगे कि जिससे लोग यह समझमेंगे कि बरोबर यह विनाश हो रहा है अर्थात् विनाश शुरू हो गया है।'' अ.बापदादा 2.8.73

''तुम जानते हो - विनाश तो ड्रामानुसार होना ही है। आपस में लड़कर विनाश हो जायेंगे। बाकी ड्रामानुसार शंकर का नाम रख दिया है... जो जैसा कर्म करते हैं, उसकी खुद ही सजा भोगते हैं। मैं किसको सजा नहीं देता हूँ, न कोई प्रेरणा से सजा देता हूँ। मैं प्रेरणा करूँ तो जैसे मैं ने सजा दी। यह भी दोष है।'' सा.बाबा 20.5.05 रिवा.

''तुम जानते हो - विनाश तो ड्रामानुसार होना ही है। आपस में लड़कर विनाश हो जायेंगे। बाकी ड्रामानुसार शंकर का नाम रख दिया है... जो जैसा कर्म करते हैं, उसकी खुद ही सजा भोगते हैं। मैं किसको सजा नहीं देता हूँ, न कोई प्रेरणा से सजा देता हूँ। मैं प्रेरणा करूँ तो जैसे मैं ने सजा दी। यह भी दोष है।'' सा.बाबा 20.5.05 रिवा.

''आधार मूर्त आत्माओं का संकल्प ही विनाश अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रेरणा का आधार है... इसके लिए भी जब तक आप ज्वालारूप नहीं बनते, तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वालारूप नहीं लेती है। यह भड़कती है, फिर शीतल हो जाती है।'' अ.बापदादा 16.1.75

''तुम्हारी माया से युद्ध तो अन्त तक चलती रहेगी। यह भी जानते हो कि महाभारत लड़ाई होनी है जरूर। नहीं तो पुरानी दुनिया का विनाश कैसे हो।'' सा.बाबा 15.7.05 रिवा.

स्थापना और स्थापना की प्रक्रिया का राज

यह सृष्टि अनादि-अविनाशी है फिर भी परमात्मा को विश्व का रचयिता कहा जाता है। तो प्रश्न उठता है कि वह रचयिता क्यों और कैसे है ?

वास्तव में सृष्टि तो अनादि-अविनाशी है परन्तु यह दुनिया सतत परिवर्तनशील है, इसलिए प्रकृति के अनादि विधान के अनुसार यह नई से पुरानी और पुरानी से नई अवश्य होती है। चीज प्रकृति के नियमानुसार सतोप्रधान से तमोप्रधान अवश्य होती है, भले उसका कितना ही सुरक्षापूर्ण रख-रखाव किया जाये परन्तु नई बनाने की आवश्यकता होती है और नया बनाने वाला भी

कोई अवश्य होता है। इसलिए परमात्मा नई सृष्टि का रचयिता नहीं है लेकिन नई दुनिया का रचयिता अवश्य है क्योंकि वही आकर इसको पुरानी से नया बनाते हैं। परमात्मा आकर आत्माओं को शूद्र से ब्राह्मण बनाकर, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर और राजयोग सिखलाकर पावन बनाते हैं। आत्मायें ज्ञान-योग, त्याग-तपस्या के बल से दैवी संस्कारों को धारण करती हैं और पावन बनती हैं। जब आत्मायें पावन बन जाती हैं तो उनके लिए सृष्टि भी पावन चाहिए, इसलिए पुरानी दुनिया का विनाश होता है। पावन और आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न होने के कारण विनाश के समय ऐसी कुछ आत्मायें बच जाती हैं, जिनसे नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना होती है।

सृष्टि अनादि-अविनाशी है, इसलिए दुनिया का न कभी नया निर्माण हुआ है और न ही कभी पूर्ण विनाश होता है। विनाश के समय कौन, कहाँ और कैसे बचेंगे ? ये भी एक रहस्यमय पहेली है, जिसका राज़ भी बाबा ने मुरलियों में समय-समय पर समझाया है।

''ज्ञान सागर बाप सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं... परमपिता परमात्मा एक ही बार पुरुषोत्तम संगमयुग पर आते हैं, पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना करने... नई दुनिया की स्थापना ब्रह्माकुमार-कुमारियों के द्वारा होनी है। जिनको पक्का निश्चय है, वे सर्विस पर लगे हुए हैं।'' सा.बाबा 21.10.04 रिवा.

''शिवबाबा शिवालय बनायेंगे ना। वह कैसे बनाते हैं, सो भी तुम जानते हो। महाप्रलय, जलमई आदि तो होती नहीं है... यह सब ड्रामा में नूँध है। सेकण्ड बाई सेकेण्ड नई बात होती रहती है, चक्र फिरता रहता है।'' सा.बाबा 12.11.04 रिवा.

''बच्चों को स्थापना, विनाश और पालना तीनों की याद होनी चाहिए क्योंकि तीनों कर्तव्य साथ-साथ इकट्ठा चलता है ना... यह भी याद रखना है कि हम पवित्र बनेंगे फिर इस इम्प्योर दुनिया का विनाश भी जरूर होगा।'' सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

एडवान्स पार्टी, उनके कर्तव्य का राज़ / एडवान्स पार्टी और योगबल से जन्म का राज

परमात्मा का नई सृष्टि की रचना का कार्य अनेक प्रकार से चलता है। कुछ आत्मायें परमात्मा के साथ सर्व आत्माओं को ज्ञान देकर सतयुग के योग्य बनाने का पुरुषार्थ करती हैं, कोई ज्ञानी-योगी आत्मायें जिनका इस देह से पार्ट पूरा हो जाता है, वे जाकर दूसरा जन्म लेकर नये विश्व की रचना में अपना सहयोग देती हैं, जिनको एडवान्स पार्टी के नाम से जाना जाता है और कोई आत्मा इस पुरानी सृष्टि के विनाश के लिए तैयारी करती हैंतो कोई आत्मा नये विश्व के नव-निर्माण के लिए कार्य करती है।

Q. एडवान्स पार्टी क्या है, उसमें कौन और कैसी आत्माओं की गणना होगी ?

वैसे तो जो भी आत्मायें ज्ञान में आती हैं और निश्चयबुद्धि स्थिति में बाबा की याद में शरीर छोड़ती हैं, वेसभी एडवान्स पार्टी में ही हैं क्योंकि वे संगम पर ईश्वरीय सेवा में रहते हुए शरीर छोड़ती हैं तो वे भविष्य में भी ईश्वरीय सेवा में अवश्य ही मददगार रहेंगी भले ही वे पुनर्जन्म लेकर ज्ञान में आयें या न आयें परन्तु जो आत्मायें ज्ञान में आती हैं, सेवा करती हैं परन्तु संशयबुद्धि होकर ज्ञान छोड़ देती हैं, उसके बाद वे शरीर छोड़ती हैं तो उनको एडवान्स पार्टी में नहीं कहा जा सकता है।

एडवान्स पार्टी वालों में भी कोई आत्मायें पुनर्जन्म लेकर ज्ञान में डायरेक्ट आयेंगी, कोई नहीं भी आयेंगी परन्तु सहयोगी रहेंगी और दूर रहते भी अपने सम्बन्ध-सम्पर्क, गुणों, शक्तियों और कर्तव्यों से अन्य आत्माओं को बाबा और ज्ञान की तरफ प्रेरित करेंगी, नये विश्व के नव-निर्माण के लिए प्रेरित करेंगी। एडवान्स पार्टी वालों में भी कुछ आत्मायें परमात्मा के साथ ही शरीर छोड़कर घर जायेंगी और पहली राजाई में ही आयेंगी परन्तु अपने द्वारा ऐसी आत्माओं को जन्म देकर जायेंगी जो आगे योगबल से सतयुग के प्रथम जन्म में आने वाली आत्मओं को जन्म दे सकें, जो फिर कुछ समय बाद अर्थात् 20-25 वर्ष के बाद परमधाम घर जायेंगी। ये नये विश्व की कलम लगने का कार्य बड़ा ही गुह्य, वण्डरफुल और राजयुक्त है। बाबा ने इस सबके विषय में इशारे दिये हैं, उनको समझना हर आत्मा की अपनी-अपनी शक्ति है।

एडवान्स पार्टी ही अज्ञानी आत्माओं को प्रेरित करके प्रथम जन्म में आने वाली आत्माओं को योगबल अर्थात् विषयभोग के बिना जन्म देने के लिए तैयार करेंगी और नये विश्व के नव-निर्माण के लिए भी ऐसी आत्माओं को तैयार करेंगी, जो वहाँ

महल, सुख-साधन आदि तैयार करेंगे। वे आत्मायें भी अपनी सेवा के फलस्वरूप बाद में सतयुग-त्रेता में आयेंगी। इस प्रकार हम विचार करें तो योगबल से जन्म देने के लिए ज्ञान की आवश्यकता नहीं है परन्तु पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य की परम आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में बाबा ने भी कहा है कि अन्त में पाण्डव सम्प्रदाय और कौरव सम्प्रदाय दोनों में से ही बचेंगे, जो नये विश्व का नव-निर्माण करेंगे।

''वह तो वाइसलेस दुनिया थी। वहाँ विकारी बनना नहीं होता। कहते हैं तब बच्चे कैसे पैदा होंगे। अरे वह तो जो रसम होगी, वैसे होंगे। बच्चे तो जरूर पैदा होते हैं। परन्तु वह तो है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। समझो योग बल से पैदा होते हैं। पहले साक्षात्कार होता है। मुख का प्यार होता है। इसलिए कहा जाता है मुखवंशावली। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। नये को इन बातों में नहीं लाना है।''

सा.बाबा 28.11.73 रिवा.

''एडवान्स पार्टी वालों के परिवार में जाओ, न जाओ लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है, उसके लिए वे निमित्त बनेंगे... उन परिवारों के बड़े भी बच्चों की राय को रिगार्ड देंगे।'' अ.बापदादा 2.8.73

Q. क्या एडवान्स में गई आत्माओं का पुरुषार्थी जीवन है? यदि हाँ तो उनका कैसा पुरुषार्थ होगा?

स्थापना-विनाश और सिविल वार, एटॉमिक वार, नेचुरल केलेमिटीज का राज

ड्रामा अनुसार मनुष्यों के चारित्रिक पतन और विकर्मों के फलस्वरूप विश्व में प्राकृतिक का सन्तुलन बिगड़ेगा, अकाल की विभीषिका बढ़ेगी, जिससे धीरे-धीरे विश्व में जैसे-जैसे उपभोक्ता पदार्थ कम होते जायेंगे, मनुष्यों की लोभ-वृत्ति बढ़ती जायेगी, वैसे-वैसे विश्व में टेन्शन बढ़ता जायेगा और टेन्शन से प्रभावित आत्माओं में गृहयुद्ध होगा, गृहयुद्ध से अणु-युद्ध शुरू होगा और अणु-युद्ध और भूगर्भ सम्पदा के दोहन से प्राकृति के पाँचो तत्वों से भारी भूकम्प, ज्वालामुखी आदि प्राकृतिक आपदायें आयेंगी, जिससे पृथ्वी जो साढ़े तेईस अंश झुकी हुई है, वह 90 अंश पर सीधी हो जायेगी, जिससे जल प्लावन होगा। जल प्लावन से एक तो विश्व की सफाई होगी और पुराने भूभाग जलमग्न हो जायेंगे और नये भूभाग अस्तित्व में आयेंगे, जो उपजाऊ होंगे।

ऐसा ही जल-प्लावन द्वापर के आदि में भी होता है, जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, जिसमें दैवी सभ्यता के अवशेष भी भूगर्भ में समा जाते हैं और नई सभ्यता जन्म होता है।

स्थापना में दो प्रकार की स्थापना है - एक है आत्मा के आसुरी संस्कारों को बदलकर दैवी संस्कार बनाने की प्रक्रिया, जो कलियुग के अन्तिम 75 वर्षों में होती है और दूसरी है विश्व के स्थूल नव-निर्माण की प्रक्रिया जो सतयुग के आदि के 25 वर्षों में होती है।

''यह तो समझ है कि अगर स्थापना की तैयारी कम है, तो विनाश की तैयारी कैसे होगी इन दोनों का आपस में सम्बन्ध हैं? समय पर तैयार हो ही जायेंगे, यह समझना भी राँग है।'' अ.बापदादा 23.1.74

''आज बापदादा अपने तीन प्रकार के बच्चों का पोतामेल देख रहे थे। एक मुख वंशावली ब्राह्मण... दूसरे सदा मस्त रहने वाले भक्त और तीसरे पुरानी दुनिया को परिवर्तन के निमित्त बने हुए यादव... भक्त अर्थात् अल्पकाल की प्राप्ति में खुश... यादव सेना का का समाचार... क्वेश्चन मार्क है - आरम्भ कौन करे, मैं करूँ या वह करे, अब करें या कब करें, इसकी रिजल्ट क्या होगी?... चौथा क्वेश्चन - यह सब कराने वाला कौन?... इन्तजाम है लेकिन उस सेकण्ड की प्रेरणा के इन्तजार में हैं... प्रेरणा लेने वाले तो तैयार हैं लेकिन प्रेरणा देने वालों का क्या हाल है?'' अ.बापदादा 2.02.76

''सिद्धि-स्वरूप न बनने का कारण भावना बदल कर कामना हो जाना है। इसलिए पुरुषार्थ ज्वालारूप नहीं बनता है। ब्राह्मणों का ज्वालारूप विनाश ज्वाला को प्रज्ज्वलित करेगा... तो अपनी शान से परेशान आत्माओं को शानति और चैन का वरदान दो।''

अ.बापदादा 2.02.76

‘‘सर्वशक्तिमान साथी होते हुए भी व्यर्थ संकल्प उत्पन्न होना - उसको क्या कहेंगे ? ऐसे व्यर्थ संकल्प समाप्त कर जिस स्थापना के कार्य के निमित्त हो…अपनी लगन की अग्नि को तीव्र करो। जिस लगन की अग्नि से ही विनाश की अग्नि तीव्र गति का स्वरूप धारण करेगी। अपने रचे हुए अविनाशी ज्ञान यज्ञ, जिसके निमित्त ब्राह्मण बने हुए हो, इस यज्ञ में पहले स्वयं की सर्व कमजोरियों व कमियों की आहुति डालो। तभी सारी पुरानी दुनिया की आहुति पड़ने के बाद समाप्ति होगी।’’

अ.बापदादा 8.02.75

स्थापना, विनाश और पालना के सम्बन्ध का राज

जो स्थापना करता है, वही पालना भी करता है। दूसरे धर्म-स्थापकों के लिए भी बाबा ने बताया है कि वे अपने धर्म की स्थापना करते हैं तो भिन्न नाम-रूप-देश-काल में उनको ही उस धर्म की पालना भी अवश्य करनी है।

‘‘जो स्थापना करते हैं, फिर पालना भी वे ही करेंगे। स्थापना के समय का नाम, रूप, देश, काल अलग है और पालना का नाम, रूप, देश, काल अलग है… यह तो एक बाप का ही काम है, जो इस सारी सृष्टि को हेल से हेविन बनाते हैं… जब सभी का अन्त होता है, तब मैं आता हूँ, सभी को ज्ञान से पार ले जाता हूँ। मैं आकर इन बच्चों के द्वारा कार्य कराता हूँ। बाप सबको साथ ले जाते हैं।’’ सा.बाबा 31.5.04 रिवा.

स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का राज़ / स्व-कल्याण से विश्व-कल्याण का राज

व्यष्टि से समष्टि का सिद्धान्त है अर्थात स्व-परिवर्तन से ही विश्व का परिवर्तन सम्भव है। व्यष्टि से समष्टि अर्थात् व्यक्ति के परिवर्तन से सारे संसार का परिवर्तन होगा। इसलिए बाबा ने कहा कब दूसरों को नहीं देखो, अपने को देखो। जैसा कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करेंगे। एक-एक से ही परिवार, परिवार से समाज और समाज से नगर, नगर से देश और देश के परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन निश्चित ही होगा। जो भी संसार में महान पुरुष हुए हैं, वे पहले अकेले ही चले हैं, उनको देखकर समाज और देश उनके पीछे चला है। अपने प्यारे ब्रह्मा बाबा ने भी पहले अकेले ही कदम आगे बढ़ाया और समर्पण किया फिर उनको देखकर और भी आगे आये और इतने बड़े यज्ञ की स्थापना हुई, विश्व परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ता जा रहा है।

कहावत है - हम बदलेंगे तो जग बदलेगा अर्थात् स्व-परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन होगा, इसलिए बाबा सदैव कहते हैं दूसरे को बदलने से पहले अपने को बदलो।

स्व-परिवर्तन ही स्व-कल्याण है और स्व-कल्याण से ही विश्व-कल्याण का कार्य हो सकता है। जो देह और देह के सम्बन्धियों के कल्याण की चिन्ता करते हैं, वह यथार्थ में स्व-कल्याण है ही नहीं। स्व-कल्याण वाली आत्मा विश्व-कल्याण के कार्य के बिना रह नहीं सकती।

‘‘अपने को परिवर्तन में लाते-लाते सृष्टि का भी परिवर्तन हो जायेगा क्योंकि अपने परिवर्तन के आधार से ही सृष्टि को परिवर्तन में लाने का कार्य कर सकेंगे… सदैव यह स्मृति रहे कि हमारे हर संकल्प के पीछे विश्व-कल्याण का सम्बन्ध है।’’

अ.बापदादा 2.8.73

‘‘अभी हम क्षीरखण्ड हो रहे हैं। उस तरफ दिन-प्रतिदिन लनपानी होते जाते हैं। आपस में लड़कर खत्म होने वाले हैं… पुरानी दुनिया पूरी होती है, नई दुनिया की स्थापना हो रही है। नई सो पुरानी और पुरानी सो नई फिर बनेगी।’’ सा.बाबा 20.5.05 रिवा.

‘‘अधिकारी अर्थात विश्व-कल्याणकारी और विश्व के राज्य अधिकारी… दोनों अधिकारों को प्राप्त करने के लिए विशेष स्व परिवर्तन की शक्ति चाहिए… पहला परिवर्तन - मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ… दूसरा परिवर्तन - मैं किसका हूँ, सर्व सम्बन्ध किससे हैं, सर्व प्राप्तियां किससे हैं। पहले देह का परिवर्तन, फिर देह के सम्बन्ध का परिवर्तन, फिर सम्बन्ध के आधार पर प्राप्तियों का परिवर्तन। इस परिवर्तन को ही सहज याद कहा जाता है।’’ अ.बापदादा 31.12.70

‘‘जो विशेषतायें बाप की हैं, क्या वे अपने में अनुभव करते हो ? चार सब्जेक्ट्स के प्रमाण चार विशेषतायें हैं - नॉलेजफुल, पॉवरफुल, सर्विसएबुल और ब्लिसफुल… एक है सेल्फ-सर्विस और दूसरी है विश्व-कल्याण के प्रति सर्विस। दोनों का बैलेन्स

चाहिए। ... जैसे और प्लेन्स बनाते हो, वैसे अपनी उन्नति के प्रति भी कोई विशेष प्लेन प्रैक्टिकल में लाना चाहिए... पॉवरफुल न होने के कारण नॉलेज को प्रैक्टिकल में नहीं कर पाते हो।'' अ.बापदादा 17.5.73

''अभी थोड़े समय में सारी विश्व की आत्माओं को सन्देश देने, ज्ञान और योग का परिचय दे बाप की पहचान कराने का कर्तव्य करना ही है, साथ-साथ इस प्रकृति को भी पावन बनाना है, तब ही विश्व परिवर्तन होगा।'' अ.बापदादा 25.5.73

''एक तो 'साक्षात् बाप-मूर्त' और दूसरा 'साक्षी और साक्षात्कार-मूर्त', जब तक यह दोनों मूर्त न बनीं हैं, तब तक सारे विश्व का परिवर्तन थोड़े समय में कर नहीं पायेंगे... जैसे वह स्टेज और स्पीच तैयार करते हो, वैसे ही आपको अपनी स्थिति की स्टेज तैयार करनी पड़े।'' अ.बापदादा 25.5.73

''ईश्वरीय प्यार चुम्बक के समान स्वत: ही समीप ले जाता है। इसको कहते हैं ईश्वरीय स्नेह का प्रत्यक्ष फल... ईश्वरीय स्नेह परिवर्तन का फाउण्डेशन है अथवा जीवन परिवर्तन का बीज स्वरूप है... परिवर्तन का बीज फल जरूर दिखाता है। सिर्फ कोई फल जल्दी निकलता है और कोई फल समय पर निकलाता है।'' अ.बापदादा 1.10.87

''अगर स्वयं को सर्व तरफ से समेट कर एवर-रेडी बनाया तो आपके एवर-रेडी बनने से विनाश भी रेडी हो जायेगा। जब आग प्रज्वलित करने वाले ही शीतल हो बैठ जावेंगे तो आग क्या होगी? तो आग मध्यम पड़ जायेगी ना? इसलिए अब ज्वालारूप हो अपने एवर-रेडी बनने के पॉवरफुल संकल्प से विनाश ज्वाला को तेज करो।'' अ.बापदादा 3.02.74

''जब तक आप ज्वालारुप न बने, तब तक इशारा नहीं कर सकते। इसलिये अब स्वयं की तैयारी के साथ-साथ विश्व के परिवर्तन की भी तैयारी करो। यह है आपका लास्ट कर्तव्य क्योंकि यही शक्ति स्वरुप का कर्तव्य है।'' अ.बापदादा 3.02.74

''आप विशेष आत्मायें नये विश्व के आधारमूर्त, पूज्यनीय आत्मायें हो... आपकी चढ़ती कला तो विश्व की चढ़ती कला होती है और आप गिरती कला में आते हो तो संसार की भी गिरती कला होती है। आप परिवर्तन होते हो तो विश्व भी परिवर्तन होता है।'' अ.बापदादा17.10.87

''सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि अपने विश्व-परिवर्तन के कार्य में दिन-रात बिजी रहेंगे... सर्व ब्राह्मणों के अन्दर रहम की भावना, विश्व-कल्याण की भावना, सर्व आत्माओं दुखों से छुड़ाने की शुभ कामनायें जब तक दिल से उत्पन्न नहीं होंगी तब तक विश्व-परिवर्तन रुका हुआ है।'' अ.बापदादा 23.10.75

''टीचर ने टीचरपन का नशा रखा तो रुहानी नशा नहीं रहेगा। यह नशा भी बॉडीकान्सस है। रुहानी नशा है- मैं विश्व-कल्याणकारी बाप की सहयोगी आत्मा हूँ। कल्याण तब कर सकेंगे, जब स्वयं सम्पन्न होंगे।'' अ.बापदादा 11.10.75

''विश्व को परिवर्तित करने वाले को पहले स्वयं को परिवर्तित करना पड़े। सदैव यह सोचो कि जब मैं हूँ ही विश्व को परिवर्तन करने के निमित्त, तो स्वयं को परिवर्तन करना क्या बड़ी बात है? तो फौरन ही परिवर्तन करने की शक्ति आ जायेगी। 'कैसे होगा, क्या होगा, होगा व नहीं होगा?' यह क्वेश्चन नहीं उठेगा।'' अ.बापदादा 9.02.75

''स्व-परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन सम्भव है... स्व-परिवर्तन के बिना विश्व-परिवर्तन के कार्य में दिल-पसन्द सफलता नहीं होती है क्योंकि यह अलौकिक ईश्वरीय सेवा एक ही समय पर तीन प्रकार की सेवा की सिद्धि है। वह तीन प्रकार हैं - वृत्ति, वायब्रेशन और वाणी।'' अ.बापदादा 2.11.87

''स्व-परिवर्तन का मूल आधार एक विशेष शक्ति की कमी है, वह विशेष शक्ति है महसूसता की शक्ति। कोई भी परिवर्तन का सहज आधार महसूसता-शक्ति है... महसूसता ही अनुभव कराती है और जब अनुभव होता है तब ही परिवर्तन होता है।'' अ.बापदादा 2.11.87

''अपने स्वभाव और संस्कार को सेकण्ड में परिवर्तन कर सकते हो? अपनी आत्मा के किसी भी सम्पर्क को सेकण्ड में परिवर्तन कर सकते हो? अपने संकल्प को सेकण्ड में, व्यर्थ से समर्थ में परिवर्तन कर सकते हो? अपने पुरूषार्थ की रफ्तार को सेकण्ड में साधारण से तीव्र कर सकते हो?... इसको कहाँ जाता है परिवर्तन शक्ति।'' अ.बापदादा 13.9.75

दृष्टि-वृत्ति और सृष्टि परिवर्तन का राज

परमात्मा आकर सृष्टि का परिवर्तन करते हैं। सृष्टि परिवर्तन का आधार है मनुष्यों की दृष्टि-वृत्ति का परिवर्तन। परमात्मा ज्ञान देकर आत्माओं की दृष्टि को परिवर्तन करते हैं अर्थात् देहाभिमानी से देही-अभिमानी बनाते हैं अर्थात् सत्य ज्ञान देकर दैहिक दृष्टि से आत्मिक दृष्टि बना देते हैं, जिससे संकल्प चेन्ज होता है और संकल्प से वृत्ति चेन्ज होती है, जिसका प्रभाव वातावरण और अन्य आत्माओं पर भी पड़ता है। परमात्मा हमारी दृष्टि-वृत्ति को परिवर्तन करने में हमारी मदद करता है और हमको अन्य आत्माओं की दृष्टि-वृत्ति परिवर्तन करने की सेवा देता है। इस प्रकार दृष्टि-वृत्ति परिवर्तन से ही नई सतयुगी सृष्टि का निर्माण होता है। ये राज़ और विधि-विधान भी बाबा ने अभी बताया है।

''कहावत है कि दृष्टि से सृष्टि बनेगी... आत्मिक दृष्टि बनानी है... जिसको देखते हो, वह आत्मिक स्वरूप में दिखाई दे... दृष्टि बदल गई तो कब धोखा नहीं देगी।'' अ.बापदादा 6.08.70

''जो अपनी वृत्ति में होगा, वैसा अन्य आपकी दृष्टि से देखेंगे... सृष्टि न बदलने का कारण है दृष्टि का न बदलना और दृष्टि न बदलने का कारण है वृत्ति का न बदलना।'' अ.बापदादा 6.08.70

''नयनों की दृष्टि द्वारा उन आत्माओं की दृष्टि, वृत्ति, स्मृति और कृत्ति चेन्ज कर दो। मस्तिष्क द्वारा अपने व सभी के स्वरूपों का स्पष्ट साक्षात्कार कराओ, चेहरे द्वारा वर्तमान श्रेष्ठ पोजीशन और भविष्य पोजीशन का साक्षात्कार कराओ। अपने श्रेष्ठ संकल्प द्वारा अन्य आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों व विकल्पों को... शुद्ध संकल्पों में परिवर्तित कर डालो।'' अ.बापदादा 25.5.73

''वृत्ति चंचल वा साधारण होने का कारण है कि जो आने से पहला व्रत लेते हो वा प्रतिज्ञा करते हो, उससे नीचे आ जाते हो। पहला-पहला व्रत है - मन, वाणी, कर्म में पवित्र रहेंगे। दूसरा व्रत है - एक बाप दूसरा न कोई... व्रत को हल्का करने से ही वृत्ति चंचल होती है।'' अ.बापदादा 6.08.72

''जिनको राखी बांधते हो, वह पवित्र बनते हैं वा व्रत लेते हैं?... बांधने वालों की मन्सा में अपवित्रता आ जाती है। इस कारण जितनी बांधने वाले में कमी है, तो जिनको बांधते हो, उनके ऊपर भी इतना आपकी पवित्रता के आकर्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।'' अ.बापदादा 6.08.72

''अगर आप श्रेष्ठ वृत्ति में स्थित हो तो कोई भी वायुमण्डल-वायब्रेशन आदि आपको डगमग करते सकते हैं क्या? वृत्ति से ही वायुमण्डल बनता है। अगर आपकी वृत्ति श्रेष्ठ है तो वृत्ति के आधार से वायुमण्डल को शुद्ध बना सकते हो।''

अ.बापदादा 6.08.72

''स्मृति अर्थात् वृत्ति बदलने से कर्म भी बदल जाता है। कर्म का आधार है वृत्ति। वृत्ति से ही पवित्र-अपवित्र बनते हैं... जब एक बाप से सर्व सम्बन्ध की प्राप्ति की विस्मृति होती है तब ही वृत्ति चंचल होती है... जैसी मुझ निमित्त बनी हुई आत्मा की वृत्ति होगी, वैसा वायुमण्डल बनेगा।'' अ.बापदादा 26.10.71

''स्मृति वा वृत्ति में सदा अपना निर्वाणधाम और निर्वाण स्थिति रहनी चाहिए और चरित्र में निर्मान। तो निर्माण, निर्मान और निर्वाण- यह तीनों ही स्मृति में रहने से चरित्र, कर्तव्य और स्थिति तीनों ही समर्थवान हो जाते हैं।'' अ.बापदादा 26.10.71

''वायुमण्डल कैसे बन सकता है ? वृत्ति से वायुमण्डल बनता है... वायुमण्डल का फाउण्डेशन है वृत्ति। वृत्तियों को जब तक पॉवरफुल नहीं बनाया, तब तक वायुमण्डल में रुहानियत नहीं आ सकती और सर्विस में जैसी वृद्धि चाहते वह हो नहीं सकती।''

अ.बापदादा 9.10.71

''दृष्टि से सृष्टि बदलती है। यह भी अभी कहावत है। कैसी भी तमोगुणी व रजोगुणी आत्मायें आयें लेकिन अपनी सतोगुणी दृष्टि से उनकी सृष्टि, उनकी स्थिति बदल जाये, उनकी वृत्ति बदल जाये।'' अ.बापदादा 20.5.71

''जैसे स्थूल नेत्रों के नैन-चैन, रास्ता चलते हुए आत्मा को भी अपनी तरफ आकर्षित कर लेते हैं, ऐसे ही यह तकदीर की तस्वीर भी सर्व आत्माओं को अपनी रुहानी दृष्टि व सदा स्मृति और वृति से अपनी तरफ आकर्षित जरुर करती है।''

अ.बापदादा 18.7.74

‘‘वृति और स्मृति दोनों ही पुरूषार्थ में आगे बढ़ने में सहयोगी होते हैं। स्मृति बनती हैं संग से और वृति बनती है वातावरण व वायुमण्डल से।... तो आप लोगों को अमृतवेले से लेकर रात तक सारा दिन यही श्रेष्ठ संग हैं, शुध्द वातावरण है और शान्त वायुमण्डल है।... तो स्मृति और वृति सहज ही श्रेष्ठ हो सकती है।’’ अ.बापदादा 20.2.74

‘‘ऐसी अपनी श्रेष्ठ वृत्ति बनाओ जो कैसा भी विकारी, पतित आपकी वृत्ति के वायुमण्डल से परिवर्तन हो जाये। ... वृत्ति बदल गई है ? सम्पन्न पवित्रता, यह सच्चा-सच्चा व्रत लेना वा प्रतिज्ञा करना।’’ अ.बापदादा 7.03.05

‘‘जैसे मलेच्छ भोजन की बदबू समझ में आ जाती है, वैसे मलेच्छ संकल्प रूपी आहार स्वीकार करने वाली आत्माओं के वायब्रेशन से बुद्धि में स्पष्ट टचिंग होती है।’’ अ.बापदादा 28.10.1975

‘‘ऐसी प्युरिटी की पर्सनैलिटी हो कि जो मस्तक द्वारा शुद्ध आत्मा और सतोप्रधान आत्मा दिखाई दे अर्थात् अनुभव कर सके, नयनों द्वारा भाई-भाई की वृत्ति अर्थात् शुद्ध-श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा वायुमण्डल व वॉयब्रेशन परिवर्तित कर सको।... ऐसी रॉयल्टी और पर्सनैलिटी स्वयं में प्रत्यक्ष रूप में लाओ।’’ अ.बापदादा 5.02.75

राम और रावण का राज / रावण के दस शीश का राज

खास भारत में और आम सारी दुनिया में राम-रावण का गायन तो करते हैं परन्तु राम कौन है और रावण कौन है, इस सत्य का ज्ञान किसी को नहीं भी नहीं है, जो अभी परमात्मा ने बताया है और आत्माओं रावण की जेल से मुक्त करके रामराज्य में चलने के लिए आवाह्न कर रहे हैं। राम परमपिता परमात्मा शिव का प्रतीक है। राम शब्द दो भाव-अर्थ से याद किया जाता है। एक राम परमात्मा का प्रतीक है और दूसरा राम त्रेता का राजा होता है। राम परमात्मा सीता रूपी आत्माओं को पांच विकारों के बन्धन से मुक्त करते हैं, इसलिए आत्मायें राम परमात्मा को याद करती हैं। दूसरा राम जो त्रेता का राजा बनता है, वह इस राजयोग की पढ़ाई में फेल होने अर्थात् कम मार्क्स लेने के कारण त्रेता का राजा बना, सतयुग का महाराजा नहीं बन सका। अनभिज्ञता के कारण मनुष्यों दोनों राम को एक समझ लिया है। वास्तव में जैसे सतयुग की गद्दी का नाम लक्ष्मी-नारायण है, वैसे ही त्रेता की गद्दी का नाम सीता-राम है।

विष्णु चतुर्भुज के समान ही रावण अपवित्र युगल स्वरूप का प्रतीक है - इस सत्य का ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है। रावण कोई लंका का राजा नहीं था बल्कि सारी दुनिया ही लंका है और सारी दुनिया में रावण का राज्य है। दस शीश वाला कोई मनुष्य न हुआ है और न हो सकता है। 5 विकार पुरुष में और 5 विकार स्त्री के मिलाकर दस शीश वाला रावण दिखाया गया है। रावण को बहुत विद्वान दिखाते हैं, फिर भी उसके ऊपर गधे का शीश भी दिखाते हैं। रावण की नाभी में अमृत दिखाते हैं, जो इस बात का प्रतीक है कि ये विकार सहज नहीं मरते हैं, फिर-फिर जिन्दा हो जाते हैं, इसलिए रावण पर जीत पाने के अभिलाषी पुरुषार्थी को सदैव सचेत रहना चाहिए और अन्त तक पुरुषार्थ में ढीला नहीं होना चाहिए।

‘‘किसको भी न मेरी पहचान है, न ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की, न लक्ष्मी-नारायण, न राम-सीता की पहचान है।... विष्णु को चार भुजायें, रावण को दस शीश दिखाते हैं। यह क्या है, किसको भी पता नहीं है। बाप ही आकर सारे वर्ल्ड के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज देते हैं।’’ सा.बाबा 7.2.05 रिवा.

‘‘बाप आकर रावण की जेल से छुड़ाते हैं। अभी रावण का राज्य है, पतित राज्य जो आधाकल्प से शुरू हुआ हुआ है। रावण के 10 शीश दिखाते, विष्णु को 4 भुजा दिखाते हैं। ... यह तो प्रवृत्ति मार्ग दिखाया जाता है।’’ सा.बाबा 8.2.05 रिवा.

‘‘राम ने भी कम मार्क्स लिए हैं तब तो क्षत्रिय दिखाया है। यह भी कोई समझते नहीं कि राम को धनुष-वाण क्यों दिखाया है। श्रीकृष्ण को स्वदर्शन चक्र दिखाया है।’’ सा.बाबा 2.2.05 रिवा.

‘‘आत्मा विकारी मार्ग में जाती ही तब है, जब रावणराज्य शुरू होता है। सतयुग में रावणराज्य ही नहीं तो विकार हो कैसे सकता। वहाँ है ही योगबल। भारत का राजयोग मशहूर है।... एक बार चिन्मियानन्द कह दे कि सचमुच भारत का प्राचीन

राजयोग सिवाए ब्रह्माकुमारियों के कोई सिखला नहीं सकते, तो बस। परन्तु ऐसा कायदा नहीं है जो अभी यह आवाज हो।''

सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

''बाप के बनते हैं तो माया से युद्ध चलती है। युद्ध होने से ट्रेटर बन पड़ते हैं। रावण के थे, राम के बने, फिर रावण राम के बच्चों पर जीत पहन अपनी तरफ ले जाता है। ... फिर न वहाँ के रहते और न यहाँ के रहते हैं।'' सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

''अभी हम पराये राज्य में हैं। ... आगे हम रावण राज्य को अपना राज्य समझ बैठे थे। यह भूल गये कि पहले हम रामराज्य में थे, 84 के चक्र में आने से रावण राज्य दुख में आकर पड़े हैं, दुख में आकर पड़े हैं।'' सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

''रावण सारी दुनिया का आम और भारत का खास दुश्मन है, इसलिए रावण को जलाते रहते हैं। ... तुम ही ऊंच चढ़ते हो फिर तुम ही नीचे गिरते हो। शिव-जयन्ति भी भारत में ही होती है तो रावण-जयन्ति भी भारत में ही होती है।''

सा.बाबा 20.11.04 रिवा.

Q. रावण राज्य क्या है, जिसके कारण आत्मा विकार में चली जाती है?

Q. रावण राज्य के कारण आत्मा विकार में जाती है या आत्मा के विकार में जाने से रावण राज्य शुरू होता है?

A. देहाभिमान ही रावण है, जिसके आने से आत्मा वाम मार्ग अर्थात् विकार में चली जाती है। काम विकार में जाने से आत्मा दुखी हो जाती है। अजर-अमर आत्मा भी काम विकार के कारण मृत्यु-दुख को सहन करती है। काम विकार आत्मा के दुख का मूल कारण है। काम विकार ही रावणराज की मुख्य पहचान है अर्थात् त्रेतायुग के अन्त में भल आत्मा की चार कलायें कम हो जाती हैं परन्तु उस समय तक रावणराज्य नहीं कहा जाता है क्योंकि आत्मा काम-विकार में नहीं जाती है। द्वापर के आरम्भ होते ही आत्मिक शक्ति पर देहाभिमान हावी हो जाता है जिसके कारण आत्मा काम-विकार में जाती है और वहाँ से ही रावण राज्य या नर्क शुरू होता है, जो कलियुग के अन्त तक रौरव नर्क बन जाता है क्योंकि वहाँ सभी आत्मायें काम के वशीभूत हो जाती हैं। द्वापर में काम जहाँ सन्तानोत्पत्ति का साधन था, वहीं कलियुग के अन्त में काम-वासना मनोरंजन का एक साधन बन जाता है।

''बाप कब उल्टी मत नहीं देंगे। सम्मुख आकर श्रीमत देते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि रावण कोई चीज है, जो कोई की बुद्धि में बैठ मत देते हैं। यह सभी ड्रामा में नूँध है। मनुष्य बिल्कुल ही पतित बन जाते हैं माया के कारण। तुम जानते हो - हम देवता बनेंगे, फिर पतित बनना शुरू करेंगे।'' सा.बाबा 20.4.73 रिवा.

कुम्भकरण का राज

कुम्भकरण के लिए रामायण में गायन है कि कुम्भकरण 6 मास सोता था और 6 मास जागता था परन्तु वह कुम्भकरण कौन है, इसके विषय में कुछ भी पता नहीं था। अन्धश्रद्धा से मानते रहते थे। इसका यथार्थ अर्थ अभी पता पड़ा है कि हम आधा कल्प ज्ञान मार्ग दिन में जागते हैं और आधा कल्प भक्ति मार्ग रात में अज्ञान नींद में सोते हैं और संगमयुग पर परमात्मा आकर अज्ञान नींद से जगाते हैं फिर भी जो नहीं जागते, ज्ञान को एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देते वे कुम्भकरण ही हैं अर्थात् घड़े में आवाज करो तो वह जड़ घड़ा क्या सुनेगा!

''कुम्भकरण की नींद में सभी सोये हुए हैं, फिर बाप आकर जगाते हैं। अभी तुम बच्चों को जगाया है और सब सोये पड़े हैं। तुम भी कुम्भकरण की आसुरी नींद में सोये हुए थे। बाप ने आकर जगाया है।... इसको कहा जाता है अज्ञान नींद।''

सा.बाबा 24.12.04 रिवा.

भस्मासुर का राज

शास्त्रों में भस्मासुर का भी गायन है कि कैसे उसको वरदान मिला हुआ था, जिससे वह जिस पर हाथ रखता था वह भस्म हो जाता था और फिर कैसे उसने अपने आप को ही भस्म कर दिया। अभी भी मनुष्य काम चिता पर बैठकर अपने को आपही भस्म कर रहे हैं। काम वासना के वशीभूत मनुष्य ही भस्मासुर हैं, जो अपने को भी भस्म करते हैं और अपनी दृष्टि-वृत्ति, स्पर्श से दूसरों को भी भस्म करते हैं।

''अभी हरेक काम चिता पर बैठकर अपने को भस्म कर रहे हैं तो भस्मासुर ठहरे। तुम अभी ज्ञान चिता पर बैठकर देवता बनते हो। सारी दुनिया काम चिता पर बैठ भस्म हो गई है।'' सा.बाबा 17.2.05 रिवा.

''भस्मासुर मत बनो। बाप से योग नहीं लगाते हो तो बाप भी माया को इशारा देते, जो श्रीमत पर न चले माया बेटी उनको खा जाओ। माया को बेटी कहते हैं क्योंकि मदद करती है। बाहर से भल कितना भी लव करते हैं, अन्दर जानते हैं कि बिल्कुल डर्टी हैं।'' सा.बाबा 2.5.73 रिवा.

विष्णु और महालक्ष्मी की चार भुजाओं का राज

विष्णु और महालक्ष्मी दोनों को चार-चार भुजायें दिखाते हैं परन्तु दुनिया में चार भुजाओं वाला कोई मनुष्य तो होता नहीं है, फिर ये चार भुजायें क्यों दिखाते हैं, उसका राज़ भी अभी हमको बाबा से मिला है कि विष्णु चतुर्भुज और महालक्ष्मी सतयुग के पवित्र प्रवृत्ति अर्थात् लक्ष्मी-नारायण का प्रतीकात्मक चित्र है। दो भुजायें नारायण की और दो भुजायें लक्ष्मी की। जैसे पतित प्रवृत्ति के प्रतीक रावण को दस शीश दिखाते हैं वैसे ही पवित्र प्रवृत्ति के प्रतीक विष्णु को चार भुजायें दिखाते हैं। महालक्ष्मी भी पवित्र प्रवृत्ति का ही प्रतीक है। दो भुजायें लक्ष्मी की और दो भुजायें नारायण की।

''तुम ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण कुलभूषण, स्वदर्शन चक्रधारी हो। अब वे तो स्वदर्शन चक्र विष्णु को दिखाते हैं। विष्णु को चार भुजायें भी दिखाते हैं।... तुम्हारे कुल का होगा, उसको रचता-रचना की नॉलेज सहज ही बैठ जायेगी।''

सा.बाबा 2.2.05 रिवा.

रामायण और महाभारत का राज

वास्तव में रामायण और महाभारत दोनों धार्मिक नॉवेल हैं और दोनों कल्पान्त के वृत्तान्त के आधार पर अलग-अलग कवियों और लेखकों के द्वारा लिखे गये हैं, जिससे दोनों की कथा-वस्तु और पात्र अलग-अलग हैं। दोनों में ही अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना की बात कही गई है। रामायण में भी राम-रावण का युद्ध दिखाते हैं परन्तु वह युद्ध कौनसा है, राम कौन, सीता कौन, रावण कौन आदि आदि सत्यों को नहीं जानते, जो बाबा ने बताया है कि राम है परमात्मा, आत्मा है सीता और रावण है देहाभिमान अर्थात् 5 विकार, जिनसे आत्मा की युद्ध चलती है। जो आत्मा परमात्मा राम का सहारा लेकर चलती है, वही रावण पर जीत पाती है। महाभारत में पाण्डवों और कौरवों की युद्ध दिखाते हैं। पाण्डव धर्म के मार्ग पर चले और वे परमात्मा से प्रीत बुद्धि थे, इसलिए उनकी विजय हुई।

यथार्थता को देखा जाये तो रामायण-महाभारत आदि में आटे में नमक मिसल सत्य है, जिस सत्य के आधार पर उनका महत्व है और मनुष्य उनको श्रृद्धा-भावना से पढ़ते हैं। दोनों में कर्म के अनेक सिद्धान्तों, नीतियों का वर्णन है, जो मनुष्य के लिए हितकर हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने के कारण उनको समझना और धारण करना असम्भव सा ही है।

महाभारत के विषय में भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है -

'अधिकार खोकर बैठ रहना ये महादुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।
इस ध्येय पर ही पाण्डवों का कौरवों से रण हुआ,
जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।'

इन पंक्तियों से पता चलता है कि उनकी बुद्धि में है कि महाभारत युद्ध में भारत का सवोत्कृष्ट वैभव नष्ट हो गया परन्तु ये वास्तविकता नहीं है। सत्य तो परमात्मा ही बताते हैं कि इस युद्ध के बाद ही भारत महान बनता है, इसलिए ही इसको महाभारत कहा जाता है।

''इतने सब शरीरों का विनाश कराये सब आत्माओं को साथ ले जाना, यह तो बहुत भारी काम हुआ। ... बच्चे जानते हैं - महाभारत लड़ाई लगती है तो मच्छरों सदृश्य जाते रहते हैं। नेचुरल कैलेमिटीज भी आने की हैं। यह सारी दुनिया बदलती है।''
सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

महाभारत युद्ध का राज़

महाभारत में पाण्डवों और कौरवों के स्थूल युद्ध का वर्णन है, उसमें विभिन्न प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों का प्रयोग हुआ, भारी रक्त-पात हुआ, अन्त में पाण्डवों की विजय हुई। परन्तु पाण्डवों और कौरवों में ऐसा कोई युद्ध नहीं हुआ है। पाण्डव तो अहिंसक प्रवृत्ति के होते हैं, इसलिए वे हिंसक युद्ध कर नहीं सकते। इसलिए उनका कौरवों से कोई हिंसक युद्ध नहीं हुआ है। पाण्डव परमात्मा से प्रीत बुद्धि होते हैं और परमात्मा पावन बनने के लिए माया पर जीत पहनाते हैं, इसलिए उनका युद्ध तो माया अर्थात् पांच विकारों से होता है। गीता में लिखा है - काम महाशत्रु है, इसको जीतने से जगतजीत बनोगे। महाभारत का युद्ध तो एक विश्वव्यापी युद्ध है, जिसकी अभी तैयारी हो रही है। इस युद्ध में अणु-युद्ध और गृह-युद्ध दोनों ही होने हैं। इस युद्ध साथ ही नेचुरल कैलेमिटीज आदि भी आनी हैं और विश्व का अमूल परिवर्तन होता है। इस युद्ध के बाद ही भारत महान बनता है अर्थात् स्वर्ग बनता है।

''जब तुम 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे, तब विनाश की तैयारी भी पूरी होगी।... कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई हुई नहीं है। लड़ाई कौरवों और यादवों की लगती है।... यहाँ के लिए ही कहते हैं रक्त की नदियां बहती हैं, तब फिर घी की नदियां बहेंगी।... सिविल वार की भी ड्रामा में नूँध है।'' सा.बाबा 12.7.05 रिवा.

''दुनिया एक ही है, बाकी स्टार्स आदि में कोई दुनिया है नहीं।... एक तरफ ऊपर जाकर खोज करते हैं और दूसरी तरफ मौत के लिए बॉम्बस बना रहे हैं।... ये वही महाभारत लड़ाई है।'' सा.बाबा 12.7.05 रिवा.

वेद-पुराणों का राज

परमात्मा आकर सभी शास्त्रों, वेद, पुराणों का राज़ बताते हैं। इनके पढ़ने से किसी भी आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्त नहीं मिल सकती, चढ़ती कला नहीं हो सकती क्योंकि मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता तो एक पतित-पावन परमात्मा ही है, जो आकर सत्य ज्ञान देते हैं। परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह ओरली ही ज्ञान देते हैं, किसी वेद-शास्त्र आदि को हाथ में नहीं उठाते हैं और न उनके ज्ञान का कोई शास्त्र आदि बनता है। उनके ज्ञान के आधार पर द्वापर में गीता शास्त्र बनता है परन्तु उसमें भी यथार्थ ज्ञान आटे में नमक के मिसल है क्योंकि उसके बाद विनाश और दो युगों के अन्तराल के कारण सब कुछ विस्मृत हो जाता है। वेदों के विषय में जो एक भ्रान्ति है कि वेद अनादि हैं, वह भी सत्य नहीं है। सभी वेद, शास्त्र, पुराण, गीता, आदि द्वापर से भक्ति मार्ग में लिखे जाते हैं। विश्व में कोई भी चीज अपने यथा स्वरूप में अनादि नहीं है। परिवर्तनशील जगत है, सब समयानुसार परिवर्तन अवश्य होता है।

जड़-जंगम और चेतन प्रकृति का राज

इस विश्व में तीन प्रकार की प्रकृतियां हैं - जड, जंगम और चेतन। आत्मा की चेतनता क्या है और वह जड़-जंगम से किस तरह से भिन्न है, इसका राज़ भी अभी बाबा ने बताया है। जड़ प्रकृति में पंच तत्व हैं, जंगम में पेड़-पौधे हैं और चेतन में आत्मायें हैं। परमात्मा भी एक चेतन आत्मा है, जो गुणों और शक्तियों में अन्य आत्माओं से भिन्न है। चेतन आत्मा अविनाशी है, उसकी स्वतन्त्र सत्ता है और उसमें मन-बुद्धि-संस्कार भी अविनाशी है। जंगम का बीज होता है, जिसमें शरीर के समान पेड़ के विकास के संस्कार होते हैं परन्तु उसमें कोई बाहर से चेतन आत्मा प्रवेश नहीं करती है, इसलिए उनको चेतन नहीं कहा जाता है। उनको जंगम प्रकृति कहा जाता है। कुछ पेड़-पौधों के बीज होते हैं, कुछ की कलम लगती है, कुछ के बीज और कलम दोनों से पेड़ अस्तित्व में आता है। पेड़-पौधों में चेतन आत्मा के समान महसूसता शक्ति, स्मृति शक्ति, स्थान परिवर्तन की शक्ति,

अविनाश्यता शक्ति नहीं होती है। पेड़-पौधों में अलग से कोई आत्मा प्रवेश नहीं करती है और न उनसे कोई आत्मा निकल कर दूसरे पेड़-पौधे में प्रवेश करती है। इससे स्पष्ट है कि उनमें कोई चेतन आत्मा जैसी स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। इसलिए कह सकते हैं उनमें विकास के संस्कार तो हैं लेकिन चेतनता के प्रतीक मन-बुद्धि नहीं हैं। जड़ प्रकृति में पंच तत्व आते हैं, जो न बढते हैं और न ही घटते हैं परन्तु उनके परमाणुओं का संघटन-विघटन होता है। उनमें जंगम और चेतन के समान संस्कार नहीं होते हैं। पांचो तत्व मिलकर जंगम प्रकृति और चेतन आत्मा के लिए शरीर आदि का निर्माण होता है। जड़ और जंगम के विषय में बाबा ने बताया है कि ये सब चेतन आत्मा के लिए फर्नीचर है। जैसी आत्मा वैसा उसका फर्नीचर।

चेतन आत्मा के सुख के लिए तीनों प्रकृतियों का महत्व है। जीवन को सुखमय बनाने या जीवन का सच्चा सुख अनुभव करने के लिये तीनो के साथ मधुर व्यवहार, मधुर सम्बन्ध, मधुर तादात्म स्थापित करना परमावश्यक है और इसके लिये तीनो के अस्तित्व का यथार्थ ज्ञान परमावश्यक है। परमात्मा यथा आवश्यक तीनों के विषय में ज्ञान देते हैं।

''बाप आते हैं कलियुग अन्त और सतयुग आदि के संगम पर।... बाप चैतन्य बीजरूप है, उनको सारे झाड़ की नॉलेज है।... बाप आते हैं देवी-देवता धर्म की स्थापना करने।'' सा.बाबा 21.9.04 रिवा.

(वास्तव में ज्ञान को ही बीज कहा जायेगा क्योंकि परमात्मा जब ज्ञान देता है तब ही इस झाड़ की नई कलम लगती है अर्थात् परमात्मा ज्ञान का बीज बोता है)

आत्मा का न साइज घटता-बढ़ता है और न ही संख्या घटती-बढ़ती है। साइज भी निश्चित है और संख्या भी निश्चित है।

''आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। आत्मा 84 जन्म लेकर सारा पार्ट बजाती है। आत्मा घटती-बढ़ती नहीं है, शरीर घटता-बढ़ता है। आत्मा कैसे शरीर में आती, कैसे और कहाँ से निकलती है?... आत्मा अलग है, जीव अलग है।''

सा.बाबा 4.9.04 रिवा.

''परमात्मा को ही नॉलेजफुल बीजरूप कहा जाता है, उनको सत्-चित्-आनन्द का सागर क्यों कहा जाता है? झाड़ का बीज है, उनको भी झाड़ का मालूम तो है ना परन्तु वह है जड़ बीज। उसमें आत्मा जैसे जड़ है, मनुष्य में है चेतन्य आत्मा। चेतन्य आत्मा को ज्ञान का सागर भी कहा जाता है। झाड़ भी छोटे से बड़े होते हैं, तो जरूर उनमें आत्मा है परन्तु बोल नहीं सकती। परमात्मा की महिमा है ज्ञान का सागर।'' सा.बाबा 6.8.04 रिवा.

जड़ तत्वों के पावन होने का राज

परमात्मा आकर आत्माओं के साथ जड़ तत्वों को पावन करते हैं क्योंकि पावन आत्मा के लिए तत्व भी पावन चाहिए। बाबा ने कहा है तुम्हारे योग के प्रभाव से ये तत्व भी पावन होते हैं। आत्मा पावन होती तो उसके प्रभाव से और उसके लिए जड़ तत्व भी पावन बनते हैं। ब्रह्मा बाबा के पार्थिव देह के अग्नि संस्कार के बाद अव्यक्त बापदादा जो महावाक्य उच्चारे, उनमें इस रहस्य का भी ज्ञान दिया कि ये पंच तत्वों की देह पंच तत्वों में विलीन होकर पंच तत्वों को भी पावन करेगी।

''जब अपने में शक्ति आ जाती है तो फिर वातावरण का भी असर अपने पर नहीं होता है लेकिन हमारा असर वातावरण पर रहे। सर्वशक्तिवान वातावरण है या बाप? जब सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हो तो फिर वातावरण बाप से शक्तिशाली क्यों? अपनी शक्ति को भूलने से ही वातावरण का असर होता है।... हमको वातावरण बनाना है।'' अ.बापदादा 24.1.70

मेहमान और महानता का राज

हमारा घर परमधाम है और हम इस जगत में मेहमान हैं, जो मेहमान समझकर यहाँ पार्ट बजाता है, वही महान बनता है। परमात्मा सदा ही मेहमान बनकर आते हैं और मेहमान बनकर पार्ट बजाते हैं, इसलिए वह सर्वात्माओं में महान है और वे हमको भी मेहमान बनकर पार्ट बजाने का पाठ पढ़ाते हैं। जो जितना ही इस पाठ को पढ़कर मेहमान बनकर पार्ट बजाता है, वह उतना ही महान बनता है क्योंकि उसका इस जगत की वस्तु और व्यक्तियों में न लगाव होता है और द्वेषभाव होता है।

''महान और मेहमान - इन दोनों स्मृति में रहने से स्वत: और सहज ही जो भी कमजोरियां वा लगाव के कारण उपराम स्थिति न रह आकर्षण में आ जाते हैं वह आकर्षण समाप्त हो उपराम हो जायेंगे।... मेहमान सिर्फ इस सृष्टि में भी नहीं लेकिन इस शरीर रुपी मकान में भी मेहमान हो।''
अ.बापदादा 2.4.72

देह में रहते, देह से न्यारे अर्थात् अशरीरी होने का राज़

देह में रहते देह से न्यारी स्थिति परमानन्दमय है। जो आत्मायें अपने आत्मिक स्वरूप को पहचान कर उसमें स्थित होकर शिव परमात्मा की सतत अव्यभिचारी याद का अभ्यास करती हैं, वे इस स्थिति का सुख अनुभव करती हैं। यही संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव करने की स्थिति है। देह में रहते देह और देह के सम्बन्धों से न्यारे आत्मिक स्वरूप का यथार्थ ज्ञान और उस स्थिति में स्थित होने के पुरुषार्थ का सहज मार्ग अभी परमात्मा ने बताया है।

अभी परमात्मा ने आत्मा का जो यथार्थ ज्ञान दिया है और अशरीरी होने का रास्ता बताया है, उससे हम इस दुखी दुनिया में रहते भी अशरीरी होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का देव-दुर्लभ परम सुख का अनुभव करते हैं और कर सकते हैं। आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है, इसलिए देह में रहते देह से न्यारी आत्मा को ये अनुभूति स्वत: और सहज होती है।

आत्मा जब अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो प्रकृति भी उसकी दासी होती है और जब अपने स्वरूप को भूल का देहाभिमानी बन जाती है तो प्रकृति के वश होकर दुख पाती है फिर देहीअभिमानी कैसे बनें, यह सब ज्ञान बाप ही आकर देते हैं। जब आत्मा अपने यथार्थ स्वरूप में स्थित होती है तो उसके लिए जीवन और मृत्यु समान सुखदायी हो जाते हैं क्योंकि उसे इस देह में रहते भी किसी प्रकार की दुख की महसूसता नहीं होती है और देह को छोड़ने और छोड़कर जाने का कोई भय नहीं होता है क्योंकि उसे न यहाँ की किसी चीज से लगाव होता है और उसे अपना भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है।

''अपने को आत्मा समझ दूसरे को भी आत्मा देखने की प्रेक्टिस डालो, इस युक्ति से तुम्हारी यह बीमारी निकल जायेगी।... जितना तुम देही-अभिमानी होंगे, उतना तुम्हारे में कशिश आयेगी। अभी इतना इस देह और पुरानी दुनिया से पूरा वैराग्य नहीं आया है।''
सा.बाबा 6.11.04 रिवा.

''अभी तुमको ज्ञान मिलता है। ज्ञान सहित याद में रहने से पाप कटते हैं। यह ज्ञान और कोई को नहीं है। मनुष्य यह थोड़ेही समझते हैं - हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं, हमको शरीर से डिटैच होकर बैठना है। यहाँ तुमको बल मिलता है, जिससे तुम अपने को आत्मा समझ बाप की याद में बैठ सकते हो। कैसे अपने को आत्मा समझ डिटैच होकर बैठना है, यह बाप ही समझाते हैं।''
सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

''अशरीरी बनने की शिक्षा कोई जानते ही नहीं हैं।... तुम बच्चे जब यहाँ बैठते हो तो इस धुन में बैठो कि हम सब आत्मायें अशरीरी हैं।''
सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

''जब रुहानी चित्र व तस्वीर आकर्षणमय बनायेंगे तो अनेक आत्मायें चलते-फिरते भी देह-अभिमान से निकल देही-अभिमानी बन जायेंगी। जब स्थूल चित्रों में इतनी आकर्षण है, तो क्या आप रुहानी चैतन्य चित्रों में उतनी रुहानी आकर्षण नहीं है ?''
अ.बापदादा 18.7.74

जन्म-मृत्य और पुनर्जन्म का राज

जन्म, मृत्यु और जन्म का ये चक्र परम कल्याणकारी है और ड्रामा के सफल मंचन के लिए ये अति आवश्यक है। मृत्यु आत्मा को प्रकृति का परम वरदान है, जो अज्ञानता और मोहवश अभिषाप बन गई है। यथार्थता ये है कि मृत्य और जन्म इस विश्व-नाटक में एक अति आवश्यक, कल्याणमयी और सुखदायी घटनायें हैं, जो अज्ञानतावश दुखदायी हो जाती हैं। मृत्यु और जन्म ही आत्मा को पुराना वस्त्र त्याग कर नया वस्त्र धारण करने का आधार है। पुनर्जन्म तो ड्रामा में पार्ट बजाने के लिए वस्त्र बदलने जैसा ही है। लौकिक गीता में भी ऐसा ही वर्णन किया गया है। परमात्मा तो कभी गर्भ से जन्म नहीं लेते परन्तु और

सभी आत्मायें शरीर धारण करती हैं और पुनर्जन्म लेकर पार्ट बजाती हैं। इसीलिए गीता में नष्टोमोहा का उपदेश दिया गया है कि देह की यथार्थता को जानकर इस देह से भी मोह निकाल देंगे तो अपनी देह के त्याग या दूसरों के देह-त्याग से दुखी नहीं होंगे।

जन्म और मृत्यु ही आत्माओं को अन्य आत्माओं के साथ हिसाब-किताब बनाने और चुकता करने का आधार बनता है। अर्न्तदृष्टि से देखें तो मृत्यु और जन्म इस मृत्युलोक में भी किसी के खुशी का आधार बनता है तो किसी के दुख का आधार बनता है।

''भक्ति के संस्कार वाले जाकर मनुष्यों के पास जन्म लेंगे, ज्ञान के संस्कार वाले नई दुनिया में जाकर जन्म लेंगे। यह भी जरूर है कि तुम हो ब्राह्मण हो तो तुम ब्राह्मण कुल में ही जन्म लेंगे, न शूद्र कुल में न देवताओं के कुल में। यह ज्ञान बुद्धि में चक्कर लगाना चाहिए। साथ-साथ बाबा को भी याद करना है।'' सा.बाबा 10.10.68

मृत्यु और अमरत्व का राज़

मृत्यु इस जगत में अनिवार्य, अति-प्रिय, सबसे अच्छी और सुखद घटना है, जो आत्माओं को प्रकृति का परम उपहार है। अन्तर्दृष्टि से देखें तो मृत्यु इस विश्व-नाटक में आत्माओं के लिए प्रकृति का परम वरदान है क्योंकि मृत्यु ही एक जीर्ण-क्षीर्ण देह रूपी वस्त्र को उतार कर नया धारण करने का आधार है परन्तु अज्ञानतावश वह अभिशाप बन गई है। देहाभिमान मृत्यु-दुख का मूल कारण है और आत्मिक स्थिति अमरत्व का मूलाधार है क्योंकि देह विनाशी है और आत्मा अविनाशी है। जन्म और मृत्यु ही आत्मा के लिए एक वस्त्र को उतारना और नये वस्त्र को धारण करने का आधार है, जिसके आधार पर ही ये विश्व-नाटक का खेल 5000 वर्ष तक सफलतापूर्वक चलता है। आत्मायें भिन्न-भिन्न देह रूपी वस्त्रों को उतार और धारण कर पार्ट बजाती हैं। मृत्यु और जन्म आत्मा को पुनस्फूर्ति (Refresh) प्रदान करते हैं।

''मुख्य है निर्भयता का गुण। निर्भयता कैसे होगी, उसके लिए मुख्य साधन क्या है? निराकारी बनना। जितना निराकारी अवस्था में होंगे उतना निर्भय होंगे। भय शरीर के कारण ही होता है।'' अ.बापदादा 26.5.69

Q. मृत्यु क्या है?

शिवालय-वेश्यालय का राज़ / क्षीर सागर और विषय-सागर का राज़

शिवालय और वेश्यालय का राज़ भी परमात्मा ने बताया है अर्थात् वेश्यालय क्या, कब और कहाँ है और शिवालय कब और कहाँ है। कैसे परमात्मा वेश्यालय को शिवालय बनाते हैं, वह भी बताया है। स्वर्ग को शिवालय कहा जाता है क्योंकि शिवबाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं, इसलिए उसको शिवालय कहते हैं। परमधाम को भी शिवालय कहेंगे क्योंकि शिवबाबा वहाँ रहते हैं। बाबा ने इस ब्रह्मा तन को भी शिवालय कहा है क्योंकि शिवबाबा इस तन में आकर नई दुनिया रचते हैं। मधुवन को भी शिवालय कहेंगे क्योंकि शिवबाबा यहाँ आकर अपना कर्तव्य करते हैं। संगमयुग भी शिवालय है क्योंकि शिवबाबा संगमयुग में आते हैं। शिवबाबा के मन्दिर को भी शिवालय कहते हैं क्योंकि वह शिवबाबा की यादगार है। इस समय सारी दुनिया ही वेश्यालय है क्योंकि सभी विषय-विकारों में जाते रहते हैं। बाप ऐसे वेश्यालय में ही आकर इसको शिवालय बनाते हैं।

''कितना गंद लगा हुआ है, इसको कहा ही जाता है वेश्यालय। सब विष से पैदा होते हैं। तुम ही शिवालय में थे... मनुष्यों को शिवालय का पता ही नहीं है। स्वर्ग को कहा जाता है शिवालय। शिवबाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं।''

सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

''शिवबाबा आकर शिवालय रचते हैं। आते कहाँ हैं? वेश्यालय में... भक्ति मार्ग में अगर आमदनी होती तो भारतवासी बहुत साहूकार हो जाते।'' सा.बाबा 10.5.05 रिवा.

''यह है ही विषय सागर, सभी रौरव नर्क में पड़े हैं... यह है छी-छी दुनिया, इससे दिल नहीं लगानी है।''

सा.बाबा 1.8.05 रिवा.

Q. पूज्य देवताओं और पुजारी मनुष्यों में क्या अन्तर है ?

जीते जी मरने का राज

आत्मा अविनाशी है और देह रूपी वस्त्र को धारण कर इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाती है। इस सत्य को जानकर देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा होकर अपने मूल स्वरूप अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास करना ही जीते जी मरना है। ये अभ्यास ही आत्मा को मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त कर जीवनमुक्ति का अनुभव कराता है। जीते जी मरने का राज़ अभी परमात्मा ने बताया है। अपने पुराने संस्कारों को मिटाकर नये संस्कार धारण करना भी जीते जी मरना है और परमात्मा का गोद का बच्चा बनकर पुरानी दुनिया के सम्बन्धों को भूल कर नये ईश्वरीय सम्बन्ध में आना, उनको निभाना भी जीते जी मरना है। जो पुराने संस्कारों को भूलकर नये संस्कारों को धारण करते हैं वे ही सफलतापूर्वक पुरानी दुनिया से मरकर ईश्वरी जन्म का सच्चा सुख अनुभव करते हैं।

लौकिक दुनिया अर्थात् पतित शूद्रपन से निकल कर परमात्मा पिता की गोद लेना ही जीते जी मरना है। जो जीते जी शूद्र परिवार को छोड़कर अर्थात् सन्यास कर परमात्मा की गोद लेकर ब्राह्मण बनता है, उसका ये दिव्य जन्म होता है, जिसको ही जीते जी मरना कहा जाता है।

''हम आत्मायें ऊपर से कैसे आती हैं, फिर कब जायेंगी ?... यहाँ तो बाप ने कहा है - तुम इस शरीर को भूलते जाओ। बाप तुमको जीते जी मरना सिखलाते हैं, जो और कोई सिखला न सके... घर वापस कैसे जाना है - यह ज्ञान अभी ही मिलता है... यह पुरुषोत्तम संगमयुग जब आता है तब ही वापस जाना होता है।'' सा.बाबा 30.8.04 रिवा.

''थोड़ी सी चीज न मिलने से दुख होता है। पाई पैसे की चीज न मिलने से मुर्झा जाते हैं। यह सब है देहाभिमान का रोला। बाप कहते हैं - मैं साक्षी होकर देखता हूँ। कितने बच्चे विनाश को पाते हैं। कहेंगे यह भी ड्रामा। हम अशरीरी हैं, जैसे मरे पड़े हैं, दुनिया भी मरी पड़ी है। हमारा इस दुनिया से कोई काम नहीं है। हमारा काम है स्वीट होम से। अपनी अवस्था को जमाना है।''
सा.बाबा 1.11.73 रिवा.

अमृत और विष का राज

ज्ञान अमृत है और काम-वासना विष है क्योंकि काम के वशीभूत आत्मा ही मृत्यु-दुख को अनुभव करती है और ज्ञान की धारणा से अमरत्व का अनुभव करती है। इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने ही अभी दिया है। यथार्थ आत्मिक ज्ञान से मनुष्य अमरत्व का अनुभव करते हैं और अज्ञानता के वशीभूत देहाभिमान विष का काम करता है, जिससे आत्मा मृत्यु-दुख का अनुभव करती है। यह राज़ भी अभी परमात्मा ने बताया है, जिससे हम मृत्यु-दुख से मुक्त हो अमरत्व का अनुभव करते हैं।

''ज्ञान को अमृत कहा जाता है... ज्ञान का सागर, जगत का गुरु एक को ही कहा जाता है। वह तत्वों सहित सर्व आत्माओं को पावन बनाते हैं। ड्रामा में उनका ही यह पार्ट है।'' सा.बाबा 22.10.04 रिवा.

''बाप तुमको विष के सागर से निकाल कर क्षीरसागर में ले जाते हैं... इस ज्ञान अमृत का ही गायन है। ज्ञान अमृत का गिलास पीते रहना है।'' सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

''तुम फिर से देवता बनते हो तो वह नशा रहना चाहिए... ज्ञान अमृत हज़म ही नहीं होता है। जिनको नशा चढ़ा हुआ होगा, वे किसका कल्याण करने के सिवाए और कोई बात करना भी अच्छा नहीं समझेंगे।'' सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

अमर-लोक और मृत्यु-लोक का राज

सतयुग-त्रेता युग को अमर-लोक कहा जाता है और द्वापर-कलियुग को मृत्यु-लोक कहा जाता है क्योंकि आत्मिक शक्ति होने के कारण सतयुग-त्रेता में जीवात्माओं को जन्म-मरण में आते भी मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय की महसूसता नहीं होती है। वहाँ पर मृत्यु शब्द भी नहीं होता होता है। वहाँ जन्म-मरण को वस्त्र बदलना समझा जाता है। इसलिए कल्प के इस भाग को अमर-लोक कहा जाता है। द्वापर-कलियुग में देहाभिमान के कारण विकार और विकारों के कारण जीवात्माओं को मृत्यु के दुख

और मृत्यु के भय की महसूसता होती है, इसलिए कल्प के इस आधे भाग को मृत्यु-लोक कहा जाता है। देहाभिमान के वशीभूत काम-वासना में प्रवृत्त आत्मा को मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय का दुख भोगना ही पड़ता है। इसके आधार पर ही दुनिया को अमरलोक और मृत्यु-लोक कहा जाता है। इस सत्य का ज्ञान भी अभी ही हुआ है।

अमरलोक और मृत्युलोक का यथार्थ ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है और उनके देश, काल, स्थिति के विषय में भी बताया है। अमरलोक और मृत्युलोक शब्द क्यों प्रयोग किया जाता है, उसका रहस्य भी बताया है।

''सतयुग को कहा जाता है अमरलोक और कलियुग को कहा जाता है मृत्युलोक। दुनिया में यह कोई नहीं जानते कि अमरलोक था, वह फिर मृत्युलोक कैसे बना। अमरलोक अर्थात् अकाले मृत्यु होती नहीं।'' सा.बाबा 17.3.05 रिवा.

मृत्यु और मृत्यु-विजय का राज़ / मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय का राज़ और उनसे मुक्त होने का राज़

मृत्यु इस अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक की अपरिहार्य घटना है, जो इस विश्व-नाटक का आत्मा को परम वरदान है, जिसके फलस्वरूप ही आत्मा पुराना वस्त्र त्याग कर नया वस्त धारण करती है। परन्तु अज्ञानता जनित देहाभिमान के कारण मोहवश यह वरदान अभिषाप बन गया है, जिससे आत्मा दुखी होती है। अभी परमात्मा ने यथार्थ राज समझाया है, जिससे हम मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त हो जीवन के परम सुख का अनुभव करते हैं।

आत्मा तो अविनाशी है, वह वस्त्र के समान एक शरीर छोड़कर दूसरा धारण कर इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाती है। सत्य ज्ञान और आत्मिक स्वरूप का सफल अभ्यास वाले को मृत्यु का न भय होगा और न मृत्यु का कोई दुख होगा। आत्मा की वह स्थिति ही अमरत्व या मृत्यु पर विजय है। देहाभिमान के कारण मोहवश आत्मा देह के त्याग में दुखी होती है। मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त होने के लिए ही परमात्मा जीते जी मरने का अभ्यास कराते हैं। सतयुग में आत्मिक शक्ति होने के कारण आत्मा को देह-त्याग में न मृत्यु का भय और न मृत्यु का दुख होता है। वास्तव में वहाँ मृत्यु शब्द ही नहीं होता है। इसलिए देवतायें अमर कहलाते हैं। ये मृत्यु और अमर शब्द भी द्वापर-कलियुग में ही निकलते हैं, सतयुग में दोनों ही शब्दों का प्रयोग नहीं होता है।

देह में रहते देह से न्यारे होने का अभ्यास ही मृत्यु-विजय, सुखमय मृत्यु या अमरत्व का यथार्थ पुरुषार्थ है। इस पुरुषार्थ में सफल अभ्यासी ही समय पर मृत्यु पर जीत पा सकते हैं। मृत्यु पर जीत पाने का ये अर्थ नहीं कि वह मरेगा नहीं लेकिन स्वेच्छा से सुखी मन से देह का त्याग करेगा। परमात्मा आकर हम आत्माओं को ये जीते जी मरने का अभ्यास सिखाते हैं, जिससे आत्मा मृत्यु-भय से मुक्त अमरत्व का अनुभव करती है और अभी का ये अभ्यास ही भविष्य 21 जन्मों तक मृत्यु-भय से मुक्त अमरपद का आधार बनता है, अमरत्व का अनुभव कराता है।

मृत्यु-विजय और देह से सहज न्यारा होने की प्रक्रिया का मूलाधार है, आत्मा की यथार्थता को जानकर देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूलकर निर्संकल्प होकर एक परमात्मा में मन-बुद्धि को एकाग्र करना। समय पर इस देह से स्थाई रूप से सहज न्यारा होने के लिए अभी से ही सहज इस देह से न्यारा होने और देह में प्रवेश होकर कर्म करने का अभ्यास होना परमावश्यक है, तब ही अन्त समय वह स्थिति होगी, जो जीवन की अन्तिम मंजिल है और जीवन की अन्तिम विजय है। ये अभ्यास ही मृत्यु-विजय का अभीष्ट पुरुषार्थ है।

''सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज तुमको अच्छी तरह है... पहले अपने घर जाना है तो खुशी से जाना है। जैसे सतयुग में देवतायें खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं, वैसे इस पुराने शरीर को भी खुशी से छोड़ना है। इससे तंग नहीं होना है। यह बहुत वेल्युबुल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप से लॉटरी मिलती है।'' सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

''व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन देने से ही काल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनेंगे। जब तक समय व्यर्थ जाता है, तब तक विजय पाने में समर्थ नहीं बन सकते। इसी कारण, जो मिलन का अनुभव करना चाहते हो व निरन्तर वायदा निभाना चाहते हो वह निभा

नहीं सकते। तो आप सब, अपनी तकदीर की तस्वीर सर्व-तत्वों पर और काल पर सदा विजयी की बनाओ। जब एक-एक सेकेण्ड, व्यर्थ से समर्थ में चेन्ज करो, तब ही विजयी बनेंगे।'' अ.बापदादा 5.12.74

''बाबा की याद में इस पुरानी दुनिया का सब कुछ भुलाना है। याद की टेव पड़ जायेगी तो जैसे याद में बैठे-बैठे अन्कान्शस हो जायेंगे, अशरीरी हो जायेंगे, शरीर का भान नहीं रहेगा... पिछाड़ी में शरीर खुशी से हर्षित मुख होकर छोड़ना चाहिए। बस, हम कहाँ जा रहे हैं।'' सा.बाबा 9.7.71 रिवा.

अकाले मृत्यु का राज

वास्तव में ज्ञान के दर्पण में यथार्थ दृष्टि से देखा जाये तो अकाले मृत्यु नाम की कोई मृत्यु है ही नहीं क्योंकि ड्रामानुसार हर घटना काल-चक्र के आधार पर अपने निश्चित समय पर ही होती है फिर भी अकाले मृत्यु क्यों कहा जाता है क्योंकि अभी कलियुग में बड़े भाई के होते हुए छोटे भाई की मृत्यु हो जाती है, बाप के रहते बच्चे की मृत्यु हो जाती है, दुर्घटना के वश मृत्यु होती है, इसलिए इसको अकाले मृत्यु की संज्ञा दी जाती है। सतयुग-त्रेतायुग में ऐसी कोई घटना नहीं होती है। वहाँ सब नियमानुसार चलता है। वहाँ नष्टोमोहा होने के कारण भी किसके देह-त्याग से कोई दुखी नहीं होता है।

इस विषय में गुरु गोविन्द सिंह के दो बच्चों के विषय में अच्छा वृतान्त है। जब उनके दो बच्चों को औरंगजेब ने दीवार में जीते जी चिनवाया तो जब दीवार छोटे बच्चे के गले तक आ गई तो बड़ा बच्चा रोने लगा। उसको देखकर छोटे बच्चे ने कहा तू रोता क्यों है, तो बड़े ने उत्तर दिया कि मैं मर रहा हूँ इसलिए नहीं रोता हूँ परन्तु हमको दुख है कि तुम हमारे बाद आये हो और हमसे पहले जा रहे हो।

''सतयुग में कब अकाले मृत्यु होता नहीं, काल आ नहीं सकता। सुखधाम में काल को आने का हुक्म नहीं। राम राज्य और रावण राज्य के अर्थ को भी समझना है।'' सा.बाबा 28.12.04 रिवा.

Q. क्या किसकी मृत्यु समय से पहले हो सकती है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो कैसे? यदि नहीं तो अकाले मृत्यु क्या है?

सुखद जन्म, सुखद जीवन और सुखद मृत्यु का राज़

आत्मा जब पावन होती है तो आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है, आत्मा का शुभ कर्मों का खाता जमा होता है तो आत्मा को मृत्यु का कोई भय नहीं होता है और उसके लिए मृत्यु भी सुखदायी होती है और जब मृत्यु सुखदायी होती है तो जन्म भी अवश्य ही सुखदायी होता है। गर्भ भी महल के समान सुखदायी होता है। सतयुग में तत्व भी सतोप्रधान होते हैं, वहाँ आत्मिक स्थिति भी शक्तिशाली होती है, इसलिए आत्मा को अन्दर-बाहर कोई दुख-दर्द की अनुभूति नहीं होती है अर्थात् न स्वयं दुखी होता है और न और कोई दुखी दिखाई देता है, इसलिए जब समय आता है तो आत्मा स्वेच्छा से देह का त्याग करके चली जाती है। द्वापर कलियुग में देहाभिमान के कारण आत्मा को दुख की महसूसता होती है, जन्मते भी दुख की महसूसता होती है, मोहजाल भी होता है, इसलिए देह के त्याग से आत्मा भयभीत होती है। यथार्थ ज्ञान को समझकर देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा होना और अपने आत्मिक स्वरूप का सफल अभ्यास ही सुखद जन्म, सुखद जीवन और सुखद मृत्यु का पुरुषार्थ है, जो अभी संगमयुग पर परमात्मा ने बताया है। जो इस अभ्यास को जितना ही सफलता पूर्वक करता है, वह उतना ही इस जीवन का सुख पाता है और उसकी मृत्यु और जन्म भी सुखदायी होते हैं।

''मरना भी जरूर है। सबकी अभी वानप्रस्थ अवस्था है। तुमको कोई काल नहीं खायेगा। तुम खुशी से जाते हो... ड्रामा की ये बड़ी वण्डरफुल बात है, इसमें मूँझने की कोई बात ही नहीं है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी हू-ब-हू रिपीट होती है। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता है।'' सा.बाबा 13.10.04 रिवा.

रामायण में भी लिखा है - जन्मत-मरत दुसह दुख होई। हम अभी यह देख या अनुभव तो नहीं कर सकते हैं कि हमारा भविष्य जन्म सुखमय होगा या दुखमय होगा परन्तु अपने वर्तमान से भविष्य जन्म को समझ सकते हैं। यदि अभी हमारी स्थिति, हमारे कर्म संस्कार ऐसे हैं कि हम सहज इस देह से न्यारे हो सकते हैं तो अवश्य ही भविष्य में आने वाली मृत्यु के समय भी ऐसे ही सहज शरीर छोड़ेंगे और जब शरीर सुख से छोड़ेंगे तो भविष्य जन्म भी अवश्य भी सुख से ही लेंगे। उस समय भी न अपने को और न दूसरे को कोई दुख होगा अर्थात् मृत्यु और जन्म दोनों सुखमय होगा। मृत्यु और जन्म का गहरा सम्बन्ध है। मरने के समय जैसी स्थिति होती है, वैसी ही भविष्य जन्म लेते समय होगी अर्थात् सुख-दुख की वैसी ही महसूसता होगी।

वास्तव में सुखद जीवन का यही रहस्य है, जो बाबा ने बताया है कि जो इस विश्व-नाटक, कर्म के सिद्धान्त को ध्यान में रखेगा और इस देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करेगा, उसका ये जीवन सदा सुखमय होगा और मृत्य भी सुखदायी होगा तथा भविष्य जन्म भी सुखमय होगा। यही संगमयुग की परमप्राप्ति और परमात्मा का परम वरदान है।

''पुराना घर छोड़ नया घर लिया, इसमें मरने की क्या बात हुई। रोने पीटने की कोई बात ही नहीं। अफसोस करने की दरकार ही नहीं। खुशी से पुराना चोला छोड़ नया लेते हैं तो उसको कहा जाता है - काया कल्प तरु।'' सा.बाबा 14.8.71 रिवा.

अन्त मति सो गति का राज

अन्त में जैसी स्थिति होती है, स्मृति होती है, उस अनुसार ही भविष्य जन्म होता है। दुनिया में भी आध्यात्मिकता और पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर विश्वास करने वाले लोग इस बात को मानते हैं परन्तु अन्त में हमारी मति अच्छी रहे, इसका यथार्थ मार्ग नहीं समझ पाते हैं, जिससे दिन-प्रतिदिन मति भ्रष्ट ही होती जाती है और भविष्य जन्म भी पतन की ओर ही जाता है। अभी संगमयुग बाप ने यथार्थ ज्ञान देकर बताया है कि अन्त में तुम्हारी बुद्धि में एक बाप और घर परमधाम ही याद रहे, इसका पुरुषार्थ अभी से करना है। बहुत समय का ये अभ्यास ही अन्तिम सफलता का आधार होगा क्योंकि अन्त समय सारे जीवन की कर्म कहानी आत्मा को याद आती है, इसलिए उस समय परमात्मा और घर की याद ठहरती नहीं है। इसलिए बहुत समय का अभ्यास चाहिए। इसके लिए बाबा सदा कहते- अन्त में एक परमात्मा, घर और नई दुनिया की याद रहे, इसका पुरुषार्थ करना है। इस लिए भक्ति में गायन है कि अन्त में गंगाजल मुख में, बाबा कहते ज्ञानामृत बुद्धि में हो।

किसी वस्तु या व्यक्ति से राग-द्वेष न हो अर्थात् न अति प्यार अर्थात् आसक्ति हो और न द्वेष अर्थात घृणाभाव हो क्योंकि ये दोनों ही अन्त में याद आते हैं।

किसी वस्तु को अपने पास छिपाकर भी नहीं रखना है, वह भी अन्त में याद आयेगी और श्रेष्ठ गति से वंचित कर देगी। हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझकर चलना है क्योंकि अन्त किसी भी समय आ सकता है। इसलिए अपने को चेक करते रहना है कि इस क्षण हमारा शरीर छूट जाये तो हमारी क्या गति होगी ?

''अभी इतनी हलचल में नहीं आओ। जब होने वाला होगा तो अव्यक्त स्थिति में स्थित रहने वालों को स्वयं ही आवाज आयेगा, टचिंग होगी, सूक्ष्म संकल्प होगा, तार पहुँचेगी या ट्रंक-काल होगा। लेकिन जब लाइन क्लीयर होगी तब ही तो पकड़ सकेंगे।''

अ.बापदादा 21.7.73

''सोने से पहले वाणी से परे स्थिति में स्थित होकर एक दिन को समाप्त करो फिर दूसरा दिन शुरू करेंगे तो... जैसे अन्त में जाते समय आत्माओं में जो संस्कार मर्ज होते हैं, फिर वही संस्कार इमर्ज होंगे।... याद-अग्नि से वा स्मृति की शक्ति से पुराने खाते को समाप्त कर देना चाहिए... नहीं तो वही कर्ज के रूप में मर्ज बुद्धि को कमजोर कर देता है।'' अ.बापदादा 18.7.71

''पिछाड़ी में कहते हैं राम को याद करो। जो जास्ती समय जिस चिन्तन में रहते हैं, अन्त में भी वह याद आ जाता है... कोई देह के सम्बन्धियों को याद करेंगे। देह को याद किया खेल खलास। यहाँ तुमको एक ही बात समझाई जाती है कि अपने को आत्मा समझ एक बाप को याद करो।'' सा.बाबा 28.6.71 रिवा.

गर्भ-जेल और गर्भ-महल का राज

देह धारण करना और देह का त्याग करना तो सारे कल्प चलता है और इसके आधार पर ही ये विश्व-नाटक सफलतापूर्वक चलता है और देह के आधार पर ही आत्मा सुख-दुख का अनुभव करती है परन्तु वर्तमान कलियुग में आत्माओं को गर्भ में भी अनेक प्रकार के दुख सहन करने पड़ते हैं। शास्त्रों में तो गर्भ को एक जेल की संज्ञा दी गई है, जहाँ आत्मा अपने विकर्मों का पश्चाताप करती है परन्तु ये सदा और सबके लिए समान नहीं है। कहाँ-कहाँ शास्त्रों में गर्भ-महल का भी वर्णन है। परमात्मा ने अभी बताया है कि जब आत्मा पावन होती है तो गर्भ भी सुखदायी होता है। सतयुग-त्रेता आत्मायें पावन होती हैं, तत्व भी पावन होते हैं, आत्माओं के कोई विकर्म नहीं होते, इसलिए वहाँ गर्भ भी महल के समान सुखदायी होता है। शास्त्रों में शुकदेव के विषय में ऐसा ही वर्णन है।

गर्भ-जेल और गर्भ-महल का भी गायन है। जेल में सजायें खाते हैं तो महल में मौज मनाते हैं। सतयुग-त्रेता में गर्भ भी महल के समान सुखदायी होता है, द्वापर-कलियुग में गर्भ जेल के समान दुखदायी हो जाता है परन्तु द्वापर-कलियुग में ये निश्चित नहीं कि हर आत्मा को हर समय गर्भ में सजायें ही खानी पड़ें। जो नई आत्मायें आती हैं, वे द्वापर-कलियुग में भी पहले कुछ जन्मों तक सुख से ही गर्भ में रहते हैं और जन्म लेते हैं, बाद में दुख भोगते हैं। इसमें भी आत्मा के कर्मों का हिसाब-किताब काम करता है।

''गर्भ में अन्दर आत्मा सजा भोगती है, इसलिए उनको गर्भ-जेल कहा जाता है। कितना वण्डरफुल ड्रामा बना हुआ है। गर्भ-जेल में सजायें खाते अपना साक्षात्कार करते रहते हैं... साक्षात्कार तो करायेंगे ना कि तुमने यह-यह बेकायदे काम किया है।''

सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

शिव और शंकर का राज

शिव-शंकर को मानने वाले दुनिया में प्राय: सभी दोनों को एक ही सत्ता के दो प्रतिरूप समझते हैं परन्तु दोनों की प्रतिमाओं को देखें तो साधारण बुद्धि वाला भी कहेगा कि ये दो चीजों के चित्र या प्रतिमायें हैं, फिर भी मनुष्यों की बुद्धि इसमें नहीं चलती है। इस सत्य का ज्ञान अभी परमात्मा ने दिया कि शिव तो परमात्मा है और शंकर एक सूक्ष्मवतनवासी देवता है या कहें कि शंकर परमात्मा के एक कर्तव्य विनाश का प्रतीक है। अभी हमको जब परमात्मा से त्रिमूर्ति का ज्ञान मिला है, तब यह सत्य समझ में आया है कि शिव तो ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का भी रचयिता है। शंकर तो उनकी एक रचना है या परमात्मा के एक कर्तव्य का प्रतीक है।

''यूँ तो शंकर कोई विनाश कराते नहीं हैं। जब समय होता है तो लड़ाई लगती है... मकान पुराना होता है तो गिर पड़ता है... कलियुग पूरा हो सतयुग की स्थापना जरूर होनी है।''

सा.बाबा 6.5.05 रिवा.

देवियों और उनकी अनेक भुजाओं का राज

वास्तव में जैसी देवियों की प्रतिमायें या चित्र बनाते हैं, ऐसी कोई देवी या देवता होता नहीं है और न ही किसी भी मनुष्य की इतनी भुजायें होती हैं। वास्तव में ये तो संगमयुग पर जो बहनें परमात्मा का बनकर उनके साथ विश्व को पावन बनाने का कर्तव्य करती हैं, जो आत्मायें उनकी सहयोगी बनती हैं, उनकी यादगार हैं। जैसे बच्चे को बाप की भुजा कहा जाता है, वैसे ही सहयोगी को भी भुजा कहा जाता है। सभी बच्चे परमात्मा और ब्रह्मा की भुजायें हैं और जो आत्मायें बहनों के साथ सहयोगी बनते हैं, वे उनकी भुजायें हैं। इसलिए ब्रह्मा को और देवियों को ही अनेक भुजायें दिखाते हैं।

विष्णु और विष्णु के अलंकारों का राज

विष्णु के समान चार भुजाओं वाला कोई देवता नहीं है। ये पवित्र युगल का प्रतीक है। विष्णु को जो अलंकार दिये गये हैं, वे अलंकार भी वास्तव में सतयुगी युगल अर्थात् विष्णु के नहीं हैं। ये अलंकार तो संगमयुगी ब्राह्मणों के हैं परन्तु ब्राह्मणों को न

देकर विष्णु को दिये गये हैं क्योंकि ब्राह्मणों की स्थिति एकरस नहीं रहती है। हर अलंकारों के गुण-कर्तव्य का राज़ भी बाबा ने बताया है।

''स्वदर्शन चक्र की देवताओं को दरकार नहीं। वह क्या करेंगे शंख आदि का। स्वदर्शन चक्रधारी तुम ब्राह्मण बच्चे हो।''

सा.बाबा 11.10.04 रिवा.

शिव-जयन्ति, गीता-जयन्ति, रक्षा-बन्धन, दशहरा, दीपावली तथा अन्य त्योहारों का राज़ / विभिन्न पर्वों और उत्सवों का राज

वास्तव में कृष्ण जन्माष्टमी को छोड़कर सारे त्योहार संगम युग के ही हैं, जो परमात्मा के दिव्य कर्तव्यों और परमात्मा के साथ ब्राह्मणों के कर्तव्यों के प्रतीक हैं। जिनका यादगार भक्ति मार्ग में मनाते हैं। सभी त्योहारों का रहस्य ज्ञान सागर बाबा ने बताया है। शिव-जयन्ति के साथ ही गीता जयन्ति होती है और उसके साथ ही रक्षा-बन्धन होता है। रक्षा-बन्धन के बाद आत्मा राम परमात्मा का साथ लेकर पांच विकारों रूपी रावण पर विजय प्राप्त करती, जिसकी यादगार में दशहरा मनाते हैं। देहाभिमान रूपी रावण पर जीत पाकर आत्मा का दीपक जग जाता है और फिर दीपावली की खुशियां बनाती है। सभी त्योहारों का रहस्य बाबा ने अभी बताया है और उनको मनाने अर्थात् बनने का राज़ भी बताया है।

ऐसे ही विभिन्न पर्व और उत्सव भी किसी न किसी रूप में संगमयुग पर मनाये जाते हैं, जिनकी यादगार भक्ति मार्ग में मनाते हैं।

''दीपमाला का अर्थ ही है सफाई और कमाई। सफाई भी सभी प्रकार से करना है और कमाई का लक्ष्य भी बुद्धि में रखना है। ... जितना दिव्य-गुणों का आवाह्न करते जायेंगे, उतना अवगुण आहुति रूप में खत्म होते जायेंगे।'' अ.बापदादा 29.10.70

भारत में अर्थात् मुख्यता हिन्दू धर्म में और विश्व में प्राय: जो भी त्योहार मनाये जाते हैं, वे सभी इस संगमयुग के ही यादगार हैं। अन्य धर्मों में कुछ यादगार त्योहार हैं, वे उनके धर्मपिता के अवतरण के विषय में हैं। परमात्मा के अवतरण का उत्सव शिवरात्रि, परमात्मा के द्वारा पवित्रता की प्रतिज्ञा कराने का उत्सव रक्षा-बन्धन, रावण पर विजय प्राप्त करने उत्सव दशहरा, सर्व आत्माओं का आत्मा रूपी दीप जगने का उत्सव दीपावली, पुरानी दुनिया के विनाश और नई दुनिया के आगमन का उत्सव होली आदि सभी त्योहार संगमयुग पर किसी न किसी रूप में मनाये जाते हैं।

''बापदादा भक्तों को एक बात की आफरीन देते हैं कि किसी भी रूप से भारत में वा हर देश में उत्साह की लहर फैलाने के लिए उत्सव तो अच्छे बनाये हैं। एक-दो दिन के लिए हो लेकिन उत्साह की लहर तो फैल जाती है ना, इसलिए उत्सव कहते हैं।''

अ.बापदादा 7.03.86

''यह अभी का मिलन ही सदाकाल का उत्सव मनाने का यादगार बन जाता है। जो भी भिन्न-भिन्न नामों से समय प्रति समय उत्सव मनाते हैं, वे सभी इस समय बाप और बच्चों के मधुर मिलन, उत्साह भरा मिलन, भविष्य के लिए उत्सव के रूप में बन जाता है।''

अ.बापदादा 7.03.86

''इस समय की सबसे वण्डरफुल बात यही देख रहे हो, जो प्रैक्टिकल भी मना रहे हो और निमित्त उस यादगार को भी मना रहे हो। चेतन्य भी हो और चित्र भी साथ-साथ हैं।''

अ.बापदादा 7.03.86

''एक है स्थूल दीपक और दूसरा है आत्मा का दीपक, तीसरा है कुल का दीपक और चौथा है आशाओं का दीपक... ये चारो ही दीपक जग जायें तब समझो दीपमाला मनाई... जिसका खुद का दीपक जगा हुआ होगा, वह औरों का दीपक जगाने बिगर रह नहीं सकता।''

अ. बापदादा 9.11.69

''आज के दिन अपने आत्मा के संस्कारों में सदा के लिये परिवर्तन लाने का विशेष अटेन्शन दिया ? जब यादगार चलता रुप में आज का दिन पूराने खाते खत्म करने की रीति यादगार रुप में चलता आ रहा है वह अवश्य प्रैक्टिकल रुप में आप आत्माओं ने किया तब तो यादगार चलता आया है।''

अ.बापदादा 18.10.71

''दीपमाला - मिलन मनाने का यादगार माला के रुप में है लेकिन दृढ संकल्पों का यादगार दीपक के ज्योति रुप का है... आत्मा के जैसे संस्कार होते हैं उस प्रमाण ही चोला तैयार होता है। तो नया चोला वा नये वस्त्र कौन से पहनेंगे ? आत्मा में नये युग के

संस्कार वा नये युग के स्थापक बाप जैसे सम्पूर्ण संस्कारों को धारण करना यही नये वस्त्र पहनना है।''

अ.बापदादा 18.10.71

''दीपमाला आदि लक्ष्मी को बुलाने के लिए नहीं होती है। दीपमाला होती है कारोनेशन पर। बाकी इस समय जो उत्सव मनाये जाते हैं, वे वहाँ होते नहीं।'' सा.बाबा 5.8.05 रिवा.

''पावन बनने का रास्ता कोई मनुष्य बता नहीं सकते। पतित-पावन एक ही बाप है... अभी तुम बच्चे पावन बनने की प्रतिज्ञा करते हो, उसका यादगार है यह राखी बन्धन।'' सा.बाबा 10.8.05 रिवा.

Q. दीपमाला सतयुग के कारोनेशन की यादगार है या संगम पर दीप से दीप प्रज्ज्वलित करते, उसकी यादगार है?

श्रीकृष्ण और श्रीनारायण का राज़ / राधे-कृष्ण और लक्ष्मी-नारायण का राज

दुनिया के हिसाब से तो श्रीनारायण का जन्म सतयुग में और श्रीकृष्ण का जन्म द्वापर के अन्त में हुआ परन्तु दोनों की महिमा जब गाते हैं तो उस में श्रीकृष्ण और नारायण का नाम एक साथ ही लेते हैं क्योंकि वे उसका रहस्य नहीं जानते, जो अभी परमात्मा ने बताया है कि श्रीकृष्ण सतयुग का प्रथम राज़कुमार है, श्रीकृष्ण ही स्वयंवर के बाद गद्दी पर बैठते हैं तो नारायण कहलाते हैं अर्थात् श्रीकृष्ण ही श्रीनारायण बनते हैं। श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग के आदि में योगबल से हुआ, द्वापर के अन्त में नहीं। ऐसे ही राधे स्वम्वर के बाद श्रीलक्ष्मी बनती है। इस प्रकार राधे-कृष्ण ही गद्दी पर बैठने के बाद श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण कहलाते हैं।

भक्ति मार्ग में तो राधे-कृष्ण को द्वापर में और लक्ष्मी-नारायण को सतयुग में दिखाते हैं। राम को त्रेतायुग में और श्रीकृष्ण को द्वापर में दिखाते हैं जबकि श्रीकृष्ण को 16 कला सम्पूर्ण और उनके पूर्ववर्ती राम को 12 कला सम्पूर्ण कहते हैं, जो सृष्टि के नियमानुसार सत्य नहीं है क्योंकि नियमानुसार 16 कला वाला पहले होना चाहिए। इस प्रकार यथार्थता का किसको पता नहीं है, जो अभी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त के ज्ञाता परमात्मा ने बताया है कि श्रीकृष्ण का जन्म कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगमयुग में हुआ, द्वापर में नहीं। श्रीकृष्ण के जन्म से ही सतयुग का आरम्भ होता है। श्रीकृष्ण ही सतयुग के पहले महाराजा श्रीनारायण बनें। श्रीकृष्ण 16 कला सम्पूर्ण एक देवता हैं परमात्मा नहीं। भक्तिमार्ग में यथार्थता से अनभिज्ञ होने के कारण कल्प के संगम पर निराकार परमात्मा और श्रीकृष्ण के गुण-कर्तव्यों, चरित्रों को श्रीकृष्ण के साथ जोड़ दिया है। श्रीकृष्ण का जन्म कब, कहाँ और कैसे हुआ, ये सब राज़ भी अभी परमात्मा ने बताये हैं कि लक्ष्मी-नारायण का ही बचपन का नाम राधे-कृष्ण है और दोनों सतयुग में ही थे। अधर्म का नाश और सत् धर्म की स्थापना करने वाला श्रीकृष्ण नहीं है, परमात्मा शिव हैं, जो श्रीकृष्ण की आत्मा के पूर्व जन्म के शरीर में अवतरित हुए और उन्होंने ज्ञान देकर उनको श्रीकृष्ण बनाया, राजभाग दिया। सत् धर्म की स्थापना की। श्रीकृष्ण का जन्म भोगबल से नहीं लेकिन योगबल से हुआ और उनसे ही योगबल की प्रथा आरम्भ हुई, जो स्वर्ग की प्रथम पहचान है।

श्रीकृष्ण के जन्म का राज

भक्ति मार्ग में श्रीकृष्ण का जन्म द्वापर के अन्त और कलियुग के आदि के संगम पर दिखाते हैं और उनके जन्म के विषय में अनेक भ्रामक कथा-कहानियां हैं, जो उनके जन्म और कर्तव्य के वर्णन के अनुसार सत्य प्रतीत नहीं होती हैं। यथा - गीता में लिखा यदाहि यदाहि... अब द्वापर के बाद तो कलियुग आया जो और अधर्म का युग है तो धर्म की स्थापना कहाँ हुई।

मुरलीधर की मुरली का राज

भक्त श्रीकृष्ण को मुरलीधर समझते हैं, जिनकी मुरली सुनते ही सभी गोप-गोपियां सब सुधबुध भूलकर मोहित हो जाते थे परन्तु अभी तक हम कृष्ण को परमात्मा और उनकी काठ की मुरली को मुरली समझ लेते थे। यथार्थ मुरली का राज़ अभी

पता चला है कि परमात्मा के साकार तन द्वारा उच्चारे महावाक्य ही मुरली हैं। परमात्मा की यह ज्ञान मुरली ज्ञान के अनन्त गहन राज़ों से परिपूर्ण है और इस मुरली में यह जादू है कि वह हम आत्माओं को परमात्म प्यार में मोहित करके दुनिया की सुधबुध भुलाकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराने वाली है।

''बाप को जादूगर भी कहते हैं। गाया हुआ है मुरली तेरी में जादू। मनुष्य से देवता बन जाते हैं। गायन है - मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार।'' सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

''जहाँ लगन होती है, वहाँ कोई विघ्न ठहर नहीं सकते। स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं। पढ़ाई से प्रीत, मुरली से प्रीत वाले विघ्नों को सहज पार कर लेते हैं... एक मुरली से प्यार, पढ़ाई से प्यार और परिवार का प्यार किला बन जाता है। किले में रहने वाले सेफ हो जाते हैं।'' अ.बापदादा 27.3.86

''मुरली है लाठी, इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जायेगी। यह आधार ही अपने घर तक और अपने राज्य तक पहुंचायेगा लेकिन लक्ष्य से, नियमपूर्वक नहीं... मुरलीधर से स्नेह की निशानी मुरली है। जितना मुरली से स्नेह है, उतना ही समझो मुरलीधर से भी स्नेह है। सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से होगी।'' अ.बापदादा 23.10.75

''लाइट, माइट और डिवाइन इन्साइट तीनों कायम रहें, उसके लिए मुख्य किस बात का अटेन्शन चाहिए?... जो एक दिन भी रिवाइज कोर्स की मुरली मिस नहीं करते वा धारणा में अटेन्शन नहीं देते हैं, वे हाथ उठाओ... भल जान चुके हो लेकिन अभी बहुत कुछ जानने को रह गया है। जो अच्छी रीति से रिवाइज कोर्स को रिवाइज करते हैं, वे स्वयं भी ऐसा अनुभव करते हैं।'' अ.बापदादा 24.6.720

''एक कम्पलेन्ट है - व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं... दूसरी मुख्य कम्पलेन्ट है - वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। यह दोनों कम्पलेन्ट्स तब तक हैं, जब तक रोज की मुरली द्वारा जो डायरेक्शन्स मिलते रहते हैं उन डायरेक्शन्स को अर्थात् मुरली को ध्यान से सुनकर और धारण नहीं करते हैं... अगर सारा समय ज्ञान-रत्नों से खेलने में व ज्ञान खजाने को देखने में, सुमिरण करने में बुद्धि को बिजी रखो, तो क्या व्यर्थ संकल्प आ सकते हैं?'' अ.बापदादा 11.7.74

''ब्राह्मण जीवन के जी-दान का आधार कौन-सा हैं? मुरली, पढाई का भी आधार है मुरली... जितना स्नेह जी-दान से होगा उतना ही स्नेह, जीवनदाता से होगा। ऐसा स्नेही, अन्य आत्माओं को भी सदा स्नेही व निर्विघ्न बना सकेंगे।'' अ.बापदादा 28.4.74

''आपस में ज्ञान चर्चा करना, यह तो ब्राहमणों का कर्तव्य है। जिस बात में जिसकी जो लगन होती है, उसके लिए समय की कमी कभी नहीं हो सकती। तो इन दो बातों पर ध्यान रखो एक तो है-प्योरिटी, दूसरा जीयदान का महत्व।'' अ.बापदादा 28.4.74

गोपी-वल्लभ और गोप-गोपियों का राज

यह राज़ भी अभी बाबा ने बताया है। गोपी-वल्लभ शिव परमात्मा है और हम आत्मायें जो अभी साकार में उनके बच्चे बने हैं, अभी ब्रह्मा तन में अवतरित परमात्मा के साथ जो आत्मायें पार्ट बजाती हैं, उनके साथ विश्व-परिवर्तन के दिव्य कर्तव्य में सहयोगी हैं, वे ही सच्चे गोप-गोपियां हैं, जो सदा अतीन्द्रिय सुख में रहते हैं। बाबा के महावाक्य ही मुरली है, जो गोप-गोपियों का मन मोहित करने वाली है, सर्व का कल्याण करने वाली है। इसीलिए गायन है कि अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपी वल्लभ की गोप-गोपियों से पूछो।

''पूर्णमासी की रात की रास का गायन है। गोप-गोपियों की तीन विशेषतायें क्या है... रात को दिन बनाया... दूसरी जागती ज्योति थे... तीसरा हाथ में हाथ और ताल में ताल मिला हुआ था अर्थात् संस्कार मिले हुए थे। मरना पड़ेगा, सुनना पड़ेगा, झुकना पड़ेगा - ऐसे कहने से भक्त बनते हो... ऐसे रास मिलाने वाले ही माला के मणके बनते हैं।'' अ.बापदादा 30.9.75

गोप-गोपियां और मुरली का राज

भारत में भागवत की कथा का बहुत महत्व है और भागवत में श्रीकृष्ण के साथ गोप-गोपियों का वर्णन आता है कि गोप-गोपियाँ श्रीकृष्ण की मुरली पर मोहित हो जाती थी। मुरली की तान सुनते ही तन-मन की सुधबुध भूल जाती थी परन्तु वे गोप-गोपियाँ कौन हैं और वह मुरली कौन सी है, जो गोप-गोपियों को तन-मन की सारी सुधबुध भुला देती है, इसका राज़ भी बाबा ने बताया है कि अभी जो आत्मायें साकार में आये परमात्मा के साथ पार्ट बजाते हैं, वे ही गोप-गोपियां हैं और परमात्मा साकार में जो ज्ञान देते हैं, वही जादूभरी मुरली है, जो तन की सुधबुध भुलाकर आत्मिक स्वरूप में स्थित कर देती है, जिसमें स्थित आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है, जो सुख देवताओं को भी उपलब्ध नहीं है और न इस संगमयुग के सिवाए त्रिलोक्य में प्राप्त हो सकता है।

''मुरली से साँप के विष को भी समाप्त कर लेते हैं। तो ऐसा मुरलीधर हो जो किसी का कितना भी कड़ुआ संस्कार-स्वभाव हो, उसको भी वश कर दे... सदा हर्षित बना दे... मुरली से प्यार है, मुरलीधर से प्यार है लेकिन प्यार का सबूत है... जो कहा, वह करके दिखाना।'' अ.बापदादा 11.4.86

''कहते फलानी डेट की मुरली में यह बात कही गई है, उसी प्रमाण मैं यह कर रहा हूँ। समय और सरकमस्टान्सेज को नहीं देखते लेकिन शब्द पकड़ लेते हैं।'' अ.बापदादा 27.10.75

लक्ष्मी-नारायण और सीता-राम का राज

लक्ष्मी-नारायण और राम-सीता किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है लेकिन यह गद्दी का नाम है। सतयुग में गद्दी लक्ष्मी-नारायण के नाम से चलती है और श्रीकृष्ण सतयुग के प्रथम नारायण और राधे प्रथम लक्ष्मी बनती है अर्थात् राधे-कृष्ण ही प्रथम गद्दी पर बैठने के बाद श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण कहलाते हैं। उनके बाद जो उस गद्दी पर बैठता है वह भी लक्ष्मी-नारायण ही कहलायेगा परन्तु उसको द्वितीय लक्ष्मी-नारायण कहेंगे परन्तु उनके बचपन का नाम श्रीकृष्ण और राधे नहीं होगा। बचपन का नाम हरेक का अलग-अलग होगा। वास्तविकता तो ये है कि वहाँ ये द्वितीय-तृतीय शब्द कहने की भी आवश्यकता नहीं होती है।

सतयुग के अन्त और त्रेतायुग के संगम पर वही गद्दी राम-सीता के नाम से चलने लगती है। उस समय जो राजा गद्दी पर बैठता है, वह उस गद्दी का नाम लक्ष्मी-नारायण से बदलकर राम-सीता रख देता होगा और बाद में वह गद्दी उसी नाम से त्रेतायुग के अन्त तक चलती है।

Q. राम कौन, सीता कौन ?

A. राम परमात्मा पिता और सीता आत्मा का प्रतीक है। आत्मा रूपी सीता देहाभिमान रूपी रावण की जेल अर्थात् देहाभिमान के वशीभूत है। उन सभी आत्माओं की मुक्ति अर्थात् रावण की जेल से मुक्त करने के लिए ही परमात्मा राम का अवतरण होता है। परमात्मा राम ही सर्वात्माओं को उनके असली स्वरूप और शक्ति का आभास कराकर रावण अर्थात् देहाभिमान के वश 5 विकारों की जेल से मुक्त करता है।

रुद्र माला और वैजन्ती माला का राज़

रुद्र माला है सर्व आत्माओं की माला और वैजन्ती माला है विष्णु की माला अर्थात् जो आत्मायें विजयी होकर पहले जन्म में महाराजा-महारानी, राजा-रानी बनते हैं। वास्तव में रुद्र माला है निराकारी आत्माओं की, जिसमें विश्व की सर्व आत्मायें नम्बरवार पिरोई हुई हैं और वैजन्ती माला संगमयुगी विजयी आत्माओं की है, जिसमें थोड़ी सी आत्मायें ही आती हैं परन्तु संगमयुग पर ब्राह्मणों की विजय का ये निर्णय नहीं हो पाता है, इसलिए सतयुग में विष्णु के गले में दिखाते हैं। यह रहस्य भी अभी पता पड़ा है।

''यह ड्रामा का राज़ बहुतों की बुद्धि में नहीं बैठता है तो वे ऊंच पद भी नहीं पा सकते हैं... ये बहुत सूक्ष्म समझने की बातें हैं। जो बच्चे यह अच्छी रीति समझते हैं, वे ही माला का दाना बनते हैं।'' सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

''बाप के हाथ में हाथ मिलाना अर्थात् समान बनना... नम्बरवन के पीछे नम्बर टू होगा... ऐसे तो समान बनें। एक-दो के समीप होते-होते माला तैयार हो जायेगी।'' अ.बापदादा 17.10.87

''8 की माला, 108 की माला, फिर 16108 की भी माला बनती है... तुम पहले हो रुद्र माला में, फिर बनते हो रुण्ड माला के... रुद्र माला में शिव भी है, रुण्ड माला में शिव कहाँ से आये। वह है विष्णु की माला।'' सा.बाबा 4.6.05 रिवा.

''तुम बच्चों की रेस है रुद्र माला में पिरोने की। बुद्धि में है हम आत्माओं का भी झाड़ है। वह है शिवबाबा की सब मनुष्य-मात्र की माला। ऐसे नहीं कि सिर्फ 108 या 16108 की माला है। ... यह है फिर विष्णु की माला।'' सा.बाबा 30.7.05 रिवा.

9 रत्न का राज

माला भी पहले 9 रत्न की बनाते, फिर 108 की और फिर 16108 की माला बनाते हैं। 9 रत्नों की विशेष महिमा है। नौ रत्नों में आठ युगल दाने हैं और नौवां शिवबाबा है। शिवबाबा के साथ ये आठ रत्न विशेष सेवा करते हैं, इसलिए अष्ट रत्न और 9 रतन विशेष गाये और पूजे जाते हैं। इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने ही दिया है।

''सर्विस कर किसका जीवन हीरे जैसा बनाना, कितना पुण्य का कार्य है... जितना याद में रहेंगे, उतना हीरे जैसा बन जायेंगे... 9 रत्न होते हैं ना! कोई ग्रहचारी होती है तो 9 रतन की अंगूठी पहनते हैं।'' सा.बाबा 28.6.05 रिवा.

''8 रत्नों की भी माला होती है। 9 रत्न गाये हुए हैं। 8 दाने और 9वां बाबा। मुख्य हैं 8 देवतायें, फिर 16108 शहजादे-शहजादियों का कुटुम्ब बनता है त्रेता के अन्त तक।'' सा.बाबा 1.12.04 रिवा.

''नौ रत्न कहते हैं। एक है शिवबाबा, बाकी हैं 8, ... कोई ग्रहचारी आदि आती है तो 9 रतन की अंगूठी आदि पहनते हैं। ... बाकी जो 100 हैं, उनको भी कुछ न कुछ सटके लगते हैं।'' सा.बाबा 21.7.05 रिवा.

9 रत्न और वैजन्ती माला में कौन-कौन हो सकते हैं?

निश्चित	ब्रह्मा बाबा और मातेश्वरी
पूर्ववर्ती	दादा रतन चन्द, दादा रीजूमल, यशोदा माता
एडवान्स पार्टी	दीदी मनमोहिनी, दादी पुष्पशान्ता, दादी चन्द्रमणी, मिट्ठू दादी, दादी ब्रजेन्द्रा, ध्यानी दादी, सन्तरी आत्म-इन्द्रा दादी, आलराउण्डर दादी, दादा आनन्द किशोर, जगदीश भाई
एडवान्स स्टेज	दादी जानकी, दादी निर्मलशान्ता, दादी प्रकाशमणी, दादी कमल सुन्दरी, दादी ह्रदयमोहिनी, शान्तामणि दादी, मनोहर दादी, रत्नमोहिनी दादी, बृजशान्ता दादी, दादा विश्वरत्न, दादा चन्द्रहास, निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई

वैजन्ती माला का दाना बनने का राज

भारत में रुद्र-माला और वैजन्ती माला का बहुत गायन है और भक्त उनका सुमिरण भी करते हैं। रुद्र-माला सर्व आत्माओं की माला है और वैजन्ती माला विष्णु की माला है अर्थात् जो आत्मायें रुद्र शिवबाबा से ज्ञान लेकर विकारों पर सम्पूर्ण विजय पाकर सतयुग के प्रथम जन्म में आती हैं और प्रथम राजाई की अधिकारी बनती हैं। वैजन्ती माला में 108 मणके होते हैं, जो फर्स्ट नम्बर में पास होते हैं और उनमें भी 8 पास विद ऑनर होते हैं।

''कल्प पहले भी ऐसे निकले थे, जो विजय माला के दाने बने थे। तुम जो ब्राह्मण कुल के हो, उनकी ही विजय माला बनती है, जिन्होंने बहुत गुप्त मेहनत की है।'' सा.बाबा 14.10.04 रिवा.

''बाप समझाते हैं - बच्चे, तुम ही सबसे जास्ती पतित बने हो। पहले-पहले तुम ही आये हो पार्ट बजाने, तुमको ही पहले जाना पड़ेगा। चक्र है ना। पहले-पहले तुम ही माला में पिरोये जायेंगे... रुद्र माला और विष्णु की माला गाई जाती है।''

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

''रुद्र माला और विष्णु की माला गाई जाती है, प्रजापिता ब्रह्मा की माला नहीं... यूँ तो प्रजापिता ब्रह्मा का भी सिजरा है। जब पास हो जाते हैं तो कहेंगे ब्रह्मा की भी माला है!'' सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

''पहले स्व पर विजयी, फिर सर्व पर विजयी, फिर प्रकृति पर विजयी बनेंगे। ये तीनों विजय आपको विजय माला का मणका बनायेंगी।'' अ.बापदादा 1.03.86

''रत्नों में सभी से फर्स्ट नम्बर है नूरे रत्न। वह कौन बनते हैं? जिनके नयनों में सिवाए बाप के और कुछ भी देखते हुए भी देखने में नहीं आता है... जो गले द्वारा सर्विस करते हैं, वे गले की माला का रत्न बनते हैं... जो किस न किस रूप में मददगार बनते हैं, वे बाहों के कंगन के रत्न बनते हैं।'' अ.बापदादा 6.05.71

''बापदादा सर्व ब्राह्मण कुल बच्चों में से उन विशेष आत्माओं को चुन रहे थे जो सदा सन्तुष्टता द्वारा स्वयं भी सदा सन्तुष्ट रहे हैं और औरों को भी सन्तुष्टता की अनुभूति अपनी दृष्टि, वृति, और कृति द्वारा सदा कराते आये हैं। तो आज ऐसी सन्तुष्टमणियों की माला बना रहे थे।'' अ.बापदादा 5.10.87

''बापदादा बार-बार सन्तुष्टमणियों की माला देख हर्षित हो रहे थे क्योंकि ऐसी सन्तुष्टमणियाँ ही बापदादा के गले का हार बनती है, राज्य अधिकारी बनती है और भक्तों के सिमरण की माला बनती हैं।'' अ.बापदादा 5.10.87

रुद्र-यज्ञ और अश्वमेध यज्ञ का राज

गायन है रुद्र भगवान ने आकर यज्ञ रचा, जिसकी यादगार में आज भी रुद्र यज्ञ रचते हैं, जिसमें एक शिव और अनेक सालिग्राम बनाते हैं। रुद्र भगवान ने ये यज्ञ कब रचा और किसलिए रचा, उसका परिणाम क्या हुआ, इन सब बातों से यज्ञ रचने वाले भी अनभिज्ञ हैं। अभी ज्ञान सागर रुद्र भगवान ने स्वयं आकर इन सब बातों का ज्ञान दिया है।

रुद्र परमात्मा आकर यज्ञ रचते हैं, जिसको रुद्र-यज्ञ कहा जाता है। रुद्र-यज्ञ में एक शिव और अनेक सालिग्राम बनाते हैं, जो परमात्मा और आत्माओं की यादगार है। यह सिद्ध करता है कि परमात्मा एक है और आत्मायें अनेक हैं। इसको अश्वमेध यज्ञ भी कहा जाता है क्योंकि इस ज्ञान यज्ञ में आत्मायें ये देह रूपी अश्व को स्वाहा करके पावन बनती हैं।

अनेक विश्व-विजयी राजाओं के विषय में अश्वमेध यज्ञ रचने का भी गायन है, जिसका बड़ा विस्तार है। अभी बाबा ने हमको बताया है ये राज़सूय अश्वमेध अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ है। इस यज्ञ में अपने देहाभिमान रूपी अश्व को स्वाहा करना है। जो इस देहाभिमान को इस यज्ञ में स्वाहा करते हैं, वे ही विश्व-विजयी अर्थात् चक्रवर्ती राजा बनते हैं।

रुद्र शिवबाबा ने अपने ब्रह्मा वत्सों को विश्व-विजय करने और विश्व में इसका सन्देश देने के लिए चारो दिशाओं में भेजा है। परमात्मा के द्वारा इस रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ का कार्य अभी चल रहा है।

रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला के प्रगट होने का भी गायन है और विश्व-शान्ति का भी गायन है। बाबा ने अनेक बार कहा है कि शिवबाबा ने जब से यज्ञ रचा है, तब से ही ये विनाश की तैयारियां भी जोर-शोर से हो रही हैं और विश्व-शान्ति की स्थापना का कार्य भी हो रहा है।

''शिव और सालिग्रामों की पूजा होती है क्योंकि चेतन्य में होकर गये हैं, कुछ करके गये हैं, तब उनका नामाचार गाया जाता है अथवा पूजे जाते हैं। ... देवताओं की महिमा अलग है, लक्ष्मी-नारायण होकर गये हैं, वे पवित्र थे, विश्व के मालिक थे।''

सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

शिव और सालिग्रामों की पूजा होती है क्योंकि वे संगम पर कुछ करके गये हैं और देवताओं की भी पूजा होती है क्योंकि वे पवित्र हैं बाकी देवताओं के और कोई कर्तव्य नहीं हैं। कर्तव्य तो रुद्र परमात्मा, ब्रह्मा बाबा और संगमयुगी ब्राह्मणों के ही हैं।

रुद्र ज्ञान-यज्ञ और विनाश के सम्बन्ध का राज़

परमात्मा नई दुनिया की स्थापना करते हैं और जब नई दुनिया स्थापन होगी तो पुरानी का विनाश होना स्वभाविक है। इसीलिए जब से शिवबाबा ने यह रुद्र यज्ञ रचा है, तब से विनाश की तैयारी भी जोर-शोर से हो रही है। भले विनाश तो ड्रामा अनुसार ही होता है परन्तु दोनों कार्य साथ-साथ चलते हैं इसलिए परमात्मा के नाम पर शंकर को विनाश का निमित्त भी कहते हैं। यह सब राज़ भी परमात्मा ने बताया है। बाबा कहते हैं - जब तुम आत्मायें पावन बन जाओगी तो तुमको दुनिया भी पावन चाहिए तो इस पतित दुनिया विनाश भी अवश्य होगा।

''बाप कहते हैं - मैं पावन दुनिया बनाऊंगा तो जरूर पतित दुनिया का विनाश होगा। इसलिए ही यह महाभारत लड़ाई है, जो इस रुद्र यज्ञ से प्रज्वलित हुई है। ड्रामा में यह विनाश होने की भी नूँध है।'' सा.बाबा 8.2.05 रिवा.

शिव की बारात का राज़ /

परमात्मा और आत्मा की सगाई, परमात्मा और आत्मा के साजन-सजनी के सम्बन्ध का राज़

परमात्मा शिव पति और सर्व आत्मायें उनकी सजनियां हैं। सभी आत्मायें अन्त समय परमात्मा के पीछे परमधाम जाती हैं, जैसे दूल्हे के पीछे दुल्हन जाती है। ये सब रहस्य भी अभी परमात्मा द्वारा ही पता पड़ा है कि शास्त्रों में शिव की बारात का गायन क्यों है।

''शिवबाबा ज्ञान का सागर है, वह हमको अभी ज्ञान दे रहे हैं... बारात तो शिव की ही गाई हुई है, और कोई गुरु की नहीं। शिव-बाबा ही सबको वापस ले जाते हैं।'' सा.बाबा 2.11.04 रिवा.

''परमपिता परमात्मा के तुम वारिस बनते हो, जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं... बाप एक ही बार आते हैं साथ ले जाने के लिए। इसको शिवबाबा की बारात कहा जाता है।'' सा.बाबा 4.11.04 रिवा.

''नाटक पूरा हो तब तक सब एक्टर्स यहाँ होने हैं, तब तक बाप यहाँ है। जब वहाँ बिल्कुल खाली हो जायेंगे तब तो शिवबाबा की बारात जायेगी।'' सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

''तुम्हारी परमात्मा के साथ लव-मैरेज हुई है ना... सब कहते हैं - हमारी शिवबाबा के साथ सगाई हो गई है... बाबा हमको कितना श्रृंगार करते हैं। शिवबाबा इन द्वारा श्रृंगार करते हैं।'' सा.बाबा 28.12.04 रिवा.

''हमारी आत्मा को श्रृंगार कर बाप स्वर्ग में ले जा रहे हैं। बच्चों को अन्दर में ऐसे-ऐसे ख्यालात आने चाहिए... यहाँ बैठे भी तुमको ये ख्यालात चलाने चाहिए।'' सा.बाबा 28.12.04 रिवा.

''बाप आकर सभी आत्माओं को ले जाते हैं, अपने घर। शिव की बारात गाई हुई है... पवित्र बनने बिगर आत्मा घर वापस जा नहीं सकती... बुद्धि सदा बाप के साथ लटकी रहे क्योंकि तुमको बाप के पास घर जाना है।'' सा.बाबा 12.12.04 रिवा.

अशोक वाटिका और शोक वाटिका का राज

रामायण में दिखाया है कि लंका में अशोक वाटिका है, जहाँ रावण ने सीता को रखा था परन्तु बाबा ने अभी सत्य राज़ बताया कि रावण राज्य में अशोक वाटिका कहाँ से आई! यह है शोक वाटिका क्योंकि सभी आत्मायें पांच विकारों रूपी रावण की जेल में दुखी हैं। रोग-शोक से मुक्त करने वाले दुखहर्ता-सुखकर्ता परमात्मा पिता ही आकर इस कलियुगी शोकवाटिका से मुक्त कर अशोक वाटिका अर्थात् स्वर्ग में ले जाता है, जहाँ कोई भी रोग-शोक नहीं होता है। रावण के यहाँ जो अशोक वाटिका का वर्णन है, वह भी यथार्थ नहीं है क्योंकि रावण राज्य में तो सारा संसार ही शोक वाटका बना हुआ है तो अशोक वाटिका कहाँ से आई? वास्तविकता ये है कि इस समय रावण राज्य होते भी और सारी दुनिया में रोग-शोक होते भी जो साकार में आये निराकार परमात्मा के बच्चे बनते हैं और उनके नियम-संयम पर चलते हैं, उनके जीवन में शोक हो नहीं सकता और वे इस रावण राज्य में रहते भी अशोक वाटिका में ही हैं। सीता बाह्य दृष्टि से रावण के वश होते हुए भी मन से राम की लगन में ही थी,

इसलिए वह रावण राज्य में होते भी अशोक वाटिका में ही थी। जो परमात्मा के बन जाते, उनकी लगन में मगन रहते हैं और उनके कार्य में बिजी रहते हैं वे कहाँ भी रहें अशोक वाटिका में अपने को अनुभव करते हैं।

शिव-शक्ति सेना और उसके युद्ध का राज

भारत में अनेक देवियों अर्थात् शक्तियों का गायन है, जो शिव-शक्तियाँ कहलाती हैं। शिवशक्तियों ने असुरों पर विजय पायी। इसलिए साल में दो बार शक्तियों का पूजन होता है। अब वे शिवशक्तियाँ कौन हैं और उन्होंने कैसे और कौनसा युद्ध किया ये कोई नहीं जानता है। केवल मनगढंत बातें बताते रहते हैं और देवियों के चित्र आदि भी अनेक प्रकार के बनाते हैं, जिनमें काली आदि का चित्र तो बहुत ही भयानक बनाते हैं। शिव परमात्मा है और आत्मायें सभी शक्तियाँ हैं, जो स्वर्ग की स्थापना में परमात्मा की मददगार हैं, उनकी सेना हैं। परमात्मा आकर आत्माओं को आसुरी संस्कारों से युद्ध करके उन पर जीत पाने के लिए ज्ञान-योग के अस्त्र-शस्त्र देकर आध्यात्मिक युद्ध सिखलाते हैं। परमात्मा की शक्ति से ही आत्मायें इन विकारों पर जीत पाती हैं। इसके अतिरिक्त शक्तियों का कोई हिंसक युद्ध नहीं हुआ और न ही असुरों और देवताओं का कोई युद्ध हुआ है। इस सत्य का ज्ञान अभी ही परमात्मा ने दिया है। और शिव-शक्तियाँ स्वराज्य अधिकारी बनने और नये विश्व का निर्माण करने के लिए वह युद्ध कर रही हैं।

''एक तरफ सारी सृष्टि हो दूसरे तरफ आप एक भी हो तो भी आपकी शक्ति श्रेष्ठ है। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप आपके साथी हैं। इसलिए गायन है शिव शक्तियाँ।'' अ.बापदादा 11.6.71

''तुम हो शिव-शक्ति, शिव के बच्चे। तुम बाप से शक्ति लेते हो। वह मिलेगी याद से। याद से ही विकर्म विनाश होंगे... तुम हो शिव शक्तियाँ। अभी तुम न पुजारी हो और न पूज्य हो।'' सा.बाबा 2.6.05 रिवा.

''अपने कम्बाइन्ड रूप शिव-शक्ति के रूप की स्मृति में रहना चाहिए। सिर्फ शक्ति भी नहीं, शिव-शक्ति। कम्बाइन्ड रूप की स्थिति में जैसे स्थूल में दो को देखते हुए वार करने के लिए संकोच होता है। वैसे ही कम्बाइन्ड स्थिति का प्रभाव उस समय के प्रकृति और व्यक्ति के ऊपर पड़ेगा अर्थात् किसी भी प्रकार के वार करने में संकोच होगा।... लेकिन उस सेकेण्ड परिवर्तन करने की शक्ति यूज़ करो कि मैं अकेली नहीं, मैं फीमेल नही, शिव-शक्ति हूँ।'' अ.बापदादा 13.9.75

होलिका दहन का राज़ - विनाश और कल्प परिवर्तन का राज

होलिका दहन के विषय में भी अनेक प्रकार की किवदन्तियां और गाथायें हैं परन्तु होलिका दहन क्या है और कब होता है, इसका सत्य ज्ञान यथार्थ रीति किसको भी नहीं है, जो अभी परमात्मा ने बताया है। देखा जाये तो होलिका का त्योहार पुराने वर्ष के अन्त और नये वर्ष के आदि के संगम पर मनाते हैं। जलाते पुराने वर्ष में हैं और मनाते नये वर्ष में हैं। इसलिए होलिका कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर पुरानी दुनिया के विनाश और नई दुनिया की स्थापना के यादगार का त्योहार है। भारत में प्रचलित शक संवत् में पुराने वर्ष का अन्त और नये वर्ष का शुभारम्भ भी होली से ही होता है।

''जब बाप के संग का रंग लग जाता है तो हर आत्मा के प्रति प्रेम होता है और विश्व की सर्व आत्मायें परमात्म परिवार बन जाते हैं। परमात्म परिवार होने के कारण हर आत्मा के प्रति शुभ कामना स्वत: ही नेचुरल संस्कार बन जाती है... कोई भी आयेगा तो बुद्धि में रहेगा कि ये बाप के बच्चे हैं। यह प्यार का मिलन, शुभ भावना का मिलन उन आत्माओं को भी पुरानी बातें भुला देता है।'' अ.बापदादा 25.3.86

''आग को जलाने वाली भी होली आती है, रंग में रंगने वाली होली भी आती, बिन्दी लगाने वाली होली भी आती और मंगल मिलन मनाने वाली होली भी आती है। चारो ही प्रकार की होली आती है ना! अगर एक भी प्रकार की कम होती तो लाइट का ताज टिकेगा नहीं... जब बाप समान हैं तो बाप सम्पन्न भी है और सम्पूर्ण भी है।'' अ.बापदादा 25.3.86

परमात्मा और देवताओं को भोग अर्पण का राज

भक्ति मार्ग में देवताओं को भी भोग लगाते हैं और ज्ञान-मार्ग में भी परमात्मा को भोग लगाते हैं परन्तु भोग न तो देवतायें खाते हैं क्योंकि जड़ मूर्ति तो खा नहीं सकती और न ही अभी परमात्मा खाते हैं क्योंकि परमात्मा तो अभोक्ता है। फिर भी भोग का क्या महत्व और प्रभाव है, जिसके कारण ज्ञान मार्ग में भी परमात्मा भोग लगाने के लिए सभी को प्रेरित करते हैं। मनुष्य की वृत्ति और वायब्रेशन का प्रभाव जड़ तत्वों पर भी पड़ता है, इसलिए भोग लगाने वाले की भावना और उस समय जो योग का वातावरण होता है, उसका प्रभाव उस भोग पर पड़ता है और वह प्रसाद बन जाता है, जिससे मन-बुद्धि शुद्ध होती है। महत्व भक्ति मार्ग के प्रसाद का भी है क्योंकि देवताओं को भी परमात्मा समझकर भोग लगाते हैं और अपेक्षाकृत भावना और वातावरण शुद्ध ही होता है, इसलिए उसका भी अल्प काल का फल मिलता है। इस सम्बन्ध में ब्रह्मा बाबा अपने अनुभव से श्रीनाथ द्वारे का अनेक बार मुरलियों में उदाहरण देते हैं। हम अभी जो भोग लगाते वह समझकर लगाते हैं और परमात्मा की श्रीमत अनुसार लगाते हैं तथा लगाने वाले भी योगी होते हैं, इसलिए अभी का भोग ही यथार्थ भोग है, जिसका फल बहुत श्रेष्ठ होता है। अभी भोग लगाकर भोजन स्वीकार करने से तन और मन दोनों ही शुद्ध होते हैं।

अन्न और संग तथा उनके प्रभाव का राज / खान-पान का जीवन पर प्रभाव का राज /
खान-पान के विधि-विधान का राज

ये जीवन जड़ और चेतन दोनों प्रकृतियों के सहयोग से अस्तित्व में आया है, इसलिए दोनों के गुण-धर्मों का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, दोनों एक-दूसरे की पूरक हैं। जीवन की दो मुख्य बातें है, जिनके आधार पर इस जीवन का अस्तित्व है। उनमें एक है अन्नमय और दूसरी है ज्ञानमय। अन्नमय शरीर है और ज्ञानमय आत्मा है। आत्मा का खान-पान पर और खान-पान का आत्मा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारा जीवन सदा सुखमय हो, उसके लिए हमारे खान-पान की शुद्धता परमावश्यक है। कैसे एक का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है, ज्ञान सागर बाबा ने हमको दोनों के विषय में ज्ञान दिया है और दोनों का परहेज बताया है, जिससे हमारा ये आध्यात्मिक जीवन सदा सफलता के पथ पर अग्रसर रहे। जो इन दोनों में ईश्वरीय नियमों का पालन करता है, वही इस जीवन में सफल होता है। उसकी कब हार हो नहीं सकती।

जड़ और चेतन के प्रभाव के विधि-विधान के अनुसार अन्न का मन पर और मन का अन्न पर गहरा प्रभाव होता है। वह प्रभाव क्या होता है, यह एक विस्तृत विषय है, जिस पर बाबा ने मुरलियों में बहुत स्पष्ट रूप से प्रकाश डाला है। सत्यता ये है कि अन्न में प्रयोग पदार्थों का प्रभाव तो होता ही है परन्तु अन्न पर उसको कमाने वाले, बनाने वाले, खाने वाले, देखने वाले, वातावरण आदि सबका प्रभाव होता है, इसलिए बाबा ने अन्न के परहेज के लिए बहुत ध्यान रखने के लिए कहा है। अन्न के विषय में हठयोग के मूल प्रेणाता महर्षि पतन्जलि के पातन्जलि योग के एक भाष्य में कहा गया है - एक योगी के हाथ का अन्न भोगी खाता रहे तो एक दिन भोगी अवश्य ही योगी बन जायेगा और एक योगी भोगी के हाथ का अन्न खाता रहे तो ये निश्चित है कि वह योगी अवश्य ही भोगी बन जायेगा अर्थात् योगी जीवन से विमुख हो जायेगा।

अन्न पर दृष्टि के प्रभाव को स्पष्ट करने और बच्चों को शिक्षा देने के लिए एक बार एक सेन्टर पर भोग बनाया गया, जिसको बनाया तो सेन्टर की योगी बहनों ने था परन्तु एक अज्ञानी-पतित व्यक्ति के देख-रेख और निर्देशानुसार बनाया गया था। जब उस भोग को सन्देशी बाबा के पास लेकर गई तो बाबा ने स्वीकार नहीं किया और उसका राज बताया कि उस भोग पर पतित-विकारी आत्मा की दृष्टि पड़ी है, इसलिए बाबा स्वीकार नहीं कर सकता। बाबा पर तो उसका कोई प्रभाव होने वाला नहीं था परन्तु बाबा बच्चों के जीवन का बहुत ध्यान रखता है इसलिए सचेत अवश्य करता है। अपने अमूल्य इस आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए अन्न के ऐसे प्रभाव को समझकर उसका परहेज रखना अति आवश्यक है।

आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए संग भी बहुत महत्वपूर्ण है। संग के लिए भी गायन है - जैसा संग, वैसा रंग अर्थात् एक बुरा व्यक्ति अच्छे व्यक्तियों के संग में रहे तो निश्चित ही अच्छा बन जायेगा और एक अच्छा व्यक्ति बुरे व्यक्तियों के संग में रहे तो एक दिन अवश्य ही बुरा हो जायेगा।

जीवात्मा इन्द्रियों द्वारा जो देखती, सुनती, पढ़ती, स्पर्श करती, खाती उसका प्रभाव उसके मन पर अवश्य होता, जो उसके भविष्य जीवन की दिशा और दशा को निश्चित करता है, जिससे उसके कर्म-संस्कार प्रभावित होते हैं और वे कर्म-संस्कार उसके भावी जीवन के सुख-दुख का आधार बनते हैं। जैसे बाबा का संग बुद्धि से ही होता है ऐसे इन सब बातों का बुद्धि से सम्बन्ध है और उनका भी बुद्धि पर प्रभाव होता है। ये सब बातें भी बुद्धि के संग की ही हैं।

इस अन्न और संग के विषय में हम अपने यज्ञ के भाई-बहनों की उन्नति और अवनति के इतिहास को देखते हैं तो दोनों के ऐसे प्रभाव का सहज स्पष्टीकरण होता है। जिन्होंने आदि से अन्न और संग का परहेज रखा, वे अमर रहे हैं और आदि से ही उन्नति के पथ पर अग्रसर रहे हैं तथा जिन्होंने दोनों में से एक का भी उलंघन किया, उनकी नैया डूब ही गयी और यदि किसी की डूबी नहीं तो डोली अवश्य है।

''यह नॉलेज कितनी वण्डरफुल है, जिसको तुम्हारे सिवाए कोई नहीं जानते हैं। बाप की याद में रहने बिगर धारणा भी नहीं होगी। खान-पान आदि का भी फर्क पड़ने से धारणा में फर्क पड़ जाता है। इसमें प्योरिटी बड़ी अच्छी चाहिए।''

सा.बाबा 22.1.05 रिवा.

''एक होता रियल लव, दूसरा होता है आर्टिफिशियल लव। बाप से लव तब हो, जब अपने को आत्मा समझें... एक तो बाजार की छी-छी गन्दी चीजें न खाओ और मामेकम् याद करो... संग भी अच्छा चाहिए, जिसको बाइस्कोप की आदत पड़ी वे पतित बनने बिगर रह नहीं सकेंगे।'' सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

''जो समीप रहने वाले होते हैं, उनमें समीप रहने वाले के गुण स्वत: और सहज ही आ जाते हैं। इसलिए कहा जाता है कि संग का रंग अवश्य लगता है... वैसे ही कुसंग में रहने वाली आत्माओं का मायावी रंग भी छिप नहीं सकता।'' अ.बापदादा 19.4.73

''चाहे मन्सा संकल्प में, चाहे सम्पर्क वा सम्बन्ध में किसी भी प्रकार से माया का जरा भी इफेक्ट होने का कारण डिफेक्ट होता है। ... संगदोष, अन्नदोष न हो, उसके तरीके जानते हो तो अपने को इफेक्ट-प्रूफ भी कर सकते हो... अगर सदा ज्ञान अर्थात् सेन्स में रहे तो सेन्सीबुल कभी किसके इफेक्ट में नहीं आता है।'' अ.बापदादा 26.6.72

''अगर बुद्धि की लगन सदा एक के संग में है तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता। बुद्धि की लगन कम होने का कारण अनेक प्रकार के संग के आकर्षण अपनी तरफ खींच लेते हैं।'' अ.बापदादा 22.6.71

''कई प्रकार के आकर्षण पेपर के रुप में आयेंगे लेकिन आकर्षित न होना... माया संकल्पों के रुप में भी अपने संग का रंग लगाने की कोशिश करती है। तो इस व्यर्थ संकल्पों को वा माया के आकर्षण के संकल्पों में कभी फेल नहीं होना।''

अ.बापदादा 11.6.71

''वाणी द्वारा भी उल्टा संग का रंग लग जाता है। इससे भी अपने को बचाना। और फिर अन्न का संगदोष भी है। अगर कब भी किसके भी समस्या अनुसार वा कोई सम्बन्धी के स्नेह के वश भी अन्नदोष में आ गई तो यह अन्न भी अपने मन को संग के रंग में ला देता है।'' अ.बापदादा 11.6.71

''अगर संगदोष में आ गई तो दूर हो जायेंगी। फिर न निराकारी वतन में, न अभी संगमयुग में, न भविष्य में पास रह सकेंगी। एक संगदोष तीनों लोकों से दूर हटा देता है। एक संगदोष से बचने से तीनों लोकों के तीनों कालों में बाप के समीप रहने का भाग्य प्राप्त कर सकती हो।'' अ.बापदादा 11.6.71

''बुरा न देखना, न सुनना, न बोलना, न सोचना। अगर इस आज्ञा को सदैव स्मृति में रखेंगे तो फिर सदा हंस बनकर बाप जो सर्व गुणों का सागर है, उस सागर के किनारे पर सदैव बैठे रहेंगे।'' अ.बापदादा 11.6.71

‘‘तो सदा संगदोष से बचना है और ईश्वरीय संग में रहना है। एक संग छोड़ना है और एक संग जोड़ना है। ईश्वरीय संग सिर्फ शरीर से नहीं होता लेकिन बुद्धि द्वारा भी ईश्वरीय संग में रहना है।’’ अ.बापदादा 11.6.71

‘‘अगर एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जाएंगे। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा।’’ अ.बापदादा 25.3.71

‘‘कहा जाता है - खुशी जैसी खुराक नहीं। तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए... खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा, सूक्ष्म खायेंगे। यह भी एक कायदा है... ये ज्ञान की बातें तो बड़ी खुशी से सुननी-सुनानी चाहिए।’’ सा.बाबा 29.5.04 रिवा.

‘‘सभी से ग्लानि की चीज है विकार। सन्यासियों में भी थोड़ा क्रोध रहता है क्योंकि ‘जैसा अन्न वैसा मन’, गृहस्थियों का ही खाते हैं। कोई अनाज नहीं खाते, पैसे तो लेते हैं ना। पतितों का उसमें भी असर तो रहता है ना।’’ सा.बाबा 2.8.71 रिवा.

‘‘तुम हो ब्राह्मण, तुमको शूद्र के हाथ का खाना नहीं है। बाप को याद जरुर करना है। लाचारी हालत में खाओ तो भी याद कर खायेंगे तो ताकत भर जायेगी। परन्तु तुम याद कर खाते कहाँ हो।’’ सा.बाबा 18.6.71 रिवा.

परमात्म प्यार का राज

परमात्मा का प्यार क्या है और कब और कैसे प्राप्त होता है, उसका अनुभव क्या है, वह सब राज़ और उसका अनुभव भी अभी ही परमात्मा कराते हैं, जिस अनुभव की संचित स्मृति के आधार पर भक्ति मार्ग में आत्मायें उसको याद करती हैं और परमात्मा का गुण-गान करती हैं। मनुष्यों ने तो परमात्मा के प्यार के अनुभव को ‘गूंगे का गुड़’ की संज्ञा दी है अर्थात् उसके प्यार के अनुभव को वर्णन नहीं किया जा सकता है, जो अनुभव करे, वही जाने। यह प्रभु-प्यार का अनुभव आत्माओं को संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है, आत्मा को परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है और परमात्मा का संग मिलता है। भले ही भक्ति मार्ग में परमात्मा के प्यार के अनुभव को गूँगे का गुड़ कहा है परन्तु अभी परमात्मा ने हम आत्माओं को ये परमात्म-प्यार का अनुभव अन्य आत्माओं को भी कराने का काम भी दिया है अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थित होकर इस प्यार का अनुभव अन्य आत्माओं को कराया जा सकता है।

‘‘अब संगम पर श्रेष्ठ आत्मायें हो। क्या श्रेष्ठता है? स्वयं बापदादा - परम-आत्मा और आदि-आत्मा अर्थात् बापदादा दोनों द्वारा पालना भी लेते हो, पढ़ाई भी पढ़ते हो, साथ में सत्गुरु द्वारा श्रीमत लेने के अधिकारी बने हो।’’ अ.बापदादा 15.12.99

‘‘ब्राह्मण आत्मा अर्थात् सदा सम्पन्न आत्मा... बापदादा को आप सबमें निश्चय है कि आप सभी बच्चे प्यार का रिटर्न अव्यक्त ब्रह्मा बाप समान अवश्य बनेंगे। बनेंगे ना! बापदादा छोड़ेगा नहीं। प्यार है ना!... लक्ष्य रखो - हमें फरिश्ता बनना ही है।’’ अ.बापदादा 31.12.99

‘‘जहाँ केवल स्नेह होता है, वह कब टूट भी सकता है लेकिन स्नेह और शक्ति दोनों का जहाँ मिलाप होता है, वहाँ आत्मा और परमात्मा का मिलाप भी अविनाशी अर्थात् अमर रहता है।’’ अ.बापदादा 16.6.69

‘‘दिल का अनुभव दिलाराम जाने। समाने का स्थान दिल कहा जाता है, दिमाग़ नहीं। नॉलेज को समाने का स्थान दिमाग़ है... दिल से दिमाग़ की मेहनत आधी हो जाती है। जो दिल से सेवा करते हैं वा याद करते हैं, उनकी मेहनत कम और सन्तुष्टता ज्यादा होती है।’’ अ.बापदादा 13.3.87

परमात्म-प्यार के विधि-विधान का राज

परमात्मा प्यार का सागर है, इसलिए उसका प्यार का भण्डार अखुट है। प्यार का अखुट भण्डार होने के कारण परमात्मा के प्यार का भण्डार तो सर्व आत्माओं के लिए समान रूप से सदा खुला रहता है परन्तु ड्रामा के नियमानुसार जो आत्मा परमात्मा को जितना प्यार करती है, वह उतना ही उससे प्यार पाती है क्योंकि परमात्मा का प्यार तो सागर के जल के समान

अगाध है। जिसका जितना बर्तन है, वह उतना ही जल सागर से भर पाता है, ऐसे ही परमात्मा का प्यार भी हर आत्मा अपनी बुद्धि के अनुसार ही अनुभव कर पाती है। परमात्मा के प्यार पाने का विधि-विधान भी है, जिसका राज़ भी परमात्मा ने बताया है कि एक कदम आत्मा का और हजार कदम परमात्मा बाप का प्यार मिलता है। रास्ता बताना बाप का काम है, जो वह सर्व आत्माओं को बताता है परन्तु पहला कदम आत्मा को उठाना है। ये ड्रामा की अविनाशी नूँध है। परमात्मा ने हम आत्माओं को ड्रामा के इस विधि-विधान का ज्ञान दिया, यह भी उसका आत्माओं के प्रति प्यार ही है।

''वास्तव में यह शिवरात्रि का दिन भोलानाथ बाप का दिन है। भोलानाथ अर्थात् बिना हिसाब के अनगिनत देने वाला। वैसे जितना और उतने का हिसाब होता है, जो करेगा, वह पायेगा, उतना ही पायेगा - यह हिसाब है। लेकिन भोलानाथ क्यों कहते ? क्योंकि इस समय देने में जितने और उतने का हिसाब नहीं रखता। एक का पदमगुणा हिसाब है।'' अ.बापदादा 7.03.86

परमात्म प्यार और पालना का राज

परमात्मा को पालनहार कहा जाता है परन्तु परमात्मा का प्यार क्या होता है और वह कैसे हमारी पालना करता है, इस सत्य का ज्ञान और अनुभव अभी संगमयुग पर ही मिला है और समझ में आता है। परमात्मा को पालनहार कहा जाता है परन्तु परमात्मा तो निराकार है, वह कैसे आत्माओं की पालना करता है, यह ज्ञान न हमको था और न ही किसी आत्मा को है, जो राज अभी परमात्मा ने बताया है कि कैसे निराकार परमात्मा साकार ब्रह्मा तन में आकर ब्रह्मा द्वारा हमको प्यार भी देते हैं, हमारी पालना भी करते हैं और ज्ञान-योग से हम आत्माओं का श्रृंगार करके सतयुग के योग्य भी बनाते हैं। परमात्मा के इस प्यार और पालना को जो आत्मायें यथार्थ रीति अनुभव कर लेती हैं, वे कभी उसको भुला नहीं सकती हैं। भक्ति मार्ग में भी इस प्यार और पालना की स्मृति के आधार पर भक्ति करते हैं।

''आज बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक में तीन भाग्य के सितारे चमकते हुए देख रहे हैं। एक परमात्म पालना का भाग्य, परमात्म पढ़ाई का भाग्य, परमात्म वरदानों का भाग्य। ऐसे तीन सितारे सभी के मस्तक बीच देख रहे हैं... बापदादा का प्यार सर्व आत्माओं के प्रति एक समान ही है और सर्वात्माओं के प्रति रहम भी है। बापदादा का प्यार हर एक बच्चे से एक-दो से ज्यादा है और यह परमात्म प्यार ही सब बच्चों की विशेष पालना का आधार है।'' अ.बापदादा 15.10.04

''आप बाप और परिवार की बधाइयों से ही पल रहे हो। ... यह पालना भी वण्डरफुल है।... ये बधाइयाँ ही पालना की विधि है। ... संगमयुग है ही बधाइयों से वृद्धि को पाने का युग। ये बधाइयां ही श्रेष्ठ पालना हैं।'' अ.बापदादा 7.03.86

''फिर लिफ्ट का मिलना भी बन्द हो जायेगा। इसलिए अभी जो कुछ भी लेना चाहो वह ले सकते हो। फिर बाद में बाप के रूप का स्नेह बदल कर सुप्रीम जस्टिस का रूप हो जायेगा।'' अ.बापदादा 30.5.73

''भक्ति मार्ग में भी ऐसी आत्मायें होती हैं, उनके नैन-चैन से प्रभु-प्रेम देखने में आता है।... तो यह प्रैक्टिकल रुहानी झलक और फरिश्तेपन की फलक चेहरे से, चलन से दिखाई दे।... देखने वाले अनुभव करेंगे, बाप ने इनको क्या बनाया!''

अ.बापदादा 5.2.72

''बाप और बच्चों का स्नेह विश्व को स्नेह के सूत्र में बाँध रहा है।... इसलिए विश्व की आत्मायें स्नेह के अनुभव से स्वत: ही समीप आ रही हैं। ... पत्थर समान आत्मायें भी ईश्वरीय परिवार के स्नेह से पिघल पानी बन जाती हैं।'' अ.बापदादा 1.10.87

''जों आत्मायें चाहती हैं, समीप आती हैं, समय देती हैं, सहयोगी बनी हुई हैं - ऐसी आत्माओं को अब मात-पिता द्वारा पालना नहीं मिल सकती, इसलिए निमित्त बनी अनुभवी मूर्तियों द्वारा यह पालना मिले।... जिन्होंने डायरेक्ट पालना ली है उन्हों में फिर भी अनुभवों की रसना भरी हुई है।'' अ.बापदादा 21.1.72

आशिक-माशूक का राज

सभी आत्मायें एक परमात्मा की आशिक हैं, वह सर्वात्माओं का एक ही माशुक है। सभी आत्मायें उसे प्यार करती हैं और प्यार से याद करती हैं। परमात्मा देहधारी आशुक-माशुक को भी याद करता है क्योंकि वे भी विकार के लिए एक दूसरे पर फिदा नहीं होते हैं, उनका दैहिक प्यार होता है और एक-दूसरे को देखकर सुख का अनुभव करते हैं, इसलिए उनका नाम भी परमात्मा के मुखारबिन्दु से निकलता है। उनके प्यार का बाबा भी उदाहरण देता है।

''सारे कल्प में इस समय ही रुहानी माशुक और आशिकों का मिलन होता है।... सदैव सोचो - हम किसके आशिक हैं! जो सदा सम्पन्न है, ऐसे माशुक के हम आशिक हैं।'' अ.बापदादा 13.3.87

''सच्चे आशिक की विशेषतायें जानते हो? एक माशुक द्वारा सर्व सम्बन्धों की समय प्रमाण अनुभूति करना। ... दूसरा सच्चे आशिक हर परिस्थिति में, हम कर्म में सदा प्राप्ति की खुशी में होते, ... जिस आशिक को अनुभूति है, प्राप्ति है, वह सदा तृप्त रहेंगे। ... तृप्ति आशिक की विशेष विशेषता है।... सन्तुष्टता तृप्ति की निशानी है। ... सच्चे आशिक हद की चाहना से परे, सदा सम्पन्न और समान होंगे।'' अ.बापदादा 13.3.87

''सदा हाथ और साथ - ही सच्चे आशिक-माशुक की निशानी है। ... सदा बुद्धि का साथ हो और बाप के हर कार्य में सहयोग का हाथ हो।'' अ.बापदादा 13.3.87

''यह माशुक और आशिकों की महफिल है। बगीचा भी है तो सागर का किनारा भी है। यह ऐसी वण्डरफुल प्राइवेट बीच (Beach) है जो हजारों के बीच (मध्य) भी प्राइवेट है। हर एक अनुभव करते हैं कि मेरे साथ माशुक का पर्सनल प्यार है। ... अधिकार में नम्बर नहीं हैं लेकिन, अधिकार प्राप्त करने में नम्बर हो जाते हैं।'' अ.बापदादा 13.3.87

''आत्मा अपने माशूक को आधा कल्प से याद करती आई है। अब वह माशूक आया हुआ है। कहते हैं - तुम काम चिता पर बैठ काले बन गये हो, अभी हम सुन्दर बनाने आये हैं। उसके लिए है यह योग-अग्नि। ज्ञान को चिता नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

''आशिक-माशुक एक दो को याद करते हैं तो याद करते ही वह सामने खड़ा हो जाता है।'' सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

शमा और परवाने का राज

महफिल में जल उठी शमा परवाने के लिए, दुनिया में प्रीत बनी है मर जाने के लिए अर्थात् अपने अस्तित्व को भूल कर शमा के ऊपर बलिहार जाना, उसके समान बन जाना। बाबा कहते हैं - जैसे वे परवाने अनेक प्रकार के होते हैं। कोई शमा पर एक धक से जल मरते, कोई फेरी पहनने वाले होते हैं। ऐसे ही ये रुहानी परवाने भी अनेक प्रकार के होते हैं।

''शमा पर परवाने आते हैं। कोई तो जल मरते हैं, कोई फेरी पहनकर चले जाते हैं। यहाँ भी ऐसे है। कोई तो एकदम फिदा होते हैं, कोई सुनकर फिर चले जाते हैं।'' सा.बाबा 2.5.05 रिवा.

''आज रुहानी शमा रुहानी परवानों को देख रही है।... जैसे शमा ज्योति-स्वरूप है, लाइट-माइट स्वरूप है, वैसे स्वयं को भी शमा के समान लाइट-माइट स्वरूप हो?... फर्स्ट नम्बर हैं लव-लीन परवाने अर्थात् बाप के स्वरूप और शक्तियां धारण करने वाले ... समा जाने अर्थात मर मिटने वाले।'' अ.बापदादा 1.02.76

''भले चले गये परन्तु ऐसे मत समझना कि वे स्वर्ग में नहीं आयेंगे। परवाने बनें, आशिक हुए, फिर माया ने हरा दिया तो भी स्वर्ग में आयेंगे परन्तु पद कम पायेंगे।'' सा.बाबा 30.4.04 रिवा.

''यह रुहानी शमा और रुहानी परवानों की अलौकिक महफिल है। ... इस रुहानी आकर्षण के आगे माया की अनेक प्रकार की आकर्षण तुच्छ लगती है। ... यह आकर्षण अनेक प्रकार की दुख-अशान्ति की लहरों से किनारा कराने वाली है।''

अ.बापदादा 14.11.87

लव एण्ड लॉ का राज़

परमात्मा के साथ भी हमारा लव है तो आत्माओं के साथ भी लव आवश्यक है। अपने को भी ईश्वरीय लॉ एण्ड आर्डर में चलाना है तो अन्य आत्माओं को ईश्वरीय नियमों का ज्ञान देना है। परमात्मा के साथ लव परमात्मा की ब्लेसिंग की अनुभूति कराता है और दूसरी आत्माओं के साथ लव आत्माओं की ब्लेसिंग की अनुभूति कराता है।

''लव ने आप सबको भी एक सेकेण्ड में 5000 वर्ष की विस्मृत हुई बातों को स्मृति में लाया है, सर्व सम्बन्ध में लाया है, सर्वस्व त्यागी बनाया है। ... जितना-जितना बापदादा से लव जुटता है, उतना ही बुद्धि का ताला खुलता जाता है।''

अ.बापदादा 18.1.73

''लव लक के लॉक को खोलने की चाबी है। ... इस चाबी को सदा कायम रखना है। लव अनेक वस्तुओं में होता है। यदि कोई भी वस्तु में लव है तो बाप से लव परसेन्टेज में हो जाता है। ... अपनेपन को मिटाना ही बाप की समानता को लाना है।''

अ.बापदादा 18.1.73

लव एण्ड लॉ के बैलेन्स का राज़

जीवन को भी उन्नति के पथ पर ले जाने के लिए लव एण्ड लॉ का बैलेन्स अति आवश्यक है। किसी के साथ अति लव उसको अलबेला बना देता है और अति लॉफुल बनने से भी उसके अन्दर भय का बीज बोता है, जिससे वह अभीष्ट उन्नति नहीं कर सकता है। लव एण्ड लॉ का बैलेन्स अपने को भी ब्लेसिंग दिलाता है और दूसरों को भी ब्लेसिंग्स देता है।

दधीचि ऋषि और उनके समान स्थिति का राज़

दधीचि ऋषि का शास्त्रों में बहुत गायन है, जिसमें दिखाते हैं कि विश्व-कल्याण अर्थ उन्होंने अपनी हड्डियां भी सेवार्थ दान कर दीं अर्थात् जीते जी अशरीरी होकर अपनी देह का सारा मांस गायों को चटाकर खत्म कर दिया, फिर उनकी हड्डियों से अस्त्र-शस्त्र बनाये गये और असुरों पर विजय पायी गई। परन्तु दधीचि ऋषि कौन है, इस सत्य का ज्ञान किसको नहीं है, बाबा ने अभी इसका राज़ बताया है कि जो सेवा में अपनी हड्डियाँ स्वाहा करता है, वही सच्चा दधीचि ऋषि है। उनमें ब्रह्मा बाबा सबसे अग्रणी हैं, जिन्होंने अपना सारा तन-मन-धन विश्व-कल्याण की सेवा में लगाया और अन्तिम स्वांस भी सेवा में सफल किया। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि तुम बच्चों को दधीचि ऋषि के समान अपनी हड्डियां भी सेवा में देनी हैं और पुरुषार्थ करके इस देहाभिमान से मुक्त बनना है।

राजा जनक के समान विदेही स्थिति का राज़ / राजा जनक के समान ट्रस्टी स्थिति का राज़

राजा जनक को विदेही कहा जाता है अर्थात् देह में रहते देह के धर्मों से परे, राज कारोबार में रहते भी उससे निर्लिप्त। परन्तु वह विदेही स्थिति सहज कैसे बनें, यह कोई नहीं जानता है। राजा जनक के विषय में गायन है कि उनको अष्ट वक्राचार्य ने एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का अनुभव कराया और ट्रस्टी बनकर राजभाग सम्भालने की प्रेरणा दी। बाबा ने अभी आत्मा का यथार्थ ज्ञान देकर देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की युक्ति बताई है। जो उस युक्ति के अनुसार अभ्यास करके अपनी ऐसी स्थिति बनाता है, वही सच्चा विदेही है। वह स्थिति सुख-दुख दोनों से न्यारी, परमानन्दमय है। ब्रह्मा बाबा ने वैसा बनकर दिखाया और उस सर्वोत्कृष्ट स्थिति का अनुभव भी अपने जीवन से कराया है।

शिवबाबा ने पहले ब्रह्मा बाबा को यथार्थ ज्ञान देकर ट्रस्टी बनाकर इस यज्ञ की स्थापना की और उनका उदाहरण देकर अनेक अन्य आत्माओं को ट्रस्टी बनाया। सत्य ज्ञान को समझकर ये ट्रस्टी स्थिति ही देह और दैहिक वस्तु-व्यक्तियों से ममत्व निकालकर नष्टोमोहा बनने का एकमात्र सफल आधार है।

''ट्रस्टी बनकर रहो तो ममत्व मिट जाये। परन्तु ट्रस्टी बनना मासी का घर नहीं है। यह ब्रह्मा खुद ट्रस्टी बने हैं, बच्चों को भी ट्रस्टी बनाते हैं... जब कहते हो- यह ईश्वर का दिया हुआ है तो फिर मरने पर रोने की क्या दरकार है?'' सा.बाबा 26.1.05 रिवा.

''अपने को ट्रस्टी समझकर धन्धा आदि करो तो ममत्व मिट जायेगा। यह बाबा लेकर क्या करेंगे! इसने तो अपना सब कुछ छोड़ा ना।'' सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

''जो मन से समझते हैं कि यह सब कुछ ईश्वर बाप का है, मैं ट्रस्टी हूँ, श्रीमत पर चलकर खर्चा करते हैं, वे शिवबाबा के भण्डारे से ही खाते हैं। बाप के डायरेक्शन पर चलते रहते हैं।... जो डायरेक्शन मिले वह ठीक है। ऐसे डायरेक्शन पर चलने वाले भी जैसे भण्डारे से खाते हैं। बल मिलता है।'' सा.बाबा 14.7.71 रिवा.

''हरेक समझ सकते हैं कि हम परवाना बने हैं... बगैर पूछे किसको भी दान करने का हक नहीं है। बाप को सब कुछ दिया तो फिर राय पर चलना है। ईश्वर को सब कुछ दे देते हैं तो ट्रस्टी बन जाते हो।'' सा.बाबा 27.5.71 रिवा.

भागीरथ का राज

भागीरथ का भी शास्त्रों में बहुत गायन है, जिन्होंने ने अथक पुरुषार्थ करके गंगा को इस धरा पर लाया। इसीलिए भागीरथ पुरुषार्थ कहा जाता है। परन्तु वह भागीरथ कौन है, क्यों उन्हें भागीरथ कहते हैं, यह कोई नहीं जानता है। अभी बाबा ने बताया है कि ये ब्रह्मा बाबा का रथ ही भागीरथ अर्थात् भाग्यशाली रथ है, जिसमें निराकार परमपिता परमात्मा आकर सर्वात्माओं का कल्याण करते हैं। बाबा ने भागीरथ का दूसरा अर्थ भी बताया है कि इस रथ में दो आत्मायें कार्य करती हैं अर्थात् इस रथ के दोनों ही भागीदार हैं, एक है परमपिता और दूसरा है प्रजापिता ब्रह्मा, जिनको Next to God कहा जाता है।

इस ब्रह्मा तन अर्थात् भाग्यशाली रथ द्वारा ही शिवबाबा ने ज्ञान की गंगा बहाई है, जो ज्ञान-जल सर्व आत्माओं को पावन करता है और इस ज्ञान से भरपूर ज्ञान-गंगायें सारे विश्व में जाकर बहती हैं अर्थात् ज्ञान देती हैं और आत्माओं को पावन बनाती हैं

''मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। ... भगवान इस रथ को लेते हैं, जिसको भाग्यशाली रथ कहा जाता है, जिसमें बाप की प्रवेशता होती है, पदमापदम भाग्यशाली बनाने के लिए।'' सा.बाबा 5.10.04 रिवा.

''बाबा इस मुख द्वारा हमको समझाते हैं। इस मुख की भी कितनी महिमा है। गऊमुख से अमृत पीने के लिए कहाँ-कहाँ जाकर धक्के खाते हैं, कितनी मेहनत से जाते हैं।'' सा.बाबा 4.10.04 रिवा.

''शिव जयन्ति भी भारत में मनाते हैं।... मैं आता भी भारत में हूँ। गऊमुख की बात नहीं है ... दूसरे तरफ फिर भागीरथ दिखाते हैं। ... भारत का विश्व पर राज्य था। भारत की कितनी महिमा है। तुम जानते हो कि हम श्रीमत पर यह राज्य स्थापन कर रहे हैं।'' सा.बाबा 5.2.05 रिवा.

''भारत प्राचीन गाया जाता है तो जरूर भारत में ही रिइन्कारनेशन होता होगा। शिवजयन्ति भी भारत में ही मनाते हैं। भागीरथ का भी गायन है। ... इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है।'' सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

ईश्वरीय परिवार और विश्व-बन्धुत्व की भावना का राज

विश्व-बन्धुत्व अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना भारतीय सभ्यता का प्राण है। सारा विश्व हमारा परिवार है अर्थात् हम सभी आत्मायें एक परमपिता परमात्मा के बच्चे भाई-भाई हैं - इस सत्य का ज्ञान अभी ही परमात्मा ने दिया है कि हम अविनाशी आत्मायें कैसे परमात्मा के बच्चे हैं। अभी परमात्मा अर्थात् ईश्वर इस धरा पर आये हैं और हमको सत्य ज्ञान देकर भाई-भाई का पाठ पढ़ा रहे हैं अर्थात् हमारे अन्दर विश्व-बन्धुत्व की भावना जाग्रत कर रहे हैं। जिस भावना से प्रभावित होकर हम सर्व विश्व की आत्माओं के कल्याणार्थ पुरुषार्थ करते हैं।

भले ही हम अभी शिवबाबा के प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा गोद के बच्चे बनते हैं तो जो गोद के बच्चे बनते हैं, उसको ही ईश्वरीय परिवार कहते हैं परन्तु सत्यता ये है कि सभी आत्मायें ईश्वर के बच्चे हैं और सारा जगत ही ईश्वर का सो हमारा परिवार है। यथार्थ ज्ञानी आत्मा का सर्व आत्माओं के प्रति समान प्रेम होगा और सबके प्रति समान भावना होगी। उसके लिए मेरा-तेरा का

प्रश्न ही नहीं होगा। इसीलिए बाबा कहते हैं - तुम पूर्वज आत्मायें हो, सभी तुम्हारे भाई हैं, उन पर रहम करो, उनको भी सुख-शान्ति का रास्ता बताओ।

''कोई पूछते हैं - आपकी संस्था का उद्देश्य क्या है? बोलो - हमारा उद्देश्य है नर से नारायण बनना परन्तु यह कोई संस्था नहीं है। यह तो परिवार है। माँ, बाप और बच्चे बैठे हैं। भक्ति में गाते हैं ना - तुम मात-पिता... बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं।''

सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

''इसी प्रकार सम्बन्ध की शक्ति... इस अलौकि जीवन में सम्बन्ध की शक्ति डबल रूप में प्राप्त होती है। ... एक बाप द्वारा सर्व सम्बन्ध, दूसरा दैवी परिवार द्वारा सम्बन्ध... सम्बन्ध द्वारा निस्वार्थ स्नेह, अविनाशी स्नेह और अविनाशी सहयोग सदा ही प्राप्त होता रहता है।'' अ.बापदादा 29.10.87

ईश्वरीय परिवार, दैवी परिवार और आसुरी परिवार का राज / आसुरी परिवार से ईश्वरीय परिवार में आने का राज

''अभी तुम बच्चे ईश्वरीय दुनिया में बैठे हो, और सब हैं आसुरी दुनिया में। यह बहुत छोटा संगमयुग है। तुम समझते हो अभी हम न दैवी संसार में हैं और न आसुरी संसार में हैं। अभी हम ईश्वरीय संसार में हैं।'' सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

ईश्वरीय परिवार और दैवी परिवार में क्या अन्तर है, इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने अभी ही दिया है और हमको ये ज्ञान अभी संगमयुग पर ही है। अभी संगमयुग पर हम ईश्वर के साथ हैं और हमको इस विश्व-नाटक का पूरा ज्ञान है। ईश्वर सर्व आत्माओं का बाप है, इसलिए सारा विश्व हमारा ईश्वरीय परिवार है। सतयुग-त्रेता में हमारा देवताई जीवन होगा और हम दैवी परिवार में होंगे। अभी का ये ईश्वरीय परिवार सतयुग के दैवी परिवार से पदमगुणा श्रेष्ठ और सुखदायी है। सतयुग में भल सभी आत्माओं का परस्पर प्यार होगा परन्तु हरेक का अपना-अपना परिवार होगा, सभी एक ही परिवार के है, ऐसी कोई भावना नहीं होगी।

आत्मायें तो अनादि ईश्वर के बच्चे हैं, उनके परिवार के हैं परन्तु इस विश्व-नाटक में जब पार्ट बजाने आते हैं तो जीवात्मा रूप में सृष्टि के नियमानुसार हम ईश्वरीय परिवार के बनते हैं और फिर ईश्वरीय परिवार से दैवी परिवार में जाते हैं और दैवी परिवार वाले ही समयान्तर में जब उनके कर्म-संस्कार तम्रोप्रधान बन जाते हैं तो वे ही आसुरी परिवार के बन जाते हैं। फिर सृष्टि के उसी नियमानुसार ईश्वर यथार्थ ज्ञान देकर ईश्वरीय परिवार का बनाते हैं और राजयोग सिखलाकर ईश्वरीय परिवार से दैवी परिवार का बनाते हैं। सृष्टि का यह चक्र अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला है।

''आज भारत ऐसा है, कल भारत ऐसा बनेंगा। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। कल हम रावणराज्य में थे तो नाक में दम था, आज हम परमपिता परमात्मा के साथ रहे हुए हैं। अब हम ईश्वरीय परिवार के हैं, स्वयं भगवान हमको पढ़ा रहे हैं।''

सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

''संगमयुग पर हैं, बाकी कलियुग में हैं।... अपने को आत्मा समझ बाप की याद में रहते हो तो तुम ईश्वरीय परिवार के हो। अगर देहाभिमान में आकर भूल जाते हो तो आसुरी परिवार के हो। सेकेण्ड में ईश्वरीय परिवार के और सेकेण्ड में आसुरी परिवार के बन जाते हो।'' सा.बाबा 4.6.05 रिवा.

''यह चित्र दिखाकर तुम किसको समझा सकते हो। इन लक्ष्मी-नारायण को यह राज्य कैसे मिला... कुछ न कुछ पत्थर डालना चाहिए, तब तो विचार सागर मन्थन चले। अपने इस कुल का होगा तो झट लहर उठेगी। अपने कुल का न होगा तो कुछ भी समझेंगे नहीं, चले जायेंगे। यह नब्ज देखने की बात है।'' सा.बाबा 7.8.71 रिवा.

ईश्वरीय परिवार और दैवी परिवार के परस्पर सम्बन्धों का राज़

वर्तमान संगमयुग का ईश्वरीय परिवार ही भविष्य में दैवी परिवार बनता है। यहाँ के परस्पर के सम्बन्ध ही भविष्य में दैवी सम्बन्धों में परिवर्तन होते हैं, यह राज़ भी परमात्मा ने अभी बताया है। ईश्वरीय परिवार में आने से ईश्वरीय गुण जाग्रत होते हैं,

जिनके आधार पर ही दैवी गुणों की धारणा होती है और दैवी परिवार के बनते हैं। यहाँ के परस्पर के सम्बन्ध ही भविष्य दैवी परिवार के सम्बन्धों का आधार बनते हैं।

''दैवी कुल तो भविष्य में है परन्तु इस ब्राह्मण कुल का बहुत महत्व है। जितना-जितना ब्राह्मण कुल से स्नेह और समीपता होगी, उतना ही दैवी राज्य में समीपता होगी... जैसे साकार में कर्म करके दिखाया, वही फॉलो करना है।'' अ.बापदादा 18.1.70

''सेल्फ-रियलाइजेशन करना भी परखने की शक्ति है। सेल्फ-रियलाइजेशन का अर्थ ही है - अपने आपको परखना वा जानना... खेल में भी आपस में खेलते-खेलते दोस्त बन जाते हैं। वह हुआ स्थूल खेल। यहाँ भी खेल-खेल में आत्माओं की समीपता का मेल होता है, आत्माओं के संस्कार-स्वभाव का मेल होता है।'' अ.बापदादा 8.6.73

शिवबाबा के भण्डारे का राज

आध्यात्मिक जगत में शिवबाबा के भण्डारे और ब्रह्मा भोजन का बहुत गायन है परन्तु शिवबाबा का भण्डारा क्या है और ब्रह्मा-भोजन क्या है, उसका यथार्थ ज्ञान शिवबाबा ही देते है। शिवबाबा दाता है, उसने यह यज्ञ रचा है, इसलिए यह शिवबाबा का भण्डारा है और ब्रह्मा बाबा और ब्राह्मण इसको निमित्त बन सम्भालते हैं, भोजन बनाते हैं, जिससे आत्मा और तन-मन शुद्ध हो जाता है, इसलिए उस पवित्र भोजन को ब्रह्मा-भोजन कहा जाता है। शिवबाबा तो अभोक्ता है परन्तु जो भी ब्राह्मण अपना तन-मन-धन शिवबाबा का समझकर, उनको भोग लगाकर खाते हैं, वे शिवबाबा के भण्डारे का ब्रह्माभोजन ही खाते हैं और जो शिवबाबा को याद कर यज्ञ में देते हैं, उनका शिवबाबा के भण्डारे में जमा हो जाता है और उनको शिवबाबा से पदमगुणा होकर मिलता है। शिवबाबा के भण्डारे में देना और जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक चीज शिवबाबा के भण्डारे लेकर प्रयोग करना, यह भावना पावन बनने में बहुत मददगार है और अति आवश्यक है।

''कभी भी यह संकल्प नहीं करना चाहिए कि हम किसी मनुष्य से लेवें। बोलो - शिवबाबा के भण्डारे में भेज दो, इनको देने से तो कुछ नहीं मिलेगा, और ही घाटा पड़ जायेगा। इनसे तो शिवबाबा के भण्डारे में डालने से पदम गुणा हो जायेगा। अपने को भी घाटा थोड़ेही डालना है।'' सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

''अगर ब्रह्मा को याद कर दिया तो तुम्हारा जमा ही नहीं होगा। ब्रह्मा को तो लेना है शिवबाबा के खजाने से, जिससे शिवबाबा ही याद पड़ेगा। तुम्हारी चीज क्यों लेवें। ब्रह्माकुमार-कुमारियों को देना भी रांग है। बाबा ने समझाया है - तुम कोई से भी चीज लेकर पहनेंगे तो उनकी याद आती रहेगी।'' सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

''अभी बाप तुमको कितना समझदार बनाते हैं। तुम कितना धनवान बनते हो। शिवबाबा का भण्डारा भरपूर है। शिवबाबा का भण्डारा कौनसा है? गायन है - शिवबाबा का भण्डारा भरपूर काल कंटक दूर। बाप तुम बच्चों को ज्ञान रतन देते हैं। वह है ज्ञान रत्नों का सागर।'' सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''चण्डिका देवी का भी मेला लगता है... चण्डाल का जन्म भी यहां के ही लेते हैं। यहाँ रहकर, खा-पीकर, कुछ देकर फिर कहते हैं - हमने जो दिया वह हमको वापस दो, हम नहीं मानते। संशय पड़ जाता है... कुछ समय भी मददगार बनें तो स्वर्ग में जरूर आयेंगे।'' सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

''बाप तो दाता है, सागर है। जो जितना लेना चाहे बापदादा के भण्डारे से ले सकता है। बापदादा के भण्डारे में ताला-चाबी नहीं है, पहरेदार नहीं है। बाबा कहा, जी हाजिर। दाता भी है और सागर भी है तो क्या कमी होगी। कमी दो बातों की होती है - एक सच्ची दिल, साफ दिल और बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर और क्लीन।'' अ.बापदादा 30.3.2000

''यह है शिवबाबा का भण्डारा। शिवबाबा के भण्डारे में तुम सर्विस करते हो। सर्विस नहीं करेंगे तो पाई-पैसे का पद पायेंगे। ... यह राजधानी स्थापन हो रही है।'' सा.बाबा 12.2.05 रिवा.

''मैं कुछ लेता नहीं हूँ। पैसे आदि जो कुछ है वह इसमें सफल करो... भूख कोई मर नहीं सकता। बाबा ने सब कुछ दिया, फिर क्या भूख मरते हैं। ... शिवबाबा का भण्डारा है।'' सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

''जो डायरेक्ट नहीं देते, उनका शिवबाबा के पास जमा नहीं होता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है तो उनके द्वारा सब कुछ करना है। बीच में कोई खा गया तो शिवबाबा के पास तो जमा नहीं हुआ। शिवबाबा को देना है तो थ्रू ब्रह्मा। सेन्टर भी थ्रू ब्रह्मा ही खोलो।'' सा.बाबा 2.11.01 रिवा.

''सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही संगमयुग है... द्वापर से भक्ति से अल्पकाल का फल मिलता है। अभी-अभी जमा किया, अभी-अभी फल पाया और खत्म हुआ... इस युग को वरदानी युग कहा जाता है। इस युग में स्नेह के कारण बाप भोले भण्डारी बन जाते हैं, जो एक का पदमगुणा फल देता है।'' अ.बापदादा 06.01.86

''आप लोगों को भी शक्ति देने का लंगर लगाना पड़ेगा। उसके लिये आप को अपने में पहले से ही स्टॉक जमा करना पड़ेगा। जो गायन है- द्रोपदी के देगड़े का। द्रोपदियाँ तो आप सब हो न! द्रोपदी अर्थात् यज्ञमाता का देगड़ा दोनों बातों में प्रसिद्ध है। एक तो स्थूल साधनों की कोई कमी नहीं और दूसरे सर्वशक्तियों की कोई कमी नहीं। सर्व-शक्तियों से सम्पन्न देगड़ा कब खाली नहीं होता।'' अ.बापदादा 13.9.74

''बिगर पूछे चीज उठाकर खाया तो वह भी पाप बन जाता है। ... एक खायेंगे तो और भी ऐसे करने लग पड़ेंगे। वास्तव में यहाँ कोई चीज़ ताले के अन्दर रखने की दरकार नहीं है। लॉ कहता है इस घर के अन्दर, किचिन के सामने कोई अपवित्र आने नहीं चाहिए।'' सा.बाबा 15.8.05 रिवा.

ब्रह्मा भोजन का राज

अभी हम प्रजापिता ब्रह्मा के गोद के बच्चे ब्राह्मण हैं और यह रुद्र ज्ञान यज्ञ है। इसमें जो भोजन बनता है, वह ब्रह्मा भोजन है, जिसको खाने से हम आत्माओं का तन और मन शुद्ध होता है। ब्रह्मा भोजन के लिए गायन है कि देवतायें भी ब्रह्मा भोजन की इच्छा रखते हैं। सतयुग के देवतायें तो यहाँ के भोजन की इच्छा नहीं करेंगे क्योंकि उनको तो संगमयुग के ब्रह्मा भोजन का ज्ञान ही नहीं होगा परन्तु जो आत्मायें यहाँ से शरीर छोड़ती हैं, वे सूक्ष्मवतन में अवश्य यज्ञ के ब्रह्मा भोजन की इच्छा रखती हैं, इसलिए बाबा की आज्ञानुसार उनको भोग लगाया जाता है और बाबा उनको इमर्ज करके ब्रह्मा भोजन स्वीकार कराते हैं। जो बच्चे स्थूल देह से में यज्ञ में नहीं रहते हैं प्रवृत्ति में रहते हैं परन्तु अपने को ट्रस्टी समझकर चलते हैं, यज्ञ के नियम-संयम का पालन करते हैं, तो उनके द्वारा बनाया गया भोजन भी ब्रह्मा भोजन ही है और वह भी वैसा ही प्रभावशाली होता है, जैसे यज्ञ में बनाया गया भोजन क्योंकि यह यज्ञ किन्हीं सीमाओं में सीमित नहीं है, यह तो बेहद के बाप का बेहद का यज्ञ है और इसकी सीमायें भी बेहद में ही हैं।

''भीलनी से जब ब्राह्मणी बन जाती है तो फिर क्यों नहीं खायेंगे। इसलिए ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है। शिवबाबा तो खायेंगे नहीं, वह तो अभोक्ता हैं। बाकी यह रथ तो खाते हैं ना।'' सा.बाबा 5.2.05 रिवा.

''शुद्ध अन्न पेट में पड़ता है तो ब्रह्मा का, कृष्ण का, शिवबाबा का साक्षात्कार हो सकता है।... शिवबाबा को याद करते भोजन बनायेंगे तो बहुतों का कल्याण हो सकता है। उस भोजन में ताकत भर जाती है... ब्रह्मा भोजन का गायन भी है ना।''

सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

इन्द्र, इन्द्र सभा और उसके विधि-विधान का राज़ / ज्ञान वर्षा और इन्द्र का राज़

भारत में इन्द्रदेव का बहुत गायन है और उनके विषय में अनेक प्रकार की किवदन्तियां हैं, जो शास्त्रों में भी लिखी हैं और साधारण मनुष्यों में भी प्रचलित हैं। जल का देवता भी इन्द्र को ही माना जाता है। भारत में इन्द्रदेव, इन्द्र-सभा और उसके विधि-विधानों का भी बहुत गायन है। कहते हैं इन्द्र सभा में परियां डान्स करती हैं, उस सभा में कोई विकारी प्रवेश नहीं कर सकता है। इन्द्रलोक की कोई परी किसी विकारी को छिपाकर इन्द्र-सभा में ले आई तो दोनों ही श्रापित हो गये। इन्द्रदेव के लिए साधारण मनुष्य समझते हैं कि उनके कहने से ही बादल जल बरसाते हैं।

अब यह इन्द्र कौन हैं और ये इन्द्र-सभा क्या है, परियां कौन हैं, इन्द्र कौनसा जल बरसाते हैं, इस सबका रहस्य अभी परमात्मा ने बताया है कि ब्रह्मा तन में साकार रूप में पधारे परमपिता परमात्मा ही इन्द्र हैं और उनकी अभी की ये सभा ही सच्ची इन्द्र-सभा है। अगर इस सभा में कोई ब्राह्मणी बहन इन्द्र अर्थात् ब्रह्मा तन में पधारे परमात्मा से बिना पूछे किसी विकारी मनुष्य को छिपाकर ले आती है तो दोनों ही श्रापित हो जाते हैं अर्थात् दोनों पर ही पाप चढ़ जाता है। इस सभा में परमात्मा और बहनों के द्वारा ज्ञान डान्स ही परियों का डान्स है। परमात्मा के द्वारा दिया जा रहा ज्ञान ही जल है, जो ज्ञान-सागर परमात्मा बरसाते हैं और जिसको अपने में भरकर अर्थात् धारण कर आत्मा रूपी बादल जाकर दुनिया में बरसते हैं, जिससे आत्मायें सर-सब्ज होती हैं। यह सब रहस्य अभी ही परमात्मा द्वारा पता पड़ा है।

''कोई बादल तो खूब बरसते हैं और कोई थोड़ा बरसकर चले जाते हैं। तुम भी बादल हो ना। ज्ञान सागर से ज्ञान-जल खींचते हो और बरसते हो। ... संग भी उनका करना चाहिए जो अच्छा बरसते हैं।'' सा.बाबा 1.2.05 रिवा.

''तुम इस समय देवताओं से भी ऊंच हो क्योंकि बाप के साथ हो। बाप इस समय तुमको पढ़ाते हैं... यह इन्द्र-सभा है, जहाँ ज्ञान वर्षा होती है... अगर बिगर पूछे कोई विकारी को ले आते हैं तो बहुत सजा मिल जाती है, पत्थरबुद्धि बन जाते हैं।''
सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

''ये हैं नई बातें, इनको नया कोई समझ न सके। इसलिए नये को एलाउ नहीं किया जाता है। यह है इन्द्र सभा... पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बाप के सिवाए कोई बना न सके। बरोबर भारत सोने की चिड़िया था। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे।''
सा.बाबा 18.2.05 रिवा.

''यहाँ बादल आते हैं रिफ्रेश होने, फिर जाकर वर्षा कर दूसरों को रिफ्रेश करेंगे... बाप राय देते हैं - बहुतों को रास्ता बतायेंगे तो वे तुम पर कुर्बान जायेंगे।'' सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

''जो बादल सागर के साथ हैं, उनके लिए ही बरसात है... तुम भी सागर के पास आते हो भरने के लिए... बच्चों को ज्ञान की धारणा करनी और करानी है।'' सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

''ईश्वर की गोद में आकर ...एक ने भी अगर हाथ छोड़ा, विकारी बना तो उनका पाप ले आने वालों पर आ जायेगा। ऐसे को इन्द्र सभा में न ले आना चाहिए... बाबा पारसनाथ बनाते हैं फिर अगर अवज्ञा की तो पत्थरबुद्धि बन जाते हैं।''
सा.बाबा 28.5.71 रिवा.

''अपवित्र कोई बैठ न सके। नहीं तो पत्थर-भित्तर बन जायेंगे। बाबा कोई श्राप नहीं देते हैं। यह तो एक लॉ है। ...बाबा का बच्चा बना तो बीमारी सारी जोर से उथल खायेगी। डरना न है।'' सा.बाबा 28.5.71 रिवा.

ज्ञान का तीसरा नेत्र, कुण्डलिनी जागरण का राज़

तीसरा नेत्र कोई स्थूल रूप में किसको नहीं होता, यह तो ज्ञान का तीसरा नेत्र है। बाप से दिव्य बुद्धि का वरदान मिलता है, वही तीसरा नेत्र है। इस ज्ञान के तीसरे नेत्र से हम आत्मा, परमात्मा और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं और देहाभिमान को छोड़कर देही-अभिमानी बनते हैं। देवताओं आदि को और जैन मन्दिरों में भृकुटी में नेत्र दिखाते हैं, वह नेत्र ही आत्मा के तीसरे नेत्र का द्योतक है क्योंकि आत्मा शरीर में भृकुटी में निवास करती है। जिसका तीसरा नेत्र खुला होता है, वह दूसरों को भी आत्मिक स्वरूप में ही देखता है।

हठयोग में कुण्डलिनी को जागृत करने का जो पुरुषार्थ है, वह कोई स्थूल बात या क्रिया नहीं है। ज्ञान-योग के द्वारा बुद्धि का दिव्य खुलना ही यथार्थ कुण्डलिनी जागृत करना है क्योंकि आत्मिक स्थिति में आत्मा में अपार शक्ति होती है, वह तीनों कालों और तीनों लोकों में विचरण कर सकती है। उसमें आठो सिद्धियों और नवो निधियों का सुख समाया हुआ होता है।

''अभी बाप ज्ञान चक्षु देते हैं।... अभी तुम समझते हो - बाप ने यह शरीर धारण किया है, तब अपना भी और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बताते हैं। सारे नाटक की भी नॉलेज देते हैं।'' सा.बाबा 11.11.04 रिवा.

''बाप ने बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है, जिससे तुम अपने को आत्मा समझ, बाप को जो है, जैसा है, उसको उसी रूप में जानकर याद करते हो। ... बाबा कहते हैं - देह को देखते हुए तुम मुझे याद करो। आत्मा को अब तीसरा नेत्र मिला है।... सदैव ज्ञान के अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए।'' सा.बाबा 26.1.05 रिवा.

''डबल लाइट और माइट हाउस क्यों कहा क्योंकि आपको दो कार्य करने हैं - किसी को मुक्ति का और किसी को जीवनमुक्ति का रास्ता बताना है। ... सिर्फ लाइट से भी काम न होगा और सिर्फ माइट से भी काम नहीं होगा। दोनों का बैलेन्स जब ठीक होगा तब उनको डिवाइन इन्साइट का वरदान दे सकेंगे।'' अ.बापदादा 23.9.73

''अन्धों को डिवाइन इन्साइट या तीसरे नेत्र का दान दो, जिससे वे मुक्ति और जीवनमुक्ति के ठिकाने को देख भी सकें। अगर देखेंगे नहीं तो फिर पहुँचेंगे कैसे।'' अ.बापदादा 23.9.73

''गायन है - एक सेकेण्ड में तीसरा नेत्र खुलने से विनाश हो गया। विनाश के साथ स्थापना तो है ही।... तीसरे नेत्र को शक्ति-शाली बनाने के लिए केवल मुख्य दो शब्दों पर अटेन्शन चाहिए। तीसरे नेत्र में कमजोरी आने की भी वही दो बातें हैं... एक लगाव और दूसरा पुराना स्वभाव।'' अ.बापदादा 15.7.73

''अभी आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है, उसको कहा जाता है त्रिनेत्री। त्रिनेत्री बने तब त्रिकालदर्शी बनें... परमात्मा को ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल कहते हैं। नॉलेज किसको कहा जाता है, वह तो जब मिले तब पता पड़े।'' सा.बाबा 20.5.05 रिवा.

देवताओं के तीसरे नेत्र का राज़

प्राय: देवताओं को त्रिनेत्री दिखाते हैं परन्तु ये तीसरा नेत्र क्या है, उसका ज्ञान किसी को नहीं है, जो परमात्मा आकर देते हैं। तीसरा नेत्र ज्ञान का होता है, ज्ञान आत्मा में ही धारण होता है, इसलिए तीसरा नेत्र मस्तक पर भृकुटी के मध्य में ही दिखाते हैं। वास्तविकता तो ये है कि सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त और आत्मा के विषय में यथार्थ ज्ञान न देवताओं में होता है और न मनुष्यों में होता है। ये ज्ञान ब्राह्मणों में ही संगमयुग पर होता है। इसलिए बाबा कहते हैं - तुमको तीसरे नेत्र से तीसरे नेत्र को ही देखना है अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थित होकर आत्माओं को ही देखना है, देह को नहीं। देह को देखने से विकारों रूपी सर्प डस लेंगे।

''अभी बाप तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। अभी तुम्हारी क्रिमिनल दृष्टि कभी नहीं जानी चाहिए। ज्ञान के तीसरे नेत्र से आत्मा को ही देखो।'' सा.बाबा 4.11.04 रिवा.

''यह तीसरा नेत्र सदैव एक टिक हो। यह साक्षात्कार आपके मस्तक से होगा, नयनों से होगा। ... सम्पूर्ण स्थिति में वही टिक सकेगा, जो एक की ही याद में मग्न होगा।'' अ.बापदादा 29.6.70

''चेहरा ऐसा चमकता हुआ हो जो और भी आपके चेहरे में अपना रूप देख सकें। चेहरा दर्पण बन जाये। ... दान करने से शक्ति मिलती है। अन्धों को आंखे देना कितना महान कार्य है। आप सभी का यही कार्य है - अज्ञानी अंधों को ज्ञान-नेत्र देना और अपनी अवस्था सदैव अचल हो।'' अ.बापदादा 26.1.70

''गाते हैं - नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु। ... आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। ... अभी तुम जानते हो भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग में कितना फर्क है। ... तीजरी की कथा अर्थात् तीसरा नेत्र मिलने की कथा।'' सा.बाबा 11.7.05 रिवा.

त्रिनेत्री और त्रिकालदर्शी पन का राज

यह सब राज़ भी परमात्मा ही आकर बताते हैं कि तीन लोक क्या हैं, तीसरा नेत्र क्या है और त्रिकालदर्शी स्थिति क्या है। तीसरा नेत्र कोई स्थूल में नहीं होता। बुद्धि को ही तीसरा नेत्र कहा जाता है। जब हमारी बुद्धि में यथार्थ ज्ञान की धारणा होती है तो हमारा तीसरा नेत्र खुल जाता है और हम त्रिनेत्री बन जाते हैं। सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का यथार्थ ज्ञान जब परमात्मा देते हैं तो हमको सृष्टि के भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल का ज्ञान हो जाता है और हम त्रिकालदर्शी बन जाते हैं। त्रिकालदर्शी ही भूतकाल अर्थात् पुरानी दुनिया को भूलकर भविष्य नई दुनिया के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकता है।

''कोई भी व्यक्ति सामने आये तो आप एक सेकेण्ड में उसके तीनों कालों को समझ लो।... वर्तमान समय जो आने वाला है, उसमें अगर यह गुण न होगा, कमी होगी तो धोखे में आ जायेंगे।'' अ.बापदादा 18.5.69

सत्य नारायण की सच्ची कथा, अमर कथा, तीजरी की कथा का राज

ये तीनों कथायें एक ही कथा के पर्यायवाची और गुणात्मक नाम हैं। परमात्मा संगमयुग पर आकर जो ज्ञान देते हैं, जिससे आत्मा नर से नारायण बनती तो सत्य नारायण की कथा हो गयी। इस ज्ञान के द्वारा आत्मा अमरत्व का अनुभव करती और स्वर्ग में अमर पद पाती तो अमर कथा हो गई। परमात्मा जो ज्ञान देते, उससे आत्मा का ज्ञान का तीसरा नेत्र खुलता है, इस लिए तीजरी की कथा कहा जाता है। ये तीनों ही गुण और नाम एक ही कथा के हैं, जो परमात्मा संगमयुग पर आकर सुनाते हैं।

''परमात्मा ज्ञान का सागर, पतित-पावन है, गीता का भगवान है। वे ही ज्ञान और योगबल से ये कार्य कराते हैं।... भारत का प्राचीन योग मशहूर है। वह तुम अभी सीखते हो। ... गीता को माई-बाप कहा जाता है।... इसको ही गीताज्ञान, अमर कथा, सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा कहते हैं।'' सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

''समझते हैं - शंकर ने पार्वती को अमरकथा सुनाई। अमरनाथ की सच्ची कथा तो तुम अभी सुनते हो। यह तो बाप बैठकर सुनाते हैं। तुम आये हो बाप के पास। यह है भाग्यशाली रथ।'' सा.बाबा 25.5.05 रिवा.

''अभी तुम जानते हो - हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं, कल्प-कल्प हम बाबा से यह अमरकथा सुनते हैं, शिवबाबा है अमरनाथ। ... अमरकथा कहो, सत्य-नारायण की कथा कहो, बात एक ही है। तुम इस कथा से नर से नारायण बनते, अमरकथा से अमर बन जाते हो।'' सा.बाबा 6.6.05 रिवा.

''बाप अभी तुमको सच्ची सत्य नारायण की कथा सुना रहे हैं। भक्ति मार्ग में हैं पास्ट की बातें, जो होकर जाते हैं, उनके यादगार मन्दिर आदि बनाते हैं। जैसे शिवबाबा अभी तुमको पढ़ा रहे हैं फिर भक्ति मार्ग में यादगार बनायेंगे।''
सा.बाबा 15.7.05 रिवा.

हिम्मते बच्चे मददे बाप का गुह्य राज़

परमात्मा की मदद ही आत्माओं की चढ़ती कला का आधार है। परमात्मा पिता की मदद तो सर्व आत्माओं के लिए सदा है ही है। उनके लिए यह नहीं कहा जा सकता है कि वह किसको मदद करता है और किसको नहीं करता है। परन्तु यह सत्य है कि हिम्मतवान को उनकी मदद विशेष मिलती है क्योंकि परमात्मा की मदद का नियम है - एक कदम बच्चों का और हजार कदम मदद बाप की। गायन है - हिम्मते मर्दा, मदद दे खुदा।

''हिम्मत से बाप की मदद भी मिलेगी। हम सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, बाप को याद किया, यही हिम्मत है। ... कोशिश करेंगे। सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते हैं। उनके संकल्प, वाणी सभी निश्चय की होगी।'' अ.बापदादा 24.1.70

'''हिम्मते बच्चे मदद दे बाप', बच्चों की हिम्मत और सारे परिवार तथा बापदादा की मदद है ही इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है। जो चाहो वह कर सकते हो।'' अ.बापदादा 13.3.86

''अगर हिम्मत हो तो मदद जरूर मिलेगी। इसलिए मददगार के साथ कुछ हिम्मतवान भी बनो।... हिम्मत कैसे आयेगी? हर समय, हर कदम पर हर संकल्प में बलिहार होने से।'' अ.बापदादा 19.7.69

''सच्ची दिल और बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। ...जो हिम्मत रखता है, उसको एक्स्ट्रा मदद जरूर मिलती है। ... हिम्मत वाले अवश्य विजयी होने ही हैं। होंगे या नहीं होंगे? नहीं, होने ही हैं।'' अ.बापदादा 30.3.2000

''एक है याद का बल, दूसरा है स्नेह का बल, तीसरा है सहयोग का बल और चौथा है सहन का बल।... बापदादा की भी प्रतिज्ञा की हुई है बच्चों से कि हिम्मते बच्चे मदद दे बाप।'' अ.बापदादा 2.4.70

“पंख तो मिल गये हैं ना! उमंग-उत्साह और हिम्मत के पंख सबको मिले हैं और बाप का वरदान भी है। याद है वरदान? एक कदम हिम्मत का आपका और हजार कदम मदद बाप की… बाप ने अपनी मोहब्बत से भटकने के बजाये तीन तख्त के मालिक बना दिया।” अ.बापदादा 15.12.2004

“जब हिम्मत रखते हैं तो बाप की मदद भी मिलती ही है। एवर-रेडी जरूर रहना चाहिए।… अपनी बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। … बाप का इशारा मिला तो कुछ भी सोचने की जरूरत ही नहीं है।… बेपरवाह, निर्भय होकर सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो बाप की पदमगुणा मदद भी मिलती है।” अ.बापदादा 27.2.86

“हिम्मत रखने से मदद स्वत: ही मिलती है। हिम्मत में कुछ कमी होती है तब मदद में भी कमी पड़ती है। … पहले हिम्मते बच्चे, फिर मदद दे बाप है। आपकी एक गुणा हिम्मत, बाप की सौगुणा मदद। … सिर्फ बाप के ऊपर रखना कि बाबा मदद करेगा तो होगा, यह भी पुरुषार्थहीन के लक्षण हैं।” अ.बापदादा 6.8.72

“फरिश्ता बनने वाली आत्माओं की बुद्धि इस देह रूपी धरती पर नहीं रह सकती। यही निशानी है फरिश्तेपन की। … दैवी परिवार के रिश्तों में भी फरिश्ते नहीं आते। वे तो सदैव न्यारे रहते हैं। … अगर किससे रिश्ता जोड़ा तो एक से वह रिश्ता हल्का हो जायेगा। … टूटे हुए दिल को बाप स्वीकार नहीं करते, यह भी रिश्तों की गुह्य फिलॉसॉफी है।” अ.बापदादा 21.9.75

“संकल्प में भी कोई आत्मा न आये। … कैसी भी परिस्थिति हो। चाहे तन की, चाहे मन की या सम्पर्क की परन्तु कोई भी आत्मा संकल्प में न आये। … मुश्किल के समय बाप के सहारे का ही गायन है न कि किसी आत्मा के सहारे का। … किसका सहारा ले लेते तो बे-सहारे हो जायेंगे।” अ.बापदादा 21.9.75

“आदि से अब तक हर एक ब्राह्मण आत्मा हिम्मत के आधार से बापदादा की मदद के पात्र बनी है और ‘हिम्मते बच्चे मदद दे बाप’ के वरदान प्रमाण पुरुषार्थ में नम्बरवार आगे बढ़ते रहे हैं। बच्चों के एक कदम की हिम्मत और बाप की पद्म कदमों की मदद हर एक बच्चे को प्राप्त होती है - यह बापदादा वायदा और वर्सा सब बच्चों के प्रति है।” अ.बापदादा 22.11.87

“हिम्मत से दृढ़ संकल्प किया कि हमको पवित्र बनना ही है और बाप ने पद्मगुणा मदद दी, स्मृति दिलाई कि आप आत्मायें अनादि-आदि पवित्र थी …बाप ने नॉलेज की शक्ति की मदद और याद द्वारा आत्मा कीपावन स्थिति की अनुभूति की शक्ति की मदद से परिवर्तन कर लिया।” अ.बापदादा 22.11.87

“बाप की मदद अर्थात् दाता की देन, वरदाता के वरदान तो सागर के समान हैं लेकिन सागर से लेने वाले कोई बच्चे सागर समान भरपूर बन औरों को भी बना रहे हैं और कोई… अलबेलेपन के कारण मदद की विधि को अपने समय पर भूल जाते हैं।” अ.बापदादा 22.11.87

“कोई अभिमान के कारण हिम्मत द्वारा मदद की विधि को भूल जाते हैं … यह है अटेन्शन रखने में अलबेलापन। जहाँ तक जीना है वहाँ तक पढ़ाई और सम्पूर्ण बनने का, बेहद की वैराग्य वृत्ति का अटेन्शन रखना ही है। ब्रह्मा बाप को देखा… नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते हुए भी अलबेले नहीं रहे।” अ.बापदादा 22.11.87

“‘हिम्मते बच्चे मदद दे खुदा’ - इस राज को भूल जाते हैं। यह एक ड्रामा की गुह्य कर्मों की गति है। अगर यह विधि और विधान नहीं होता तो सभी विश्व के पहले राजा बन जाते… नम्बरवार बनने का विधान इस विधि के कारण ही बनता है… निमित्त मात्र यह विधान ड्रामा में नूँधा हुआ है।” अ.बापदादा 22.11.87

सर्वशक्तिवान बाप की मदद का राज़ / परमात्मा की मदद लेने और देने का राज

परमात्मा सर्वशक्तिवान है, उसकी शक्ति से ही आत्मा विकारों पर विजय प्राप्त कर सकती है। परमात्मा तो सबका पिता है और सर्व आत्माओं पर उसका समान प्यार है। जो आत्मा हिम्मत से अपना एक कदम उसकी श्रीमत अनुसार उठाती है तो उसको हजार कदम परमात्मा बाप की मदद अवश्य मिलती है। एक कदम हमारा, हजार कदम बाप की मदद का विधान इस ड्रामा में नूँधा हुआ है।

बाप आकर पतित दुनिया को पावन बनाते हैं तो बाप को भी बच्चों की मदद लेनी होती है, जिस मदद का प्रतिफल कई गुणा बाप की मदद के रूप में अभी भी मिलता है और नई दुनिया में भी मिलता है। बाप को याद कर पावन बनना और दूसरी आत्माओं को पावन बनने का रास्ता बताना, दूसरी आत्माओं को पावन बनने में मदद करना ही बाप की मदद करना है। इसके लिए बाप ने इस ज्ञान यज्ञ की स्थापना की है। जो जितना तन-मन-धन से और मन्सा-वाचा-कर्मणा इसमें मदद करता है, वह उतना ही उसका फल पाता है। इसका फल केवल नई दुनिया में ही नहीं मिलता है बल्कि अभी संगमयुग पर जो अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, वह सुख सतयुग के सुख से कोटि-कोटि गुणा श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण है।

''बेपरवाह, निर्भय होकर सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो बाप की पदमगुणा मदद भी मिलती है।'' अ.बापदादा 27.2.86

''दिल से, मुहब्बत से कहो - 'मेरा बाबा', तो मेहनत मोहब्बत में बदल जायेगी। मेरा बाबा कहने से ही बाप के पास आवाज पहुँच जाता है और बाप एक्स्ट्रा मदद देते हैं। लेकिन है दिल का सौदा, जबान का सौदा नहीं है। दिल का सौदा है।'' अ.बापदादा 15.10.04

''हिम्मत से बाप की मदद भी मिल जाती है। नाउम्मीद में भी उम्मीदों के दीपक जग जाते हैं। ... हिम्मत और उमंग के पंख जब लग जाते हैं तो जहाँ भी उड़ना चाहें उड़ सकते हैं। बच्चों की हिम्मत पर बापदादा सदा बच्चों की महिमा करते हैं।'' अ.बापदादा 4.03.86

''ऐसे बहुत हैं, जो जन्म से ही बाल ब्रह्मचारी रहते हैं। वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बन दुनिया को भी पावन बनायें। बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से।'' सा.बाबा 17.10.68

''जितना आप अपने में निश्चय रखते हैं, उतना बापदादा भी अवश्य मददगार बनते हैं। स्नेही को सहयोग अवश्य मिलता है। किससे भी सहयोग लेना है तो स्नेही बनना है। ... कब भी हिम्मतहीन बोल नहीं बोलने चाहिए।'' अ.बापदादा 28.9.69

''जो सपूत हैं, ज्ञान को धारण कर पवित्र रहते हैं, सच्चे योगी और ज्ञानी हैं, वे मुझे प्यारे लगते हैं। ... तुम बच्चे इस समय नर्क को स्वर्ग बनाने वाले हो। ... योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं। आपही आंख खुल जायेगी, खटिया हिल जायेगी। बेहद का बाप कितना रहम करते हैं।'' सा.बाबा 8.12.04 रिवा.

''जो मददगार हैं, उनको मदद तो सदैव मिलती है। ... यह लेन-देन का हिसाब ठीक रहता है। इस संगम समय पर ही अनेक जन्मों का सम्बन्ध जोड़ना है। स्नेह है सम्बन्ध जोड़ने का साधन। ... ईश्वरीय स्नेह भी तब जुड़ सकता है जब अनेकों के साथ स्नेह समाप्त हो जाता है।'' अ.बापदादा 26.1.70

''एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे आदि से सहयोगी बच्चों को बाप का एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है।... जो दिल से सहयोगी रहे हैं उन्होंको ऐसे समय पर एक्स्ट्रा मार्क्स रिटर्न के रूप में प्राप्त होती है। समझा, इस रहस्य को!... ऐसे निमित्त बनने वाली आत्माओं को, आईवेल पर सहयोगी बनने वाली आत्माओं को, ऐसी कोई भी मुश्किल की वेला आती है तो बापदादा भी उन्हें उसका रिटर्न देता है ... यह एक्स्ट्रा गिफ्ट ड्रामा में नूँधी हुई है।'' अ.बापदादा 18.1.86

''अगर एक बार समय पर, बिना कोई संकल्प के, आज्ञा समझा कर जो सहयोगी बन जाते हैं, ऐसे समय के सहयोगियों को बाप-दादा भी अन्त तक सहयोग देने के लिए बाँधा हुआ है। एक बार का सहयोग देने का जम्प अन्त तक सहयोग लेने का अधिकारी बनाता है। एक का सौ गुणा मलने से मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा होती है।'' अ.बापदादा 24.12.74

''अपने को सदा बापदादा के साथ अनुभव करते हो या अकेला अनुभव करते हो ? ... जो सदा साथ का अनुभव करेंगे, वे कभी किसी देहधारी के साथ की आवश्यकता अनुभव नहीं करेंगे। कभी भी किसी सेवा में देहधारी का आधार नहीं लेंगे। मर्यादा प्रमाण संगठन प्रमाण सहयोग लेना अलग बात है।'' अ.बापदादा 23.1.76

''जब बाप स्वयं साथ देने का आफर कर रहे हैं, उस आफर को स्वीकार करना चाहिए ना ? ...जैसे स्थूल में कोई किसी को कोई चीज ऑफर करे, वह स्वीकार न करे तो इसको सभ्यता नहीं समझेंगे। यह इज्जत कहेंगे ? यह तो गॉड की ऑफर है। सदा बाप के साथ अर्थात् निरन्तर योगी बनो।'' अ.बापदादा 23.1.76

बाप के साथ सर्व सम्बन्ध, सम्बन्ध निभाने और सर्व सम्बन्धों से सर्व प्राप्तियों का राज

हर आत्मा को सुख-दुख के समय में किसी न किसी सम्बन्ध की याद आती ही है। हमारा सर्व सम्बन्धी एक परमात्मा ही है अर्थात् हमारे सर्व सम्बन्ध एक परमात्मा के साथ ही है। हमको हर समय एक परमात्मा की ही याद आये, किसी भी परिस्थिति में और कोई देहधारी आत्मा याद न आये, उसके लिए दूसरे सर्व सम्बन्धों की याद भूलनी पड़ेगी परन्तु वह तब ही होगा जब उन सभी सम्बन्धों का सुख एक परमात्मा से अनुभव हो। परमात्मा के साथ हमारे सर्व सम्बन्ध हैं, उसकी अनुभूति करना अति आवश्यक है। इसीलिए विभिन्न भक्तों ने परमात्मा को विभिन्न सम्बन्धों से अपना समझकर उनकी भक्ति की है। परन्तु अभी परमात्मा स्वयं ही उन सर्व सम्बन्धों की अनुभूति कराते हैं। अभी की अनुभूति के आधार पर ही भक्ति मार्ग में उन सम्बन्धों से आत्मा परमात्मा को याद करती है। ये सब ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है।

''सर्व सम्बन्ध किससे हैं? एक से। तो एक से दो भी बनना है तो बाप और बच्चे, तीसरा कोई सम्बन्ध नहीं।... ऐसी स्थिति में रहने से मायाजीत बनते हैं।... यह शुद्ध स्नेह सारे कल्प में एक ही बार मिलता है। ऐसे स्नेह को हम ही पाते हैं। जो कोई को प्राप्त नहीं हो सकता, वह हमको प्राप्त हुआ है। इसी नशे और निश्चय में रहना।'' अ.बापदादा 24.1.70

''बाप इस रथ द्वारा कहते हैं - मुझे याद करो, मैं ही पतित-पावन तुम्हारा बाप हूँ। तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से रास रचाऊं - यह यहाँ के लिए गायन है, ऊपर में कैसे होगा।'' सा.बाबा 2.12.04 रिवा.

''गायन है - धरत परिये पर धर्म न छोड़िये। कौनसा धर्म और कौनसा धरत? एक बार वायदा कर लिया, बापदादा को हाथ दे दिया फिर उस धर्म को छोड़ना नहीं है। ... बाप बच्चों को फरमान नहीं करते, शिक्षा देते हैं। अगर फरमान करे और न मानें तो वह भी अच्छा नहीं।'' अ.बापदादा 6.07.69

''बाप के सम्बन्ध में स्लोगन है - 'सन शोज फादर'... शिक्षक के रूप में स्लोगन है - 'जब तक जीना है तब तक पढ़ना है' ... और गुरु के रूप में स्लोगन है 'जहाँ बिठाये, जैसे बिठाये... चलाये'। साजन के रूप में स्लोगन क्या है - तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊं और तुम्हीं संग स्वांसो स्वांस साथ रहूँ।'' अ.बापदादा 21.7.73

''यह है प्रैक्टिकल मेला और सभी हैं यादगार मेले।... यह आत्मा और परमात्मा का मेला है। न सिर्फ एक सम्बन्ध से लेकिन सर्व सम्बन्धों से, सर्व सम्बन्धी बाप से मिलन का मेला है अथवा सर्व प्राप्तियों का मेला है।'' अ.बापदादा 8.07.73

''प्रवृत्ति के सम्बन्ध में वृत्ति चंचल होती है। परन्तु सर्व सम्बन्ध का अलौकिक अनुभव सर्व सम्बन्ध निभाने वाले बाप से प्राप्त करो तो जब प्राप्ति की पूर्ति हो जायेगी तो फिर चंचलता की निवृत्ति हो जायेगी।'' अ.बापदादा 26.10.71

''सर्व सम्बन्ध से सर्व-प्राप्ति कर सकते हो तो सिर्फ एक-दो सम्बन्ध से मिलन व प्राप्ति करने में राजी नहीं हो जाना है। थोड़े में राजी होने वाले भक्त कहलाये जाते हैं। बच्चे सर्व-सम्बन्ध और सर्व-प्राप्ति के अधिकारी हैं। इसी अधिकार को प्राप्त करने वाली आत्मायें ज्ञानी तू आत्मा और योगी तू आत्मा बाप को प्रिय बने हो?'' अ.बापदादा 8.7.74

''सच्चा स्नेह व एक द्वारा सर्व-सम्बन्धों का स्नेह प्राप्त करने के लिए, मुख्य कौन-सा साधन व अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए, कौन-सी मुख्य बात आवश्यक है? 'एक बाप दूसरा न कोई' क्या यह बात जीवन में, संकल्प में और साकार में है?'' अ.बापदादा 20.5.74

''हर सम्बन्ध की प्राप्ति को ही सम्पन्न जीवन समझते हैं। तो यह ब्राह्मण जीवन भगवान से सर्व सम्बन्ध अनुभव करने वाली सम्पन्न जीवन है। भगवान से एक भी सम्बन्ध का अनुभव कम होगा तो वही सम्बन्ध अपनी तरफ खींच लेगा... जहाँ सर्व है वहीं सम्पन्नता है... इसलिए सर्व सम्बन्धों के सर्व स्मृति-स्वरूप बनो।'' अ.बापदादा 14.10.87

परमात्मा के साथ बाप, टीचर, सतगुरु, सजनी-साजन, सखा आदि सर्व सम्बन्धों का राज

दुनिया में जीवात्मा के सुख के लिए अनेक सम्बन्ध हैं परन्तु अभी उन सर्व सम्बन्धों का रस एक परमात्मा से मिलता है, जिससे ही वे सभी सम्बन्ध भूल जाते हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है कि एक भी सम्बन्ध का रस परमात्मा से अनुभव नहीं किया तो वही सम्बन्ध हमारी बुद्धि को खींच लेगा, इसलिए सर्व सम्बन्धों का रस मेरे से अनुभव करो।

परमात्मा की याद का यथार्थ रहस्य हमारी समझ में आ जाये और हर समय एक परमात्मा की ही याद रहे तो कोई भी कार्य असम्भव नहीं है अर्थात् परमात्मा की याद से हर कार्य सिद्ध होगा और परमात्मा की याद में हर सम्बन्ध का सुख अनुभव होगा। जब सर्व कार्य परमात्मा की याद से सिद्ध हो जायेंगे और सर्व सम्बन्धों का सुख परमात्मा की याद में अनुभव होगा तो कोई भी देहधारी क्यों याद आयेगा। किसी दैहिक सम्बन्ध की याद आ नहीं सकती।

''बाप कहते हैं - मैं आया ही हूँ तुम बच्चों को यह मन्त्र देने। ऐसे नहीं कि मन्त्र देकर चला जाता हूँ। नहीं, बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहाँ तक सुधार हुआ है। ... पालना भी करनी पड़े, झाड़ का ज्ञान भी देना पड़े।'' सा.बाबा 22.9.04 रिवा.

''विदेही को युगल बनायेंगे तो विदेही बनने में सहयोग मिलेगा। विदेही बनने में सहयोग कम मिलता है, सफलता कम देखने में आती है तो समझना चाहिए कि विदेही को युगल नहीं बनाया है।'' अ.बापदादा 18.1.70

''भक्त पुकारते रहते हैं और आप बच्चे बाप के प्यार में समा जाते हो। समा जाना ही समान बनाता है... बापदादा सर्व सम्बन्ध ऑफर कर रहे हैं तो सर्व सम्बन्धों का सुख लो।'' अ.बापदादा 03.03.2000

''हम स्वर्ग में थे, फिर पुनर्जन्म लेते-लेते नीचे उतरते हैं। बाप कहानी भी उन्हों को ही बताते हैं, जिन्होंने 84 जन्म लिये हैं। 84 जन्म नहीं लिये होंगे तो माया हरा देगी... पिछाड़ी वाले बाप-टीचर-सत्गुरु तीनों रूप में याद कर नहीं सकेंगे, वे फिर मुक्ति में चले जायेंगे।'' सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

बाप से वे ही पढ़ेंगे, जिन्होंने पूरे 84 जन्म लिये होंगे क्योंकि वे ही स्वर्ग में पहली राजाई में आयेंगे, जो 9,16,108 होंगे। वे साकार या अव्यक्त में ब्रह्मा बाप से अवश्य मिलेंगे या उनका परिचय मिलने से अप्रत्यक्ष में मिलन का सुख अनुभव करेंगे।

''याद रहे तो कापारी खुशी रहनी चाहिए... बाप तुम बच्चों को कितने राज़ समझाते हैं परन्तु फिर भी फाइनल रीति बाप, टीचर, सत्गुरु समझना अभी हो नहीं सकता। घड़ी-घड़ी भूल जायेंगे।'' सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

''बापदादा और जो निमित्त बने हुए हैं और जो दैवी परिवार है, उन सबसे आज्ञाकारी-वफादार बनकर चलना है, यह है बाप के रूप में शिक्षा की सौगात... टीचर के रूप में ज्ञान-ग्रहण और गुण-ग्राहक बनना। गुरु के रूप में एकमत, एकरस और एक की ही याद में रहना।'' अ.बापदादा 16.6.69

जब सब रावण की कैद में हो जाते हैं तब ही बाप को आना होता है क्योंकि सब हैं भक्तियां अथवा ब्राइड्स, सीतायें और बाप है ब्राइडग्रूम अर्थात् राम। बाप आकर सब सीताओं को रावण की जेल से छुड़ाते हैं। सा.बाबा 7.02.05 रिवा.

''शिवबाबा बच्चों को आप समान बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। जैसे मैं ज्ञान का सागर हूँ, वैसे बच्चे भी बनें... शिवबाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है और सत्गुरु भी है। परन्तु वह जो है, जैसा है वैसा उनको जानना मुश्किल है... बाप जो पढ़ाते हैं वह अच्छी रीति पढ़ते हैं गोया टीचर का रिगार्ड रखते हैं।'' सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

आत्मा का आत्मा को शक्ति देने और लेने का राज

जैसे परमात्मा हमको आत्मिक शक्ति का सहयोग देते हैं, वैसे ही हमको भी अन्य आत्माओं को समय पर सहयोग देना है, जिससे उन आत्माओं की बाधा हट जाये। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर उन आत्माओं को इमर्ज करके आत्मिक दृष्टि देने से वे आत्मायें दूर होते भी शक्ति-सहयोग का अनुभव करेंगे। हम दूसरी आत्माओं को आत्मिक शक्ति का सहयोग देंगे तो हमको भी समय पर अवश्य ही मिलेगा। यह आत्मिक सहयोग देने और लेने का राज़ अभी परमात्मा ने बताया है और ब्रह्मा बाबा द्वारा अनुभव भी कराया है।

योग के विधि-विधान और प्रकृति के विधि-विधान के अनुसार गोद लेने से, स्पर्श करने से, दृष्टि से, संकल्प से, वातावरण से एक आत्मा की शक्ति दूसरी आत्माओं में संचारित होती है। ये शक्ति संचार की क्रिया जानकर भी की जा सकती है तो अन्जान में भी होती है। यज्ञ के विधि-विधान को हम देखें तो ये शक्ति ट्रान्सफर की क्रिया सहज ही समझ में आ जायेगी। इस उद्देश्य से ही यज्ञ के अनेक विधि-विधान है और अशुद्ध शक्ति का संचार न हो, इसके लिए भी बाबा ने अनेक विधि-विधान बताये हैं।

''जैसे अपनी आत्मा की उन्नति के लिए सोचते हो इसी रीति शुद्ध भावना, शुभ चिन्तक और शुभ चिन्तन के रूप में एक्स्ट्रा मदद किसी भी आत्मा को दे सकते हो और देना चाहिए। इससे बहुत मदद मिलती है।'' अ.बापदादा 19.6.70

गोवर्धन पर्वत और उसको उठाने में अंगुली के सहयोग का राज़

भागवत में गोवर्धन पर्वत का वर्णन है, जिसको उठाने में सभी गोप-गोपियों ने अपनी अंगुली सहयोग दिया, तब ही वह उठा और सबकी रक्षा हुई। वास्तव में यह कलियुगी दुनिया ही गोवर्धन पर्वत है, जिसको उठाने के लिए परमात्मा आये हैं और हम सभी गोप-गोपियों की अंगुली से ही यह उठता है अर्थात् सर्व आत्माओं का सहयोग आवश्यक है। वह सहयोग किसी न किसी रूप में मिलता ही है। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में वैज्ञानिकों को भी याद किया और कहा कि वे भी इस दुनिया को बदलने में बाप के मददगार है भले वे विनाश की तैयारी कर रहे हैं, साकार में आये मुझ परमात्मा को जानते नहीं हैं। इस दुनिया को बदलने के लिए स्थापना भी आवश्यक है तो विनाश भी आवश्यक है। इस प्रकार हम देखें तो कलियुगी दुनिया के दुखमय पहाड़ को उठाने अर्थात् खत्म करने और सतयुगी सुखमय दुनिया को लाने के लिए परमात्मा के साथ सभी बच्चों की अंगुली का सहयोग आवश्यक है। यह रहस्य भी परमात्मा ने ही बताया है।

''इस कलियुगी पहाड़ को उठाने के लिए हरेक की अंगुली की दरकार है। अभी वह अंगुली पूरी रीति नहीं है... अंगुली देकर कलियुगी दुनिया को खत्म करना है और सतयुगी दुनिया को लाना है।'' अ.बापदादा 18.5.69

''ऐसे संगठित रूप में एक ही शुद्ध संकल्प अर्थात् एकरस स्थिति बनाने का अभ्यास करना है। तब ही विश्व में शक्ति सेना का नाम बाला होगा... विजय का नगाड़ा तब बजेगा जब सभी के सर्व संकल्प, एक संकल्प में समा जायेगे... यह जो चित्र में सभी की एक ही अंगुली दिखाते हैं, उसका अर्थ भी संगठन रूप में एक संकल्प, एकमत, एकरस स्थिति की निशानी है।''

अ.बापदादा 14.4.73

''सभी का सहयोग, सभी का स्नेह और सभी का एकरस स्थिति में स्थित रहने का चित्र भी है ना। जैसे गोवर्धन पर्वत पर अंगुली दिखाते हैं, तो अंगुली को बिल्कुल सीधा दिखायेंगे... सीधा और स्थित, उसकी निशानी इस रुप में दिखाई है। ऐसे ही अपने पुरुषार्थ को भी बिल्कुल ही सीधा रखना है।'' अ.बापदादा 9.11.72

'एक बल, एक भरोसा' और एकरस स्थिति का राज़

एक परमात्मा की शक्ति पर विश्वास रख, उसके ही भरोसे और सहारे पर रहने वाले को उसका सहयोग सदा ही मिलता है, इस निश्चय और नशे में रहने वाले अपने लक्ष्य अर्थात् एक रस स्थिति में अवश्य ही सफल होते हैं। ये राज़ भी परमात्मा ने बताया है। जो आत्मायें परमात्मा के साथ किसी दूसरे को भी सहारा बना लेती हैं, वे परमात्मा का यथार्थ सहारा अनुभव कर नहीं सकती। जो एक परमात्मा पर ही भरोसा करते हैं, उसके ही सहारे रहते हैं, उनको समय पर दुनिया की मदद भी मिल जाती है परन्तु जो दुनिया के सहारे पर रहते हैं, वे परमात्मा की मदद का अनुभव कर नहीं सकते क्योंकि उनको यथार्थ परमात्मा भी याद नहीं आ सकती, उनको परमात्मा की मदद पर पूरा निश्चय नहीं। निश्चय नहीं अर्थात् संशय है, तो संशय बुद्धि विनश्यन्ति कहा गया है। गायन है - जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करै सब कोई।

‘‘‘एक बल, एक भरोसा’ - यह है मुख्य सब्जेक्ट। हर समय एक की ही याद में एक-रस रहना। इसी पुरुषार्थ में ही सदा सफल हो तो मंजिल पर पहुँच ही जायेंगे। जो अटूट स्नेह में रहते हैं, उनको सहयोग भी स्वत: प्राप्त होता है।’’ अ.बापदादा 23.10.75

‘‘हर एक बच्चे को अपने से पूछना चाहिए कि बाप से सभी कुछ मिला है? किस-किस चीज में कमी है? हर एक को अपने अन्दर में झांकी पहननी है। जैसे नारद का मिसाल... अपने अन्दर जो खामी हो, वह सर्जन को बतानी चाहिए, फिर बाबा युक्ति भी बतायेंगे और करेण्ट भी देंगे, जिससे खामी निकल जायेगी, नहीं तो बढ़ती रहेगी।’’ सा.बाबा 11.12.68

‘‘जितना योगी उतना सर्व का सहयोगी, वह सर्व के सहयोग का अधिकारी स्वत: ही बन जाता है... जो जितना योगी होगा उतना उसको सहयोग अवश्य ही प्राप्त होता है। अगर सर्व से सहयोग प्राप्त करना चाहते हो तो योगी बनो। योगी को सहयोग क्यों प्राप्त होता है क्योंकि बीज से योग लगाते हो।’’ अ.बापदादा 13.3.71

‘‘एक बीज से योग अर्थात् कनेक्शन होने के कारण सर्व आत्मायें अर्थात् पूरे वृक्ष के साथ कनेक्शन हो ही जाता। तो कनेक्शन का अटेन्शन रखो। तो सहयोगी बनने के लिए पहले अपने आप से पूछो कि कितना और कैसा योगी बना हूँ। अगर सम्पूर्ण योगी नहीं तो सम्पूर्ण सहयोगी नहीं बन सकते।’’ अ.बापदादा 13.3.71

हिंसा और अहिंसा का राज़

दुनिया में तो किसको मारने, दुख देने को ही हिंसा समझते हैं परन्तु अभी परमात्मा ने बताया है कि हिंसा दो प्रकार की है। एक है किसी को मारना या दुख देना हिंसा और दूसरी है काम विकार में जाना। विकार में जाना, विकारी दृष्टि रखना सबसे बड़ी हिंसा है। आत्मिक स्थिति के पुरुषार्थ से काम विकार पर जीत पाना और स्थूल हिंसा से भी बचकर रहना ही सच्ची अहिंसा है। सतयुग में ये दोनों ही प्रकार की हिंसा नहीं होती है।

‘‘तुम हो अहिंसक। तुम राज्य लेते हो अहिंसा से। हिंसा दो प्रकार की होती है ना। एक है काम कटारी चलाना और दूसरी हिंसा है किसको मारना-पीटना।’’ सा.बाबा 12.5.05 रिवा.

‘‘युद्ध होते हुए भी इसको अहिंसा क्यों कहते हैं? क्योंकि इस युद्ध का परिणाम सुख और शान्ति का निकलता है। हिंसा अर्थात् जिससे दु:ख अशान्ति की प्राप्ति हो। लेकिन इससे शान्ति और सुख की वा कल्याण की प्राप्ति होती है इसलिए इसको हिंसा नहीं कहते हैं।’’ अ.बापदादा 18.4.71

‘‘असली सतोप्रधान संस्कार वा जो अपने ओरिजिनल ईश्वरीय संस्कार आत्मा के हैं उनको दबाकर दूसरे संस्कारों को प्रैक्टिकल में लाते हैं तो मानों जैसे कि किसका गला दबाया जाता है तो वह हिंसा मानी जाती है। तो अपने ओरिजिनल अथवा सतोप्रधान स्थिति के संस्कारों को दबाना यह भी हिंसा है।’’ अ.बापदादा 18.4.71

काम महाशत्रु है और उसके दुष्परिणाम का राज़

काम ही आत्मा का महाशत्रु है, उसके कारण ही आत्मा सतयुग से नर्क में आ जाती है और दुखी होती है। बाबा ने ज्ञान-योग बल से इस महाशत्रु को जीतने के लिए कहा है। ज्ञान मार्ग में चलते-चलते गिरने वालों में अधिकतर आत्मायें काम का वार होने से ही श्रेष्ठ पुरुषार्थ से गिर जाती हैं, इसलिए बाबा सदा ही इससे सावधान होने के लिए कहते हैं। गीता में भी काम को महा शत्रु कहा गया है। काम का भाव विषय वासना और कामनाओं दोनों के लिए प्रयोग किया जाता है। कामनाओं के लिए भी बाबा कहते हैं - तुम्हारे अन्दर इस पुरानी दुनिया की कोई कामना नहीं होनी चाहिए, ये कामना पुरानी दुनिया में खींच ले जायेगी।

‘‘नम्बरवन दुश्मन है काम। यह काम विकार बहुत तंग करते हैं। मनुष्य प्यार करते-करते एकदम गन्दे बन जाते हैं। माया बिल्कुल ही तमोप्रधान बना देती है। समझते हैं हम तो भाई-बहन हैं, प्यार किया तो क्या है? एकदम गिर पड़ेगा। प्यार के लिए प्राइवेसी चाहिए। प्राइवेट प्यार करने से सत्यानाश हो जायेंगे। वह बहुत राँग है। यह शैतानी है। मम्मा-बाबा की गोद में बच्चे आते हैं। वह तो कायदे ही अलग हैं। छिपाकर प्यार करना- यह तो शैतानी है। बाबा झट जन्मपत्री बता देते हैं। यह कोई आगे जन्म में

वेश्या-लम्पट थी। बहुत सम्भाल करनी पड़ती है। सभी सेन्टर्स पर ऐसे-ऐसे केस हो पड़ते हैं। कहेंगे हमको आप से बात करनी है। अन्दर दृष्टि खराब होगी। ऐसी हालत में तो कोई भी भाई-बहन देखे तो झट थप्पड़ लगा देना चाहिए। यह क्या तुम बाबा के कुल का नाम बदनाम करते हो। नाक से पकड़ निकाल देना चाहिए। बड़े भाइयों को बाप अखित्यारी देते हैं... कुल को कलंक लगाने न देना है। काम विकार है सबसे बुरा, उस पर जीत पानी है।'' सा.बाबा 19.12.73 रिवा.

समर्पणता का राज

सच्ची समर्पणता क्या है, उससे क्या प्राप्ति होती है, उसकी स्थिति क्या होगी, यह राज़ भी अभी ही परमात्मा ने बताया है। परमात्मा के प्रति समर्पणता का बहुत महत्व है और उसका बड़ा फल मिलता है परन्तु समर्पण कैसे हों, सच्ची समर्पणता क्या होती है, उसका ज्ञान भी अभी ही परमात्मा से मिला है। सच्ची समर्पणता क्या है, उसका स्वरूप भी ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया, जिससे हम बच्चों को उसका अनुसरण करना सहज हो जाये। जो जितना समर्पण होता है, वह उतना ही सम्पूर्णता का अनुभव करता है और सम्पूर्णता हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है।

''तन-मन-धन, समय और सम्बन्ध सब अर्पण। ... मुख्य बात है ही मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्पों-विकल्पों को समर्पण करना... जब तक यह वायदा नहीं किया कि जो सोचेंगे, जो बोलेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे वह श्रीमत के बिना नहीं करेंगे।'' अ.बापदादा 3.10.69

''जो बलि चढ़ जाता है, उसको रिटर्न में क्या मिलता है? बलि चढ़ने वालों को ईश्वरीय बल बहुत मिलता है... खुद को बदल कर औरों को बदलना है, यह है निश्चय की छाप।'' अ.बापदादा 28.9.69

''अपनी मूरत को देखने के लिए अपने पास दर्पण रखना चाहिए... जो अर्पणमय होगा, उनके पास ही दर्पण रहेगा। अर्पण नहीं तो दर्पण भी अविनाशी नहीं रह सकता... अव्यक्त मिलन का अनुभव भी वही कर सकता जो अव्यक्त स्थिति में होगा।'' अ.बापदादा 17.5.69

''आज वतन से दर्पण लाया है, सभी का अर्पणमय मुखड़ा देखने के लिए और दिखाने के लिए... समर्पण किसको कहा जाता है?... उसमें तीन बातें देख रहे हैं। एक स्वभाव समर्पण, दूसरा देह अभिमान का समर्पण और तीसरा सम्बन्धों का समर्पण।'' अ.बापदादा 14.5.70

सम्पूर्णता का राज

आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति क्या है, सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए क्या पुरुषार्थ है, सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा की स्थिति क्या होती है - ये सब ज्ञान भी परमात्मा ही देते हैं। सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा ही परमधाम जा सकती है। इस सम्पूर्णता की स्थिति को प्राप्त तो सभी आत्मायें करती हैं परन्तु उनकी सम्पूर्णता उनके पार्ट के अनुसार नम्बरवार ही होती हैं। यदि पार्ट के हिसाब से देखें तो एक ब्रह्मा बाबा का ही आलराउण्ड पार्ट है, उनके ही पूरे 84 जन्म होते हैं। उसके अतिरिक्त सभी आत्माओं का पार्ट और जन्म नम्बरवार ही है। पूरा आलराउण्ड पार्ट नहीं कहा जा सकता है। इसलिए सबकी सम्पूर्णता की स्थिति भी नम्बरवार ही होती है।

इस विश्व-नाटक में जब से आत्मा आती है, तब से ही उसके अन्य आत्माओं और प्रकृति के साथ हिसाब-किताब आरम्भ हो जाते हैं तथा जब कल्पान्त में वापस परमधाम जाती है तो सब हिसाब किताब पूरे करके ही जाना होता है। ये हिसाब-किताब का पूरा होना ही आत्मा की सम्पूर्णता है, जिसे कर्मातीत स्थिति, बाप समान स्थिति भी कहा जाता है।

''जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। ... इसलिए लक्ष्य सदैव सम्पूर्णता का रखना है, जो सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष प्रख्यात हो चुके हैं, उनका लक्ष्य रखना है। जो अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्षता में नहीं आये हैं, उनका भी लक्ष्य नहीं रख सकते।'' अ.बापदादा 29.6.70

‘‘समय के अनुसार अगर सम्पूर्ण बने तो उसकी इतनी प्राप्ति नहीं होती है। समय के पहले सम्पूर्ण बनना है। समय पर सम्पूर्ण बने तो सम्पूर्णता क्या चीज है, उसका अनुभव कब करेंगे? ईश्वरीय अतीन्द्रिय सुख निरन्तर क्या होता है, उसका अनुभव यहाँ ही करना है... अगर अब न करेंगे तो फिर कब करेंगे। फिर कब हो न सकेगा।’’ अ.बापदादा 18.6.70

‘‘जितना दूसरों को सन्देश देते हैं, उतना अपने को भी सम्पूर्णता का सन्देश मिलता है क्योंकि दूसरों को समझाने से अपने को सम्पूर्ण बनाने का न चाहते हुए भी ध्यान जाता है। यह सर्विस करना भी अपने को सम्पूर्ण बनाने का मीठा बन्धन है।’’

अ.बापदादा 24.1.70

‘‘निन्दा-स्तुति, मेरा-तेरा... कुछ भी अंगीकार न करना तब ललकार होगी। आप मन में संकल्प पीछे करते हो, आपके मन में संकल्प आते ही वहाँ पहुंच जाता है। क्यों पहले पहुंचता है, यह गुह्य पहेली है... क्योंकि सम्पूर्ण बनने से ड्रामा की हर नूँध स्पष्ट देखने में आती है।’’ अ.बापदादा 2.4.70

‘‘बापदादा कब व्यर्थ रचना नहीं रचते हैं... पुरुषार्थ की कमजोरी के कारण व्यर्थ संकल्पों की रचना होती है... साकार रूप ने सम्पूर्णता को साकार में लाया। सम्पूर्णता साकार रूप में सम्पन्न (स्पष्ट) देखने में आती थी। सम्पूर्ण और साकार अलग देखने में आता था! ... इस स्थिति को कहा जाता है उपराम। उपराम और साक्षीदृष्टा।’’ अ.बापदादा 26.3.70

‘‘सुनाया था ना कि अन्त के समय नई-नई परीक्षायें आयेंगी, जिन परीक्षाओं को पास कर सम्पूर्णता की डिग्री लेंगे। अगर यह पहला पाठ ही स्मृति में नहीं होगा तो सम्पूर्णता की डिग्री भी नहीं ले सकेंगे... पहली सीढ़ी अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित।’’

अ.बापदादा 28.7.71

‘‘सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुंचने की निशानी का डबल नशा उत्पन्न होता है? पहला नशा है - कर्मातीत... और चलते-फिरते यह नशा और खुशी होगी कि कल यह पुराना शरीर छोड़ नया शरीर धारण करेंगे।’’ अ.बापदादा 4.7.74

‘‘सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुंचने की निशानी का डबल नशा उत्पन्न होता है? पहला नशा है - कर्मातीत अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त,न्यारे बन,प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। ऐसे कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा। न्यारे बनने का पुरुषार्थ बार-बार नहीं करना पड़ेगा। सहज और स्वत: ही अनुभव होगा कि कराने वाला और कराने वाली यह कर्मेन्द्रियाँ स्वयं से,हैं ही अलग।’’ अ.बापदादा 4.7.74

‘‘सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुंचने का दूसरा नशा है - विश्व का मालिक बनने का, कि ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि स्थूल चोला व वस्त्र तैयार हुआ सामने दिखाई दे रहा है और निश्चय होगा कि ... और चलते-फिरते यह नशा और खुशी होगी कि कल यह पुराना शरीर छोड़ नया शरीर धारण करेंगे।’’ अ.बापदादा 4.7.74

‘‘जब तीनों ही लाइट जगमगाती हुई दिखाई दें तब ही सबको साक्षात्कार करा सकेंगे। प्योरिटी की लाइट, सतोप्रधान दिव्य-दृष्टि की लाइट और मस्तक मणि की लाइट - यह तीतों ही सम्पूर्ण बनाने की मुख्य बातें हैं।’’ अ.बापदादा 24.4.74

‘‘अशरीरी भव’ - यह वरदान प्राप्त कर लिया है? जिस समय संकल्प करो कि मैं अशरीरी हूँ, उसी सेकेण्ड स्वरूप बन जाओ। ऐसा अभ्यास सहज हो गया है? यह सहज अनुभव होना ही सम्पूर्णता की निशानी है।’’ अ.बापदादा 8.12.75

‘‘सम्पूर्ण स्टेज की निशानियां - पहली निशानी पुरानी दुनिया की किसी भी व्यक्ति वा वैभव से संकल्पमात्र वा स्वप्न मात्र भी लगाव नहीं होगा ... सर्व आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखेंगे। ... हर परिस्थिति वा परीक्षा में सदा स्वयं को विजयी अनुभव करेंगे। ... सदा साक्षीपन की सीट पर सेट होंगे।’’ अ.बापदादा 7.10.75

सम्पूर्णता और समर्पणता के सम्बन्ध का राज

सम्पूर्णता हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है लेकिन सम्पूर्णता और समर्पणता का गहरा सम्बन्ध है। जितना और जैसे समर्पण करेंगे, उसी विधि से और उतना ही सम्पूर्ण बनेंगे। ब्रह्मा बाबा ने तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क अंश और वंश सहित समर्पण किया और एक धक से समर्पण किया तो उन्होंने वैसे ही सम्पूर्णता को प्राप्त किया और वे सारे विश्व में पहले मानव हैं, जिन्होंने

सम्पूर्णता को प्राप्त कर फरिश्ता रूप धारण किया और साकार में रहते भी सम्पूर्णता को अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया, अनुभव कराया।

''सर्व समर्पण के लक्ष्य से ही सम्पूर्ण बने। जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। लेकिन समर्पण का भी विशाल रूप क्या है?... एक तो हर संकल्प, दूसरा हर सेकेण्ड अर्थात् समय, तीसरा कर्म और चौथा सम्बन्ध एवं सम्पत्ति जो भी है, वह भी समर्पण... आत्मा और शरीर के सम्बन्ध का भी समर्पण।'' अ.बापदादा 29.6.70

''आप नॉलेज की स्थिति के दर्पण से अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराने वाले दर्पण हो। दर्पण जितना पॉवरफुल, उतना ही साक्षात्कार स्पष्ट। ... जितना-जितना स्वयं अर्पणमय होगा, उतना ही दर्पण पॉवरफल होगा।'' अ.बापदादा 11.7.71

''दर्पण के सामने आने से न चाहते हुए भी अपना स्वरुप दिखाई देता है। इस रीति से जब सदैव एक की याद में बुद्धि को अर्पण रखेंगे तो आप चेतन्य दर्पण बन जायेंगे। जो भी सामने आयेंगे वह अपना साक्षात्कार वा अपने स्वरुप को सहज अनुभव करते जायेंगे।'' अ.बापदादा 10.6.71

सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता और उनके सम्बन्ध का राज

सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। यथार्थ ज्ञान और उसकी धारणा ही सम्पूर्णता का आधार है, सम्पूर्णता सम्पन्नता का आधार है, सम्पन्नता सन्तुष्टता का अधार है और सन्तुष्टता प्रसन्नता का आधार है। प्रसन्नता प्राणी मात्र का अभीष्ट लक्ष्य है। परमात्मा यथार्थ ज्ञान का दाता है, ज्ञान का सागर है, इसलिए वह सदा सम्पन्न है। सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित आत्मा को सर्व प्राप्तियां स्वत: होती है, उसकी इच्छामात्रम् अविद्या होती है। उसकी ब्रह्मचर्य की धारणा स्वत: होती है। जब आत्मा अपने बीजरूप स्थिति में स्थित होती है तो सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती हैं। परमात्मा भी हर आत्मा को इस स्थिति का अनुभव कराता है परन्तु उसे सदाकाल बनाना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है। अभी की सम्पन्नता ही भविष्य सम्पन्नता का आधार है।

परमधाम है सम्पूर्णता को प्राप्त आत्माओं का घर। हर आत्मा जब इस धरा पर पार्ट बजाने आती है तो उसकी सम्पूर्ण पावन स्थिति होती है, जिसके आधार पर जीवन में पूर्ण सुख-शान्ति का अनुभव करती है और जब वापस घर जाती है तो भी सम्पूर्ण पावन बनकर ही जाती है। भल ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, जिसके कारण हर आत्मा की सम्पूर्णता की स्थिति भी अपनी-अपनी होती है अर्थात् सबकी एक समान नहीं होती है।

''थोड़े समय बाद हरेक अपने-अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो जायेंगे। ... विजयी रतन अर्थात् अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो। उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है। ... इसलिए बापदादा सम्पूर्ण स्टेज और वर्तमान समय के पुरुषार्थ को देखते रहते हैं।'' अ.बापदादा 22.1.70

''जब तक यह ज्ञान नहीं है तब तक विनाशी इच्छायें कभी भी पूरी नहीं होती हैं।... इच्छा कभी भी सदा सन्तुष्टता का अनुभव करने नहीं देती।'' अ.बापदादा 13.3.86

''सन्तुष्टता मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ श्रृंगार है और परमात्मा का परम उपहार है।'' अ.बापदादा 15.12.04

''सभी से बड़े ते बड़ा खजाना तो बाप मिला। पहले नम्बर का खजाना तो ये है ना! जैसे किसी को खजाने की चाबी मिल जाये तो गोया सब मिल गया। ... संगमयुग का समय भी बहुत बड़ा खजाना है... किसी भी बात में यदि सम्पन्न नहीं तो सूर्यवंशी नहीं कहेंगे।'' अ.बापदादा 8.05.73

''अगर अपने पुरुषार्थ के प्रति ही ज्ञान का खजाना व शक्तियों का खजाना लगाते रहते हो तो वह भी सम्पूर्ण स्टेज नहीं हुई। अब सर्व खजाने दूसरों के प्रति लगाने का समय है... दूसरों को देने लग जायेंगे तो ही अपने आपको सर्व बातों में सम्पन्न होने का अनुभव करेंगे।'' अ.बापदादा 8.05.73

‘‘हर संकल्प और हर सेकेण्ड विश्व के कल्याण के प्रति ही हो। ऐसी स्टेज को कहा जायेगा - सम्पूर्ण अर्थात् सम्पन्न। अगर सम्पन्न नहीं तो सम्पूर्ण भी नहीं क्योंकि सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्ण स्टेज है... आप आत्माओं की सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्णता को समीप लायेगी।’’ अ.बापदादा 13.4.73

‘‘समस्या साधन के रूप में परिवर्त हो जाये... जब सब बातें अपने अनुकूल हों, इस कारण सन्तुष्ट रहे तो इसको कोई सन्तुष्टता नहीं कहेंगे! ... परिस्थिति अनुकूल न भी महसूस हों तो भी सन्तुष्ट रहें, ऐसी स्थिति होनी चाहिए।’’

अ.बापदादा 22.11.72 मधुबन वासियों से

‘‘सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियाँ है। असन्तुष्टता का बीज है स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। जब ब्राह्मणों का गायन है - ‘अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में अथवा ब्राह्मणों के जीवन में’, फिर असन्तुष्टता क्यों ?... दाता के भण्डार भरपूर हैं।’’

अ.बापदादा 5.10.87

‘‘अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा, बेहद की प्राप्ति के फलस्वरूप जो सदा सन्तुष्टता की अनुभूति हो, उससे वंचित कर देती है। हद की प्राप्ति दिलों में हद डाल देती है इसलिए असन्तुष्टता की अनुभति होती है। ... हद बेहद का नशा अनुभव करने नहीं देता है।’’ अ.बापदादा 5.10.87

‘‘अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा, बेहद की प्राप्ति के फलस्वरूप जो सदा सन्तुष्टता की अनुभूति हो, उससे वंचित कर देती है। हद की प्राप्ति दिलों में हद डाल देती है इसलिए असन्तुष्टता की अनुभति होती है... हद बेहद का नशा अनुभव करने नहीं देता है।’’ अ.बापदादा 5.10.87

‘‘प्रसन्नचित्त सदा निस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा,वह किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा। न भाग्यविधाता के ऊपर,.. न ड्रामा के ऊपर,.. न व्यक्ति पर,.. न प्रकृति के ऊपर,.. न शरीर के हिसाब-किताब के ऊपर। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा निस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।’’ अ.बापदादा 5.10.87

‘‘संगमयुग की विशेषता सन्तुष्टता है और सन्तुष्टता की निशानी प्रसन्नता है। यह है ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति। ... ब्राह्मण जीवन का वर्सा एवं प्रॉपर्टी सन्तुष्टता है और ब्राह्मण जीवन की पर्सनालिटी प्रसन्नता है।’’ अ.बापदादा 5.10.87

‘‘आत्मा सम्पूर्णता को पा रही है - यह मुख्य किस बात में सबको अनुभव होता है? मुख्य बात यह है कि ऐसी आत्मा सदा स्वयं से सर्व सब्जेक्ट्स में सन्तुष्ट रहने का अनुभव करेगी और साथ-साथ अन्य आत्मायें भी उनसे सदा सन्तुष्ट रहेंगी। तो सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी हैं।’’ अ.बापदादा 7.2.75

सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता और बाप समान बनने का राज

सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता और बाप समान बनने का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। इसका ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है कि जब तुम आत्मायें सम्पूर्ण बनेंगें, तब ही दुनिया की समाप्ति होगी अर्थात् विनाश होगा। जब सम्पूर्ण बनेंगे तब ही सम्पन्न बनेंगे और सम्पन्नता ही बाप समान स्थिति है क्योंकि बाप तो सागर है और सागर सदा ही सम्पन्न होता है। जब आत्मायें सम्पूर्ण बनेंगे तब घर जा सकेंगे अर्थात् तब ही विनाश होगा। सम्पूर्णता विनाश को समीप लायेगी, विनाश सम्पूर्णता को नहीं क्योंकि सम्पूर्णता को पाना आत्माओं का काम है, आत्मा चेतन्य शक्ति है।

‘‘इन सभी का सार हुआ कि स्वयं जो ‘इच्छा मात्रम् अविद्या’ की स्थिति में स्थित होगा, वही किसी की भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। अगर स्वयं में ही कोई इच्छा रही होगी तो वह दूसरे की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते... जो सम्पन्न नहीं हैं तो उनकी इच्छायें जरूर होंगी... ‘इच्छा मात्रम् अविद्या’ की स्टेज को ‘कर्मातीत’ अथवा ‘फरिश्तेपन’ की स्टेज कहा जाता है।’’

अ.बापदादा 21.7.73

''ड्रामा प्लॉन अनुसार आप श्रेष्ठ आत्माओं के साथ पश्चाताप का सम्बन्ध है। तब तक पश्चाताप न किया है तब तक मुक्तिधाम जाने का वर्सा भी नहीं पा सकते... अभी अपने ही आगे अपनी सम्पूर्णता प्रत्यक्ष नहीं है तो औरों के आगे कैसे प्रत्यक्ष होंगे... इतनी ही देरी है, विनाश के आने में, जब तक आप निमित्त बनी हुई आत्माओं को अपने सम्पूर्ण स्टेज का स्पष्ट साक्षात्कार हो जाये।'' अ.बापदादा 19.4.73

''निशाने पर स्थित होने की निशानी है नशा।...जो स्वयं नशे में रहते हैं वह दूसरों को भी नशे में टिका सकते हैं। जैसे कोई हद का नशा पीते हैं तो उनकी चलन से, उनके नैन-चैन से कोई भी जान लेता है - इसने नशा पिया हुआ है। इसी प्रकार, यह जो सभी से श्रेष्ठ नशा है, जिसको ईश्वरीय नशा कहा जाता है ... दूर से दिखाई देगा।'' अ.बापदादा 5.2.72

सर्व प्राप्ति सम्पन्न बनने का राज़ / ईश्वरीय प्राप्तियों का राज

आत्मिक स्वरूप सम्पूर्ण और सर्व प्राप्ति सम्पन्न है। यथार्थ ज्ञान सम्पूर्णता को पाने का आधार है। सम्पन्न स्थिति इच्छा-मात्रम् अविद्या की स्थिति है। परमात्मा भविष्य स्वर्ग का वर्सा तो हम आत्माओं को देता ही है लेकिन संगमयुग पर ये श्रेष्ठ ज्ञान दिया है, जो स्वर्ग के वर्से को प्राप्त करने का आधार है, इस ज्ञान की यथार्थ धारणा और आत्मिक स्थिति के सफल अभ्यास से आत्मा को सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति का अनुभव होता है, जो ही यथार्थ अनुभव है और यथार्थ स्थिति है, जो स्वर्ग की प्राप्तियों से भी अति श्रेष्ठ है।

पवित्रता अर्थात सम्पूर्णता अर्थात् सम्पन्नता - जहाँ पवित्रता है वहाँ आत्मा को सर्व सुख सर्व प्राप्तियां स्वत: होगी, उसकी इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति होगी। सम्पूर्णता सम्पन्नता का आधार है, सम्पन्नता ही सन्तुष्टता का आधार है और प्रसन्नता सन्तुष्टता का दर्पण है।

दूसरे की प्राप्तियों को देखकर लालायित होना, ईर्ष्या होना भी अप्राप्ति और रॉयल भिखारीपन की निशानी है। अपनी प्राप्तियों को देखना और उनको उपयोग करना, उनका सुख लेना रॉयलिटी है। बाप ने तुमको क्या नहीं दिया है, विचार करो। ज्ञान धन परमधन है, जो सर्व प्राप्तियों का आधार है।

परमात्मा ज्ञान, प्रेम, आनन्द, पवित्रता, सुख-शान्ति, आनन्द, सर्व गुणों-शक्तियों का सागर है, हम उसके बच्चे बनते हैं तब ही हमको वे सब जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में मिलते हैं अर्थात् हम उनका अनुभव करते हैं। ये अनुभव आत्माओं को अभी संगमयुग पर ही होता है। इन ईश्वरीय प्राप्तियों का ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है और अनुभव भी कराया है। भक्ति में तो केवल गायन करते थे, उनका कोई अनुभव नहीं था। अभी बाबा सबका ज्ञान भी देते तो अनुभव करा रहे हैं।

''अभी तुम बच्चों को भक्ति और ज्ञान का अन्तर का पता पड़ा है। कितनी विशाल बुद्धि चाहिए। तुम्हारी कभी किसमें आंख नहीं जायेगी। ... दिल में कोई आश नहीं होगी।'' सा.बाबा 27.8.04 रिवा.

''कोई भी बात हो जाये 'दाता' शब्द याद रखना। इच्छामात्रम्-अविद्या। न सूक्ष्म लेने की इच्छा, न स्थूल लेने की इच्छा। दाता का अर्थ ही है - इच्छामात्रम्-अविद्या। सदा सम्पन्न। ... सम्पन्न बनना ही सम्पूर्ण बनना है।'' अ.बापदादा 23.10.99

''बाप तो दाता है, सागर है। जो जितना लेना चाहे बापदादा के भण्डारे से ले सकता है। बापदादा के भण्डारे में ताला-चाबी नहीं है, पहरेदार नहीं है। बाबा कहा, जी हाजिर। दाता भी है और सागर भी है तो क्या कमी होगी। कमी दो बातों की होती है - एक सच्ची दिल, साफ दिल और बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर और क्लीन।'' अ.बापदादा 30.3.2000

''सतयुग में तो सभी हर्षित होंगे तो यह हर्षितमुख है, यह भी कहेगा कौन? यह तो अभी ही कहेंगे ना! जो सदा हर्षित नहीं रहते, वे ही वर्णन करेंगे कि यह हर्षितमुख है।'' अ.बापदादा 21.4.73

''सहयोगी आत्मायें बापदादा की अति स्नेही हैं। ऐसी आत्मायें सदा सरल योगी व सहजयोगी व स्वत: योगी होती हैं। उनकी मूर्त में सदा ऑलमाइटी अथॉरिटी की समीप सन्तान की खुमारी और खुशी स्पष्ट दिखाई देती है अर्थात् सदा सर्व-प्राप्ति सम्पन्न लक्षण उनके मस्तक से, नैनों से और हर कर्म में अनुभव होता है।'' अ.बापदादा 21.6.74

''आर्डर हो कि अपनी वर्तमान सर्वशक्तिमान स्थिति से किसी अन्य आत्मा की परिस्थिति-वश स्थिति को परिवर्तन करो तो क्या आप कर सकते हो? आर्डर हो कि मास्टर रचयिता बन अपनी रचना को शुभ भावना से व शुभ-चिन्तक बन, भिखारियों को उनकी माँग प्रमाण सन्तुष्ट करो तो क्या महादानी और वरदानी बनकर सर्व को संतुष्ट कर सकते हो? ... सर्वशक्तियों के भण्डारे से क्या स्वयं को भरपूर अनुभव करते हो?'' अ.बापदादा 30.5.74

''ऐसा साथी जो निष्काम हो, निष्पक्ष हो, अविनाशी हो व समर्थ हो। ऐसा सम्पर्क कभी मिला अथवा मिल सकता है क्या? अविनाशी और सच्चा श्रेष्ठ साथ व संग कौन-सा गाया हुआ है? पारसनाथ जो लोहे को सच्चा सोना बनाये, ऐसा सत्संग अथवा सम्पर्क मिला है या कुछ अप्राप्ति है?'' अ.बापदादा 20.5.74

''जो कहावत है कि देवताओं के खजाने में अप्राप्त कोई भी वस्तु नहीं होती है - कहावत ब्राहमणों की गाई हुई है या देवताओं की? सर्व संस्कार ब्राहमण जीवन में ही अनुभव करते हो क्योंकि अभी सर्व संसकार अपने में भर रहे हो।'' अ.बापदादा 2.5.74

''सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियाँ है। असन्तुष्टता का बीज है स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। जब ब्राह्मणों का गायन है - 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्माणों के खजाने में अथवा ब्राह्मणों के जीवन में', फिर असन्तुष्टता क्यों?... दाता के भण्डार भरपूर हैं।''

अ.बापदादा 5.10.87

''सदा अपने आपको चेक करो कि बाप द्वारा सर्व शक्तियों के खजानों से सम्पन्न वरदान को प्राप्त किया है? सर्व खजानों के मालिक अनुभव करते हो अर्थात् अप्राप्त कोई भी शक्ति नहीं आप ब्रह्मणों के खजानें में। अप्राप्त कोई वस्तु नहीं देवताओं के खजानें में।'' अ.बापदादा 27.1.76

''सदैव एक ही संकल्प स्मृति में रहता है कि 'पाना था सो पा लिया, पाने के लिये अब कुछ नहीं रहा। ऐसे संकल्प में स्थित रहने वाले की,... निशानी क्या होगी? सदा हर्षित रहने वाला मन, वाणी और कर्म से सर्व आत्माओं को सदा खुशी का दान देता रहेगा।'' अ.बापदादा 27.1.76

मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति का राज

मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति रहे, इसके लिए ही बाबा ने इस विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है। जो इस नाटक के राज़ को जान लेता है, वही इन सबसे परे एकरस स्थिति में रह सकता है अर्थात् विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान हमको इस स्थिति में स्थित रहने में बहुत सहायक है या ऐसा कहें कि ये ज्ञान ही इस स्थिति का एकमात्र साधन और साधना है।

''कितना वण्डरफुल ड्रामा है। यह बेहद का नाटक है, जो सिवाए तुम्हारे और कोई की बुद्धि में नहीं है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। ... तुम बच्चे जानते हो कि यह हार-जीत का वण्डरफुल खेल बना हुआ है, इसको देखकर खुशी होती है, घृणा आ नहीं सकती। तुम ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो, इसलिए घृणा की बात ही नहीं।'' सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

''मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् फीलिंग से परे। जो जितना फुल बनते जायेंगे, उतना फीलिंग का फ्लो या फ्लू खत्म हो जायेगा। ... जिन्होंने हाथ नहीं उठाया है वे भी मास्टर सर्वशक्तिवान हैं क्योंकि सर्वशक्तिवान को अपना बना लिया है।''

अ.बापदादा 30.11.70

''रुहानी बच्चो! तुम आत्माओं को वाणी से परे अपने घर जाने के लिए पुरुषार्थ करना है। इस पुरानी दुनिया में रहते देह और देह के सम्बन्धों से उपरामचित्त होना है। ... स्तुति-निन्दा, लाभ-हानि, जय-पराज्य सभी में सन्तुष्ट रहना है और रहमदिल बनना है।''

अ. बापदादा 9.11.69

''रुहानी बच्चो! तुम आत्माओं को वाणी से परे अपने घर जाने के लिए पुरुषार्थ करना है। इस पुरानी दुनिया में रहते देह और देह के सम्बन्धों से उपरामचित्त होना है। ... स्तुति-निन्दा, लाभ-हानि, जय-पराजय सभी में सन्तुष्ट रहना है और रहमदिल बनना है।''

अ. बापदादा 9.11.69

''आठ को समझाया, उनमें से दो-तीन आपकी महिमा करते हैं और दूसरे ना महिमा, ना ग्लानि करते हैं, गम्भीरता से चलते हैं। फिर देखेंगे कि आठ में से आपका अटेन्शन एक-दो परसेन्टेज में उन दो-तीन तरफ ज्यादा जायेगा, जिन्होंने महिमा की... वास्तव में है यह सूक्ष्म फल को स्वीकार करना।'' अ.बापदादा 19.7.72

''सम्पूर्ण स्टेज वा सम्पूर्ण स्थिति जब आत्मा की बन जाती है तो इसका प्रैक्टिकल कर्म में क्या गायन है? समानता का। निन्दा स्तुति, जय-पराज़य, सुख-दु:ख सभी में समानता रहे, इसको कहा जाता है सम्पूर्णता की स्टेज।'' अ.बापदादा 8.06.72

''वास्तव में ना महिमा का नशा, ना ग्लानि से घृणा आनी चाहिए। दोनों में बैलेन्स ठीक रहे, तो फिर स्वंय ही साक्षी हो अपने आपको देखोगे तो कमाल अनुभव होगी। अपने आपसे सन्तुष्टता का अनुभव होगा, और भी आपके इस कर्म से सन्तुष्ट होंगे।'' अ.बापदादा 8.6.72

''जितना-जितना योगयुक्त उतना ही सर्वबन्धन मुक्त बनते जाते हैं। तो योगयुक्त की निशानी है ही बन्धनमुक्त होना... अब जज करो कि कितने बन्धन रह गये हैं और कौन-कौन से रह गये हैं?... जो गायन है निन्दा-स्तुति, हार-जीत, महिमा वा ग्लानि में समान अर्थात् बुद्धि में नालेज रहेगी कि यह हार है यह जीत है, यह महिमा है यह ग्लानि है। लेकिन एकरस अवस्था वा स्थिति से डगमग न हो।'' अ.बापदादा 29.8.71

''तुम बच्चों को दुख-सुख, मान-अपमान... सब सहन करना है... अगर कोई बात है तो बाप को रिपोर्ट करनी चाहिए। रिपोर्ट नहीं करते तो बड़ा पाप लगता है... इस काम के कारण ही कितने पाप होते हैं।'' सा.बाबा 10.6.05 रिवा.

साक्षी स्थिति का राज़

साक्षी स्थिति क्या है, कैसे बन सकती है, साक्षी स्थिति से क्या-क्या लाभ होते हैं, आध्यात्मिक जीवन और व्यवहारिक जीवन की सफलता में साक्षी स्थिति का महत्व है - यह सब राज बाबा ने बताये हैं और साक्षी स्थिति में स्थित होने का विधि-विधान भी बताया है। साक्षी स्थिति में स्थित होने में ड्रामा का यथार्थ ज्ञान बहुत सहयोगी है अथवा यों कहें कि ड्रामा का ज्ञान ही आत्मा को साक्षी स्थिति में स्थित करने का एकमात्र साधन है। प्राय: सभी वेद-शास्त्रों में या महान आत्माओं के उपदेशों में साक्षी स्थिति का वर्णन अवश्य आता है और सभी उसके लिए अपनी रीति से पुरुषार्थ करते हैं परन्तु विवेक कहता है कि बिना विश्व नाटक के ज्ञान के यथार्थ रीति साक्षी स्थिति में स्थित होना असम्भव ही है।

''सहनशील ही ड्रामा की ढाल पर ठहर सकता है। सहनशीलता नहीं तो ड्रामा की ढाल को पकड़ना भी मुश्किल है। सहनशीलता वाला ही साक्षी बन सकता है और ड्रामा की ढाल को पकड़ सकता है।'' अ.बापदादा 8.06.71

''जैसे कोई कमजोर होता है तो उनको शक्ति भरने लिए ग्लूकोज चढ़ाते है तो जब अपने को शरीर से परे अशरीरी आत्मा समझते हैं तो यह साक्षीपन की अवस्था शक्ति भरने का काम करती है। और जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है उतना ही बाप साथी भी याद रहता है।'' अ.बापदादा 3.06.71

''जितना साक्षी रहेंगे, उतना साक्षात्कारमूर्त और साक्षात् मूर्त बनेंगे... इसलिए ये अभ्यास करो अभी-अभी आधार लिया और अभी-अभी न्यारे हो गये... निर्माण बनने से प्रत्यक्ष प्रमाण बन सकेंगे। निर्माण बनने से विश्व का नव-निर्माण कर सकेंगे।'' अ.बापदादा 6.08.70

''तुम्हारे दिव्य नेत्र क्लीयर अर्थात् रुहानियत से सम्पूर्ण हों... लाइट का विशेष गुण है अस्पष्ट को स्पष्ट करना... अगर मार्ग स्पष्ट नहीं होता है तो अपनी लाइट की परसेन्टेज की कमी है। ... ऐसे अपने को साक्षात्कार मूर्त बनाना है। लेकिन साक्षात्कार मूर्त वह बन सकेंगे, जो सदैव साक्षी स्थिति में स्थित होंगे। उनके नयन प्रोजेक्टर का काम करेंगे।'' अ.बापदादा 2.02.70

''जैसे बाप-दादा को साकार, आकार और निराकार अनुभव करते हो, क्या वैसे ही अपने को भी बाप-समान साकार होते हुए आकारी और निराकारी सदा अनुभव करते हो? यह अनुभव निरन्तर होने से इस साकारी तन और इस पुरानी दुनिया से स्वत: ही

उपराम हो जावेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसेकि ऊपर-ऊपर से साक्षी हो इस पुरानी दुनिया को खेल सदृश्य देख रहे हैं।''

अ.बापदादा 3.2.74

''बाप के समान बनने वालों की भी यह विशेषता है कि बाहर से स्मृति स्वरुप और अन्दर से समर्थी स्वरुप जितना ही साकार स्वरुप में स्मृति-स्वरुप उतना ही अन्दर समर्थी स्वरुप हो। दोनों का साथ-साथ बैलेन्स हो... साथ-साथ साक्षीपन की स्टेज भी हो।'' अ.बापदादा 18.1.76

''आगे चल ड्रामा क्या दिखलाता है सो साक्षी होकर देखना है। पहले से ही बाबा साक्षात्कार नहीं करायेंगे कि यह होगा। फिर तो आर्टीफिशियल हो जाये। यह बड़ी समझ की बातें हैं।'' सा.बाबा 24.10.69 रिवा.

साक्षात्कारमूर्त स्थिति का राज

जब हमारी साक्षात्कारमूर्त स्थिति अर्थात् जिस स्थिति, चेहरे और चलन से दूसरी आत्माओं को अपने स्वरूप का और परमात्मा के स्वरूप का साक्षात्कार हो। वह स्थिति तब होगी जब हम अपने अनादि-आदि स्वरूप में स्थित होंगे। जब अमारी ऐसी स्थिति होगी तब ही दूसरी आत्माओं को सही रास्ता दिखा सकेंगे।

''साक्षात्कार मूर्त तब बनेंगे जब आकार में होते निराकार अवस्था में होंगे। ... चलते-फिरते मैं ब्रह्माकुमार हूँ, यह भूलता है क्या ? जब यह नहीं भूलता है तो शिव-वंशी होने के नाते अपना आत्मिक स्वरूप क्यों भूलते हो ?'' अ.बापदादा 28.7.71

''जब तक इस अव्यक्त स्वरूप में, लाइट के कार्ब में स्वयं को अनुभव न किया है, तब तक औरों को आपका साक्षात्कार नहीं हो सकेगा क्योंकि जो दैवी स्वरूप का साक्षात्कार भक्तों को होगा, वह लाइट रूप की कार्ब में चलते-फिरते रहने से ही होगा। ... जिसे शास्त्रों में दिखाते हैं कि कंस ने कुमारी को मारा, तो वह उड़ गई, साक्षात्-रूपधारी हो गई और फिर आकाशवाणी की। वैसे ही आप लोगों का साक्षात्कार हो।'' अ.बापदादा 15.9.74

''आप विशेष आत्माओं की विशेषता किस बात में है ? बाप-समान बन, सर्व को बाप का साक्षात्कार कराना और साक्षात् बन साक्षात्कार कराना। यह सिर्फ विशेष आत्मायें ही कर सकती हैं। यह और कोई आत्मा नहीं कर सकती। न भक्तिमार्ग वाले और न ज्ञान मार्ग में आने वाली साधारण आत्मायें। मुरब्बी बच्चों का फर्ज भी विशेष यही है।'' अ.बापदादा 13.9.74

सच्चे सत्संग और सत्संग का जीवन में महत्व का राज

सत्संग का जीवन में बड़ा महत्व है। भक्ति में कहा है - संगत से गुण उपजैं और संगत से ही गुण जायें, बांस-फांस और मिश्री एकही संग बिकायें। जैसा संग होता है, वैसा ही मनुष्य बन जाता है। सत्य एक परमात्मा ही है, इसलिए उनका संग ही सच्चा सत्संग है, जो आत्माओं को संगमयुग पर ही मिलता है, जिससे आत्मा अपने सत्य स्वरूप का अनुभव करती है और उस स्थिति के अभ्यास से सतयुगी सृष्टि में श्रेष्ठ पद की अधिकारी बनती है। गायन है संग तारे, कुसंग बोरे। सत्य परमात्मा का संग ही आत्मा के मुक्ति-जीवनमुक्ति का आधार है। दुनिया में भक्ति-भावना के संगठन को भी सत्संग कहते हैं परन्तु वह सच्चा सत्संग नहीं है क्योंकि उसमें सत्य का ज्ञान ही नहीं है, इसलिए आत्मा की उतरती कला ही होती है। सच्चे सत्संग से आत्मा की चढ़ती कला होती है। ये चढ़ती कला ही सच्चे सत्संग की कसौटी है।

''अभी तुम बच्चे सतसंग में बैठे हो। इस सतसंग में कल्प-कल्प संगमयुग पर ही बच्चे बैठते हैं... भक्ति मार्ग में भी सतसंग कहते हैं परन्तु वहाँ कोई सतसंग होता नहीं है। सतसंग होता ही है ज्ञान मार्ग में, जब सत बाप आते हैं... वास्तव में वे सतसंग तो हैं नहीं।'' सा.बाबा 17.2.05 रिवा.

''सतसंग का यथार्थ अर्थ भी अभी बाप समझाते हैं। तुम आत्मायें अब परमात्मा बाप के संग में बैठी हो, जो सत् है... भल कोई घर में बैठे हैं परन्तु अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं तो सत् के संग में हैं... सत् बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे।'' सा.बाबा 17.2.05 रिवा.

''ऐसे नहीं कि एक जगह बैठने से ही सत् का संग होगा। नहीं, तुम उठते-बैठते, चलते-फिरते भी सतसंग में हो अगर उनको याद करते हो तो।'' सा.बाबा 17.2.05 रिवा.

''अभी तुमको सत् का संग मिलता है तो तुम सतयुग के मालिक बन जाते हो... देह का जो संग मिला है, उससे उपराम हो जाओ। देह का संग भल सतयुग में भी होगा परन्तु वहाँ तुम हो ही पावन। अभी तुम सत् के संग से पतित से पावन बनते हो।'' सा.बाबा 17.2.05 रिवा.

वास्तविकता को देखें तो सतयुग में भी आत्मा की उतरती कला ही होती है क्योंकि सत्य बाप का संग नहीं होता और न सत्य का ज्ञान होता है। वह तो सत्य बात के संग से मिली प्रालब्ध है।

निद्राजीत का राज़ / योग-निद्रा का राज

बाबा की याद में सोते हैं तो सोते हुए भी जाग्रत के समान स्थिति रहती है। कब-कब सोते हुए स्वप्नों में भी जागने के समान ज्ञान के अनेक गुह्य रहस्यों का ज्ञान हो जाता है। इसीलिए बाबा कहते हैं - तुम बाबा की याद में सोओ तो तुम्हारी नींद भी योग-निद्रा हो जायेगी। सही योग की स्थिति वाले की नींद बहुत कम हो जाती है और वह सोते हुए भी जागते के समान ही होता है या कितना समय जागते हुए भी नींद का आकर्षण नहीं होता है।

जब तक आत्मा शरीर में है, तब तक उसका सम्बन्ध शरीर से होता ही है और उसकी अनुभूति-कर्म का प्रभाव आत्मा पर पड़ता ही है। भले ही वह सम्बन्ध एक परसेन्ट हो या 99 परसेन्ट हो परन्तु होता अवश्य है। स्वप्न आदि भी नीद में आते ही हैं। तो हमारी नींद भी योग-साधना बन जाये, इसका राज़ और विधि-विधान भी बाबा ने बताया है कि तुम कैसे अपना सारे दिन का हिसाब-किताब बाबा को देकर अशरीरी बनकर सोओ तो तुम्हारी नींद भी योगयुक्त होगी अर्थात् योग-निद्रा होगी। नींद में भी सुख अनुभव होगा और नीद से जागने पर भी उसका सुख अनुभव होगा। ज्ञान की दृष्टि से भी देखें तो अनेक प्रश्नों का उत्तर या स्पष्टीकरण नींद में मिलता है।

''नींद में भी प्रभु-मिलन मना सकते हो। योग-निन्द्रा अर्थात् अशरीरीपन की स्थिति की अनुभूति। ... सारे कल्प के मिलन का हिसाब इस छोटे से युग में पूरा करते हो ...इसलिए कहते श्वांसों-श्वांस सिमरो।'' अ.बापदादा 14.10.87

साक्षात्कार, दिव्य-दृष्टि एवं दिव्य-बुद्धि का राज़ / ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग के साक्षात्कार के अन्तर का राज़

साक्षात्कार और दिव्य-दृष्टि का ज्ञान मार्ग में बहुत महत्व है, उसका सारा राज़ भी बाप ने बताया है और दिव्य-दृष्टि और साक्षात्कार के द्वारा ज्ञान के अनेक गुह्य राजों को स्पष्ट किया है। ज्ञान मार्ग में किसी को परमात्मा द्वारा दिव्य-बुद्धि का वरदान मिला है तो किसी को दिव्य-दृष्टि का वरदान मिला है और किसी को साक्षात्कार के आधार पर परमात्मा और परमात्मा के कर्तव्य का निश्चय हुआ है परन्तु ज्ञान मार्ग में ये प्राप्ति इच्छा रखने से नहीं होती, अनायास ड्रामा अनुसार होती है। वर्तमान समय अव्यक्त रूपधारी बापदादा से श्रीमत लेने का आधार भी दिव्य-दृष्टि ही है।

भक्ति मार्ग में भी भक्त साक्षात्कार की बहुत आश रखते हैं परन्तु भक्ति मार्ग में जो जिस देवता की पूजा करते हैं, जिस श्रृद्धा-भावना से करते हैं, ड्रामानुसार उसका साक्षात्कार हो जाता है, भले ही उस स्वरूप का कोई देवता न भी हो। ज्ञान मार्ग में परमात्मा जो साक्षात्कार कराते हैं, वह ज्ञान को स्पष्ट करने के लिए, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाने के लिए कराते हैं। बाबा ने जो झाड़-त्रिमूर्ति के चित्र बनवाये वे भी साक्षात्कार के आधार पर ही बनवाये हैं। भक्ति मार्ग में नवधा भक्ति से साक्षात्कार होता है। भक्ति मार्ग में साक्षात्कार के विषय में भी कहीं-कहीं बाबा ने कहा है कि वह साक्षात्कार भी मैं ही कराता हूँ और कहीं-कहीं कहा है कि वह ड्रामानुसार हो जाता है। अब यथार्थ क्या है, वह बुद्धि से विचारणीय है। भगवान सत्य है, वह असत्य तो बोल नहीं सकता परन्तु देश-काल परिस्थिति और किसके कल्याणार्थ बाबा युक्ति-युक्त बोल भी बोलता है, जिससे सुनने वाले की भावना को भी ठेस न लगे। बाबा को तो सबका कल्याण करना है।

''तुम बच्चों ने साक्षात्कार किया है कि वहाँ कैसे जन्म होता है परन्तु उसका कोई फोटो तो निकाल न सके। दिव्य-दृष्टि से सिर्फ देख ही सकते हैं। ... बहुत साक्षात्कार किये क्योंकि भट्ठी में बच्चों को बहलाना था तो साक्षात्कार से बहुत-बहुत बहले हैं। बाप कहते हैं फिर पिछाड़ी में भी बहुत बहलेंगे। वह पार्ट फिर और है।'' सा.बाबा 4.2.05 रिवा.

''वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में है... सबका विनाश हो जायेगा। नेचुरल कैलेमिटीज भी आने वाली हैं। हमारा रियलाइज किया हुआ है और दिव्य-दृष्टि से भी देखा हुआ है।'' सा.बाबा 4.8.05 रिवा.

देवता और असुरों का राज

दुनिया में तो देवता और असुरों के विषय में अनेक भ्रान्तियां हैं। कोई देवताओं और असुरों की दुनिया ही अलग समझते हैं और कोई फिर दोनों को ही नहीं मानते हैं। देवता और असुरों का यथार्थ राज़ भी अभी बाबा ने बताया है। देवता और असुर कोई इस दुनिया से अलग दुनिया के रहने वाले नहीं थे और न ही कोई विशेष व्यक्ति थे। दोनों ही मनुष्य हैं। जब मनुष्य में दैवी गुण हैं तो देवता कहलाता है और जब आसुरी गुण-संस्कार हो जाते हैं तो वे ही असुर कहलाते हैं। फिर परमात्मा आकर असुरों को ही ब्राह्मण बनाकर पढ़ाते हैं और ब्राह्मण ही पढ़कर अपने आसुरी गुण-संस्कारों को बदलकर दैवी गुण-संस्कार धारण कर देवता बनते हैं।

दैवी चलन और आसुरी चलन का राज

देवता और असुर दोनों ही मनुष्य हैं परन्तु उनकी चलन में दिन और रात का अन्तर है। दोनों की चलन में मूलभूत अन्तर क्या है, वह भी बाप ही आकर बताते हैं। मुख्य अन्तर पवित्रता और काम वासना का है। देवतायें पवित्र होते हैं, उनमें काम वासना का अंश भी नहीं होता है और जब देवताओं में अज्ञानता के वशीभूत देहाभिमान प्रवेश करता है तो काम-वासना आ जाती है, जिससे वे देवता कहलाने के अधिकारी नहीं रहते और उनको असुर कहा जाता है।

''कई बच्चे कहते हैं - बाप कहते हैं किसको दुख नहीं देना है। अब यह विष मांगते हैं तो उनको न दें तो यह भी दुख देना हुआ ना। ऐसे मूढ़मति भी हैं। बाप कहते हैं - पवित्र जरूर बनना है। आसुरी चलन और दैवी चलन की भी समझ चाहिए... सब धर्मों में वैष्णव होते हैं, जो छी-छी चीज नहीं खाते हैं। कोई छी-छी चीज, कोई के हाथ की बनाई हुई चीज नहीं खानी चाहिए।''
सा.बाबा 21.10.04 रिवा.

दैवी गुणों और आसुरी गुणों का राज

आत्मा के मूल गुण तो दैवी ही हैं परन्तु जब आत्मा अज्ञानतावश अपने अस्तित्व को भूलने के कारण देहाभिमान के वशीभूत हो जाती है तो गुण-संस्कार आसुरी हो जाते हैं। आसुरी गुण भी नम्बरवार होते हैं। देहाभिमान और देहाभिमान से उत्पन्न काम विकार सबसे निकृष्ट आसुरी गुण है और पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य सबसे श्रेष्ठ दैवी गुण है। ब्रह्मचर्य के बल से देवताओं ने मृत्यु को जीता है। यथार्थ ईश्वरीय ज्ञान और योग का अभ्यास दैवी गुणों की धारणा और आसुरी गुणों त्याग का मूलाधार है। जिन गुणों से स्वयं को और अन्य आत्माओं को सुख मिलता है, वह दैवी गुण कहे जायेंगे और जिन गुणों और संस्कारों से स्वयं को और दूसरों को दुख मिले वे आसुरी गुण-संस्कार कहे जायेंगे।

दैवी गुण-संस्कारों का मूल है देही-अभिमान और आसुरी गुण-संस्कारों का मूल है देहाभिमान। दैवी गुणों और आसुरी गुणों की लिस्ट तो लम्बी है परन्तु ब्रह्मचर्य और विषय-वासना ही देवताओं और असुरों के मध्य की सीमा-रेखा है।

''तुम ही पूज्य से फिर पुजारी बने। 84 जन्म लेते-लेते सतोप्रधान से तमोप्रधान पतित बन गये। बाप ने सीढ़ी सारी समझाई है। अब फिर पतित से पावन कैसे बनते हैं, यह किसको भी पता नहीं।'' सा.बाबा 5.10.04 रिवा.

''यह भी अब तुम जानते हो कि बाप हमको इस विषय-सागर वेश्यालय से निकालते हैं। यह वेश्यालय कब से शुरू होता है, यह भी तुम जानते हो।'' सा.बाबा 7.10.04 रिवा.

''देवता बनना है तो दैवी गुण भी अवश्य धारण करने हैं। जिसको यह बुद्धि में आ गया वह फट से सब आदतें छोड़ देंगे। तुम कहो, न कहो, आपही छोड़ देंगे... कहते हैं - वाह, हमको यह बनना है, 21 जन्म के लिए राज्य मिलता है तो हम क्यों नहीं पवित्र रहेंगे।''
सा.बाबा 9.9.04 रिवा.

ईश्वरीय गुण, दैवी गुण और आसुरी गुणों के अन्तर का राज

दैवी गुणों और आसुरी गुणों का संक्षिप्त वर्णन तो ऊपर किया गया है परन्तु सबसे श्रेष्ठ हैं ईश्वरीय गुण, जो दैवीगुणों का आधार हैं। ईश्वर ज्ञान, गुण, शक्तियों का सागर है, वह आकर जब ज्ञान-गुण-शक्तियां आत्माओं को देता है, तब ही आत्माओं की आत्मिक शक्ति का विकास होता है, आत्मायें अपना और अन्य आत्माओं का कल्याण करने में समर्थ होती हैं। ईश्वरीय गुण आत्मा की चढ़ती कला का आधार हैं और दैवीगुण एवं आसुरी गुण दोनों ही आत्मा की उतरती कला का कारण हैं। दैवी गुण होते भी ईश्वरीय गुणों के अनुपस्थिति में आत्मा की शक्ति का निरन्तर ह्रास ही होता है परन्तु यह ह्रास की गति आसुरी गुणों की अपेक्षा कम होती है। जब आत्मा आसुरी गुणों के वशीभूत हो जाती है तो उसकी शक्ति का ह्रास तीव्रता से होता है। आत्मा में ईश्वरीय गुण-कर्तव्य संगमयुग पर ही होते हैं, जब हम ईश्वर की डायरेक्ट सन्तान बनते हैं।

असुर से ब्राह्मण, ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता बनने का राज

कलियुग के अन्त में सब में आसुरी संस्कार आ जाते हैं, तब परमात्मा आकर जीवात्माओं को एडॉप्ट करके असुर से ब्राह्मण बनाते हैं। ब्राह्मण ही परमात्मा से ज्ञान लेकर, ईश्वरीय गुणों और शक्तियों के आधार पर दैवी गुणों की धारणा कर फरिश्ता बनते हैं और फरिश्ता ही नई दुनिया में जाकर देवता बनते हैं। जो देवी-देवता घराने की आत्मायें हैं, जिनमें अभी आसुरी संस्कार आ गये हैं, वे ही पहले ब्राह्मण बनते और भविष्य में देवता बनते हैं।

''फरिश्ते की विशेषता है हल्कापन। ... संकल्प, वाणी, कर्म और सम्बन्ध में हल्के रहेंगे। जो हल्के होंगे, वे एक सेकण्ड में किसी भी आत्मा के संस्कारों को परख सकेंगे और जो परिस्थिति सामने आयेगी, उसको एक सेकण्ड में निर्णय कर सकेंगे।''
अ.बापदादा 25.12.69

''शिव बाबा का सिजरा अविनाशी है। यह फिर साकार सिजरा बनता है। ड्रामा अनुसार शूद्र से ब्राह्मण बनना ही है। तुम शूद्र से ब्राह्मण न बनो - यह हो नहीं सकता। ड्रामा अनुसार उतने ही ब्राह्मण बनते हैं जितने देवता बनेंगे... ड्रामा अनुसार कल्प पहले जिसने ज्ञान की धारणा की है सो करेंगे। हम साक्षी होकर देखते हैं। पुरुषार्थ तो जरूर करना पड़े। पुरुषार्थ बिगर प्रारब्ध मिल नहीं सकती।''
सा.बाबा 7.11.72 रिवा.

देवताओं की महानता का राज़

ब्रह्मचर्य ही देवताओं की महानता है। गायन है - ब्रह्मचर्य के बल देवताओं ने मृत्यु को जीता है। ब्रह्मचर्य पवित्रता की मूल विशेषता है। वास्तव में महानता सारी ब्राह्मणों की है, जो परमात्मा से शक्ति लेकर, उनके बनकर, त्याग-तपस्या के बल से पावन देवता बनते हैं। पवित्रता देवताओं की विशेषता है, जिसके कारण उनका पूजन होता है।

जीवन की पहेली का राज़ / जीवन क्या है और क्यों है?

यह प्रश्न प्राय: सभी मनुष्यात्माओं को अपने दुख-अशान्तिमय परिस्थितियों के समय या किसी दुखी आत्मा के दुख को देखकर मन में यह उठता है और वह उसका हल खोजने का पुरुषार्थ करता है, जिसके उत्तर में अनेकानेक दार्शिनिको ने विद्वानों ने अनेक प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं परन्तु यथार्थ, तर्क-संगत और बुद्धि-गम्य उत्तर कोई नहीं दे पाया है, जिसके कारण आज भी जीवन एक रहस्यमय पहेली बना हुआ है और वर्तमान विज्ञान के युग में अनेकानेक वैज्ञानिक उसका हल ढूँढने में लगे

हुए हैं, जिसका यथार्थ राज़ ज्ञान-सागर परमात्मा ने अभी बताया है, जिस राज़ को जानने से सारे प्रश्न हल हो गये हैं और ये जीवन परमानन्दमय हो गया है।

जीवन एक खेल है, जिस खेल को खेलने के लिए सभी आत्मायें परमधाम घर से इस धरा पर आती है और एक खेल का एक चक्र पूरा होने पर घर जाती हैं और पुन: दूसरे चक्र में अपने समय पर आती है। इस प्रकार ये आवागमन का चक्र अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलते रहने वाला है। इस खेल को परमात्मा ने भूल-भुलैया का खेल, सुख-दुख का खेल, स्मृति-विस्मृति का खेल, दिन-रात का खेल, बाजोली का खेल, राम और रावण का खेल आदि-आदि अनेकानेक नामों से सम्बोधित किया है।

यथार्थ जीवन जीने का राज़ / सफल जीवन व्यवहार का राज़

देह और आत्मा के अलग-अलग अस्तित्व को और विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर कर्मेन्द्रियों को वश में करके इस विश्व-नाटक को देखना और पार्ट बजाना ही यथार्थ जीवन है। इस जीवन का राज़ और इस जीवन को जीने की कला परमात्मा ही अभी संगमयुग पर बताते हैं, जिसको समझकर और उस पर चलकर आत्मा इस जीवन का परम-सुख अनुभव करती है। दुनिया में अपने लिए तो सभी जीते हैं परन्तु जो स्वयं भी जिये और दूसरों को जीने दे अर्थात् अपना जीवन भी श्रेष्ठ बनाये और दूसरों को भी श्रेष्ठ जीवन बनाने में सहयोगी बनें, वही श्रेष्ठ जीवन है।

हमारा जीवन व्यवहार कैसा हो, उसके विषय में भी बाबा ने स्पष्ट ज्ञान दिया है और वह सफल हो, उसके लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, उनके विषय में भी बाबा ने बताया है। कैसे एक-दूसरे के संस्कार प्रभावित करते हैं, उसके विषय में भी बाबा ज्ञान दिया है।

कर्मेन्द्रियजीत और इन्द्रियों के वशीभूत का राज

जब आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है तो आत्मा का इन्द्रियों पर शासन होता है और जीवन निर्विकारी होता है परन्तु जब आत्मा अज्ञानता के वशीभूत आत्मिक शक्ति का ह्रास हो जाता है तो आत्मा देहाभिमान के वशीभूत हो जाती है इन्द्रियां आत्मा पर शासन करती हैं, जिससे आत्मा विकर्मों में प्रवृत्त होकर दुख पाती है। फिर जब संगमयुग पर परमात्मा आते हैं तो आत्मा को आत्मिक स्वरूप का यथार्थ ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखलाते हैं तब उस योगबल से आत्मा इन्द्रियों पर विजय पाती है।

‘‘तुम बच्चे योगबल से अपनी कर्मेन्द्रियों को वश करते हो। ... सिवाए योगबल के कर्मेन्द्रियों का वश होना इम्पॉसिबुल है... इसमें ही बड़ी मेहनत लगती है... शिवबाबा को कर्मेन्द्रियां हैं नहीं।’’ सा.बाबा 25.5.05 रिवा.

स्वराज्य अधिकारी का राज

अपने स्व-स्वरूप में स्थित होकर कर्मेन्द्रियों पर शासन करना और उनसे कर्म कराना ही स्वराज्य अधिकारी की स्थिति है। संगमयुग पर जो स्वराज्य अधिकारी बनता है, वही सतयुग के विश्व के राज्य का अधिकारी बनता है। स्वराज्य अधिकाकरी की समय पर सर्व इच्छायें स्वत: पूर्ण होती हैं। इसलिए इच्छा-कामना क्या होती है, उसका भी उसको ज्ञान नहीं होता है। इच्छा और कामना वाली आत्मा कब स्वराज्य अधिकारी नहीं बन सकती है।

शिव भगवानुवाच - कामना सामना करने नहीं देगी। स्वराज्य अधिकारी वही बन सकता है, जिसके अन्दर कोई कामना नहीं हो और स्वराज्य अधिकारी को कोई कामना हो नहीं सकती। स्वर्ग की कामना भी सामना नहीं करने देगी अर्थात् स्व-स्वरूप में स्थित नहीं होने देगी। स्व-स्वरूप में स्थित आत्मा का यथार्थ पुरुषार्थ स्वत: ही चलता है, जिसके फलस्वरूप उसको भविष्य में श्रेष्ठ राजपद स्वत: मिलता है। अगर कोई कामना होगी तो हम यथार्थ सत्य को भी निर्भय होकर नहीं कह सकेंगे अर्थात् यथार्थ

सत्य को निर्भयता से स्व-स्वरूप में स्थित स्वराज्य-अधिकारी आत्मा ही कह सकती है। यथार्थ सत्य को स्पष्ट करना ही यथार्थ सेवा है। बाबा ने अनेक बार कहा है - जब ज्ञान सिद्ध होगा तब ज्ञान-दाता सिद्ध होगा और जब ज्ञान-दाता सिद्ध होगा तब ही प्रत्यक्षता होगी।

स्वराज्य अधिकारी आत्मा में मान-शान की भी कामना नहीं हो सकती है क्योंकि उसमें अहंकार न होने के कारण वह किसका अपमान नहीं कर सकता और न उसका कोई अपमान कर सकता है। यदि हिसाब-किताब के वशीभूत कोई कर भी देता है तो वह उसको महसूस नहीं होगा।

कर्मभोग न आये, उसकी कामना करने से भी कर्मभोग से नहीं बच सकते हैं क्योंकि परीक्षा रूप में या हिसाब-किताब चुक्ता करने के लिए संगमयुग पर कर्मभोग अवश्य सम्भावी है। ये कामना भी स्व-स्वरूप में स्थित नहीं होने देगी अर्थात् स्वराज्य अधिकारी बनने नहीं देगी। स्व-स्वरूप में स्थित आत्मा कर्मयोग से कर्मभोग का सामना करके उस पर विजय प्राप्त कर लेती है। कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय पाना ही संगमयुग की रीति है। इसलिए हमारे आदर्श मम्मा-बाबा को भी कर्मभोग का सामना तो करना ही पड़ा परन्तु उन्होंने कर्मयोग से उस पर विजय पायी। इसीलिए गायन है - बिनु मांगे मोती मिलें, मांगे मिले न भीख। अर्थात् मांगने या कामना करने से सफलता नहीं मिलती, पुरुषार्थ सफलता को खींच कर लाता है। इसलिए स्वराज्य अधिकारी बनने अर्थात् स्व-स्वरूप में स्थित रहने का पुरुषार्थ ही अभीष्ट है।

''पराधीन हर बात में मनसा-वाचा-कर्मणा दुख की प्राप्ति में रहते हैं और जो अधिकारी हैं, वे अधिकार के नशे और खुशी में रहते हैं।'' अ.बापदादा 17.5.69

''जमींदार अपने को इन्डिपेन्डेण्ट बड़ा खुशी में समझते हैं, नौकरी नाम तो नहीं है ना... बाप तुम बच्चों को पढ़ाते हैं विश्व का मालिक बनाने के लिए, नौकरी के लिए नहीं पढ़ाते हैं।'' सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

''जो संगमयुग पर अपना राजा बनता है, वह प्रजा का भी राजा बन सकता है... संगमयुग पर ही सभी संस्कारों का बीज पड़ता है।'' अ.बापदादा 18.6.69

''शिवबाबा के वर्से का पूरा अधिकारी अपने को समझते हो? जो वर्से के अधिकारी बनते हैं उन्होंका सर्व के ऊपर अधिकार होता है, वे कोई भी बात के अधीन नहीं होते हैं। अगर देह के, देह के सम्बन्धियों के, देह की कोई भी वस्तुओं के अधीन हैं तो ऐसे अधीन होने वाले अधिकारी नहीं हो सकते।'' अ.बापदादा 24.1.70

बाबा ने आत्मिक स्वरूप का ज्ञान देकर देह से न्यारे होने की प्रक्रिया का जो ज्ञान दिया है और उसका जो विधि-विधान बताया है, वह सही रीति से अभ्यास में हो तो आत्मा का अपनी कर्मेन्दियों पर शासन होगा और आत्मा किसी भी देश-काल-परिस्थिति में परमानन्द का अनुभव करेगी। ऐसे परमानन्द का अनुभव करने वाली आत्मा किसी भी परिस्थिति में इस संगमयुग पर तंग होकर शरीर छोड़ने का संकल्प नहीं करेगी, शरीर छोड़ने के लिए उतावली नहीं होगी। वह सदा इस संगमयुगी स्वराज्य का सुख अनुभव करेगी।

''सदा स्वराज्य अधिकारी स्थिति में आगे बढ़ते चलो। स्वराज्य अधिकारी - यही निशानी है विश्व-राज्य अधिकारी बनने की... अपने आपको एक दिन भी चेक करो तो मालूम पड़ जायेगा कि मैं राजा बनूँगा वा साहूकार बनूँगा वा प्रजा बनूँगा। ... चेक करो मन-बुद्धि-संस्कार इन तीनों पर स्व का राज्य है वा इन्हों के अधिकार से आप चलते हो?'' अ.बापदादा 21.1.87

''बहुत काल के स्वराज्य अधिकारी बनने के संस्कार बहुत काल का भविष्य राज्य-अधिकारी बनायेंगे... अपने ही दर्पण में अपने तकदीर की सूरत को देखो। यह नॉलेज दर्पण है... अन्त में भी धोखा मिल जायेगा अर्थात् दुख की लहर जरूर आयेगी। अन्त में भी पश्चाताप के दुख की लहर आयेगी।'' अ.बापदादा 21.1.87

''एक होते हैं राज्य-अधिकारी बनाने वाले, जिनको टीचर कहते हैं। वे राज्य कारोबार सिखलाने वाले बनेंगे लेकिन राज्य करने वाले नहीं बनेंगे। ... राज्य अधिकारी वे बनेंगे जो अभी से अपने स्वभाव, संस्कार और संकल्प के अधीन नहीं बनेंगे।''

अ.बापदादा 23.9.73

''राजयोग अर्थात् अभी राज्य चलाने वाले बनते हो। राज्य करने के संस्कार व शक्ति अभी से धारण करते हो। भविष्य 21 जन्म में राज्य करने की धारणा प्रैक्टिकल रूप में अभी आती है। संकल्प को आर्डर करो - स्टॉप तो स्टॉप कर सकते हो? बुद्धि को डायरेक्शन दो कि शुद्ध संकल्प व अव्यक्त स्थिति व बीजरूप स्थिति में स्थित हो जाओ तो क्या स्थित कर सकते हो? ऐसे जो राजयोगी हैं, उनको कहा जाता है - फॉलो फादर।'' अ.बापदादा 30.6.73

''हर एक को अपनी जिम्मवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर जिम्मेवार है तो इससे सिद्ध होता है कि आप को भविष्य में उनकी प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है। ये भी अधीन रहने के संस्कार हुए ना! ... अधीन रहने वाला अधिकारी नहीं बन सकता है।'' अ.बापदादा 30.5.73

'''अधिकारी बनेंगे और अधीनता को मिटायेंगे'... चाहे लौकिक चाहे ईश्वरीय सम्बन्ध की भी अधीनता में न आना। सदा अधिकारी बनना है। यह स्लोगन सदैव याद रखना।'' अ.बापदादा 25.3.71

''राजतिलक भी यहाँ भृकुटी में दिया जाता है। ... तुम स्वराज्य कैसे प्राप्त कर सकते हो, वह रास्ता बाप बताते हैं। उसका नाम रख दिया है - राजयोग। ... बाप अभी हमको ज्ञान दे रहे हैं, हम अभी राजयोग सीखते हैं।'' सा.बाबा 27.5.05 रिवा.

''जिसका अपनी आवश्यक और समीप की चेतन शक्तियों, संकल्पों और बुद्धि अथवा मन और बुद्धि पर कन्टोल नहीं, अधिकार नहीं या विजय नहीं तो क्या वह विश्व के स्वराज्य का अधिकारी व विजयी रत्न बन सकता है? जिस राज्य के मुख्य अधिकारी अपने अधिकार में न हों, क्या वह राज्य अटल, अखण्ड और निर्विघ्न चल सकता है?'' अ.बापदादा 2.05.74

स्वमान और सम्मान का राज

स्वमान और सम्मान का जीवन में क्या महत्व है और दोनों का आपस क्या सम्बन्ध है, इसका ज्ञान भी परमात्मा ने अभी ही दिया है कि जो आत्मा सदा स्वमान अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित रहता है, उसका सर्व आत्मायें सम्मान करती हैं।

''यह वेस्ट संकल्प का वज़न भारी होता है और बेस्ट थॉट्स का वज़न कम होता है। ... वेस्ट को खत्म करने के लिए अमृतवेले से लेकर रात तक दो शब्द याद रखो - स्वमान और सम्मान। स्वमान में रहना है और सम्मान देना है... दोनों का बैलेन्स चाहिए।'' अ.बापदादा15.10.04

''जैसे आंखों में बिन्दी है ... ऐसे आत्मा वा बाप की स्मृति की बिन्दी दृष्टि-वृत्ति से गायब नहीं हो। फॉलो फादर करना है ना, तो जैसे बाप की दृष्टि-वृत्ति में हर बच्चे के लिए स्वमान है, सम्मान है, ऐसे ही अपनी दृष्टि-वृत्ति में भी हो... जो मन में आता है कि यह बदल जाये ... वह वृत्ति से बदलेंगे, बोलने से नहीं।'' अ.बापदादा15.10.04

''सबको सम्मान देने वाले ही बापदादा की श्रीमत मानने वाले आज्ञाकारी बच्चे हैं। सम्मान देना ही ईश्वरीय परिवार का दिल का प्यार है। सम्मान देने वाला स्वमान में सहज ही स्थित हो सकता है क्योंकि जिन आत्माओं को सम्मान देता है, उन आत्माओं द्वारा जो दिल की दुआयें मिलती हैं, वह दुआओं का भण्डार स्वमान की याद सहज और स्वत: ही दिलाता है। इसलिए बापदादा चारो ओर के बच्चों को विशेष अण्डरलाइन करा रहे हैं - सम्मान दाता बनो।'' अ.बापदादा 2.11.04

''जहाँ स्वमान होता है, वहाँ अभिमान नहीं होता है। ... सदा यह स्मृति में रहता है कि इस समय एक बाप से लेने के और सभी को देना है। तुम आत्माओं को आत्माओं से लेना नहीं है परन्तु उनको देना है... जरा भी किसी प्रकार की लेने की इच्छा अपने स्वमान से गिरा देती है।'' अ.बापदादा 8.5.73

''अपने स्वमान की लिस्ट निकालो तो लिस्ट कितनी बड़ी है! उन एक-एक बात को लेकर अनुभव करते जाओ तो माया की छोटी-छोटी बातों में कमजोर नहीं बनेंगे।...जैसे समझते हो - 'मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ' तो संकल्प करने से स्थिति बन जाती है ना। लेकिन बनेगी उनकी जिनको अनुभव होगा।'' अ.बापदादा 21.1.72

''आज अल्पकाल का सुख भोगने वाली आत्मायें भी प्रकृति दासी के शो के रूप में दिखाई देती हैं। ... प्रख्यात हो रही हैं, इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए या हमें भी इन्हों के प्रमाण अपने में परिवर्तन करना चाहिए - यह संकल्प भी अगर आया तो उनको क्या कहेंगे ? क्या दाता के बच्चे भिखारियों की कापी करते हैं?... लेकिन अन्चलि लेने वालों को देख सागर के बच्चे क्या हो जाते हैं - प्रभावित।'' अ.बापदादा 27.9.71

''जब कलियुग अन्त की आत्मायें भी अपनी सत्यता को प्रसिद्ध करने में निर्भय होकर स्टेज पर आते हैं तो पुरुषोत्तम संगमयुगी सर्वश्रेष्ठ आत्मायें अपने को सत्य प्रसिद्ध करने में वायुमण्डल प्रमाण रूप रेखा क्यों बनाती हैं। ... फलक भी हो और झलक भी हो।'' अ.बापदादा 27.9.71

''डीटी से भी इस समय का गॉडली पोजीशन हाइएस्ट है। तो एक पोजीशन है कि हम गॉडली चिल्ड्रेन हैं और ब्रह्मा कुमार-कुमारियां भी हैं। यह हुआ साकारी पोजीशन और दूसरा है निराकारी पोजीशन। हम सभी सोल्स में हीरो पार्टधारी सोल्स श्रेष्ठ आत्मायें हैं।'' अ.बापदादा 20.8.71

''स्वमान को छोड़ मान प्राप्ति की इच्छा से सफलता नहीं होती है। मान की इच्छा को छोड़ स्वमान में टिक जाओ तो मान परछाई के समान आपके पिछाड़ी आयेगा।'' अ.बापदादा 11.7.71

''एक घड़ी का रोब सारे दिन की रूहानियत को तो गँवा देता है, इससे तो फौरन किनारा करना चाहिये। पुरूषों का यह रोब क्या जन्मसिद्ध अधिकार है? हैं तो सब आत्मा ही ना! स्नेह की भी उत्पति तब होगी जब समझोंगे कि मैं आत्मा हूँ।'' अ.बापदादा 20.2.74

''एक स्वमान शब्द प्रक्टिकल जीवन में धारण हो जाये तो सहज ही सम्पूर्णता को पा सकते हैं।... स्वमान में स्थित होना ही जीवन की पहेली को हल करने का साधन है। ... 'मैं कौन हूँ' इस एक शब्द के उत्तर में सारा ज्ञान समाया हुआ है।'' अ.बापदादा 22.9.75

''ऊंचे ते ऊंचे बाप के साथ ऊंच से ऊंच पार्ट बजाने वाले हो। सबसे बड़े स्वमान की बात तो यह है कि जो संगमयुग पर बाप को भी अपने स्नेह और सम्बन्ध की डोर में बांधने वाले हो।'' अ.बापदादा 22.9.75

''ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों के सिवाए और कोई स्वर्ग का मालिक बन न सके। ... नई दुनिया में नया भारत था, उसमें देवी-देवताओं का राज्य था। ... बाप समझाते हैं - मीठे-मीठे बच्चो, मैं इस सृष्टि का मालिक नहीं हूँ। ... बाप आकर विश्व का मालिक बनाते हैं।'' सा.बाबा 22.7.05 रिवा.

अहंकार-हीनता और उससे मुक्त होने का राज

वास्तव में इस विश्व-नाटक में अहंकार और हीनता का कोई स्थान नहीं है। परमात्मा और प्रकृति के द्वारा हर आत्मा को समान अधिकार मिले हुए हैं, हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है, भल हर एक आत्मा का पार्ट अपना-अपना है। आत्मिक स्वरूप अहंकार और हीनता दोनों से मुक्त है। अहंकार और हीनता अज्ञानता जनित एक विकार है, जो आत्मा के देहाभिमानी बनने से ही जन्म लेता है। आत्मा जब अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो अहंकार और हीनता दोनों से मुक्त है और जीवन में परमसुख का अनुभव करती है।

''ऐसे ही सत्कारी सर्व के प्रति सत्कार की भावना हो...सिर्फ स्थूल सेवा व वाणी द्वारा सेवा, सम्पर्क द्वारा सेवा... स्वयं के गुणों की शक्ति द्वारा अन्य के अवगुणों को मिटा देना अर्थात् निर्बल को बलवान बनाना।...सत्कार न देने वाले को भी सत्कार देने

वाला, ठुकराने वाले को भी ठिकाना देने वाला, ग्लानि करने वाले के भी गुणगान करने वाला, ऐसे को कहा जाता है सर्व सत्कारी'' अ.बापदादा 10.2.75

अधिकार और कर्तव्य का राज

अधिकार और कर्तव्य जीवन रुपी गाड़ी के दो चक्र हैं, जिनके सन्तुलन से ये गाड़ी सफलता पूर्वक चलती है और अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करती है। अधिकार की प्रधानता आत्मा को उदण्ड बना देती है और अधिकार की अनभिज्ञता और कर्तव्य की प्रधानता से जीवन में दासता के बीज अंकुरित होते हैं। इसलिए दोनों का सन्तुलन परमावश्यक है। बाबा ने जीवन में दोनों का महत्व बताया है, इसलिए ये ब्राह्मण जीवन परम सुखमय है।

हम सभी आत्मायें परमपिता परमात्मा के बच्चे हैं, तो परमात्मा की सम्पत्ति पर हर आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है। परमात्मा नई दुनिया का रचयिता है, सुख-शान्ति, मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है तो समय और पार्ट के अनुसार ये जन्मसिद्ध अधिकार हर आत्मा को मिलता है, उसके लिए पुरुषार्थ करना हर आत्मा का पावन कर्तव्य है।

''आप लॉ मेकर हो। आप जो कदम उठाते हो वह मानो लॉ बन रहा है। ... आप जो कदम उठायेंगे, आपको देखकर सारा विश्व फॉलो करेगा। ... ऐसी जिम्मेवारी समझकर सदा याद रखो - जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देखकर सभी करेंगे।''

अ.बापदादा 14.5.70

''अधिकार भी सामने रखना है और निरहंकारिता का गुण भी सामने रखना है और उपकार करने का कर्तव्य भी सामने रखना है। ये तीनों ही बातें सदैव याद रखना है। ... तब यह ताज और तख्त सदैव कायम रहेगा।'' अ.बापदादा 14.5.70

''सभी आत्माओं का एक ही समय यह जन्मसिद्ध अधिकार लेने का पार्ट नहीं है। परिचय तो जरूर मिलना है, पहचानना भी है लेकिन कोई का पार्ट अभी है, कोई का पीछे। ... बिन्दी रूप में न होने के कारण फर्ज भी मर्ज हो जाता है।''

अ.बापदादा 26.1.70

''यह वेस्ट संकल्प का वज़न भारी होता है और बेस्ट थॉट्स का वज़न कम होता है। ये वेस्ट थाट्स दिमाग को भारी कर देते हैं, पुरुषार्थ को भी भारी कर देते हैं। इसलिए शुभ-संकल्प जो स्व-उन्नति की लिफ्ट है, वह कम होने के कारण मेहनत की सीढ़ी चढ़नी पड़ती है। ... वेस्ट को खत्म करने के लिए अमृतवेले से लेकर रात तक दो शब्द याद रखो - स्वमान और सम्मान। स्वमान में रहना है और सम्मान देना है। ... दोनों का बैलेन्स चाहिए।'' अ.बापदादा15.10.04

चेक करना है - बाप सर्व प्राप्तियों का अखुट भण्डार है, उसने हमको क्या-क्या प्राप्ति का अधिकार दिया हुआ है और उस अधिकार को पाकर हमने अपना कर्तव्य पूरा किया है ?

अधिकार	**कर्तव्य**
परमात्मा बाप ने आत्म-ज्ञान और परमात्म ज्ञान की हमारी जन्म-जन्म की आश पूरी की, अनुभव कराया।	उसको पाकर हमने परमात्मा की आश पूरी की ? अर्थात् उसको अनुभव करके हमने अपने अन्य भाइयों को बाप का परिचय दिया, अनुभव कराया है ?
बाप ने हमको साकार में गोद का अधिकार दिया, गोद का सुख अनुभव कराया	हमने उस सुख को जीवन में स्थाई बनाया, औरों को भी अनुभव कराया है ?
बाबा ने हमको सर्वोत्तम ज्ञान का अधिकार दिया।	हमने उसे धारण कर औरों को भी वह ज्ञान दिया ?
बाबा ने हमको सर्वोत्म ब्राह्मण बनाया,	हमने औरों को भी ब्राह्मण बनाया, ब्राह्मण

ब्राह्मण परिवार में रखा।	बनने का रास्ता दिखाया, ब्राह्मण जीवन के अनुसार कर्तव्य किया ?
बाबा ने हमको अव्यक्त मिलन, फरिश्ता स्वरूप का अनुभव कराया, वरदान दिये।	हमने वे वरदान धारण कर, वैसा स्वरूप बनाकर औरों को भी वरदान दिये, वरदान का मार्ग बताया ?
बाबा ने हमको इस पाण्डव भवन की वरदानी भूमि में रहने का अधिकार दिया।	हमने उसके महत्व को समझकर उसके महत्व को आगे बढ़ाया, औरों को अनुभव कराया ?
परमात्मा ने हम पर विश्वास करके उस अनुसार सेवा दी।	हमने विश्वास-पात्र बनकर उस अनुसार कर्तव्य किया, सेवा को सफल किया ?

अधिकार और कर्तव्य एक गाड़ी के दो पहिये हैं, जो साथ-साथ चलते हैं। अधिकार को पाकर हम वैसा कर्तव्य करेंगे तब ही उस अधिकार का यथार्थ सुख अनुभव कर सकेंगे।

''असम्भव को सम्भव करना यह चैलेन्ज (challenge) आप ब्राह्मणों का स्वधर्म है अर्थात् धारणा है तो स्वधर्म में स्थित होना सहज है या कठिन है?... एक सेकण्ड में जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करो। तो जरुर एक सेकेण्ड में प्राप्त करने का प्लैन प्रैक्टिकल में है।'' अ.बापदादा 24.4.74

रुहानी रॉयल्टी और पर्सनैलिटी का राज

दुनिया में पर्सनैलिटी बनाने के लिए मनुष्य अनेकानेक पुरुषार्थ करते हैं, परन्तु यथार्थ रॉयल्टी और पर्सनैलिटी क्या है, दोनों का परस्पर सम्बन्ध क्या है, रुहानी रॉयलिटी और पर्सनॉलिटी का जीवन में क्या महत्व है, कब और कैसे वह बनती है - ये सब रहस्य परमात्मा ने अभी बताये हैं और हम आत्माओं को वह रॉयलिटी और पर्सनॉलिटी बनाने का न केवल राज़ बताया है बल्कि उसका अनुभव भी कराया है और उसमें स्थित भी किया है।

''आज ऐसी ऊंची आत्माओं की विशेष दो बातें देख रहे हैं। वे कौनसी? एक रॉयलिटी, दूसरी पर्सनेलिटी। जब है ही ऊंचे-से-ऊंचे बाप की ऊंची सन्तान, जिन्हों के आगे देवतायें भी श्रेष्ठ नहीं गाये जाते, राजायें भी चरणों में झुकते हैं... वास्तव में प्योरिटी ही रॉयलिटी और प्योरिटी ही पर्सनॉलिटी है।'' अ.बापदादा 5.2.75

''रॉयलिटी में रहने वाली आत्माओं की कभी भी एक-दूसरे के अवगुणों या कमज़ोरी की तरफ आँख भी नहीं जा सकती।... यह पुराने तमोगुणी स्वभाव, संस्कार, कमजोरियाँ शूद्रों की हैं न कि ब्राह्मणों की।'' अ.बापदादा 5.2.75

स्नेह और शक्ति के सन्तुलन(Balance)का राज

जहाँ स्नेह और शक्ति दोनों का सन्तुलन होता है, वहाँ ही जीवन में सच्चा सुख अनुभव होता है और सेवा में भी सफलता होती है।

''अन्न और धन शरीर की तृप्ति का साधन है लेकिन आत्मा की तृप्ति रुहानी स्नेह से हो सकती है, वह भी अविनाशी हो। ... इसलिए अब एक सेकेण्ड में मर्यादा पुरुषोत्तम बनो। कैसे बनेंगे? सिर्फ सदा स्नेही बनने से... एक सर्वशक्तिवान बाप का स्नेही होने के कारण सर्व आत्माओं का स्नेही स्वत: बन जाता है।'' अ.बापदादा 20.9.71

''स्थूल कार्य करते भी यह स्मृति रहे कि हम ईश्वरीय सेवा के निमित्त हैं तो निमित्त समझने से कोई भी ऐसा कार्य नहीं होगा, जिससे डिस्सर्विस हो। ... एक आंख में बाप का स्नेह और दूसरी आंख में बाप द्वारा मिला हुआ कर्तव्य अर्थात् सेवा। दोनों साथ-साथ चाहिए।'' अ.बापदादा 27.9.71

साधन और साधना के सन्तुलन का राज़ /बैलेन्स से ब्लेसिंग्स का राज

साधन और साधना ब्राह्मण जीवन के दो महत्वपूर्ण अंग हैं क्योंकि जीवन निर्वाह और सेवा के लिए साधनों की आवश्यकता होती ही है और इस जीवन की सफलता के लिए साधना परमावश्यक है। दोनों के महत्व और विधि-विधान को जानकर, उनमें सन्तुलन रखने वाला ही सफलता को प्राप्त करता है। साधना से साधनों की प्राप्ति निश्चित ही होती है परन्तु साधनों के पीछे दोड़ने से कब साधना सिद्ध नहीं हो सकती। साधना को छोड़कर साधनों के पीछे दौड़ने वाले सदा ही असन्तुष्टता का अनुभव करते हैं और पतन की ओर ही जाते हैं, उत्थान की ओर ले जाने वाली साधना ही है। जो साधना में रहते, उनके पीछे साधन परछाई की तरह आते हैं। जब हमारी साधना सिद्ध हो जाती है अर्थात् हम पावन बन जाते हैं तो दुनिया भी पावन बन जाती है। साधना से साधनों में भी शुद्धि आती है।

''साधनों के आधार पर साधना ऐसे समझो जैसे रेत के फाउण्डेशन के ऊपर बिल्डिंग खड़ी कर रहे हो... विनाशी साधन के आधार पर अविनाशी साधना हो नहीं सकती... साधन को महत्व नहीं दो लेकिन साधना को महत्व दो... साधना ही सिद्धि को प्राप्त करायेगी।'' अ.बापदादा31.12.70

''पहले की सेवा की विशेषता क्या थी ? उस समय वारिस निकले ... सर्विस तो अब ज्यादा हो रही है लेकिन वारिस दिखाई नहीं देते। क्यों ? मूल कारण है उस समय अपना-पन नहीं था, विश्व के कल्याण अर्थ अपना सभी कुछ देना है, वह भावना थी... अभी पहले अपने साधन सोचेंगे, पीछे सर्विस।'' अ.बापदादा 8.05.73

''अब फिर से वही महादानी बनने का संस्कार व सदा सर्व प्राप्ति होते हुए भी और सर्व साधन होते हुए भी साधनों में न आओ, साधना में रहो। अभी साधना कम है, साधन ज्यादा हैं। पहले साधन कम थे, साधना ज्यादा थी... साधन होते हुए भी त्याग वृत्ति में रहो।'' अ.बापदादा 8.05.73

''स्वयं की और अन्य आत्माओं की दोनों की सेवा साथ-साथ और सदा रही। दोनों का बैलेन्स समान रहे यह दिखाई देता है ? दोनों का बैलेन्स विश्व की सर्व-आत्माओं को ब्लिस (Bliss) दिलाने के निमित्त बनेगी।'' अ.बापदादा 24.4.74

''अब आपके सामने सेवा का फल साधनों के रुप में और महिमा के रुप में प्राप्त होने का समय है। इसी समय अगर यह फल स्वीकार कर लिया तो फिर कर्मातीत स्टेज का फल, सम्पूर्ण तपस्वीपन का फल और अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति का फल प्राप्त न हो सकेगा।'' अ.बापदादा 28.1.74

''जैसे याद का अटेन्शन रखते हो कि निरन्तर रहे, सदा याद का लिंक जुटा रहे, वैसे ही सेवा में भी सदा लिंक जुटा रहे... सेवा बिना जीवन नहीं। ... इसको कहते हैं बैलेन्स से ब्लेसिंग्स प्राप्त होने का अनुभव... विजय हुई पड़ी है - यह निश्चय और नशा सदा अनुभव होगा। यही ब्लेसिंग की निशानियां हैं।'' अ.बापदादा 6.11.87

''याद और सेवा का बैलेन्स सदा ब्राह्मण जीवन में बापदादा और सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं द्वारा ब्लेसिंग्स का पात्र बनाता है। संगमयुग पर ब्राह्मण जीवन में परमात्म-आशीर्वादें और ब्राह्मण परिवार की आशीर्वादें प्राप्त होती हैं।... इसलिए इसे महान युग कहते हैं।'' अ.बापदादा 6.11.87

''राजऋषि अर्थात् एक तरफ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग्य का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य, उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स... बेहद अर्थात् मैं सम्पूर्ण सम्पन्न आत्मा बाप समान सदा सर्व कर्मेन्द्रियों के राज्य अधिकारी।'' अ.बापदादा27.11.87

जियो और जीने दो अर्थात् अधिकार और कर्तव्य के सन्तुलन का राज

जब परमात्मा हमको इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं तो हमको अपने अधिकार और कर्तव्यों का सही ज्ञान होता है। जब हम ईश्वरीय प्राप्तियों से सम्पन्न अपने स्वमान में होते हैं तो हमारी आंख कहाँ भी डूबती नहीं है, जिससे हम किसी व्यक्ति के सामने हीनता महसूस नहीं करते हैं तथा जब हमको अपने कर्तव्य का ज्ञान होता है तो हमको न किसी व्यक्ति से घृणा आती है

और न अहंकार के वश हमारे द्वारा किसी का अपमान होता है, जिससे हम भी सुख से जीते हैं और दूसरों को भी सुखी देखकर खुशी होती है।

''जब औरों को देने के निमित्त बनते हो, उस समय अगर यह स्मृति में नहीं रहता कि बाप का खजाना दे रहे हैं तो उन आत्माओं को श्रेष्ठ सम्बन्ध में जोड़ नहीं सकते हो। ... सिर्फ नशा नहीं रखना है लेकिन एक तरफ अति नशा, दूसरी तरफ अति नम्रता।''

अ.बापदादा 8.05.73

सच्ची स्वतन्त्रता का राज

स्वतन्त्रता हर आत्मा का मूल स्वभाव है और ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। इसलिए परतन्त्रता किसी को भी अच्छी नहीं लगती है। आत्मा जब अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती तो उसका देह पर पूरा शासन होता है अर्थात् वह स्वतन्त्र होती है। आत्मा की यह आन्तरिक स्वतन्त्रता ही बाह्य स्वतन्त्रता का आधार है। स्वतन्त्रता अर्थात् स्व अर्थात् आत्मा का राज्य अर्थात् आत्मा का माया रावण से स्वतन्त्र होना ही सच्ची स्वतन्त्रता है। स्वतन्त्रता अर्थात् आत्मा जो चाहे शरीर द्वारा वही कर्म हो।

''स्वतन्त्रता चाहते हैं परन्तु वास्तव में स्वतन्त्रता कहा किसको जाता है, यह कोई नहीं जानता है। रावण की जेल में तो सब फंसे हुए हैं। अभी सच्ची स्वतन्त्रता देने के लिए बाप आये हैं। ... अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो। अभी तुम सच्ची स्वतन्त्रता को पा रहे हो। यह बात भी युक्ति से समझानी है। जिन्होंने कल्प पहले स्वतन्त्रता पाई है, वे ही मानेंगे।'' सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

''शिव भगवानुवाच - आदि सनातन राजा-रानी के राज्य का जो कायदा था, बाप ने राजयोग सिखलाकर राजा-रानी बनाया, उस ईश्वरीय रीति-रिवाज को भी तोड़ डाला। बोला राजाई नहीं चाहिए, हमको प्रजा का प्रजा पर राज्य चाहिए।... इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था।'' सा.बाबा 2.5.05 रिवा.

''बन्धन-मुक्त ही योग-युक्त हो सकता है। यदि कोई भी स्वभाव, संस्कार, व्यक्ति अथवा वैभव का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित करता है, तो बाप की याद की आकर्षण सदैव नहीं रह सकती। किसी के भी वश होते समय, उस आत्मा के प्रति यही शब्द कहा जाता है कि यह वशीभूत हैं।''

अ.बापदादा 16.5.74

देह और देह की दुनिया से न्यारे अर्थात् 5 तत्वों से पार स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखने का राज

ज्ञान सागर बाबा ने हमको तीनों लोकों और सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान दिया है, जिस ज्ञान के आधार पर हम देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर इस विश्व-नाटक को देखते हैं तो यह परमानन्दमय अनुभव होता है। अभी ब्रह्मा बाबा भी सूक्ष्मवतन में हैं और वे भी वहां से साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते और पार्ट बजाते हैं और हमको भी वही प्रेरणा देते हैं कि तुम भी देह से न्यारे होकर इसे देखो तो यह परमानन्दमय अनुभव होगा। आत्मा पंच तत्वों से परे है, इसलिए जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो वह पंच तत्वों के बन्धन से मुक्त होती है। भक्ति मार्ग में भी अनेक तपस्वी हठ से इसका अभ्यास करते हैं परन्तु उनको सत्य ज्ञान न होने के कारण सफल नहीं होते हैं अर्थात् हठ से थोड़े समय के लिए ही इस स्थिति का अनुभव करते हैं। अभी परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसकी यथार्थ धारणा हो तो हम इन पंच तत्वों से परे होकर इस देह और देह की दुनिया को देख सकते हैं। वह स्थिति परम सुखदायी परमानन्दमय है।

उत्थान और पतन, सतोप्रधानता और तमोप्रधानता का राज

इस जगत में कोई चीज स्थिर नहीं है। हर चीज सतोप्रधान से रजो, तमों में आती है या तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है। कोई भी चीज जब उच्चतम स्थिति में पहुँच जाती है तो फिर गिरना आरम्भ हो जाता है, यह भी इस सृष्टि का अनादि नियम है।

''कर्मभोग तो सबको भोगना ही है। तुम्हारे सिर पर बोझा बहुत है क्योंकि तुम सबसे पुराने हो। सतोप्रधान से एकदम तमोप्रधान बने हो। अब तुम बच्चों को बाप मिला है तो बाप से वर्सा लेना चाहिए। तुम जानते हो कल्प-कल्प ड्रामा अनुसार हम बाप से वर्सा लेते हैं।'' सा.बाबा 26.5.71 रिवा.

चढ़ती कला, उतरती कला अर्थात् सीढ़ी चढ़ने और उतरने का राज

ये सृष्टि का सारा खेल ही सीढ़ी चढ़ने-उतरने का है। बाबा कहते हैं - ये सीढ़ी चढ़ने-उतरने का खेल ही सारा भारत पर बना हुआ है। और सभी देश तो वायप्लॉट हैं। अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग के अभ्यास से सीढ़ी चढ़ते हैं और तो सारा कल्प सीढ़ी उतरने का ही है। सतयुग में भल सृष्टि सतोप्रधान होती है, आत्मा भी सतोप्रधान होती है, सर्व भौतिक सुख होते हैं, दुख-अशान्ति का नाम-निशान नहीं होता है तो भी सीढ़ी तो नीचे उतरते ही हैं। ये छोटा सा संगमयुग ही सीढ़ी चढ़ने का समय है। सीढ़ी चढ़ने का एकमात्र साधन और साधना है यथार्थ ईश्वरीय ज्ञान और परमात्मा की मधुर याद। जब आत्मा की चढ़ती कला होती है, तो उससे सारे विश्व की तत्वों सहित चढ़ती कला हो जाती है।

कोई भी कार्य, पठन-पाठन, दृश्य, चर्चा, संग जिससे निराकार या साकार परमात्मा की याद आये, उसमें ही चढ़ती कला होती है। बाकी सब कार्यों में उतरती कला ही होती है। सतयुग में सतोप्रधान सृष्टि, सभी देवी-देवता होते हैं अर्थात् कोई कुसंग नहीं होता, वातावरण भी शुद्ध-पवित्र होता है तो भी लक्ष्मी-नारायण की और सभी की उतरती कला ही हुई।

''ज्ञान मार्ग किसको कहा जाता है और भक्ति मार्ग किसको कहा जाता है, यह भी तुम बच्चे ही समझते हो... 84 पुनर्जन्म लेते नीचे उतरते हैं। फिर एक जन्म में तुम्हारी चढ़ती कला होती है। इसको कहा जाता है ज्ञान मार्ग। ज्ञान के लिए गाया हुआ है - एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति।'' सा.बाबा 15.4.05 रिवा.

''हमारे गिरने और चढ़ने का यह नाटक है। ... बाप सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं... यह नाटक है चढ़ने और उतरने का। ... यह नाटक है - यह याद रहे तो भी खुशी चढ़ी रहे।'' सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

आत्मा की उतरती कला और चढ़ती कला का राज

आत्मा और सारे विश्व की चढ़ती कला का समय है पुरुषोत्तम संगमयुग और सारे कल्प तो उतरती कला ही होती है। उतरती कला का कारण है यथार्थ आत्मिक ज्ञान की विस्मृति और पंच तत्वों का सम्पर्क। चढ़ती कला का आधार है परमात्मा से यथार्थ आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति, उसकी स्मृति और परमात्मा का साथ।

''चढ़ती कला एक ही जन्म में होती है। ... यह भी लिफ्ट है जो मुक्ति और जीवनमुक्ति में एक सेकेण्ड में जाते हैं। जीवनबन्ध तक आने में 5 हजार वष 84 जन्म लगते हैं, जीवनमुक्ति में जाने में एक जन्म लगता है। ... जो पीछे आयेंगे, वे भी झट चढ़ जायेंगे।'' सा.बाबा 31.3.05 रिवा.

''यह खेल है उतरती कला और चढ़ती कला का। बाबा चित्र बनवा रहे हैं, उतरती कला और चढ़ती कला के सीढ़ी का। चढ़ने लिए है सिर्फ याद की सीढ़ी, बाकी उतरने में तो थोड़ा-थोड़ा सारा कल्प उतरते ही आते हैं।'' सा.बाबा 2.10.72 रिवा.

साइलेन्स और साइन्स का राज़ तथा उनके परस्पर सम्बन्ध का राज

परमात्मा ने साइन्स और साइलेन्स के गुण-प्रभाव के विषय में भी यथा आवश्यक ज्ञान दिया है। साइन्स और साइलेन्स दोनों विश्व के नव-निर्माण में एक-दूसरे के पूरक हैं। नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया के विनाश में साइलेन्स के साथ साइन्स का भी बड़ा योगदान है परन्तु साइन्स के अविष्कारों के लिए साइलेन्स की शक्ति का सहयोग अति आवश्यक है। बाबा ने अनेक बार कहा है - साइन्स के सारे महत्वपूर्ण अविष्कार बाबा के इस धरा पर अवतरित होने के बाद ही हुए हैं। साइन्स वाले भी बाबा की प्रेरणा अनुसार कार्य करते हैं। जितना तुम साइलेन्स की गहराई में जाओगे, उतना ही साइन्स वाले विनाश और स्थापना के लिए रिफाइन साधन तैयार करेंगे। साइन्स वालों को साइन्स के अविष्कार करने के लिए साइलेन्स की शक्ति मदद करती है। साइन्स का अविष्कार करने वाली भी साइलेन्स शक्ति चेतन आत्मा ही है और अविष्कारित चीजों का उपयोग करने वाली भी चेतन आत्मा ही है।।

वास्तविकता तो ये है कि साइन्स के चरमोत्कर्ष का समय भी ये संगमयुग ही है और सतयुग की स्थापना और सतयुग कार्य-व्यवहार में भी साइन्स की महत्वपूर्ण भूमिका है। फिर वह साइन्स समय की गति के साथ लोप होती जाती है और त्रेता के अन्त में पूर्ण विलुप्त हो जाती है। फिर द्वापर युग से छोटे-मोटे अविष्कार आरम्भ होते हैं। सतयुग-त्रेता में देवताओं को न किसी बात के अविष्कार करने की आवश्यकता होती है, न ही कोई संकल्प होता है और न ही वे कोई नया अविष्कार करते हैं।

साइलेन्स की शक्ति से ही आत्मा पावन बनती है और पावन बन स्वीट-साइलेन्स होम में जाते हैं, जो सर्वात्माओं का घर है।

''उन्हों की है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स। तुम जितना साइलेन्स में जायेंगे, उतना वे विनाश के लिए अच्छी-अच्छी चीजें तैयार करते रहेंगे। ... कमाल है बाप के स्वर्ग स्थापन करने की। अभी तुमको स्मृति आई है। वे तो रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते ही नहीं है, तुम जानते हो।'' सा.बाबा 4.8.04 रिवा.

''स्थापना तो हो ही रही है, विनाश में थोड़ा समय है... साइन्स भी कितनी मदद देती है। विनाश में तत्व भी मदद करते हैं। तुम्हारे लिए बिल्कुल सफाया कर देते हैं।'' सा.बाबा 24.9.04 रिवा.

''ये साइन्स के साधन आप ब्राह्मणों के लिए ही निकले हैं। आप स्थापना के कार्य में लगाते हो और कोई फिर विनाश के कार्य में लगाते हैं लेकिन बापदादा साइन्स वाले बच्चों को भी मुबारक देते हैं कि इन्वेन्शन अच्छी निकाली है, जो दूर बैठे भी बच्चे सुन रहे हैं, देख रहे हैं।'' अ.बापदादा17.10.03

''अगर कोई सही रीति से एक मिनट भी साइलेन्स का अनुभव करे तो वह एक मिनट की साइलेन्स का अनुभव बार-बार उनको स्वत: ही खींचता रहेगा क्योंकि सभी को शान्ति चाहिए लेकिन उसकी विधि नहीं आती है।'' अ.बापदादा 4.03.86

''सभी धर्म की आत्माओं को एक परिवार में लाना - यह है आप ब्राह्मणों का वास्तविक कार्य।... साइन्स की शक्ति का प्रभाव और साइलेन्स की शक्ति का प्रभाव दोनों जब प्रत्यक्ष हों तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना।'' अ.बापदादा 4.03.86

''साइन्स वालों का है हाईएस्ट जिस्मानी हुनर, तुम्हारा है हाईएस्ट रुहानी हुनर। इससे तुम शान्तिधाम जाते हो... अभी तुम इस सृष्टि रूपी ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को, ड्युरेशन आदि को जानते हो। तो तुमको अन्दर फखुर होना चाहिए कि बाबा हमको क्या सिखलाते हैं।'' सा.बाबा 19.11.04 रिवा.

''साइन्स वाले एक स्थान पर बैठे अपने अस्त्रों द्वारा एक सेकण्ड में विनाश कर सकते हैं तो क्या शक्तियों का यह साइलेन्स बल कहाँ भी बैठे एक सेकेण्ड में काम नहीं कर सकता ?... आपका शुद्ध संकल्प आत्माओं को खींचकर सामने लायेगा।''

अ.बापदादा 2.7.70

''संगम पर कौनसा श्रृंगार है ? सफलता की माला यथायोग्य तथा शक्ति हरेक के गले में पड़ी हुई है... बापदादा आप से क्या बोलने वाले हैं, यह कैच कर सकती हो ? आजकल बाप बुद्धि की ड्रिल कराने आते हैं।'' अ.बापदादा 2.7.70

''प्रदर्शनी में आप लोग चित्र दिखाते हो ना कि रावण ने चार तत्वों पर विजय प्राप्त की है, उसमें काल भी दिखाते हो ना! जब रावण ने अर्थात् रावण की शक्ति साइंस ने अभी भी काफी हद तक तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है, तो साइंस आपसे पॉवरफुल हुई ना! जब साइंस की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत दे रही है तो साइलेन्स की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत क्या अन्त में देगी ?'' अ.बापदादा 5.12.74

''साइंस वाले, समय को और अपनी एनर्जी अर्थात् मेहनत को, साधनों के विस्तार को, सूक्ष्म और शार्ट कर रहे हैं। कम-से-कम एक सेकेण्ड तक पहुंचने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं और सफलता को पा रहे हैं ... तो ऐसे ही स्थापना के अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्थिति और गति भी सूक्ष्म और तीव्र होनी चाहिये।'' अ.बापदादा 30.6.74

''विशेष अन्तर यह होगा कि जो महारथी होगा, वह कोई भी समस्या या आने वाले परीक्षा को आने से पहले ही कैच करेगा। विघ्नों को पहले ही से कैच करने के कारण वह तूफान व समस्या को सामने आने न देगा। जैसे आजकल साइंस ...पहले से ही मालूम पड़ जाता है।'' अ.बापदादा 6.02.74

‘‘जैसे साइंस वाले हर वस्तु की गुह्यता में जाते हैं और नई-नई इन्वेन्शान (खोज) करते हैं। ऐसे ही अपने निजी स्वरूप और उसके अनादि गुण व संस्कार इन एक-एक गुण की डीपनेस (गहराई) में जाना चाहिए! जैसे आनन्द स्वरूप कहते हैं, तो आनन्द स्वरूप की स्टेज क्या है। जैसे वे लोग सागर के तले में जाते हैं और जितना अन्दर जाते हैं, उतने ही उन्हे नये-नये पदार्थ प्राप्त होते हैं ऐसे ही आप जितना अन्तर्मुख होकर स्वयं में खोये हुए रहोगे तो आपको बहुत नये-नये अनुभव होंगे।’’

अ.बापदादा 25.1.74

‘‘उनका है साइन्स बल, तुम्हारा है साइलेन्स बल। उनका भी बुद्धि-बल है और तुम्हारा भी बुद्धि-बल है... वह है साइन्स बुद्धि, तुम्हारी है साइलेन्स बुद्धि। वे विनाश के निमित्त बनते हैं... तुम बाप को याद करने और स्वदर्शन चक्रधारी बनने से चक्रवर्ती राजा बनते हो।’’ सा.बाबा 21.6.05 रिवा.

‘‘बहुत समय की प्राप्ति के लिए बहुत समय से पुरूषार्थ भी करना हैं, क्या ऐसे बहुत समय का पुरूषार्थ है? साइन्स वालों को महाविनाश के लिये ऑर्डर करें? एक सेकेण्ड की ही तो बात हैं, इशारा मिला और किया। क्या ऐसे ही शक्ति सेना तैयार हैं? एक सेकेण्ड का इशारा है - सदा देही-अभिमानी, अल्पकाल के लिये नहीं, सदा काल के लिए। ऐसा इशारा मिले तो आप क्या देही अभिमानी हो जावेंगे या फिर उस समय साधन ढूढेंगे।’’ अ.बापदादा 23.1.74

‘‘साइलेन्स की शक्ति से किसके वायब्रेशन द्वारा स्पष्ट समझ में आ जायेगा कि उसके मन में क्या है... आत्म ज्ञानियों को भी यह सिद्धि होती है कि कोई जबान से न भी बोले लेकिन वह क्या बोलना चाहते हैं, वह समझ जाते हैं।’’ अ.बापदादा 8.12.75

‘‘जब साइन्स की शक्ति अल्पकाल के लिए किसी का दुख-दर्द समाप्त कर लेती है, तो पवित्रता की शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति दुख-दर्द समाप्त नहीं कर सकती?’’ अ.बापदादा14.11.87

‘‘जैसे साइन्स की शक्ति के साधन टेलीफोन, वायरलेस द्वारा कार्य कराने का अनुभव करते हो, ऐसे साइलेन्स की शक्ति भी कम नहीं है। ... आगे चलकर वाणी वा स्थूल साधनों के द्वारा सेवा का समय नहीं मिलेगा।’’ अ.बापदादा18.11.87

‘‘जहाँ वाणी कार्य को सफल नहीं कर सकती, वहाँ साइलेन्स की शक्ति के साधन शुभ-संकल्प, शुभ-भावना, नयनों की भाषा द्वारा रहम और स्नेह की अनुभूति कार्य सिद्ध कर सकती है... इसके लिए अन्तर्मुखता और एकान्तवासी बनने की आवश्यकता है... बीच-बीच में समय निकालकर एकान्तवासी बनने का अनुभव करो।’’ अ.बापदादा18.11.87

‘‘साइलेन्स की शक्त से हिंसक वृत्ति वाले को भी अहिंसक बना सकते हो... इस शक्ति का अनुभव करो और कराओ। इसके लिए सिर्फ अपने मन की एकाग्र वृत्ति, शक्तिशाली वृत्ति चाहिए।’’ अ.बापदादा18.11.87

वायसलेस (Voiceless) और वाइसलेस (Viceless) स्थिति का राज

परमात्मा ने ये भी राज़ बताया है कि जब तुम्हारी स्थिति आवाज़ से परे और विकारी संकल्पों से परे होगी तब ही तुम परमात्मा की टचिंग को कैच कर सकेंगे और उस अनुसार निर्णय और कर्म करके विजयी बन सकेंगे।

‘‘वायरलेस सेट की सेटिंग कैसे होगी? बिल्कुल वाइसलेस बनना ही वायरलेस सेट की सेटिंग है। ज़रा अंश के भी अंश-मात्र विकार, वायरलेस के सेट को बेकार कर देगा। इसलिए महीन रूप से स्वयं के स्वयं ही चेकर बनो। तब ही प्रकृति और पाँच विकारों की अन्तिम विदाई के वार को विजयी बन सामना कर सकेंगे।’’ अ.बापदादा 14.9.75

‘‘जैसे साइन्स की शक्ति धरनी की आकर्षण से परे कर लेती है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति इन सब हद की आकर्षणों से दूर ले जाती है। इसको कहते हैं बाप समान सम्पूर्ण सम्पन्न स्थिति। ... कर्मेन्द्रियजीत अर्थात् मन-बुद्धि-संस्कार पर भी विजयी बनना।’’

अ.बापदादा27.11.87

प्रकृतिजीत बनने का राज़

आत्मा प्रकृतिजीत कैसे बनती हैं और प्रकृतिजीत बनने का फल क्या मिलता है, इसका राज़ भी बाबा ने अभी बताया है। प्रकृति-जीत आत्मा ही प्रकृति का सच्चा सुख पा सकती है। यह सारा खेल ही प्रकृति और पुरुष का बना हुआ है। सर्व

शक्तिवान परमात्मा की याद और यथार्थ आत्मिक ज्ञान की धारणा करके अपनी कर्मेन्द्रियों पर शासन करने वाला ही प्रकृतिजीत बन सकता है। आत्मा को प्रकृति का पहला उपहार यह शरीर ही है, जो इसका अधिकारी बनता है, वही प्रकृति-जीत बनता है।

''पहले स्व पर विजयी, फिर सर्व पर विजयी, फिर प्रकृति पर विजयी बनेंगे। ये तीनों विजय आपको विजय माला का मणका बनायेंगी।'' अ.बापदादा 1.03.86

''जो जितना जिस सब्जेक्ट में पास होगा, उतना ही उस सब्जेक्ट के आधार पर ऑब्जेक्ट और रेस्पेक्ट मिलेगा... नॉलेज की सब्जेक्ट की ऑब्जेक्ट रेस्पेक्ट मिलती है, प्रकृति दासी होती है... योग अर्थात् याद की शक्ति द्वारा ऑब्जेक्ट, वे जो संकल्प करेंगे, वह समर्थ होगा और कोई भी समस्या आने वाली होगी, उसका पहले से ही अनुभव होगा।'' अ.बापदादा 2.08.72

प्रकृति का सहयोग और प्राकृतिक आपदाओं का राज

प्रकृति का आत्मा के सुख-दुख में महत्वपूर्ण स्थान है अर्थात् प्रकृति के आधार पर ही आत्मा सुख या दुख का अनुभव करती है। जो आत्मा अपनी देह रूपी प्रकृति पर जीत पाती है, उसको ही प्रकृति का सहयोग मिलता है। जैसे इन्द्रीय-जीत आत्मा के लिए प्रकृति सहयोगी बनती है, वैसे ही इन्द्रीयों के वशीभूत आत्मा के लिए प्रकृति दुख का कारण भी बनती है। प्राकृतिक आपदायें भी पुरुष अर्थात् आत्माओं के अच्छे-बुरे कर्मों के फल स्वरूप आती हैं और अन्त में भी प्राकृतिक आपदाओं का विश्व परिवर्तन में महत्वपूर्ण स्थान है। जो आत्मायें पावन होंगी और जिनका नये विश्व के नव-निर्माण में आवश्यकता होगी, उनको ये प्रकृति भी सहयोगी बन जायेगी, जिससे वे सुरक्षित बच जायेंगी। जो आत्मायें पावन बनती हैं, उनके लिए प्राकृतिक साधन भी सुखदायी चाहिए और सतोप्रधान प्रकृति द्वारा ही ऐसे साधनों का निर्माण सम्भव है, इसलिए ही प्राकृतिक आपदाओं के द्वारा प्रकृति पावन बनती है।

अन्त समय विनाश के समय ये प्राकृतिक आपदायें विश्व की सफाई में बहुत मददगार बनती है। जो इन प्राकृतिक आपदाओं को भी यथार्थ ज्ञान की दृष्टि से देखता है, उसे ये भी आवश्यक और कल्याणमय सुखदायी अनुभव होती हैं और जो अज्ञानता की दृष्टि से देखता, उसको ये दुखदायी अनुभव होती हैं।

''अब तक यह साधारण परिस्थितियाँ हैं। विकराल रूप तो प्रकृति धारण करेगी जिसमें विशेष आपदाओं का वार अचानक ही होगा। ...ऐसे समय पर प्रकृति के विकराल रूप का समाना करने के लिए किस बात की आवश्यकता होगी? अपने अकाल तख्तनशीन अकालमूर्त बनने से महाकाल बाप के साथ-साथ मास्टर महाकाल स्वरूप में स्थित होंगें तब ही समाना कर सकेंगे।''

अ.बापदादा 14.9.75

''जैसे प्रकृति के पाँच तत्व विकराल रूप को धारण करेंगे, वैसे ही पाँच विकार भी अपना शक्तिशाली रूप धारण कर अन्तिम वार अति सूक्ष्म रूप में ट्रायल करेंगे अर्थात् माया और प्रकृति दोनों ही अपना फुल फोर्स का अन्तिम दाव लगायेंगे।''

अ.बापदादा 14.9.75

पुरुष और प्रकृति के परस्पर सम्बन्ध का राज

ये विश्व पुरुष अर्थात् आत्मा और प्रकृति के सम्बन्ध का एक खेल है। पुरुष चेतन है और प्रकृति जड़ है। आत्मा के जैसे कर्म-संस्कार होते हैं, वैसा ही प्रकृति फल देती है। सतयुग-त्रेता में सभी आत्मायें पावन होती हैं, कोई विकार नहीं, इसलिए कोई विकर्म होता नहीं, इसलिए प्रकृति दासी अर्थात् सहयोगी होती है। द्वापर से आत्मायें विकारों के वशीभूत होकर विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती हैं, इसलिए प्रकृति उस अनुसार फल देती है। द्वापर-कलियुग में कर्मानुसार प्रकृति किसको सहयोगी होती है तो किसको कर्मानुसार दुखदायी भी बन जाती है। प्राकृतिक आपदायें भी आत्माओं के सामूहिक विकर्मों के फलस्वरूप ही आती हैं और उनमें आत्मायें अपने-अपने विकर्मों के अनुसार ही दुख के रूप में फल भोगते।

जैसे आत्माओं का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब का सम्बन्ध है, वैसे ही आत्माओं का प्रकृति के साथ भी हिसाब-किताब का सम्बन्ध है। पुरुष प्रकृति का स्वामी भी है तो दास भी है। जब आत्मा देही-अभिमानी है तो प्रकृति पुरुष के लिए सुख

का आधार है, उसकी दासी है और जब आत्मा अर्थात् पुरुष देहाभिमानी बन जाती तो वह स्वयं प्रकृति का दास बन जाता है। जो आत्मायें प्रकृति के साधनों का दुरुपयोग करते हैं, प्रकृति को दूषित करते हैं, अनाधिकार उपभोग करते हैं, उनको जाने-अन्जाने प्रकृति द्वारा दुख भी अवश्य मिलता है। जो आत्मायें अभी संगमयुग पर योगबल द्वारा प्रकृति को पावन बनाते हैं, सतयुग में उन्हीं आत्माओं की प्रकृति दासी बनकर सेवा करती है अर्थात् मनवांछित फल देती है।

''जितना याद की यात्रा में रहेंगे तो प्रकृति तुम्हारी दासी बनेगी। सन्यासी लोग कब मांगते नहीं हैं। वह भी योगी तो हैं ना। निश्चय है हमको ब्रह्म में लीन होना है। उन्हों का धर्म ही ऐसा है। बहुत पक्के रहते हैं। बस हम जाते हैं... भक्ति मार्ग में देवताओं से मिलने के लिए जीवघात भी कर लेते हैं।'' सा.बाबा 8.1.73 रिवा.

''यह शान्ति की शक्ति इस रुहानी सेना के विशेष शस्त्र हैं। यह शान्ति की शक्ति सारे विश्व को अशान्त से शान्त बनाने वाली है। न सिर्फ मनुष्यात्माओं को लेकिन प्रकृति को भी परिवर्तन करने वाली है। इस शान्ति की शक्ति को अभी और भी गुह्य रूप से अनने और अनुभव करने का है।'' अ.बापदादा18.11.87

सत्य ज्ञान, उसकी कसौटी और उसके अनुभव का राज

वर्तमान जगत में अनेक सतसंग हैं, अनेक आत्मायें अपने को परमात्मा का अवतार कहते हैं और अनेक प्रकार का ज्ञान देते हैं परन्तु सत्य ज्ञान की परख क्या है, वह परमात्मा ही आकर बताते हैं, जिसके आधार पर हम सत्य ज्ञान और सत्य ज्ञानदाता परमात्मा को पहचानने में समर्थ होते हैं। सत्यता तो ये है कि परमात्मा स्वयं ही हमको हमारे अपने स्वरूप का अनुभव और अपने स्वरूप का अनुभव कराकर अपना बनाते हैं और पवित्रता, सुख-शान्ति का वर्सा देते हैं। परमात्मा ही हमको सत्य ज्ञान को परखने का दर्पण या कसौटी देते हैं, जिसमें ज्ञान की सत्यता को परख या देख सकते हैं।

सत्य ज्ञान के अनुभव की अथॉर्टी कितनी महान है, इसका यथार्थ आभास भी परमात्मा ही कराते हैं, जिससे आत्माओं में आत्मिक बल भर जाता है और अपनी महानता का आभास होता है।

बाप ने तुमको क्या नहीं दिया है। ये ईश्वरीय ज्ञान परम प्राप्तियों से परिपूर्ण है, इसको यथार्थ रीति समझकर अपने सत्य स्वरूप में स्थित हो जाओ और जीवन के परम आनन्द का अनुभव करो।

सत्य ज्ञान की परख है - सत्य ज्ञान को पाने वाले की भटक या खोज मिट जायेगी और उसको प्राप्ति का सुख अनुभव होगा, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ चलेगा। जब तक खोज है, सत्य को प्राप्ति की इच्छा है तब तक समझो सत्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई है। जिसको सत्य ज्ञान की प्राप्ति हो जायेगी, वह दूसरों को देने बिगर रह नहीं सकेगा। सत्य ज्ञान की धारणा वाले में अहंकार हो नहीं सकता। सत्य ज्ञान का भी अहंकार नहीं होगा। इसीलिए कहा है - विद्या ददाति विनयम्।

''गीता में भी ये बातें नहीं हैं। यह है बिल्कुल न्यारा ज्ञान। ड्रामा में यह सब नूँध है। एक सेकेण्ड का पार्ट न मिले दूसरे सेकेण्ड से। ... कम बुद्धि वाले तो इतनी धारणा कर न सकें।'' सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

''तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। प्रजापिता ब्रह्मा के मुख-कमल से तुम पैदा हुए हो ना। ... बाप को कहा जाता है ज्ञान का सागर। ज्ञान सागर बाप तुमको अविनाशी ज्ञान रत्नों की थालियां भर-भर कर देते हैं। जो ज्ञान को धारण करते, वे ऊंच पद पाते हैं।''
सा.बाबा 3.11.04 रिवा.

''सबसे बड़े से बड़ी अथॉर्टी आपके साथ है... आप सभी के पास कौनसी अथॉर्टी है? सबसे बड़ी परमात्म अनुभूति की अथॉर्टी है। अनुभव की अथॉर्टी से श्रेष्ठ और सहज किसी को भी परिवर्तन कर सकते हो।'' अ.बापदादा 13.3.86

''अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं तो वह नॉलेज ही किस काम की! ... जब ज्ञान बुद्धि में समा जाता है तो बुद्धि के डायरेक्शन अनुसार कर्मेन्द्रियाँ भी वैसा ही कर्म करती हैं... भोजन खाना और चीज है, हजम करना और चीज है। खाने से शक्ति नहीं आयेगी, हजम करने से शक्ति आती है।'' अ.बापदादा 24.1.70

‘‘जितनी जिसमें डिवाइन क्वालिटी होगी, उतना ही वह क्वालिटी वालों को लायेगी... जितना ज्ञान की वेल्यू, सर्विस की वेल्यू का मालूम होगा, उतना आप वेल्यूएबुल रतन बनेंगे। जो ज्ञान रतनों की वैल्यू कम करते तो खुद भी वेल्यूएबुल नहीं बन सकते।’’ अ.बापदादा13.11.69

सत्य ज्ञान का दाता एक सत्य परमात्मा ही है और वह आत्माओं को सत्य ज्ञान देकर सत्य बनाता है। सत्य अर्थात् सत्य (Truth) और सत्य अर्थात् अविनाशी (Eternal)। सत्य ज्ञान को पाकर ही आत्मा मृत्यु-भय से मुक्त निर्भय होकर सत्य कर्मों में प्रवृत्त होती है।

‘‘परमात्म-ज्ञान का प्रूफ है आपकी प्रैक्टिकल लाइफ। एक तरफ धर्म-युद्ध की स्टेज, दूसरी तरफ प्रैक्टिकल धारणामूर्त की स्टेज... प्रैक्टिकल में ज्ञान अर्थात् धारणामूर्त, ज्ञानमूर्त, गुणमूर्त। मूर्त से ही वह ज्ञान और गुण दिखाई दें। आजकल डिस्कस करने से अपनी मूर्त को सिद्ध नहीं कर सकते। लेकिन मूर्त से उनको एक सेकण्ड में शान्त करा सकती हो।’’

अ.बापदादा 11.4.73

‘‘यह भी भारतवासी ही कहते हैं क्योंकि अभी मैं बापों का बाप, पतियों का पति बनता हूँ। ... बाप के पास ऐसा ज्ञान है, जिससे सारे विश्व की सद्गति होती है। तत्वों सहित सबकी सद्गति हो जाती है।’’ सा.बाबा 21.5.05 रिवा.

‘‘सर्विस की रिजल्ट में स्नेह और प्योरिटी तो स्पष्ट दिखाई देता है अथवा आने वाले अनुभव करते हैं लेकिन जो नवीनता वा नॉलेज की विशेषता है, वह है नॉलेजफुल स्टेज वा मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज वा सर्वशक्तिवान बाप के प्रैक्टिकल कर्तव्य की विशेषता, जो विशेष रूप से अनुभव करने की है, वह अभी कमी है।’’ अ.बापदादा20.11.72

‘‘आपके जीवन से, स्नेह और सहयोग से प्रभावित हुए हैं लेकिन श्रेष्ठ नॉलेज और नॉलेजफुल बाप के ऊपर इतना प्रभावित हुए हैं, जितना निमित्त बने हुए ब्राह्मण स्वयं शक्ति रूप का स्वयं में अनुभव करते हो।... वह स्नेह और सहयोग की तुलना में कम है।’’ अ.बापदादा20.11.72

‘‘कर्म की भी नॉलेज होती है और अपनी रचयिता और रचना की भी नॉलेज होती है... नॉलेज सिर्फ रचयिता और रचना की नहीं लेकिन नॉलेजफुल अर्थात् हर संकल्प और हर शब्द हर कर्म में ज्ञान स्वरुप होगा। उसको ही नॉलेजफुल कहते हैं’’

अ.बापदादा 27.4.72

‘‘पाण्डवों का गायन क्या है? गुप्त रहने के बाद प्रत्यक्ष हुए ना... जब रिवाजी आत्मायें भी निर्भय होकर अपने सिद्धान्त को सिद्ध करने का कितना पुरुषार्थ करते हैं तो आप लोगों को अपने सिद्धान्तों को सिद्ध करने का कितना जोश होना चाहिए।’’

अ.बापदादा 9.10.71

‘‘साधारण आत्मायें भी अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त कर लेती हैं तो कितनी अथॉरिटी में रहती हैं... तो ऐसी सर्व-सिद्धियों को विधि द्वारा प्राप्त करने वाली आत्मायें कितने नशे में रहनी चाहिए?... जो स्वयं ही लेने वाला है, वह देने वाला दाता नहीं बन सकता। जैसे भिखारी, भिखारी को सम्पन्न नहीं बना सकता।’’ अ.बापदादा 26.6.74

परमात्मा को पहचानने और उनका बनने का राज

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह आकर सत्य ज्ञान देते हैं, जो आत्मायें उस सत्य ज्ञान की सत्यता को समझते हैं, वे ही परमात्मा को पहचान कर उनके बनते हैं और जो आत्मायें परमात्मा को पहचान कर परमात्मा पर बलिहार जाती हैं अर्थात् तन-मन-धन से उनका बन जाती हैं, वे ही भविष्य नई दुनिया में ऊंच पद की अधिकारी बनती हैं।

परमात्मा को ज्ञान के आधार पर भी आत्मायें पहचानती हैं, तो उनके प्यार, पालना के आधार पर भी उनको पहचानकर उनके बनते हैं। परमात्मा को पहचानने और उनका बनने में साक्षात्कार की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इन तीनों विधियों के आधार पर आत्मायें परमात्मा का, अपना और विश्व-नाटक की सत्यता का अनुभव करती हैं और अनुभव करके परमात्मा की बनती हैं।

''बाप को याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। कोई भी शरीरधारी में प्यार मत रखो... अगर देहधारी याद पड़ते रहेंगे तो योग में कैसे रहेंगे... यह भी तकदीर है। मर गये तो फिर पुराना सम्बन्ध याद आना नहीं चाहिए... फिर पुराना सम्बन्ध छूटा। वह जाने और उनके कर्म जाने, हम क्यों ख्याल करें।'' सा.बाबा 29.11.72 रिवा.

परमात्म के गोद लेने और प्रवेश होने (Adoptation and Re-incarnation) का राज

परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर ब्रह्मा को अपना बनाते हैं और फिर उनसे हम बच्चों को एडॉप्ट करके अपना बच्चा बनाते हैं और वर्सा देते हैं। ब्रह्मा बाबा और बच्चे दोनों ही एडॉप्टेड हैं परन्तु दोनों के एडॉप्टेशन का विधि-विधान अलग है। शिवबाबा ने हमको ब्रह्मा द्वारा एडॉप्ट किया है तो ब्रह्मा हमारी माँ हो गई तो साकार में बाप भी है तो हमारा बड़ा भाई भी है। ये ब्रह्मा बाबा के साथ हमारे सम्बन्धों की गुह्य पहेली है। इस पहेली को जानने वाला ही यथार्थ रीति उनके साथ सम्बन्ध निभाते हुए निराकार और साकार बाप के प्यार अनुभव कर सकता है, जो जीवन की और संगमयुग की महानतम प्राप्ति है।

''इनको भी एडॉप्ट किया जाता है, उनसे फिर रचना हुई है। रचना भी है एडॉप्टेड। बाप बच्चों को एडॉप्ट करते हैं, वर्सा देने के लिए। ब्रह्मा को भी एडॉप्ट किया है। प्रवेश करना वा एडॉप्ट करना बात एक ही है... तुम बच्चों को तो सदैव खुशी रहनी चाहिए कि हमको सुप्रीम बाप ने अपना बच्चा बनाया है।'' सा.बाबा 27.1.05 रिवा.

''बाप ने तुमको एडॉप्ट किया है ना। ब्रह्मा द्वारा एडॉप्ट करते हैं। स्त्री को एडॉप्ट किया जाता है, बाकी बच्चों को फिर क्रियेट किया जाता है। स्त्री को रचना नहीं कहेंगे। यह बाप भी एडॉप्ट करते हैं।... एडॉप्टेड बच्चों को ही बाप से वर्सा मिलता है।'' सा.बाबा 29.1.05 रिवा.

परमात्मा की गोद और गोद का बच्चा बनने का राज

आत्मायें तो परमात्मा की अविनाशी सन्तान हैं परन्तु जब परमात्मा साकार में इस धरा पर अवतरित होते हैं तो ब्रह्मा द्वारा साकार में अपनी गोद के बच्चे ब्राह्मण बनाते हैं और जो उनकी गोद के बच्चे बनते हैं वे ही नई दुनिया स्वर्ग के वर्से के अधिकारी बनते हैं। साकार में भी बाबा ब्रह्मा के द्वारा अपनी गोद में लेकर बच्चों को गोद का सुख देते हैं परन्तु साकार में ये सुख सभी नहीं ले सकते हैं क्योंकि ब्रह्मा के बच्चे अनेक बनते हैं, उनमें से कुछ ही विशेष भाग्यशाली होते हैं, जो उनकी साकार में गोद का सुख अनुभव करते हैं। बाकी समय की सीमा के कारण जो साकार में गोद नहीं ले सकते हैं, परमात्मा अव्यक्त रूप में उनकी पालना करता है। ये अव्यक्त रूप में परमात्मा की पालना भी गोद के समान ही सुखदायी है, इसलिए तीव्र पुरुषार्थ के द्वारा अव्यक्त रूप धारण कर अव्यक्त रूप में भी परमात्मा की गोद का सुख ले सकते हैं। योग में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना भी परमात्मा की गोद का ही सुख है।

''बच्चों का स्नेह का रूप बदलता रहता है। बापदादा का स्नेह तो अटूट और एकरस रहता है।'' अ.बापदादा 22.1.70

''अच्छे-अच्छे बच्चे बाबा की गोद से हारकर रावण की गोद में चले जाते हैं। कहाँ बाप की श्रेष्ठ बनने की गोद, कहाँ भ्रष्ट बनने की गोद।'' सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''तुमको सम्मुख बाप बैठ समझाते हैं फिर भी नशा नहीं चढ़ता है। ओहो! शिवबाबा ने हमको गोद लिया है, धर्म का बच्चा बनाया है।'' सा.बाबा 19.9.71 रिवा.

''शिव बाबा का यह टेम्प्रेरी रथ है। कहते हैं शिवबाबा को याद कर इनकी गोदी में आओ। नहीं तो पाप लग जायेगा। मनुष्य तो बेचारे जानते नहीं हैं। इसलिए भाकी के लिए खबरदारी रखी जाती है। आर्य समाजियों ने एक भाकी का चित्र हाथ कर कितना हंगामा मचाया है। यह भी नूँध है, फिर भी ऐसे होगा।'' सा.बाबा 25.6.71 रिवा.

भगवान, भाग्य और भाग्य-विधाता का राज़

भगवान को भाग्य-विधाता कहा जाता है क्योंकि वही आकर आत्माओं का भाग्य जगाता है। भगवान क्या भाग्य जगाता है, सर्वश्रेष्ठ भाग्य क्या है और कैसे उस भाग्य को पाते हैं - ये सब राज़ अभी परमात्मा ने बताये हैं और हमारे श्रेष्ठ भाग्य को बना रहा है। दुनिया में तो मनुष्य श्रेष्ठ भाग्य क्या है, वह भी नहीं जानते हैं। थोड़ी सी प्राप्ति को ही बड़ा भाग्य समझ लेते हैं। दुनिया में मनुष्य जिन देवी-देवताओं से भाग्य मांगते हैं, भाग्य-विधाता परमात्मा हमको उन जैसा बनाता है, वे भी परमात्मा से भाग्य पाकर ऐसे भाग्यशाली बने हैं।

''सारे कल्प में ऐसा श्रेष्ठ भाग्य किसी का भी हो नहीं सकता। कल्प-कल्प के आप बच्चे ही इस भाग्य का अधिकार प्राप्त करते हो। याद है - अपना कल्प-कल्प के अधिकार का भाग्य ? यह भाग्य सर्वश्रेष्ठ भाग्य क्यों है ? क्योंकि स्वयं भाग्य-विधाता ने इस श्रेष्ठ भाग्य का दिव्य जन्म आप बच्चों को दिया है। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु आप ब्राह्मणों के भाग्यवान जीवन में।''

अ.बापदादा30.11.04

''बच्चे समझते हैं कि अभी हमारे दुर्भाग्य के दिन बदलकर अब सदा के लिए सौभाग्य के दिन आ रहे हैं। ... अब यह रात खत्म होने वाली है, अब हमारा भाग्य बदल रहा है। हमारे ऊपर ज्ञान वर्षा होती रहती है।'' सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

''तकदीरवान बच्चे ही शरीर का भान भूलकर अपने को अशरीरी समझ बाप को याद करने का पुरुषार्थ कर सकते हैं। ... बुद्धि की बात है परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो तदवीर भी क्या करें। बुद्धि में रहना चाहिए कि हम अशरीरी आये थे, फिर अशरीरी होकर जाना है।'' सा.बाबा 4.5.05 रिवा.

''तकदीर जो जगाकर आये हैं उस अनुसार ही बाप के बने लेकिन बाप के बनने में ही तकदीर की बात है ना। तकदीर बनाकर भी आये हैं और बना भी सकते हैं। ...ड्रामा का बना हुआ लक ही ले आये हो ना!'' अ.बापदादा 27.4.72

''किसकी तकदीर में होता है तो सरकमस्टान्सेस भी ऐसे बनते हैं, जो लिफ्ट का रूप बन जाते हैं। यहाँ भी जिनके कल्प पहले की तकदीर वा ड्रामा की नूँध है, भल अपना भी पुरुषार्थ रहता है लेकिन साथ-साथ यह लिफ्ट भी दैवी परिवार द्वारा मिलती है और बापदादा द्वारा भी गिफ्ट मिलती है।'' अ.बापदादा 29.6.71

''बापदादा आपके भाग्य के सितारे को देख हर्षित होते हैं, और गुणगान करते हैं। ऐसे खुशनसीब बच्चों की रोज़ माला सिमरते हैं। ऐसे बाप के सिमरने के मणके बने हो ? विजयमाला के मणके बनना बड़ी बात नहीं है, लेकिन बाप के सिमरने के मणके बनना, यही खुशनसीबी है।'' अ.बापदादा 20.5.74

''तकदीर बनाने वाले बाप के जो डायरेक्ट बच्चे हैं, उन्हों की तक़दीर श्रेष्ठ और अविनाशी चाहिए।...ऐसा तकदीरवान हर संकल्प में, हर बोल में, कर्म में फालो फादर करता होगा। संकल्प भी बाप समान विश्व कल्याण की सेवा अर्थ होगा। हर बोल में नम्रता, निर्माणता और उतनी महानता होगी।'' अ.बापदादा 9.9.75

भगवान बाप और भगवान को बच्चा बनाने का राज

भक्ति मार्ग में भी भगवान को बच्चा बनाने का गायन है परन्तु भगवान को बच्चा कैसे, कब और क्यों बनाया जाता है, वह ज्ञान नहीं है, जो अभी बाप ने आकर दिया है। जब हम संगमयुग पर साकार में आये परमात्मा को अपना तन-मन-धन देकर उसको अपना वारिस बनाते हैं तो वह हमारा बच्चा बन जाता है क्योंकि बाप बच्चे को अपना वारिस बनाते हैं और उसके फलस्वरूप हमको वह बाप बनकर 21 जन्म तक सुख-शान्तिमय दुनिया का वर्सा देता है। ज्ञान, गुण, शक्तियों का वर्सा देता है। जब हम उनकी गोद के बच्चे बनते हैं, उनकी आज्ञा पर चलते हैं तो वह हमारा बाप बन जाता है। वह हमको बच्चे के समान इस दुनिया में रहना, चलना, व्यवहार करना सिखाता है। बाप के समान हमारी ज्ञान, गुण, शक्तियों से पालना करता है। साकार में अपनी कल्याणमयी गोद में बिठाकर पालना भी करता है, तो श्रृंगार भी करता है।

''यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए, जो कोई को भी समझा सको। ... यह लक्ष्मी-नारायण शिवबाबा के पूरे वारिस हैं। आगे जन्म में शिवबाबा को सब कुछ दे दिया। बाबा ने कहा - मुझे वारिस बनाओ, फिर दूसरा कोई नहीं। कहते - बाबा यह सब कुछ

आपका है। आप हमको सारे विश्व की बादशाही का वर्सा देते हो... कभी कोई से कुछ पूछा नहीं। गुप्त सब कुछ दे दिया। इसको कहा जाता है गुप्त दान।'' सा.बाबा 21.9.04 रिवा.

बाप और वर्से अर्थात् बाप का वारिस बनने और बनाने का राज

परमात्मा हमारा बाप है तो बाप से वर्सा अवश्य मिलना चाहिए और मिलता भी है। बाप का यथार्थ वर्सा क्या है, यह भी समझने की बात है। बाप का वर्सा है ज्ञान, गुण, शक्तियां, जिसके आगे दुनिया की सर्व प्राप्तियां मूल्यहीन हो जाती है। ये सर्व श्रेष्ठ वर्सा आत्माओं को संगमयुग पर ही परमात्मा से मिलता है, जिसके आधार पर ही स्वर्ग का वर्सा मिलता है। परमात्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता कहा जाता है और मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है क्योंकि परमात्मा सर्वात्माओं का बाप है। इसलिए मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा हर आत्मा को देश-काल और पार्ट के अनुसार अवश्य ही मिलता है।

भविष्य स्वर्ग का वर्सा हर आत्मा को अपने अभी के पुरुषार्थ अनुसार मिलता है। जो अभी बाप को अपने तन-मन-धन का जितना वारिस बनाता है, उसको उसी अनुसार ही भविष्य का वर्सा मिलता है। ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को फुल वारिस बनाया तो उनको बाप का फुल वर्सा मिला और वे सतयुग के प्रथम नारायण बनें।

''एक है स्नेह, दूसरा है सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सर्वशक्तियों का खजाना... बापदादा ने सभी बच्चों को एक जैसी सर्वशक्तियां दी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान बनाया है। ... सर्वशक्तियाँ बापदादा का वर्सा है, तो अपने वर्से पर अधिकार है? सदा है? ... क्योंकि बाप ने वर्सा दिया और वर्से को आपने अपना बनाया, तो अपने पर अधिकार होता है... अधिकारी जिस शक्ति को आर्डर करे और वह शक्ति हजूर हाजिर कहे।'' अ.बापदादा 2-11-04

''सर्व शक्तियां बाप का वर्सा और वरदाता का वरदान हैं। बाप और वरदाता - इन डबल सम्बन्ध से हरेक बच्चे को यह श्रेष्ठ प्राप्ति जन्म से ही होती है। ... सभी बच्चों को एक द्वारा एक जैसा ही डबल अधिकार मिलता है लेकिन धारण करने की शक्ति नम्बरवार बना देती है।'' अ.बापदादा29.10.87

''कहते तो सब हैं - बाबा, हम आपके हो चुके हैं परन्तु यथार्थ रीति हमारे होते थोड़ेही हैं। बहुत हैं, जो वारिस बनने के राज़ को भी नहीं जानते हैं। ... कई बच्चे समझते हैं - हम तो वारिस हैं परन्तु बाबा समझते हैं कि यह वारिस है नहीं। वारिस बनने के लिए भगवान को अपना वारिस बनाना पड़े। यह राज़ समझना और समझाना भी मुश्किल है... सब मिलकियत देनी पड़े, फिर बाप भी वारिस बनायेंगे।'' सा.बाबा 5.1.05 रिवा.

''पढ़ते-पढ़ते आखरीन तन्त बुद्धि में आ जाता है। यह भी ऐसे है। अन्त में फिर बाप कहते हैं मन्मनाभव, तो देह का अभिमान टूट जायेगा। मन्मनाभव की आदत पड़ी होगी तो पिछाड़ी में भी बाप और वर्सा याद रहेगा।'' सा.बाबा 8.2.05 रिवा.

''सभी आत्माओं को आप लोगों के द्वारा अपना-अपना यथा पार्ट तथा बाप का वर्सा जरूर लेना है।'' अ.बापदादा 30.7.70

''सदा बाप और वर्सा दोनों याद रहता है? बाप की याद स्वत: ही वर्से की भी याद दिलाती है और वर्सा याद है तो बाप की स्वत: याद है। बाप और वर्सा दोनों साथ-साथ हैं। ... सागर सदा सम्पन्न है तो आप सभी सदा सम्पन्न आत्मायें हो ना! खाली होंगे तो लेने के लिए कहाँ हाथ फैलाना पड़ेगा।'' अ.बापदादा16.02.86

''सब आत्माओं का बाप एक है। सबको बाप से वर्सा लेने का हक है। आत्मायें सब भाई-भाई हैं... भाई-भाई माना सब आत्मायें एक बाप के बच्चे हैं, फिर प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन हैं।'' सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

''अव्यक्त स्थिति को प्राप्त करने के लिए आदि से लेकर एक स्लोगन सुनाते आते हैं, अगर वह याद रहे तो कब भी कोई माया के विघ्नों में हार नहीं हो सकती है। 'स्वर्ग का स्वराज्य हमारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है और संगम के समय बाप का खजाना जन्मसिद्ध अधिकार है।'... अधिकारी समझेंगे तो कब माया के अधीन नहीं होंगे।'' अ.बापदादा 17.5.69

''रुहानी बाप से एक तो तुमको ज्ञान का वर्सा मिल रहा है... बाप शान्ति का सागर है तो बच्चों को शान्ति भी धारण करनी चाहिए। ... अशान्त होना भी अवगुण है। अवगुणों को निकालना है और हर एक से गुण ग्रहण करना है।'' सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

''शिवबाबा के वर्से का पूरा अधिकारी अपने को समझते हो? जो वर्से के अधिकारी बनते हैं उन्होंका सर्व के ऊपर अधिकार होता है, वे कोई भी बात के अधीन नहीं होते हैं। अगर देह के, देह के सम्बन्धियों के, देह की कोई भी वस्तुओं के अधीन होते हैं तो ऐसे अधीन होने वाले अधिकारी नहीं हो सकते।'' अ.बापदादा 24.1.70

''बाप जानते हैं सारी दुनिया की जो भी आत्मायें हैं, सबको मैं वर्सा देने आया हूँ। ... बाप यहाँ बैठे हैं लेकिन इनकी तो सारी दुनिया की जो भी आत्मायें हैं, सब तरफ नजर जाती है, जानते हैं सबको मुझे वर्सा देना है।'' सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

''अविनाशी बाप, अविनाशी बच्चे हैं तो प्राप्ति भी अविनाशी है। ... बाबा का बनना अर्थात् सदा के लिए अविनाशी खजाने के अधिकारी बनना।'' अ.बापदादा 13.3.86

''बापदादा विश्व की सर्व आत्माओं अर्थात् बच्चों को बाप का वर्सा प्राप्त कराने के अधिकारी जरूर बनायेंगे। चाहे कैसे भी हैं लेकिन हैं तो बच्चे ही। चाहे मुक्ति का चाहे जीवनमुक्ति का, दोनों ही वर्सा हैं। बाप वर्सा देने के लिए ही आये हैं। अन्जान हैं ना। उन्हों का भी दोष नहीं है। इसलिए आप सभी को भी रहम आता है ना।'' अ.बापदादा 13.3.86

''मेरे बिगर वर्सा थोड़ेही मिलेगा। वर्सा तो तुमको मेरे से ही मिलना है ना। वर्सा एक बाप रचता से मिलता है। ... रचना से कभी वर्सा मिल न सके। ... मैं तो आता ही हूँ तुम बच्चों को पढ़ाकर पावन बनाने।'' सा.बाबा 27.3.05 रिवा.

Q. परमात्मा का यथार्थ वर्सा क्या है, वह किसको एवं कब मिलता है?

A. परमात्मा का यथार्थ वर्सा है ज्ञान, गुण, शक्तियां अर्थात् आत्मिक शक्तियां, पवित्रता, सुख-शान्ति, आनन्द, अतीन्द्रिय सुख, जिसके आधार पर ही आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करती है। जो सर्व आत्माओं को उनके पार्ट और समय अनुसार मिलता है और सबको संगमयुग पर ही मिलता है।

''मुक्ति-जीवनमुक्ति जन्मसिद्ध अधिकार है। इसको आप लोगों ने पाया है?... मुक्ति-जीवनमुक्ति को यहाँ ही पा लिया है वा मुक्तिधाम में मुक्ति और स्वर्ग में जीवनमुक्ति लेना है... जब बाप अभी मिला है तो वर्सा भी अभी मिला है... प्रैक्टिकल जो वर्सा है, वह अभी प्राप्त होता है। जीवन-बन्ध के साथ ही जीवनमुक्त का अनुभव होता है। वहाँ तो जीवन-बन्ध की बात ही नहीं, वहाँ तो सिर्फ उसकी प्रारब्ध में होंगे।'' अ.बापदादा 11.7.72

''वर्सा सदैव अपनी प्राप्ति होती है। दान-पुण्य तो कब-कब की प्राप्ति होती है। वारिस हो तो वारिस निशानी है अतीन्द्रिय सुख के वर्से के अधिकारी।'' अ.बापदादा 30.5.71

''तुमको दीपमाला आदि की खुशी नहीं है, तुमको तो खुशी है हम बाप के बने हैं, उनसे वर्सा पाते हैं।''

सा.बाबा 25.10.69 रिवा.

''शुरू में ताकत थी। अभी इतनी हिम्मत कोई में नहीं है। भल कहते हैं - हम वारिस हैं परन्तु वारिस बनने की बात और है।...याद का जौहर अभी कम है। किसी भी देहधारी को याद नहीं करना है।'' सा.बाबा 1.8.05 रिवा.

परमसुख, परमशान्ति, परमानन्द बाप का वर्सा है, जिसके लिए सर्व आत्माओं को अधिकार है और परमात्मा ने हर आत्मा को दिया है। उसके लिए किसी साधन-सम्पत्ति, पद की आवश्यकता सनहीं है। उसके लिए यथार्थ ज्ञान और आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की मधुर याद की ही आवश्यकता है परन्तु आत्मा अहंकार या हीनता तथा इन्द्रिय सुखों के आकर्षण में इससे वंचित रह जाती है।

परमात्मा की छत्रछाया का राज

परमात्मा की छत्रछाया का भी गायन है। वैसे तो सभी आत्मायें परमात्मा के बच्चे हैं और सभी पर उनकी छत्रछाया सदा है ही है। वह सर्व आत्माओं की रक्षा करने वाला है, इसलिए ही सब आपत्ति काल में उनको याद करते हैं। अभी जो साकार में

उनके बच्चे बनते हैं और सच्चे दिल से उनको याद करते हैं, सच्चे दिल से परमात्मा की विश्व-कल्याण की सेवा में रहते हैं, वे कहाँ भी हैं, वहाँ ही परमात्मा की छत्रछाया का अनुभव करते हैं और परमात्मा उनकी रक्षा करता है। ऐसा अनुभव प्राय: सभी को है।

''बाप खुद कहते हैं - इनकी अगर कोई ऐसी मत मिल भी गई तो भी उसको ठीक करने वाला मैं बैठा हूँ। मेरे कारण ये कितनी गाली खाते हैं तो इनकी भी सम्भाल करनी पड़े। बाप रक्षा जरूर करते हैं। जो जितना सच्चाई पर चलते हैं, उतनी उनकी रक्षा होती है। झूठे की रक्षा नहीं होती। उनकी तो फिर सजा कायम हो जाती है।'' सा.बाबा 1.11.04 रिवा.

आत्मा का परमात्मा के साथ हिसाब-किताब का राज़ / एक का हजार गुणा प्राप्ति के विधि-विधान का राज

परमात्मा को सौदागर भी कहा जाता है। वह भोला भण्डारी है और उसका भण्डार सभी आत्माओं के लिए सदा खुला हुआ है परन्तु उस भण्डार से लेने का एक विधान ड्रामा में नूँधा हुआ है। वह विधान है एक का हजार गुणा प्राप्ति। ड्रामानुसार इस विधान के अनुसार जो जितने कदम उसके मार्ग पर बढ़ाता है, वह उस अनुसार उसके भण्डार से लेने का अधिकारी बनता है। बिना अपना कदम उठाये कोई कुछ प्राप्ति नहीं कर सकता है और कदम उठाने वाला नियमानुसार कभी भी प्राप्ति से वंचित नहीं रह सकता है।

सृष्टि के नियमानुसार आत्माओं का परमात्मा के साथ भी लेनदेन का हिसाब किताब है अर्थात् हम परमात्मा की पहले भक्ति करते हैं तो परमात्मा हमको ही पहले ज्ञान देता है और परमात्मा हमको ज्ञान देता है तो हम भक्ति मार्ग में उनके मन्दिर बनाते हैं, उनकी महिमा करते हैं, उनका गुणगान करते हैं। ये भी परमात्मा के साथ लेनदेन का एक हिसाब-किताब का सम्बन्ध है।

विश्व के इतिहास और भूगोल (H. & G. of the World) का राज

परमात्म अपना, सृष्टि-चक्र, तीनों लोकों, तीनों कालों, कल्प-वृक्ष, स्वर्ग-नर्क आदि सबका ज्ञान देते हैं अर्थात् विश्व के इतिहास के ज्ञान के साथ तीनों लोकों और भविष्य में होने वाले विश्व के भौगोलिक सवरूप का भी ज्ञान देता है। हर 5000 वर्ष के बाद इस विश्व का हर कण-कण हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है अर्थात् 5000 वर्ष के बाद हर अण-परमाणु अपने पूर्व स्थान पर पहुँच जाता है। सतयुग में आत्मायें सतोप्रधान होती है, इसलिए प्रकृति भी सुखदायी होती है। उसके बाद समय प्रति समय विश्व के इतिहास और भूगोल में क्या-क्या और कैसे परिवर्तन होता है, उस सबका ज्ञान अभी परमात्मा ने दिया है। विश्व के भूगोल का विश्व के इतिहास से क्या सम्बन्ध है, वह राज़ भी बताते हैं। जैसे द्वापर से जब आत्मायें विकारी बनती हैं तो विश्व में बड़ा परिवर्तन होता है, उथल-पुथल होती है और विश्व का स्वरूप बदल जाता है। फिर कल्पान्त में जब आत्मायें पावन बनती हैं तो भी सृष्टि में आमूलभूत परिवर्तन होता है क्योंकि पावन आत्माओं के लिए प्रकृति भी पावन चाहिए, सुखदायी चाहिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि में जड़ और चेतन का कितना गहरा सम्बन्ध है, जिसका सारा राज़ परमात्मा ने बताया है।

''इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह अभी तुम समझते हो। हिस्ट्री चेतन्य की होती है और जॉग्राफी जड़ तत्वों की होती है। ... सारा खेल ही जड़ और चेतन्य का है।... यह सारा खेल तुम्हारे पर है। हिस्ट्री-जॉग्राफी भी तुम सुनते हो। बाप इस तन में आकर सब बातें समझाते हैं।'' सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

धर्म और राज्य की स्थापना का राज़ / ज्ञान की धार्मिकता और राजनैतिकता का राज

इस ज्ञान को परमात्मा ने Religio-Political Knowledge कहा है क्योंकि अभी परमात्मा आकर धर्म और राज्य दोनों की स्थापना करते हैं। सतयुग में धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता एक के ही हाथ में होती है, इसलिए इसको रिलीजियो-पोलिटिकल नॉलेज कहा जाता है। सतयुग में देवी-देवताओं में राज्य करने और धर्म की सर्व कलायें होती हैं, जो द्वापर से धर्म और राज्य सत्ता अलग-अलग हो जाती है क्योंकि देहाभिमान के कारण राजायें गृहस्थ में होने के कारण विकारी हो जाते हैं और विश्व को

थमाने के लिए पवित्रता चाहिए, इसलिए धर्म-सत्ता अलग हो जाती है, जिसमें राजगुरु, सन्यासी, अन्य धर्मों में पादरी, नन्स, बौद्ध-भिक्षु आदि आदि का स्थान बन जाता है। इसीलिए बाबा सन्यासियों की महिमा करते हैं और कहते हैं इन सन्यासियों ने ही भारत को थमाया है, नहीं तो भारत और भी काम-चिता पर जल मरता।

''तुम हो रिलीजियो-पोलिटीकल। तुम जानते हो हम धर्म और राज्य स्थापन कर रहे हैं... अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि हम हर 5 हजार वर्ष के बाद राज्य लेते हैं और फिर गंवाते हैं।'' सा.बाबा 6.10.04 रिवा.

''तुम हो पाण्डव सम्प्रदाय। तुम रिलीजियो भी हो तो पोलिटिकल भी हो। बाबा सब रिलीजन की बातें समझाते हैं। ... अभी तुम जानते हो हमारा राज्य स्थापन हो रहा है।'' सा.बाबा 26.5.05 रिवा.

''धर्म सत्ता वालों को त्याग, तपस्या और वैराग्य के बदले लोगों को रिद्धियों-सिद्धियों में खेलते देखा, वैराग्य के बजाये राग-द्वेष में देखा। ... राज्य सत्ता लॉटरी का जुआ खेल रही है। ... कौरव अपने जुआ में लगे हुए हैं।'' अ.बापदादा19.10.75

पवित्रता और प्रकृति के सम्बन्ध का राज

देवी देवताओं में आज की दुनिया के समान और कोई विशेष ज्ञान तो नहीं होता है परन्तु उनमें पवित्रता की शक्ति होती है, जो सर्व प्राप्तियों का आधार है। पवित्रता के कारण प्रकृति उनकी दासी होती। जो आत्मायें दुनियावी चतुराई न होते भी परमात्मा के साथ सच्ची दिल होने के कारण पवित्रता की धारणा में सफल होती हैं, उसके फलस्वरूप वे दैवी दुनिया में ऊंच पद अवश्य पाती हैं। जहाँ पवित्रता है, वहाँ प्रकृति मनवांछित फल देती है। प्रकृति का ये नियम चारो ही युगों में प्रभावित होता है। इसीलिए सन्यासियों में जब पवित्रता की धारणा उच्च थी तो जंगल में भी सर्व प्राप्तियां होती थीं। जो आत्मायें ऊपर से आती हैं, वे पवित्र होती हैं, इसलिए आज भी प्रकृति उनको सर्व सुख देती है। भले ही वह सुख समयान्तर में विलीन हो जाता है परन्तु जब तक उनमें पवित्रता होती है, तब तक प्रकृति से उनको सुख अवश्य मिलता है।

यात्रा और मुसाफिर का राज

आज नहीं तो कल बिखरें गे ये बादल, ओ रात के भूले हुए मुसाफिर सुबह हुई घर चल। दुनिया में भी लोग कहते हैं कि यह दुनिया एक मुसाफिरखाना है परन्तु कौन मुसाफिर है, कहाँ से मुसाफिरी पर आये हैं, फिर कब वापस जायेंगे, कैसे जायेंगे आदि आदि बातों के विषय में कुछ नहीं जानते हैं, जो परमात्मा ने अभी आकर बताया है और तैयार करके वापस साथ ले जाने का विधि-विधान बता रहे हैं।

''अब घर चलना है, बाप आये हैं लेने के लिए। यह याद भी तब रहेगी, जब आत्माभिमानी होंगे। ... बाबा मुसाफिर होकर आया है। तुम भी मुसाफिर होकर आये थे। अभी तुम अपने घर को भूल गये हो।'' सा.बाबा 3.8.05 रिवा.

तीर्थ, तीर्थ यात्रा और याद की यात्रा का राज

भक्ति मार्ग में भी प्राय: सभी तीर्थ यात्री मुक्ति-जीवनमुक्ति की शुभ भावना और शुभ कामना से ही जाते हैं परन्तु वह कामना पूर्ण नहीं होती है क्योंकि वे तीर्थ तो सच्चे तीर्थों की यादगार हैं। हाँ, उनको भी भावना का भाड़ा अवश्य मिलता है अर्थात् अल्प काल का सुख अवश्य मिलता है। सच्चे तीर्थ तो परमधाम, स्वर्ग हैं और अभी जहाँ परमात्मा ने दिव्य कर्तव्य किये हैं, वही हैं। इन तीर्थों की यात्रा का विधि-विधान और राज़ परमात्म ने बताया है। जो इनकी यात्रा करता है, वह मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख का अभी भी अनुभव करता है तो भविष्य में भी मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाता है।

जैसे पावन बनने के लिए मनुष्य तीर्थों की यात्रा करते हैं वैसे परमात्मा आकर याद की यात्रा सिखलाते हैं। परन्तु उन तीर्थ यात्राओं से कोई पावन नहीं बनता है, आत्मा पावन बनती है याद की यात्रा से। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर

परमात्मा को, परमधाम को, स्वर्ग को याद करने से ही आत्मा पावन बनती है। यही याद की यात्रा सच्ची तीर्थ यात्रा है, जो आत्मा को पावन बनाती है, मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कराती है। यह यात्रा अभी ही परमात्मा ने सिखलाई है।

''अन्दर में यह ज्ञान है ना कि हम आत्मायें याद की यात्रा पर हैं।... शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो। अन्दर में यह आना चाहिए कि हम जा रहे हैं... इस याद की यात्रा से ही तुम्हारे पाप कटने हैं, तब ही तुम मंजिल पर पहुँचेंगे।''

सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

''योग अक्षर से यात्रा सिद्ध नहीं होती है। योग अक्षर सन्यासियों का है... आत्मा को ही यह यात्रा करनी है... सिर्फ बाप को याद नहीं करना है, साथ में ज्ञान भी चाहिए। ज्ञान से तुम धन कमाते हो, सृष्टि-चक्र की नॉलेज से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो... यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहे तब खुशी का पारा चढ़े।'' सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे इन बातों को भूलो मत। बच्चे बाप को भूल जाते हैं क्या, फिर तुम क्यों भूलते हो ? अपने को आत्मा नहीं समझते हो, देहाभिमानी बनने से ही तुम बाप को भूलते हो।'' सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

''यह यात्रा तो तुम्हारी नित्य चलनी है। घूमो-फिरो परन्तु इस याद की यात्रा में रहो। यह है रुहानी यात्रा। इसमें शरीर का कोई काम नहीं है... बुद्धि में सदैव याद रखो हम जा रहे हैं, हमारा इस पुरानी दुनिया से लंगर उठा हुआ है। नैया उस पार जानी है।''

सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

''दिन प्रतिदिन तुम याद की यात्रा में पक्के होते जायेंगे, फिर तुमको कुछ भी याद नहीं आयेगा। सिर्फ घर और राजधानी याद आयेगी। मरेंगे ऐसे जैसे बैठे-बैठे हार्टफेल होते हैं, दुख की बात नहीं।'' सा.बाबा 14.9.04 रिवा.

''भक्ति मार्ग की तीर्थ यात्रा का अर्थ ही है नीचे उतरना, तमोप्रधान बनना... तुम्हारी यह रुहानी यात्रा है पावन बनकर पतित दुनिया से पावन दुनिया में जाने के लिए।'' सा.बाबा 23.10.04 रिवा.

''उन गीता सुनाने वालों से कोई को फीलिंग आती है क्या, जरा भी नहीं समझते... फर्क तो है ना। उनकी याद की यात्रा तो है ही नहीं, वे तो नीचे ही गिरते रहते हैं। ... गीता में आटे मिसल कोई अक्षर राइट हैं।'' सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

''अगर देही-अभिमानी होकर तुम पैदल करेंगे तो कभी थकेंगे नहीं क्योंकि देह का भान नहीं आयेगा... आगे मनुष्य तीर्थों पर पैदल जाते थे तो बहुत श्रृद्धा से जाते थे। थकते नहीं थे। बाबा को याद करने से मदद तो मिलेगी ना... गरीब लोग तीर्थों पर पैदल जाते हैं। भावना का भाड़ा जितना गरीबों को मिलता है, उतना साहूकारों को नहीं मिलता है।'' सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

''यात्रा पर जाते हैं तो जो सच्चे भगत होंगे, वे तो कहेंगे क्या हर्जा है, भगवान के पास जाते हैं... समझते हैं अच्छे काम में हमेशा विघ्न पड़ते ही हैं। ... बाप कहते हैं - बच्चे तुम्हारी भी यह यात्रा है, यह निश्चय रहे।'' सा.बाबा 10.6.05 रिवा.

Q. याद की यात्रा है तो इसमें क्या-क्या याद करना है ?

भक्ति और ज्ञान के सम्बन्ध का राज़

भक्ति और ज्ञान में क्या सम्बन्ध है, वह भी परमात्मा ने अभी बताया है कि यह एक चक्र है और इसमें जो परमात्मा से ज्ञान लेकर देवता बनते हैं, वे ही भक्ति मार्ग में भक्त बनकर परमात्मा शिव अव्यभिचारी भक्ति और फिर व्यभिचारी भक्ति अर्थात् अनेकों की भक्ति करने लगते हैं, अपने ही जड चित्रों की पूजा करते हैं। फिर कल्पान्त में जिन्होंने बहुत भक्ति की है, उनको ही भगवान आकर भक्ति का फल ज्ञान देते हैं। वे पुराने भक्त ही पहले ज्ञान में आते हैं। जिन्होंने बहुत भक्ति की होगी, वे ही ज्ञान में भी तीखे जायेंगे और जो ज्ञान में तीखे जायेंगे, वे ही सतयुग में पहले देवी-देवता बनेंगे और द्वापर से भक्ति भी पहले वे ही आरम्भ करेंगे। इस प्रकार यह ज्ञान, भक्ति और फिर ज्ञान का अनादि-अविनाशी चक्र है।

ज्ञान और भक्ति में दिन और रात का अन्तर क्योंकि ज्ञान चढ़ती कला का आधार है और भक्ति उतरती कला की ही निमित्त बनती है। भले भक्ति से कोई उतरती कला नहीं होती है, भक्ति से तो उतरती कला की गति मन्द होती है परन्तु भक्ति मार्ग में भक्ति करते भी आत्माओं की कलायें उतरती ही जाती हैं। ज्ञान से ही आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है और

स्वर्ग की स्थापना होती है अर्थात् ज्ञान से ही हम भक्त से ब्राह्मण और ब्राह्मण से देवी-देवता बनते हैं। ज्ञान का फल स्वर्ग है और भक्ति नर्क में होती है, फिर नर्क के बाद संगम पर ज्ञान मिलता है।

''जो इस धर्म के नहीं हैं तो फिर मानते भी नहीं हैं। बाप ने समझाया है सारा मदार भक्ति पर है। जिन्होंने बहुत भक्ति की है तो भक्ति का फल भी उन्होंको मिलना चाहिए। उन्होंको ही बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। ... एक गीता ही है भारत का धर्म-शास्त्र। ... शिवबाबा आते ही हैं भारत में।'' सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

''ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का राज़ बाप ने अभी तुम बच्चों को समझाया है। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात और उसके बाद है वैराग्य। ... अभी तुम बच्चे समझ गये हो कि बाप जो ज्ञान देते हैं तो उससे दिन हो जाता है... ब्रह्मा का दिन और रात सो ब्राह्मणों का दिन और रात।'' सा.बाबा 7.10.04 रिवा.

''रावण जब से आता है, तब से भक्ति भी उसके साथ आती है और जब बाप आते हैं तो उनके साथ ज्ञान आता है। ... यह सारी दुनिया परमात्मा की है, जो आधा कल्प पवित्र और आधा कल्प अपवित्र रहती है। क्रियेटर तो बाप को कहा जाता है ना... बाप बीजरूप है।'' सा.बाबा 11.11.04 रिवा.

''इस समय की सबसे वण्डरफुल बात यही देख रहे हो, जो प्रैक्टिकल भी मना रहे हो और निमित्त उस यादगार को भी मना रहे हो। चेतन्य भी हो और चित्र भी साथ-साथ हैं।'' अ.बापदादा 7.03.86

''फिर भी भक्त भावना वाले होते हैं और सदा ही सच्चे भक्तों की यह निशानी होगी कि जो संकल्प करेंगे, उसमें दृढ़ रहेंगे। इसलिए भक्तों से भी बाप का स्नेह है। फिर भी आपके यादगार की द्वापर से परम्परा तो चला रहे हैं।'' अ.बापदादा 7.03.86

''भक्ति और ज्ञान का राज़ अभी तुम बच्चों ने समझा है। सीढ़ी और झाड़ में यह सब समझानी है... फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी। गति कहा जाता है शान्तिधाम को और सद्गति होती है यहाँ। सद्गति के अगेन्स्ट होती है दुर्गति... अभी तुम बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो।'' सा.बाबा 27.7.04 रिवा.

''यह सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज सुनायेंगे तो जितना पुराना भक्त होगा, वह बहुत खुश होगा। थोड़ी भक्ति की होगी, वह कम खुश होगा। यह भी हिसाब है समझने का।'' सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

नौधा भक्ति और उनके इष्ट के साक्षात्कार के सम्बन्ध का राज

नौधा भक्ति का राज भी बाबा ने बताया है कि कई भक्त ऐसी तीखी भक्ति करते हैं, जो अपने इष्ट का साक्षात्कार न हो तो अपना गला भी काटने को तैयार हो जाते हैं। उस समय वे जिस इष्ट की भक्ति करते हैं, उसका ही ड्रामानुसार साक्षात्कार हो जाता है। जैसे गणेश की भक्ति करने वाले को सूंढ़ वाले गणेश का, हनूमान की भक्ति करने वाले को पूँछ वाले हनूमान का, जबकि ऐसा कोई देवता होता नहीं है परन्तु उनकी श्रृद्धा स्थिर रखने और उनकी भक्ति के पुरुषार्थ का फल देने के लिए वैसा साक्षात्कार हो जाता है। नवधा भक्ति वाले अपनी देह की सुध-बुध को भी भूल जाते हैं। देह की सुधबुघ ऐसी भुला देते हैं, जो उनके शरीर में कांटा भी चुभाओ तो भी उनको पता नहीं पड़ता। ऐसा अपने इष्ट के प्यार में खो जाते हैं। ऐसे भक्तों को नवधा भक्त कहा जाता है।

अव्यभिचारी भक्ति और व्यभिचारी भक्ति का राज

भक्ति मार्ग कब से आरम्भ होता है और कैसे भक्ति भी पहले अव्यभिचारी अर्थात् एक परमात्मा शिव की होती है, जो समयान्तर में कैसे व्यभिचारी बन जाती है और फिर कैसे परमात्मा भक्ति का फल ज्ञान देते हैं, ये सब राज़ परमात्मा ने अभी बताये हैं। अव्यभिचारी भक्ति में एक शिव बाबा की ही प्रतिमा बनाकर पूजा करते हैं, व्यभिचारी भक्ति में अनेकों देवी-देवताओं की प्रतिमायें बनाकर पूजा करते हैं और अन्त में पेड-पौधों की, देहधारी मनुष्यों की आदि की भक्ति करने लगते हैं। देवताओं के चित्र भी अनेक प्रकार के बना देते हैं।

''भक्ति करते भगवान के प्रेम में आंसू भी आ जाते हैं परन्तु भगवान को जानते नहीं हैं। जिसके प्रेम में आंसू आते हैं, उनको जानना तो चाहिए ना। ... बहुत भक्ति करते हैं तो साक्षात्कार हो जाता है। बस वही उनके लिए खुशी की बात है।''

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

''बाप कहते हैं - तुम्हारी अव्यभिचारी याद चाहिए। जैसे भक्ति भी पहले एक शिव की पूजा अव्यभिचारी होती है, फिर व्यभिचारी होने से अनेकों की करने लगते हैं। ... घड़ी-घड़ी कहता हूँ - बच्चे थको मत। शिवबाबा को याद करो, वह है बिन्दी, हम आत्मा भी बिन्दी हैं।'' सा.बाबा 17.5.05 रिवा.

''पहले-पहले जिन्होंने अव्यभिचारी भक्ति शुरू की है, वे ही आकर ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ करेंगे... अविनाशी ज्ञान रतनों का सेल्समैन बनना है।'' सा.बाबा 30.7.05 रिवा.

ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का राज

सतयुग-त्रेता को दिन अर्थात् ज्ञान मार्ग कहा जाता है क्योंकि परमात्मा ने ज्ञान से ये सतयुगी दैवी प्रालब्ध बनाई है, जहाँ मनुष्य स्वभाविक देही-अभिमानी रहते हैं और द्वापर-कलियुग रात अर्थात् अज्ञान अर्थात् देहाभिमान के वशीभूत भक्ति मार्ग कहा जाता है। संगमयुग पर पुनः परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं, जिसको धारण करने से भक्ति का वैराग्य हो जाता है और आत्मायें वानप्रस्थ में अर्थात् वाणी से परे परमधाम चली जाती है और नये कल्प का शुभारम्भ होता है। यह ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का चक्र सतत चलता रहता है।

''भक्ति के संस्कार वाले जाकर मनुष्यों के पास जन्म लेंगे, ज्ञान के संस्कार वाले नई दुनिया में जाकर जन्म लेंगे। यह भी जरूर है तुम हो ब्राह्मण तो तुम ब्राह्मण कुल ही जन्म लेंगे। न शूद्र कुल में और न देवताओं के कुल में। यह ज्ञान बुद्धि में चक्कर लगाना चाहिए। साथ-साथ बाबा को भी याद करना है।'' सा.बाबा 10.10.68

ज्ञान परमात्मा संगमयुग पर देते हैं, उस ज्ञान के प्रकाश और परमात्मा की याद में हम जो कर्म करते हैं, उसके फल स्वरूप सृष्टि स्वर्ग बनती है। ज्ञान-प्रकाश में किये गये उन कर्मों का फल दो युग अर्थात् सतयुग-त्रेतायुग तक चलता है परन्तु समय की गति के साथ वह कम होता जाता है परन्तु उस समय तक ज्ञान-प्रकाश होने के कारण आत्मा से कोई विकर्म नहीं होते, इसलिए आत्मा को कोई दुख-अशान्ति की अनुभूति नहीं होती है। द्वापर से ज्ञान का प्रकाश खत्म होने के कारण अज्ञानता का अन्धकार प्रवेश करता है और देहाभिमान के प्रभावी होने के कारण आत्मा में विकारों की प्रवेशता होती है, जिससे विकर्म और विकर्मों के फलस्वरूप दुख-अशान्ति का आरम्भ होता और सृष्टि नर्क बन जाती है, जो नर्क से रौरव नर्क बनती है। विकारों के कारण आत्मा को दुख-अशान्ति की अनुभूति होती है, जिससे मुक्त होने के लिए आत्मायें भक्ति करना आरम्भ करती हैं। भक्ति से आत्मिक शक्ति के पतन की गति मन्द होती है परन्तु भक्ति से दुनिया न स्वर्ग बनती और न ही नर्क बनती है। नर्क तो अज्ञानता वश देहाभिमान और देहाभिमान के कारण विकारों की प्रवेशता से बनता है। भक्ति में भी विकार आ जाते हैं।

संगम पर परमात्मा से ज्ञान मिलने के कारण भक्ति सहित सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य होता है। ज्ञान मार्ग में प्रभु-प्यार का यथार्थ अनुभव होता है और भक्ति में प्रभु-प्यार की स्मृति से अल्प-काल का सुख अनुभव होता है। संगमयुग पर परमात्म प्राप्तियों के अनुभव के कारण प्रभु-प्यार से चढ़ती कला होती और भक्ति में संगमयुग के प्रभु-प्यार के अनुभव की स्मृति के कारण उतरती कला की गति मन्द होती है। भक्ति से न चढ़ती कला होती है और न ही उतरती कला होती है।

''अभी तुमको ज्ञान मिला है तब समझते हो भक्ति किसको कहा जाता है, ज्ञान किसको कहा जाता है। ज्ञान देने वाला ज्ञान-सागर बाप अभी मिला है।'' सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''भक्ति क्या चीज है, यह भी किसको पता नहीं है। कहते हैं ज्ञान-भक्ति-वैराग्य। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात, फिर भक्ति रात से वैराग्य होता तो दिन में चले जाते हो।'' सा.बाबा 28.12.04 रिवा.

''ज्ञान, भक्ति फिर है वैराग्य। एक है हद का वैराग्य, दूसरा है बेहद का वैराग्य। सन्यासी घरबार छोड़कर जंगल में रहते हैं। यहाँ तो वह बात नहीं है। तुम बुद्धि से सारी दुनिया का सन्यास करते हो।'' सा.बाबा 8.2.05 रिवा.

''यह भी तुम जानते हो कि इस ज्ञान के बाद है विनाश... विनाश का टाइम ही यह है। इसलिए तुमको जो ज्ञान मिलता है, वह फिर खलास हो जाता है। ... बाप का पार्ट ही है संगमयुग पर आने का। भक्ति आधा कल्प चलती है, ज्ञान नहीं चलता है। ज्ञान का वर्सा आधा कल्प के लिए मिलता है, ज्ञान तो एक ही बार सिर्फ संगमयुग पर मिलता है।'' सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

''हरेक को एक-दो से आगे जाना है, दूसरे को आगे जाता देख हर्षित ना होना है। सिर्फ दूसरे को देखते रहेंगे तो भक्त हो जायेंगे। भक्त लोग सिर्फ देख-देख उनके गुण गाते खुश होते हैं। तुमको भक्त नहीं बनना है। तुमको तो ज्ञान स्वरूप और योगयुक्त, ज्ञानी तू आत्मा और योगी तू आत्मा बनना है।'' अ.बापदादा 11.6.71

ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग के रीति-रिवाज़ों का राज

ज्ञान को दिन और भक्ति को रात कहा जाता है, तो जैसे दिन और रात में अन्तर होता है, वैसे ही भक्ति और ज्ञान के रीति-रस्मों में भी अन्तर है। संगमयुग है अमृतवेला का समय, जब परमात्मा ज्ञान और भक्ति का ज्ञान देकर रात को दिन बनाते हैं। अभी हम भक्ति और ज्ञान दोनों की रस्म-रिवाज़ों को जानते हैं और भक्ति की रस्म-रिवाज़ों को छोड़कर ज्ञान की रस्म-रिवाज़ों को धारण करते हैं।

विचारणीय बात ये है कि भक्ति के सभी रीति-रस्मों का बीज भी संगमयुग पर ही पड़ता है, जो रीति-रस्में भक्ति मार्ग में यादगार रूप में मनाई जाती है। भक्ति की सभी रीति-रस्में किसी न किसी रूप में संगमयुग पर या सतयुग में अवश्य चलती हैं।

''सतयुग में शरीर की क्या वेल्यू होगी। आत्मा चली गई, शरीर चण्डाल के हाथ दे दिया, वह रस्म-रिवाज के अनुसार जला देंगे... यहाँ तो कितना करते हैं। ब्राह्मण खिलाते हैं, यह करते हैं। वहाँ यह कुछ होता नहीं।'' सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

Q. भक्ति मार्ग में मरने के बाद शरीर की जो रस्म-रिवाज़, क्रिया-कर्म, संस्कार आदि करते हैं, वह किसको फॉलो करते हैं?

ये संगमयुग ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भक्ति मार्ग में जो क्रिया-कर्म, संस्कार आदि करते हैं, वह इस संगमयुग पर ब्राह्मणों को ही फॉलो करते हैं। जलाना, भोग लगाना, ब्राह्मणों को खिलाना आदि सब संगम से ही चलता है।

''इस ज्ञान मार्ग में भी चलते-चलते अगर विकार में गिर पड़े तो ज्ञान बह जायेगा... ज्ञान कितना ऊंच है, आगे तो कुछ नहीं जानते थे।'' सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

''कोई भी मनुष्य को याद न करो। भक्ति मार्ग की जो रस्म है, वह ज्ञान मार्ग में हो नहीं सकती... अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है... साक्षात्कार न ज्ञान है और न योग है... खाओ-पियो बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी।'' सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

''आज बाबा के पास संदेशी भोग लेकर आई तो बाबा ने कहा कि बच्चे तो यहाँ पर बैठे ही प्रिन्स बन गये हैं, बाबा की बेगरी टोली भूल गई है। वैभव तो वहाँ मिलने हैं, संगम पर तो बेगरी टोली याद पड़ती है, वह ही बाप को प्यारी लगती है। बाप के लिए सुदामा के चावलों की वैल्यू है ना।'' अ.बापदादा 27.8.69

''साक्षात्कार आदि कैसे होते हैं, इसमें संशयबुद्धि नहीं होना है। यह रस्म-रिवाज है। शिवबाबा का भण्डारा है तो उनको याद कर भोग लगाना चाहिए। योग में रहना तो अच्छा ही है, बाबा की याद रहेगी।'' सा.बाबा 9.12.04 रिवा.

''तीन प्रकार से शादी की रस्में हैं - एक ब्राह्मणों के द्वारा, दूसरा कोर्ट के द्वारा तीसरी मन्दिरों और गुरुओं के द्वारा। इन तीनों रस्मों का किस न किस रूप में यहाँ बीज पड़ता है। ... तीनों ही रस्में इस संगम पर अलौकिक रूप से होती हैं।'' अ.बापदादा 14.5.70

''संगमयुग से ही यह सभी रस्म-रिवाज आरम्भ होती है क्योंकि संगमयुग है सर्व बातों का बीज डालने का समय... बीजरूप द्वारा सर्व बातों का बीज पड़ता है।'' अ.बापदादा 14.5.70

''मधुवन निवासी ही मधुवन के महत्व को बढ़ा सकते हैं... सहनशीलता का बल अपने में धारण करना, क्यों की क्यू को खत्म करना और आसुरी संस्कारों पर पहरा देना है। इस तीन प्रतिज्ञाओं का बेलपत्र चढ़ाना है... पहले बच्चे ही ज्ञान सहित करते हैं, फिर भक्त उसको कापी करते हैं।'' अ.बापदादा 5.3.70

''शिव भगवानुवाच, वही पतित-पावन, ज्ञान का सागर है। तुम बच्चे जानते हो शिव बाबा इसमें प्रवेश होकर हमको अपना और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़, भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग के रस्म-रिवाज का राज़ और सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, अनेक धर्मों की वृद्धि कैसे होती है आदि आदि यह सभी डिटेल में समझाते हैं।'' सा.बाबा 17.11.72 रिवा.

ज्ञान मार्ग के दो पक्ष है - एक है संगम पर परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं, इसलिए यथार्थ ज्ञान मार्ग संगमयुग ही है और दूसरा पक्ष सतयुग-त्रेता, जो ज्ञान की प्रालब्ध है, उसको भी ज्ञान मार्ग कहा जाता है।

वैसे तो बाबा ने कहा है कि सतयुग में मां-बाप को एक बच्चा और एक बच्ची होती है परन्तु हम समझते हैं कि यह प्रथा संगम अर्थात सतयुग के प्रथम जन्म पर नहीं होगी। सतयुग के प्रथम जन्म, जो प्राय: संगमयुग का ही समय होगा, उस में प्राय: एक माँ-बाप को एक ही सन्तान होगी, जिसको जन्म देने के बाद वे मात-पिता परमधाम चले जायेंगे। उसके बाद दो सन्तानों अर्थात् भाई और बहन की प्रथा आरम्भ होगी।

संगमयुग की रीति-रिवाज़, सतयुग की रीति-रिवाज़ और कलियुग की रीति-रिवाज का राज

परमात्मा संगमयुग पर जो कर्तव्य करते हैं या रीति-रिवाज चलाते हैं, उसकी यादगार रूप में ही सतयुग और कलयुग में रीति-रिवाज़ चलते हैं। संगमयुग है सारे कल्प के रीति-रिवाज़ों का बीज बोने का समय। सतयुग-त्रेतायुग के रीति-रिवाज़, द्वापर-कलियुग के रीति-रिवाज और संगमयुग के रीति-रिवाज अलग-अलग हैं।

''अभी नाटक पूरा होता है, सब वापस घर जायेंगे। बाबा आये हैं सबको ले जाने के लिए। जैसे वर, वधू को लेने के लिए आते हैं... तुम सब सीतायें हो एक राम की, राम ही तुमको रावण की जेल से छुड़ाकर ले जाते हैं।'' सा.बाबा 13.05.05 रिवा.

''वहाँ की रस्म-रिवाज़ ऐसी है जो कोई तकलीफ अथवा थकावट की बात नहीं रहती... वहाँ तो गर्भ महल में आराम से रहते हैं। बच्चों ने साक्षात्कार किया है। कृष्ण का जन्म कैसे होता है, कोई गंद की बात नहीं।'' सा.बाबा 14.5.05 रिवा.

''क्या अपने अविनाशी ईश्वरीय मस्ती का स्वरुप अनुभव करते हो ? जैसे होली की मस्ती होने कारण अपने सम्बन्ध अर्थात् बड़े-छोटे के भान को भूल जाते हैं... मन के अन्दर जो भी दुश्मनी के संस्कार एक दो के प्रति होते हैं वह अल्पकाल के लिए सभी भूल जाते हैं क्योंकि मंगल मिलन मनाते हैं... इस रीति-रस्म के निमित्त आप ब्राह्मण हो।'' अ.बापदादा 27.2.72

''सर्व आत्माओं में सर्व रीति-रस्म के संस्कार तो अभी से ही भरने हैं ना, अभी भरने का समय है, फिर है प्रैक्टिकल करने का समय... अगर एक नये पैसे की भी वफादारी, ईमानदारी नहीं तो उसको सम्पूर्ण वफादार-ईमानदार नहीं कहेंगे।''
अ.बापदादा 11.9.71

''जितना ही यहाँ गायन होगा तो वह उतना ही वहाँ पूजनीय होगा। जैसे लौकिक रीति में भी बच्चा बाप की पूजा नहीं करता, लेकिन बाप को पूजनीय तो कहता है ना! इसी प्रकार जो सतयुग में प्रजा होगी वह पूजा तो नहीं करेगी लेकिन पूजनीय तो कहेगी अर्थात् रिगार्ड तो देगी।'' अ.बापदादा 24.6.74

''सतयुग के देवी-देवतायें हैं विष्णु सम्प्रदाय के। वहाँ चतुर्भुज की प्रतिमा रहती है, जिससे मालूम पड़ता है कि यह विष्णु सम्प्रदाय हैं।'' सा.बाबा 20.6.05 रिवा.

भक्ति मार्ग में देवताओं को पीठ न दिखाने का राज

भक्ति में मन्दिरों में जाते तो दर्शन करके कभी देवताओं की मूर्तियों को पीठ नहीं दिखाते हैं। महाभारत में भी वर्णन है कि जब पाण्डवों ने महाप्रयाण किया तो उनको आदेश था कि कोई पीछे मुड़कर न देखे परन्तु एक युद्धिष्ठिर को छोड़कर सभी ने

किसी न किसी कारण से पीछे मुड़कर देखा, जिसके फलस्वरूप वे वहीं पर ठहर गये। इसका यथार्थ रहस्य क्या है, यह भक्ति मार्ग में कोई नहीं जानता है, जो बाबा ने बताया है कि जो इस विश्व-नाटक की किसी भी बीती घटना को याद करता है अर्थात् पीछे मुड़कर देखता है, वह वहीं रुक जाता है। बाबा भक्ति मार्ग की उस कहावत को भी याद दिलाते रहते हैं, जिसमें किसी कवि ने कहा है - बीती को चितवो नहीं, आगे की धरो न आश। सदा वर्तमान में परमात्मा को देखो, अपनी आत्मा को देखो तो सदा ही श्रेष्ठ कर्म होगा और भविष्य सदा ही उज्ज्वल होगा।

भक्ति के विभिन्न कर्म-काण्डों का राज

भक्ति में पूजा-अर्चना, तीर्थ-व्रत, भजन-कीर्तन, आदि अनेक प्रकार कर्म-काण्ड हैं, जिनको आत्मा चढ़ती कला के उद्देश्य से ही करती है परन्तु यथार्थता का ज्ञान न होने के कारण उन सबको करते भी आत्मा की कलायें नीचे ही गिरती जातीं हैं। भक्ति मार्ग में आत्मा भक्ति करते भी निरन्तर पतित ही बनती जाती है, भल वे सभी कर्म-काण्ड भक्त पावन बनने की भावना से करते हैं। विभिन्न धर्मों में भक्ति के कर्म-काण्ड, विधि-विधान भी अपने-अपने हैं, जिनके अनुसार हर धर्म वाले भक्ति करते हैं।
''तुम पुरानी दुनिया को लात मार, नई दुनिया में जाते हो। तो तुम्हारी नर्क की तरफ है लात और स्वर्ग की तरफ है मुँह। शमशान में भी जब अन्दर घुसते हैं तो मुर्दे का मुँह उस तरफ कर देते हैं, लात पिछाड़ी तरफ कर लेते हैं।''

सा.बाबा 31.5.05 रिवा.

भक्ति में बलि की प्रथा और ज्ञान मार्ग में बलि का राज

बाबा अभी जो अपने देहाभिमान को बलि चढ़ाने की बात कहते हैं, भक्तों ने उसे स्थूल में लेकर निरीह जीवों की बलि चढ़ाने के रूप में ले लिया है। कई अन्धश्रृद्धावान भक्त और झूठे भक्त अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए जानवरों की बलि देवताओं के नाम पर चढ़ाते हैं और उसको महाप्रसाद का नाम देकर स्वयं उस मांस को खाते हैं और भोलेभाले मनुष्य उनके क्रिया-कलापों को समझ नहीं पाते हैं। इस तरह वे अपने और दूसरों के पापों को बढ़ाकर पापात्मा बनते जाते हैं। ऐसे भक्तों का विचार भी नहीं चलता कि जो दूसरों के कल्याण के लिए अवतरित होगा, वह दूसरों की हिंसा कैसे करेगा!

अभी बाबा कहते हैं तुम अपने तन-मन-धन से बाप पर बलि चढ़ो, बाप के बन जाओ तो बाप तुम्हारे ऊपर 21 जन्म बलिहार जायेगा, जिसके यादगार में भक्ति में कोई-कोई भक्त अपने जीवन को भी बलिहार कर देते हैं। काशी-कलवट इसी प्रथा का यादगार है।

''बाप समान बनो। जैसे ब्रह्मा बाप ने पहला-पहला कदम क्या उठाया? मैं और मेरापन का समर्पण समारोह मनाया माना किसी भी बात में मैं के बजाये सदा नेचुरल भाषा में भी बाप शब्द ही सुना। बाबा करा रहा है, बाबा कहता है... बलि चढ़ना अर्थात् महाबली बनना।'' अ.बापदादा 7.03.86

''त्याग और सेवा। सभी से बड़ा बलिदान कौन सा है और सभी से बड़ा त्याग कौन सा है? दूसरों के अवगुणों को त्याग करना है, सबसे बड़ा त्याग। ... एक सेकण्ड में किसको मरजीवा बना देना है सबसे बड़ा बलिदान (सेवा)।'' अ.बापदादा 16.6.69

''सच्ची सती बनना है। सती बनना अर्थात् पूरा ही बलि चढ़ना। स्थिति नष्टोमोहा चाहिए। नष्टोमोहा तब बनेंगी जब कि सच्ची स्नेही होगी।'' अ.बापदादा 15.9.69

''बलिहार जाना कोई मासी का घर नहीं है। बड़े-बड़े आदमी तो बलिहार जा न सकें। वे बलिहार जाने का अर्थ भी नहीं समझते हैं। ... मिलकियत आदि से भी ममत्व निकल जाये।'' सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

''साहस से सामना करने के लिए हिम्मत भी पहले से ही अपने में रखनी है। ... कुमारियों को शीतला के साथ काली भी बनना है। ... काली रूप होंगी तो कभी भी किस पर बलि नहीं चढ़ेंगी। बल्कि जिसके ऊपर आप सभी बलि चढ़ी हो, उन पर ही सभी को बलि चढ़ाना है।'' अ.बापदादा 28.5.70

''भक्ति मार्ग में कुर्बान जाते हैं, बलि चढ़ते हैं। यहाँ बलि चढ़ने की बात तो है नहीं। हम तो जीते जी मरते हैं गोया बलि चढ़ते हैं... जीते जी बलि चढ़ना, वारी जाना वास्तव में अभी की बात है... यहाँ जीवघात की बात नहीं।'' सा.बाबा 24.1.05 रिवा.

काशी कलवट का राज

भक्ति मार्ग में पापों से मुक्त होने के लिए काशी कलवट खाते थे अर्थात् अपने को बलिदान कर देते थे, जिसके लिए बाबा ने भी मुरलियों में भी कहा है कि इससे वे अपने पूर्व के पाप के खाते से तो मुक्त हो जाते हैं परन्तु फिर जन्म लेकर पाप तो करने ही लगते हैं क्योंकि यथार्थ ज्ञान न होने के कारण देहाभिमान तो मिट नहीं सकता। देहाभिमान से मुक्त होकर आत्माभिमानी बनने का ज्ञान तो अभी ही परमात्मा ही संगमयुग पर देते हैं और जो इस सत्य को जानकर परमात्मा पर बलिहार जाते हैं, वही सच्चा-सच्चा काशी कलवट है, जिससे आत्मा सर्व पापों से मुक्त होकर मुक्तिधाम घर वापस जाती है।

''जब कोई भी प्रतिज्ञा करनी होती है तो हाथ में जल उठाते हैं, सूर्य को भी जल चढ़ाते हैं तो अन्दर प्रतिज्ञा करते हैं। ... जो पूरे भक्त होते हैं वे सारा ही अपने को उनके आगे झुकाते हैं अर्थात् अपने को अर्पण कर देते हैं... जो जितना स्वयं न्योछावर बने हैं, वे उतना ही औरों को बनाते हैं। ... उसका यादगार है काशी कलवट खाने का।'' अ.बापदादा 5.3.70

''आगे जब काशी कलवट खाते थे तो बहुत प्रेम से खाते थे। बस, हम मुक्त हो जायेंगे, ऐसे समझते थे। अभी तुम बाप को याद करते-करते चले जाते हो शान्तिधाम। ... इस याद के बल से पाप कटते हैं।'' सा.बाबा 2.6.05 रिवा.

ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा और लकी ज्ञान सितारों का राज़ / 'घट में ही सूरज ... 9 लाख तारों' का राज़

दुनिया में भी आत्माओं की तुलना सितारों से करते हैं परन्तु वह कैसे सितारा है, इस सत्य का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है। आत्मा भी एक चमकता हुआ सितारा है, इसका सत्य ज्ञान परमात्मा ने ही अभी आकर दिया है कि आत्मा भी स्टार के समान चमकता हुआ सितारा है और जैसे आसमान में तारे ठहरे हुए हैं, ऐसे ही परमधाम में आत्मायें ठहरी हुई हैं। ज्ञान सूर्य परमात्मा, ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा बाबा और सभी आत्मायें सितारे हैं। 'घट में ही सूरज, घट में ही चन्दा और घट में ही 9 लाख तारों' का जो गायन है, कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के पुरुषोत्तम संगमयुग के लिए है क्योंकि सतयुग के आदि में जन्म लेने वाली लकी आत्मायें 9 लाख 16 हजार एक सौ आठ होती हैं, जो सबसे अधिक लकी आत्मायें कही जायेंगी। इस सबका ज्ञान पर-मात्मा ने दिया है। परन्तु शिवबाबा तो सतयुग में आते नहीं हैं इसलिए ज्ञान-सूर्य ब्रह्मा को ही कहेंगे। ब्रह्मा बाबा को साकार में ज्ञान-सूर्य भी कहेंगे तो ज्ञान-चन्द्रमा भी कहेंगे क्योंकि उस एक तन द्वारा ही शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों पार्ट बजाते हैं। दोनों ही मान्यतायें अपनी-अपनी जगह हैं। वास्तव में ये गायन संगमयुग का ही है क्योंकि अन्त समय ये 9,16,108 आत्मायें सारे विश्व में प्रत्यक्ष होंगी, वे सारे जगत की सेवा करेंगी, जिसके फलस्वरूप सारे जगत की आत्मायें उनके भाग्य की महिमा गायेंगे और वे भी अपने भाग्य को देख हर्षित होंगे।

''तुम हो धरती के सितारे और वे हैं आसमान के सितारे। तुमको लकी सितारा कहा जाता है ना... कोई नॉलेज के संस्कार ले जाते, कोई प्योरिटी के संस्कार ले जाते हैं। आना तो फिर भी यहाँ ही है।'' सा.बाबा 25.9.04 रिवा.

''धरती के सितारे तुम बच्चे हो। आसमान के सितारे जड़ हैं, तुम चैतन्य हो... पार्ट बजाते-बजाते तुम्हारी चमक डल हो जाती है। ... अब फिर बाप द्वारा ताकत भरते हो। तुम अपनी बैटरी चार्ज कर रहे हो... जिसकी जितनी बैटरी चार्ज हुई होगी, उस अनुसार पद पायेंगे।'' सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

''उम्मीदों के सितारे और सफलता के सितारे दोनों का प्रभाव विश्व की आत्माओं और प्रकृति पर अपना-अपना पड़ रहा है... यह है विचित्र तारामण्डल। आप रुहानी सितारों का प्रभाव विश्व पर पड़ता है तो विश्व के स्थूल सितारों का भी प्रभाव विश्व पर पड़ता है... जितना अप्राप्ति का अन्धकार बढ़ता जा रहा है और जितना बढ़ता जायेगा, उतना ही आप रुहानी सितारों का विशेष प्रभाव अनुभव करते जायेंगे।'' अ.बापदादा 9.04.86

‘‘हमारे तीर्थ न्यारे हैं... यह गीत खुशी में लाने में बहुत मदद करेंगे। यह बहुत काम की चीज है... तुम बच्चे जानते हो बरोबर हम इस धरती के लकी स्टार्स हैं... तुम हो रुहानी पण्डे, तुम्हारा नाम ही है पाण्डव सेना।’’ सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

ग्रहण का राज

भक्ति मार्ग में सूर्य-चांद पर ग्रहण लगता है तो मनुष्य दान-पुण्य करते हैं कि उनका ग्रहण उतर जाये परन्तु यह उस ग्रहण की बात नहीं है परन्तु आत्माओं पर जो ग्रहण लगता है, दशायें बैठती है, वे कैसे स्थूल-सूक्ष्म दान से उतरती हैं, उसका राज भी परमात्मा ने बताया है। योग का दान, ज्ञान का दान आदि से आत्मा पर कोई खराब दशा आती है या ग्रहण लगता है, वह उतर जाता है। यह ग्रहण एक परमात्मा को छोड़कर सभी आत्माओं पर लगता है।

‘‘सूर्य ग्रहण पर भी लाखों लोग स्नान करने जाते हैं, क्या वह मर गया, जो तुम स्नान करने जाते हो? यह सभी है अन्ध श्रृद्धा। सूर्य को क्या होता है। वास्तव में यह तो धरती की छाया पड़ती है। तुम स्नान करो न करो, वह आपेही मिट जायेगा।’’

सा.बाबा 24.11.72 रिवा.

‘‘गायन है - दे दान तो छूटे ग्रहण। नम्बरवन दान देहाभिमान का दान देना है। इस समय तुम आत्माभिमानी और परमात्माभिमानी बनते हो। यह अमूल्य जीवन है।’’ सा.बाबा 14.3.71 रिवा.

आत्मा के घर से आने और घर वापस जाने का राज़ / घर कब और कैसे जायेंगे?

आत्मा जब परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने आती है तो पूर्ण पावन होती है और जब एक कल्प का पार्ट पूरा करके वापस जाती है तब भी पावन बनकर ही जाती है। ये आने और जाने का चक्र हर आत्मा को लगाना ही पड़ता है। आत्माओं का आना तो सतयुग की आदि से आरम्भ होकर कलियुग के अन्त तक चलता ही रहता है परन्तु जाने का समय कलियुग का अन्त और सतयुग की आदि का संगमयुग ही है। अन्त में थोड़े समय ही सर्व आत्मायें वापस घर चली जाती हैं। संगमयुग में भी अन्त के समय जब शिवबाबा आत्माओं को वापस जाने का रास्ता बताते हैं और अपना स्थापना का कार्य पूरा करके वापस जाते हैं, तब ही सभी आत्मायें उनके पीछे वापस घर जाती हैं। उससे पहले कोई भी आत्मा वापस नहीं जा सकती।

कैसे नम्बरवार भिन्न-भिन्न धर्मों की आत्मायें ऊपर से आती हैं और कैसे नम्बरवार वापस जाती हैं, यह भी बाबा ने बताया है। जैसे नम्बरवार आत्मायें ऊपर से आती हैं, ऐसे ही नम्बरवार ऊपर जाती भी हैं।

Q. ऊपर से नीचे आत्माओं कौन लाता है या कैसे आत्मा परमधाम से नीचे आती है?

A. वास्तव में आत्माओं का पार्ट और ये पंच तत्व ही आत्मा को ऊपर से नीचे आकर्षण करके नीचे ले आते हैं। जब पार्ट और हिसाब-किताब के अनुसार यहाँ गर्भ में पंच तत्वों का पुतला तैयार हो जाता है, तो उसके आकर्षण में, अन्य आत्माओं के संकल्प और उस आत्माओं का पार्ट उनको ऊपर से नीचे खींचता है।

‘‘यह भी जान गये हो कि कैसे ऊपर से आत्मायें आती हैं। पहले-पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म की थोड़ी सी आत्मायें रहती हैं। फिर और आत्मायें आती रहती हैं। ... तुमको घर जरूर लौटना है। ... बाप की श्रीमत पर हम पावन बनते हैं।’’

सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

‘‘शिव बाबा कहते हैं मैं नाम-रुप से न्यारा हूँ। तुम को भी नाम रुप से न्यारा बनना है। शरीर का भान छोड़ नंगे जाना है।’’

सा.बाबा 27.12.69 रिवा.

सतयुग-त्रेता की राजाई स्थापन होने और परिवर्तन होने का राज

शिवबाबा आकर ज्ञान-योग बल की शिक्षा देकर सतयुग की राजाई आत्माओं के सहयोग से स्थापन करते हैं। जो आत्मायें इस राजाई स्थापन करने में तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा सहयोगी बनती हैं, वे ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार उस

राजाई में पद पाती हैं। जो आत्मायें यहाँ अपनी कर्मेन्द्रिया पर राज्य करने में समर्थ होती हैं, वे ही उस राजाई को स्थापन करने और वहाँ राजाई करने में सक्षम होती हैं।

सतयुग में राजगद्दी लक्ष्मी-नारायण के नाम से चलती है और त्रेता की राजगद्दी राम-सीता के नाम से चलती है। राजाई स्थापन करने में जो आत्मायें अपनी इन्द्रियों पर पूरा शासन करने में फेल हो जाती हैं, वे त्रेतायुग में चली जाती हैं और जाकर राम-सीता बनती हैं। परन्तु गद्दी का नाम लक्ष्मी-नारायण से राम-सीता के रूप में कैसे परिवर्तन होता है - यह विचारणीय बात है। गद्दी का नाम परिवर्तन करने में सतयुग के अन्त और त्रेता के आदि में जो राजा बनता होगा, उसको ड्रामानुसार परिवर्तन करने का संकल्प आता होगा और वह नाम परिवर्तन करके जो राजगद्दी लक्ष्मी-नारायण के नाम से चलती आ रही, उसका नाम राम-सीता रखता होगा।

''अभी नई दुनिया की स्थापना हो रही है, फिर पुरानी का विनाश होना है। तुम हो नई दुनिया स्वर्ग बनाने वाले। ... तुम कितने बड़े अच्छे कारीगर हो, जो याद की यात्रा से नई दुनिया स्वर्ग बनाते हो। ... तुम अपनी राजधानी स्थापन करने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो।'' सा.बाबा 23.10.04 रिवा.

Q. अभी जो इन्द्रीयजीत बनेंगे अर्थात् जिनका यहाँ अपनी कर्मेन्दियों पर शासन होगा, वे ही वहाँ राजाबनेंगे? इस प्रक्रिया का क्या सम्बन्ध है?

A. जो यहाँ इन्द्रियजीत बनते हैं, वे ही दूसरी आत्माओं की सेवा में सफल होते हैं क्योंकि वे दूसरी आत्माओं को भी देह से परे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित कर यथार्थ आत्मिक सुख का अनुभव कराकर, उनके जीवन को परिवर्तन करने में सफल होते हैं, इसलिए वे आत्मायें ही उनकी प्रजा, सहयोगी-साथी बनती हैं। इसीलिए बाबा कहते हैं - जो यहाँ प्रजा बनायेंगे, वे ही वहाँ राजा बनेंगे। इन्द्रीयों के वशीभूत देहाभिमानी आत्मा कभी सेवा में सफलता पा नहीं सकता।

दुनिया में जो राजा बनते हैं, वह स्थूल धन दान करने से बनते हैं। उनको अपनी राजाई की रक्षा या उसका विस्तार करने के लिए बाहुबल का प्रयोग करना होता है। सतयुग-त्रेता की राजाई परमात्मा स्थापन करते हैं और वह ईश्वरीय ज्ञान और योग की पढ़ाई से स्थापन होती है। राजाई में अनेक पद होते हैं, वह सब संगमयुग पर पढ़ाई और सेवा के आधार पर निश्चित होते हैं।

''स्वर्ग में देवी-देवताओं की राजधानी है। राजधानी में राजा-रानी, प्रजा, गरीब-साहूकार आदि सब कैसे बनें होंगे। अभी तुम जानते हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कैसे हो रही है... सारा मदार सर्विस पर है।'' सा.बाबा 13.10.04 रिवा.

''बाप आकर श्रीमत देते हैं। श्रीमत पर चलने से ही श्रेष्ठ देवता बनेंगे। अभी देवताओं की सारी राजधानी स्थापन हो रही है। तुम यहाँ बैठे अपना देवी-देवताओं का राज्य स्थापन करते हो।'' सा.बाबा 23.10.04 रिवा.

''बाप सब बच्चों को ज्ञान की रोशनी देते हैं, जिससे सबका ताला खुलता जाता है... मैं इसलिए थोड़ेही आया हूँ कि एक-एक की बुद्धि का ताला खोलूँ। फिर तो सबकी बुद्धि खुल जाये, सब महाराजा-महारानी बन जायें... सबका ताला खुल जाये तो प्रजा कहाँ से आयेगी। यह तो कायदा नहीं है। हरेक को अपना पुरुषार्थ करना है।'' सा.बाबा 8.7.05 रिवा.

सतयुग-त्रेता की राजाई का राज

सतयुग-त्रेता में कैसा जीवन होगा, कितनी राज-गद्दियां चलेंगी, वहाँ राजा बनने का क्या पुरुषार्थ है, ये सब राज़ भी अभी ही बाबा ने बताये हैं, जिसको जानकर हम उस राजाई में ऊंच पद पाने के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकते हैं। बाबा ने बताया है कि वहाँ शेर और गाय एक घाट जल पीते हैं अर्थात् जानवरों में इतना प्यार होता है। घी-दूध की नदियां बहती हैं अर्थात् हर वस्तु स्वास्थ्यकर होती है। प्रकृति दासी के समान सेवा करती है।

वहाँ कितने जन्म होंगे, कितनी समानान्तर राजगद्दियां चलेंगी, फिर उन गद्दियों पर कितने राजायें बैठेंगे, कैसे एक राजा, अपने उत्तराधिकारी को राज्य सौंपेगा। सतयुग से त्रेता अन्त तक कितने रॉयल फेमिली में आने वाले होंगे। इस सबके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है, वह सब बाबा ने समय-समय पर बताया है और उसके लिए इशारा दिया है।

बाबा ने ये भी बताया है कि सतयुग के आदि में लगभग नौ लाख 16 हजार एक सौ आठ जनसंख्या होगी, जो बढ़कर त्रेता के अन्त तक दो-ढाई करोड़ हो जायेगी।

''सतयुग के आदि की नौ लाख प्रजा आपके सामने दिखाई देती है। आदि की प्रजा की भी कुछ विशेषतायें होंगी ना। … गुण और कर्तव्य के आधार पर आत्माओं पर प्रभाव सदा काल के लिए पड़ेगा।'' अ.बापदादा 3.10.75

''त्रिमूर्ति का चित्र है मुख्य। त्रिमूर्ति का चित्र चला आता है। वहाँ भी तुम राज्य करते हो तो तख्त के पिछाड़ी विष्णु का चित्र रहता है। यह जैसे कोट आफ आर्म्स है।'' सा.बाबा 26.11.72 रिवा.

सतयुग-त्रेतायुग की राजाई के विधि-विधान का राज

सतयुग-त्रेतायुग की राजाई ज्ञान सागर परमात्मा ने स्थापन की है, इसलिए वहाँ सब कारोबार विधि-विधान से चलता है। राज-गद्दी पर राजा और रानी साथ-साथ बैठते हैं, राजाई के पीछे विष्णु चतुर्भुज का चित्र रहता है, जो इस बात का प्रतीक होता है कि इसमें राजा-रानी दोनों का समान महत्व है। सतयुग में भी राजाओं को शादी के समय दास-दासियां दहेज में मिलती हैं परन्तु वहाँ की दहेज प्रजा आज जैसी नहीं होती क्योंकि वह राजाई प्यार और श्रृद्धा-भावना की राजाई है। प्रकृति भी दासी के समान सुखदायी होती है। एक चक्रवर्ती राजा होता है और उसके साथ और भी राजायें होते हैं। चक्रवर्ती राजा की राजधानी दिल्ली या दिल्ली के आसपास के क्षेत्र में होती है परन्तु नाम दिल्ली नहीं होता है। उसको इन्द्रप्रस्त कहा जाता है।

वहाँ कोई कर अर्थात् टेक्स आदि नहीं लगता। प्रजा स्वेच्छा और श्रृद्धा-भावना से राजा को सर्व सहयोग करते हैं। प्रजा का परस्पर भी वस्तु-विनिमय से लेनदेन होता है परन्तु जितने का उतने का हिसाब नहीं होता है। एक दूसरे को उसकी आवश्य-कतानुसार देते और लेते हैं। पहले-पहले मुद्रा का कोई प्रचलन नहीं होगा क्योंकि वस्तु का मूल्य आंकने की आवश्यकता ही नहीं होगी तो मुद्रा किसलिए होगी। भले कहाँ कहाँ सोने के सिक्कों की बात बाबा ने कही है परन्तु वह किस सन्दर्भ में कही है, वह विचारणीय है।

''सतयुग में वजीर होता नहीं है क्योंकि राजा में पॉवर रहती है। वजीर आदि से राय लेने की दरकार नहीं रहती है। नहीं तो राय देने वाला बड़ा हो जाये… भारत की ही बात है… सिंगल ताज वाले डबल ताज वाले राजाओं को माथा टेकते हैं… भारत ही पैराडाइज़, बहिश्त था।'' सा.बाबा 14.6.05 रिवा.

Q. सतयुग में कितने राजा-रानी बनेंगे और त्रेता में कितने राजा-रानी बनेंगे ? सतयुग में एक गद्दी पर कितने राजा-रानी बैठेंगे और त्रेता में कितने राजा-रानी एक गद्दी पर बैठेंगे और कुल कितने राजा-रानी होंगे।

सतयुग के 8 जन्म और 8 गद्दियों का राज / 8 गद्दियों और अष्ट रत्नों का राज़

बाबा ने बताया है कि सतयुग में आत्मायें सतोप्रधान होने के कारण उनके शरीरों की औसत आयु 150 वर्ष होती है, इसलिए सतयुग में एक आत्मा आठ जन्म लेती है। बाबा ने आठ गद्दियों की भी बात कही है परन्तु ये आठ गद्दियां वर्टीकल अर्थात् एक के बाद एक होंगी या होरिजोन्टल अर्थात् समानान्तर होंगी, यह विचारणीय है। विवेक कहता है कि आठ जन्म और आठ गद्दियां का होना तो सम्भव नहीं है क्योंकि कोई आत्मा जन्म से लेकर मृत्यु तक राज्य नहीं कर सकती और अगर वह करती भी है तो उसके बच्चे का क्या होगा अर्थात् वह कितना समय राज्य करेगा, यह विचारणीय है। बाबा ने जो आठ गद्दियों की बात कही वे समानान्तर हो सकती हैं या सतयुग में एक के बाद एक कम से कम 20-21 गद्दियां चलेंगी और हर एक राजा औसतन 60 साल राज्य करेगा। सतयुग मुख्य चक्रवर्ती गद्दी पर बैठने वाले जो महाराजायें और महारानियां होंगी, उनमें से प्रथम आठ गद्दियां विशेष हो सकती हैं। ऐसे ही अष्ट रतन के विषय में भी ऐसे ही विचार करना अति आवश्यक है अर्थात् चक्रवर्ती गद्दी पर बैठने वाले प्रथम चार महाराजा और चार महारानियां मिलाकर अष्ट रतन हो सकते हैं। ऐसे ही त्रेतायुग की गद्दियों का हिसाब होगा और सतयुग की आठ गद्दियों से त्रेता की 12 गद्दियां कैसे होंगी, यह भी विचारणीय है।

Q. क्या श्रीकृष्ण का बाप राजा होगा और वह श्रीकृष्ण को राजाई देकर जायेगा या श्रीकृष्ण को सब मिलकर राजा बनायेंगे ?
A. यदि श्रीकृष्ण का बाप राजा होगा और राजाई देकर जायेगा तो स्वर्ग की स्थापना में कितना समय लगेगा क्योंकि अभी कोई राजाई नहीं है और विनाश होगा और विनाश के बाद राजाई स्थापन होगी और उनका बाप उनको राजाई देगा।
जब तक विनाश न हो, उथल-पुथल न हो तब तक सतयुगी राजाई, राजाई के महल आदि कैसे बन सकते हैं क्योंकि बाबा कहते सतयुग में पुरानी दुनिया का कुछ भी नहीं होगा।

विचारणीय तथ्य

सतयुग के आठ जन्म और अष्ट गद्दियों की बहुत ही रहस्यमय पहेली है। प्राय: बड़े से छोटे तक सभी के मुख से ये शब्द निकलते हैं कि सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की आठ गद्दियां चलेंगी और उसके बाद त्रेता के राम-सीता की 12 गद्दियां चलेंगी परन्तु ये समझ की और गणना की बात है कि जब वहाँ पर आठ जन्म होंगे तो क्या कोई राजा जन्म से लेकर अन्त तक राज्य करेगा और यदि कोई करे भी तो उसके बच्चे को कब राजगद्दी मिलेगी और वह कितने समय राज्य करेगा। इस प्रकार सतयुग में आठ जन्म और आठ ही गद्दियां कैसे हो सकती हैं।

राजा-रानी, दास-दासी और साहूकार प्रजा बनने का राज

सतयुग-त्रेतायुग की राजाई में राजा-रानी, दास-दासी, प्रजा में गरीब-साहूकार बनने के सारे संस्कार आत्मायें अभी संगमयुग पर ही भरती हैं। ड्रामानुसार उनके कर्म-संस्कारों, पुरुषार्थ से उनके भविष्य पद का साक्षात्कार होता है। न चाहते हुए भी उनसे ऐसे कर्म होते हैं, जो उनके भविष्य पद का निर्णय करते हैं। राजा बनने वालों का अपनी कर्मेन्द्रियों पर पूरा शासन होता है, जिससे वे सेवा में सफलता पाते हैं और जिन आत्माओं के कल्याणार्थ मन-वचन-कर्म, तन-मन-धन से सेवा करते हैं, वे आत्मायें भविष्य में उनकी प्रजा बनती हैं और उनके राज्य में आते हैं। जो यहाँ यज्ञ में समर्पित तो होते परन्तु अपनी कर्मेन्द्रियों के वशीभूत होने के कारण खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने में ही अपना समय गँवा देते, सेवा नहीं करते वे उस अनुसार वहाँ नौकर-चाकर, दास-दासी बनते। जो यज्ञ समर्पित तो नहीं होते परन्तु परमात्मा की श्रीमत पर सेन्टर खोलते, तन-मन-धन से दूसरों की सेवा करते वे जाकर साहूकार प्रजा बनते हैं। ऐसे ही अन्य पदों के संस्कार भी आत्मायें यहाँ ही भरते हैं।
''बाप जानते हैं कौन-कौन मेरी सर्विस करते हैं अर्थात कल्याणकारी बन औरों का भी कल्याण करते हैं। वे ही दिल पर चढ़ते हैं।'' सा.बाबा 14.10.04 रिवा.
''बाप को तो रहम पड़ता है परन्तु दास-दासियाँ बनने की भी नूँध है। कोई तो विचार भी नहीं करते - हमको ऐसा बनना है। दास-दासियां बनने से तो साहूकार बनें तो अच्छा है तो दास-दासियां भी रख सकेंगे।'' सा.बाबा 14.10.04 रिवा.
''विश्व का राजा वे बनेंगे जो विश्व की हर आत्मा से सम्बन्ध जोड़ेंगे और सहयोगी बनेंगे। जैसे बापदादा विश्व के स्नेही और सहयोगी बनें वैसे बच्चों को भी फॉलो फादर करना है। तब विश्व महाराजन की जो पदवी है, उसमें आने के अधिकारी बन सकते हो।'' अ.बापदादा 2.07.70
''जो जितना चेकर होगा, वह उतना ही मेकर बन सकता है। इस समय आप लॉ मेकर भी हो और न्यू वर्ल्ड के मेकर भी हो तथा पीस मेकर भी हो। ... जो जितना चेकर और मेकर बनता, वही फिर रूलर भी बनता है।'' अ.बापदादा 25.6.70
''वाणी से प्रजा बनती है लेकिन ईश्वरीय स्नेह और शक्ति से वारिस बनते हैं। अभी वे वारिस बनाने हैं... वाणी से किसी को पानी-पानी नहीं कर सकते लेकिन स्नेह और शक्ति से एक सेकेण्ड में स्वाहा कर सकते हो।'' अ.बापदादा20.12.69
''यह नॉलेज भी सभी एकरस धारण नहीं कर सकते। कोई एक परसेन्ट, कोई 95 परसेन्ट धारण करते हैं। यह तो समझ की बात है कि सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी घराना होगा तो उसमें राजा-रानी, प्रजा सभी प्रकार के होंगे। प्रजा में भी सभी प्रकार के होते हैं।''
सा.बाबा 18.12.04 रिवा.

‘‘हर कार्य में विश्व-कल्याणकारी बन कार्य करते हो या अपने ही कल्याण में लगे हुए हो?… बहुत समय के संस्कार वालों को ही बहुत समय का राज्यभाग्य प्राप्त होगा। यह स्लोगन सदा याद रखना - ‘अभी नहीं तो कभी नहीं’।’’ अ.बापदादा 6.6.73

‘‘जो समीप आत्मायें होती हैं, जिनका बाप से सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ बाप द्वारा वर्से के अधिकारी भी बनते हैं, वे रॉयल फेमिली में आते हैं। … प्रजा और भक्त में क्या अन्तर होगा? प्रजा ज्ञान और योग की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी … भक्त जो होंगे, वे कभी भी अपने को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे। … उनमें मांगने के संस्कार होंगे, भक्त कभी भी डायरेक्ट बाप के कनेक्शन में आने की शक्ति नहीं रखते।’’ अ.बापदादा 14.7.74

‘‘जो स्वयं, स्वयं का राजा नहीं बनता वा स्वयं को राजा नहीं मानता, उसको विश्व राजा कैसे मानेंगे… जब सर्व कर्मेन्द्रियों पर राज्य है अर्थात् सारी प्रजा पर राज्य है तो समझो विश्व राजन हैं।’’ अ.बापदादा11.10.75

‘‘जो ज्ञान वा स्थूल धन सेवा अर्थ लगाने वाले हैं लेकिन प्रजा (स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों) पर राज्य नहीं करते अर्थात् उनमें रूलिंग पॉवर नहीं है तो समझो वे साहूकार बनने वाले हैं, राजा नहीं। … दास बन जाते, उदास हो जाते तो समझो दास-दासी बनने वाले हैं। यह कर्मों की गुह्य गति है।’’ अ.बापदादा11.10.75

‘‘प्रतिज्ञा कर फिर पतित न बनना चाहिए। परन्तु सभी तो प्रतिज्ञा पर कायम नहीं रहते। गिरते भी रहते हैं। कोई फिर बाप को छोड़ देते हैं। बहुत भागने वाले हैं। चण्डाल आदि भी चाहिए ना। प्रजा में भी चाहिए तो रायल घराने में भी चाहिए। अन्दर वाले भी चण्डाल बन सकते हैं। बाहर वाले भी बन सकते हैं।’’ सा.बाबा 4.11.72 रिवा.

‘‘तुम बच्चे इस समय स्टुडेण्ट हो। इस समय तुम अपनी दासियाँ बनायेंगी तो खुद को भी दासी बनना पड़ेगा। यहाँ महारानी बनना देहाभिमान है… यह एडाप्टेड जन्म है। तुम्हारा यह ईश्वरीय जन्म सबसे ऊंचा मिला है। तुम ब्राह्मणों का यह सौभाग्यशाली जन्म है।’’ सा.बाबा 11.12.73 रिवा.

‘‘अच्छे ज्ञान वाले बच्चे अच्छे घर में जायेंगे, कम ज्ञान वाले कम पद पायेंगे… राजा बनना है तो इस पढ़ाई में लग जाओ… यह है सच्चा गीता-ज्ञान।’’ सा.बाबा 8.8.05 रिवा.

विश्व महाराजा-महारानी बनने का राज

विश्व महाराजा-महारानी बनने के लिए पहले तो अपने मन-बुद्धि सहित अपनी सर्व इन्द्रियों पर शासन चाहिए तब ही महाराजा-महारानी बनेंगे अर्थात् जो यहाँ स्वराज्य अधिकारी बनेगा वही विश्व का राज्य अधिकारी बन सकता है, ये है पहली शर्त और जो विश्व की सर्व आत्माओं की किसी न किसी रूप में सेवा करते हैं, सर्व आत्माओं के दिलों को जीतते हैं, वे ही विश्व महाराजा-महारानी बनते हैं क्योंकि वे ही उनकी प्रजा बनेंगे। प्रजा नहीं होगी तो राजा कैसे बनेंगे। फिर अन्य दैवी गुण और शक्तियाँ भी चाहिए, जो भी यहाँ ही धारण करनी है। जो ऐसे गुण-संस्कार धारण करेगा, ऐसी सेवा करेगा, वही विश्व-महाराजा बन सकता है।

‘‘पुरुषार्थ से पद तो स्पष्ट हो ही जाता है। एक होते हैं विश्व के राजे विश्व-महाराजन उनके साथ अपने राज्य के राजे भी होते हैं।… जो विश्व-महाराजन बनते हैं उनका इस विश्व अर्थात् ब्राह्मण कुल की हर आत्मा के साथ सम्बन्ध होगा… जो पूरा दैवी परिवार है उन सर्व आत्माओं का किस न किस प्रकार से सहयोगी बनना होगा।’’ अ.बापदादा25.12.69

‘‘अब हम तुमको सारे सृष्टि-चक्र का राज़ समझाते हैं, जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे और फिर तुमको पावन बनने की बहुत अच्छी युक्ति बताते हैं। ऐसी युक्ति कभी कोई समझा न सके। यह है सहज राजयोग। बाप है पतित-पावन, वह सर्व-शक्तिवान भी है तो उनको याद करने से पाप भस्म होंगे और तुम पावन बन जायेंगे।’’ सा.बाबा 1.9.04 रिवा.

‘‘जो दैवी परिवार की आत्माएं भविष्य के विश्व में आने वाली हैं। … इन सभी आत्माओं के ऊपर अब से ही स्नेह का राज्य करना है, आर्डर नहीं चलाना है। … विश्व महाराजन बनने के लिए सिर्फ ज्ञान-दाता नहीं बनना है, इसके लिए स्नेह देना अर्थात् सहयोग देना है।’’ अ.बापदादा 29.8.71

‘‘चक्रधारी बनने से ही चक्रवर्ती महाराजा बनेंगे। यहाँ चक्रधारी, वहाँ चक्रवर्ती। जिसमें लाइट का भी चक्र हो और सेवा में प्रकाश फैलाने वाला चक्र भी हो, तब ही कहेंगे-‘चक्रधारी’।’’ अ.बापदादा 15.9.74

‘‘चक्रधारी ही चक्रवर्ती बन सकता है। चलते-फिरते लाइट का चक्र हरेक को दिखाई देगा। जैसे इन आंखों से दिखाई पड़ रहा है। आश्चर्य खायेंगे कि यह सचमुच है व मैं ही देख रहा हूँ?… क्राउन ऐसा कॉमन हो जायेगा कि चलते-फिरते सबको दिखाई देगा।’’ अ.बापदादा 15.9.74

बाहुबल, योगबल और विश्व की एकछत्र राजाई का राज़

Q. दुनिया में राजाई वर्से में मिलती है परन्तु उस वर्से में मिली राजाई को सुरक्षित रखने के लिये या नई राजाई स्थापन करने या विस्तार करने लिये हिंसक युद्ध करना पड़ता है, जिसका इतिहास साक्षी है तो क्या ये सतयुगी त्रेतायुगी राजाई स्थापन करने में भी कोई युद्ध करना पड़ता है?

A. इसमें भी युद्ध तो है परन्तु ये अहिंसक युद्ध है इसमें एक तो अपनी स्थिति जमाने के लिए माया या विकारों से युद्ध करना पड़ता है, दूसरा राजाई में प्रजा चाहिये, साधन सम्पति चाहिये - तो प्रजा बनाने के लिये आत्माओं की सेवा भी करनी पड़ती है। जो आत्मा जितनी अधिक आत्माओं की तन-मन-धन से सेवा करता, उनको सन्तुष्ट करने के कारोबार में सफल होता, उनको ज्ञान-गुण-शक्तियों से आत्मिक सुख की अनुभूति कराता, वह उसकी प्रजा बनते और जितनी ही बड़ी प्रजा होती, उतना ही बड़ा राजा बनता। इसके लिये भी आत्माओं में खींचातान तो होती है परन्तु जो विश्व नाटक की यथार्थता को जान परमात्मा को साथ रखकर अपने आत्मिक स्वरुप में स्थित होकर, इस अहिंसक युद्ध के मैदान में लड़ता, वह विजयी अवश्य होता है।

‘‘रशिया-अमेरिका अगर दोनों आपस में मिल जायें तो सारे विश्व पर राज्य कर सकते हैं परन्तु लॉ नहीं है जो कोई बाहुबल से विश्व पर राज्य कर सके। तुम योगबल से विश्व के मालिक बनते हो… अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो योगबल से विश्व का मालिक बनने का।’’ सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

‘‘कल्प पहले भी बाबा ने कहा था - मन्मनाभव। यह है महामन्त्र। माया पर जीत पाने का यह मन्त्र है… यहाँ लड़ाई से अपना राज्य लेते हैं। तुम बच्चे तो योगबल से अपना राज लेते हो। तुम बच्चे योगबल से अपना राज्य स्थापन कर रहे हो।’’ सा.बाबा 9.10.04 रिवा.

दान-पुण्य का राज / दान-पुण्य के विधि-विधान का राज

बाबा ने दान-पुण्य का राज़ भी समझाया है। दान करना अच्छी बात है परन्तु उसके फल के विधि-विधान को भी जानना अति आवश्यक है, जिसके विषय में भी बाबा ने बताया है। कोई धन दान करता है परन्तु वह दान किसी विकारी, पतित मनुष्य को दिया, किसी अत्याचारी को दिया और उसने उसका दुरुपयोग किया, पाप-कर्म में प्रयोग किया तो देने वाला भी उसके फल में भागीदार बनता है। दुनिया में पतित मनुष्य पतितों को दान-पुण्य करते हैं और समझते हैं कि उनका भाग्य जमा होता है परन्तु वह पाप के ही खाते में ही जमा होता है क्योंकि पतितों को दिया दान तो पतितों के द्वारा पतित कार्यों में ही प्रयोग होता है, जिससे दुनिया और ही पतित बनती जाती है और आत्माओं का पाप का खाता बढ़ता ही जाता है। सच्चा दान-पुण्य तो वही है, जो अभी संगमयुग पर परमात्मा की मत पर परमात्मा के अर्थ किया जाता है, जिससे आत्माओं की चढ़ती कला होती है। आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति की राह मिलती है। किसको परमात्म-मिलन की राह दिखाना, परमात्मा से मिलाना सबसे बड़ा दान है। परमात्मा के महावाक्य हैं - अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान सबसे श्रेष्ठ दान है साथ-साथ स्थूल धन भी परमात्मा की श्रीमत अनुसार ईश्वरीय सेवा में लगाना भी श्रेष्ठ दान है, जिससे विशेष फल मिलता है। बाबा ने योग-दान की भी विधि बताई है, जिससे आत्मायें और जड़ प्रकृति भी पावन होती है, उसका भी आत्मा को विशेष फल मिलता है।

‘‘श्रेष्ठ कुमारियां श्रेष्ठ काम करेंगी ना! सबसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कार्य है बाप का परिचय दे बाप का बनाना। … तो अपने को श्रेष्ठ कुमारी, पूज्य कुमारी समझो।’’ अ.बापदादा 17.5.83

''अभी तुमको दान करना है अविनाशी धन का, न कि विनाशी धन का। अगर विनाशी धन है तो अलौकिक सेवा में लगाते जाओ। पतित को दान करने से पतित ही बनते जाते हो। ... औरों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा।''

सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

भक्ति की रस्म-रिवाज अलग है और ज्ञान मार्ग की रस्म-रिवाज अलग है। सतयुग में दान-पुण्य होता नहीं है क्योंकि वहाँ कोई गरीब-दुखी होता नहीं है, जिसको दान-पुण्य करें। सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

''अभी हम अपना सबकुछ ईश्वर को दे देते हैं, ईश्वर स्वीकार करते हैं। वह स्वीकार न करें तो फिर देवे कैसे? वह हमारा न स्वीकार करे तो भी दुर्भाग्य। बाप स्वीकार करते हैं ताकि हमारा ममत्व मिट जाये। यह राज़ भी तुम बच्चे ही जानते हो।''

सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

''भक्तिमार्ग में लक्ष्मी को महादानी दिखाते हैं तो महादानी की निशानी कौनसी दिखाई है? ...सम्पति झलकती रहती है। यह शक्तियों का यादगार है। लक्ष्मी अर्थात् सम्पति की देवी। वह स्थूल सम्पति नहीं, नॉलेज की सम्पति, शक्तियों रुपी सम्पति की देवी अर्थात् देने वाली। तो यह चित्र बनाया है ऐसी सम्पति की देवी बनना है। चाहे नॉलेज देवे, चाहे शक्तियाँ देवे''।

अ.बापदादा 23.1.76

''जो सदा महादानी हैं उनकी पूजा भी सदा और हर कर्म की होती है, जैसे कई देवियों के वस्त्र बदलने की, हर कर्म की पूजा होती है। इससे सिद्ध है कि उन्होंने हर कर्म करते, सारा समय दान किया है - जिसको 'महादानी' कहेंगे।'' अ.बापदादा 23.1.76

''जिन बच्चों को पुरुषोत्तम संगमयुग की स्मृति रहती है, वे ज्ञान रत्नों का दान करने बिना रह नहीं सकते। जैसे मनुष्य पुरुषोत्तम मास में दान-पुण्य करते हैं, ऐसे इस पुरुषोत्तम संगमयुग में तुम्हें ज्ञान रत्नों का दान करना है।'' सा.बाबा 13.7.05 रिवा.

''बाबा राय देते हैं - बच्चे, गरीबों को दान देने वाले तो बहुत हैं। ... दान आदि में भी बहुत खबरदारी चाहिए। ... धन को व्यर्थ नहीं गंवाना है। जो लायक ही नहीं ऐसे पतित को कभी दान नहीं देना चाहिए। नहीं तो दान देने पर भी बोझा आ जाता है।''

सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

''बाप कहते हैं मेरे अर्थ तुम किस-किस को देते रहते हो। दान उसको देना चाहिए, जो पाप न करे। अगर पाप किया तो तुम्हारे ऊपर भी उसका असर आ जायेगा क्योंकि तुमने पैसा दिया।'' सा.बाबा 12.5.72 रिवा.

''धन हमेशा पात्र को दिया जाता है। अगर कोई शराबी को दिया तो देने वाले पर भी दोष आ जाता है। कपूत बच्चे को दिया तो उनका पाप भी सिर पर चढ़ जाता है। इसलिए हिसाब-किताब चुक्तू करो। सरेण्डर हुए फिर एलाउ नहीं करेंगे, किसको देने के लिए। दिया तो फिर पाप हो जायेगा। कन्या को तो देना ही है, अगर स्वर्ग का मालिक नहीं बनती, स्वर्ग में नहीं चलती, नर्क में ही गोता खाने चाहती है तो।'' सा.बाबा 5.6.73 रिवा.

''आत्माओं को बुलाते हैं ... उनके निमित्त ब्राह्मणों को दान देते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि हम ईश्वर अर्थ दान करते हैं। वह ईश्वर अर्थ नहीं हुआ। वह तो प्राणी को देते हैं। ईश्वर अर्थ करे तब तो ईश्वर अर्थ दान कहा जाये। प्राणी को देते हैं तो उसका ईश्वर थोड़ेही फल देगा। दान में भी देखो कितनी गुह्यता है। ईश्वर अर्पण नम: कहते हैं। अगर कृष्ण अर्पण करेंगे तो कृष्ण क्या देंगे? हाँ कोई कृष्ण अर्पणम् कह देते तो भी कृष्ण को ईश्वर समझ देते हैं तो उसका फल मिलता है। परन्तु अधूरा। अभी तो डायरेक्ट मैं आया हूँ ... 21 जन्मों का राज्य तुमको रिटर्न में देता हूँ।'' सा.बाबा 5.11.72 रिवा.

''अन्त में जितनी सजायें खायेंगे, उतना पद कम हो जायेगा, इसलिए बाबा कहते हैं योगबल से हिसाब-किताब चुक्तू करो। याद से जमा करते जाओ... दान भी पात्र को देना है। पापात्माओं को देने से फिर देने वाले पर भी उसका असर पड़ जाता है।''

सा.बाबा 5.8.05 रिवा.

दान और अविनाशी ज्ञान रत्नों के दान का राज

दान का भक्ति मार्ग में भी महत्व है तो ज्ञान मार्ग में भी महत्व है। दान भी अनेक प्रकार के होते हैं, जिनमें धन-दान, अन्न-दान, नेत्र-दान, विद्या-दान, कन्या-दान आदि आदि मुख्य हैं। भक्ति मार्ग में विद्यादान को श्रेष्ठ दान कहा जाता है। बाबा ने

अभी बताया है - ज्ञान धन का दान सबसे श्रेष्ठ दान है। संगमयुग पर जो ज्ञान रतनों को धारण करते और अन्य आत्माओं को दान करते, उनके ये रतन ही यहाँ भी आत्मा को सुख देते और भविष्य में स्थूल रतन बन जाते अर्थात् उनको भविष्य में स्थूल रत्न भी उस अनुसार मिलते हैं। अभी के ज्ञान रतनों के दान का फल कई गुणा अधिक मिलता है। भक्ति मार्ग में स्थूल धन दान करने से सिंगल ताज वाले राजा-महाराजा बनते हैं और ज्ञान मार्ग में ज्ञान-धन का दान करने से डबल ताज वाले राजा-महाराजा बनते हैं।

कन्या-दान का भी विशेष महत्व है परन्तु दुनिया में कन्या की शादी कराने को कन्या-दान समझते हैं, जो एक भ्रम है। बाबा कहते कन्या जो पवित्र होती है, उसकी शादी कराकर अपवित्रता की ओर ले जाते हैं तो क्या वह दान हुआ! वास्तविकता ये है कि इस समय संगमयुग पर जो भाग्यशाली माता-पिता अपनी कन्या को ईश्वरीय सेवा अर्थ शिवबाबा को दान देते हैं या कहें कि शिवबाबा के साथ शादी कराते हैं, वह ही कन्या-दान है, जिसको भक्ति मार्ग में उस रीति समझ लिया है।

''यह ज्ञान अच्छी रीति बुद्धि में धारण करना है। किसको समझाने में खुशी होती है ना। यह तुम जैसे प्राण-दान देते हो।''

सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

''अभी तुम बच्चे अविनाशी ज्ञान रतनों की लेनदेन करते हो... बाप तो सबको देने वाला है, लेने वाला नहीं है। एक देवे, 10 पाये। गरीब 2/- रुपया देते हैं तो पदम मिल जाते हैं। भारत सोने की चिड़िया था ना। बाप ने कितना धनवान बनाया। सोमनाथ के मन्दिर में कितना अकीचार धन था। ... फिर हिस्ट्री रिपीट होगी... बाप अविनाशी ज्ञान रतन देते हैं, जिससे तुम अथाह धनवान बन जाते हो।''

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

''भारत को महादानी कहा जाता है। वह धन दान तो बहुत करते हैं परन्तु यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान। ... मैं तो हद बेहद से पार चला जाता है क्योंकि मैं रहने वाला भी वहाँ का हूँ। तुम भी हद-बेहद से पार चले जाओ, संकल्प-विकल्प कुछ भी न आये, इसमें मेहनत चाहिए।''

सा.बाबा 8.11.04 रिवा.

''सर्व की मनोकामनायें पूरी करने वाली कामधेनु हो। जिसकी अपनी सर्व कामनायें पूरी होंगी, वही औरों की कामनायें पूरी कर सकेंगे। ... सर्व की इच्छायें पूर्ण करने वाले स्वयं इच्छामात्रम् अविद्या होंगे। ऐसा अभ्यास करना है। प्राप्ति स्वरूप बनने से औरों को प्राप्ति करा सकते हो... महाज्ञानी बनने के बाद महादानी का कर्तव्य चलता है। महाज्ञानी की परख महादानी बनने से होती है।''

अ.बापदादा 26.6.70

''मधुवन निवासी मोस्ट लकी स्टार्स हैं। जितना लकी हो, उतना सर्व के लवली भी बनो। सिर्फ लक में खुश नहीं होना। लकी की परख लवली से होती है... ज्ञान का दान ब्राह्मणों को तो नहीं करना है, वह तो अज्ञानियों को करेंगे। ब्राह्मण परिवार में फिर इस दान (लव) के महादानी बनो।''

अ.बापदादा 21.4.73

''मुख्य तीन दान बताये। ज्ञान का दान भी करती हो, योग द्वारा शक्तियों का दान भी कर रहे हो और तीसरा दान है कर्म द्वारा गुणों का दान। मनसा द्वारा सर्व शक्तियों का दान, वाणी द्वारा ज्ञान का दान, कर्म द्वारा सर्वगुणों का दान।''

अ.बापदादा 15.4.71

''जैसे भक्तिमार्ग में जो-जो जिस प्रकार का दान करता है उसको उस प्रकार की प्राप्ति होती है। ऐसे ही जो इस महान जीवन में जितना और जैसा दान करता है, उतना और वैसा ही भविष्य बनता है। न सिर्फ भविष्य लेकिन प्रत्यक्ष फल भी मिलता है।''

अ.बापदादा 15.4.71

''मनसा दान का प्रत्यक्ष फल क्या है? मनसा महादानी बनने वाले को प्रत्यक्ष फल यहीं प्राप्त होता हैं। एक तो वह अपनी मनसा अर्थात् सकंल्पों के ऊपर एक सेकेण्ड में विजयी बनता है अर्थात् सकंल्पों के ऊपर विजयी बनने की शक्ति प्राप्त होती है।''

अ.बापदादा 15.4.71

''ऐसे ही मन्सा द्वारा महादानी बनने वाला अपनी दृष्टि-वृत्ति और स्मृति की शक्ति से अन्य आत्माओं को भी शान्ति का अनुभवी बना सकते हैं लेकिन टेम्प्रेरी टाइम के लिए क्योंकि उनका अपना पुरुषार्थ नहीं होता है। लेकिन महादानी की शक्ति के प्रभाव से थोड़े समय के लिए वह अनुभव कर सकता है।''

अ.बापदादा 15.4.71

''वाचा के महादानी हैं, उनको क्या फल मिलता है? वह हैं मास्टर नॉलेजफुल। उनके एक-एक शब्द की बहुत वेल्यू होती है... वाचा के महादानी बनने वाले को विशेष एक तो खुशी की प्राप्ति होती है क्योंकि धन को देख हर्षित होता है और दूसरा वह कब भी असन्तुष्ट नहीं होंगे क्योंकि खजाना भरपूर होता है।'' अ.बापदादा 15.4.71

''कर्मणा द्वारा गुणों का दान करने के कारण कौनसी मूर्त बन जायेंगे? फरिश्ता। कर्म अर्थात् गुणों का दान करने से उनकी चलन और चेहरा दोनों ही फरिश्ते की तरह दिखाई देंगे। ... और दूसरा सर्व वरदान मूर्त अपने को अनुभव करेगा।''

अ.बापदादा 15.4.71

''सिर्फ सुनने और रखने का आनन्द नहीं लो लैकिन बार-बार स्वयं के प्रति और सर्वात्माओं के प्रति काम में लगाओ... ईश्वरीय नियम प्रमाण जितना यूज करेंगे, उतनी वृद्धि होगी। गायन है - धन दिये धन न खुटे। देना ही बढ़ना है।'' अ.बापदादा 21.9.75

दान और गुप्त-दान का राज

दान भाग्य बनाने का एक मूल आधार है। अनेक प्रकार के दानों के महत्व का वर्णन किया जाता है जैसे धन-दान, जीवन-दान, अन्न-दान, नेत्र-दान, भूमि-दान, गुण-दान, ज्ञान-दान आदि आदि। ज्ञान-दान सबसे श्रेष्ठ दान है क्योंकि इससे किसकी जीवन बनती है और वह जीवन-पर्यन्त स्थाई रहता है। बाबा भी आत्माओं को ज्ञान-दान देते हैं।

भक्ति मार्ग में भी गुप्त-दान का महत्व माना जाता है। दान देने में गुप्त दान का विशेष महत्व और उसका विशेष फल होता है। यह राज़ भी बाबा ने अभी समझाया है। भक्ति में गुप्त दान का महत्व क्यों है, इस सत्य का भी अभी ज्ञान मिला है। बाबा ने कहा है भक्ति मार्ग में राजाई धन आदि के दान से मिलती है लेकिन सतयुग की राजाई इस ज्ञान-दान से मिलती है। गुप्त-दान का महत्व क्यों है, उसका फल अधिक क्यों मिलता है, उसका राज भी बाबा ने बताया है क्योंकि बाप गुप्त वेष में आकर गुप्त में राजाई स्थापन करते हैं और जो उसमें सहयोगी बनते हैं, उनको गुप्त में राजाई का अधिकार देते हैं।

''बाप कहते - बच्चे देही-अभिमानी बनो। बाप गुप्त रूप में आकर तुम बच्चों को गुप्त दान में विश्व की बादशाही देते हैं... इसलिए गाया जाता है - गुप्त दान महापुण्य।'' सा.बाबा 11.6.05 रिवा.

''चाण्डाल भी वहाँ दो प्रकार के चाहिए। राजाई घराने के अलग, प्रजा घराने के अलग... मुख से कहा, यह देता हूँ, फिर नहीं दिया... जाकर राजकुल में चाण्डाल बनेंगे।'' सा.बाबा 19.5.71 रिवा.

दानी, महादानी, वरदानी का राज

दान, महादान और वरदानी का क्या महत्व है और कैसे बनें, यह सब राज़ भी बाप ने अभी ही बताया है और दानी, महादानी और वरदानी बनकर अपने भाग्य को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा दी है।

''जैसे भक्तिमार्ग में जिस वस्तु की कमी होती है उसी वस्तु का दान करते हैं - तो दान देने से उस वस्तु की कभी कमी नहीं रहेगी। तो देना अर्थात् लेना हो जाता है। ऐसे ही जिस सब्जेक्ट में, जिस विशेषता में, जिस गुण की स्वयं में कमी महसूस करते हो, उसी विशेषता व गुण का दान करो, अन्य के प्रति सेवा में लगाओ तो सेवा का रिटर्न प्रत्यक्ष फल मेवे के रुप में स्वयं अनुभव करेंगे।'' अ.बापदादा 22.1.76

''भक्ति मार्ग में 'महादानी' किसको कहा जाता है? जो स्वयं के प्रति नहीं बल्कि हर वस्तु, हर समय अन्य को दान-पुण्य करने में लगावे, उसको महादानी कहा जाता है। वरना तो दानी कहा जाता। जो अविनाशी दान करता ही रहे, सदा दान चलता ही रहे, उसको महादानी कहा जाता है।'' अ.बापदादा 22.1.76

''तुम जानते हो हमको इस दुनिया को पवित्र बनाना है। योग में रहकर शान्ति और सुख का दान देना है। इसलिए बाबा कहते हैं रात्रि को उठकर योग में बैठो, सृष्टि को योग का दान दो। सवेरे उठकर अशरीरी होकर बैठो, तो तुम भारत को, बल्कि सारी

सृष्टि को योग से शान्ति का दान देते हो और फिर चक्र का सुमिरन करने से तुम सुख का दान देते हो। सुख होता है धन से।''

सा.बाबा 7.1.02 रिवा.

नर्क की धन-सम्पत्ति स्वर्ग में ट्रान्सफर करने का राज

आत्मा तन-मन-धन से जो सेवा करती है, उस पर ही उसका भविष्य निर्भर करता है। बाप ही आकर बताते हैं कि कैसे हम नर्क की अपनी धन-सम्पत्ति को स्वर्ग में ट्रान्सफर कर सकते हैं अर्थात् परमात्मा की श्रीमत पर सेवा में लगाकर, स्वर्ग की स्थापना में सहयोग देकर हम अपनी नर्क की धन-सम्पत्ति को स्वर्ग के लिए ट्रान्सफर कर सकते हैं। परमात्मा को सबसे बड़ा सर्राफ कहा जाता है क्योंकि वह हमारी नर्क की धन-सम्पत्ति को स्वर्ग के लिए ट्रान्सफर करते हैं। परमात्मा सबसे बड़ा बैंकर भी है क्योंकि वह हमारी नर्क की धन-सम्पत्ति को लेकर, उसको स्वर्ग की स्थापना में लगाकर हमको ब्याज सहित स्वर्ग में देता है।

''बच्चे, अपने धन से थोड़ा स्टॉक रखो युक्ति से, बाकी सब वहाँ के लिए ट्रान्सफर कर दो। सब तो ट्रान्सफर नहीं कर सकते हैं। गरीब ही जल्दी ट्रान्सफर कर देते हैं। ... बाप कहते हैं - मैं हूँ गरीब निवाज।'' सा.बाबा 9.9.04 रिवा.

''बाप गरीब बच्चों को साहूकार बनने की युक्ति बताते हैं। मीठे बच्चे, तुम्हारे पास जो कुछ भी है, वह ट्रान्सफर कर दो। यहाँ तो कुछ भी रहना नहीं है। यहाँ जो ट्रान्सफर करेंगे, वह नई दुनिया में तुमको सौगुणा होकर मिलेगा।... घर-घर में युनिवर्सिटी कम हास्पिटल खोलो, जिससे हेल्थ और वेल्थ मिलेगी।'' सा.बाबा 27.3.05 रिवा.

''दान किया तो फिर उससे ममत्व मिटा देना चाहिए क्योंकि तुम जानते हो हम भविष्य 21 जन्मों के लिए बाप से लेते हैं... धनी शिवबाबा है, वह इनके द्वारा यह कराते हैं। ... जितना हो सके अपना बैग-बैगेज ट्रान्सफर कर दो।'' सा.बाबा 26.4.05 रिवा.

''बाप तो सदैव है ही दाता। कब भी कोई ऐसे नहीं समझेंगे कि हम शिवबाबा को यह पैसे देते हैं। नहीं, हम शिवबाबा के पास यह जमा करते हैं, भविष्य रिटर्न में लेने के लिए। सुदामा ने चावल की पोटली दी तो 21 जन्म के लिए महल मिले।''

सा.बाबा 14.7.71 रिवा.

''जो कहते हैं - जब जरूरत पड़े तो बाबा मुझे याद करना, हम मदद करने के लिए हाजिर हैं। यज्ञ के अच्छे-अच्छे काम के लिए दरकार हो तो मुझे याद करना। बाबा कहते हैं - हम किसको याद नहीं करते, जो करना है सो करो। हम तो दाता हैं। हम तो आये ही हैं भारत को स्वर्ग बनाने, तुम भी स्वर्ग में जायेंगे। जितना जो करेंगे, उतना वे पायेंगे। ... यह तो गायन है - सांवलशाह की हुण्डी सकारी। इनको भी कोई परवाह नहीं है। बाबा कहते हैं हुण्डी आपही भरेगी।'' सा.बाबा 5.10.01 रिवा.

''बाप आते हैं जीते जी मरना सिखाने। मरना तो सारी दुनिया को है, तुमको पावन बनकर मरना है। इसमें सच्ची कमाई होती है, फिर झूठी कमाई को क्या करेंगे। उस झूठी कमाई को सच्ची कमाई से बदली करना है। बाप ने करके दिखाया ...।''

सा.बाबा 3.6.69 रिवा.

सफल कर सफलता मूर्त बनने का राज

शिवबाबा ज्ञान का सागर है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान होने के कारण क्या होने वाला है, उनको आत्माओं के हित-अनहित का भी यथार्थ ज्ञान है। इसलिए हमारा तन-मन-धन, समय-संकल्प, स्वांस कैसे सफल हो, उसका पाठ वे ही पढ़ाते हैं। जो उनके बच्चे बनते हैं, उनकी श्रीमत पर चलते हैं, उनको ही अपना सहारा समझते हैं, उनके जीवन के लिए वे स्वयं उत्तरदायी बनते हैं अर्थात् उसके हित-अनहित का वे स्वयं ही ध्यान रखते हैं। हम अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प, स्वांस कैसे ईश्वरीय सेवा में सफल कर सफलतामूर्त बनें, उसका राज़ भी वे हमको अभी बता रहे हैं। बाबा का कहना है - जो अपना सबकुछ ईश्वरीय सेवा में सफल करेगा, वही सफलतामूर्त बनेगा, बाकी दुनिया का तो सब मिट्टी में मिल जाना है। इस रहस्य को जानकर सफल करो और सफलतामूर्त बनो।

''कोई जो कुछ करता है सो अपने लिए ही करता है। बाप भी कोई मेहर नहीं करते हैं। बाबा बच्चों को डायरेक्शन देते हैं, उनके ही कल्याणार्थ। यही उनकी मेहर है। ... बाप तो आये ही हैं मदद करने।'' सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

''समय प्रमाण इस नये वर्ष में सभी को विशेष यह लक्ष्य रखना है कि जो भी खजाने प्राप्त हैं - समय है, संकल्प है, गुण हैं, ज्ञान है, शक्तियाँ हैं ... सबसे बड़ा खजाना संकल्प है। श्रेष्ठ संकल्प, शुद्ध संकल्प सभी प्राप्तियों का आधार है। इन सभी खजानों को हर रोज सफल करना है। खूब बांटो। दाता के बच्चे मास्टर दाता बनो। सफल करना अर्थात् सफलता को प्राप्त करना।''

अ.बापदादा 31.12.2000

''भगवान को तुम्हारे पैसे की क्या दरकार रखी है। बाप तो जानते हैं इस पुरानी दुनिया में जो कुछ है, सब भस्म हो जायेगा। बाबा क्या करेंगे? बाबा के पास तो फुरी-फुरी से तलाव हो जाता है। बाप के डायरेक्शन पर चलो, हॉस्पिटल कम युनिवर्सिटी खोलो।'' सा.बाबा 5.2.05 रिवा.

यह ड्रामा में नूँध है कि जो जितना करते हैं, वह उतना पाते हैं। अभी सब कुछ नई दुनिया में ट्रान्सफर करना है। इनको देखो, कितनी बहादुरी की। ... बाबा ने तो फट से दे दिया, सोचा नहीं। फुल पॉवर दे दी।... बच्चों आदि का कुछ भी ख्याल नहीं किया। देने वाला ईश्वर है तो फिर हम किसी का रेस्पान्सिबुल थोड़ेही रहे। सा.बाबा 13.4.05 रिवा.

''तुम बच्चों को बाप श्रीमत देते हैं - मीठे बच्चे, अपना सब कुछ धनी के नाम पर सफल कर लो... यह दुनिया ही खत्म होनी है इसलिए धनी के नाम जितना हो सके सफल करो। धनी है शिवबाबा... जिनकी तकदीर में है, वे खर्च करते रहते हैं। ... इनको फॉलो करो।'' सा.बाबा 14.7.05 रिवा.

सफलता के सितारों का राज

बाबा तीन प्रकार के सितारों का गायन करते हैं। पहले हैं सफलता के सितारे, दूसरे हैं लकी सितारे और तीसरे हैं उम्मीदों के सितारे। तीनों की क्या-क्या विशेषतायें हैं, वह भी बाबा ने बताया है और सफलता का सितारा कैसे बनें, वह राज़ भी बताया है।

''सफलता के सितारों के संकल्प में दृढ़ता होगी कि सफलता अनेक बार हुई है और अभी भी हुई पड़ी है। ... सफलतामूर्त आत्माओं से अन्य आत्मायें भी सदा सन्तुष्ट रहेंगी। ... लकी सितारों के संकल्प ज्यादा शक्तिशाली नहीं होंगे लेकिन वे स्नेही होंगे। ... उम्मीदवार सितारे उम्मीद रखते हैं कि करूँगा, बनूँगा लेकिन बीच-बीच में अटकते भी हैं।'' अ.बापदादा 14.7.74

''सफलतामूर्त बनने के लिए दो शब्द धारण करना है - शुभ कामना और शुद्ध भावना।... कोई परीक्षा रूप बनकर आये ... लेकिन हर आत्मा के प्रति आप शुभ कामना और शुद्ध भावना ये दो बातें हर संकल्प, बोल और कर्म में लाओ तो आप सफलता के सितारे बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 14.7.74

''ज्ञान सितारों में तीन प्रकार प्रकार के सितारे हैं - एक हैं सफलता के सितारे, दूसरे हैं लकी सितारे और तीसरे हैं उम्मीदों के सितारे। हरेक सितारे की अपनी दुनिया है।'' अ.बापदादा 14.7.74

''हर एक सितारा अपने आपको जानता है कि मैं कौनसा सितारा हूँ? एक हैं - सफलता के सितारे, दुसरे हैं लकी सितारे और तीसरे हैं, उम्मीदवार सितारे। अभी हर एक अपने आप से पूछे कि मैं कौन हूँ? सारे दिन की दिनचर्या में संकल्प, श्वास, समय, बोल, कर्म और सम्बन्ध व सम्पर्क में सफलतामूर्त अर्थात् सफलता के सितारे स्वयं को अनुभव करते हो?''

अ.बापदादा 28.1.76

''संकल्प की उत्पति के साथ सफलता हुई पड़ी है, यह निश्चय का संकल्प साथ-साथ होता है? हर कदम में जैसे पदम का गायन है, वैसे हर कदम में सफलता समाई हुई है। संकल्प व कर्म के बीज में सफलता रुपी वृक्ष समाया हुआ है। ऐसे अनुभव हो - जैसे सफलता परछाई के समान कर्म के पीछे-पीछे है ही। उसको कहते हैं - सफलता का सितारा।'' अ.बापदादा 28.1.76

''लकी सितारों की विशेषता यह है कि वे जो भी संकल्प व कर्म करेंगे, उसमें निमित मात्र मेहनत होगी, लेकिन फल की प्राप्ति मेहनत के हिसाब से ज्यादा होगी। लकी सितारे अपने लक को जानते हुए हर समय बापदादा को लाख-लाख शुक्रिया मानेंगे कि लक का लॉक खोल दिया।'' अ.बापदादा 28.1.76

‘‘उम्मीदवार सितारों की विशेषता है … उनमें जजमेन्ट शक्ति नहीं होगी अर्थात् स्वयं जस्टिस नहीं बन सकते। … श्रेष्ठ संकल्प वाला होगा लेकिन दृढ़ संककल्प वाला नहीं होगा। … उमंग-उल्हास होगा लेकिन हिम्मत कम होगी। उसके लिए हिम्मत दिलाने वाला साथी चाहिए… उम्मीदवार सितारों में बाप को भी उम्मीद है कि वे कभी भी हाई जम्प दे सकते हैं।’’

अ.बापदादा 28.1.76

यज्ञ में बीज बोने का राज

अभी रुद्र बाबा ने रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा है, इस यज्ञ में बीज बोने का फल कितना श्रेष्ठ होता है, यह भी बाबा ने अभी बताया है। जो जितना और जैसा बीज बोता है, वह उस अनुसार फल पाता है। इस यज्ञ में बोया हुआ बीज अभी भी फल देता है और भविष्य में भी फल देने वाला है। यज्ञ में बीज बोने से अभी अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है और भविष्य में भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। सतयुग में किसी भी आत्मा को जो प्राप्त है, वह संगमयुग में उसके द्वारा बोये हुए बीज का ही फल है। दुनिया में भी जो जैसा कर्म करता है, उसका वैसा ही फल पाता है परन्तु संगमयुग की ये विशेषता है कि संगमयुग पर बोये हुए बीज का फल पद्मगुणा अधिक होता है। इसी सन्दर्भ में तुलसीदास ने भी लिखा है - तुलसी यह तन खेत है, मन्सा भया किसान। पाप-पुण्य दो बीज हैं, जो जस बुवै सो तस लुनै निधान।।

‘‘उस धन कमाने की भेट में यह अविनाशी धन तो बहुत-बहुत ऊंचा है… ड्रामा को भी जानते हो, यह अनादि-अविनाशी ड्रामा बना हुआ है, जो रिपीट होता रहता है, इसे भी समझना है… ड्रामा में नूँध है, जिन्होंने कल्प पहले बीज बोया है, वे अभी भी बोयेंगे। तुम यज्ञ का चिन्तन नहीं करो, तुम अपना कल्याण करो… भगवान को तुम मदद करते हो क्या ? भगवान से तो तुम लेते हो या देते हो ?’’ सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

‘‘कल्प पहले जिसने जितना खजाने में डाला है, उतना ही अब डालेंगे। न जास्ती और न कम डाल सकते हैं। यह बुद्धि में ज्ञान है, इसलिए फिक्र की कोई बात नहीं रहती। … तुम दो पैसे इस राजधानी स्थापन करने में लगाते हो, वह भी जो करते हो हू-ब-हू कल्प पहले मिसल। … कल्प पहले जिन्होंने वर्सा लिया होगा, वे ही अपने-अपने समय पर लेंगे। अदली-बदली कुछ हो नहीं सकता।’’ सा.बाबा 31.3.05 रिवा.

ईश्वरीय सेवा, उसके महत्व और उसमें सफलता का राज

ईश्वरीय सेवा का मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में और विश्व की व्यवस्था में क्या महत्व है, वह परमात्मा ही बताते हैं। ईश्वरीय सेवा से कैसे हम अपना भाग्य बना सकते हैं, उसका राज़ भी बाप ही बताते हैं, जिसको जानने से ही हमारे अन्दर ईश्वरीय सेवा के प्रति रुचि जाग्रत होती है। इस ईश्वरीय सेवा के आधार पर ही हमारे जीवन में ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा होती है और विश्व में नई राजशाही व्यवस्था स्थापित होती है। परन्तु वह व्यवस्था प्रेम से परिपूर्ण सुख-शान्तिमय होती है, आज की राजशाही जैसी अहंकार से युक्त नहीं होती है।

‘‘आप लोगों के भाषण में इतनी पॉवर हो जो सारी सभा के बीच बाप के स्नेह की लहर छा जाये। … वे लोग सारी सभा को हंसा सकते हैं, रुला सकते हैं लेकिन अशरीरीपन का अनुभव नहीं करा सकते, बाप से स्नेह नहीं पैदा करा सकते।’’

अ.बापदादा 2.8.72

‘‘अलौकिक कर्म वा ईश्वरीय सेवा कब भी स्थिति से नीचे लाने के निमित्त नहीं बन सकते। अगर कोई को ऐसे अनुभव होता है कि अलौकिक कर्म के कारण नीचे आते हैं तो इसका अर्थ है कि उस आत्मा को अलौकिक कर्म करने की कला नहीं आती। … हर कर्म को न्यारे और प्यारे रहने की कला में करें।’’ अ.बापदादा12.11.72

‘‘सबको ये बातें समझानी चाहिए। भल यह जानते हैं कि सभी बन्दरबुद्धि हैं परन्तु मन्दिर लायक बनने वाले भी हैं ना।… तुम सेकेण्ड में किसको भी स्वर्गवासी बना सकते हो। परन्तु यह स्कूल है, इसलिए तुम्हारी पढ़ाई चलती रहती है। ज्ञान सागर बाप तुम्हें ज्ञान इतना देते हैं जो सागर को स्याही… अन्त नहीं हो सकता।’’ सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

''जो समझदार हैं, उनको सर्विस का बहुत शौक रहता है। समझते हैं ईश्वरीय सर्विस से हमको बहुत लॉटरी मिलनी है। कई तो लॉटरी को भी समझते नहीं, वे वहाँ जाकर दास-दासियां बनेंगे। ... साहूकारों के भी दास-दासियां बनेंगे।''

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

''बच्चों को कितनी अच्छी सर्विस करनी चाहिए। इन लक्ष्मी-नारायण ने यह सर्विस की है ना। ... अन्दर में कितना नशा रहना चाहिए। हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप कहते हैं - सबको मेरा परिचय देते रहो। सर्विस से ही शोभा पायेंगे और बाप की दिल पर चढ़ेंगे।'' सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

''ब्राह्मण जीवन ही सेवा की जीवन है। ब्राह्मण आत्मायें सेवा के बिना जी नहीं सकती... सेवा योगयुक्त भी बनाती है लेकिन कौन सी सेवा ? ... सच्ची सेवा अर्थात् जो सेवा मन और मुख से साथ-साथ होती है। मन से अर्थात् मन्मनाभव की स्थिति के साथ मुख की सेवा।'' अ.बापदादा 22.2.86

''हर एक बच्चे का हक है जीवनमुक्ति। तो बच्चों की बुद्धि चलनी चाहिए कि सबको जीवनबन्ध से जीवनमुक्ति में कैसे ले जायें। ... सर्विस का भी शौक चाहिए।'' सा.बाबा 24.9.04 रिवा.

''अन्त समय अचानक के मृत्यु, अकाले मृत्यु, समूह रूप में मृत्यु होगी, उन आत्माओं के वायब्रेशन कितने तमोगुणी होंगे, उसको परिवर्तन करना और स्वयं को भी ऐसे खूने नाहेक वायुमण्डल-वायब्रेशन से सेफ रखना और उन आत्माओं को सहयोग भी देना। ... बेहद की सेवा और अपनी सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो, तब ही अन्त सुहाना होगा।'' अ.बापदादा 18.1.86

''सेवा में निमित्त भाव ही सेवा की सफलता का आधार है... निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी - ये तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वत: ही आती हैं।'' अ.बापदादा 1.03.86

''भारत में शिव का नाम तो बहुत लेते हैं, शिव जयन्ती भी मनाते हैं।...जो भी टाइम मिले, अपने से बातें करनी चाहिए। ... बाप से रूह-रिहान कर फिर जाकर रुहानी सर्विस करनी है।'' सा.बाबा 6.11.04 रिवा.

''उठते-बैठते, चलते-फिरते ज्ञान को सुमिरन करते रहो। सारा दिन बुद्धि में यही रहे कि किसको कैसे समझायें, बाप का परिचय कैसे दें।'' सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

''तुम मुरलीधर के बच्चे हो, तुम्हें मुरलीधर जरूर बनना है। औरों का कल्याण करेंगे तब तो नई दुनिया में ऊंच पद पायेंगे। ... बड़ी शीतलता से किसी को भी यह सब राज़ समझा सकते हो।'' सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

''जितना अपना उद्धार करेंगे, उतना औरों का भी उद्धार कर सकेंगे और जितना औरों का उद्धार करेंगे, उतना अपना भी उद्धार करेंगे। अपना ही उद्धार न करेंगे तो औरों का उद्धार कैसे करेंगे।'' अ.बापदादा 6.8.70

''जितना आवाज से परे होकर सम्पूर्णता का आवाहन अपने में करेंगे, उतना आत्माओं का आवाहन कर सकेंगे। ... सदा हर्षित रहेंगे तो फिर माया की कोई आकर्षण नहीं होगी। यह बाप की गारन्टी है।'' अ.बापदादा22.10.70

''अभी-अभी पुरुषार्थ और अभी-अभी प्राप्ति। जब स्वयं प्राप्ति स्वरूप बनेंगे तब अनेक आत्माओं को प्राप्ति करा सकेंगे। अगर स्वयं प्राप्ति स्वरूप नहीं होंगे तो अन्य को कैसे प्राप्ति करा सकेंगे।'' अ.बापदादा 6.8.70

''जितना स्वयं प्रत्यक्ष होगें, उतना बापदादा को प्रख्यात करेंगे। ... जितना आपके मुख पर बापदादा का नाम होगा, उतना ही सभी के मुख पर आपका नाम होगा।'' अ.बापदादा 2.7.70

''सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ता है संगमयुग की डिग्री और दैवी पद है भविष्य की प्रालब्ध... जो जितना क्वालीफाइड होगा, वह उतना ही औरों को क्वालीफाइड बनायेगा... यहाँ की मुख्य क्वालिटीज में एक तो कहाँ तक नॉलेजफुल बने हैं। नॉलेज के साथ फेथफुल, सक्सेसफुल, पॉवरफुल और सर्विसएबुल कहाँ तक बने हैं... नॉलेजफुल अर्थात् बुद्धि में फुल नॉलेज की धारणा। जितना नॉलेजफुल होगा, उतना ही वह सक्सेसफुल होगा।'' अ.बापदादा 11.7.70

''आगे चलकर ऐसी सर्विस होगी जिसमें दूरांदेशी बुद्धि और निर्णय शक्ति बहुत चाहिए। इसलिए ड्रिल करा रहे हैं। ... इस बुद्धि की ड्रिल से बुद्धि शक्तिशाली होगी।'' अ.बापदादा 25.6.70

''साक्षात्कार मूर्त तब बनेंगे जब अपना अव्यक्त आकृति रूप दिखायेंगे... सिर्फ मस्तक की लाइट नहीं लेकिन सारे शरीर द्वारा लाइट के साक्षात्कार होंगे। जब लाइट ही लाइट देखेंगे तो स्वयं भी लाइट रूप हो जायेंगे।'' अ.बापदादा 26.6.70

''अब मुख्य सर्विस है ही अपनी वृत्ति और दृष्टि को पलटाना। यह जो गायन है - नजर से निहाल। तो यह दृष्टि और वृत्ति की सर्विस को प्रैक्टिकल में लाना है। वाचा तो एक साधन है। ... यह सर्विस एक स्थान पर बैठे, एक सेकण्ड में अनेकों की कर सकते हो।'' अ.बापदादा 26.3.70

''सर्विस में सफलता पाने के लिए दो बातें ध्यान में रखना है - एक है निशाना पूरा और दूसरा नशा भी पूरा हो। ... अगर अपनी स्थिति का निशाना और दूसरे की सर्विस करने का भी निशाना ठीक होगा और साथ-साथ नशा भी सदैव एकरस रहता होगा तो सर्विस में सफलता ज्यादा पा सकते हो।'' अ.बापदादा 2.2.70

''चेहरा ऐसा चमकता हुआ हो जो और भी आपके चेहरे में अपना रूप देख सकें। चेहरा दर्पण बन जाये। ... दान करने से शक्ति मिलती है। अन्धों को आंखे देना कितना महान कार्य है। आप सभी का यही कार्य है - अज्ञानी अंधों को ज्ञान-नेत्र देना और अपनी अवस्था सदैव अचल हो।'' अ.बापदादा 26.1.70

''मन्सा सेवा फास्ट सेवा है और पॉवरफुल भी है और मेहनत भी कम है। उसके लिए पॉवरफुल स्टेज बनानी है। सदैव एक ही समय में मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों सेवा इकट्ठी कर सकते हो। ... हर वर्ग वाले मन्सा सेवा की भी कोई विधि बनाओ, जिससे आत्माओं की मन्सा सेवा भी कर सको।'' अ.बापदादा15.12.04

''कभी दिल शिकस्त नहीं होना। आज थोड़े हैं, कल ज्यादा होने ही हैं - यह निश्चित है। जहाँ बाप का परिचय मिला है, बाप के बच्चे निमित्त बने हैं, वहाँ अवश्य बाप के बच्चे छिपे हुए हैं। जो समय प्रमाण अपना हक लेने के लिए पहुँच रहे हैं और पहुँचते रहेंगे।'' अ.बापदादा13.03.86

''सेवा की भावना रखेंगे तो कब तंग नहीं होंगे और अति पापात्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले पर भी नफरत-घृणा, निरादर की भावना नहीं आयेगी लेकिन तरस की भावना आयेगी। जितना होपलेस केस की सेवा करेंगे, उतने ही प्राइज के अधिकारी होंगे।'' अ.बापदादा31.12.70

''सच्ची सेवा के लक्षण हैं - त्याग और तपस्या। ... व्यवहार में धन की वृद्धि करते हुए याद की विधि भूलनी नहीं चाहिए... इसको कहा जाता है लौकिक स्थूल कर्म भी कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। कर्म अर्थात् व्यवहार और योग अर्थात् परमार्थ।'' अ.बापदादा31.12.70

''सभी बच्चे अपनी शक्ति प्रमाण सेवा के उमंग में सदा रहते हैं। सेवा ब्राह्मण जीवन का विशेष आक्यूपेशन है। सेवा के बिना यह ब्राह्मण जीवन खाली लगती है। सेवा में बिजी रहने का उमंग देख बापदादा विशेष खुश होते हैं।'' अ.बापदादा13.03.86

''स्नेह भाषा को भी नहीं देखता। स्नेह की भाषा सभी भाषाओं से श्रेष्ठ है। ... सेवा पुण्यात्मा बनाती है। पुण्यात्मा ही पूज्य आत्मा बनती है। अभी पुण्यात्मा नहीं तो भविष्य में पूज्य आत्मा नहीं बन सकते। पुण्यात्मा बनना भी जरूरी है।'' अ.बापदादा 27.3.86

''तीनों रूपों अर्थात नॉलेजफुल, पॉवरफुल, लवफुल और तीनों रीति अर्थात् मन्सा-वाचा-कर्मणा से एक ही समय सर्विस करना है। तीनों रूपों से तो सर्विस करनी ही है लेकिन तीनों रीति से भी करनी है। ... जिससे वे स्वयं महसूस करें कि वास्तव में यह ही मेरा असली परिवार है। ... एक ही समय तीनों से इकट्ठी सर्विस हो तो सिद्ध जरूर मिलेगी।'' अ.बापदादा 2.8.73

''जो सर्विस के निमित्त बनते हैं, उनमें भी नॉलेज ज्यादा है और लव भी है लेकिन पॉवर कम है। पॉवरफुल स्टेज की निशानी क्या होगी - वे एक सेकेण्ड में कोई भी वायुमण्डल या वातावरण को माया की कोई भी समस्या को खत्म कर देंगे, वे कभी हार नहीं खायेंगे। ... विधि में कमी होने के कारण ही सिद्धि में कमी है।'' अ.बापदादा 2.8.73

''तुम बच्चों को सर्विस करने के लिए उछल आनी चाहिए। ... जैसे बाप वैसे बच्चों को बनना चाहिए। बाप का ही परिचय देना है। ... सर्विस करने वाले कब भूख नहीं मर सकते।'' सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

''तीनों रूपों से और तीनों रीति से एक समय सर्विस करना है। नॉलेजफुल, पॉवरफुल और लवफुल। लव और लॉ - दोनों साथ-साथ आ जाते हैं। ... तीनों रीति से भी करनी है। तीनों रीति अर्थात् मन्सा-वाचा-कर्मणा।'' अ.बापदादा 2.8.72

''अपनी सर्विस फर्स्ट, अपनी सर्विस की तो दूसरों की सर्विस स्वत: हो जाती है। दूसरों की सर्विस में लग जाने से समय और संकल्प ज्यादा खर्च कर लेते हो। इस कारण जो जमा होना चाहिए वह नहीं कर पाते... दान करने की खुशी रहती है लेकिन उसको स्वयं में समाने की शक्ति नहीं रहती। खुशी के साथ शक्ति भी चाहिए।'' अ.बापदादा 10.5.72

''सेवा का उमंग-उत्साह स्वयं को भी निर्विघ्न बनाता है और दूसरों का भी कल्याण करता है। सेवाभाव में अगर अहम् भाव आ गया तो उसको सेवाभाव नहीं कहेंगे। सेवाभाव सफलता दिलाता है और अहम्-भाव मिक्स होने से मेहनत ज्यादा, समय ज्यादा, फिर भी स्वयं की सन्तुष्टि नहीं होती है।'' अ.बापदादा 1.10.87

''अपने को सदा स्व-स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेशी समझने से, इस स्थिति में स्थित रहने से एक सेकेण्ड में किसी भी आत्मा को नजर से निहाल कर सकेंगे। ... अभी सिद्धि चाहते हैं न कि साधना। तो सिद्धि अर्थात् सद्गति। तो ऐसी तड़फती हुई थकी हुई आत्माओं वा प्यासी आत्माओं की प्यास आप श्रेष्ठ आत्माओं के सिवाए कौन बुझायेंगे।'' अ.बापदादा24.10.71

''साकार बाप के अनुभव का एग्जाम्पुल देखा, आत्माओं की सेवा के सिवाए रुक सके? सिवाए सेवा के कुछ और दिखाई देता था? ऐसे ही आत्माओं को सिद्धि प्राप्त कराने की लगन में मगन बनो।'' अ.बापदादा24.10.71

''बाप के खजाने को अपने अनुभव द्वारा, जो अपना बनाया, ऐसा अपना बनाया हुआ ज्ञान रतन एक-दो को देना चाहिए, जिससे वह आत्मा भी इससे सहज अनुभवी बन जाये।... रॉयल भिखारी कहो। ऐसे भिखारी आत्माओं को भिखारीपन से छुड़ाओ, यह है बेहद की सेवा।'' अ.बापदादा18.10.71

''जब स्वयं मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभवी होंगे तब ही अन्य आत्माओं को मुक्ति अर्थात् अपने घर और जीवनमुक्ति अर्थात् स्वर्ग के गेट में जाने के पास दे सकेंगे। जब तक आप ब्राह्मण किसी भी आत्मा को गेट पास नहीं देंगे तो वह पास ही नहीं कर सकेंगे।'' अ.बापदादा24.10.71

''अब हर श्वास, हर संकल्प, हर सेकण्ड, हर कर्म, सर्व-शक्तियाँ, सर्व ईश्वरीय संस्कार, श्रेष्ठ स्वभाव व सर्व प्राप्त हुए खजाने विश्व की ही सेवा के प्रति हैं। ... रचना स्वयं के प्रति ही होती है, परन्तु रचयिता, रचना के प्रति होता है जो अभी ही मास्टर रचयिता नहीं बनते तो वह भविष्य में भी विश्व के मालिक नहीं बनते।'' अ.बापदादा 27.5.74

''स्थूल व सूक्ष्म साधनों को अलग करते हो, इसलिए प्रत्यक्ष फल नहीं मिलता... वाणी के साथ-साथ मन्सा चाहिए और कर्म साथ-साथ भी मन्सा चाहिए। अभी लास्ट टाइम है ना, लास्ट टाइम में जो भी श्रेष्ठ अस्त्र-शस्त्र होते हैं, वे सब यूज किये जाते हैं।'' अ.बापदादा 28.4.74

यज्ञ सेवा का राज

परमात्मा कैसे रुद्र ज्ञान यज्ञ की स्थापना करते हैं और जो आत्मायें इस यज्ञ की सेवा करती हैं, उनको क्या प्राप्ति होती है। दुनिया में भी यज्ञ की सेवा का फल अति श्रेष्ठ गाया हुआ है। परन्तु वे होते हैं स्थूल यज्ञ। शिवबाबा ने अभी बेहद का यज्ञ रचा है। जो बाबा के इस यज्ञ में तन-मन-धन से सेवा करता है, उसको महान पुण्य की प्राप्ति होती है। उसको इस जीवन खुशी और भविष्य जीवन सुख-शान्ति सम्पन्न श्रेष्ठ पद की प्राप्ति होती है। स्थूल यज्ञ की सेवा में भी ब्राह्मणों को ही रखते हैं। शिवबाबा के यज्ञ की सेवा भी ब्राह्मण ही करते हैं। वास्तव बाबा का यज्ञ-सेवा से भाव यज्ञ की तन से सेवा करने का होता है। वैसे तो तन-मन-धन से जो भी सेवा करते हैं, वह यज्ञ सेवा ही है।

बाबा के इस यज्ञ में स्थूल और सूक्ष्म दो प्रकार की सेवायें हैं और दोनों ही सेवाओं का अपना-अपना फल है। जो जितना तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा से यज्ञ सेवा करता है, वह उतना ही उसका फल पाता है। यह यज्ञ आत्मा को मनवांछित फल देने वाला है।

''यज्ञ सेवा का फल बहुत बड़ा मिलता है क्योंकि यज्ञ सेवा अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं की सेवा, यज्ञ पिता के यज्ञ की सेवा। ब्रह्मा भोजन का कणा-कणा बहुत वेल्यूबुल है और आप ब्राह्मणों को वह ब्रह्मा भोजन कितने प्यार से प्राप्त होता है। इसलिए भक्ति में कहते हैं शिव के भण्डारे भरपूर काल कंटक सब दूर।'' अ.बापदादा 15.12.04

''यह ज्ञान सुनकर फिर औरों को सुनाना है। भल सर्विस तो और भी बहुत है परन्तु वह हुई स्थूल सर्विस। ... उसका भी फल अवश्य मिलता है। समझते हैं ज्ञानी तू आत्माओं की हम सर्विस करते हैं... बाकी यह जरूर है कि ज्ञानी तू आत्मा बाप को अति प्रिय लगते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि दूसरे प्रिय नहीं हैं... बाप अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं तो फिर औरों को दान देने की सर्विस करनी चाहिए। सिर्फ मम्मा-बाबा के पिछाड़ी नहीं पड़ना चाहिए। सर्विस पर लगना है तब बाबा राज़ी हो... समझाने वाले में ही अगर कोई विकार होगा तो किसको तीर नहीं लगेगा। अगर किसको तीर लगता भी है तो वह शिवबाबा समझाते हैं। ... बाप कहते हैं - मुझे बच्चों का शो करना होता है। ऐसे नहीं कि उसका फल उनको मिलेगा। नहीं, बच्चों को अपनी मेहनत का फल मिलेगा।'' सा.बाबा 23.1.02 रिवा.

''भल भोजन बनाते हो, वह है तो स्थूल कार्य लेकिन भोजन में ईश्वरीय संस्कार भरना, भोजन को पॉवरफुल बनाना वह तो ईश्वरीय सर्विस हुई ना। जैसा अन्न वैसा मन कहा जाता है। तो भोजन बनाते समय ईश्वरीय स्वरुप होगा तब उस अन्न का असर मन पर होगा।'' अ.बापदादा 30.5.71

आलराण्डर सेवाधारी का राज

आलराण्डर सेवाधारी वह है जो हर समय हर सेवा में अपने को योग्य सिद्ध कर दे अर्थात् हर सेवा को कर सके और हर एक के साथ एडजस्ट होकर सेवा कर सके।

''जो आलराउण्डर होगा वह एक तो सर्विस में रहेगा, दूसरा स्वभाव व संस्कार में भी सभी से मिक्स होजाने के गुण वाला होगा, तीसरा कोई भी स्थूल कार्य, जिसको कर्मणा कहा जाता है, उसमें भी हर जगह फिट हो जायेगा... इस एक-एक बात के आधार पर कर्मों की रेखायें बनती हैं।'' अ.बापदादा 4.5.73

मन्सा सेवा का राज़ / मन्सा सेवा के विधि-विधान और उसके महत्व का राज

मन्सा शक्ति बहुत श्रेष्ठ है और मन्सा शक्ति से अनेक असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं, इसके यज्ञ में अनेक उदाहरण हैं। जहाँ कर्म और वाचा की गम नहीं होती अर्थात् जो कार्य कर्म और वाचा से सफल नहीं होते, वे मन्सा शक्ति से सफल हो जाते हैं। मन्सा शक्ति ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग दोनों में प्रभावशाली है परन्तु यथार्थ मन्सा शक्ति का ज्ञान अभी परमात्मा ने बताया है और उसके प्रयोग का विधि-विधान भी बताया है, जिससे उसको विश्व-कल्याण के कार्य में सफल कर सकते हैं।

''जैसे आप मन्सा शक्ति के आधार से प्रकृति का परिवर्तन वा कल्याण करते हो तो आकाश अथवा वायुमण्डल आदि को समीप जाकर तो नहीं बोलेंगे। ... वैसे विश्व की अन्य आत्मायें जो आप लोगों के आगे नहीं आ सकेंगी, उनको दूर रहते हुए आप अपनी रुहानियत की शक्ति से बाप का परिचय वा बाप का मुख्य सन्देश है, वह मन्सा द्वारा भी उनकी बुद्धि में टच कर सकते हो।'' अ.बापदादा 4.8.72

''बिना साज के राज समझ सकते हो ? ऐसे अभ्यासी बने हो जो राज आपके मन में हैं, वे राज दूसरों को बिना साज के समझा सकते हो ? पिछाड़ी की सेवा में साज समा जायेगा, बिना साज के राज को समझाना पड़ेगा। तो ऐसी प्रैक्टिस चाहिए।''

अ.बापदादा 1/31.11.71

''पहले-पहले आपकी सूरत से साक्षात्कार अधिक होते थे, देवी का रूप अनुभव करते थे। अभी स्पीकर लगते हो, नॉलेजफुल लगते हो लेकिन पॉवरफुल नहीं लगते हो। ... सबको फोर्स देने के निमित्त आत्मायें हो। उन्होंको अव्यक्त स्थिति में ऐसा चढ़ा दो जो इस धरती की छोटी-छोटी बातों की आकर्षण उनको खींच न सकें।'' अ.बापदादा 9.10.71

''विशेष आत्माओं को साक्षात् बापदादा समान आत्माओं के प्रति अपनी कल्याण की भावना से, अपने रुहानी स्नेह के स्वरुप से, अपने सूक्ष्म शक्तियों द्वारा आत्माओं में बल भरना चाहिए। जैसे अव्यक्त रुप में बापदादा चारों ओर बच्चों की सेवा करते हैं।''

अ.बापदादा18.10.71

''जो स्वयं के भी संस्कारों से मजबूर हैं वे अन्य को उनकी मजबूरियों से स्वतन्त्र कर सकें, यह सदाकाल के लिए नहीं हो सकता। टेम्पेरी प्रभाव तो पड़ सकता है।'' अ.बापदादा 28.4.74

''शुभ-चिन्तक बनना - यही सहज रूप की मन्सा सेवा है, जो चलते-फिरते हर ब्राह्मण आत्मा सर्वात्माओं के प्रति कर सकती है। शुभ-चिन्तक बनने के वायब्रेशन वायुमण्डल को वा चिन्तामणी आत्मा की वृत्ति को बहुत सहज परिवर्तन कर देंगे।''

अ.बापदादा10.11.87

यथार्थ सोशल सर्विस का राज

दुनिया में अनेक मनुष्य और संस्थायें समाज सेवा के रूप में अनेक प्रकार की सेवायें करती हैं, जिसको सोशल सर्विस कहते हैं। यथार्थ सोशल सर्विस क्या है, वह भी परमात्मा ने अभी बताया है कि अभी तुम आत्मायें ज्ञान-योग से आत्माओं की जो सेवा करते हो, वही सच्ची समाज सेवा है क्योंकि उसके फलस्वरूप ही आत्मायें सुख पाती हैं, आत्माओं की चढ़ती कला होती है, समाज और विश्व में सुख-शान्ति का साम्राज्य होता है। यही सच्ची समाज सेवा है। बाकी दुनिया में सोशल सर्विस के नाम से जो सेवा करते हैं, वह कोई यथार्थ सोशल सर्विस नहीं है क्योंकि उसके बाद भी आत्माओं की गिरती कला ही होती जा रही है, आत्माओं में, समाज में और समग्र विश्व में दुख-अशान्ति बढ़ती ही जाती है परन्तु यह सत्य है कि जो भी आत्मा शुभ-भावना शुभ-कामना से सेवा करती है, उसका कुछ अच्छा फल तो अल्पकाल के लिए उसको मिलता ही है। सत्य परन्तु कटु-सत्य तो ये है कि दुनिया में जो समाज सेवा करने वाले हैं, वे भी देहाभिमानी और विकारों के वशीभूत हैं और जिनकी सेवा करते वे भी देहाभिमानी हैं और विकारों के वशीभूत हैं, जिससे दोनों और ही पतित बनते जाते हैं। सच्ची सोशल सर्विस का ज्ञान और करने की प्रेरणा परमात्मा बाप ही देते हैं, जिस सेवा से सारा विश्व स्वर्ग बन जाता है।

''इस बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना चाहिए... पुरानी दुनिया का विनाश न हो तो नई दुनिया कैसे बनेगी... यह ड्रामा कैसे शुरू होता है, कौन-कौन मुख्य एक्टर्स हैं, वह जानना चाहिए ना... तुम हो रुहानी सोशल वर्कर्स, तुम रूहों को समझाते हो... संस्कार आत्मा में ही रहते हैं।'' सा.बाबा 2.7.05 रिवा.

खुदाई खिदमतगार का राज

खुदा कैसे आकर आत्माओं की खिज़मत करते हैं और आत्माओं को आत्माओं की खिज़मत करना सिखाते हैं, यह भी खुदा खुद ही आकर बताते हैं।

''बाप भी आये हैं खिदमत करने। पतितों को पावन बनाने की खिदमत करते हैं... तुम बच्चे ही सच्चे-सच्चे खुदाई खिदमतगार हो। बाबा सच्चा खुदाई खिदमतगार उसे कहते हैं, जो कम से कम आठ घण्टा आत्माभिमानी रहने का पुरुषार्थ करते हैं। कोई कर्म-बन्धन न रहे तब खिदमतगार बन सकते हो।'' सा.बाबा 19.7.05 रिवा.

निर्विकारी और विकारी जीवन का राज

आत्मा मूल स्वरूप में निर्विकारी है। सतयुग-त्रेता में आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है, जिससे उसका देह पर पूरा अधिकार होता है, जिससे विकारों का कोई प्रभाव आत्मा पर नहीं होता है अर्थात् सतयुग-त्रेता में विकार होते ही नहीं। वहाँ

आत्मा को विकारों का ज्ञान भी नहीं होता है। परन्तु आत्मा की ये शक्ति सतयुग से ही ह्रास होने लगती है और द्वापर के आदि में आत्मा कर्मेन्द्रियों पर अपना शासन खो देती है और देहाभिमान आत्मा पर प्रभावी हो जाता है, जिससे आत्मा में विकारों की प्रवेशता होती है और आत्मा विकारी बन जाती है। सतयुग-त्रेता की निर्विकारी दुनिया अमर लोक कही जाती है क्योंकि वहाँ आत्मा को न मृत्यु का भय होता है और न ही मृत्यु का दुख होता है। द्वापर-कलियुग की विकारी दुनिया को मृत्यु लोक कहा जाता है क्योंकि विकारों के वशीभूत आत्मायें को मृत्यु का भय भी होता है तो मृत्यु का दुख भी होता है।।

''जैसे आपके भविष्य यादगारों का गायन है सम्पूर्ण निर्विकारी। ... अगर स्वप्न में भी किसी भी प्रकार विकार के वश किसी भी परसेन्टेज में होते हो तो सम्पूर्ण निर्विकारी कहेंगे? अगर स्वप्नदोष भी है वा संकल्प में भी विकार के वशीभूत हैं तो कहेंगे विकारों से परे नहीं हुए हैं।'' अ.बापदादा 9.5.72

वसुधैव कुटुम्बकम् का राज़ / वसुधैव कुटुम्बकम् कब और कैसे?

वसुधैव कुटुम्बकम् भारतीय सभ्यता का प्राण है परन्तु सारी वसुधा कैसे कुटुम्ब अर्थात् परिवार है, इस सत्य का ज्ञान भारतवासियों को भी यथार्थ में नहीं है। अभी परमात्मा ने आकर बताया कि कैसे तुम सर्व आत्मायें एक पिता के बच्चे भाई-भाई हो और प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन हो। सभी एक ही ईश्वरीय परिवार के भाती हो और एक ही कल्प-वृक्ष के पत्ते हो। सब धर्म एक ही बीज और तने से निकले हैं। इस सत्य का ज्ञान होने से ही हम आत्माओं में विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति स्नेह और सेवाभाव जाग्रत हुआ है। संगमयुग की ये भावना ही भक्ति मार्ग में सर्व आत्माओं के प्रति प्यार की भावना स्थिर रखती है, जिससे शास्त्रों में भी वसुधैव कुटुम्बकम की बात लिखी गई है।

बाह्य दृष्टिकोण से भी देखें तो भारत में अनेक प्रतापी राजा हुए हैं परन्तु किसी ने भी किसी देश को हड़पने का पुरुषार्थ नहीं किया है भले ही वे आपस में लड़ते रहे हैं। पृथ्वीराज चौहान ने अफगानिस्तान के शासक मोहम्मद गोरी को 16 बार हराया अर्थात् उसके आक्रमण को नाकाम करके उसको बन्दी बनाया और क्षमा कर दिया परन्तु उसी मोहम्मद गोरी से 17वीं बार पृथ्वीराज हार गया और उसने पृथ्वीराज को बन्दी बना लिया, उसके बाद क्या हुआ वह तो सभी जानते हैं, ये भारतीय सभ्यता और आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्माओं के संस्कारों की बात है।

''सबसे पहली प्रवृत्ति है अपनी देह की प्रवृत्ति। फिर है देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति... ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी के नाते से सारे विश्व की आत्माओं से साकारी भाई-बहन का सम्बन्ध।'' अ.बापदादा24.10.75

शिव और सालिग्राम का राज

शिव और सालिग्राम का गायन भी है और रुद्र-यज्ञ रचते हैं तो शिव और सालिग्राम बनाकर पूजा करते हैं। अनेक मन्दिरों में भी शिव और सालिग्रामों की पूजा होती है परन्तु उनके विषय में यथार्थ ज्ञान नहीं होता है कि ये कौन है, इनका आपस में क्या सम्बन्ध है। शिव और सालिग्राम का यथार्थ राज़ भी अभी पता पड़ा है कि ये आत्मा और परमात्मा के निराकार स्वरूप का यादगार है और जो आत्मायें संगमयुग पर साकार रूप में पधारे परमात्मा के साथ विश्व को पावन बनाने में सहयोगी बनते हैं, उनके निराकार स्वरूप की पूजा है। इसलिए रुद्र यज्ञ में शिव और सालिग्राम की पूजा भी होती है और गायन भी है। यह सब करते भी बुद्धि में यथार्थ रीति नहीं बैठता था क्योंकि परमात्मा को सर्वव्यापी समझते थे, आत्मा सो परमात्मा समझते थे। आत्मा, परमात्मा का अंश है और परमात्मा में लीन हो जाती है, ऐसी अयथार्थ, विवेकहीन मान्यतायें बुद्धि में बैठी हुई थीं इसलिए इस सत्य का ज्ञान बुद्धि में नहीं बैठता था। अभी परमात्मा ने इसका यथार्थ राज बताया है और इनकी पूजा क्यों होती है, उसका भी ज्ञान दिया है तथा अभी हम परमात्मा शिव के साथ प्रत्यक्ष में भी वह पार्ट बजा रहे हैं। यह हमारे परम सौभाग्य की बात है।

परमात्मा के साथ पार्ट बजाने का राज

देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल आत्मिक स्वरूप की स्थिति परमानन्दमय है और जब परमात्मा का हाथ हमारे सिर पर हो, परमात्मा का साकार में साथ हो और सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान बुद्धि में हो तो वह स्थिति कितनी आनन्दमय होगी, जिसकी कल्पना करने से ही मन हर्ष से भर जाता है। इसी स्थिति के लिए रसखान कवि ने कहा है - कोटिन हू कलधौत के धाम करील के कुन्जन ऊपर वारों। अर्थात् उस सुख के आगे विश्व की समस्त धन-सम्पदा से प्राप्त सुख भी फीका है। उस परम सुख का हम अभी अनुभव करते हैं और कर सकते हैं। जिसको ये अनुभव होगा, उसको और कुछ प्राप्ति की इच्छा स्वप्न में भी हो नहीं सकती। उसके सारे कर्तव्य स्वत: सम्पन्न होते रहेंगे। हमारा पुरुषार्थ है उस स्थिति में रहकर सदा परमात्मा के साथ पार्ट बजाने का। भक्ति मार्ग में तो केवल इस स्थिति का गायन ही करते हैं, इसकी आश लगाकर बैठे हैं परन्तु हम अभी उसका अनुभव करते हैं और कर सकते हैं।

दोस्त और दुश्मन का राज

इस जगत कौन हमारा दोस्त है और कौन दुश्मन है, यह भी एक रहस्यमय पहेली है, जिसका राज़ भी परमात्मा ही आकर बताते हैं। वास्तव में इस विश्व-नाटक में न कोई हमारा दोस्त है और न ही दुश्मन है, सभी अपना-अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजाते हैं। ये सुख-दुख, जीत-हार का खेल है इसलिए जिसके साथ सुख पार्ट चलता है, उसे दोस्त मान लेते और जिसके दुख का पार्ट चलता है, उसे दुश्मन मान लेते हैं परन्तु वास्तविक दोस्त और दुश्मन कौन है, यह नहीं समझ पाते, जो परमात्मा ने बताया है कि ये देहाभिमान तुम्हारा मूल दुश्मन है, जिसके कारण ही तुम दुखी हुए हो और मैं तुम्हारा दोस्त हूँ क्योंकि मैं ही तुमको ज्ञान देकर देही-अभिमानी बनाकर इस दुश्मन से मुक्त करता हूँ।

‘‘बाबा ने समझाया है कि तुम्हारा सभी से बड़ा दुश्मन कौन है? जो सयाने होंगे वह तो कहेंगे बड़ा दुश्मन देहाभिमान है और जो अयाने होंगे वह कहेंगे काम महाशत्रु है। बाप समझाते हैं तुम्हारा बड़ा शत्रु देहाभिमान है, जिसको जीतने में मुश्किलात होती है। देही अभिमानी बनने में ही मेहनत है।’’ सा.बाबा 31.1.72 रिवा.

खुदा दोस्त का राज

खुदा दोस्त का बहुत गायन है परन्तु खुदा हमारा दोस्त कैसे है और कब बनता है, यह कोई नहीं जानते। इस सत्य का ज्ञान और अनुभव परमात्मा ही आकर कराते हैं और करा रहे हैं कि कैसे परमात्मा हमारा दोस्त बना है। दोस्त के समान वे हमको अपने दिल की बात बताते हैं और हमारे दिल की बात सुनते भी हैं, दोस्त के समान हमारे साथ खेलते-खाते भी हैं, सहयोग भी देते हैं और हमारे हित के लिए सहयोग भी देते हैं।

‘‘बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसे मेरे को कोई विरला ही जानते हैं। तुम बच्चों में भी कोई विरले ही एक्यूरेट जानते हैं। जो जानते हैं, उनको अन्दर में बहुत खुशी रहती है।... इस समय खुदा तुम बच्चों का दोस्त है। इनमें प्रवेश कर तुम्हारे साथ खेलते भी हैं।’’ सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

‘‘अपने को अकेला समझने से चलते-चलते जीवन में उदासी आ जाती है। अतीन्द्रिय सुखमय जीवन...उस समय नीरस व बिल्कुल असार अनुभव करते हो। त्रिनेत्री होते हुए भी कोई राह नज़र नहीं आती। क्या करूं, कहाँ जाऊं, कुछ समझ में नहीं आता। खुद जीवन-मुक्ति के गेट्स खोलने वाले को कोई ठिकाना नज़र नहीं आता। त्रिकालदर्शी होते हुए अपने वर्तमान को नहीं समझ सकते।’’ अ.बापदादा 6.9.75

दुश्मन को भी दोस्त बनाने का राज

वास्तविकता तो ये है कि इस विश्व में न कोई हमारा दोस्त है और न दुश्मन है। सब आत्मायें इस विश्व-नाटक में अविनाशी पार्टधारी हैं और हम सभी आत्मायें एक परमात्मा के अविनाशी बच्चे भाई-भाई हैं। फिर भी देहाभिमान के वशीभूत किसी से जाने-अन्जाने दुश्मनी हो भी जाये तो विश्व-नाटक की यथार्थता का ज्ञान और कर्मों की गुह्य गति को समझकर उस

आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखने से, योग का दान करने से वह दोस्त बन जायेगा। ये अचूक अस्त्र है, जो कभी निष्फल नहीं जा सकता। इसमें यह भी सोचने का स्थान नहीं है कि यह कार्य करेगा या नहीं। यह सोचना भी संशय है और संशय वाले की कब विजय हो नहीं सकती। सभी आत्मायें इस विश्व-नाटक में भिन्न-भिन्न पार्ट बजाती हैं, यथार्थ में कोई किसका दुश्मन नहीं है।

''इस गोल्डन जुबली से क्या श्रेष्ठ गोल्डन संकल्प किया? ... हर सेकेण्ड गोल्डन हो, हर संकल्प गोल्डन हो, सदा हर आत्मा के प्रति स्नेह के खुशी के सुनहरे पुष्पों की वर्षा करते रहो। चाहे दुश्मन भी हो लेकिन स्नेह की वर्षा दुश्मन को भी दोस्त बना देगी।'' अ.बापदादा 16.2.86

''देह की दृष्टि के बजाय देही की दृष्टि परिवर्तन करना, व्यक्त सम्पर्क को अव्यक्त-अलौकिक सम्पर्क में परिवर्तन करना - इसी में ही कमी होने से सम्पूर्ण स्टेज को नहीं पा सकते। ... कोई अपने संस्कार वा स्वभाव के रुप में आपके सामने परीक्षा के रुप में आवे लेकिन आप सेकेण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल के संस्कार वा स्वभाव धारण कर सकते हो।'' अ.बापदादा24.12.72

''ब्राह्मण कथा वा ज्ञान सुना कर स्थापना तो बहुत जल्दी कर लेते हो, लेकिन विनाश और पालना का जो कर्तव्य है उसमें और अटेन्शन चाहिए। पालना करने के समय कल्याणकारी भावना वा वृत्ति रख कर कोई भी आत्मा की पालना करो तो कैसी भी अपकारी आत्मा पर अपनी पालना से उसको उपकारी बना सकते हो।'' अ.बापदादा 12.3.72

अपकारी पर भी उपकार करने का राज

वास्तव में कोई भी आत्मा हमारा अपकार न करती है और न ही कर सकती है। हर आत्मा विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियमानुसार अपना एक्यूरेट पार्ट बजा रही है। हर आत्मा अपने ही कर्मानुसार सुख-दुख को प्राप्त करती है। अपकारी-उपकारी की भावना भी यथार्थ ज्ञान की कमी का परिचायक है। बाबा ने भी कहा है जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है। फिर अपकारी कहाँ से आया! इस सत्य को जानते हुए जो भी आत्मा निमित्त मात्र भी हमको अपना अपकार करते हुए अनुभव हो तो भी उस पर भी उपकार करने की श्रीमत बाबा ने हमको दी है।

''अपकारी पर उपकार करने वाले का गायन है। उपकारी पर उपकार करना - यह बड़ी बात नहीं है। आपको गिराने की कोशिश करे... फिर भी आपको उसके प्रति सदा शुभचिन्तक का अडोल भाव हो, बात पर भाव न बदले।''

अ.बापदादा 19.7.72

''संस्कारों की समानता वाली सखी और ग्लानि करने वाली दोनों के लिए अन्दर स्नेह और सहयोग में अन्तर न हो। इसको कहा जाता है। अपकारी पर उपकार की दृष्टि अथवा विश्व कल्याणकारी बनना।'' अ.बापदादा 29.8.71

''हमारी गलती कोई दूसरा फैलायेगा तो बुरा लगेगा। इसी प्रकार दूसरे की गलती को भी अपनी गलती समझ फैलाना नहीं चाहिए। व्यर्थ संकल्प नहीं चलाने चाहिए बल्कि उनको भी समा देना चाहिए। इतना एक-दो में फेथ हो।'' अ.बापदादा 9.12.75

''जब अपकारियों पर भी उपकार करना है तो संगठन में भी एक-दूसरे के प्रति रहम की भावना रहे। अभी रहम की भावना कम रहती है क्योंकि आत्मिक स्थिति का अभ्यास कम है।'' अ.बापदादा 9.12.75

''जैसे द्वापर में आप सबने बाप की ग्लानि की, लेकिन बाप ने ग्लानि भी गायन समझ कर स्वीकार की और ग्लानि के रिटर्न में भक्ति का फल-ज्ञान दिया, न कि घृणा की। ... ऐस श्रेष्ठ तकदीरवार बच्चे बाप समान हर आत्मा को अपने से भी आगे बढ़ाने की शुभ भावना रखते हुए विश्व-कल्याणकारी बनेंगे।'' अ.बापदादा 9.9.75

''गायन है - निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोये। ... बेहद का बाप कहते हैं - हमारी निन्दा तुम बच्चों ने सबसे जास्ती की है, सबसे नजदीक वाले मित्र भी तुम बच्चे ही बनते हो। अपकारी भी तुम बच्चे बनते हो, बाप उपकार भी तुम पर ही करते हैं। यह ड्रामा कैसा बना हुआ है। यह बिचार सागर मंथन करने की बातें हैं।'' सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

''गाली तो खानी ही है, यह भी खाते हैं ना। गाली देने वालों पर कोई पाप नहीं है क्योंकि पहचानते नहीं हैं। यह है ही तमोप्रधान दुनिया।'' सा.बाबा 5.8.71 रिवा.

सप्ताह का राज़ / सप्ताह का राज अर्थात् सप्ताह कोर्स, सप्ताह के सात दिन, भागवत सप्ताह आदि का राज

भारत में विशेष और विश्व में आम सप्ताह का विशेष महत्व है। भागवत सप्ताह, गीता सप्ताह, रामायण सप्ताह आदि आदि के पाठ का विशेष महत्व है। भारत में शादी के अवसर पर कुमार-कुमारी के सम्बन्ध को पक्का करने के लिए अग्नि को साक्षी रखकर ब्राह्मणों के द्वारा उसके सात फेरे लगवाये जाते हैं। इस विश्व के सभी देशों में काल-चक्र की गणना के लिए सात दिन का सप्ताह माना जाता है और सातो दिनों के अलग-अलग नाम हैं। ये सप्ताह के सात दिन कैसे बनाये गये, सप्ताह का इतना महत्व क्यों है, इस सत्य का ज्ञान भी अभी पता चला है। परमात्मा ने इस ज्ञान को सात भागों में विभाजित कर सात दिन में पढ़ाने का विधान बनाया है, इसलिए इसको सप्ताह कोर्स कहा गया। बाबा चेलेन्ज करते हैं कि कोई यथार्थ रीति ये सप्ताह कोर्स कर ले तो वह अभी ही कर्मातीत, मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति को पा सकता है अर्थात् उसका अनुभव करेगा। सप्ताह कोर्स अर्थात् सात दिन एक परमात्मा के और कुछ भी याद न आये। इसकी यादगार में ही सप्ताह का इतना महत्व है।

''बाप भी गुप्त है, नॉलेज भी गुप्त है, वर्सा भी गुप्त है। नया कोई भी सुनकर मूँझ पड़ेंगे इसलिए 7 दिन की भट्ठी में बिठाया जाता है। वे जो 7 रोज भागवत वा रामायण आदि रखते हैं, वह इस सात रोज की भट्ठी का यादगार है।'' सा.बाबा 4.2.05 रिवा.

''अपने को आत्मा समझना, इसमें ही मेहनत है। इस अभ्यास के लिए एकान्त चाहिए। सात रोज की भट्ठी का कोर्स बहुत कड़ा है। कोई की याद न आये, किसको पत्र भी नहीं लिख सकते। ... याद की यात्रा के लिए एकान्त चाहिए।''

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति और राहू की दशा का राज

वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति कौन है, उसका ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है। आत्मा पर और विश्व पर विभिन्न प्रकार की दशायें बैठती हैं, जो मनुष्य के सुख-दुख का आधार बनती हैं। बृहस्पति की दशा को सबसे श्रेष्ठ दशा माना जाता है। भारत में कोई शुभ कार्य करते या विद्या अध्ययन के लिए बच्चों को बृहस्पतिवार से ही स्कूल में भरती करना अच्छा समझते हैं। बृहस्पति एक नक्षत्र भी है परन्तु बृहस्पति की दशा का यथार्थ राज़ क्या है, वह अभी पता पड़ा है कि परमात्मा इस कल्प-वृक्ष का पति अर्थात् मालिक अर्थात् बीजरूप है, इसलिए उनको वृक्षपति भी कहते हैं। उनके इस धरा पर आने से ही विश्व पर और आत्माओं पर वृक्षपति की दशा होती है और उनकी चढ़ती कला आरम्भ होती है।

जैसे बृहस्पति की दशा सबसे श्रेष्ठ मानी जाती है, वैसे ही राहू की दशा सबसे खराब मानी जाती है। जिस पर राहू की दशा बैठती है, उसका सर्व नाश हो जाता है। अभी ज्ञान मार्ग में हम पर बृहस्पति की दशा बैठी है परन्तु चलते-चलते किस पर राहू की दशा बैठ जाती है तो उसका सर्व नाश निश्चित ही हो जाता है। वह न इस जहान का रहता और न उस जहान का रहता अर्थात् दोनों जहान से चला जाता है। जिस पर राहू की दशा बैठती है, उसको ब्राह्मण लोग दान-पुण्य करने की प्रेरणा देते हैं, जिससे राहू का ग्रहण उतर जाये।

''बाप कहते हैं - यह सारा ईश्वरीय झाड़ है, मैं इस झाड़ का बीजरूप हूँ।... सब आत्माओं का बाप एक ही है, सभी उनको याद करते हैं।'' सा.बाबा 22.11.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - अब तुम्हारी आत्मा पर बृहस्पति की दशा है। वृक्षपति भगवान तुमको पढ़ा रहे हैं तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। ... ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन करने की आदत डालनी चाहिए।'' सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

''इस समय भारत पर राहू का ग्रहण बैठा हुआ है।... दे दान तो छूटे ग्रहण। अब बाप कहते हैं - यह 5 विकारों का दान दे दो तो छूटे ग्रहण। अभी सारी सृष्टि पर ग्रहण लगा हुआ है, 5 तत्वों पर भी ग्रहण लगा हुआ है क्योंकि तमोप्रधान हैं।''

सा.बाबा 10.2.05 रिवा.

वर्णों का राज

भारत में समाज की व्यवस्था के लिए समाज को कर्म के अनुसार चार वर्णों में बांटा गया है। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शुद्र, जिसको विराट रूप में भी प्रदर्शित किया गया है। यथार्थ राज़ अभी परमात्मा ने बताया है कि चार वर्ण है देवता, क्षत्री, वैश्य, शूद्र और पांचवा वर्ण है ब्राह्मणों का, जो विराट रूप में चोटी के रूप में दिखाया गया है। ब्राह्मण वर्ण है सबसे ऊंच वर्ण।

सतयुग-त्रेता में भल ये सभी वर्णों के लोग थे और सभी अपना-अपना कार्य करते थे किन्तु वहाँ ऊंच-नीच, अहंकार-हीनता की कोई भावना नहीं थी, जैसे द्वापर से अभी कलियुग के अन्त तक देखने में आती है। अभी विश्व में वर्ण-संकर पैदा हो गया है अर्थात् किसी वर्ण का व्यक्ति अपने वर्ण के अनुसार कर्म करने में सन्तुष्टि का अनुभव नहीं करता, इसलिए वह दूसरे वर्णों के कार्य में प्रवृत्त होता है, जिससे वह न अपने वर्णानुसार कार्य करने में दक्ष है और न दूसरे वर्ण के कार्य में दक्षता प्राप्त कर पाता है। परन्तु सतयुग-त्रेतायुग में ऐसी दशा नहीं थी।

आयु के हिसाब से भी चार अवस्थायें होती हैं - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास, जिसका राज़ भी परमात्मा ने बताया है।।

''रुहानी बाप रुहानी बच्चों को समझाते हैं, पढ़ाते हैं तो बच्चों को कितना फखुर होना चाहिए। ... तुम अपने को इतना ऊंच नहीं समझते हो, जितना बाप तुमको ऊंच समझते हैं। तुम बच्चों को बहुत नशा रहना चाहिए क्योंकि तुम बहुत ऊंच कुल के हो।''

सा.बाबा 19.8.04 रिवा.

''अब मैं आत्मा ब्राह्मण कुल में आई ... यह है ब्राह्मण वर्ण। यह वर्ण तुम्हारे ही होते हैं, उन्होंके (और धर्म वालों के) नहीं होते हैं... सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, यह मैं तुम बच्चों को कल्प-कल्प समझाता हूँ।'' सा.बाबा 18.7.05 रिवा.

बाजोली का राज

बच्चे बाजोली खेलते हैं, भक्त लोग बाजोली लगाते तीर्थों पर जाते हैं परन्तु उसका यथार्थ अर्थ नहीं जानते हैं, जो ज्ञान सागर बाप ने बताया है। बाबा ने बाजोली की तुलना सृष्टि-चक्र से की है अथवा कहें कि इस सृष्टि-चक्र की यादगार में ही बच्चे बाजोली का खेल खेलते हैं और भक्त बाजोली करते तीर्थों पर जाना अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। जैसे बाजोली में पैर और सिर का मिलन होता है ऐसे ही पुरुषोत्तम संगमयुग पर शूद्र अर्थात् कलियुगी मनुष्य और सतयुगी पावन देवताओं का मिलन ब्राह्मणों के रूप में होता है। कल्प की उच्चतम स्थिति और निम्नतम स्थित का मिलन अभी होता है। जो इस बाजोली अर्थात् सृष्टि-चक्र के राज़ को यथार्थ रीति समझ लेता है और उसको बुद्धि में धारण कर लेता है वह महान पुण्य का अधिकारी बन जाता है। यह बाजोली सृष्टि-चक्र की यादगार है, जिस चक्र के फिराने से विकारों का गला कटता है, आत्मा पावन बनती है।

''मनुष्य सृष्टि का सिजरा तो प्रजापिता ब्रह्मा से ही चलेगा ना। ... तुम सब एडॉप्टेड बच्चे हो। अभी तुम ब्राह्मण बने हो, फिर तुमको देवता बनना है। शूद्र से ब्राह्मण, फिर ब्राह्मण से देवता - यह बाजोली का खेल है। ... यह है बेहद का ड्रामा।''

सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

आत्मा-परमात्मा के मंगल मिलन मेले का राज

दुनिया में भक्त परमात्मा से मिलने के लिए अनेक प्रकार की त्याग-तपस्या करते हैं परन्तु परमात्मा से आत्मा का मिलन कब, कहाँ और कैसे होता है, इस सत्य को ही नहीं जानते, जो परमात्मा ने अभी बताया है कि कैसे परमात्मा जब ब्रह्मा के मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं तो जीवात्माओं का जीवरूप में अवतरित हुए परमात्मा से मंगल मिलन होता है, जिसकी यादगार में गंगा-सागर का मेला लगता है। गायन भी है - आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सत्गुरु मिला दलाल। यही सच्चा मंगल मिलन है, जो आत्मा की चढ़ती कला का आधार है।

विराट स्वरूप का राज

विराट रूप सारे कल्प में आत्माओं की स्थिति का साक्षात्कार कराता है। ब्राह्मण, देवता, क्षत्री, वैश्य, शूद्र वर्णों में कैसे आत्मायें भ्रमण करती हैं। विराट रूप का सारे कल्प से सम्बन्ध है, यह भी अभी पता पड़ा है क्योंकि पहले तो इसे समाज की वर्ण व्यवस्था का ही परिचायक समझते थे।

''सारा विराट रूप जरूर बच्चों की बुद्धि में रहता होगा। हम अभी ब्राह्मण बने हैं, फिर हम देवता ... बनेंगे। यह तो बच्चों को याद है ना। ... उत्थान और पतन का सारा राज़ बुद्धि में रहे। ... अभी हम शूद्र भी नहीं हैं और पूरे ब्राह्मण भी नहीं बने हैं। अगर अभी पक्के ब्राह्मण हों तो शूद्रपने की एक्ट न हो... तुम पुरुषार्थ करते-करते पूरा ब्राह्मण बन जायेंगे।''

सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''ब्राह्मणों को विराट रुप में चोटी का स्थान दिया गया है। जैसे स्थान ऊंच चोटी का है, वैसे ही स्थान के साथ-साथ स्थिति भी ऊंची है? जैसे ऊंचा नाम वैसी ऊंची शान और वैसा ही ऊंचा काम। जैसे बाप के लिए गायन है - ऊंचे ते ऊंचे भगवन, वैसे बच्चों का भी गायन है।'' अ.बापदादा 23.1.76

सच्ची तपस्या का राज

देह सहित देह के सर्व धर्म छोड़ एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद ही सच्ची तपस्या है, जिससे आत्मा पावन बनती है। परमात्मा ज्ञान का सागर पतित-पावन, निराकार है, वह न्यायकारी समदर्शी है। वह कल्प के संगम युग पर आकर आत्मा को पावन बनने का रास्ता बताते हैं। परमात्मा की याद से ही आत्मा पावन बनती है। परमात्मा और आत्मा जो है, जैसा है, वैसे उसे जानकर उस रूप में याद के लिए आत्मा को जो भी पुरुषार्थ करना होता है, सहन करना होता है, उस सबको खुशी-खुशी सहन करना ही सच्ची तपस्या है।

त्याग, तपस्या और सेवा तीनों अलग-अलग विषय हैं परन्तु ब्राह्मण जीवन में तीनों एक साथ काम करते हैं। त्याग के बिना तपस्या असम्भव ही है और जिसके जीवन में त्याग और तपस्या है, वह दूसरों का कल्याण करने के बिना रह नहीं सकता। इसलिए तीनों का बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है। इन तीनों का सन्तुलन ही सच्ची तपस्या है।

''अगर इस ताज, तख्त और तिलक को धारण करने की हिम्मत है तो इसके लिए क्या करना होगा? एक तो त्याग, दूसरा तपस्या और तीसरा सेवा। तिलक के लिए तपस्या, ताज के लिए त्याग और तख्त पर विराजमान होने के लिए सेवा करनी होगी। ... यह मैंपन का जो अभिमान है, उसका भी त्याग करना है। मैं के बजाये बाबा।'' अ.बापदादा 11.6.70

चार सब्जेक्ट ज्ञान-योग-धारणा-सेवा के Aim and Object और फल का राज

ज्ञान अर्थात् आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझकर अपने स्वरूप में स्थित होकर साक्षी रूप से इसे देखना और पार्ट बजाना और उसका सुख अनुभव करना। योग अर्थात् देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की अव्यभिचारी मधुर याद में स्थित होकर परमान्नद का अनुभव करना, कर्मयोग के द्वारा श्रेष्ठ कर्म करना और कर्मभोग को चुक्ता करना।

धारणा अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों को धारण करना अर्थात् जीवन में अपनाना और उसके द्वारा सर्व आत्माओं को सुख देना, विकर्मो से बचना और श्रेष्ठ कर्मो का खाता जमा करना।

सेवा अर्थात् परमात्मा से मिले ज्ञान, गुण, शक्तियों के खजाने से सर्व आत्माओं को सुख का रास्ता बताना और उसके द्वारा भविष्य के लिये श्रेष्ठ सुखमय कर्मफल का खाता जमा करना, स्वर्ग के लिए नये हिसाब-किताब बनाना।

''जैसे सीप के लिए कहते हैं कि हर बूंद को स्वयं में समाने से मोती बना देती है, ऐसे ही आप सभी भी जो ज्ञान के बोल व महावाक्य सुनते हो और धारण करते हो, वह एक-एक बोल क्या बन जाता है? आप भी उसे मोती बना देते हैं और यहाँ एक-

एक बोल पद्म-पति बनाने वाला बन जाता है। एक-एक बोल अमूल्य तब बनता है जब उसे धारण करते हो।''

अ.बापदादा 4.2.75

दैवी, आसुरी और ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों का ज्ञान और उनके आत्मा पर प्रभाव का राज

दैवी और आसुरी गुणों का ज्ञान भी परमात्मा ने अभी ही दिया है। भले ही अच्छे-बुरे गुण-कर्तव्यों का कुछ ज्ञान पहले था परन्तु वह नाममात्र ही था। कहाँ-कहाँ आत्मा बुरे को भी अच्छा और अच्छे को भी बुरा समझ लेती थी। जैसे पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य है सबसे श्रेष्ठ दैवी गुण है और देहाभिमान और उससे जनित काम विकार सबसे खराब आसुरी गुण है। भले सतयुग-त्रेता में आत्मायें पवित्र होती हैं फिर भी सारे कल्प आत्मिक शक्ति का ह्रास होता ही है परन्तु द्वापर से देहाभिमान के कारण आत्मा काम विकार में प्रवृत्त होती है तब से ह्रास गति तीव्र और दिनोंदिन तीव्र से तीव्रतर होती जाती है। संगमयुग पर परमात्मा की याद से ही आत्मिक शक्ति बढ़ती है और आत्मा सम्पूर्णता को पाती है।

परम-पिता परमात्मा द्वारा परम सुख के साधन ज्ञान, गुण-शक्तियां मिली हैं, जो ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियाँ कही जाती हैं, उनको धारण करना, उनको सदा जाग्रत रखना ही आत्माओं की चढ़ती कला का एकमात्र आधार है। बाकी दैवी और आसुरी ज्ञान, गुण, शक्तियाँ से आत्मा की उतरती कला ही होती है परन्तु दैवी ज्ञान, गुण, शक्तियों से आत्मा को सुख की अनुभूति होती है, जबकि आसुरी से दुख की अनुभूति होती है। ईश्वरीय ज्ञान, गुण-शक्तियों के फलस्वरूप ही दैवी ज्ञान, गुण-शक्तियां मिलती हैं और ड्रामानुसार समयान्तर में दैवी ज्ञान, गुण-शक्तियों के ह्रास से आसुरी ज्ञान, गुण-शक्तियों का प्रभाव होता है। परन्तु यह सब ड्रामा का चक्र चलता ही रहता है और आत्मा जो पार्टधारी है, वह इन सबसे प्रभावित होती ही है। इसलिए अभी हमारा कर्तव्य है कि अभी जो ईश्वरीय ज्ञान, गुण-शक्तियाँ मिली हैं और मिल रही हैं, उनका पूरा सुख लें, पूरा लाभ उठायें।

ब्राह्मण और देवताओं का राज़ और उनके परस्पर सम्बन्धों का राज

ब्राह्मण कौन हैं, कैसे बनते हैं, देवतायें कौन हैं और वे कैसे बनते हैं, इसका सत्य ज्ञान किसी भी मनुष्य को नहीं है, जो अभी परमात्मा ने आकर दिया है। परमात्मा आकर ब्रह्मा के द्वारा मनुष्यों को ज्ञान देकर, अपना बनाकर ब्राह्मण बनाते हैं और ब्राह्मण ही ज्ञान-योग की शिक्षा लेकर भविष्य में देवता बनते हैं। बिना ब्राह्मण बने कोई देवता बन नहीं सकता। इस सत्य का ज्ञान अभी ज्ञान मिला है। दुनिया में तो मनुष्य समझते हैं कि देवताओं की दुनिया ही अलग है। मनुष्य ही देवता बनते हैं, इसकी तो न हमने कभी कल्पना की थी और न ही दुनिया वाले कर सकते हैं। अभी ब्राह्मणों के परस्पर के मधुर सम्बन्ध ही भविष्य दैवी सम्बन्धों का आधार बनते हैं।

शुभ भावना और शुभ कामना का राज

शुभ भावना और शुभ कामना क्या है, उसकी धारण कब और कैसे सम्भव हो सकती, उसका शरीर पर, आत्मा पर, व्यवहारिक जीवन पर, सम्बन्धों पर आदि पर क्या प्रभाव होता है, उसका ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है। परमात्मा के साथ सम्बन्ध का आत्माओं के साथ सम्बन्धों पर क्या प्रभाव होता है, ये ज्ञान परमात्मा ने अभी दिया है। परमात्मा के साथ सम्बन्ध होने से हमको जो ईश्वरीय ज्ञान, गुण-शक्तियां मिलती हैं, उनसे ही हमारे अन्दर शुभ भावना शुभ कामना जाग्रत होती है। हम आत्मा हैं, परमात्मा हमारा पिता है, वह सर्वात्माओं का पिता है तो हम सभी आत्मायें आपस में भाई-भाई हैं, इस विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं - इस सत्य का ज्ञान जब अभी मिला, जिसके आधार पर हमारी सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना जाग्रत हुई हैं। हमारी सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना शुभ कामना के फलस्वरूप उनकी भी हमारे प्रति शुभ भावना और शुभ कामना जाग्रत होती है क्योंकि क्रिया की प्रतिक्रिया होती है - ये सृष्टि का अनादि-अविनाशी अटल नियम है। सुखी जीवन के लिए शुभ भावना शुभ कामना अति आवश्यक है। विश्व पिता के साथ होने के नाते और विश्व सेवा के लिए ये हमारा परम कर्तव्य है।

जो हमारे प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखता है, उसके प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखना कोई बड़ी बात नहीं है, उससे हिसाब-किताब बराबर हो जाता है परन्तु जो हमारे प्रति शुभ भावना शुभ कामना न भी रखे, उसके प्रति भी शुभ भावना शुभ कामना रखना बड़ी बात है और उससे ही आत्मा का पुण्य का खाता जमा होता है।

''जैसे वाणी की सेवा के साधन चित्र, प्रोजेक्टर, वीडियो आदि बनाते हो, ऐसे शानति की शक्ति के साधन शुभ संकल्प, शुभ भावना, नयनों की भाषा है। ... अपने मस्तक से बाप का और अपना चमकता हुआ चित्र दिखा सकते हो।''

अ.बापदादा18.11.87

''जैसे वाणी द्वारा आत्माओं को स्नेह के सहयोग की भावना उत्पन्न कराते हो, ... ऐसे आप जब शुभ भावना, स्नेह की भावना की स्थिति में स्थित होंगे तो जैसी आपकी भावना होगी, वैसी भावना अन्य आत्माओं में भी उत्पन्न होगी।''

अ.बापदादा18.11.87

''वाणी की शक्ति का तीर बहुत करके दिमाग तक पहुँचता है और अनुभूति का तीर दिल तक पहुँचता है... शुभ संकल्प से आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर देंगे और शुभ भावना से बाप की तरफ स्नेह की भावना भी उत्पन्न करा लेंगे।''

अ.बापदादा18.11.87

लगन में मगन स्थिति का राज

जो आत्मा किसी आत्मा की लगन में मगन होती है, उसको भी किसी की परवाह नहीं होती है, जिससे वे अनेक विघ्नों को पार करते हुए भी आगे बढ़ जाते हैं परन्तु यहाँ तो बात है सर्वशक्तिवान परमात्मा की लगन में मगन स्थिति की बात। जो आत्मा परमात्मा की लगन में मगन होगी, उसको दुनिया की कोई भी बाधा, वस्तु या व्यक्ति रोक नहीं सकता, हिला नहीं सकता। वह सदा विजयी होगा।

''यह लगन स्वत: स्वयं में उत्पन्न होती है या समय प्रमाण, समस्या प्रमाण व प्रोग्राम प्रमाण यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है? फर्स्ट स्टेज तक पहुंची हुई आत्माओं की पहली निशानी यह होगी ऐसी आत्मा को इस अनुभूति की स्थित में मग्न रहने के कारण कोई भी विभूति व कोई भी हद की प्राप्ति का आकर्षण उन्हें उनके संकल्प तक भी छू नहीं सकता।'' अ.बापदादा 23.5.74

सागर मंथन का राज

शास्त्रों में दिखाते हैं कि देवताओं और असुरों ने सागर मंथन किया तो उसमें अनेक रतन और साथ में अमृत और विष भी निकला और अमृत पान के लिए देवताओं और असुरों में खींचातान हुई। सागर मंथन और उससे निकले विभिन्न रत्नों, विष और अमृत का राज़ भी परमात्मा ने बताया है। विष या अमृत कोई स्थूल चीज नहीं है। पांच विकारों को ही विष कहा जाता है, जिनके वशीभूत आत्मा को मृत्यु-दुख सहन करना पड़ता है और यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान ही अमृत है, जो आत्मा को अमरत्व का अनुभव कराता है अर्थात् आत्मा को मृत्यु-दुख से मुक्त करता है। परमात्मा ज्ञान सागर है, जिसने ये यथार्थ ज्ञान दिया है। चिन्तन को भी मंथन कहा जाता है। ज्ञान सागर से मिले ज्ञान का यथार्थ रीति, श्रीमत प्रमाण चिन्तन करते तो ये ज्ञान अमृत का काम करता है, आत्मा को परम सुख का अनुभव कराता है, अनेक दिव्य गुणों-शक्तियों रूपी रतनों का अनुभव कराता है और यदि मथानी उल्टी चलाई अर्थात् परमात्मा पिता की याद भूलकर, अहंकार के वश होकर उसके यथार्थ भाव को समझने की बजाये तर्क-वितर्क में चले गये या परचिन्तन आदि में लग गये तो वह विष का काम करता है। उससे स्वयं ही दुखी हो जाते हैं और कब-कब ज्ञान मार्ग से मर भी पड़ते हैं। इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है और यथार्थ रीति ज्ञान का मंथन कर अमृत-पान करके अमरत्व की अनुभूति करनी है।

विचार-सागर मंथन से ही ज्ञान के गुह्य राज़ स्पष्ट होते हैं, उनकी धारणा होती है और ज्ञान व्यवहारिक जीवन में आता है। इसीलिए शास्त्रों में सागर मंथन का गायन है। परमात्मा ज्ञान का सागर है और वह अनेक ज्ञान रतन देता है, उनका सुख अनुभव करने के लिए उन पर विचार करना अति आवश्यक है। विचार-सागर मन्थन करने से ही ज्ञान व्यवहारिक जीवन में आता है,

दूसरों को भी उसकी सत्यता स्पष्ट करने की शक्ति आती है। जो आत्मायें उनका सदुपयोग करते हैं, यथार्थ रीति ज्ञान मन्थन करते हैं, उनके लिए वह अमृत बन जाता है और जो उनका दुरुपयोग करता है अर्थात् उल्टी मथानी चलाते हैं, उनके लिए वह विष का ही काम करता है। बाप का बनकर उनकी श्रीमत का उलंघन कर यज्ञ की मर्यादा का उलंघन करता है, उसके लिए यह अमृत भी विष बन जाता है और वह दोनों जहान के सुख से वंचित रह जाता है। वे दुनिया के साधारण मनुष्यों से भी अधिक गिर जाते हैं।

''इस मुरली में ज्ञान का जादू है... इस ज्ञान का विचार सागर मंथन करना चाहिए। स्टूडेण्ट्स विचार सागर मंथन कर ज्ञान को उन्नति में लाते हैं। तुमको यह ज्ञान मिलता है, उस पर अपना विचार सागर मंथन करने से अमृत निकलेगा। अगर ज्ञान का विचार सागर मंथन नहीं होगा तो क्या मंथन होगा? आसुरी विचार मंथन।'' सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

''तुम बच्चों को हर एक बात का विचार सागर मंथन करना चाहिए।'' सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

''दान-पुण्य आदि भी यहाँ किया जाता है, सतयुग में नहीं। ... सारा मदार कर्मों पर है। ... इस चक्र का तुमको ही पता है। जो विचार सागर मंथन करते रहेंगे, उनको ही धारणा होगी। मुरली चलाने वाले का विचार सागर मंथन अच्छा चलता रहेगा।'' सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

''बैठे-बैठे यह विचार आना चाहिए। तुम्हारी बुद्धि अब अलौकिक है और किसी मनुष्य की बुद्धि में यह बातें रमण नहीं करती होंगी। ... देवी-देवतायें भी तो नम्बरवार होंगे, एक जैसे तो हो भी न सकें क्योंकि राजधानी है ना। यह ख्यालात तुम्हारे चलते रहने चाहिए।'' सा.बाबा 1.12.04 रिवा.

''आज अंधेरे में है इन्सान ... अभी तुम तो अंधेरे में नहीं हो।... कितना वण्डरफुल यह नाटक है।... सवेरे उठकर एक तो बाप को याद करना है और खुशी में ज्ञान का सुमिरन करना है।'' सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

''बच्चों को सदैव स्मति में रहना चाहिए - हम भारत को बेहद की खुशखबरी सुनाते हैं।... जैसे बाबा को सारा दिन ख्यालात चलते हैं - कैसे सबको यह सन्देश सुनायें कि बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं।... तुम्हें सभी को इस अज्ञान अंधकार से निकालना है।'' सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

स्वाध्याय, पठन-पाठन का राज

स्वाध्याय, पठन-पाठन आदि के सम्बन्ध में भी बाबा ने सारा ज्ञान दिया है, जिससे हमारी सदा चढ़ती कला हो। स्वाध्याय केवल पठन-पाठन ही नहीं लेकिन पठन-पाठन से एक बाप की याद आये। यदि ऐसा कुछ पढ़ते, जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु की याद सूक्ष्म रूप से भी रहती है तो वह श्रीमत के विरुद्ध है और उससे हमारी अवस्था गिर जाती है।

चिन्तन का राज / मनन-चिन्तन का राज

चिन्तन की आत्मा के उत्थान और पतन में महत्वपूर्ण भूमिका है। जीवात्मा जैसा चिन्तन करता है, वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। मनुष्य के चिन्तन पर किन-किन बातों का और कैसे प्रभाव पड़ता है, वह सब ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है और उन्नति के पथ पर अग्रसर आत्मा को किन-किन बातों का चिन्तन करना चाहिए और किन बातों के चिन्तन से बचना चाहिए, वह भी बताया है। यथार्थ ज्ञान को समझकर आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन, ज्ञान-गुण-शक्तियों का चिन्तन ही आत्मा की उन्नति का साधन है। सत्य ज्ञान को भूलकर किसी भी भौतिक पदार्थ, व्यक्ति के गुण-धर्मों का चिन्तन आत्मा के पतन का कारण अवश्य बनता है भले ही वह कितनी भी शुभ-भावना से किया गया हो या वह व्यक्ति कितना ही गुणवान विशेषता सम्पन्न क्यों न हो। यथार्थ ज्ञान के चिन्तन से ही परमात्मा के द्वारा बताये गये इस विश्व-नाटक के गुह्य राज़ समझ में आते हैं, ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा होती है। इसीलिए परमात्मा सदा ही चिन्तन के लिए प्रेरित करता है और चेलेन्ज करता है कि तुम विचार करो कि ये ज्ञान सत्य है, मैं तुमको जो बताता हूँ वह सत्य है या वेद-शास्त्रों में वर्णित या साधु-सन्त-चिन्तकों द्वारा बताया हुआ सत्य है।

चिन्तन आत्मा का निजी स्वरूप है, इसलिए जब आत्मा यथार्थ ज्ञान न होने के कारण आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन नहीं करता तो भौतिक वस्तु और व्यक्तियों का अर्थात पर-चिन्तन अवश्य ही करेगा। मनुष्य जो देखता, सुनता, स्पर्श करता, उसकी छाप उसके अन्त:करण में रहती है और वह सब उसके चिन्तन को प्रभावित करते हैं अर्थात् जीवात्मा जो भी स्थूल या सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों से ग्रहण करना उसका चिन्तन अवश्य होता है या वह उसके चिन्तन को प्रभावित अवश्य करता है।

बाबा ने कहा है स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है और पर-चिन्तन पतन की जड़ है। स्व-चिन्तन क्या है, उसके विषय में संक्षेप में विचार करें तो जिस चिन्तन से परमात्मा की याद आये वह स्व-चिन्तन और शुभ चिन्तन है और जिस चिन्तन से किसी वस्तु-व्यक्ति की याद आये, वह पर-चिन्तन है। यदि हम गहराई से विचार करें तो हमारा जो भी चिन्तन चलता है, उसमें किसी न किसी व्यक्ति-वस्तु या परमात्मा की याद अवश्य आती है, जो हमारे चिन्तन की कसौटी है।

''विघ्न तो आयेंगे, उनको खत्म करने की युक्ति है सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है... इसमें घबराना नहीं है, उसकी गहराई में जाकर पास करना है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''हम आत्मायें इस ड्रामा में एक्टर हैं, इनसे हम निकल नहीं सकते, मोक्ष पा नहीं सकते। बाप कहते हैं ड्रामा से कोई निकल जाये, दूसरा कोई एड हो जाये - यह हो नहीं सकता। इतना सारा ज्ञान सबकी बुद्धि में रह नहीं सकता। सारा दिन ऐसे ज्ञान में रमण करना है।'' सा.बाबा 26.4.05 रिवा.

''हमारा धन्धा ही सर्विस करना है। सर्विस करते रहेंगे तो सारा दिन विचार सागर मन्थन होता रहेगा। यह बाबा भी विचार सागर मन्थन करता होगा ना। नहीं तो यह पद कैसे पायेगा।'' सा.बाबा 25.4.05 रिवा.

''विष्णु का लेटा हुआ चित्र दिखाते हैं। ज्ञान को सिमरण कर हर्षित हो रहा है। ... नर और नारी दोनों ही जो ज्ञान को सिमरण करते हैं, वे ऐसे हर्षित रहते हैं। ... जो जितना ही ज्ञान को सिमरण करते हैं, वे उतना ही हर्षित रहते हैं। ... व्यर्थ सिमरण होता है तो ज्ञान का सिमरण नहीं होता।'' अ.बापदादा 16.6.72

''यह है याद की अग्नि, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। एक बाप से प्रीत बुद्धि होना है। सबसे फर्स्टक्लास माशूक है, जो तुमको भी फर्स्टक्लास बनाते हैं। ... यह सब विचार-सागर मन्थन करेंगे तो तुमको बड़ा मजा आयेगा।'' सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

''जिनकी दिल सच्ची थी उन पर साहेब राज़ी हुआ। तब तो प्रॉपर्टी दी। प्रॉपर्टी तो दे दी। अब उनको सिर्फ अपना बनाने की बात है। सर्विस वा दान भी तब कर सकेंगे जब प्रॉपर्टी को अपना बनाया होगा। जितना प्रॉपर्टी होगी उतना नशे से दान कर सकेंगे।'' अ.बापदादा 30.5.71

''खजाना अपना बन गया फिर दूसरे को देने से बढ़ता जाता है। यह हुई पीछे की बात। लेकिन पहले अपना कैसे बनायेंगे जितना-जितना जो खजाना मिलता है उसके ऊपर मनन करने से अन्दर समाता है। जो मनन करने वाले होंगे उन्हों के बोलने में भी विल पॉवर होगी।'' अ.बापदादा 30.5.71

''जो बातें मनन की जाती हैं उन को वर्णन करना सहज हो जाता है। तो मनन करते और वर्णन करते चलो। यह भी दो बातें हुई। मनन करते-करते मग्न अवस्था ऑटोमेटीकली हो जायेगी। जो मनन करना नहीं जानते वह मग्न अवस्था का भी अनुभव नहीं कर सकते।'' अ.बापदादा 24.5.71

''दूर से ही जान जाते हैं कि यह ब्रह्माकुमार है। अब ब्रह्माकुमार के साथ-साथ तपस्वी कुमार दूर से ही दिखाई पड़ो, ऐसा बनकर जाना है। वह तब होगा जब मनन और मग्न दोनों का अनुभव करेंगे।'' अ.बापदादा 19.4.71

''अभी तो जो मिलता है, उसको बुद्धि में जमा करते जाते हो फिर बैठ जब रिवाइज करके उनकी महीनता वा गुह्यता में जायेंगे तब दूसरों को भी गुह्यता में ले जा सकेंगे।'' अ.बापदादा16.10.75

''एकान्त में बैठने से ऐसे-ऐसे विचार-सागर मन्थन चलेगा।... ये बड़ी गुह्य बातें हैं समझने की। बाप कहते हैं - आज तुमको गुह्य ते गुह्य नई-नई प्वाइन्ट्स समझाता हूँ।'' सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

''आत्मा ब्रह्म महतत्व में खड़ी होती हैं, जैसे स्टार्स आकाश में खड़े हैं।... जो बच्चे ज्ञान का विचार-सागर मन्थन नहीं करते हैं, उनकी बुद्धि में माया खिट-खिट करती है।'' सा.बाबा 26.7.05 रिवा.

''ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करो कि कैसे किसको समझायें। ... पहले हम मुक्तिधाम जायेंगे, फिर पहले से लेकर चक्र रिपीट होगा। ... स्टूडेण्ट्स की बुद्धि में यह सारी नॉलेज होनी चाहिए। ... यह रुहानी नॉलेज रुहानी बाप समझाते हैं। तुम बच्चों को बहुत खुशी और नशे में रहना चाहिए।'' सा.बाबा 27.7.05 रिवा.

''प्रेम से ज्ञान सुनाओ। पहले तो अच्छी रीति मंथन करना पड़े। शिव बाबा तो विचार सागर मंथन नहीं करते हैं। यह विचार सागर मंथन करते हैं, बच्चों को देने के लिए। फिर भी हमेशा ऐसे समझो कि शिव बाबा समझाते हैं। इनका भी यह नहीं रहता कि मैं सुनाता हूँ, शिव बाबा सुनाते हैं। इसको निरहंकारीपना कहा जाता है। याद एक शिव बाबा को ही करना है।''

सा.बाबा 3.3.72 रिवा.

''अगर गाय न उगारे, ऐसा मुख न चले तो समझना चाहिए गाय बीमार है। यह भी ज्ञान का मंथन अगर नहीं करते तो गोया रोगी बीमार हो ... अनहेल्दी हो।'' सा.बाबा 6.12.69 रिवा.

स्व-चिन्तन और पर-चिन्तन का राज़ / पर-चिन्तन पतन की जड़ है और स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है

सतयुग में आत्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, देवतायें स्वभाविक आत्माभिमानी होती हैं, इसलिए उनको आवश्यकता अनुसार भौतिक वस्तु और व्यक्तियों की ही याद होती है। उनको यथार्थ रूप से न आत्मा की और न परमात्मा की याद होती है, इसलिए उनकी आत्मिक शक्ति का निरन्तर पतन होता है क्योंकि देह में आते ही आत्मा को यथार्थ ज्ञान भूल जाता है। यदि यथार्थ आत्माभिमानी होते अर्थात् यथार्थ रूप से आत्मा का ज्ञान भी होता तो परमात्मा की याद अवश्य ही होती और आत्मा की गिरती कला नहीं होती। ज्ञान सागर परमात्मा संगम पर ही सत्य ज्ञान देते हैं, तब ही मनुष्य आत्माभिमानी बनते और परमात्मा की याद आती है, आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन होता है। स्व-चिन्तन आत्मा का संगमयुग पर ही होता है और सारे कल्प में परचिन्तन ही होता है क्योंकि आत्मा के अतिरिक्त जो भी चिन्तन है, वह पर-चिन्तन ही है। यह देह भी पर है। परन्तु देवताओं में आत्मिक शक्ति होने के कारण उनकी सर्व आवश्यकतायें स्वत: पूरी होती हैं, इसलिए उनको किसी बात का चिन्तन करने की आवश्यकता नहीं होती है। फिर भी जो थोड़ा भी संकल्प या स्मृति होती है, वह भौतिक वस्तु या व्यक्तियों की ही होती है।
राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, अहंकार, लोभ-मोह, इच्छा-आकांक्षा, अपने-पराये का भेद आदि आदि पर-चिन्तन के मूल कारण हैं और पर-चिन्तन के कारण आत्मा संगमयुग का देव-दुर्लभ सुख, परमानन्द अनुभव करने से वंचित हो जाती है क्योंकि ये सब आत्मा को स्व-स्वरूप में और परमात्मा की याद में स्थित होने नहीं देते हैं। स्व-स्वरूप में स्थित आत्मा परमानन्द का अनुभव करती है, जो आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है।

''मुख्य तौर पर तो पहली स्टेज - 'स्व-चिन्तक' कहाँ तक बने हैं? इस पर ही तीनों सब्जेक्ट्स का रिज़ल्ट आधारित है। सारे दिन में चेक करो कि स्व-चिन्तक कितना समय रहते हैं? जैसे विश्व-परिवर्तक बनने के कारण विश्व-परिवर्तन के प्लेन्स बनाते रहते हो, समय भी निश्चित करते ही रहते हो... ऐसे ही स्व-चिन्तक बन, सम्पूर्ण बनने की विधि हर रोज़ नये रूप से, नई युक्तियों से सोचते हो?'' अ.बापदादा 1.2.75

''शुभ-चिन्तक अर्थात् ज्ञान-रतनों से भरपूर। ... शुभ-चिन्तन वाला सदा अपने सम्पन्नता के नशे में रहता है... पर-चिन्तन और व्यर्थ चिन्तन वाला सदा खाली होने के कारण अपने को कमजोर अनुभव करेगा।'' अ.बापदादा10.11.87

शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक का राज़

शुभ-चिन्तन से आत्मा उन्नति को पाती है, अपने में शक्ति भरती है और शुभ-चिन्तक बनने से ही अन्य आत्माओं की सेवा कर सकते हैं, उनकी दुआयें मिलती है। इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए इन दोनों बातों की धारणा अति

आवश्यक है। ज्ञान सागर बाप ने शुभ-चिन्तन के लिए अखुट खजाना दिया है, जो उस ज्ञान, गुण, शक्तियों के सदा चिन्तन में रहता है, वही अन्य आत्माओं के प्रति शुभ-चिन्तक बन सकता है अर्थात् शुभ-चिन्तन वाला ही शुभ-चिन्तक होता है। जो ईश्वरीय ज्ञान, गुण-शक्तियों से सदा सम्पन्न है, उसकी शुभ-चिन्तक की भावना कभी कम हो नहीं सकती। शुभ चिन्तन से ही आत्मा शक्तिशाली बनती है।

''आज बापदादा दो चीजें सौगात में दे रहे हैं - सदा शुभ चिन्तक और शुभ चिन्तन। शुभ चिन्तन से अपनी स्थिति बना सकते हो और शुभ चिन्तक बनने से अनेक आत्माओं की सेवा करेंगे।'' अ.बापदादा 22.1.70

''जो सरलचित्त बनता है, उसका प्रत्यक्ष में गुण क्या देखने में आता है? मधुरता। उसके नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है... आपके शुभचिन्तक बनने से सभी की चिन्तायें मिटती हैं। आप सभी की चिन्ताओं को मिटाने वाले शुभचिन्तक हो।'' अ.बापदादा 23.3.70

''होली मनाना अर्थात् सदा के लिए आज के दिन से बीती सो बीती का पाठ पक्का करना। यही होली मनाना है। ... अपनी बीती हुई बातें या दूसरों की बीती हुई बातों को चिन्तन में न लाना और चित्त में भी न रखना। एक होता है चित्त में रखना, दूसरा होता है चिन्तन में लाना और तीसरा होता है वर्णन करना।'' अ.बापदादा 23.3.70

''शुभ-चिन्तक सदा रहें, इसका विशेष आधार है - शुभ-चिन्तन। जिसका शुभ-चिन्तन सदा रहता है, वह अवश्य ही शुभ-चिन्तक है। ... सदा शुभ-चिन्तक मणि का शुभ-चिन्तन का शक्तिशाली खजाना सदा भरपूर होगा। भरपूरता के कारण ही औरों को प्रति शुभ-चिन्तक बन सकते हैं।'' अ.बापदादा10.11.87

''शुभ-चिन्तक ही सदा प्रसन्नता की पर्सनॉलिटी में रह सकते हैं... तुम रुहानी पर्सनॉलिटी वाले सिर्फ गायन योग्य नहीं लेकिन गायन-योग्य के साथ पूजन योग्य भी बनते हो।'' अ.बापदादा10.11.87

चिन्तन और चिन्ता का राज़ तथा चिन्तन और चिन्ता से परे निर्संकल्प स्थिति का राज़

चिन्तन और चिन्ता का जीवात्मा के सुख-दुख के अनुभव में महत्वपूर्ण स्थान है। यथार्थ ज्ञान का चिन्तन आत्मा की सुसुप्त शक्तियों को जाग्रत करता है, ज्ञान के गुह्य रहस्यों का अनुभव कराकर अनेक प्रकार के विकर्मों और चिन्ताओं से बचाता है। यथार्थ चिन्तन आत्मा को शक्ति प्रदान करता है, जिससे आत्मा सुख का अनुभव करती है।

चिन्ता अशुभ के भय से उत्पन्न होती है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, आत्मा दुख का अनुभव करती है। चिन्ता के वशीभूत आत्मा अनेक प्रकार के विकर्म करती है। चिन्ता स्वत: में एक विकर्म है क्योंकि चिन्ता वाला भय और चिन्ता का वायब्रेशन फैलाता है, जो अन्य आत्माओं के लिए भी भय और चिन्ता का कारण बन जाता है। श्रेष्ठ शुभ बातों के लिये चिन्तन होता जो आत्मिक शक्ति का विकास करता है, आत्मा को निर्भय-निश्चिन्त बनाता है।

आत्मिक उन्नति के लिए चिन्तन भी आवश्यक है और चिन्तन से परे निर्संकल्प-बीजरुप आत्मिक स्वरुप के अभ्यास की भी आवश्यकता है। सत्यता की अनुभूति के लिये चिन्तन आवश्यक है परन्तु आत्मिक शक्ति के विकास के लिये, विकर्मों को भस्म करने के लिए चिन्तन से परे आत्मिक स्वरुप में स्थित होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक जीवन की सफलता के निर्संकल्प समाधि और निर्विकल्प समाधि दोनों का सफल अभ्यास चाहिए।

मनुष्य सबसे अधिक चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए इस विश्व के उत्थान और पतन में उसके चिन्तन का महत्वपूर्ण प्रभाव है। हमारा चिन्तन सदा शुभ रहे, ये हमारा परम कर्तव्य है।

''जितना-जितना गहराई में जायेंगे, उतना ही घबराहट गायब हो जायेगी... सागर के तले में, गहराई में क्या होता है? बिल्कुल शान्त और शान्त के साथ प्राप्ति भी होती है।'' अ.बापदादा 3.10.69

''इन बातों पर बच्चों को अच्छी रीति विचार भी करना है। हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, शरीर से पार्ट बजाने। ... बाप सदैव परमधाम में रहते हैं, यहाँ एक ही बार संगम पर आते हैं। ... जब दुनिया को बदलना होता है। ... राम की सीता को चुराई। इन बातों पर विचार किया जाता है। ये सब बहुत समझने की बातें हैं।'' सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

''वैभव वा व्यक्ति चिन्ता को मिटाने वाले नहीं चिन्ता को उत्पन्न कराने के निमित्त बन जाते हैं... शुभ-चिन्तक आत्मायें औरों के भी व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन को समाप्त करने वाले हैं।'' अ.बापदादा10.11.87

''सतयुग में देवी-देवताओं को यह रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं था। अगर उनको ये ज्ञान हो कि हम सीढ़ी उतरते रसातल में जायेंगे तो बादशाही का सुख भी न रहे। चिन्ता लग जाये। अब तुमको चिन्ता लगी हुई है कि हम सतोप्रधान थे, फिर तमोप्रधान से अब कैसे सतोप्रधान बनें।'' सा.बाबा 17.7.71 रिवा.

निर्भय और निश्चिन्त जीवन का राज़ / भय और चिन्ता का राज़

भय जीवात्मा का परम शत्रु है, जो चिन्ता को जन्म देता है। भय और चिन्ता के वशीभूत आत्मा अनेक विकर्मों में प्रवृत्त होती है। भय और चिन्ता आत्मा के अपने ही विकर्मों के फलस्वरूप होती है, जो आत्मा ईश्वरीय ज्ञान को समझकर परमात्मा की श्रीमत अनुसार कर्म करती हैं, वे सदैव निर्भय और निश्चिनत रहते हैं। अपने किन्हीं पूर्व संचित कर्मों के फलस्वरूप भय और चिन्ता होती भी है तो वह सत्य ज्ञान और परमात्मा की मदद से समाप्त हो जाती है। जो परमात्मा के साथ सच्चे और आज्ञाकारी रहते हैं, उनको कब भय और चिन्ता हो नहीं सकती। भय और चिन्ता का मूल है अज्ञानता।

अपने वर्तमान कर्म, परमात्मा पर, अपने पर और विश्व-नाटक के विधि-विधान पर यथार्थ निश्चय नहीं। जिसको ड्रामा पर अटल निश्चय है, उसकी कभी भी गाड़ी संगम से पीछे नहीं जा सकती। हर बात में कल्याण ही होगा।

''बाप तो कहते हैं जल्दी-जल्दी करो परन्तु ड्रामा में जल्दी हो नहीं सकती। ... देहाभिमान के कारण ही लूनपानी होते हैं, स्वयं को धोखा देते हैं। बाप कहेंगे यह भी ड्रामा। जो कुछ होता, कल्प पहले मिसल ड्रामा चलता रहता है।'' सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

''जिनको निश्चय हो जाता है, उनको किसी की परवाह नहीं रहती है। मनुष्य अपने हाथ-पांव वाला है ना।... अपने को स्वतन्त्र रख सकते हैं। क्यों न हम बाप से अमृत लेकर अमृत का ही दान करूँ।'' सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

''ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके। ... ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर जरा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय में कमी है। ... चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी है, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी है, चाहे बाप में निश्चय की कमी है।... ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।'' अ.बापदादा 13.01.86 पार्टी I

बेफिकर बादशाह बनने का राज़ / बेगमपुर के बादशाह का राज

हमारा जीवन सदा निर्भय और निश्चिन्त रहे, उसका मार्ग भी परमात्मा ने अभी हमको बताया, जिस मार्ग पर चलकर हम सहज निर्भय और निश्चिन्त जीवन का अनुभव कर सकते हैं। परमात्मा आकर आत्माओं को सर्व फिकर से फारिग कर देते हैं। ईश्वरीय ज्ञान और परमात्मा की याद आत्मा को फिकर से फारिग बेफिकर बादशाह बनाती है। जो अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित है, वह सदा ही बेफिकर बादशाह है। जिसके सिर पर परमात्मा का हाथ है और उसका साथ है, वह सदा ही बेफिकर बादशाह है।

''बच्चों को ड्रामा पर पक्का रहना है। पक्के रहेंगे तो उस समय ही फिकर से फारिग हो जायेंगे।''

सा.बाबा 23.12.68 रात्रिक्लास

''तुमको नॉलेज देने वाला वर्ल्ड आलमाइटी अथॉर्टी, नॉलेजफुल बाप है।... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम सदा खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।'' सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

‘‘जैसा निश्चय वैसा कर्म और वाणी स्वत: होती है।... निश्चयबुद्धि हर समय अपने को बेफिकर बादशाह सहज और स्वत: अनुभव करेंगे।’’ अ.बापदादा21.12.87

‘‘ब्रह्मा बाप का यही शब्द हर बात में रहा - ‘नथिंग न्यू’ होना ही है, हो रहा है और हम बेफिकर बादशाह। ... फिकर में होंगे तो निर्णय ठीक नहीं होगा। बेफिकर होंगे तो निर्णय अच्छा होगा तो बच जायेंगे। टचिंग होगी - अभी समय अनुसार यह करें या नहीं करें।’’ अ.बापदादा30.11.99

‘‘यह है बेफिकर बादशाहों की सभा। यह सतयुग की राज-सभा से से भी श्रेष्ठ है क्योंकि वहाँ तो फिकर और फखुर दोनों के अन्तर का ज्ञान इमर्ज नहीं रहता है। फिकर शब्द का ही मालूम नहीं होता है।’’ अ.बापदादा10.03.86

‘‘मैं निमित्त कर्मयोगी हूँ, करावनहार बाप है। अगर यह स्मृति हर समय स्वत: ही रहती है तो सदा ही बेफिकर बादशाह हैं। ... जब तक बादशाह नहीं बने हैं तब तक यह कर्मेन्द्रियां भी अपने वश में नहीं रह सकती हैं। राजा बनते हो तब ही मायाजीत, कर्मेन्द्रिय-जीत, प्रकृतिजीत बनते हो।’’ अ.बापदादा 10.3.86

‘‘सभी कर्मेन्द्रियों के ऊपर राज्य करने वाले बादशाह हो। पवित्रता लाइट का ताजधारी बनाती है। ... बेफिकर बादशाह की निशानी है - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट और औरों को भी सन्तुष्ट करने वाले। कभी भी कोई अप्राप्ति है ही नहीं जो असन्तुष्ट हों। जहाँ अप्राप्ति है वहाँ असन्तुष्ता है और जहाँ प्राप्ति है वहाँ सन्तुष्टता है।’’ अ.बापदादा15.12.04

‘‘रुहानी फखुर में रहते हो इसलिए बेफिकर बादशाह हो। ... ऐसे अनुभव करते हो ना! बेफिकर हो और बादशाह भी हो। ... बेफिकर हो क्योंकि आपने सारे फिकर बाप को दे दिये हैं। बोझ उतर गया ना। फिकर खत्म और बेफिकर बादशाह बन अमूल्य जीवन अनुभव कर रहे हो।’’ अ.बापदादा15.12.04

‘‘दुनिया के धन्धे आदि की बात यहाँ नहीं लाओ। ... यह कोई मेरा काम नहीं है। मेरा धन्धा है तुम्हें पतित से पावन बनाकर विश्व का मालिक बनाने का।... देवताओं को भी कोई परवाह नहीं होती है। देवताओं के ऊपर है ईश्वर। ईश्वर के बच्चों को क्या परवाह हो सकती है।’’ सा.बाबा 25.12.04 रिवा.

‘‘गाया जाता है ना - साथ और हाथ। तो साथ है बुद्धि की लगन और सदा अपने साथ श्रीमत रुपी हाथ अनुभव करेंगे।... तुमको बेगमपुर के बादशाह कहते थे ना। यह इस समय की स्टेज है जबकि गम की दुनिया सामने है। गम और बे-गम की अभी नॉलेज है। इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते, इसलिये बेगमपुर का बादशाह कहा जाता हैं।’’ अ. बापदादा 31.5.72

‘‘जो सर्व में सम्पन्न होता है, उसकी आंख व बुद्धि कोई किसी तरफ नहीं डूबती। वह सदा रूहानी नज़र में रहते हैं, अनेक व्यर्थ संकल्पों व अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिक्रों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खजाने में सदा रमण करता रहता हैं।’’ अ.बापदादा 2.5.74

‘‘अपने को विधाता बाप द्वारा विधि और विधान को जानने वाले समझते हो ? ... विधि और विधान को जानने वाले हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरूप होते हैं। सिद्धि स्वरूप अर्थात् बेगमपुर के बादशाह।’’ अ.बापदादा 3.10.75

‘‘जो पक्के निश्चयबुद्धि बन जाते हैं वे कोई की परवाह नहीं करते। बिल्कुल ही नष्टोमोहा हो जाते हैं। ... कहेंगी हमको तो पवित्र बनना है, फट से कहेंगी हमको राजाई की कोई परवाह नहीं है। ...भक्ति मार्ग में राजाओं का भी नाम है, जिन्होंने सन्यास किया है। अभी यह तो है ज्ञान मार्ग।’’ सा.बाबा 14.4.73 रिवा.

‘‘अगर बापदादा के दिल पर चढ़ना चाहते हो तो विचार सागर मंथन करो... बच्चे आदि की परवाह नहीं रखी जाती है। वास्तव में बच्चे की शादी कराना न चाहिए। लोक-लाज कुल की मर्यादा खोनी पड़ती है दुश्मन से डरना थोड़ेही होता है। बाबा का हाथ मिला फिर परवाह किसकी नहीं रखी जाती है।’’ सा.बाबा 30.9.69 रिवा.

विघ्न और विघ्न-विनाशक स्थिति का राज़ / निर्विघ्न जीवन बनाने का राज़

जैसे पढ़ाई में परीक्षा आवश्यक है। परीक्षा ही पढ़ाई में आगे जाने का साधन है। ऐसे ही इस ब्राह्मण जीवन में विघ्न आना स्वाभाविक हैं अर्थात् अवश्य सम्भावी है क्योंकि हम युद्ध के मैदान में हैं और हमको माया पर जीत पानी है। माया न आये अर्थात् विघ्न न आयें, ये हो नहीं सकता। इसलिए विघ्नों से घबराना नहीं है लेकिन उनको जीतने का संकल्प और साहस रखकर अभीष्ट पुरुषार्थ करना है। हिम्मतवान को बाप की मदद मिलती ही है और वह निश्चित ही विघ्नों पर जीत पाने में सफल होता है। ब्राह्मण जीवन में विघ्न आना स्वभाविक है क्योंकि विघ्न ही आत्मा को अनुभवी बनाते हैं और आत्मा को अन्तिम परीक्षा में पास होने की शक्ति प्रदान करते हैं परन्तु हमको विघ्नों को विघ्न न समझ आगे बढ़ने का साधन समझना है। विघ्न ही हमको नष्टोमोहा उपराम बनाते हैं, परमात्मा से प्रीतबुद्धि बनने की प्रेरणा देते हैं।

जीवन में विघ्न आत्मा को दुखी बना देते हैं। हमारा जीवन सदा विघ्नों से मुक्त, निर्विघ्न कैसे बनें, इसका राज़ भी परमात्मा ने अभी बताया है, जिसको धारण कर हम जीवन को निर्विघ्न बनाकर परम सुख अनुभव कर सकते हैं।

''विघ्न तो आयेंगे, उनको खत्म करने की युक्ति है सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है। ... इसमें घबराना नहीं है, उसकी गहराई में जाकर पास करना है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''प्रकृति पहले से ही सावधानी जरूर देती है। अगर नॉलेजफुल हो तो प्रकृति के विघ्नों से बच सकते हो... नॉलेज न होने के कारण पॉवरफुल नहीं और पॉवरफुल न होने के कारण जो विजय की प्राप्ति होनी चाहिए, वह नहीं होती है।''

अ.बापदादा 27.7.71

''जितना-जितना अपनी स्मृति की समर्थी में आते जायेंगे अर्थात् आत्मा रूपी नेत्र को पॉवरफुल बनाते जायेंगे, क्लीयर बनाते जायेंगे, उतना-उतना कोई भी विघ्न आने वाला होगा तो पहले से ही यह महसूसता आयेगी कि आज कोई पेपर होने वाला है। ... होशियार होने के कारण विघ्नों में सफलता पा लेंगे।'' अ.बापदादा 27.7.71

''यह पहला पाठ नेचुरल रूप में स्मृति स्वरूप में रहे। देह को देखते भी आत्मा को देखें। ... इस पहली स्मृति की मर्यादा स्वयं को सदा निर्विघ्न बनाती है और औरों को भी इस श्रेष्ठ स्मृति के समर्थपन के वायब्रेशन फैलाने के निमित्त बन जाते हैं, जिससे और भी निविघ्न बन जाते हैं।'' अ.बापदादा

''जो अव्यक्त वातावरण व रुहानी अनुभव पहले किये, क्या वही रुहानी स्थिति अभी है? ... अभी ऐसा ही अव्यक्त वातावरण बनाना। एक तरफ वरदान दूसरी तरफ विघ्न। दोनों का एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध है। सिर्फ अपने प्रति विघ्न-विनाशक नहीं बनना है लेकिन अपने ब्राह्मण कुल की सर्व आत्माओं के प्रति विघ्न-विनाश करने में सहयोगी बनना है।'' अ.बापदादा 19.4.73

''वैसे भी कोई भी बात, कोई दृश्य, कोई भी चीज परिवर्तन तो होनी ही है। यह ड्रामा ही परिवर्तनशील है। ... इस प्रकार हर बात परिवर्तित होनी है लेकिन जिस समय आपके सामने वह बात विध्न रुप बन जाती है उस समय अपनी शक्ति के आधार से एक सेकेण्ड में परिवर्तित कर दिया तो उस पुरुषार्थ करने का फल आपको प्राप्त हो जायेगा।'' अ.बापदादा24.12.72

''अगर परखने की शक्ति तीव्र है तो भिन्न-भिन्न प्रकार के आये हुए विघ्न, जो लगन में विघ्न रूप बनते हैं, उन विघ्नों को पहले से ही जानकर, उन द्वारा वार होने से पहले ही उन्हें समाप्त कर देते हैं। इस कारण व्यर्थ समय जाने के बदले समर्थ में जमा हो जाता है।'' अ.बापदादा 29.1.75

लाइट-हाउस, माइट-हाउस और सर्च-लाइट स्थिति का राज

दुनिया के लाइट-हाउस और सर्च-लाइट का ज्ञान तो मनुष्यों को है परन्तु आत्मा की लाइट-हाउस और सर्च-लाइट की स्थिति क्या है और उसका वातावरण और मनुष्यों पर क्या प्रभाव होता है, इसका ज्ञान अभी परमात्मा ने ही दिया है। ज्ञान को भी प्रकाश कहा जाता है। जब हम एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद में बैठकर ज्ञान का चिन्तन करते हैं तो उस समय हम ज्ञान तरंगों को सारे वातावरण में फैलाते हैं, जो उस वातावरण में स्थित आत्माओं को जाग्रत करती हैं, उनका मार्ग दर्शन करती हैं। वह स्थिति लाइट-हाउस का काम करती है और जब हम परमात्मा की याद में किसी व्यक्ति विशेष को याद कर उसको शक्ति

देते हैं तो वह स्थिति सर्च-लाइट की होती है। इस प्रकार हम देखें तो हमारी विचार तरंगे चारो ओर भी फैलती हैं तो हम अपनी संकल्प शक्ति से किसी दिशा विशेष में भी हम फैला सकते हैं।

''तुमको लाइट हाउस भी कहा जाता है, बाप को भी लाइट हाउस कहा जाता है। ... बाप को कहते हैं - हमको लिबरेट करो, सेलवेज करो। तो बाप कहते हैं - इस याद की यात्रा से तुम पार हो जायेंगे।'' सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

''तुम जब यहाँ बैठते हो तो रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का स्वदर्शन चक्र फिराना चाहिए। तुम लाइट हाउस हो ना... लाइट हाउस बनने से तुम अपना भी कल्याण करते हो और दूसरों को भी रास्ता बताते हो।... वास्तव में सच्ची सेवा यह है - सभी का बेड़ा पार करना है।'' सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

''अभी सर्च-लाइट, लाइट-हाउस बनना है। ... सर्च-लाइट वे बन सकेंगे, जो स्वयं को सर्च कर सकते हैं। जितना स्वयं को सर्च कर सकेंगे, उतना ही सर्च-लाइट बनेंगे। इसके लिए विलपॉवर चाहिए।'' अ.बापदादा 2.7.70

''बाप को याद करने से ज्ञान आप ही इमर्ज हो जाता है। जो बाप को याद करता है, उनको हर कार्य में बाप की मदद मिल ही जाती है। ... अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं तो वह नॉलेज ही किस काम की!... ईश्वरीय नॉलेज क्या बनायेगी? ईश्वरीय स्थिति।'' अ.बापदादा 24.1.70

''जैसे बहुत अंधकार होता है तो न अपने को, न दूसरे को देख सकते हैं। तो ऐसे लाइट-हाऊस बनो जो सभी अपने आपको तो देख सकें। जैसे दर्पण के आगे जो भी होता है उसको स्वयं का साक्षात्कार होता है। ... तो ऐसे पॉवरफुल दर्पण बनो जो सभी को स्वयं का साक्षात्कार करा सको अर्थात् आप लोगों के सामने आते ही देह को भूल अपने देही रुप में स्थित हो जायें।''

अ.बापदादा 9.11.72

''जैसे कि आइने में देखते हो तो स्पष्ट रूप दिखाई देता है, वैसे ही नॉलेज रूपी दर्पण में, अपना यह रूप स्पष्ट दिखाई दे और अनुभव हो। चलते-फिरते और बात करते, ऐसे महसूस हो कि 'मैं लाइट-रूप हूँ, मैं फरिश्ता चल रहा हूँ और मैं फरिश्ता बात कर रहा हूँ', तो ही आप लोगों की स्मृति और स्थिति का प्रभाव औरों पर पड़ेगा।'' अ.बापदादा 15.9.74

''लाइट और माइट देने वाले दाता हाउस तब बन सकेंगे जब उनके अपने पास इतना स्टॉक जमा हो। अगर स्वयं सदा लाइट स्वरूप नहीं बन सकते व लाइट स्वरूप में सदा स्थित नहीं हो सकते, तो वह अन्य आत्माओं को लाइट हाउस बन लाइट नहीं दे सकते, सर्वशक्तियों को यूज नहीं कर सकते तो वे माइट हाउस बन अन्य आत्माओं को सर्व शक्तियों का दान कैसे कर सकते हैं?'' अ.बापदादा 18.6.74

''इस समय तुम चेतन्य लाइट-हाउस हो। तुम्हारी एक आंख में मुक्तिधाम और दूसरी आंख में जीवनमुक्तिधाम है।... तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम ज्ञानवान होकर सबको रास्ता दिखाते हो।... यह तुम्हारा मोस्ट वैल्युबुल टाइम है।... सबको रास्ता बताना तुम्हारा फर्ज है।'' सा.बाबा 3.6.05 रिवा.

''लाइट और माइट हाउस दोनों में अन्तर है। .. बेहद के त्यागी .. बेहद के निरन्तर सेवाधारी .. सदैव बेहद की वैराग्य वृत्ति वाले। .. इन तीनों स्टेजेज से पार करने वाले ही लाइट हाउस और माइट हाउस बन सकते हैं।'' अ.बापदादा 27.9.75

लाइट, माइट और डिवाइन इन्साइट का राज

अभी संगमयुग पर परमात्मा से हमको ज्ञान अर्थात् लाइट मिलती है, जिस ज्ञान प्रकाश के कारण हम परमात्मा को यथार्थ रूप में याद करते हैं तो उनसे हमको माइट अर्थात् शक्ति मिलती है। जब आत्मा में ज्ञान का प्रकाश भी होता और शक्ति भी होती तो उसकी दृष्टि-वृत्ति दिव्य बन जाती है अर्थात् डिवाइन इन्साइट बन जाती है। दृष्टि-वृत्ति डिवाइन होने के कारण कर्म संस्कार भी दिव्य बन जाते हैं।

''साइलेन्स की शक्ति का आधार है डिवाइन इन्साइट। इस द्वारा साइलेन्स की शक्ति के बहुत वण्डरफुल अनुभव कर सकते हो... जहाँ जाओगे, उनको भी अनुभव होगा कि आज जैसे प्रैक्टिकल मिलन हुआ। ... रिवाजी आत्माओं को भी यह सिद्धि प्राप्त है परन्तु उनकी अल्पकाल की सिद्धि है।''
अ.बापदादा11.10.75

गंगा-जमुना आदि नदियों की महिमा का राज

जैसे नदियां बहती रहती हैं ऐसे जिन आत्माओं की बुद्धि में सदा ज्ञान का चिन्तन होता रहता है और वे सर्व आत्माओं की सेवार्थ निर्भय और अथक होकर विभिन्न स्थानों पर दौड़ते रहते हैं, कोई स्थान और व्यक्ति उनको बांध नहीं सकता है, वे ही सच्ची ज्ञान गंगायें, ज्ञान नदियां हैं, जिनके नाम पर नदियों के नाम पड़ते हैं और नदियों के नाम पर उनके नाम पड़ते हैं। यह भी एक चक्र है। जैसे स्थूल नदियां बहते हुए पेड़-पौधों को सरसब्ज करती, वातावरण को शुद्ध करती, ऐसे ही ज्ञान नदिया आत्माओं को सरसब्ज अर्थात् सुखी बनाती।

''सेवा ने आपको ज्ञान-गंगा बना दिया। ज्ञान गंगाओं में ज्ञान स्नान कर आज कितने पावन बन गये। बच्चों को भिन्न-भिन्न स्थानों पर सेवा करते हुए देख बापदादा सोचते हैं कैसे-कैसे स्थानों पर सेवा के लिए निर्भय बन बहुत लगन से रहे हुए हैं।''
अ.बापदादा 27.2.86

बाप के हाथ और साथ का राज

परमात्मा का हाथ और साथ ही आत्मा की उन्नति का एकमात्र आधार है। बुद्धि से परमात्मा का साथ होता है और बाप की श्रीमत ही उसके हाथ का काम करती है अर्थात् आत्माओं को सहयोग प्रदान करती है। जैसे हाथ से किसको रास्ता बताते हैं ऐसे ही बाबा की मुरली हमारे लिए बाबा का सबसे श्रेष्ठ हाथ है।

Q. परमपिता परमात्मा ही आत्माओं का कल्याणकारी है - उसका हाथ और साथ क्या है, उसका हाथ और साथ सर्व आत्माओं पर समान रीति है या कोई अन्तर है? यदि अन्तर है तो उसका कारण क्या है?

A. परमात्मा न्यायकारी, समदर्शी है, उसका हाथ और साथ सर्व आत्माओं के लिए समान और सदा है। परमात्मा की सब पर समान दृष्टि है, उनकी दृष्टि में कोई अन्तर नहीं है। आत्माओं के पार्ट और उसकी सेवा के आधार पर समय पर परमात्मा की मदद सबको मिलती है। परमात्मा तो सागर है परन्तु सागर से सहयोग आत्मायें अपनी शक्ति और पार्ट की आवश्यकता अनुसार प्राप्त करती हैं।

''हाथ और साथ - श्रीमत है हाथ और बुद्धियोग है साथ। तो मेले में जब हाथ और साथ दोनों ही छोड़ देते हो अर्थात् बाप से किनारा कर देते हो तब ही परेशान होते हो।''
अ.बापदादा 8.7.73

''बोझा उतारने का वा मुश्किल को सहज करने का साधन है - बाप का हाथ और साथ।... बाप की स्मृति आयेगी तो साथ में दादा की भी रहेगी ही और दादा की स्मृति से बाप की स्मृति भी रहेगी ही। अलग नहीं हो सकते हैं।... साकार स्नेही बनना भी कम बात नहीं है।''
अ.बापदादा 4.7.71

''कल्प पहले की यादगार में भी अर्जुन जब बाप का साथ भूल जाता था अर्थात् जब वह सारथी को भूल जाता था तो क्या बन जाता था? ' निर्बल' कहो व ' कायर' कहो। और जब स्मृति आती थी कि मेरा साथी और सारथी बाप है तो विजयी बन जाता था।''
अ.बापदादा 6.9.75

ईश्वरीय इज्जत, दैवी इज्जत और आसुरी इज्जत का राज

अभी हमारी ईश्वरीय इज्जत है। हम आत्माओं की ईश्वरीय इज्जत तब होती है, जब ईश्वर साकार में आकर हमको ईश्वरीय ज्ञान, गुणों, शक्तियों से परिपूर्ण करते हैं और हम ईश्वर के साथ ईश्वरीय कर्तव्य में सहयोगी बनते हैं। अभी ईश्वर बाप ने हम आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों से सम्पन्न बनाया है और ईश्वरीय कर्तव्य करना सिखाया है। जो आत्मायें जितना

इन ज्ञान, गुण, शक्तियों को धारण करते हैं और उनसे सर्व आत्माओं की सेवा करते हैं, उतना ही उनकी अन्य आत्मायें इज्जत करते हैं। उसकी यादगार में ही भक्ति मार्ग में रुद्र-यज्ञ रचकर शिव और सालिग्रामों की पूजा करते हैं। परमात्मा से हमको ज्ञान-गुण-शक्तियों की प्राप्ति होती है तो आत्मा अपने में विशेषता का अनुभव करती है और दूसरे भी अनुभव करते हैं। ईश्वरीय ज्ञान-गुण-शक्तियों से परिपूर्ण ये जीवन कल्प में सर्वोत्तम जीवन है। वास्तव में देवतायें तो कोई सेवा करते नहीं हैं, अभी के ईश्वरीय कर्तव्य के आधार पर ही भक्ति मार्ग में देवताओं की पूजा होती है। इसलिए ब्राह्मणों को देवताओं से ऊंच चोटी कहा जाता है क्योंकि ब्राह्मण ही परमात्मा से पढ़कर और ईश्वरीय सेवाकर देवता बनते हैं। ब्राह्मणों की है चढ़ती कला, जबकि देवताओं और असुरों की होती है उतरती कला।

सतयुग-त्रेता में आत्मा में दैवी गुण होते हैं, जिनके आधार पर वहाँ परस्पर एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और भक्ति मार्ग में उन देवी-देवताओं के मन्दिर बनाकर उनका मान-सम्मान करते हैं, वह हुई दैवी इज्जत। द्वापर-कलियुग में स्थूल धन-सम्पत्ति, पद, शुभ कर्मों आदि के आधार मान-सम्मान होता है, जो अल्पकाल का और स्वार्थवश ही होता है, वह है आसुरी इज्जत। देवतायें जब दैवी इज्जत वाले होते हैं तो बहुत सुखी होते हैं, दुख का नाम-निशान नहीं होता है।

''जो अभी माया की बहुत इज्जत वाले हैं, वे बेइज्जत बन जायेंगे। यह है ईश्वरीय इज्जत। दैवी इज्जत और आसुरी इज्जत में दिन-रात का फर्क है।... इस नॉलेज से ही तुम मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाते हो।'' सा.बाबा 6.10.04 रिवा.

''अगर मैं नॉलेजफुल हूँ तो जिसको भी नॉलेज देते हैं, क्या वे इस नॉलेज को इतना रेस्पेक्ट देते हैं? नॉलेज को रेस्पेक्ट देना अर्थात् नॉलेजफुल को रेस्पेक्ट देना।... योग द्वारा किसके संकल्प को परिवर्तन में लाने से समर्थ बना सकते हैं। तो वे जरूर रेस्पेक्ट देंगे।'' अ.बापदादा 2.8.73

नॉलेज इज सोर्स ऑफ इनकम का राज

जैसे वह पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम हसेती है, वैसे ये ईश्वरी पढ़ाई भी सोर्स ऑफ इन्कम है क्योंकि इस पढ़ाई से हमको स्वर्ग 21 जन्म के लिए आजीविका मिलती है अर्थात् अथाह धन-सम्पत्ति मिलती है। यह भी बाबा ने समझाया है। तो इस पढ़ाई को कितना अच्छी रीति पढाना चाहिए।

''पढ़ाई होती है सोर्स ऑफ इन्कम। ... तुमको इस पढ़ाई का कितना नशा होना चाहिए।... क्लास में जानते हैं कि सबको स्कॉलरशिप तो नहीं मिलेगी, फिर भी पुरुषार्थ तो करते हैं ना!'' सा.बाबा 23-6-05 रिवा.

''पढ़ाई होती है सोर्स ऑफ इन्कम। ... तुमको इस पढ़ाई का कितना नशा होना चाहिए।... क्लास में जानते हैं कि सबको स्कॉलरशिप तो नहीं मिलेगी, फिर भी पुरुषार्थ तो करते हैं ना!'' सा.बाबा 23-6-05 रिवा.

''यह है संगमयुग, अभी तुमको अविनाशी ज्ञान रतनों का दान मिलता है, जिससे तुम साहूकार बनते हो। यह एक-एक रतन लाखों रुपयों का है। ... यह है सोर्स आफ इन्कम।'' सा.बाबा 25.8.05 रिवा.

गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ इज दि बेस्ट का राज

स्टूडेण्ट लाइफ लौकिक दुनिया में भी श्रेष्ठ मानते है, वह होती है निश्चिन्त लाइफ। जीवन के हिसाब से भी वह चढ़ती कला का जीवन होता है। फिर गॉडली लाइफ का तो कहना ही क्या! भगवान पढ़ाने वाला हो और आत्मायें पढ़ने वाली हों, जिस पढ़ाई का फल अभी अतीन्द्रिय सुख और भविष्य में स्वर्ग का सुख हो तो वह जीवन कितना आनन्दमय होगा, इसकी परिकल्पना से ही नशा चढ़ जाता है और रोमांच हर्षित हो जाते हैं। अभी हमको परमात्मा पढ़ाते हैं, हमारी ये लाइफ गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ है, जो देवताओं से भी श्रेष्ठ है।

''तुम जानते हो शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। ... अभी तुम सबकी गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ है। ऐसी युनिवर्सिटी कहाँ देखी, जहाँ बच्चे, जवान, बूढ़े सब इकट्ठे पढ़ते हों। ... यह ब्रह्मा भी पढ़ते हैं।'' सा.बाबा 6.10.04 रिवा.

‘‘राजधानी है ना। स्वर्ग में भी मर्तबे तो नम्बरवार बहुत हैं। बाप एक ही पढ़ाई पढ़ाते हैं परन्तु पढ़ने वाले तो नम्बरवार ही होते हैं। ... वहाँ यह मालूम नहीं होगा कि ये पद हमको कैसे मिला।’’ सा.बाबा 5.10.04 रिवा.

‘‘दुनिया में कोई नहीं जानता कि ईश्वरीय युनिवर्सिटी भी होती है। तुम बच्चे अभी जानते हो - गीता का भगवान शिव आकर यह युनिवर्सिटी खोलते हैं। ... वास्तव में सर्व शास्त्रमई शिरोमणि है ही गीता।’’ सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

‘‘यह है गॉडली युनिवर्सिटी। भगवान पढ़ाते हैं, देही-अभिमानी भी वही बना सकते हैं। वह और कोई हुनर जानता ही नहीं। ... बाप इस समय ही आते हैं तुमको देही-अभिमानी बनाने। ... यह पढ़ाई है मनुष्य से देवता बनने की।’’

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

‘‘सच्चे-सच्चे स्टूडेण्ट बनो। अच्छे स्टूडेण्ट जो होते हैं, वे एकान्त में बगीचे में जाकर पढ़ते हैं। ... पढ़ाई के लिए टाइम निकालना चाहिए। स्वीट बाप और स्वर्ग को याद करेंगे तो अन्त मति सो गति हो जायेगी।’’ सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

‘‘इसमें योग बहुत जरूरी है। योग से ही हमारी आत्मा जो पतित बन गई है, वह पावन बनेगी। फिर हम पवित्र बन पवित्र दुनिया में राज्य करेंगे। सब इम्तहानों में सबसे बड़ा यह इम्तहान वा सभी पढ़ाइयों से ऊंच पढ़ाई यह है। ... बच्चों को यहाँ बैठे यह खुशी रहनी चाहिए। स्टूडेण्ट लाइफ इज दि बेस्ट यह है।’’ सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

‘‘अपना गॉडली स्टूडेण्ट रूप सदा स्मृति में रहे। ... भगवान मेरे लिए बाप-टीचर बनकर आये हैं।... क्लास में मुरली सुनाने वाले को नहीं देखो लेकिन बोलने वाले बोल किसके हैं, उसको सामने देखो।’’ अ.बापदादा31.12.70

‘‘काम विकार है मुख्य। एक काम विकार के कारण सारी क्वालिफिकेशन बिगड़ पड़ती है, इसलिए बाप कहते हैं - काम विकार को जीतो तो जगतजीत बनेंगे। ... यह पढ़ाई है ही पतित से पावन बनने की।’’ सा.बाबा 17.11.04 रिवा.

‘‘वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी का राज़ समझकर सबको समझाओ। मूल बात है मन्मनाभव। याद की यात्रा है नम्बरवन। ... पढ़ाई कितनी मीठी लगती है क्योंकि नॉलेज इज सोर्स ऑफ इन्कम।’’ सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

‘‘यह एक ही पढ़ाई है, जिससे तुम्हारी कमाई होती है। ... कोई समय ऐसी गुह्य बातें निकलती हैं, जो पुराना संशय ही उड़ जाता है, इसलिए पढ़ाई कब मिस नहीं करनी चाहिए।’’ सा.बाबा 20.12.04 रिवा.

‘‘यह स्टूडेण्ट लाइफ भी एक ही बार होती है, जब भगवान आकर पढ़ाते हैं। ... जब भगवान हमको पढ़ाते हैं तो तुमको कितना हर्षित रहना चाहिए।’’ सा.बाबा 16.5.05 रिवा.

‘‘अपने परिचय में यह शब्द नहीं कह सकते हो कि हम सहज राजयोग की पढ़ाई के स्टूडेन्ट हैं। स्टूडेण्ट तो हो ना। स्टूडेण्ट को पढ़ाई का अनुभव न हो, यह हो नहीं सकता।’’ अ.बापदादा 11.3.71

‘‘बाबा हमारा बाप-टीचर-गुरु है। लौकिक में किसी का बाप, टीचर होता है तो अपने बच्चे को बहुत रुचि से पढ़ाते हैं क्योंकि ब्लड कनेक्शन होता है, अपना समझकर पढ़ाते हैं। यहाँ भी बाबा तुम्हारा बाप-टीचर-गुरु है। बाप अपने बच्चों को पढ़ाते हैं तो कितना रुचि से पढ़ाते होंगे (सोचो)। बच्चों को भी कितना रुचि से पढ़ना चाहिए।’’ सा.बाबा 15.9.69 रिवा.

‘‘बाप कहते हैं - अभी तक जो कुछ पढ़ा है, उसे बुद्धि से भूल जाओ और मैं जो सुनाता हूँ, वह पढ़ो।... बाप कहते हैं - विचार सागर मन्थन कर युक्तियाँ निकालो कि कैसे सबको जगायें। भल जागेंगे भी ड्रामा अनुसार ही।’’ सा.बाबा 6.8.05 रिवा.

पढ़ाई और परीक्षा का राज

बाबा पढ़ाई पढ़ाता है और उसमें पास होने के लिए पेपर क्या आने वाला है, वह पहले से ही बता देता है, फिर भी परीक्षा में नम्बरवार ही पास होते हैं। ये पढ़ाई, परीक्षा और परिणाम का राज़ भी बाबा ने अभी बताया है और परीक्षा में अच्छे मार्क्स से पास हों, उसके लिए युक्तियां भी बताई हैं।

''निश्चय की परीक्षा तो हो गई। अब कौनसी परीक्षा होनी है? परीक्षा का मालूम होते भी फेल हो जाते हैं। कोई-कोई के लिए यह बड़ा पेपर है और कोई-कोई का अब बड़ा पेपर होना है। ... पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था, वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा हैं।'' अ.बापदादा 18.1.70

''जरूर कोई डिफीकल्ट बात है, जिसके लिए भगवान को आना पड़ता है। ... बड़ा इम्तहान बहुत थोड़े स्टूडेण्ट ही पास करते हैं... यह तो है रुहानी ज्ञान, जो रुहानी बाप पढ़ाते हैं। कितनी ऊंच पढ़ाई है। बच्चों को डिफीकल्ट लगता है क्योंकि बाप को याद नहीं करते। ... एक भगवान को ही पतित-पावन कहा जाता है। सबको पावन बनाना भगवान का ही काम है।''

सा.बाबा 22.10.04 रिवा.

''लास्ट का पेपर सेकेण्ड का आना है और अचानक आना है। ... यह अभ्यास बहुत-बहुत-बहुत आवश्यक है। ... यह भी पता नहीं पड़े कि मैं सोल-कान्सेस, पॉवरफुल स्थिति में नेचुरल हो गया है। ... हूँ ही आत्मा।'' अ.बापदादा 15.2.2000

''तुम्हारा पेपर ऊपर से आयेगा। सब साक्षात्कार करेंगे। कैसी वण्डरफुल पढ़ाई है। कौन पढ़ाते हैं, किसको पता नहीं है। ... यह जो गायन है अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो, यह पिछाड़ी की बात है। ... कई कहते हमको इतना मिले तो हम जाकर अलग रहें। चलन से समझा जाता है। इसका मतलब निश्चय नहीं है, लाचारी बैठे हैं।'' सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

''आगे परीक्षायें भी कड़ी आने वाली हैं, उनका सामना करने के लिए पुरुषार्थ भी कड़ा चाहिए... मुख्य श्रीमत यही है कि ज्यादा से ज्यादा समय याद की यात्रा में रहना है क्योंकि याद की यात्रा से ही पवित्रता, दैवीगुण और सर्विस में सफलता होगी।''

अ.बापदादा 19.6.69

''दृष्टि से सृष्टि बनती है। ... बाप पहला पाठ क्या पढ़ाते हैं? भाई-भाई की दृष्टि से देखो।... पुरुषार्थ भी मुख्य इस बात का ही है दृष्टि बदलने का। जब दृष्टि बदल जाती है तो स्थिति स्वत: बदल जाती है।'' अ.बापदादा 18.6.69

''फाइनल पेपर जो विनाश का है, उसमें पास होने के लिए भी सहनशक्ति चाहिए।... सहनशक्ति कैसे आयेगी? जितना-जितना बाप-टीचर-सत्गुरु के स्नेही बनेंगे। स्नेह में शक्ति आ जाती है। ... स्नेह कम है इसलिए सहनशक्ति भी कम है।''

अ.बापदादा 26.5.69

''साकार तन द्वारा पढ़ाने का पार्ट था, वह पढ़ाई का कोर्स तो पूरा हुआ। अब पढ़ाई पढ़ाने के लिए नहीं आते हैं। वह कोर्स, उसी तन द्वारा पार्ट पूरा हो चुका है। अभी तो आते हैं मिलने के लिए, बहलाने के लिए। मुख्य बात है अशरीरी बनने की। कर्मातीत बनकर क्या किया? एक सेकेण्ड में पंछी बन उड़ गया।... पढ़ाई तो पूरी हुई, बाकी एक कार्य रहा हुआ है, वह है साथ ले जाने का।'' अ.बापदादा 26.6.69

''कहाँ तक रिवाइज कोर्स पूरा हुआ है, वह अभी निर्णय करना है। ... साकार तन के हर कर्म, हर स्थिति से अपने को भेंट करना है। उनको देखने, भेंट करने से पता पड़ेगा कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं।'' अ.बापदादा 26.6.69

''एक ही इम्तहान है। ऐसे भी मत समझो कि देरी से आने वाले कैसे पढ़ेंगे। लेकिन अभी तो नये-नये तीखे जा रहे हैं। प्रैक्टिकल में है। ... सभी बातों का सेक्रीन है - मन्मनाभव।'' सा.बाबा 9.12.04 रिवा.

''सृष्टि में सारा झाड़ समाया हुआ है परन्तु सृष्टि का ठिकाना संगम है। संगमयुग की बलिहारी है, जिसने आप सबको यहाँ लाया है। ... बापदादा की जो पढ़ाई मिली है, उसको धारण करो। धारणा से ही धीर्यवत और अन्तर्मुख होंगे।'' अ.बापदादा 6.07.69

''पास विद ऑनर और पास में क्या फर्क है? पास विद ऑनर अर्थात् मन में भी संकल्पों से सजा न खायें। धर्मराज की सजाओं की तो बात पीछे है लेकिन अपने संकल्पों की भी उलझन अथवा सजाओं से परे। इसको कहते हैं पास विद ऑनर।''

अ.बापदादा 6.8.70

''जब परीक्षायें शुरू हो जायेंगी फिर पुरुषार्थ नहीं कर सकेंगे। फिर फाइनल पेपर शुरू होगा।'' अ.बापदादा 25.1.70

''वारिस कितने बनाये, प्रजा कितनी बनाई।... फाइनल पेपर का आज सुना रहे हैं। किस-किस क्वेश्चन पर मार्क्स मिलते हैं। एक तो यह क्वेश्चन अन्तिम रिजल्ट में होगा, दूसरा सुनाया अन्त तक सर्विस का शो और तीसरी बात आदि से अन्त तक

अवस्था कैसी रही।... सारे जीवन की सर्विस, स्व-स्थिति और अन्त तक सर्विस का सबूत - यह तीन बातें देखी जायेंगी।''

अ.बापदादा20.12.69

''कोई कितनी भी कोशिश करें कि हम जल्दी कर्मातीत बन जायें परन्तु होगा नहीं। राजधानी स्थापन हो रही है। कोई स्टूडेण्ट कितना भी पढ़ाई में होशियार हो परन्तु इम्तहान तो टाइम पर ही होगा... 16 कला सम्पूर्ण आत्मा अभी कोई बन नहीं सकती।''

सा.बाबा 28.4.05 रिवा.

''अब यह नाटक पूरा हुआ, हम जाकर प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे। बाबा परीक्षा भी लेंगे। पहले तो पूरा बेगर बनना है। साहूकारी का नशा छोड़कर गरीब बन जाओ। पुराना सभी कुछ स्वाहा न करेंगे तब तक कर्मातीत अवस्था हो नहीं सकती।''

सा.बाबा 23.1.72 रिवा

''ऐसे हैं जो थोड़ा ही कुछ ठीक न मिला तो एकदम भाग जावें, राजाई को भी ठोकर मार दें। बीच में बेगरी का पार्ट चला। यह भी परीक्षा हुई थी। बहुत चले गये। यह सभी शिवबाबा का क्या राज़ था वह भी गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने। कितने डर के मारे भाग गये।'' सा.बाबा 21.11.72 रिवा.

''छिपाकर कुछ रखा तो उसमें बुद्धि जरूर लटकेगी।... शिव बाबा का भण्डारा है, उससे बच्चों को सभी कुछ मिलना ही है... शिव बाबा कहाँ कहाँ बच्चों की परीक्षा भी लेंगे, देखेंगे कितना देह अभिमान है।'' सा.बाबा 21.11.72 रिवा.

फाइनल पेपर में पास होने का राज़

फाइनल पेपर क्या होगा, उसमें क्या प्रश्न होंगे और वह पेपर कैसा होगा, उसमें पास होने की क्या-क्या शर्तें होंगी, उसमें कौन और कैसे पास हो सकेंगे, इस सबका राज़ भी बाबा ने बताया है और उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना है, उसको भी बताया है। पेपर के प्रश्न बाबा ने पहले से बता दिये हैं, फिर भी नम्बरवार ही पास होंगे, यह भी बताया है।

''तो लास्ट पेपर क्या देखा? स्नेह होते हुए भी नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। यही लास्ट पेपर यादगार में भी गायन रूप में है।... एक तरफ स्नेह को समाना और दूसरे तरफ रहा हुआ लास्ट का हिसाब-किताब सहन शक्ति से समाप्त करना।... कर्मभोग को भी समाना और स्नेह को भी समाना।'' अ.बापदादा 18.1.76

''भल कोई कितनी भी हिम्मत रखे लेकिन यह हिम्मत तुरत दान महापुण्य की जो आपने रखी, ऐसी हिम्मत अभी कोई रख नहीं सकता। नदियों में तो सभी नहाते हैं लेकिन आपने सागर में नहाया। ... लेकिन आगे सिर्फ स्नेह में थे। स्नेह से यह सभी किया, ज्ञान से नहीं। अभी स्नेह के साथ शक्ति भी है। ... ऐसी बातों का एलान निकलना है, जो आपके ध्यान में भी नहीं होंगी, स्वप्न में भी नहीं होंगी। ऐसे पेपर में जो पास होंगे, वे ही पास विद् ऑनर होंगे।'' अ.बापदादा20.12.69

''इस फाइनल पेपर का पहले ही एनाउन्स कर रहे हैं। इसमें पास होने के लिए हर समय निर्बन्धन। सर्विस के बन्धन से भी निर्बन्धन।... इस पेपर में पास वे होंगे, जिनकी अव्यक्त स्थिति होगी। शरीर के भान से भी परे हुए तो बाकी क्या बड़ी बात है।''

अ.बापदादा20.12.69

''फाइनल पेपर सेकेण्ड का ही होना है, मिनट का भी नहीं। सोचने वाला नहीं पास कर सकेगा, अनुभव वाला पास हो जायेगा। तो अभी सभी सेकेण्ड में 'मैं परमधाम निवासी श्रेष्ठ आत्मा हूँ', इस स्मृति का स्वीच ऑन करो, और कोई भी स्मृति नहीं हो, बुद्धि में कोई हलचल नहीं हो, अचल।'' अ.बापदादा30.11.03

''न्यारे तब हों सकेंगे जब जो कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे। अगर उस कार्य में अटेचमेन्ट होगी तो फिर एक सेकेण्ड में डिटेच नहीं हो सकेंगे। ... क्योंकि फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपनी तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। ... अगर इस सब्जेक्ट में नम्बर कम हैं तो फाइनल नम्बर में आगे नहीं आ सकेंगे।'' अ.बापदादा16.10.69

''लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ की विधि है - प्रतिज्ञा। ... प्रतिज्ञा अर्थात् संकल्प किया और स्वरूप हुआ। ... समय मिलेगा एक सेकण्ड का। लास्ट पेपर का टाइम भी फिक्स है और पेपर भी फिक्स है। पेपर सुनाया था ना - 'नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप'।''
अ.बापदादा 23.6.73

''यह तो अभी कुछ नहीं हुआ। अब तो बहुत कुछ होना है। आप सोचेंगे अचानक हो गया, इसलिये थोड़ा-सा हुआ। लेकिन पेपर तो अचानक आवेंगे, पेपर कोई बता कर नहीं आवेंगे। पहले बता तो दिया है कि ऐसे-ऐसे पेपर होने वाले हैं। लेकन उस समय अचानक होता है।''
अ.बापदादा 19.9.72

''पहले के पेपर कुछ अलग हैं, लेकन अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जैसे हद का ड्रामा साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। तो ऐसी एकरस अवस्था होनी चाहिए।''
अ.बापदादा 19.9.72

''साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए। घबराई हुई या युद्ध करती हुई अवस्था ना हो। कोई घबराते भी नहीं हैं, युद्ध में लग जाते हैं। ज़रुर कुछ कल्याण होगा। लेकन साक्षी दृष्टा की स्टेज बिल्कुल अलग है। इसको ही एकरस अवस्था कहा जाता है। वह तब होगी जब एक ही बाप की याद में सदा मग्न होंगे।''
अ.बापदादा 19.9.72

''अब सम्पूर्ण स्थिति की स्टेज व सम्पूर्ण परिणाम का समय नज़दीक आ रहा है। रिज़ल्ट आउट बाप-दादा मुख द्वारा नहीं करेंगे या कोई कागज़ व बोर्ड पर नम्बर नहीं लिखेंगे।... स्वयं ही स्वयं को अपनी योग्यताओं प्रमाण अपने-अपने निश्चित नम्बर के योग्य समझेंगे और सिद्ध करेंगे।''
अ.बापदादा 27.5.74

''ऑटोमेटिकली उनके मुख से स्वयं के प्रति फाइनल रिज़ल्ट के नम्बर न सोचते हुए भी, उनके मुख से सुनाई देंगे और चलन से दिखाई देंगे। ... तो आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण और सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा अर्थात् ब्राह्माण परिवार एक शीश महल बन जायेगा।''
अ.बापदादा 27.5.74

''सेकण्ड के हार-जीत के खेल में कौन-सी शक्ति चाहिए? ऐसे समय में समेटने की शक्ति आवश्यक है। जो अपने देहाभिमान के संकल्प को, देह की दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को, क्या होगा? इस हलचल के संकल्प को भी समेटना है। शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तुओं... के संकल्प को भी समेटना है।''
अ.बापदादा 14.9.75

''अब तक भी स्मृति-स्वरूप नहीं बने हो? क्या यह अन्तिम स्टेज है या बहुत समय के अभ्यासी ही अन्त में इस स्टेज को प्राप्त कर पास विद ऑनर बन सकेंगे? वर्तमान समय पुरूषार्थियों के मन में यह संकल्प उठना कि अन्त में विजयी बनेंगे व अन्त में निर्विघ्न और विघ्न-विनाशक बनेंगे-यह संकल्प ही रॉयल रूप का अलबेलापन है अर्थात् रॉयल माया है।'' अ.बापदादा 6.1.75

परीक्षा और पश्चाताप का राज़

हमने कोई बुरा कार्य नहीं किया, कोई पाप-कर्म नहीं किया, केवल इसीलिए ही पश्चाताप नहीं होगा परन्तु परमात्मा ने हमको क्या-क्या दिया अर्थात् हमको क्या-क्या प्राप्ति करने का अवसर परमात्मा ने दिया परन्तु हमने वह प्राप्त किया या उसमें कोई कमी रह गई अर्थात् हमने पुरुषार्थ करके वैसा नहीं किया, उसमें कमी रह गई तो उसका भी पश्चाताप होना स्वाभाविक ही है। इसलिए हमको चेक करके उन सभी प्राप्तियों का पुरुषार्थ करना चाहिए, जिनको प्राप्त करने का अवसर बाबा ने दिया है। ये पश्चाताप भी हमको अन्तिम परीक्षा में पास होने में बाधक हो जायेगा क्योंकि वह संकल्प हमको देह से न्यारा नहीं होने देगा। सब प्राप्तियाँ हुई हैं, उसकी कसौटी है कि हमारी स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या होगी अर्थात् सम्पन्नता और सन्तुष्टता की होगी।

देह से न्यारा होकर परमानन्द को अनुभव करने का राज़ / न्यारा और प्यारा बनने का राज

देह से न्यारी स्थिति और उस स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखना और पार्ट बजाना सबसे श्रेष्ठ स्थिति है, जो परमानन्दमय है। ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है इसलिए हम इसमें तो कोई परिवर्तन नहीं कर सकते हैं परन्तु इस स्थिति

में स्थित होकर इस विश्व नाटक का परम आनन्द अनुभव कर सकते हैं। संगम पर इसका पुरुषार्थ करना ही हमारे हाथों में है। इसीलिए किसी लेखक ने लिखा है - Events can't be changed but we can change our attitude towards events. जो जितना इस देह से न्यारा होगा, वह उतना ही बाप का और सारे विश्व का प्यारा होगा। प्यारा बनने का आधार ही है न्यारा बनना। देह और देह की दुनिया से न्यारी स्थिति प्यारी स्थिति है।

''सिर्फ बाहर से न्यारा नहीं बनना है। मन का लगाव न हो। जितना-जितना न्यारा बनेंगे उतना-उतना प्यारा अवश्य बनेंगे। अब अपनी देह से भी न्यारे हो जाते हो तो वह न्यारेपन की अवस्था अपने आप को भी प्यारी लगती है।'' अ.बापदादा 11.3.71

विश्व-शान्ति का राज

शान्ति सभी को प्रिय लगती है क्योंकि शान्ति आत्मा का स्वधर्म है और सभी चाहते हैं कि विश्व में शान्ति हो, आपस में प्रेम हो और उसके लिए पुरुषार्थ भी करते रहते हैं परन्तु दिनोदिन विश्व में दुख-अशान्ति ही बढ़ती जा रही है। जीवात्मा-जीवात्मा के दिलों की दूरी बढ़ती जा रही है, जिससे आत्माओं के अन्तर्द्वन्द बढ़ता जा रहा है। मनुष्य विश्व में शान्ति चाहते हैं परन्तु विश्व में शान्ति कब थी, कैसी थी, किसने स्थापन की, कैसे फिर स्थापन होगी, इस राज़ को कोई नहीं जानते, इसलिए विश्व में चाहते हुए भी शान्ति स्थापन नहीं हो पाती, बल्कि और ही अशान्ति बढ़ती जाती है। विश्व में शान्ति स्थापना का राज़ शान्ति का सागर विश्व पिता परमात्मा ही बताते हैं और वे ही विश्व में शान्ति स्थापन करते हैं, जो अभी कर रहे हैं। उनका ये आदेश है कि ये शान्ति का सन्देश सर्व आत्माओं को सुनाना है कि परमात्मा अभी विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं, इन श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण के राज्य में विश्व में शान्ति और सुख दोनों था, अभी फिर से स्थापन हो रहा है। परमधाम है शान्ति की दुनिया और सतयुग है शान्ति और सुख दोनों की दुनिया।

''तुम बच्चे विश्व में शान्ति स्थापन अर्थ निमित्त बने हो। तुम श्रीमत पर विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हो।... तुम्हारे अन्दर कोई अशान्ति नहीं होनी चाहिए।'' सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

''सतयुग में सुख भी है तो शान्ति भी है। घर जायेंगे तो वहाँ सिर्फ शान्ति होगी, सुख का नाम नहीं। अभी तुम शान्ति भी स्थापन कर रहे हो और सुख-शान्ति भी स्थापन कर रहे हो।'' सा.बाबा 8.11.04 रिवा.

''जब इस विनाश की आग चारो ओर लगेगी, उस समय आप श्रेष्ठ आत्माओं का पहला-पहला कर्तव्य कौनसा होगा। शान्ति का दान देना। ... अगर अपने पास शक्तियाँ जमा नहीं हैं और एक भी आत्मा वंचित रह गई तो उसका बोझ किस पर होगा, जो निमित्त बनी हुई हैं।'' अ.बापदादा 1.06.73

''जैसे स्थूल वस्तुयें अपनी भिन्न-भिन्न रसनाओं का अनुभव कराती हैं, ... ऐसे ही आप अपने निजी स्वरूप के हर गुण की रसना का अनुभव अन्य आत्माओं को कराओ।'' अ.बापदादा 25.1.74

सालवेन्ट - इन्सालवेन्ट स्थिति का राज

आत्मा, विश्व और उसमें भी विशेष भारत कब भरपूर (Solvent) था और कैसे भरपूर बना फिर कैसे दिवालिया (Insolvent) हो जाता है और फिर कैसे सालवेन्ट बनता, ये सब राज़ भी बाप ही बताते हैं और फिर से सालवेन्ट बनने का मार्ग बताते हैं अर्थात् सालवेन्ट बनाते हैं।

''बाप तुमको कितना सालवेन्ट बनाते हैं, फिर तुम इन्सालवेन्ट बन जाते हो। फलक से किसको समझाना चाहिए।... जो बच्चे बन्धनमुक्त हैं, वे ही यह सर्विस करते हैं। वे भी जैसे कल्प पहले बन्धनमुक्त हुए थे, वैसे होते रहते हैं।''

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

''तुम देखेंगे तो कहेंगे यह कितना बड़ा महारथी था, बहुतों को उठाते थे, आज है नहीं। देवाला मार दिया। ... मिथ्या अहंकार आ जाता है तो माया झट वार कर देती है। ... अहंकार में आने से माया बहुत विकर्म कराती है।'' सा.बाबा 13.11.04 रिवा.

''रचता और रचना को जानने से तुम सालवेन्ट बनते हो, न जानने से वही भारतवासी इन्सालवेन्ट बन पड़े हैं।... अभी तुम बच्चे जानते हो - हम युद्ध के मैदान में हैं। कल्प-कल्प बाप हमको माया पर जीत पहनाते हैं।'' सा.बाबा 2.5.05 रिवा.

तीन बाप का राज

सतयुग-त्रेता में होता है एक बाप, द्वापर-कलियुग में दो बाप और संगमयुग पर हमारे तीन बाप हैं - इसका अर्थ सहित यथार्थ राज़ अभी परमात्मा ने बताया है कि ब्रह्मा सृष्टि का आदि पिता है और हम अभी उनके डायरेक्ट बच्चे बने हैं, इसलिए हमारे तीन बाप हैं। दुनिया में भी धर्मपिता शब्द तो कहते हैं परन्तु उसका यथार्थ अर्थ नहीं समझते। मनुष्यों को आत्माओं के पिता परमात्मा के विषय में भी सत्य ज्ञान नहीं है, इसलिए परमात्मा के प्रति भी यथार्थ रीति पिता की भावना नहीं बैठती। इन सब राज़ों को अभी ही हम जानते हैं, जब परमात्मा ने हमको ज्ञान दिया है कि सतयुग में न ब्रह्मा बाप को जानते और न आत्माओं के बाप शिवबाबा को याद करते हैं, इसलिए वहाँ एक लौकिक बाप ही होता है। भक्ति मार्ग में आत्माओं के बाप परमात्मा को याद करते हैं भले ही उसका ज्ञान नहीं होता है इसलिए वहाँ दो बाप होते हैं। संगमयुग पर लौकिक बाप भी होता, शिवबाबा आत्माओं का बाप भी होता और सृष्टि का आदि पिता ब्रह्मा बाबा भी होता है, इसलिए संगमयुग पर तीन बाप होते हैं। ये तीन बाप का राज़ अति गुह्य है, इसका जिसको निश्चय हो जाता है, वे महान भाग्यशाली हैं।

''तुम बच्चे 3 बाप का राज भी सबको समझा सकते हो। दो बाप तो सब समझते हैं लौकिक और पारलौकिक, यह है अलौकिक प्रजापिता ब्रह्मा, जो अभी संगमयुग पर है।'' सा.बाबा 30.8.05 रिवा.

''बाप है लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक। हद का बाप है लौकिक, बेहद का बाप है पारलौकिक। यह है संगमयुगी वण्डरफुल बाप, इनको अलौकिक बाप कहा जाता है... मन्दिरों में भी आदि देव का चित्र है ना।... तुम इस समय हो ईश्वरीय सन्तान, फिर होंगे देवताई सन्तान। डिग्री कम हो गई ना... सीढ़ी नीचे उतरना ही है।'' सा.बाबा 5.9.05 रिवा.

निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति का राज

आत्मिक स्वरूप निराकार है। आत्मिक स्वरूप के ज्ञान और उस पर निश्चय से आत्मा उस स्थिति में सहज स्थित हो जाती है और जो निराकारी स्थिति में स्थित होगा, वह निरहंकारी भी बन जाता है। निरहंकारी और निराकारी स्थिति वाला निर्विकारी अवश्य ही होगा। साकार बाबा ने हम बच्चों के जीवन की सफलता के लिए वरदान के रूप में अन्तिम महावाक्य भी ये ही उच्चारण किये थे। निराकारी स्थिति के सफल अभ्यास का आधार निरहंकारी और निर्विकारी स्थिति है और निरहंकारी-निर्विकारी स्थिति का आधार है निराकारी स्थिति।

''सेवा में निमित्त भाव ही सेवा की सफलता का आधार है।... निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी - ये तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वत: ही आती हैं।'' अ.बापदादा 1.03.86

''साथ-साथ मन की एक्सरसाइज बार-बार करो। जब बाप समान बनना है तो एक है निराकार और दूसरा है अव्यक्त फरिश्ता। जब भी जो समय मिलता है, सेकेण्ड में बाप समान निराकारी स्टेज पर स्थित हो जाओ। बाप समान बनना है तो निराकारी स्थिति बाप समान है। कार्य करते फरिश्ता बनकर कार्म करो। फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट।'' अ.बापदादा14.11.02

''मनसा-वाचा-कर्मणा तीनों को ठीक करने के लिए सिर्फ तीन शब्द याद रहें, वे तीन शब्द हैं - निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी। मनसा के लिए है निराकारी, वाचा के लिए है निरहंकारी और कर्मणा के लिए है निर्विकारी।... जितना निराकारी स्थिति में होंगे, उतना ही निरहंकारी और निर्विकारी रहेंगे।'' अ.बापदादा 8.05.69

''अगर निराकारी स्थिति में स्थित होकर निरहंकारी बनो तो निर्विकारी तो ऑटोमेटिकली हो जायेंगे। निरहंकारी बनते जरूर हो लेकिन निराकार होकर निरहंकारी नहीं बनते हो।... निराकारी स्थिति में स्थित होकर साकार में आकर यह कार्य कर रही हूँ। यह स्मृति सदा रहे।'' अ.बापदादा 15.9.71

''डबल निशाना कौन सा है? एक है आत्माभिमानी बनने का निशाना और दूसरा निर्विकारी स्टेज, जिसमें मन्सा की भी निर्विकारीपन की स्टेज आ जाती है।... जब तक पूरी रीति आत्माभिमानी न बने हैं, तब तक निर्विकारी बन नहीं सकते।''

अ.बापदादा 20.8.71

''अपनी ऐसी श्रेष्ठ तस्वीर बनाने के लिये मुख्य तीन विशेषताओं को भरने के लिये तीन शब्द याद रखो-(1)निर्वाण स्थिति में जाना है (2) निर्मान बनना है और (3) निर्माण करना है। निर्वाण, निर्माण और निर्मान अर्थात् मान से परे - यह तीन शब्द स्मृति में रखो तो तकदीर की तस्वीर आकर्षणमय बन जायेगी।'' अ.बापदादा 18.7.74

रुहानियत और रुहानी स्नेह का राज

अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा में रुहानियत अर्थात् आत्मिक गुण होते हैं, जो एक चुम्बक का काम करते हैं। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा का सर्वात्माओं के प्रति स्वभाविक स्नेह होता है, जो उसको भी सुख देता है और अन्य आत्माओं को भी सुख देता है। जो आत्मा स्वयं रुहानियत में स्थित होता है, वह अन्य आत्माओं को भी रुहानियत का अनुभव करा सकता है। रुहानी स्नेह श्रेष्ठ सुखमय सम्बन्धों का धागा है, जिससे श्रेष्ठ सम्बन्ध जुटते हैं।

''जिनका बाप से अटूट स्नेह है, वे अमर भव के वरदानी हैं, सदा बेफिकर बादशाह हैं।... जैसे बाप निमित्त बनता है ना लेकिन निमित्त बनते भी न्यारा है, इसलिए बेफिकर है। ऐसे फॉलो फादर... 'मेरा बाबा', यह बाबा शब्द ही चाबी है सर्व खजानों की।''

अ.बापदादा 4.03.86 पार्टी

''सेवा की विशेषता है ही स्नेह। जब तक ज्ञान के साथ रुहानी स्नेह की अनुभूति नहीं होती तब तक ज्ञान कोई नहीं सुनेगा। ... बाप का स्नेह आकर्षित करने के कारण क्वेश्चन करेंगे तो भी समझने के रूप से करेंगे।... सेवा का मूलाधार है स्नेह।''

अ.बापदादा 4.03.86

''हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ शुद्ध स्नेह की दृष्टि हो। कोई कैसा भी हो लेकिन अपनी तरफ से सबके प्रति रुहानी आत्मिक स्नेह की दृष्टि धारण करना। इसको कहते हैं होली हंस दृष्टि। ... मुख से कभी व्यर्थ बोल न निकलें।'' अ.बापदादा 1.03.86

''कहाँ-कहाँ आत्माओं का अल्पकाल का प्रभाव पड़ जाता है, उन्होंको नोट करते हो कि यह कैसे करते हैं, कैसे बोलते हैं, इस कारण अपनी अथॉर्टी का जो फोर्स होना चाहिए वह दूसरी तरफ दृष्टि जाने से कमजोर हो जाता है। यह बड़ा सूक्ष्म नियम है।''

अ.बापदादा 9.10.71

''नॉलेज के अनुभवी तो आप दिन प्रतिदिन बन रहे हो लेकिन पॉवरफुल स्टेज जो पहले थी, वह है? वह निर्भयता है? वे अथॉर्टी के बोल हैं?... नॉलेज रिफाइन हो गई है, टेक्ट रिफाइन हो गई है लेकिन फोर्स कम है... पहले नॉलेज की आकर्षण नहीं थी लेकिन मस्तक और नयनों में आकर्षण थी।'' अ.बापदादा 9.10.71

''गुलाब का फूल पूजा के काम आता है अर्थात् वह देवताओं को अर्पित किया जाता है। कमल-पुष्प की विशेषता गाई जाती है लेकिन वह अर्पित नहीं किया जाता। तो आप सब बाप के आगे अर्पित गुलाब हो जैसे गुलाब वायुमण्डल में खुशबू फैलाता है, ऐसे ही आप सब भी चारो ओर अपनी रूहानियत की खुशबूएं फैलाने वाले हो?'' अ.बापदादा 20.2.74

रुहानी सेना का राज

बाबा ने इस संगठन को गुणों और कर्तव्यों के आधार पर भिन्न-भिन्न नामों से सम्बोधित किया है, पाण्डव, शिवशक्ति सेना, यज्ञ, पाठशाला, हॉस्पिटल, रुहानी सेना आदि आदि। उसमें एक नाम रुहानी सेना भी है क्योंकि जैसे सेना युद्ध करके विजय प्राप्त करती है ऐसे यहाँ भी युद्ध करके देहाभिमान रुपी रावण पर विजय प्राप्त करते हैं।''रुहानी सेना के लिए मुख्य लॉ यही है कि कभी भी अपनी देह को व अन्य देहधारी की तरफ नहीं देखना है। बाप की तरफ ही हर कदम उठाना है। यह है रुहानी सेना

के लिए मुख्य लॉ। अगर जरा भी देहधारी व अपनी देह को देखा, तो जो मंजिल है कि बाप के पास तक पहुँचना व बाप से मिलना, तो वहाँ तक पहुंच नहीं सकेंगे।'' अ.बापदादा 30.6.74

हम सो, सो अहम् का राज

दुनिया के सभी मनुष्य तो 'हम सो, सो अह्म्' का अर्थ आत्मा सो परमात्मा और परमात्मा सो आत्मा ही समझते हैं। पहले तो हम भी ऐसा ही समझते थे, जिसका कोई अर्थ और मतलब ही नहीं बैठता है। अभी इसका सत्य अर्थ बाबा ने बताया है कि हम आत्मायें ही पहले देवता थे और हम ही फिर देवता बनेंगे, जो विचार करने पर भी यथार्थ लगता है।

सच्ची कमाई और झूठी कमाई का राज

सच्ची कमाई और झूठी कमाई क्या होती है, इन शब्दों को भी नहीं जानते थे। मनुष्य तो इसका अर्थ ब्लेक मनी और व्हाइट मनी ही समझते हैं परन्तु अभी बाबा ने बताया है इस दुनिया की जो भी कमाई है वह सब झूठी कमाई है क्योंकि वह निकट भविष्य में होने वाले विनाश में विनाश हो जाने वाली है। अब प्रश्न उठता कि सच्ची कमाई क्या है और उसको कैसे कर सकते हैं, उसका राज़ भी अभी बाबा ने बताया है। सच्ची कमाई वह है, जो इस जन्म के बाद भी साथ चलने वाली है और आत्मा को जन्म-जन्मान्तर के लिए सदा सुख देने वाली भी है। अभी जो आत्मायें अपने तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में लगाकर, ज्ञान-योग-सेवा से जो कमाई करते हैं, वही सच्ची कमाई है क्योंकि वह न विनाश में खत्म होने वाली है और वह भविष्य नई दुनिया में भी साथ चलने वाली है। आज भी भल दुनिया में भी जो अच्छा कर्म करते हैं, उसका फल भी दूसरे जन्म में मिलता है परन्तु वह अल्पकाल का ही होता है। सच्ची कमाई और झूठी कमाई का इतना गहरा राज़, जो बाबा ने बताया है, वह कभी स्वप्न में भी किसी ने नहीं सोचा होगा। जिसके पास स्थूल न भी है, वह अपने तन और मन से, ज्ञान रतनों को धारण कर दान करने से अविनाशी कमाई कर सकते हैं।

''बाप समझाते हैं - इन सब धन्धों में है नुकसान, बिगर अविनाशी ज्ञान रतनों के धन्धे के। यह बाबा भल जवाहरात का धन्धा करते थे परन्तु फायदा तो नहीं हुआ ना। ... हमको बहुत फखुर रहता है - भगवान को हमने किराये पर अपना मकान दिया है। ड्रामा प्लैन अनुसार उनको और कोई मकान लेना ही नहीं है। ... यह तो समझते हैं ना - रथ दिया है तो जरूर बाप से मदद भी मिलेगी।'' सा.बाबा 2.11.04 रिवा.

''एक सेकेण्ड में किसको बाप का परिचय दे सकते हो? जितना औरों को परिचय देंगे, उतना ही अपना भविष्य प्रालब्ध बनायेंगे... जितना देते हो, उतना लेते हो। इस ज्ञान का भी प्रत्यक्ष फल और भविष्य के प्रालब्ध प्राप्ति का अनुभव करना है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''वह है विनाशी कमाई। तुमको तो यह बाप अविनाशी कमाई कराते हैं, भविष्य के लिए... तुम्हारी यह कमाई कितना समय चलती है। तुम जानते हो यह बना-बनाया ड्रामा है। ... यहाँ हम पार्ट बजाने आये हैं फिर जाते हैं अपने घर। आत्मा कैसे वापस जाती है, यह कोई समझते नहीं हैं। ड्रामा प्लेन अनुसार आत्माओं को आना ही है।'' सा.बाबा 12.2.05 रिवा.

''यह समय खोने का नहीं है। यह समय भारी कमाई करने का है। कमाई कराने के लिए ही बाप आया हुआ है। कमाई अथाह है, जिसको जितनी कमाई करनी हो, वह उतनी कर सकते हैं। यह अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भरने की कमाई है।'' सा.बाबा 12.5.05 रिवा.

सच्चे त्याग का राज

त्याग से ही भाग्य बनता है और त्याग ही भाग्य का दर्पण है। सच्चा त्याग क्या है, उसका ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है और सच्चे त्याग से भाग्य बनाने की प्रेरणा देते रहते हैं।

''आदि से ब्रह्मा बाप का त्याग और आप बच्चों का भाग्य ड्रामा में विशेष नूँधा हुआ है। सबसे नम्बरवन त्याग का एग्जाम्पुल ब्रह्मा बाप बना। त्याग उसको कहा जाता है, जो सब कुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे। ... साधनों का आरम्भ हो गया था परन्तु होते हुए भी साधना में अटल रहे। यह ब्रह्मा की तपस्या आप सब बच्चों का भाग्य बनाकर गई... ऐसे हर एक बच्चा अपने त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाये।'' अ.बापदादा 18.1.2000

''जो महादानी होते हैं, वे ही महाराजा-महारानी बनते हैं। आज महादानी कल महाराजा-महारानी। महान दान और महान त्याग। महात्यागी ही महादानी बनते हैं। अपनेपन का त्याग सबसे बड़ा त्याग है।... त्याग दर्पण है भाग्य देखने का।''

अ.बापदादा 23.3.70

''कुमारियां सम्पूर्ण पवित्रता और परिवर्तन शक्ति - इन दोनों विशेषताओं से सेवा, स्नेह और सहयोग में विशेष आत्मा बन सकेंगी। ... सदाकाल का त्याग और तपस्या हो तब कहेंगे विशेष कुमारी।'' अ.बापदादा28.10.75

त्याग और भाग्य का राज

तन-मन-धन से भाग्य विधाता बाप का बनना कोई त्याग नहीं है क्योंकि भाग्य विधाता बाप से जो भाग्य मिलता है, उसके आगे ये त्याग कुछ भी नहीं है। जो परमात्मा से प्राप्त हुए भाग्य के नशे में रहते हैं, उनको त्याग की कोई महसूसता नहीं होती है। वास्तव में ब्राह्मण जीवन कोई त्याग का जीवन नहीं है। त्याग किया बुराइयों का और उसके बदले में सुर-दुर्लभ भाग्य पाया - इस सत्य का अनुभव हो तो कभी भी त्याग भारी नहीं अनुभव होगा।

''राजऋषि अर्थात् सर्व अधिकारी और बेहद के वैरागी। ... दोनों का बैलेन्स... राजऋषि बनने के लिए जितना ही राज्य का नशा, उतना ही बेहद के वैराग्य के नज़ारे। दोनों साथ-साथ अनुभव होंगे... त्याग के साथ-साथ भाग्य भी स्पष्ट सामने दिखाई देगा।'' अ.बापदादा 7.10.75

''जैसे स्थूल धन वा स्थूल पद के प्राप्ति की चमक चेहरे से मालूम होती है... ऐसे ही स्वराज्य अधिकारी बच्चों के चमकते हुए चेहरे दिखाई दें, मेहनत के चिन्ह नहीं दिखाई दें, प्राप्ति के चिन्ह दिखाई दें... अभी त्याग दिखाई देता है, भाग्य नहीं दिखाई देता है।'' अ.बापदादा 9.10.87

''इस भाग्य को अभी से भी समय आने पर ज्यादा समझेंगे कि हम आत्मायें कितनी भाग्यवान हैं... जब विधाता के बच्चे, वरदाता के बच्चे बन गये। विधाता अर्थात् देने वाला।'' अ.बापदादा 9.10.87

''राजऋषि अर्थात् एक तरफ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग्य का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य, उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स... बेहद अर्थात् मैं सम्पूर्ण सम्पन्न आत्मा बाप समान सदा सर्व कर्मेन्द्रियों के राज्य अधिकारी।'' अ.बापदादा27.11.87

त्याग-तपस्या और सेवा का राज

त्याग-तपस्या और सेवा का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। एक भी यथार्थ रीति होगा तो दूसरे दो भी साथ-साथ अवश्य ही होंगं। तीनों का यथार्थ राज़ बाबा ने अभी बताया है, जिसके आधार पर ही हम अपने भाग्य को बनाने में समर्थ हुए हैं।

''तपस्या के साथ मन्सा सेवा जुड़ी हुई है... तपस्या अर्थात् स्वयं सर्व शक्तियों से सम्पन्न बन दृढ़ स्थिति और दृढ़ संकल्प द्वारा विश्व की सेवा करना। सिर्फ वाणी की सेवा, सेवा नहीं है। जैसे सुख-शान्ति, पवित्रता का आपस में सम्बन्ध है, वैसे ही त्याग-तपस्या-सेवा का सम्बन्ध है।'' अ.बापदादा 9.4.86

त्याग-तपस्या और सेवा का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। प्राय: तीनों कार्य साथ-साथ ही होते हैं अथवा यों कहें कि एक का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है अथवा जीवन में एक आता है तो दूसरे दोनों भी साथ अवश्य ही आते हैं।

''त्यागमूर्त के बिना तपस्वीमूर्त बन नहीं सकते। तो तपस्वी हो लेकिन साथ-साथ त्यागमूर्त भी बनना है… एक है आत्मिक स्थिति का तिलक, दूसरा है निश्चय का तिलक। … हम विजयी रत्न हैं।'' अ.बापदादा 20.8.71

''खुदाई खिजमतगार सेवा लेता नहीं है, देता है क्योंकि दाता के बच्चे हैं ना। जैसे बाप कुछ लेते हैं क्या?… अगर प्राब्लम बनने के कारण सेवा लेते हो तो दाता के बच्चे ठहरे?… सेवाधारी का मुख्य गुण होता है त्याग। अगर त्याग नहीं तो सेवा भी नहीं हो सकती।'' अ.बापदादा 19.7.71

''यह शरीर भी सिर्फ ईश्वरीय सर्विस के लिए अमानत के रूप में मिला हुआ है। … अमानत रुहानी बाप ने दी है, तो रुहानी बाप की याद रहेगी। अमानत समझने से रुहानियत रहेगी। रुहानियत से बुद्धि में राहत रहेगी।'' अ.बापदादा 19.7.71

''शुरू में जब आप लोग सर्विस पर निकले तो नॉलेज की शक्ति तो कम थी लेकिन सफलता किस आधार पर हुई। त्याग और स्नेह। बुद्धि की लगन दिन-रात बाबा और यज्ञ के तरफ थी। जिगर से निकलता था बाबा और यज्ञ। … स्थापना के आदि में साकार स्नेह ने ही सहयोगी बनाया वा त्याग कराया।'' अ.बापदादा 29.6.71

''अपने को वृक्षपति की सन्तान समझते हो? वृक्ष की निशानी भक्तिमार्ग में भी चली आती है। जब तपस्वी तपस्या करते हैं तो वृक्ष के नीचे तपस्या करते हैं। … वृक्ष के नीचे बैठने से ऑटोमेटीकली वृक्ष की नालेज सारी बुद्धि में आ जाती है।''

अ.बापदादा 25.6.71

''अभी तपस्या और सेवा साथ-साथ हो गई है। … तो ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा करते हुए भी तपस्या का बल अपने में आप ही भरते रहना है। जिससे तपस्या और सेवा दोनों कम्बाइन्ड और एक साथ रहेंगे।'' अ.बापदादा 25.6.71

''सारी नालेज का सार उन तीन शब्दों में समाया हुआ है। वह कौन से शब्द हैं? एक त्याग, दूसरा तपस्या और तीसरा है सेवा। इन तीनों शब्दों की धारणामूर्त बनना अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञानमूर्त और सर्व गुणों की मूर्त बनना।'' अ.बापदादा 19.4.71

''फास्ट पुरुषार्थ अर्थात् स्वयं की और अन्य आत्माओं की साथ-साथ सेवा हो, हर सेकेण्ड हर संकल्प में स्वयं के कल्याण की और विश्व के कल्याण की साथ-साथ भावना हो। एक ही सेकेण्ड में डबल कार्य हो, तब ही डबल ताजधारी बनेंगे। तो डबल क्राउन प्राप्त करने का आधार हर समय डबल सेवा हो - यह है लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ।'' अ.बापदादा 22.1.76

''जो त्यागमूर्त होगा वह कभी भी कोई वस्तु स्वीकार नहीं करेगा। जहाँ स्वीकार करने का संकल्प आया, वहाँ तपस्या भी समाप्त हो जायेगी। त्याग तपस्यामूर्त जरूर बनायेगा। जहाँ त्याग और तपस्या खत्म, वहां सेवा भी खत्म। … जब त्याग-तपस्या होगी तब सर्विस की सफलता होगी।'' अ.बापदादा20.10.75

''जो यहाँ ज्ञान-योग से प्राप्त हुये मान-शान की सिद्धि को स्वीकार करता है, उसकी प्रारब्ध यहाँ ही खत्म हो जाती है, भविष्य नहीं बनता है। … अल्पकाल के प्राप्त हुए भाग्य में भी यदि बुद्धि का झुकाव है तो वह सेवा सफलतामूर्त नहीं बन सकता। … सफलतामूर्त बनने के लिए त्याग और तपस्या चाहिए।'' अ.बापदादा 20.10.75

हद और बेहद का राज

हद अर्थात् देह और देह की दुनिया के सम्बन्ध की बातें और बेहद अर्थात् आत्मा और आत्मा के सम्बन्ध की बातें क्योंकि आत्मा हद और बेहद से पार है। हद अर्थात् स्वर्ग, जहाँ दुनिया छोटी होती है और बेहद अर्थात् नर्क जहाँ दुनिया में आबादी का बहुत विस्तार है। आत्माओं का घर परमधाम हद और बेहद दोनों से पार है। बाबा का हद-बेहद का संकेत आत्मा और शरीर के साथ भी होता है। बाबा जब बेहद का बाप कहता है तो उसका अर्थ होता है आत्माओं का बाप। ऐसे ही हद का बाप अर्थात् देह का बाप दैहिक बाप।

बाबा ने अभी हमको हद-बेहद का राज़ भी समझाया है और हद-बेहद से पार का भी राज़ समझाया है, जिससे हम हद-बेहद से पार का अनुभव भी कर सकते हैं। बाबा ने आत्मा और शरीर को तुलनात्मक दृष्टि से हद-बेहद कहा है क्योंकि आत्मा की कोई माप-तौल नहीं हो सकती परन्तु शरीर की हो सकती है। कहाँ-कहाँ जनसंख्या के हिसाब से भी बाबा ने हद-बेहद कहा

है। सतयुग में दुनिया बहुत छोटी होती अर्थात् हद में होती है और कलियुग के अन्त में दुनिया के आवासीय क्षेत्र का भी विस्तार हो जाता है तो जनसंख्या का भी विस्तार हो जाता है इसलिए उसको बेहद कहा है। साकार वतन को हद कहा जाता है क्योंकि आकाश तत्व की भी हद है क्योंकि उसके ऊपर सूक्ष्मवतन और मूलवतन है अर्थात् पृथ्वी आकाश तत्व से आवृत है और आकाश तत्व सूक्ष्म वतन से आवृत है और सूक्ष्मव वतन ब्रह्म तत्व से आवृत है। ब्रह्म महतत्व बेहद अर्थात् असीम है क्योंकि उसके परे कुछ भी नहीं है अर्थात् उसके आगे ब्रह्मतत्व ही ब्रह्मतत्व है।

''बच्चों को अभी हद-बेहद से पार जाना है। बाप जानते हैं मैं इन सबको लेने के लिए आया हूँ। ... मामेकम् याद करो तो पावन बन जायेंगे। मैं आता ही हूँ पतित से पावन बनाने।... महाप्रलय भी कोई होती नहीं है। बाप राजयोग सिखलाते हैं, फिर तुम राज़ाई पाते हो।'' सा.बाबा 11.9.04 रिवा.

हद से विरक्त बेहद में स्थित आत्मा मृत्यु-दुख से मुक्त, कर्मभोग होते भी कर्मभोग की वेदना की महसूसता से मुक्त मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति के परम सुख को अनुभव करती है। बेहद को भूल हद के सुखों के आकर्षण में आकर्षित आत्मा मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय, कर्मभोग की असह्य वेदना को भोगती है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख से वंचित हो जाती है।

''ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का यह सृष्टि-चक्र बना हुआ है। बुद्धि में यह ज्ञान रहना चाहिए। तुम बच्चों को हद और बेहद से पार जाना है। बाप तो हद और बेहद से पार है।'' सा.बाबा 8.11.04 रिवा.

''यह अच्छी रीति समझना होता है, फिर दुख और सुख से पार जाना है। हद-बेहद से पार। ... तुम बच्चों की बुद्धि में रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज होनी चाहिए।... बाप रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं फिर कहते - इससे पार चले जाओ।'' सा.बाबा 8.11.04 रिवा.

''पुरानी दुनिया कलियुग है, नई दुनिया सतयुग को कहा जाता है। नई दुनिया को पुरानी होने में कितने वर्ष लगते हैं, यह कोई नहीं जानते हैं।... यह लक्ष्मी-नारायण नई दुनिया स्वर्ग के मालिक थे। यह सब बातें बेहद का बाप ही बच्चों को समझाते हैं।... तुम अभी संगमयुग वासी हो।'' सा.बाबा 18.2.05 रिवा.

''जो सेवा खुशी से वंचित कर देती है, ऐसी सेवा को छोड़ दो लेकिन खुशी को नहीं छोड़ो। सच्ची सेवा सदा बेहद की स्थिति का, बेहद की खुशी का अनुभव कराती है। ... बापदादा देखते हैं - आये किसलिए हो, जाना कहाँ है और जा कहाँ रहे हैं? हद को छोड़कर फिर भी हद में ही जाना तो बेहद का अनुभव कब करेंगे!'' अ.बापदादा13.01.86

''मैं शब्द देहाभिमान से पार ले जाने वाला भी है तो मैं शब्द ही देही-अभिमानी से देहाभिमान में ले आने वाला भी है।... यह देहाभिमान का 'मैं' सभी से बड़ा महीन धागा है, जो न्यारा और बाप का प्यारा बनने के बजाये कोई न कोई आत्मा का वा कोई वस्तु का प्यारा बना देता है।'' अ.बापदादा 15.9.71

''इस बेहद की दुनिया का अब विनाश होना है। बेहद का बाप बेहद का ज्ञान तुमको सुनाते हैं। ... इसको कहा जाता है स्प्रीचुअल नॉलेज।... यहाँ हम आत्माओं को परमात्मा बाप आप समान बना रहे हैं। ... अभी तुम जानते हो हम बाप से बेहद की प्रालब्ध ले रहे हैं।'' सा.बाबा 11.6.05 रिवा.

''सिर्फ संकल्प में दृढ़ता की आवश्यकता है। सब हमारे हैं, हम सबके हैं - यह डबल लाइट बेहद विधि सिद्धि रूप में लाओ...बेहद की स्थिति, बेफिकर बादशाह का साक्षात्कार कराओ।... समय को भी प्रत्यक्ष करो और बाप को भी प्रत्यक्ष करो। बेहद की स्थिति बेहद का वायुमण्डल फैलायेगी ...स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाओ।''
अ.बापदादा का सन्देश 25.7.05 गुल्जार दादी द्वारा

''तुमको सारी पुरानी दुनिया को भूलना पड़ता है। हमको हद और बेहद से पार जाना है शान्तिधाम में। वहाँ तो शान्ति ही शान्ति है। बाकी हद और बेहद का सुख यहाँ है। अब तुमको हद और बेहद से पार जाना है शान्तिधाम।'' सा.बाबा 30.7.72 रिवा.

हद-बेहद के वैराग्य वृत्ति का राज

आत्म कल्याण के लिए वैराग्य मूलाधार है क्योंकि वैराग्य के बिना त्याग-तपस्या हो नहीं सकती और जब त्याग-तपस्या नहीं तो भाग्य का प्रश्न ही नहीं उठता। वैराग्य दो प्रकार का होता है। एक है हद का वैराग्य और दूसरा है बेहद का वैराग्य, उसका ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है। हद के वैराग्य से हद की प्राप्ति अर्थात् अल्पकाल की पाप्ति और बेहद के वैराग्य से बेहद की प्राप्ति अर्थात् दीर्घकाल की प्राप्ति होती है। हद का वैराग्य अर्थात् घर-बार का त्याग और बेहद का वैराग्य अर्थात् देह सहित सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य। वैराग्य के यथार्थ स्वरूप को जानकर बेहद के वैराग्य द्वारा ही बेहद का भाग्य पा सकते हैं।

''बेहद के वैराग्य लाने का सहज साधन कौनसा है? ... सदैव अपने को मधुवन निवासी समझो। लेकिन मधुवन को खाली नहीं देखना। मधुवन है ही मधुसूदन के साथ। मधुवन याद आने से बापदादा, दैवी परिवार, त्याग-तपस्या और सेवा भी याद आ जाती है। मधुवन तपस्या भूमि है। ... जब बेहद के वैरागी बनेंगे तब बेहद की सर्विस कर सकेंगे।'' अ.बापदादा 2.7.70

''जैसे लोगों को भी समझाते हो कि हम आत्मा शान्तस्वरुप हैं लेकिन सिर्फ शान्त स्वरुप नहीं है लेकिन उस शान्त स्वरुप में आनन्द, प्रेम, ज्ञान सभी समाया हुआ है। तो ऐसे बेहद के वैराग्यमूर्त वाले और साथ-साथ मधुरता भी, यही विशेषता मधुबन निवासियों की है।'' अ.बापदादा 19.9.72

''लगाव की निशानी है कि बुद्धि बार-बार बाप से हठ कर उस तरफ जाये तो समझो लगाव है। ... अब बेहद के वैराग्य का ऐसा अनुभव करो, जो दूसरे भी अनुभव करें।'' अ.बापदादा24.10.75

''विश्व-परिवर्तन होने के पहले विश्व की सर्वात्माओं में वैराग्य वृत्ति होगी और वैराग्य वृत्ति से ही बाप के परिचय को धारण कर सकेंगे। ... एक तरफ बेहद का वैराग्य होगा, दूसरी तरफ बाप के समान बाप के लव में लवलीन होंगे, तब ही बेहद का वैराग्य आयेगा।'' अ.बापदादा25.10.75

वैराग्य और सन्यास का राज़ / हद और बेहद के सन्यास का राज

पहले वैराग्य और फिर सन्यास होता है। जब इस दुनिया की नश्वरता और भविष्य होने वाली स्थिति अर्थात् विनाश का निश्चय होगा, तब इससे वैराग्य आयेगा और जब वैराग्य आयेगा तब ही इसका सन्यास कर सकेंगे। वह है हद का वैराग्य और सन्यास, यह है बेहद का वैराग्य और सन्यास। उसका अल्प काल का फल मिलता है, इसका 21 जन्मों के लिए फल मिलता है। पहले इस पुरानी दुनिया से वैराग्य होगा, तब ही हम बुद्धि से इसका सन्यास कर सकेंगे। यदि वैराग्य यथार्थ नहीं है तो सन्यास भी सफल नहीं हो सकता।

सन्यास की भी भक्ति मार्ग में बड़ी महिमा है। प्राय: सभी धर्मों में पवित्रता को महत्व दिया गया है, जिसके लिए किसी न किसी रूप से सन्यास का महत्व है ही। भारत में तो पवित्रता के लिए शंकराचार्य के द्वारा सन्यास धर्म की स्थापना की गई। क्रिश्चियन्स में नन्स, बौद्ध धर्म में बौद्ध-भिक्षु, जैन धर्म में साध्वी-साधू आदि आदि। परन्तु सच्चा सन्यास क्या है, यह भी बाबा ने अभी बताया है। बाबा ने यह भी बताया है कि सन्यास भी दो प्रकार है। एक है हद का सन्यास और दूसरा है बेहद का सन्यास। हद के सन्यासी तो घरबार छोड़कर जंगल में चले जाते हैं और उसको सन्यास कहते हैं, फिर भी उनको जीवन-निर्वाह के लिए गृहस्थियों पर ही निर्भर होना पड़ता है। इसलिए इसे हद का सन्यास कहते हैं। अभी बाबा ने बताया है सच्चा सन्यास है बेहद का सन्यास। बेहद का सन्यास अर्थात् देह और देह की दुनिया से बुद्धियोग हटाकर अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित रहकर एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद में रहना। हद के सन्यासियों की भी बाबा बहुत महिमा करते हैं क्योंकि वे पवित्र रहते हैं। बाबा कहते यह भी अच्छा है, पवित्र तो रहते हैं और पवित्रता के बल से भारत को थमाते हैं।

''तुम बच्चों को इस पुरानी दुनिया से वैराग्य आता है... सन्यासी लोग घरबार छोड़ कर जाते हैं, वह हो जाती है शारीरिक बात। तुम सन्यास करते हो बुद्धि से सारी दुनिया का... यह बेहद का वैराग्य, वह है हद का वैराग्य... अभी तुम हद से निकल बेहद में जाते हो।'' सा.बाबा 27.6.05 रिवा.

‘‘यहाँ की किसी भी वस्तु से दिल नहीं लगानी है। इनको तो देखते हुए भी देखना नहीं है। आंखे खुली होते हुए भी जैसेकि नींद में हो। परन्तु हिम्मत चाहिए, वह अवस्था चाहिए। यह तो निश्चय है कि यह पुरानी दुनिया होगी ही नहीं। इतना खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए।’’ सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

‘‘सन्यासी तो हैं ही निवृत्ति मार्ग वाले। उनका धर्म ही अलग है... तुम तो गृहस्थ आश्रम में रहते भक्ति आदि करते थे।’’

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

‘‘बाप बिगर ऐसी बातें कोई नहीं जानते। और सब हैं पुजारी, भल बड़े-बड़े शंकराचार्य आदि हैं। बाबा उनकी महिमा भी सुनाते हैं। पहले पवित्रता की ताकत से भारत को बहुत अच्छा थमाने के निमित्त बनते हैं... यह ज्ञान तुमको मिलता है इस संगमयुग पर और बाप ही देने वाला है।’’ सा.बाबा 8.11.04 रिवा.

‘‘शुरू में जो आये उनको वैराग्य दिलाया जाता था, आजकल की परिस्थितियां ही वैराग्य दिलाती हैं। ... सिर्फ ज्ञान के निश्चय का पक्का बीज डालेंगे और फल तैयार हो जायेगा... भल एक मास से आये हैं, यह भी बहुत है। एक सेकण्ड में भी परिवर्तन आ सकता है। यहाँ तो सेकेण्ड का सौदा है।’’ अ.बापदादा 25.1.70

‘‘उन्हों का सन्यास है हद का, सिर्फ घरबार छोड़ने का। तुम्हारा सन्यास व वैराग्य है सारी पुरानी दुनिया को छोड़ने का। ... याद की यात्रा है ही एक, जिसको राजयोग कहा जाता है।... अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी।’’ सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

‘‘तुम बच्चों को इस पुरानी दुनिया से वैराग्य आता है।... सन्यासी लोग घरबार छोड़ कर जाते हैं, वह हो जाती है शारीरिक बात। तुम सन्यास करते हो बुद्धि से सारी दुनिया का।... यह बेहद का वैराग्य, वह है हद का वैराग्य। ... अभी तुम हद से निकल बेहद में जाते हो।’’ सा.बाबा 27.6.05 रिवा.

वानप्रस्थ का राज

भारत में आयु के हिसाब से चार अवस्थायें गायीं जाती हैं - बाल, युवा, वानप्रस्थ और सन्यास। सच्चा वानप्रस्थ क्या है, वह अभी बाबा ने बताया है। वाणी से परे जाना ही सच्चा वानप्रस्थ है। वाणी से परे आत्मा परमधाम में ही रहती है, इसलिए परमधाम जाना ही सच्ची वाणी से परे वानप्रस्थ स्थिति है। जब तक आत्मा परमधाम न जाये तब तक उस स्थिति का अनुभव करने और उस स्थिति को धारण करने के लिए वाणी से परे अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर उसका अनुभव और अभ्यास करना ही वानप्रस्थ स्थिति है।

‘‘सारी दुनिया का सन्यास कर हम अपने घर चले जायेंगे। एक बाप के सिवाए कोई भी चीज याद न आये। ... वाणी से परे मूलवतन को कहेंगे। वहाँ सभी आत्मायें निवास करती हैं। अभी सबकी वानप्रस्थ अवस्था है क्योंकि सबको वाणी से परे जाना है घर।’’ सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

निवृत्ति मार्ग और प्रवृत्ति मार्ग का राज़

सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग और देवताओं का है प्रवृत्ति मार्ग। परमात्मा प्रवृत्ति मार्ग वाले के तन में ही आकर अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग से पवित्र प्रवृत्ति मार्ग अर्थात् देवी-देवताओं की दुनिया की स्थापना करते हैं। ये दोनों का अन्तर भी अभी ही हमको परमात्मा द्वारा पता पड़ा है। सृष्टि की संरचना में स्त्री-पुरुष दोनों का अर्थात् प्रवृत्ति अति आवश्यक है। निवृत्ति मार्ग वालों को भी जन्म तो प्रवृत्ति मार्ग वालों के पास ही लेना पड़ता है। समयानुसार विश्व-नाटक में दोनों का ही महत्व है।

‘‘ये जो साधू-सन्त हैं, इन सबका उद्धार मुझे ही करना पड़ता है। मैं निवृत्ति मार्ग में आता ही नहीं हूँ। यह है ही प्रवृत्ति मार्ग। ... देवताओं का है प्रवृत्ति मार्ग। वे कभी भ्रष्टाचार से पैदा नहीं होते। उनको कहते ही हैं श्रेष्ठाचारी। तुम अभी श्रेष्ठाचारी बन रहे हो।’’

सा.बाबा 4.11.04 रिवा.

''सन्यासी भी पहले बहुत अच्छे थे, पवित्र थे तो भारत को मदद देते थे। भारत में अगर पवित्रता न हो तो काम चिता पर जल जाये।'' सा.बाबा 8.12.04 रिवा.

पवित्र प्रवृत्ति मार्ग और पतित प्रवृत्ति मार्ग का राज

प्रवृत्ति भी दो प्रकार की होती है, एक है पवित्र प्रवृत्ति, जो सतयुग-त्रेतायुग में होती है और दूसरी है पतित प्रवृत्ति, जो द्वापर-कलियुग में होती है। सतयुग में विकार होते नही, इसलिए पवित्र प्रवृत्ति होती है, सन्तानोत्पत्ति भी योगबल से होती है। द्वापर से विकारों की प्रवेशता से पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले ही पतित प्रवृत्ति मार्ग में प्रवेश करते हैं, उसके बाद जो भी आत्मायें आती हैं, वे पतित प्रवृत्ति मार्ग वालों के पास ही जन्म लेती हैं, भले वे आत्मायें पवित्र होती हैं, इसलिए उनको पहले दुख नहीं भोगना पड़ता है। सन्यासी भी पुनर्जन्म पतित प्रवृत्ति मार्ग वालों के पास ही लेते हैं। परमात्मा आकर अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग से पवित्र प्रवृत्ति मार्ग की स्थापना करते हैं।

''सबसे जास्ती वैष्णव भारत था। यह लक्ष्मी-नारायण का वैष्णव राज्य है। ... अभी भारत की क्या हालत हो गई है। अभी बाप तुमको सारा राज़ समझा रहे हैं। ... माला प्रवृत्ति मार्ग वालों की है। निवृत्ति मार्ग वालों को तो माला फेरने का हुक्म नहीं है।''

सा.बाबा 19.11.04 रिवा.

''सतयुग में है पवित्र प्रवृत्ति मार्ग, कलियुग में हैं सभी अपवित्र प्रवृत्ति वाले। यह भी ड्रामा है। बाद में है निवृत्ति मार्ग, जिसको सन्यास धर्म कहते हैं, जो जंगल में जाकर रहते हैं। वह है हद का सन्यास।... बाप से तुम्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है तो तुम कितने नॉलेजफुल बने हो। इससे जास्ती नॉलेज कोई होती नहीं है।'' सा.बाबा 2.12.04 रिवा.

''इस प्रवृत्ति के आगे वह प्रवृत्ति आकर्षित नहीं करेगी। स्वत: ही देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध और देह के पदार्थों वा प्राप्तियों से नष्टोमोहा-स्मृतिस्वरूप हो जायेंगे... अमृतवेले से योग निन्द्रा तक भिन्न-भिन्न स्मृति-स्वरूप के अनुभवी हो जायेंगे।''

अ.बापदादा14.10.87

सर्व के माननीय बनने का राज

दुनिया में हर व्यक्ति सम्मान चाहता है परन्तु सम्मान किसको मिलता है और कैसे मिल सकता है, वह राज़ परमात्मा ही बताते हैं कि कैसे सर्व के माननीय बन सकते हैं। जो सर्व को मान देता है, सर्व के दिलों को जीतता है, सर्व को सहयोग करता है, वही सर्व का माननीय बनता है।

''ब्रह्मा बाप को देखा - आदिदेव होते हुए, ड्रामा की फर्स्ट आत्मा होते हुए भी सदा बच्चों को सम्मान दिया। ... इसलिए हर एक बच्चे के दिल में ब्रह्मा बाप माननीय बनें। सम्मान देना अर्थात् दूसरे के दिल में दिल के स्नेह का बीज बोना।''

अ.बापदादा 2.11.04

''अगर पर-स्थिति स्वस्थिति पर विजय प्राप्त कर लेती है, उसका कारण है स्वस्थिति कमजोर है... सदा स्व-स्थिति विजयी रहे, उसका साधन है - सदा स्वमान और सम्मान का बैलेन्स। स्वमानधरी आत्मा स्वत: ही सर्व को सम्मान देने वाला दाता है। वास्तव में किसी को भी सम्मान देना, देना नहीं, सम्मान देना माना सम्मान लेना है। सम्मान देने वाला सबके दिल में माननीय स्वत: ही बन जाता है।'' अ.बापदादा 2.11.04

क्रिमिनल आई और सिविल आई का राज

विकारी दृष्टि को क्रिमिनल आई और निर्विकारी दृष्टि को सिविल आई कहा जाता है, इस सत्य का ज्ञान भी अभी ही हमको हुआ है। इस सत्य को अनुभव और निश्चय करने वाले निश्चयबुद्धि ही अपनी दृष्टि-वृत्ति को बदलकर सिविल बना सकते हैं। क्रिमिनल आई आत्मिक पतन का कारण है और सिविल आई आत्मा के उत्थान का साधन है। सतयुग में सिविल और क्रिमिनल शब्द होते नहीं। क्रिमिनल आई और सिविल आई शब्द संगमयुग पर ही प्रयोग होते हैं।

आत्मा और परमात्मा की रूह-रुहान का राज़ / बाप और दादा की रूह-रुहान का राज

हम आत्माओं की तो परमात्मा शिवबाबा से ब्रह्मा बाबा के तन द्वारा बात हो जाती है, हम अपने दिल की बात बाबा को ब्रह्मा तन द्वारा सुना सकते हैं परन्तु ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा आपस में कैसे बात करते हैं, यह एक गुह्य पहेली है, जिस रहस्य का ज्ञान भी शिवबाबा ने दिया है।

''आज बापदादा की आपस में वतन में रूह-रुहान चली। कैसे दोनों एक-दो में रूह-रुहान करेंगे? जैसे यहाँ इस दुनिया में आप लोग 'मोनोएक्टिंग' करते हो ना! ... साकारी दुनिया में एक आत्मा दो पार्ट बजाती है, वैसे ही बापदादा दो आत्मायें एक शरीर से रूह-रुहान करते हैं।'' अ.बापदादा 19.3.2000

जैसे साकार में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से बात करता है तो अपने को आत्मा समझकर दूसरे को भी आत्मा रूप में देखकर बात करना भी रूह-रुहान है और अपने सामने दूसरी आत्माओं को इमर्ज करके रूह-रुहान कर सकते हैं। इस बात करने के बात करने वाले की अवस्था अच्छी है तो प्रत्यक्ष के समान बात होती है और उत्तर और प्रत्युत्तर भी मिलता है। ये सब राज़ भी बाप ने समझाये हैं।

ब्रह्मचर्य जीवन और दैवी-जीवन का राज

गायन है देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु को जीता है। आज कलियुग के अन्त में भी देवताओं के मन्दिरों में कोई विषय-भोग नहीं करता है या देवताओं के पूजन-भजन, व्रत आदि के समय विषय-भोग को अच्छा नहीं मानते हैं तो जब हमको देवता बनने के लिए कैसा जीवन चाहिए। दैवी जीवन का आधार ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य की धारणा से अन्य दैवी गुणों की धारणा सहज होती है। ज्ञान की धारणा भी ब्रह्मचर्य की धारणा से ही होती है।

ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्म और ब्रह्मा बाप के समान आचरण अर्थात् स्थिति। ब्रह्म में आत्मायें पवित्र होती हैं तो दृष्टि-वृत्ति पवित्र रखना ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्मा बाप के समान आचरण। केवल विषय-भोग से दूर रहना ही ब्रह्मचर्य नहीं है परन्तु ब्रह्म के समान पवित्र स्थिति धारण करना ब्रह्मचर्य है। सतयुग में न ब्रह्म का ज्ञान होता है और न ब्रह्मा का ज्ञान होता है, इस-लिए ये दोनों आचरण तो वहाँ होंगे नहीं लेकिन देवताओं में आत्मिक शक्ति होती है, देहाभिमान होता नहीं है, इसलिए उनके सारे कार्य योगबल से होते हैं, इसलिए विषय-भोग उनमें होता नहीं है।

आध्यात्मिक जीवन की सफलता का राज

आध्यात्मिक जीवन की सफलता का राज़ है, देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना। अपने को देह से न्यारा समझना और आत्मिक सुख का अनुभव करना क्योंकि आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है। आत्मा का यथार्थ ज्ञान भी अभी ही परमात्मा से मिला है, तब ही हमको इसका यथार्थ अनुभव होता है। जब तक आत्मिक स्वरूप का सही ज्ञान नहीं तब तक उसके लिए यथार्थ पुरुषार्थ भी नहीं हो सकता, इसलिए सफलता का प्रश्न ही नहीं, आध्यात्मिक जीवन और उसकी सफलता की परिकल्पना भी निराधार ही है। यही कारण है कि भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार से पुरुषार्थ करते भी आत्मिक शक्ति का पतन ही हुआ है। अभी बाबा ने आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म-सिद्धान्त आदि का ज्ञान दिया है, जिससे यथार्थ पुरुषार्थ करके अपने इस आध्यात्मिक जीवन को सफल बना सकते हैं। आत्मिक स्वरूप में स्थित होना ही इस जीवन की सबसे बड़ी सफलता है, जो ईश्वरीय ज्ञान और परमात्मा की याद से ही सम्भव है।

''मैं कर रहा हूँ होगा तो सहयोगी नहीं बनेंगे लेकिन करावनहार करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है रहेगा तो सहयोगी बनेंगे... जहाँ उमंग-उत्साह है वहाँ सफलता स्वयं समीप आकर गले की माला बन जाती है।'' अ.बापदादा14.10.87

''कोई काम में निश्चय होता है कि यह हो जायेगा, उसके लिए सहज हो जाता है और जो यह सोचता है कि कैसे होगा उसके लिए कठिन हो जाता है। ...जो अपना कर्तव्य समझकर करता है, उसके लिए सहज हो जाता है, बाप ने जो कार्य दिया वह कराने वाला मदद करता है।'' सा.बाबा 2.3.71 रिवा.

परमात्मा, ड्रामा और प्राकृतिक आपदाओं का राज

ड्रामा में प्राकृतिक आपदाओं की भी नूँध है, जो विनाश में सहयोगी बनती हैं। यद्यपि परमात्मा के कर्तव्य का प्राकृतिक आपदाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है, वह तो विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर आत्माओं को सुख के लिए रास्ता बताते हैं परन्तु जब आत्मा पावन बनती है, दुनिया पावन बनती है तो पुरानी पतित दुनिया का विनाश भी निश्चित ही है। उस विनाश की भी ड्रामा में नूँध है। पुरानी दुनिया के विनाश में प्राकृतिक आपदाओं की अहम् भूमिका है। ये प्राकृतिक आपदायें भी आत्माओं के प्रकृति के साथ के हिसाब-किताब चुक्तू करने का साधन हैं।

''बाप को भी भूल जाते हो। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है, जिसको विश्व का मालिक बनाया, उनका नाम डाल देते हैं और बनाने वाले का नाम गुम कर देते हैं... यह तो ड्रामा में पार्ट है, पुरानी दुनिया खत्म होनी है। पुरानी के विनाश के लिए यह नेचुरल कैलेमिटीज सब लेबर्स हैं। ऐसे नहीं कि उन्हों को बाप का डायरेक्शन है कि विनाश करो... यह तो ड्रामा में पार्ट है... यह बना-बनाया खेल है, जो रिपीट होता है... ड्रामा प्लैन अनुसार मकान आपही पुराना होता जायेगा... यह दुनिया खलास होनी है।''

सा.बाबा 24.11.04 रिवा.

ओम और ओम् शान्ति का राज

ओम का सही अर्थ भी अभी बाबा ने बताया है कि ओम माना आत्मा और शान्ति आत्मा का स्वधर्म है और शान्ति का सागर परमात्मा आत्मा का अविनाशी पिता है। शान्तिधाम आत्मा का घर है, इसलिए ही हर आत्मा को शान्ति प्रिय लगती है और वह अपने शान्तिधाम में जाना चाहती है, जिसके लिए ही शान्ति के सागर बाप को याद करती है। कल्प-कल्प परमात्मा आकर आत्माओं को अपने शान्त-स्वरूप स्वधर्म को, स्वदेश की याद दिलाते हैं।

''ओम् शान्ति कहने से ही सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, शान्ति के सागर बाप का बच्चा हूँ, जो स्वर्ग की स्थापना करते हैं। शान्ति देश की रहने वाली हूँ।'' सा.बाबा 17.11.04 रिवा.

ईश्वरीय गवर्मेन्ट का राज

जैसे और सब गवर्मेन्ट होती हैं, जो अपने राज्य की रक्षा और राज्य की वृद्धि के लिए पुरुषार्थ करते हैं, आपस में लड़ाई भी करते हैं, ऐसे ही ये है ईश्वरीय गवर्मेन्ट, जो ईश्वरीय राज्य स्थापन करने के लिए पुरुषार्थ कराती है। इसलिए ही राम और रावण की, पाण्डवों और कौरवों की लड़ाई गाई हुई है। राम बाप आकर रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए ज्ञान-योग के अस्त्र-शस्त्र देते हैं।

''हम ईश्वरीय गवर्मेन्ट के हैं। ईश्वरीय गवर्मेन्ट आत्माओं को पावन बनाकर देवता बनाती है। नहीं तो फिर देवता कहाँ से आये। इसलिए इसको गुप्त गवर्मेन्ट कहा जाता है। देवतायें ही स्वर्गवासी से नर्कवासी बनते हैं, फिर नर्कवासी से स्वर्गवासी बनते हैं।''

सा.बाबा 17.11.04 रिवा.

अचानक के पेपर का राज

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, जो कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता है। इस नाटक की प्राय: सभी मुख्य घटनायें, जो मानव जीवन के सुख-दुख को प्रभावित करती हैं, वे अचानक ही घटती हैं। भल ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है और सभी घटनायें पूर्व निश्चित हैं परन्तु उनका यथार्थ ज्ञान न होने के कारण वे अचानक ही अनुभव होती हैं। भल पूर्व निश्चित होने के कारण

ज्योतिषी, वैज्ञानिक आदि उनके विषय में भविष्य वाणी भी करते हैं परन्तु होती अचानक ही हैं। अभी बाबा ने हमको उन सभी के विषय में ज्ञान तो दिया है लेकिन बाबा उनके विषय में निश्चित समय नहीं बता सकता। यदि बताये तो ये नाटक ही आर्टिफिशियल हो जाये। अचानक होने और उनका सही पता न लगने में ही इस नाटक की सुन्दरता है, रोचकता है। अचानक की घटनायें में मुख्य हैं - मृत्यु, विनाश, प्राकृतिक आपदायें, प्रिय से बिछुड़ना, अप्रिय की प्राप्ति होना, शारीरिक कर्मभोग आदि आदि। इन सबका ज्ञान और उनका सामना करने और उनमें पास होने के लिए आवश्यक ज्ञान बाबा ने दिया है। विश्व-नाटक की निश्चितता को जानकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास ही इस अचानक के पेपर में पास होने की मुख्य तैयारी है क्योंकि आत्मिक स्वरूप सर्व प्रभावों से मुक्त है, उस स्थिति में होने पहले आत्मा को आभास होता है और उसके अनुरूप पुरुषार्थ स्वत: होता है। सदा बाप की छत्रछाया में रहना, उसके साथ रहना, ज्ञान बुद्धि में जाग्रत रखना ही इनमें पास होने का अभीष्ट पुरुषार्थ है।

''बच्चे देखते हो विनाश सामने खड़ा है। यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि कब होगा, क्या होगा। आयेगा तो अचानक। उनके पहले अपने बाप से वर्सा ले लो। ऐसे नहीं बतायेंगे कि फलानी तारीख को होगा। अचानक भंभोर को आग लगनी है... योग में रह विकर्म विनाश करने में टाइम लगता है।'' सा.बाबा 8.3.72 रिवा.

एवररेडी स्थिति का राज

अन्तिम पेपर में वे ही पास हो सकेंगे, जो एवर रेडी होंगे। एवर रेडी स्थिति क्या है और कैसी होगी, उसका राज़ भी बाबा ने बताया है और ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन से प्रत्यक्ष भी करके दिखाया है। एवर रेडी वही रह सकेगा, जिसको ड्रामा का यथार्थ ज्ञान होगा और परमात्मा के महावाक्यों पर पूरा निश्चय होगा और उसके अनुरूप अभीष्ट पुरुषार्थ किया होगा।

''अन्त मति सो गति। अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जायें, यह है पास विद् ऑनर की निशानी लेकिन वह तब होगी जब अपना चोला टाइट नहीं होगा... प्रैक्टिकल में देखा ना एक सेकेण्ड के बुलावे पर एवररेडी रह दिखाया।''

अ.बापदादा20.12.69

''एवर-रेडी बनना है। ... जो सभी के संकल्प में है, वह कभी नहीं होना है। होगा फिर भी अनायास ही। यह ब्राह्मण कुल की रीति-रस्म चालू हो चुकी है।'' अ.बापदादा 6.12.69

''ऐसे रुहानी ड्रिल के अभ्यासी हो, जो एक सेकण्ड में बुद्धि को जहाँ चाहें, जब चाहें, उसी स्टेज में उसी परसेन्टेज में स्थित कर सकते हो? ऐसे एवर-रेडी रुहानी मिलिट्री बने हो? एक सेकण्ड में इस देह के आकर्षण से परे हो सकते हो? हार और जीत का आधार एक सेकेण्ड पर होता है।'' अ.बापदादा31.11.71

''जैसे बाप एवर-रेडी अर्थात् सर्वशक्तियों से सम्पन्न हैं, तो क्या वैसे फालो-फादर हो?... एक तो विजय माला में पिरोने वालों का है- एवर-रेडी ग्रुप... 'सदा विजय' यही माला पहली निशानी ऐसे एवर-रेडी बच्चे इसी स्मृति से सदा श्रृंगारे हुए होंगे, दूसरी निशानी सदा साक्षी और सदा साथीपन के कवचधारी होंगे।'' अ. बापदादा 30.5.74

''जैसे दुनियावी लोग कहते हैं, कि जो होगा सो देखा जायेगा, ऐसे ही आप इन्तज़ाम करने के निमित्त बनी हुई आत्माएं भी, यह तो नहीं सोचती हो कि जो होगा सो देखा जायेगा? इसको ही अलबेलापन कहा जाता है।'' अ.बापदादा 3.02.74

''एवररेडी अर्थात् अभी-अभी किसी भी परिस्थिति व वातावरण में आर्डर मिले व श्रीमत मिले कि एक सेकेण्ड में सर्व-कर्मेन्द्रियों की अधीनता से न्यारे हो कर्मेन्द्रियजीत बन एक समर्थ संकल्प में स्थित हो जाओ तो श्रीमत मिलते ही मिलना और स्थित होना साथ-साथ हो जाये। बाप ने बोला और बच्चों की स्थिति ऐसी ही उस घड़ी बन जाये, उसको कहते हैं एवररेड़ी।''

अ.बापदादा 1.09.75

''एवर रेडी अर्थात् अपना निजी-स्वरूप व वरदानी-स्वरूप सदा स्मृति में रहना चाहिए। अपवित्रता का और विस्मृति का नाम-निशान भी न रहे। इसको कहा जाता है - वरदान का कोर्स करना।'' अ.बापदादा 18.1.75

बालकपन और मालिकपन का राज

संगठन की सफलता और संगठन में अपनी स्थिति को अच्छा रखने के लिए ये मालिकपन और बालकपन की स्थिति परमावश्यक है। इसका यथार्थ राज़ भी परमात्मा ने अभी बताया है कि कैसे देश, काल, परिस्थिति के अनुसार ये दोनों गुण हमको धारण करने हैं।

हम परमात्मा के बालक भी हैं तो उनके ज्ञान धन के मालिक भी हैं। संगठन में सेवा के लिए बालक और मालिक दोनों ही हैं परन्तु अपने पुरुषार्थ के लिए मालिक हैं। समय और परिस्थिति को देखकर इस बालकपन और मालिकपन की स्थिति में रहने से आत्मा सदा सुख का भी अनुभव करती है और जीवन में सफलता का भी अनुभव करती है।

''बुद्धि में ज्यादा ज्ञान आ जाता है तो उससे फिर ज्यादा अलबेलापन आ जाता है। ... तीनों कालों का ज्ञान बुद्धि में आने से अपने को ज्यादा समझदार समझते हैं। जहाँ बालक बनना चाहिए वहाँ मालिक बन जाते हैं और जहाँ मालिक बनना चाहिए वहाँ बालक बन जाते हैं।'' अ.बापदादा 19.6.69

''यज्ञ की प्रत्यक्षता के लिए एक सेकेण्ड में मालिक और एक सेकेण्ड में बालकपन की आवश्यकता है।... मालिकपने की बुद्धि बनाकर राय देकर फट से बालकपने की बुद्धि बना लेनी चाहिए।'' अ.बापदादा 23.7.69

''बालक सो मालिक। मालिकपन की विशेषता है - जितना ही मालिकपन का नशा, उतना ही विश्व-सेवाधारी के संस्कार सदा इमर्ज रूप में हों। दोनों समान हों। यह है बाप समान मालिक बनना।'' अ.बापदादा 31.3.86

''जिस समय विचारों को देते हो तो मालिक बनकर देना चाहिए। लेकिन जिस समय फाइनल होता है उस समय फिर बालक बन जाना है। सिर्फ मालिकपना भी नहीं। सिर्फ बालकपना भी नहीं।'' अ.बापदादा 10.6.71

''दवाई के साथ परहेज भी चाहिए। ... पहली परहेज व मर्यादा है - एक बाप दूसरा न कोई।... यह मूल परहेज निरन्तर चाहिए। दूसरी परहेज है - बाप ने जो अधिकार दिया है अपने आपका मालिक बनने का ... वह अधिकारीपन की स्मृति स्वरूप रहने की परहेज निरन्तर नहीं करते। तीसरी परहेज है - ट्रस्टीपन की। इस तन के भी ट्रस्टी, संकल्प के भी ट्रस्टी... इसलिए अब परहेज को अपनाओ तो सर्व प्राप्तियां सदा अनुभव हों। ऐसे बालक सो मालिक।'' अ.बापदादा20.10.75

परमार्थ और व्यवहार की सिद्धि का राज

परमार्थ सर्वोपरि है। परमार्थ से व्यवहार की सिद्धि हो सकती है और होती ही है परन्तु व्यवहार से परमात्मा की सिद्धि कभी भी नहीं हो सकती। व्यवहार परमार्थ की सिद्ध में केवल सहयोगी बन सकता है। जीवात्मा के लिए परमार्थ और व्यवहार दोनों आवश्यक हैं।

''रोज चेक करना है - कितना समय लौकिक तरफ दिया और कितना समय अलौकिक वा पारलौकिक जिम्मेवारी तरफ दिया... उस तरफ कम हुआ तो हर्जा नहीं लेकिन इस तरफ कम न होना चाहिए... परमार्थ से व्यवहार भी स्वत: सिद्ध हो जाता है।'' अ.बापदादा 19.6.69

''जब भी अन्य आत्माओं की सर्विस करते हो तो सदैव यह भी ध्यान में रखो कि दूसरों की सर्विस के साथ अपनी सर्विस भी करनी है। आत्मिक स्थिति में अपने को स्थित रखना, यह है अपनी सर्विस। पहले यह चेक करो कि अपनी सर्विस भी चल रही है?'' अ.बापदादा 10.6.71

''इसी प्रकार धन की शक्ति अर्थात् ज्ञान-धन की शक्ति। ज्ञान धन स्थूल धन की प्राप्ति स्वत: ही कराता है। जहाँ ज्ञान धन है, वहाँ प्रकृति स्वत: ही दासी बन जाती है... इसलिए ज्ञान-धन सब धन का राजा है।... यह ज्ञान-धन राजाओं का भी राजा बना देता है।'' अ.बापदादा29.10.87

''वास्तव में ज्ञान-धन पद्मापदमपति बनाने वाला है। परमार्थ व्यवहार को स्वत: ही सिद्ध करता है। परमात्म-धन वाले परमार्थी बन जाते हैं।'' अ.बापदादा29.10.87

मास्टर सर्वशक्तिवान का राज

परमात्मा सर्वशक्तिवान है और आत्मायें उनके बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, इसलिए वे सभी गुण और शक्तियाँ आत्मा में नीहित हैं, जो परमात्मा में हैं परन्तु उनकी शक्ति की पहचान कैसे होती है, यह ज्ञान भी अभी ही परमात्मा देते हैं। दोनों में अन्तर इतना है कि जब आत्मा देह में आती है तो वे शक्तियां विस्मृत होने लगती हैं परन्तु परमात्मा में वे सदा काल कायम रहती हैं। इसलिए जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो सभी गुण और शक्तियाँ आत्मा से प्रगट होती हैं। ड्रामानुसार सतयुग के आदि से ही आत्माओं को परमात्मा की और अपने यथार्थ आत्मिक स्वरूप की विस्मृति हो जाती है और सतयुग में सुख की विपुलता के कारण आत्मायें परमात्मा की याद की आवश्यकता भी महसूस नहीं करती हैं। परमात्मा और यथार्थ आत्मिक स्वरूप की विस्मृति के कारण सतयुग आदि से ही आत्माओं की उतरती कला आरम्भ हो जाती है, जो कलियुग के अन्त तक सतत चलती रहती है। संगमयुग पर जब परमात्मा आकर अपना, आत्मा का और सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं, तब उनकी याद से आत्मा को अपने मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरूप की स्मृति पुन: जागृत होती है, जिससे देहाभिमान अर्थात माया रावण पर विजय प्राप्त करती है। बाबा माया को भी सर्वशक्तिवान कहते हैं क्योंकि वह द्वापर से परमात्मा की दी हुई आत्मिक शक्ति पर विजय प्राप्त कर लेती है और दो युगों तक आत्मिक शक्ति पर राज्य करती है।

जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति का अनुभव करती है। इसीलिए बाबा सदैव कहते अपने अकाल तख्त पर विराज रहो तो सर्वशक्तियां जी हजूर हाजिर करेंगी। तख्त छोड़ देते हो तो शक्तियाँ हाजिर नहीं होती हैं।

''हिम्मत से बाप की मदद भी मिलेगी। हम सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, बाप को याद किया, यही हिम्मत है।... कोशिश करेंगे। सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते हैं। उनके संकल्प, वाणी सभी निश्चय की होगी।'' अ.बापदादा 24.1.70

''भट्ठी में किन शक्तियों को धारण करके जाना है। मुख्य है सहनशक्ति, परखने की शक्ति, विस्तार को सार और फिर छोटे को बड़ा करने की शक्ति भी चाहिए। समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, सामना करने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति भी चाहिए। ... धारण करने से मास्टर सर्वशक्तिवान बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 27.7.70

''मास्टर सर्वशक्तिवान का नशा कम रहता है, इसलिए एक सेकेण्ड में आवाज में आना और एक सेकेण्ड में आवाज से परे हो जाना - इस शक्ति की प्रैक्टिकल झलक चेहरे पर नहीं देखते हैं... जब यह अभ्यास सरल और सहज हो जायेगा तब समझो सम्पूर्णता आई है।'' अ.बापदादा 2.4.70

''मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् जो किसके भी सूरत में उसकी स्थिति और संकल्प स्पष्ट समझ सको। शक भी न रहे... जितना-जितना जिसका पुरुषार्थ स्पष्ट होता जाता है, उतना ही उनकी प्रालब्ध स्पष्ट होती जाती है और अन्य भी उनके आगे स्पष्ट होते जाते हैं।'' अ.बापदादा 2.04.70

''एक है स्नेह, दूसरा है सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सर्वशक्तियों का खजाना... बापदादा ने सभी बच्चों को एक जैसी सर्वशक्तियां दी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान बनाया है... सर्वशक्तियाँ बापदादा का वर्सा है, तो अपने वर्से पर अधिकार है? सदा है?... क्योंकि बाप ने वर्सा दिया और वर्से को आपने अपना बनाया, तो अपने पर अधिकार होता है... अधिकारी जिस शक्ति को आर्डर करे और वह शक्ति हजूर हाजिर कहे।'' अ.बापदादा 2-11-04

''अधिकारी जिस शक्ति को आर्डर करे और वह शक्ति हजूर हाजिर कहे। ... सदा और सहज हो, नेचुरल हो, नेचर हो, उसकी विधि है - जैसे बाप को हजूर भी कहा जाता है तो जो बच्चा हजूर की हर श्रीमत पर हाजिर हजूर कर चलता है, उसके आगे सर्व

शक्तियां भी हजूर हाजिर करती हैं। ... अगर हर श्रीमत में जी हाजिर नहीं है तो हर शक्ति भी हर समय हाजिर हजूर नहीं कर सकती। ... उस समय अधिकारी के बजाये अधीन बन जाते हैं।'' अ.बापदादा 2-11-04

''अपने में सर्वशक्तिवान का प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करो।... मास्टर सर्वशक्तिवान हो, न कि दो चार शक्तिवान की सन्तान हो? सर्वशक्तिवान को प्रत्यक्ष करो।'' अ.बापदादा 19.4.73

''जब सर्वशक्तियों से अपने को सम्पन्न करेंगे तब ही भविष्य में सदा सर्व गुणों से भी सम्पन्न, सर्व पदार्थों से भी सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज को पा सकेंगे।... सभी से पॉवरफुल स्टेज है अपना अनुभव क्योंकि अनुभवी आत्मा में विल पॉवर होती है।'' अ.बापदादा31.11.71

''अब कोई एक शक्ति की भी कमी नहीं होनी चाहिए क्योंकि अब जिस भी शक्ति की कमी होगी, वही परीक्षा के रूप में आयेगी अर्थात् हरेक के सामने ड्रामानुसार पेपर में वही क्वेश्चन आयेगा। इसलिए सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण और मास्टर सर्व-शक्तिवान बनो। अगर एक शक्ति की भी कमी है, तो फिर शक्तिवान कहेंगे न कि सर्वशक्तिवान।'' अ.बापदादा 13.9.74

''सभी बच्चों को एक द्वारा एक जैसा ही डबल अधिकार मिलता है लेकिन धारण करने की शक्ति नम्बरवार बना देती है... सफलता का आधार शक्तियां ही हैं। मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की।'' अ.बापदादा29.10.87

''सदा मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट - इसको ही दूसरे शब्दों में स्व के राजे अर्थात राजयोगी कहा जाता है। राजाओं के भण्डार सदा भरपूर रहते हैं।'' अ.बापदादा29.10.87

मास्टर ऑलमाइटी अथॉर्टी का राज

अथॉर्टी के क्या-क्या गुण होते हैं और बाप ने हमको क्या-क्या अथॉर्टी दी हुई हैं, हम उनके बच्चे मास्टर ऑलमाइर्टी अथॉर्टी हैं तो हमारी स्थिति क्या और कैसी होनी चाहिए, यह सब राज बाबा ने बताये हैं।

''कोई भी अथॉर्टी वाले होते हैं, साधारण अथॉर्टी वालों में भी तीन बातें होती हैं - एक निश्चय, दूसरा नशा और तीसरा निर्भयता... कोई भी किस भी रीति से हार खिलाने की कोशिश करे लेकिन निर्भयता, निश्चय और नशे के आधार पर कब हार खा सकेंगे? नहीं, सदा विजयी होंगे।... जब यह तीनों बातें हर कर्म, बोल मे आ जाएंगी तब ही आपके हर बोल और कर्म ऑलमाइटी अथॉर्टी को प्रत्यक्ष करेंगे।'' अ.बापदादा 27.5.72

''ऑलमाइटी की कोई भी एक्टिविटी साधारण कैसे हो सकती है? परमात्मा के अथॉर्टी और आत्माओं के अथॉर्टी में रात-दिन का फर्क होना चाहिए। ... आपके हर बोल से अथॉर्टी प्रसिद्ध होनी चाहिए। फाइनल स्टेज तो यही है ना। बोल से, चेहरे से, चलन से, सभी से अथॉर्टी का मालूम पड़ना चाहिए।'' अ.बापदादा 27.5.72

''सदा बुद्धि में रहना चाहिए कि मैं सर्व आत्माओं के पतित संकल्पों, वृत्तियों वा दृष्टि को भस्म करने वाली मास्टर ज्ञानसागर, मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ।'' अ.बापदादा 15.9.71

''पहले अपने आप से पूछो मेरे संकल्प मेरे लॉ एण्ड ऑर्डर में हैं? मेरा स्वभाव लॉ एण्ड ऑर्डर मे है? अगर लॉ-लेस है तो क्या मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं? ऑलमाइटी अथॉरिटी कभी किसी के वशीभूत नहीं हो सकते। क्या ऐसे बने हो? चेकिंग के समय चेक नहीं करेंगे तो अपनी तकदीर को चेंज नहीं कर सकेंगे।'' अ.बापदादा 21.6.74

निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति का राज़ / निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति को प्रखर करने का राज

किसी कार्य की सफलता के लिए समय निर्णय करना अति आवश्यक है, उसके लिए आत्मा में निर्णय शक्ति चाहिए परन्तु निर्णय भी यथार्थ तब होगा जब परिस्थिति को यथार्थ रीति परख सकेंगे, इसलिए यथार्थ निर्णय के लिए परखने की शक्ति भी अति आवश्यक है। हमारी परखने की शक्ति और निर्णय शक्ति कैसे बढ़े, इसका राज़ भी परमात्मा ने बताया है। आत्मा सर्वशक्तियों से सम्पन्न है परन्तु देहाभिमान के कारण वह अपने को शक्तिहीन अनुभव करती है, उस शक्तिहीनता को समाप्त

करने और अपने स्वरूप में स्थित होने के लिए परमात्मा की याद चाहिए। जब आत्मा का बुद्धि रूपी कांटा परमात्मा की याद में स्थिर होता है तो आत्मा में परखने और निर्णय करने की शक्ति होती है।

''निर्णय शक्ति अपने में लाने के लिए मुख्य पुरूषार्थ कौनसा चाहिए? इसके लिए मुख्य बात अपनी बुद्धि की वा लगन की सच्चाई और सफाई चाहिए। कोई भी चीज़ जितनी साफ होती है, तो उतना ही उसमें सब स्पष्ट दिखाई देता है अर्थात् निर्णय सहज हो सकता है।'' अ.बापदादा 24.6.74

''उदासी महसूस करते, प्राप्ति का अनुभव नहीं कर पाते, संकल्प प्रमाण सफलता नहीं होती, इसका कारण निर्णय शक्ति की कमी। ... निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए अपनी स्थिति निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी और निर्विकल्प चाहिए।'' अ.बापदादा 21.9.75

मास्टर नॉलेजफुल और पॉवरफुल का राज

किसी कार्य में सफलता के लिए ज्ञान भी आवश्यक है तो उसको करने की शक्ति भी आवश्यक है इस लिए इस ज्ञान मार्ग में मनवांछित सफलता को प्राप्त करने के लिए मास्टर नॉलेजफुल और पॉवरफुल दोनों बनना है।

''पहला ज्ञान की सबजेक्ट में प्रवीण आत्मा का टाइटल हैं मास्टर ज्ञान सागर वा नॉलेजफुल वा स्वदर्शन चक्रधारी कहो तो भी एक ही बात है। दूसरा याद की यात्रा में जो यथार्थ युक्ति-युक्त योग-युक्त है उनका टाइटल है - पॉवरफुल। ... तीसरा सब्जेक्ट है - दिव्य-गुण। उनका टाइटिल है ... इसेन्सफुल'' अ.बापदादा 18.6.74

''जितना नॉलेजफुल क्या उतना ही साथ-साथ पॉवरफुल भी हो? यह बैलेन्स ठीक न होने के कारण जानते हुए भी कर नहीं पाते हो। जो चेकिंग नहीं कर पाते उन आत्माओं का बैलेन्स में रहने वाले ब्लिसफुल का टाइटल कट हो जाता है, वह न स्वयं को ब्लिस दे सकते हैं और न बाप से ब्लिस ले सकते हैं।'' अ.बापदादा 18.6.74

''महारथी को कोई बात मुश्किल अनुभव हो, वह महारथी ही नहीं। महारथी अपने सहयोग से और बाप के सहयोग से औरों की मुश्किल भी सहज करेगा। महारथियों के संकल्प में भी कभी यह कैसे, ऐसे क्यों? यह प्रश्न नही उठ सकता। कैसे के बजाए ऐसे शब्द आयेगा क्योंकि मास्टर नॉलेजफुल, त्रिकालदर्शी हो ना?'' अ.बापदादा 16.5.74

''जैसे बाप को अव्यक्त से व्यक्त में लाते हो, क्या इसी प्रकार हर शक्ति को कार्य में व्यक्त कर सकते हो? क्योंकि अब समय है सर्व-शक्तियों को व्यक्त करने का तथा प्रसिद्ध करने का। जब प्रसिद्धि होगी तब ही शक्ति सेना के विजय का नारा बुलन्द होगा। इसमें सफलता का मुख्य आधार है - परखने की शक्ति।'' अ.बापदादा 6.2.74

''नॉलेजफुल और पॉवरफुल आत्मा की रिजल्ट है सक्सेसफुल। इन दोनों सब्जेक्ट्स याद अर्थात् पॉवरफुल और ज्ञान अर्थात् नॉलेज। इन दोनों सब्जेक्ट्स का ऑब्जेक्ट है सक्सेसफुल। इसी को प्रत्यक्ष फल कहा जाता है।'' अ.बापदादा 10.9.75

''नालेजफुल का अर्थ क्या है? नॉलेजफुल का अर्थ है हरेक कर्मेन्द्रियों में नॉलेज समा जाए। क्या करना है और क्या नहीं? तो धोखा खाने की बात रहेगी? ऑखें और वृत्ति धोखा नहीं खायेंगी। जब आत्मा में नॉलेज आ जाती है तो सर्व इन्द्रियों में नॉलेज समा जाती है। जैसे भोजन से शक्ति भर जाती है तो शक्ति के आधार से काम होता है। अभी नॉलेज को समाना है। हरेक कर्मेन्द्रियाँ को नॉलेजफुल बनाओ।'' अ.बापदादा 18.1.75

''आप बच्चे जानते हो कि आत्माओं के कर्मों में भ्रष्टाचार पापाचार बढ़ना ही प्रकृति को हिला रहा है लेकिन आप बच्चे तो हलचल में भी अचल-अडोल साक्षी-दृष्टा बन ड्रामा के भिन्न-भिन्न दृष्यों को जानते हुए ... नॉलेजफुल पॉवरफुल की शान में रहते परेशान नहीं होते ... विश्व-कल्याणकारी बनो।'' बापदादा का सन्देश 30.7.05

बाप समान बनने और बनाने का राज

शिवबाबा ज्ञान का सागर है इसलिए वे हमको ज्ञान, गुणों और शक्तियों में आप समान बनाते हैं, आप समान निराकारी स्थिति का अनुभव कराकर उस स्थिति में स्थित होने का रास्ता बताते हैं और हम बच्चों को भी शिक्षा और प्रेरणा देते हैं कि तुम ऐसा बनकर औरों को भी आप समान बनाओ।

ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है, इसलिए वे अपने लौकिक और अलौकिक जीवन के अनुभवों से हमको अनुभवी बनाते, अपने समान पुरुषार्थ करने की विधि बताते हैं और रहमदिल होकर औरों को भी यह रास्ता बताने की शिक्षा देते हैं, जिससे वे भी पुरुषार्थ करके बाप से सुख-शान्ति का वर्सा ले लेवें।

यह एक रहस्यमय पहेली है कि शिवबाबा ब्रह्मा बाप समान बनने की शिक्षा और प्रेरणा देते हैं और ब्रह्मा बाप शिवबाबा के समान बनने की शिक्षा और प्रेरणा देते हैं क्योंकि शिवबाबा और ब्रह्मा बाप एक ही तन में दोनों आत्मायें विराजमान हैं।

''तुम बाप को याद करते हो, माया फिर अपनी तरफ खींच लेती है, इस पर ही यह खेल बना हुआ है। ... बच्चों की बुद्धि में यह सारा ज्ञान आना चाहिए। बाप की बुद्धि में भी नॉलेज है ना। तुमको भी सारी नॉलेज दे आप समान बना रहे हैं।''

सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

''तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें सूर्य के समान चारो ओर फैलती हुई अनुभव में आयें। ... ऐसे महान तपस्वी रूप द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराओ।'' अ.बापदादा 7.4.86

ज्ञान-सूर्य बाप के समान सर्व ज्ञान, गुण, शक्तियों की किरणें चारो ओर फैलती रहें, जिससे सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति की राह मिले।

''संगमयुग पर निराकार बाप समान कर्मातीत, निराकारी स्थिति का अनुभव करते हो और 21 जन्म ब्रह्मा बाप समान सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी श्रेष्ठ जीवन का अनुभव करते हो। ... बाप समान बनने की होली है।'' अ.बापदादा 25.3.86

''स्नेह और शक्ति वाली अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है। जिसके लिए स्नेह है, उसके समान बनना है, यही स्नेह का सबूत है। ... जितना समानता में समीप होंगे, उतना ही समझो कर्मातीत अवस्था के समीप होंगे।'' अ. बापदादा 9.11.69

''एक 'मैं आत्मा विश्व-कल्याण के श्रेष्ठ कर्तव्य के प्रति सर्वशक्तिवान बाप द्वारा निमित्त बनी हुई हूँ' - यह स्लोगन स्मृति में रहे। ... दूसरा स्लोगन 'मैं आत्मा महादानी और वरदानी हूँ' ... तीसरी बात मुझ आत्मा को अपने चरित्र, बोल व संकल्प द्वारा अपने मूर्त में सभी आत्माओं को बापदादा की सूरत और सीरत का साक्षात्कार कराना है।'' अ.बापदादा 25.5.73

''जब अभी से सर्व आत्माओं को बाबा का खजाना देने वाले दाता बनेंगे, अपनी शक्तियों द्वारा प्यासी व तड़फती हुई आत्माओं को जीयदान देंगे, वरदाता बन प्राप्त हुए वरदानों द्वारा उन्हें भी बाप के समीप लायेंगे और बाबा के सम्बन्ध में लायेंगे, तब यहाँ के दातापन के संस्कार भविष्य में 21 जन्मों तक राज्यपद अर्थात् दातापन के संस्कार भर सकेंगे।'' अ.बापदादा 30.5.73

''हर संकल्प और हर कर्म की करेक्शन करो और बापदादा के कर्मों से कनेक्शन जोड़ो, फिर देखो कि बाप समान हैं?... 'नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप' इस लास्ट क्वेश्चन को पूर्ण रीति से प्रैक्टिकल में करने के लिए यही दो शब्द प्रैक्टिकल में लाने हैं। ...पास होने के लिए पास शब्द को स्मृति में रखो। पास हो गया, पास रहना है और पास होना है।'' अ.बापदादा 16.5.73

''बाप के संस्कार, बाप के गुण, बाप के कर्तव्य की स्पीड और बाप के अव्यक्त निराकारी स्थिति की स्टेज - सभी में समानता का मेला लगेगा। जब आत्माएं बाप की समानता के मेले को मनायेंगीं तब जय-जयकार होगी, विनाश के समीप आवेंगे। बाप की समानता ही विनाश को समीप लावेगी।'' अ.बापदादा 4.12.72

''तो एक मेहमान, दूसरा महान अन्तर और तीसरा महिमा।... महान अन्तर को सामने रखने से कभी भी देह अहंकार वा क्रोध का अंश वा वंश नहीं रह सकता। तीसरी बात बाप के वा हर आत्मा के गुणों और कर्तव्य की महिमा करते रहने से किसी द्वारा किसी बात की फीलिंग नहीं आ सकती।'' अ.बापदादा 25.8.71

''समान वाले की निशानी-एक सेकेण्ड में जहाँ और जैसे चाहें, जो चाहें वह कर सकते हैं व करते हैं। सेकण्ड स्टेज एक सेकण्ड के बजाय कुछ घडियों में, स्वयं को सेट कर सकते हैं। तीसरी स्टेज कुछ घण्टों व दिनों तक स्वयं को सेट कर सकते है।... समान वाले कर्मों को, संस्कार और स्वभाव को जानने वाले स्वरूप होते हैं।'' अ.बापदादा 23.5.74

''ऐसे महादानी, वरदानी, सर्वगुण दानी, सर्वशक्तियों के दानी, संग से रुहानी रंग लगाने वाले, नजर से निहाल करने वाले, अन्धों को तीसरा नेत्र देने वाले, भटकी हुई आतमाओं को मंजिल बतलाने वाले, तड़पती हुई आत्माओं को शीतल, शान्त और आनन्द मूर्त बनाने वाली आत्मा बने हो ? ... इसको ही बाप-समान कहा जाता है।'' अ.बापदादा 3.02.74

''फास्ट पुरुषार्थ करने वालों की सूरत और सीरत बाप-समान सदा रुहानी नजर आती है। सिवाये रुहानियत के अन्य कोई भी संकल्प व स्मृति नहीं रहती अर्थात् बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्वशक्तियाँ स्वरुप में दिखाई देती है। उनकी हर नजर में हर आत्मा को नजर से निहाल करने की रुहानियत दिखाई देगी।'' अ.बापदादा 27.1.76

''बाप समान स्टेज प्राप्त करने के लिए सदैव दो बातें याद रखो। एक स्वयं को अकालमूर्त समझो, दूसरी स्वयं को सदा त्रिकालदर्शी मूर्त समझो। निराकारी स्टेज अकाल तख्त नशीन, अकालमूर्त है, साकार कर्मयोगी की स्टेज में त्रिकालदर्शी मूर्त त्रिमूर्ति बाप के तख्त-नशीन। हर संकल्प को स्वरुप में लाने से पहले यह दोनों बातें चेक करो। निराकारी और साकारी।''

अ.बापदादा 27.1.76

बापदादा की बच्चों से आशायें और आशाओं को पूरा करने का राज

शिवबाबा सर्व-समर्थ होते हुए भी सारी दुनिया की आत्माओं के क्रिया-कलापों को देखते हुए न चिन्ता करता है, न चिन्तन करता है, न मन में राग-द्वेष की भावना लाता है, न किसी घटना के प्रति आश्चर्य करता है तो हम क्यों ऐसी स्थिति में आते हैं। ब्रह्मा बाबा भी एकबल, एक भरोसा रखकर नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप, समर्पित बुद्धि, इन्द्रीयजीत फरिश्ता बना और दोनों ही हमसे भी आशा रखते हैं कि हम भी उनके समान बनें और इस संगमयुग के अनमोल सुखों का अनुभव करें। दोनों ही चाहते हैं कि हमारे बच्चे संगमयुग के सुखों को अनुभव करें और फाइनल परीक्षा में पास हों।

''बाप की आश ... ब्रह्मा बाप समान हर कर्म में एग्जॉम्पुल हो क्योंकि एग्जॉम्पुल बनने वाला ही फाइनल एग्जाम में एक्स्ट्रा नम्बर लेकर स्कॉलरशिप लेने वाला बनेगा। हर सब्जेक्ट में विन करे। हर ब्राह्मण अनुभव करे कि यह बाप समान हमारे सहयोगी हैं ... चलन और चेहरे से बेहद की स्थिति, बेहद के सेवाधारी, बेहद के सम्बन्ध-सम्पर्क वाले अनुभव हों।''

बापदादा का सन्देश 26.5.05

''बाप की उम्मीद पूरी करना ही, उम्मीदवार बनना है। बाप की उम्मीदें पूरी करना, बच्चों के लिए मुश्किल होता है क्या ? बच्चे का जन्म होता ही हैं, बाप की उम्मीदें पूरी करने के लिए। बच्चे का अपने जीवन का लक्ष्य ही यह होता है, बाप की उम्मीदें पूरी करना। इसको ही दूसरे शब्दों में सन शोज फादर कहते हैं।'' अ.बापदादा 16.5.74

दाता-विधाता-वरदाता का राज़

बाप दाता-विधाता-वरदाता है, वह हमको भी आप समान दाता-विधाता-वरदाता बनाता है क्योंकि जैसे बाप वैसे ही बच्चे चाहिए। वह हमको ज्ञान, गुण, शक्तियों से सम्पन्न बनाकर दूसरी आत्माओं के प्रति यह कर्तव्य करने के लिए निमित्त बनाता है।

''बाप की मदद चाहिए, आशीर्वाद चाहिए, सहयोग चाहिए, शक्ति चाहिए तो ये चाहिए-चाहिए नहीं। चाहिए शब्द दाता, विधाता, वरदाता के बच्चों के आगे शोभता नहीं है। अभी विधाता और वरदाता बनकर विश्व की हर आत्मा को कुछ न कुछ दान करना है वा वरदान देना है।'' अ.बापदादा31.11.71

''अगर कोई को यह भी संकल्प आता है कि मैंने इतना किया, मुझे इससे कुछ मान-शान वा महिमा मिलनी चाहिए। यह भी लेना हुआ, लेने की भावना हुई। दाता के बच्चे अगर यह भी संकल्प करते हो तो दाता नहीं हुए।... जो निष्कामी होगा, वही विश्व का कल्याणकारी बनेगा।'' अ.बापदादा 15.9.71

''अन्त में नॉलेज देने की सर्विस कम हो जायेगी और वरदान देने की सर्विस ज्यादा होगी। इसलिए अन्त के समय वरदान लेने वाली आत्माओं में वे ही संस्कार मर्ज हो जायेंगे और मर्ज हुए वे ही संस्कार द्वापर में भक्त के रूप में इमर्ज होंगे।'' ।

अ.बापदादा 20.5.71

''समझने और करने इन दोनों में हकदार बनो, तब ही विश्व के, इस ईश्वरीय परिवार की प्रशंसा के हकदार बनेंगे। कोई भी बात के मांगने वाले मंगता नहीं बनो, दाता बनो। मान, शान, प्रशंसा, बड़ापन आदि मांगने की इच्छा मत करो।'' अ.बापदादा 16.5.74

''सदा अपने आपको चेक करो की मैंने एवर हेल्दी का वरदान प्राप्त किया है? वरदाता बाप द्वारा तीनों वरदान - एवर हेल्दी, वेल्दी और हैपीनेस को प्राप्त किया है? सदाकाल का वर्सा प्राप्त किया है या अल्पकाल का? किसी भी मायावी बीमारी के वश हो अपना सदाकाल का एवर हेल्दी का वर्सा गँवा तो नहीं देते हो?'' अ.बापदादा 27.1.76

''महादानी अर्थात् त्याग और तपस्यामूर्त होना। इसी कारण त्याग, तपस्या और महादान का प्रत्यक्ष फल उनका संकल्प और शब्द वरदान रूप हो जाता है।'' अ.बापदादा27.10.75

''बच्चों को विचार-सागर मन्थन करना चाहिए कि कैसे सर्विस बढ़े। ... शुभ कार्य आपही करना है।... बाबा तो दाता है, बाबा थोडेही किसको कहेंगे कि यह करो, इस कार्य में इतना लगाओ।'' सा.बाबा 30.7.05 रिवा.

परमात्मा और उनके द्वारा आत्म-कल्याण का राज

आत्म कल्याण का एकमात्र साधन है अपने को ज्योति बिन्दु आत्मा समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर एक ज्योति बिन्दु परमपिता परमात्मा की मधुर याद। इसके लिए आत्मा की निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति परमावश्यक है, जो इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से ही सम्भव है। यह ज्ञान इस संगमयुग पर आत्माओं को परमात्मा से मिलता है, जो उसका आत्माओं को परम वरदान है। सुखमय जीवन के लिए दैवीगुण परमावश्यक हैं परन्तु वे आत्म-कल्याण का आधार नहीं हैं क्योंकि सतयुग में देवी-देवतायें सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण होते हुए भी उतरती कला में ही आते हैं क्योंकि वहाँ न आत्मा और परमात्मा का यथार्थ ज्ञान है और न ही इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा में दैवी-गुणों की धारणा स्वत: होती है।

साधारणता में महानता का राज़ / कम खर्च बालानशीन का राज

बाबा ने बच्चों को सदा ये पाठ पढ़ाया कि जीवन का स्तर न बहुत ऊंचा रखो और न बहुत नीचा हो, तुमको बीच की स्थिति रखनी है। साधारण जीवन होते भी अन्दर की स्थिति बहुत ऊंच हो, खर्च कम हो और जीवन स्वच्छ, सुन्दर और ऊंच हो। जिसको दुनिया में भी कहते हैं सादा जीवन उच्च विचार। कभी अपने मन में, विचारों में गरीबी की अनुभूति न हो और न ही साहूकारी का अहंकार हो। ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन से ये स्पष्ट करके दिखाया। ब्रह्मा बाबा का जीवन इसका दर्पण है, जिससे कोई भी इस रहस्य को समझ सकता है।

''आज बाबा के पास संदेशी भोग लेकर आई तो बाबा ने कहा कि बच्चे तो यहाँ पर बैठे ही प्रिन्स बन गये हैं, बाबा की बेगरी टोली भूल गई है। वैभव तो वहाँ मिलने हैं, संगम पर तो बेगरी टोली याद पड़ती है, वह ही बाप को प्यारी लगती है। बाप के लिए सुदामा के चावलों की वेल्यू है ना।'' अ.बापदादा 27.8.69

''साधारणता में महानता। जैसे बाप साकार सृष्टि में सिम्पल रहते हुए आप सभी के आगे सेम्पुल बने ना। ... जैसे देखो गाँधी को सिम्पल कहते थे लेकिन सिम्पल बनकर के एक सेम्पुल बनकर तो दिखाया ना। उसकी सिम्पल एक्टिविटी ही महानता की निशानी है।'' अ.बापदादा 19.7.71

''जो सिम्पल होता है वही ब्युटीफुल होता है। सिम्पलिसिटी सिर्फ ड्रेस की नहीं लेकिन सभी बातों की। निरंहकारी बनना अर्थात् सिम्पल बनना। निरक्रोधी अर्थात् सिम्पुल। निर्लोभी अर्थात् सिम्पुल। यह सिम्पलिसिटी प्युरिटी का साधन है।''

अ.बापदादा 11.3.71

''सदाकाल की शान्ति व आनन्द का अनुभव एक सेकेण्ड में अपनी अनुभवी-मूर्त द्वारा दिखाओ व कराओ तो क्या यह 'कम खर्च बाला नशीन' सर्विस नहीं? सपूत बच्चों का, सहयोगी बच्चों का और सर्विसएबुल बच्चों का हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म में यही फर्ज और यही एक सबसे बड़ी जिम्मेवारी है।'' अ.बापदादा 28.4.74

''बैज सदा लगा रहे, लिटरेचर भी साथ हो। कोई भी अच्छा आदमी मिले तो देना चाहिए।... गरीबों को मुफ्त दिया जाता है, बाकी जो जितना देवे, हम और छपायेंगे। रॉयलिटी होनी चाहिए। तुम्हारी रस्म-रिवाज दुनिया से बिल्कुल न्यारी होनी चाहिए।'' सा.बाबा 4.6.05 रिवा.

एकनामी-एकॉनामी का राज

आध्यात्मिक जीवन का सच्चा सुख अनुभव करने के लिए एकनामी और जीवन के हर खज़ाने में एकॉनामी करना अति आवश्यक है, इसलिए बाबा सदैव हमको एकनामी और हर खजाने को एकॉनामी से उपयोग करने की प्रेरणा देते हैं और उसके महत्व का राज समझाते रहते हैं।

''संकल्प में भी एकॉनामी, समय में भी एकॉनामी, तो चलन में सभी प्रकार की एकॉनामी हो। यह तीनों ही बातें अर्थात् एक मति, एक का नाम अर्थात् एकनामी और फिर एकॉनामी। यह तीनों ही बातें सदैव स्मृति में रख फिर कदम उठाना वा संकल्प को वाणी में लाना है।'' अ.बापदादा 10.6.71

सच्ची दिल पर साहेब राज़ी का राज़

बाप सत्य है, उनको सच्चाई और सफाई ही प्रिय है। इसीलिए बाबा को भोली मातायें और भोले सच्ची दिल वाले बच्चे ही पसन्द आते हैं। जिनमें दिमाग की चतुराई होती है, वे कभी बाबा के दिल पर नहीं चढ़ सकते हैं। मन-वचतन-कर्म सब में सच्चाई और सफाई होगी तब ही बाप की दिल पर चढ़ सकेंगे। इस सत्य का ज्ञान और प्रत्यक्ष प्रमाण भी बाबा ने अभी दिखाया है। इसीलिए दुनिया में भी गायन है कि सच्ची दिल पर साहेब राज़।

''जीवन में सच्चाई और सफाई चाहिए। इनका भी बड़ा गुह्य रहस्य है। सच्चाई अर्थात् जो सोचें, जो करें, वही वर्णन करें। बना-वटी रूप नहीं हो। मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों रूप समान चाहिए। ... सफाई अर्थात् अन्दर में कोई भी विकर्म का किचरा नहीं हो। कोई भी भाव-स्वभाव, पुराने संस्कारों का भी किचरा न हो। जो ऐसी सफाई वाला होगा वही सच्चा होगा।''
अ.बापदादा 28.9.69

''जो सच्चाई और सफाई वाला होगा, उसकी परख क्या होती है? वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले तो वह प्रभु-प्रिय होगा। सच्चे पर साहब राज़ी होता है। जो पहले प्रभु-प्रिय होगा, वह दैवी परिवार का भी प्रिय होगा।'' अ.बापदादा 28.9.69

''सच्चा हीरा कब छिप नहीं सकता है... जो सच्चे और पक्के होते हैं, वे दूर होते हुए भी अपनी परख छिपा नहीं सकते। कोई कितना भी दूर हो लेकिन बापदादा के नजदीक जरूर होगा और जो बाप के नजदीक हैं, वे सबके नजदीक हैं।''

''जो बच्चे सच्ची दिल वाले हैं, उन पर बाप का बहुत प्यार रहता है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी रहते हैं। ... अपनी दिल से पूछना है - हम सच्ची-सच्ची सर्विस करते हैं, सच्चे बाप के संग में रहते हैं?'' सा.बाबा 17.2.05 रिवा.

''सत्यनारायण की कथा में भी है, जिसको अमूल्य चीज समझकर छिपाया वह कखपन हो गई। यहाँ भी सत्य बाप जो सत्यनारा-यण बनाने वाला है, उनसे अगर जरा भी दिल का टुकड़ा छिपा कर रखा तो इस जीवन की नैया का क्या हाल होगा। कखपन हो जायेगा।'' अ.बापदादा 6.6.73

परमपिता परमात्मा के साथ फरमान-बरदार, वफादार, ईमानदार का राज

हम परमपिता परमात्मा और ब्रह्मा बाबा के बच्चे हैं तो ये हमारा परम कर्तव्य है कि हम उनके साथ वफादार और ईमानदार रहें और उनके हर फरमान का दिल से पालन करें। इसमें ही हमारे जीवन की सफलता है और कल्याण है।

‘‘मुख्य फरमान कौनसा है? निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म में प्योरिटी हो।... एक सेकेण्ड और एक संकल्प भी फरमान के सिवाए न चले। इसको कहते हैं फरमान बरदार और वफादार।... स्वप्न में भी बाप, बाप के कर्तव्य, बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे।’’ अ.बापदादा 22.6.71

‘‘चार धारणायें हैं - बाप के सम्बन्ध में ‘फरमान वरदार’, शिक्षक के सम्बन्ध में ‘ईमानदार’, गुरु के सम्बन्ध में ‘आज्ञाकारी’ और साजन के सम्बन्ध में ‘वफादार’।’’ अ.बापदादा 21.7.73

दुआयें लेने और दुआयें देने का राज़ / परमात्मा की दुआयें लेने का राज

परमात्मा पिता और प्यारे ब्रह्मा बाबा का बच्चों के साथ अथाह प्यार है और वे सदा बच्चों को सुखी देखना चाहते हैं, उसके लिए बच्चों को सदैव शिक्षा-सावधानी देते रहते हैं, जिससे बच्चों से कोई विकर्म न हो और सदा सुखी रहें। सदा सुखी रहने के लिए बच्चों का श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा होना अति आवश्यक है। हमारे किसी कर्म से दूसरी आत्माओं को जितना सुख मिलता है, उतना ही हमारा सुख का खाता जमा होता है और हमारे किसी कर्म से अन्य आत्माओं को जितना दुख होता है, उतना ही हमारा सुख का खाता कम होता है और कर्मभोग-कर्मबन्धन का खाता बढ़ता जाता है। ये सुख-दुख लेने-देने या कर्म की गति अति गहन है। जीवन में हमारे ऐसे अनेक कर्म होते हैं, जिनसे हम समझते हैं कि हम दूसरों को सुख दे रहे हैं परन्तु वह दुख हो जाता है। इसीलिए बाबा सदैव कहते हैं बच्चे सदा सर्व को दुआयें दो और दुआयें लो, न किसी को बद्-दुआ दो और न किसी की दी हुई बद्-दुआ स्वीकार करो अर्थात् किसी की दी हुई बद्-दुआ को अपने मन में स्थान नहीं दो। सदा सर्व को सुख दो और सदा सुख लो, न दुख दो और न दुख लो।

‘‘संकल्प के खजाने को व्यर्थ गंवाना अर्थात् अपनी प्राप्तियों को गंवाना। ऐसे ही समय के एक सेकेण्ड को भी व्यर्थ गंवाया, सफल नहीं किया तो बहुत गंवाया। साथ में ज्ञान का खजाना, गुणों, शक्तियों का खजाना और साथ में हर आत्मा और परमात्मा द्वारा दुआओं का खजाना।’’ अ.बापदादा15.12.04

‘‘सबसे सहज पुरुषार्थ है - दुआयें दो और दुआयें लो, सुख दो और सुख लो, न दुख दो न दुख लो। ऐसे नहीं कि दुख दो नहीं लेकिन ले लो। दुख ले लिया तो भी दुखी तो होंगे ना। ... अगर लेना भी आता है और देना भी आता है फिर और क्या चाहिए। दुआयें लेते जाओ, दुआयें देते जाओ तो सम्पन्न हो जायेंगे।’’ अ.बापदादा15.12.04

‘‘अगर कोई बद्-दुआ दे तो क्या करेंगे? लेंगे? ... अगर बद्-दुआ मानो ले लिया तो आपके अन्दर स्वच्छता रही? अन्दर स्वच्छ तो नहीं रहा ना। अगर जरा भी डिफेक्ट है तो परफेक्ट नहीं बन सकते हैं।... अगर कोई बद्-दुआ दे तो भी आप मन में धारण नहीं करो। नहीं तो डिफेक्ट हो जायेगा।’’ अ.बापदादा15.12.04

‘‘जो रेग्यूलर गॉडली स्टूडेण्ट हैं, अपने को ब्राह्मण समझते हैं, वे अगर समझते हैं कि करना ही है (दुआयें देना और दुआयें लेना ही है), वे हाथ उठाओ। ... अभी करना ही है कुछ भी हो जाये। हिम्मत रखो, दृढ़ संकल्प रखो। अगर मानो कभी बद्-दुआ का प्रभाव पड़ भी जाये तो 10 गुणा ज्यादा दुआयें देकर उसको खत्म कर देना। फिर हिम्मत आ जायेगी।’’ अ.बापदादा15.12.04

‘‘बद्-दुआ अन्दर समा लेने से नुकसान तो अपने को ही होता है ना। दूसरा तो बद्-दुआ देकर चला गया लेकिन जिसने बद्-दुआ अन्दर समा ली तो दुखी कौन होता है? लेने वाला या देने वाला? देने वाला भी होता है लेकिन लेने वाला ज्यादा होता है। देने वाला तो अलबेला होता है।’’ अ.बापदादा15.12.04

‘‘विश्व का कल्याण करने के श्रेष्ठ कार्य में निमित्त बनी आप श्रेष्ठ आत्माएं हो, आपकी विश्व में विशेष स्थिति है। आपको यह भी चेक करना है कि मेरे द्वारा जो भी बोल निकलते हैं, क्या वे सर्व के व स्वयं के प्रति कल्याणकारी हैं? व्यर्थ की तो बात ही छोड़ दो।’’ अ.बापदादा 27.5.74

‘‘आप लोग साधारण रीति से बोलेंगे लेकिन आप महान आत्माओं के बोल सत्य होने के कारण कई आतमाओं का अकल्याण हो जाता है। इसलिए भक्ति में भी वरदान के साथ-साथ श्राप का भी गायन है। आप देते नहीं हैं, लेकिन ऐसी व्यर्थ चलन व व्यर्थ बोल अकल्याण के निमित्त ऑटोमेटिकली बन जाते हैं।’’ अ.बापदादा 27.5.74

‘‘महसूसता हो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, स्व-स्थिति श्रेष्ठ है, परिस्थिति पेपर है। यह महसूसता सहज परिवर्तन करा लेगी और पास कर लेंगे। ... महसूसता में एक है सच्चे दिल की महसूसता और दूसरी है चतुराई की महसूसता। ... दिल की महसूसता दिलाराम की आशीर्वाद प्राप्त कराती है।’’ अ.बापदादा 2.11.87

अविनाशी ज्ञान रत्नों के महत्व का राज

बाबा हमको जो अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं, बाबा उनके महत्व का राज़ भी बताते हैं कि तुम उनसे क्या-क्या प्राप्ति कर सकते हो। इन ज्ञान रत्नों का तुमको कैसे प्रयोग करना है। इसीलिए बाबा कहते हैं ज्ञान भी पात्र को देखकर देना है, ऐसे ही ज्ञान रत्नों को व्यर्थ नहीं गंवाना है। ये ज्ञान रत्न हैं, जो पवित्र बुद्धि में ही धारण हो सकते हैं इसलिए अपनी बुद्धि रूपी बर्तन सोने का बनाओ। जो ज्ञान रत्नों का महत्व रखता है, तो ये रत्न भी उसके जीवन का महत्व बढ़ाते हैं।

‘‘यह है सच्ची कमाई, जो सच्चा बाप सिखलाते हैं। बाकी सभी हैं झूठी कमाइयां। अविनाशी ज्ञान रतनों की कमाई ही सच्ची कमाई कही जाती है, बाकी सभी विनाशी धन-दौलत है झूठी कमाई... इस सच्ची अविनाशी कमाई की प्रालब्ध सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक पूरी होती है।’’ सा.बाबा 14.12.04 रिवा.

‘‘सच्ची कमाई एक बाप ही कराते हैं। ... भारत सचखण्ड था, अब झूठ खण्ड बना है। और खण्डों को सचखण्ड-झूठखण्ड नहीं कहा जाता है। ... स्वर्ग के मालिक भारतवासी ही बनेंगे।’’ सा.बाबा 14.12.04 रिवा.

‘‘जिन्होंने कल्प पहले कमाई की है, वे ही अभी भी करेंगे।... इन बातों को समझेंगे वे, जो अच्छी रीति पढ़ेंगे।’’
सा.बाबा 14.12.04 रिवा.

‘‘जो रिलीजस माइण्डेड हैं, उनको समझाना सहज होगा... जास्ती दान-पुण्य करने वाले राजाई में आते हैं... अब तुम अविनाशी ज्ञान रतनों का दान करते हो। ... जो मेरे भक्त हैं, उनको यह खुशखबरी सुनाओ कि शिवबाबा वर्सा दे रहे हैं, वह कहते हैं - मुझे याद करो और पवित्र बनों तो पवित्र दुनिया के मालिक बन जायेंगे।’’ सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

‘‘इसी प्रकार धन की शक्ति अर्थात् ज्ञान-धन की शक्ति। ज्ञान धन स्थूल धन की प्राप्ति स्वत: ही कराता है। जहाँ ज्ञान धन है, वहाँ प्रकृति स्वत: ही दासी बन जाती है... इसलिए ज्ञान-धन सब धन का राजा है... यह ज्ञान-धन राजाओं का भी राजा बना देता है।’’ अ.बापदादा29.10.87

अननोन बट वैरी वेल नोन वारियर्स का राज

इस बात का भी अभी पता पड़ा है कि हम सभी योद्धा हैं क्योंकि हम भी माया से युद्ध करके अपनी राजाई ले रहे हैं और सतयुग में जाकर देवी-देवता बनते, जिनकी भक्ति मार्ग में कितनी पूजा होती है, सब धर्मों में स्वर्ग का गायन है परन्तु हमको कोई योद्धा समझता नहीं है। हम देवता बन रहे हैं, यह भी कोई नहीं समझता, परन्तु देवताओं को सब जानते और मानते हैं, उनका गायन पूजन करते हैं। ये देवता कौन थे, कैसे बनें, यह भी नहीं जानते हैं, जो सब राज बाबा ने बताये हैं।

‘‘अभी तुम्हारी लड़ाई है माया रावण से... तुम्हारी लड़ाई है ही गुप्त, इसलिए तुमको अननोन वारियर्स कहा जाता है... कल्प-कल्प तुम माया पर विजय पाकर अपना राज्य स्थापन कर लेते हो।’’ सा.बाबा 28.12.04 रिवा.

सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म का राज

निराकार ज्ञान सूर्य परमात्मा सर्व गुणों का सागर है, सदा सम्पन्न है। चन्द्रमा 16 कला सम्पूर्ण अर्थात् पूर्ण होता है और कलाहीन भी होता है। ऐसे ही आत्मायें सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बनती हैं और उनसे हीन भी बनती हैं, फिर परमात्मा आकर सर्वगुण सम्पन्न बनाते हैं। निराकारी स्थिति सम्पूर्ण स्थिति होती है। जितना-जितना हम उस स्थिति का अभ्यास करते हैं और परमात्मा को याद करते हैं, उतना ही हम सर्वगुण सम्पन्न ... परमोधर्म बनते हैं। अहिंसा परमोधर्म अर्थात् संकल्प मात्र भी किसको दुख न देना और न दुख लेना अर्थात् दुखी न होना। काम कटारी चलाना भी हिंसा है। देवताओं में दोनों प्रकार की हिंसा नहीं होती है।

''एक हम और दूसरा बाप, तीसरा देखते हुए भी न देखो। ... कोई भी हो, उसकी विशेषता को देखो तो विशेषात्मा बन जायेंगे। कमी को तो बिल्कुल देखना ही नहीं है। जैसे चन्द्रमा अथवा सूर्य को ग्रहण लगता है तो कहते हैं ना कि नहीं देखना चाहिए। नहीं तो ग्रहचारी बैठ जायेगी।'' अ.बापदादा 30.7.70

''मुख्य सब्जेक्ट है - व्यक्त में रहते, कर्म करते भी अव्यक्त स्थित रहे। इस सब्जेक्ट में पास होना है।... सर्वगुण सम्पन्न बनने के लिए बाप के गुण सामने रख अपने को चेक करो कि कहाँ तक बने हैं।'' अ.बापदादा 25.1.70

''रुहानियत कायम न रहने का कारण है कि अपने को और दूसरों को, जिनकी सर्विस के लिए निमित्त हो, उनको बापदादा की अमानत नहीं समझते... मन भी एक अमानत है... जिज्ञासु हैं, सेन्टर है, व कोई स्थूल वस्तु है लेकिन अमानत मात्र है। अमानत समझने से ही अनासक्त होंगे।'' अ.बापदादा25.12.69

Q. सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी अहिंसा परमोधर्म सर्व आत्मायें बनेंगी या कुछ आत्मायें ही बनेंगी या एक ही आत्मा बनेगी ?

A. हर आत्मा इस स्थिति को प्राप्त करती है परन्तु इस कर्मक्षेत्र पर सबकी समय सीमा और प्रभाव में अन्तर अवश्य होगा। कोई आत्मा 5000 वर्ष के लिए बनेगी और कोई आत्मा एक मिनट या एक सेकेण्ड के लिए बनेगी क्योंकि आत्मा अपने मूल रूप में सर्व गुण सम्पन्न... अहिंसा परमोधर्म ही है। आत्मा जब इस धरा पर पार्ट बजाने आती है या इस धरा से पार्ट पूरा करके वापस जाती है तो उसकी स्थिति सम्पूर्ण ही होती है। परमधाम में कोई भी आत्मा अपूर्ण नहीं होती है या नहीं रह सकती है।

''निर्दोष आत्मा है। अगर उस दृष्टि से हर हर आत्मा को देखो तो फिर पुरुषार्थ की स्पीड कब ढीली हो सकती है ? हर सेकेण्ड में चढ़ती कला का अनुभव करेंगे। सिर्फ चढ़ती कला में जाने के लिए इसे समझने की कला आनी चाहिए। सोलह कला सम्पूर्ण बनना है ना।'' अ.बापदादा 3.10.71

''सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है तो सर्व कलायें अभी भरेंगी ना... यह सम्पूर्ण स्टेज की निशानी है।''
अ.बापदादा 5.10.71

''जैसे साकार के बोलने में, चलने में, सभी में विशेषता देखी ना... हर चलन सम्पूर्ण कला के रूप में दिखाई दे, इसको कहते हैं 16 कला सम्पूर्ण... जिसको कला के रूप में देख औरों में भी प्रेरणा भरती है। उनके कर्म भी सर्विसएबुल होते हैं।''
अ.बापदादा 5.10.71

''बापदादा सर्व ब्राह्मण कुल बच्चों में से उन विशेष आत्माओं को चुन रहे थे जो सदा सन्तुष्टता द्वारा स्वयं भी सदा सन्तुष्ट रहे हैं और औरों को भी सन्तुष्टता की अनुभूति अपनी दृष्टि, वृति, और कृति द्वारा सदा कराते आये है। तो आज ऐसी सन्तुष्टमणियों की माला बना रहे थे।'' अ.बापदादा 5.10.87

''बापदादा बार-बार सन्तुष्टमणियों की माला देख हर्षित हो रहे थे क्योंकि ऐसी सन्तुष्टमणियाँ ही बापदादा के गले का हार बनती है, राज्य अधिकारी बनती है और भक्तों के सिमरण की माला बनती हैं।'' अ.बापदादा 5.10.87

''जब कि अभी सागर की सन्तान हो, तो सागर समान सम्पन्न अभी होंगे या भविष्य में होंगे ? ज्ञानसागर बाप बच्चों को सब में सम्पन्न अभी बनाते हैं। तब ही लास्ट स्टेज का गायन किया जाता है - सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी और सम्पूर्ण अहिंसक।'' अ.बापदादा 2.5.74

''जैसे श्रृंगार में सोलह श्रृंगार प्रसिद्ध हैं, तो क्या ऐसे ही सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण बने हो? या समय पर जिस कला की आवश्यकता हो, क्या उस समय वह कला स्वरूप में नहीं ला सकते हो? यदि स्मृति में आता है लेकिन स्वरुप में नहीं आ पाता है तो आपको सफलता कैसे होगी? यदि युद्ध स्थल में समय पर शस्त्र उपयोग में न ला सको, तो क्या विजय होगी? पहले स्वयं को सम्पन्न बनाने के प्रैक्टिकल प्लैन बनाओ, तो सहज सफलता आपके सम्मुख आ जायेगी।'' अ.बापदादा 24.4.74

''आत्मा की श्रेष्ठ स्टेज की महिमा है - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण ... अहिंसा परमोधर्म।... 16 कलायें क्या है, मर्यादायें क्या हैं - इन सब बातों की नॉलेज इस समय ही धारण करते हो।... 16 कला अर्थात् सर्व विशेषताओं में सम्पन्न।''

अ.बापदादा15.10.75

मर्यादा पुरुषोत्तम का राज / ईश्वरीय मर्यादायें, ब्राह्मण कुल की मर्यादायें और आसुरी कुल की मर्यादाओं का राज़

परमात्मा हमको मर्यादा पुरुषोत्तम बनाते हैं, इसलिए बाबा अभी हमको ईश्वरीय कुल की मर्यादाओं, ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं का ज्ञान देते हैं, जो हमारे जीवन की सफलता का आधार हैं। जो जितना उन मर्यादाओं में चलता है, वह उतना ही पुरुषोत्तम बनता है। जब हमको उन मर्यादाओं का ज्ञान होगा और उनके महत्व का ज्ञान होगा तब ही हम आसुरी कुल की मर्यादाओं के दुखमय के जाल से निकल सकेंगे।

''सवेरे से रात तक कौन-कौन सी मर्यादायें किस-किस कर्म में रखनी हैं, वह सभी नॉलेज स्पष्ट होनी चाहिए... सीता समझकर इस लकीर के अन्दर रहो अर्थात् जो केयरफुल होगा, मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहेगा, वही पुरुषोत्तम बन सकता है।''

अ.बापदादा 27.4.72

''जब मर्यादाओं का उलंघन होता है तब ही केयरलेस होते हो। आप लोगों की सम्पूर्ण स्टेज का जो गायन है - 'सर्वगुण सम्पन्न... अहिंसा परमोधर्म' जैसे सीता को मर्यादा की लकीर के अन्दर रहने की आज्ञा दी। और कोई लकीर नहीं थी लेकिन यह मर्यादायें ही लकीर हैं।'' अ.बापदादा 27.4.72

वास्तविकता को विचार करें तो केयरलेस होते हैं तो मर्यादाओं की लकीर से बाहर जाते हैं, मर्यादाओं का उलंघन होता है और जब मर्यादाओं की लकीर का उलंघन होता है तो केयरलेस हो जाते हैं। दोनों ही बातें चक्रवत (Cyclic) हैं।

Q. माया का इफेक्ट होता है तब डिफेक्ट होता है या डिफेक्ट होता है तब माया का इफेक्ट होता है? इसका भाव अर्थ क्या है?

A. यह भी ऐसे ही है कि जब आत्मा में डिफेक्ट अर्थात् कमजोरी होती है तो माया का वार होता है और माया का वार आत्मा को कमजोर बना देता है। जो आत्मा सर्वशक्तिवान परमात्मा की याद में शक्तिशाली रहती है, उस पर माया का इफेक्ट अर्थात् वार हो नहीं सकता।

''जब मर्यादाओं का उल्लंघन होता है तब ही केयरलेस होते हो। ...सवेरे से रात तक कौन-कौन-सी मर्यादायें किस-किस कर्म में रखनी हैं, वह सभी नॉलेज स्पष्ट होनी चाहिए। अगर नॉलेज नहीं तो केयरफुल नहीं हो सकते।'' अ.बापदादा 27.4.72

Q. जब केयरलेस होते तब मर्यादाओं का उलंघन होता या जब मर्यादाओं का उलंघन होता तब केयरलेस होते?

A. वास्तव में ये दोनों बातें चक्रवत (Cyclic) हैं, एक का उलंघन होने से दूसरे का स्वत: ही उलंघन हो जाता है।

इच्छा-शक्ति और दृढ़ इच्छा-शक्ति का राज़ / विल पॉवर और विल पॉवर को प्राप्त करने का राज

किसी कार्य की सफलता के विल पॉवर बहुत आवश्यक है। विल पॉवर अर्थात् दृढ़ इच्छा शक्ति। विल पॉवर को प्राप्त करने के लिए अपना तन-मन-धन सब परमात्मा पिता को विल करेंगे तब ही आत्मा में विल पॉवर आती है और उसके लिए कोई कार्य असम्भव नहीं होता है।

''यह पुरुषार्थी शरीर एकदम मर्ज हो जायेगा और अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप और भविष्य रूप इमर्ज होगा। जब पहले आप लोग अनुभव करेंगे, तब दूसरों को भी अनुभव होगा... विल करने से विल पॉवर आती है... संकल्प सहित सब विल हो जाये।''

अ.बापदादा 29.5.70

''अगर बापदादा की आशीर्वाद नहीं होती तो यहाँ तक कैसे आते। हर सेकण्ड बापदादा बच्चों को आशीर्वाद दे रहे हैं लेकिन लेने वाले जितनी लेते, उतनी अपने पास कायम रखते हैं। ... जो जास्ती पुरुषार्थ करने की इच्छा रखते हैं, उनको मदद भी मिलती है। दृढ़ इच्छा रखना तो मदद भी दृढ़ मिलेगी।'' अ.बापदादा 23.1.70

''अपने में ही कन्ट्रोलिंग पॉवर और विल पॉवर नहीं है तो औरों को भी विल कराने की शक्ति नहीं आ सकती है।... विल पॉवर अर्थात् संकल्प, वाणी वा कर्म द्वारा जो कुछ भी किया, वह सभी बाप के आगे विल अर्थात् कर दे।... अगर महान अन्तर और महामन्त्र दोनों याद रहें तो कब भी बुद्धि को कन्ट्रोल करने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।'' अ.बापदादा 18.7.71

''जो भी कर्म करते हो तो महान अन्तर शुद्ध और अशुद्ध, सत्य और असत्य, स्मृति और विस्मृति क्या है, व्यर्थ और समर्थ संकल्प में क्या अन्तर है, सब बातों में अगर महान अन्तर करते जाओ तो दूसरे तरफ बुद्धि ऑटोमेटिकली कन्ट्रोल हो जायेगी। ... अलबेले रहते इसलिए कन्ट्रोलिंग पॉवर जो आनी चाहिए वह नहीं आती है।'' अ.बापदादा 18.7.71

''पॉवर है वैसे सभी कुछ विल करने की भी विल पॉवर चाहिए। वह यहाँ से भरकर जाना। जब सभी कुछ विल कर दिया तो क्या बन जायेंगे - नष्टोमोहा। जब मोह नष्ट हो जाता है तो बन्धनमुक्त बन जाते हैं और बन्धनमुक्त ही योगयुक्त व जीवनमुक्त बन सकता है।'' अ.बापदादा 29.4.71

''ज्ञान खजाना तो बाप ने दिया है लेकिन आपका अपना खजाना कौनसा है? यह समय और संकल्प। जैसे बाप ने पूरा ही अपने को विल किया वैसे आप लोगों की जो स्मृति है, उसको भी पूरा ही विल करना है।'' अ.बापदादा 29.4.71

''बापदादा ने जैसे आदि में बच्चों के सिर पर ज्ञान-कलश रखा, साकार द्वारा शक्तियों को, तन, मन, धन विल किया वैसे ही साकार तन द्वारा साकार पार्ट के अन्तिम समय शक्ति सेना को विश्व-कल्याण के लिए विल पावर विल की।''

अ.बापदादा 18.1.76

संकल्प और दृढ़-संकल्प का राज

किसी कार्य की सफलता के लिए संकल्प में दृढ़ता होना आवश्यक है। जितनी दृढ़ता होगी, उतनी ही सफलता होगी। इतिहास साक्षी है कि अनेक व्यक्तियों ने असम्भव प्रतीत होने वाले कार्यों को भी अपने दृढ़ संकल्प से सम्भव करके दिखाया। जब संकल्प दृढ़ होता है तो कर्म उस अनुसार आपही होता है और जब कर्म होता है तो कर्मफल अर्थात् सफलता भी अवश्य होगी। दृढ़ संकल्प वाले को परिस्थिति और प्रकृति भी साथ देती है।

''यह कार्य करके ही छोड़ूंगा, बनकर ही छोड़ूंगा। जब इतना निश्चयबुद्धि बनेंगे तब विजयी बनेंगे। बाप में तो निश्चय है लेकिन अपने में भी निश्चयबुद्धि होकर कार्य करो तो फिर विजय ही विजय है।'' अ.बापदादा 18.6.70

''कल्याण की भावना से आगे बढ़ रहे हो। जहाँ दृढ़ संकल्प है, वहाँ सफलता है ही।... दृढ़ संकल्प कभी सफल न हो, यह हो नहीं सकता। अगर थोड़ा भी दिल-शिकस्त हो जाते हो कि यहाँ तो सेवा होना ही नहीं है तो अपना थोड़ा सा कमजोर संकल्प सेवा में भी फर्क ले आता है। दृढ़ता ही सफलता लाती है।'' अ.बापदादा 10.3.86

''खजाने बाप ने सबको एक जैसे, एक जितना दिया है। कोई को कम, कोई को ज्यादा नहीं दिया है। खजाने जमा होने की निशानी क्या है? ... सबसे बड़ा खजाना है श्रेष्ठ संकल्प का खजाना।'' अ.बापदादा15.12.04

''एक ही सितारा है, जो अपनी जगह बदली नहीं करता। ... वह है दृढ संकल्प वाला सितारा, जिसको अपनी इस दुनिया में 'ध्रुव' सितारा कहा जाता है। तो ऐसे दृढ़ निश्चय बुद्धि और एकरस स्थिति में सदा स्थित पद्मापदम भाग्यशाली बने हो या बन रहे हो?'' अ.बापदादा 20.5.74

''अपनी लगन में अग्नि की महसूसता आती है, जिस लगन को अग्नि में स्वयं के पास्ट के संस्कार, स्वभाव और अन्य आत्माओं के दुखदायी संस्कार व स्वभाव को भस्म कर सको? ... मिटा हुआ-सा संस्कार फिर भी कब प्रत्यक्ष हो जाता है, लेकिन अब समय लगन की अग्नि में भस्म करने का है, जो फिर उस संस्कार का नामोनिशान भी न रहे।'' अ.बापदादा 1.2.75

''इस लगन की अग्नि को पैदा करने की युक्ति व तीली कौनसी है? ... दृढ़ संकल्प अर्थात् मर जायेंगे और मिट जायेंगे लेकिन करना ही है। 'करना तो चाहिए', होना तो चाहिए, ...ऐसा सोचना एक प्रकार से यह बुझी हुई तीली है।'' अ.बापदादा 1.2.75

समय का ज्ञान और उसके महत्व का राज

वर्तमान समय क्या है, उस समय का जीवन में क्या महत्व है, उसको हम कैसे सदुपयोग करें, यदि हम समय को बर्बाद करते हैं तो उसका परिणाम क्या होगा - यह सब ज्ञान परमात्मा ने दिया है, जिससे हमारे में समय को सफल करने का शक्ति आई है। इस पुरुषोत्तम संगमयुग का एक-एक क्षण कितना महान है, इसका आभास भी परमात्मा ने ही कराया है, तब ही हमारा समय और स्वांस सफल हो रहा है।

''ऐसे भी नहीं सोचना कि अभी समय पड़ा है, पुरुषार्थ कर लेंगे। लेकिन समय के पहले समाप्ति करके और इस स्थिति का अनुभव प्राप्त करना है। अगर समय आने पर इस अव्यक्त स्थिति का अनुभव किया... समय समाप्त तो अव्यक्त स्थिति का अनुभव भी समाप्त हो जायेगा।'' अ.बापदादा 24.1.70

''अगर समय के आधार पर ठहरे तो प्राप्ति कुछ नहीं होगी। समय के पहले बदलने से अपने किये का फल मिलेगा। जो करेगा वह पायेगा। समय प्रमाण किया तो वह हुई समय की कमाल।... सारे कल्प की तकदीर इस घड़ी बनानी है। ऐसे ध्यान देकर चलना है। सारे कल्प की तकदीर बनने का समय अब है।'' अ.बापदादा 25.1.70

''समय और स्वयं दोनों की रफ्तार को देखो।... फिर यह नहीं कहना कि हमको तो पता ही नहीं था, समय इतना तेज चला गया। कई बच्चे समझते हैं कि अभी थोड़ा ढीला पुरुषार्थ है तो अन्त में तेज कर लेंगे लेकिन बहुत काल का अभ्यास अन्त में सहयोगी बनेगा।'' अ.बापदादा15.12.04

''वर्तमान समय भी बहुत बड़ा खजाना है क्योंकि वर्तमान समय में जो कुछ प्राप्त करना चाहो, जो वरदान लेना चाहो, जितना अपने को श्रेष्ठ बनाना चाहो, उतना बना सकते हैं। अब नहीं तो कब नहीं।'' अ.बापदादा15.12.04

''समय की रफ्तार तेज है। जैसे समय किसके लिए भी रुकावट में रुकता नहीं, चलता ही रहता है। वैसे ही अपने आपसे पूछो कि स्वयं भी कोई माया के रुकावट में रुकते तो नहीं हो?'' अ.बापदादा 18.7.72

ब्राह्मणों और शूद्रों का राज़

परमात्मा पिता ने अभी ब्राह्मण और शूद्रों का राज़ भी बताया है। ब्राह्मण और शूद्रों का विभाजन जाति-पांति में जन्म लेने से नहीं होता है, जैसे दुनिया वाले मानते हैं परन्तु कर्म-संस्कार के आधार पर होता है। जो काम-विकार में जाते हैं, विकारी संस्कारों वाले हैं, वे सभी शूद्र हैं। ज्ञान सागर परमात्मा आकर ब्रह्मा तन द्वारा ज्ञान देकर शूद्रों को ही ब्राह्मण बनाता है। जो परमात्मा को पहचान कर, ज्ञान को समझकर ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने की प्रतिज्ञा करते हैं, वे ही सच्चे ब्राह्मण हैं। यज्ञ करना यज्ञ कराना, दान लेना दान देना, विद्या पढ़ना और पढ़ाना ही ब्राह्मणों का धर्म-कर्म बताया गया है। शूद्र से ब्राह्मण बनते इसीलिए ब्राह्मणों का द्विज जन्म कहा जाता है। कलियुग के अन्त में सभी शूद्र बन जाते हैं, बाप आकर उन शूद्रों को ब्राह्मण और ब्राह्मणों को पढ़ाकर ब्राह्मण से देवता बनाते हैं। इस संगमयुगी ब्राह्मणों की यादगार में ही लौकिक ब्राह्मणों को ऊंच माना जाता है।

''तुम हो ब्रह्मा के मुख वंशावली सच्चे ब्राह्मण। तुम उन ब्राह्मणों को भी समझा सकते हो कि ब्राह्मण दो प्रकार के होते हैं - एक तो हैं प्रजापिता ब्रह्मा के मुख वंशावली, दूसरे हैं कुख वंशावली। ब्रह्मा के मुख वंशावली ब्राह्मण हैं ऊंच ते ऊंच चोटी।''

सा.बाबा 7.1.05 रिवा.

इच्छा मात्रम् अविद्या का राज

देवताओं के लिए गायन है कि उनकी इच्छामात्रम् अविद्या की होती है अर्थात् उनके जीवन में इच्छा नाम की कोई चीज नहीं होती है। कोई भी इच्छा उत्पन्न होने से पहले ही वह चीज उनके सामने हाजिर हो जाती है अर्थात् सतयुग में किसी भी चीज की कमी की अनुभूति नहीं होती, जिसके लिए वहाँ इच्छा जाग्रत हो। ब्राह्मण ही देवता बनते हैं तो वह स्थिति ब्राह्मणों के जीवन में भी अवश्य आयेगी तब ही वह स्थिति वहाँ होगी। इस सत्य को जानकर अपने को चेक करें और देखें हमको परमात्मा से क्या मिला है, किस चीज की कमी है? स्व-स्थिति और परमात्मा की मधुर स्मृति में स्थित आत्मा को कभी भी किसी चीज की कमी अनुभव हो नहीं सकती। यह राज़ भी बाबा ने अभी बताया है। बाबा ने कहा है - बच्चे, इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी। दाता के बच्चे दाता बनो।

''स्व-स्थिति को मास्टर सर्वशक्तिवान कहा जाता है। ... जब तक कोई सूक्ष्म वा स्थूल कामना है तब तक सामना करने की शक्ति नहीं आ सकती। ... इच्छामात्रम् अविद्या। ... मास्टर सर्वशक्तिवान कब हार नहीं खा सकते।'' अ.बापदादा 3.12.70

''अपने से पूछो हमारी स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की बनी है? जब ब्राह्मणों की ऐसी स्थिति बनेगी तब जयजयकार भी होगी तो हाहाकार भी होगा।'' अ.बापदादा 3.12.70

''प्राप्ति तो की लेकिन ऐसी प्राप्ति की जो सर्व तृप्त हो जायें। जितना तृप्त बनेंगे, उतना ही इच्छामात्रम् अविद्या होगी और कामना के बजाये सामना करने की शक्ति आयेगी... सदैव यह स्मृति रखना कि मैं विजयी माला का विजयी रत्न हूँ। इस स्मृति से कब हार नहीं होगी।'' अ.बापदादा 5.12.70

''व्यक्त भाव में आना व कोई भी व्यक्ति व वस्तु में भावना रखना कि यह प्रिय है व अच्छी लगती है। यह व्यक्त वस्तु और व्यक्ति में भावना रहना अर्थात् कामना का रूप हो जाता है। जब तक कामना है, तब तक माया से सम्पूर्ण रीति सामना नहीं कर सकते। जब तक सामना नहीं कर सकते, तब तक समान नहीं बन सकते अर्थात् वायदा नहीं निभा सकते।''

अ.बापदादा 5.12.74

''इच्छा मात्रम् अविद्या' स्वयं भी बाप द्वारा व सर्व सहयोगी आत्माओं द्वारा सहयोग, स्नेह, हिम्मत, उल्लास, उमंग की इच्छा रखने वाले और कोई भी प्रकार का आधार लेने वाले सर्व-आत्माओं के निमित्त आधार-मूर्त नहीं बन सकते। प्रकृति के व परिस्थिति के और व्यक्ति के व वैभव के अधीन रहने वाली आत्मा अन्य आत्माओं को भी सर्व अधिकारी नहीं बना सकती।''

अ.बापदादा 26.6.74

''असार संसार अनुभव होता है? 'यह सब मरे ही पड़े हैं'- ऐसा बुद्धि द्वारा अनुभव होता है? मुर्दों से कोई प्राप्ति की इच्छा हो सकती है, क्या कोई सम्बन्ध की अनुभूति होती है? ऐसे इच्छा मात्रम् अविद्या, सदा एक के रस में रहने वाले, एकरस स्थिति वाले बन चुके हो अथवा अब तक भी मुर्दों से किसी प्रकार की प्राप्ति की कामना है।'' अ.बापदादा 2.8.75

समस्याओं और उनके समाधान का राज़

ये विश्व एक अनादि-अविनाशी सुख-दुख, जीत-हार का खेल है, जिसमें सर्वात्मायें खिलाड़ी हैं। इस कलियुग के समय और ब्राह्मण जीवन में समस्याओं का आना स्वभाविक है परन्तु अपने आत्मिक स्वरूप और इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझने और धारण करने से समस्यायें समस्या न रहकर एक खेल बन जाती हैं। खेल समझने से उनको पार करना अति सहज हो जाता है क्योंकि खेल सदा मनोरंजन के लिए होता है। समस्यायें भी मनोरंजन का साधन बन जाती हैं। परमात्मा इस खेल का ज्ञाता होने के कारण दुनिया में सबकुछ होते भी उनसे प्रभावित नहीं होता है, ऐसे ही आत्मिक स्थिति में स्थित आत्मा को कोई समस्या प्रभावित नहीं कर सकती।

''आप समस्याओं को समाधान करने वाले समाधान स्वरूप बन गये हो।... समस्यायें खेल करने के लिए आतीं हैं न कि डराने के लिए। सर्वशक्तिवान के आगे समस्या कोई नहीं।... खेल समझने से खुशी रहती है। बड़ी बात भी छोटी हो जाती है।''

अ.बापदादा 22.3.86

सर्वशक्तियां और उनकी धारणा का राज

परमात्मा सर्वशक्तिवान है, सर्व शक्तियां उनका संगमयुग पर आत्माओं को वर्सा है, जो सर्व आत्माओं के लिए समान रूप से है परन्तु आत्मायें उनको नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार प्राप्त करती हैं क्योंकि यह वैरायटी ड्रामा है। इसमें सबका एक समान पार्ट हो नहीं सकता, इसलिए शक्तियों को प्राप्त करने के लिए भी सभी का पुरुषार्थ भी नम्बरवार ही चलता है और नम्बरवार ही धारण कर पाते हैं।

''इतनी कैचिंग पॉवर आई है जो अपने 5000 वर्ष पहले के दैवी संस्कार कैच कर सकते हो?... 5 हजार वर्ष की बात इतनी स्पष्ट अनुभव में आये जैसे कल की बात है। इसको कहते हैं कैचिंग पॉवर।'' अ.बापदादा 9.12.70

पैगम्बर-मैसेन्जर का राज

धर्म पिताओं को पैगम्बर-मैसेन्जर कहते हैं परन्तु वे कोई पैगाम तो लाते नहीं हैं। पैगम्बर-मैसेन्जर का यथार्थ राज़ क्या है, वह भी बाप ने बताया है कि धर्मपितायें पैगम्बर-मैसेन्जर नहीं हैं क्योंकि वे कोई पैगाम तो लाते नहीं हैं, वे केवल अपने धर्मवंश की स्थापना करते हैं। पैगाम तो बाप लाता है और परमात्मा का वह पैगाम सर्व आत्माओं तक पहुँचाना हम आत्माओं का परमात्मा पिता और अपने सर्व आत्मिक भाइयों के प्रति पावन कर्तव्य है, जिससे वे भी अपना भाग्य बना सकें, बाप से वर्सा ले सकें और कोई भी आत्मा परमात्मा को और हमको उल्हना न दे कि हमको पैगाम नहीं दिया, इसलिए हम अपना भाग्य नहीं बना सके। बाबा कहते - वास्तव पैगम्बर और मैसेन्जर तुम बच्चे हो, जो बाप का पैगाम सारी दुनिया को पहूँचाते हो। इसलिए हमको सच्चे-सच्चे पैगम्बर-मैसेन्जर बनकर सबको बाप का पैगाम देना है। पैगम्बर-मैसेन्जर पैगाम लेकर जाता है और पैगाम देकर वापस आ जाता है, उसका किससे लगाव नहीं होता, इसलिए बाबा कहते तुम सेवा करो परन्तु सेवा से भी लगाव न हो। सेवा करो और सेवा पूरी हुई देह से न्यारे होकर बाबा को याद करो।

''तुम सब सन्देशी हो। तुमको खास भारत और आम सारी दुनिया को यह सन्देश पहुँचाना है कि भारत अब फिर से स्वर्ग बन रहा है अथवा स्वर्ग की स्थापना हो रही है। भारत में बाप को हेविनली गॉड फादर कहते हैं, वह स्वर्ग की स्थापना करने आये हैं... तुमको अन्दर में यह खुशी रहनी चाहिए।'' सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

''तुम जानते हो हम अभी वर्सा ले रहे हैं, और भी बहुतों को वर्सा लेना है। हमारे ऊपर फर्ज-अदाई है घर-घर में बाप का पैगाम देने की। वास्तव में मैसेन्जर एक बाप ही है। बाप अपना परिचय तुमको देते हैं, तुमको फिर औरों को बाप का परिचय देना है, बाप की नॉलेज देनी है।'' सा.बाबा 11.2.05 रिवा.

''शास्त्रों में भी है कि घर-घर में सन्देश दिया। कोई एक रह गया तो उसने उल्हना दिया कि मुझे कोई ने बताया नहीं। बाप आये हैं तो पूरा ढिंढोरा पीटना चाहिए। एक दिन जरूर सबको पता पड़ेगा कि बाप आये हैं, शान्तिधाम-सुखधाम का वर्सा देने।''

सा.बाबा 19.1.05 रिवा.

''यह मैसेज सबको देना है। अपनी दिल से पूछो - मैं कहाँ तक मैसेन्जर बना हूँ? जितना बहुतों को जगायेंगे, उतना इनाम मिलेगा... मूल बात है बाप का परिचय देना।'' सा.बाबा 30.6.05 रिवा.

आत्मा, परमात्मा और वातावरण का राज

आत्मा-परमात्मा चेतन्य सत्ता हैं, वातावरण जड़ है। आत्मा के संकल्प से वृत्ति और वृत्ति से वातावरण का निर्माण होता है। अपने स्वमान में स्थित आत्मा श्रेष्ठ वातावरण का निर्माण करती है और देहाभिमान में स्थित आत्मा गिरती कला का वाताव-

रण निर्माण करती है। इसलिए बाबा बार-बार बच्चों को इशारा देते हैं कि क्लास में बैठे कोई बाहर की याद न आये। यदि आती है तो तुम वातावरण को खराब करते हो, जिसका पाप तुम्हारे ऊपर चढ़ जाता है। जहाँ रहते वहाँ का वातावरण ऐसा पॉवरफुल बनाकर रखो जो कोई विकारी वायब्रेशन उसमें प्रवेश न कर सके।

''जब अपने में शक्ति आ जाती है तो फिर वातावरण का भी असर अपने पर नहीं होता है लेकिन हमारा असर वातावरण पर रहे। सर्वशक्तिवान वातावरण है या बाप? जब सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हो तो फिर वातावरण बाप से शक्तिशाली क्यों? अपनी शक्ति को भूलने से ही वातावरण का असर होता है... हमको वातावरण बनाना है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''रचयिता के हर संकल्प अथवा वृत्ति के वॉयब्रेशन्स रचना में स्वत: ही आ जाते हैं... सिर्फ यह अटेन्शन नहीं रखना है, लेकिन साथ-साथ जो मैं संकल्प करूँगी, जैसी मेरी वृत्ति होगी वैसे वायुमण्डल में व अन्य आत्माओं में वॉयब्रेशन फैलेंगे - यह स्लोगन भी स्मृति में रखना आवश्यक है वरना आप रचयिता की रचना कमज़ोर अर्थात् कम पद पाने वाली बन जायेगी।''

अ.बापदादा 6.1.75

नारद का राज

बाबा ने कहा है नारद मेल में और मीरा फीमेल में भक्त शिरोमणि हैं अर्थात् श्रीनारायण के और श्रीकृष्ण के अव्यभिचारी भक्त हैं। नारद के विषय में अनेक किवदन्तियां हैं और नारद नाम कोई ऐतिहासिक भक्त हुआ है या ये गुणवाचक नाम रखा हुआ है क्योंकि ऐसा कोई वृतान्त बाबा ने नहीं बताया है। फिर भी बाबा कहते हैं तुम अपनी सीरत आइने में देखते रहो कि लक्ष्मी या नारायण को वरने लायक है। ऐसा न हो अन्त में पश्चाताप करना पड़े।

''नारद का मिसाल इस समय का है। सब कहते हैं - हम लक्ष्मी अथवा नारायण बनेंगे। बाप कहते हैं - अपने अन्दर देखो, हम लक्ष्मी को वरने लायक हैं, हमारे में कोई विकार तो नहीं है? भक्त सब नारद हैं।'' सा.बाबा 2.5.05 रिवा.

''जितनी जास्ती परहेज रखेंगे, उतना तुम्हारा कल्याण होगा।... खुद अपनी समझ होनी चाहिए। हम देवता बनते हैं तो हमारी चाल-चलन, खान-पान कैसा होना चाहिए।... नारद की भी कथा है ना। नारद एक तो नहीं है ना।... विकार में नहीं जा सकते, पतित के हाथ का नहीं खा सकते। नहीं तो अवस्था पर असर हो जायेगा।'' सा.बाबा 22.6.05 रिवा.

''हर एक बच्चे को अपने से पूछना चाहिए कि बाप से सभी कुछ मिला है? किस किस चीज में कमी है? हर एक को अपने अन्दर झांकी पहननी है। जैसे नारद का मिसाल ... अपने अन्दर जो खामी हो, वह सर्जन को बतानी चाहिए। फिर बाबा युक्ति भी बतायेंगे और करेण्ट भी देंगे, जिससे खामी निकल जायेगी। नहीं तो बढ़ती रहेगी।'' सा.बाबा 11.12.68

सुदामा का राज

परमात्मा को भोलानाथ कहा जाता है क्योंकि वह हमारी बेकार चीज लेकर हमको महल देता है अर्थात् अपार धन-सम्पत्ति देता है। इस सम्बन्ध में भक्ति मार्ग में सुदामा और श्रीकृष्ण का वृतान्त प्रसिद्ध है।

''बच्चों को हर एक बात में बुद्धि चलानी होती है। सुदामा का भी मिसाल है ना। चावल मुट्ठी के बदले 21 जन्म के लिए महल मिल गये। ... मैं भोलानाथ भी हूँ ना। यह दादा तो भोलानाथ नहीं है। यह तो कहते हैं - भोलानाथ शिवबाबा है।''

सा.बाबा 22.6.05 रिवा.

''सुदामा का भी मिसाल गाया हुआ है - चावल मुट्ठी ले आया। ... मम्मा का भी मिसाल है। चावल मुट्ठी भी नहीं ले आई फिर भी कितना ऊंच पद पा लिया। इसमें पैसे की बात नहीं है। इसमें तो याद में रहना है और आप समान बनाना है।''

सा.बाबा 9.8.05 रिवा.

और संग तोड़, एक संग जोड़ का राज

ईश्वरीय जीवन अर्थात् इस संगमयुगी जीवन या आध्यात्मिक जीवन की सफलता का आधार ही है देह और देह की दुनिया, वस्तु-व्यक्तियों से बुद्धियोग हटाकर एक परमात्मा बाप के साथ बुद्धियोग लगाना, उनको याद करना। कैसे हमारा

बुद्धियोग देह और देह की दुनिया से टूटे और परमात्मा के साथ कैसे लगे, इस राज़ को भी परमात्मा ने स्वयं ही बताया है और उसके लिए आवश्यक दिशा निर्देश भी देते रहते हैं।

''मुझे व्यर्थ संकल्प आते हैं ... बाप की याद का अनुभव नहीं है, बाप द्वारा कोई प्राप्ति नहीं है ... निरन्तर अतीन्द्रिय सुख वा हर्ष नहीं रहता, खुशी का अनुभव नहीं होता। क्या ये बोल ब्राह्मण कुल भूषण के हैं।... ब्राह्मणपन का पहला लक्षण है - 'और संग तोड़ एक संग जोड़'।'' अ.बापदादा 13.6.73

द्रोपदी, द्रोपदी के चीर हरण का राज़ / सीता, सीता हरण का राज

महाभारत में द्रोपदी और रामायण में सीता को दुराचारियों द्वारा अपमानित किये जाने के वृतान्त हैं परन्तु उनका रहस्य क्या वह अभी परमात्मा ने बताया है कि कैसे कामान्ध व्यक्तियों द्वारा नारियों पर अत्याचार होते हैं, जिनका उद्धार परमात्मा ही करता है।

''गाया हुआ है - अबलाओं पर अत्याचार हुए। काम महाशत्रु है, इससे तो तुमको नफरत आनी चाहिए।... द्रोपदी ने पुकारा। यह अभी की बात है।'' सा.बाबा 19.5.05 रिवा.

गार्डन ऑफ अल्लाह, खुदा के बगीचे का राज

परमात्मा को बागवान भी कहते हैं, गॉर्डन ऑफ अल्लाह का भी गायन है परन्तु खुदा का बगीचा कहाँ है, परमात्मा को बागवान क्यों कहते हैं, यह कोई नहीं जानते हैं, जिसका राज़ अभी परमात्मा ने समझाया है कि जब संगमयुग पर परमात्मा आते हैं और ब्रह्मा तन से जीवात्माओं को अपना बनाते हैं, वही खुदा का बगीचा है।

''तुम जानते हो, याद भी करते हैं बागवान-खिवैया को। वह अब यहाँ आये हैं, यहाँ से पार ले जाने के लिए... हर एक बच्चा अपने को जानते हैं कि कहाँ तक हम खुशबूदार फूल बने हैं, कितना खुशबूदार बन फिर औरों को बनाते हैं... मुसलमान लोग भी कहते हैं - 'गार्डन ऑफ अल्लाह'... खुदा फूल देते हैं। मन में जो कामना होती है, वह पूरी करते हैं... ज्ञान से तुम खुशबूदार फूल बनते हो। यह खुदा का बगीचा है। यहाँ कांटा किसी को नहीं कहेंगे, हाँ फूल नम्बरवार हैं... खुशबूदार फूल बनने के लिए अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।'' सा.बाबा 14.6.05 रिवा.

''भारत गार्डन आफ अल्लाह था। अभी पतित बन गया है। हम ही सारे विश्व के मालिक थे... वनवास और गार्डन वास। बाप का नाम ही है बागवान।'' सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

''बाप को बागवान कहते हैं, उनको ही बुलाते हैं कि आकर इस कांटों के जंगल को खत्म करके फूलों की कलम लगाओ। तुम बच्चे प्रैक्टिकल में जानते हो कैसे कांटों से फूलों का सेपलिंग लगता है।... वह बागवान भी है, खिवैया भी है।''
सा.बाबा 22.6.05 रिवा.

''परमात्मा को बागवान कहेंगे, उनको माली नहीं कहेंगे। माली तुम बच्चे हो, जो सेन्टर्स सम्भालते हो। माली अनेक प्रकार के होते हैं।'' सा.बाबा 11.7.05 रिवा.

ज्ञान की सम्पूर्णता का राज

जब ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण बन गया तो इससे सिद्ध है कि बाबा ने सम्पूर्ण ज्ञान दे दिया है, जिसको धारण करके ही ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण बना है। ज्ञान की किसी बात को हमने नहीं समझा या नहीं पढ़ा या धारण नहीं किया, तो इसका अर्थ ये नहीं है कि बाबा ने ज्ञान नहीं दिया है। बाबा ने 69 या 70 की मुरली में स्पष्ट कहा है कि बाबा साकार तन द्वारा पूरा ज्ञान दे दिया है, अभी उसका रिवाइज कोर्स चल रहा है।

Q. क्या हम यह कह सकते हैं कि बाबा ने ये बात अभी समझाई नहीं है? वास्तविकता ये है कि बाबा ने तो समझाई है लेकिन हमने ये बात पढ़ी नहीं है, मिस की है या समझी नहीं है। बाबा ने भी एक अव्यक्त वाणी में कहा है कि बाबा ने सारा ज्ञान दे दिया है, अभी तो उसका रिवाइज कोर्स चल रहा है।

Q. क्या हम कह सकते हैं कि हमको बाबा ने बहुत दिया है और किसको कम दिया है?

A. बाबा तो दाता है और सागर है, इसलिए उसका भण्डार तो सबके लिए समान रूप से खुला है लेकिन हर आत्मा ड्रामानुसार अपने पार्ट अनुसार ही उससे लेती, समझती और धारण करती है। ये ज्ञान परम्परागत चलता है अर्थात् हमको समयानुसार किन्ही विशेष आत्माओं के द्वारा मिला है और हमको अन्य आत्माओं को देना है।

''साकार तन द्वारा पढ़ाने का पार्ट था, वह पढ़ाई का कोर्स तो पूरा हुआ। अब पढ़ाई पढ़ाने के लिए नहीं आते हैं। वह कोर्स, उसी तन द्वारा पार्ट पूरा हो चुका है। अभी तो आते हैं मिलने के लिए, बहलाने के लिए। मुख्य बात है अशरीरी बनने की। कर्मातीत बनकर क्या किया? एक सेकेण्ड में पंछी बन उड़ गया... पढ़ाई तो पूरी हुई, बाकी एक कार्य रहा हुआ है, वह है साथ ले जाने का।''

अ.बापदादा 26.6.69

समर्थ और असमर्थ स्थिति का राज़ / व्यर्थ और समर्थ का राज

व्यर्थ और समर्थ का राज़ भी परमात्मा ने अभी बताया है। व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ संकल्प क्या हैं और उनका परिणाम क्या होता है, ये सब राज़ भी अभी समझते हैं।

आत्मा सर्वशक्तिवान परमात्मा की सन्तान सदा समर्थ है। परन्तु आत्मा जब अज्ञानता के कारण देहाभिमान के वशीभूत हो जाती है तो असमर्थ हो जाती है, जिसके फलस्वरूप आत्मा में विकारों की प्रवेशता होती है और आत्मा व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म के कारण विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती है। आत्मा को समर्थ बनाते के लिए सर्व समर्थ परमात्मा आत्मा को अपने उसके वास्तविक स्वरूप का साक्षात्कार कराते हैं और व्यर्थ से बचकर समर्थ बनने का रास्ता दिखाते हैं।

स्वस्थिति में स्थित आत्मा समर्थ होती है, जिससे उसका कोई भी अहित कर नहीं सकता और फिर सर्वशक्तिवान परमात्मा का साथ हो, परमात्मा की छत्रछाया में हो तो उसका कोई अहित कर ही कैसे सकता है। इस सत्य को जानकर आत्मा समर्थ बनकर निर्भय, निश्चिन्त होकर इस परमप्राप्तियों से सम्पन्न जीवन सुख अनुभव करती है।

''जब स्थूल यन्त्र का आवाज़ भी पसन्द नहीं करते हो, तो नेचुरल मुख द्वारा निकला हुआ बोल व आवाज़ स्वयं को भी और सर्व को भी ऐसे ही अनुभव होना चाहिए... इस घड़ी से सदा काल के लिए व्यर्थ बोल, विस्तार करने के बोल, समय व्यर्थ करने के बोल और अपनी कमज़ोरियों द्वारा अन्य आत्माओं को संगदोष में लाने वाले बोल सब समाप्त हो जायेंगे।''

अ.बापदादा 27.5.74

''बुद्विबल द्वारा अपने सर्वशक्तिवान स्वरुप का साक्षात्कार कर सकते हैं। वर्तमान समय स्मृति कम होने के कारण समर्थी भी नहीं है। व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ शब्द, व्यर्थ कर्म हो जाने कारण समर्थ नहीं बन सकते हो। व्यर्थ को मिटाओ तो समर्थ को जायेंगे।''

अ.बापदादा 21.1.71

''आसक्ति होने के कारण माया आ सकती है। अगर अनासक्त हो जाओ तो माया आ नहीं सकती। जब आसक्ति खत्म हो जाती है तब शक्तिस्वरुपप बन सकते हैं। अपनी देह में वा सम्बन्धों में कोई भी पदार्थ में कहाँ भी अगर आसक्ति है तो माया भी आ सकती है।''

अ.बापदादा 1.03.71

अव्यक्त बापदादा के सूक्ष्म वतन की दिनचर्या का राज

हमारा प्रश्न उठता रहता है कि बाबा सूक्ष्म वतन में क्या करते हैं, कैसे करते हैं, उसका राज़ भी बाबा ने बताया है। वहाँ की क्या गति-विधि होती है, वह सब राज़ भी बाबा ने बताया है।

''विशेष बच्चों के प्रति अमृतवेले का समय ही निश्चित है। फिर तो, विश्व की अन्य आत्माओं के प्रति, यथा-शक्ति भावना का फल ... साथ-साथ सच्चे भक्तों की पुकार ... कल्प पहले वाले छुपे हुए ब्राह्मण आत्माओं को सन्देश पहुंचाने के लिए बच्चों को निमित्त बनाने के कार्य में, पुरानी दुनिया को समाप्त कराने-अर्थ निमित्त बने हुए वैज्ञानिकों की देख-रेख करने, ज्ञानी तू आत्मा, स्नेही व सहयोगी बच्चों को, सारे दिन के अन्दर ईश्वरीय सेवा का कार्य करने व मायाजीत बनने में 'हिम्मते बच्चे, मददे बाप' के नियम के अनुसार उनको भी मदद देने के कर्तव्य में, ड्रामानुसार निमित्त बने हैं।'' अ.बापदादा 30.6.74

''बापदादा जब नम्बरवार महावीरों को देखते हैं व महारथियों के महारथी सेट की सेटिंग करते हैं तो क्या देखते हैं? कोई ना कोई बात की व मर्यादा की फिटिंग न होने के कारण, सीट के बजाय कोई न कोई साइट पर दिखाई पड़ते हैं। तो बापदादा इसी कार्य में बिजी रहते हैं।'' अ.बापदादा 16.5.74

''बच्चों का संकल्प उठता है कि बाप वतन में क्या करते रहते हैं... ब्रह्मा बाप की अब सत संकल्प की सेवा है... सेवा के बन्धन से मुक्त नहीं हैं लेकिन कर्म-बन्धन से मुक्त हैं।'' अ.बापदादा 7.10.75

कमल पुष्प सम जीवन का राज

कमल भारत का राष्ट्रीय फूल है क्योंकि भारत में देवताओं के अनेक मन्दिर हैं और देवताओं के हर अंग की तुलना कमल से करते हैं जैसे कि कमल-नयन, कमल-चरण, कमल-हस्त, कमल-मुख आदि। अभी बाबा ने इसक यथार्थ राज़ बताया है कि कमल कीचड़ में रहते भी कीचड़ से न्यारा होता है, ऐसे ही तुमको दुनिया में रहते, गृहस्थ में रहते भी दुनिया से न्यारा होकर रहना है, तब ही तुम्हारा ये आध्यात्मिक जीवन सफल होगा।

''विश्व के आगे चैलेन्ज की हुई है कि घर-गृहस्थ में रहते कमल-पुष्प के समान न्यारे और प्यारे रहने की। कीचड़ में रहते कमल अथवा कलियुगी सम्पर्क में रहते ब्राहमण इस चैलेन्ज को प्रैक्टिकल रूप में लाने के निमित्त हैं।'' अ.बापदादा 28.4.74

''फर्स्ट चैलेन्ज है प्यूरिटी का। सम्पर्क और सम्बन्ध में रहते संकल्प में भी इसी फर्स्ट चैलेन्ज की कमजोरी न हो... क्योंकि यही असम्भव को सम्भव करने वाली एक बात है।'' अ.बापदादा 28.4.74

''होलीएस्ट का कौनसा गायन है? कमल-नयन, कमल-हस्त, कमल-मुख के रुप में अब तक भी गायन करते रहते हैं। अब प्रक्टिकल में चेक करो कि हर कर्म-इन्द्रियां कमल समान न्यारी बनी है...कोई कर्म-इन्द्रियां का रस देखने का, सुनने का, बोलने का अपने वशीभूत तो नहीं बनाता है? वशीभूत होने का अर्थ होलीएस्ट से भूत बन जाना।'' अ.बापदादा 23.1.76

वरदानों का राज़ / ईश्वरीय वरदानों का राज

इस विश्व-नाटक में परमात्मा और प्रकृति द्वारा हर आत्मा को अनेक वरदान स्वभाविक मिले हुए हैं, जिनके आधार पर आत्मायें इस जगत का सुख अनुभव करती हैं। परमात्मा ने भी हर आत्मा को उनके समय और पार्ट के अनुसार वरदान दिये हैं, जो शब्दों में भी हो सकते हैं तो गुप्त रूप में भी हो सकते हैं, उनकी स्मृति रहे तो आत्मा की सदा चढ़ती कला रहे।। एक बुद्धिमान प्राणी मनुष्य को भी वरदान है तो एक चींटी, एक चिड़िया को भी वरदान है, जिसके आधार पर वह इस विश्व-नाटक का परम सुख अनुभव करती है। एक चिड़िया स्वछन्द आकाश में उड़ान भरते हुए परमानन्द का अनुभव करती है क्योंकि उसको पंख हैं और उसको उड़ने का वरदान मिला हुआ है, जो मनुष्य अनुभव नहीं कर सकता है। मनुष्यों में भी हरेक का अपना-अपना वरदान है। इस सत्य का अनुभव करने वाला व्यक्ति कब अहंकार या हीनता के वशीभूत नहीं हो सकता, उसमें ये अहंकारहीनता की बदबू नहीं आ सकती।

आत्माओं को दो प्रकार के वरदान प्राप्त हैं। एक हैं ईश्वरीय वरदान और दूसरे हैं प्राकृतिक वरदान। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान, दिव्य-बुद्धि, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति, ईश्वरीय सेवा, स्वमान की स्मृति आदि-आदि अनेकानेक वरदान परमात्मा ने अभी दिये हैं, जो इस जीवन की सफलता का आधार हैं। ये विश्व-नाटक कल्याणमय है और प्रकृति भी सुखमय है। हर आत्मा

को भले ही वह किसी भी योनि की हो, उसे भी ड्रामानुसार प्रकृति से कुछ ऐसे अनादि वरदान मिले हुए हैं, जिससे वह उस योनि में खुश है। इस प्रकृति के बीच निर्भय होकर स्वच्छन्द रहना भी आत्माओं को प्रकृति का बड़ा वरदान है। प्रकृति के आनन्द से प्रभावित होकर किसी कवि ने कहा है - उत्तम खेती, मध्यम वान, निषिध चाकरी, भीख निदान।

''बाप और वरदाता - इन डबल सम्बन्ध से हरेक बच्चे को यह श्रेष्ठ प्राप्ति जन्म से ही होती है। बाप जन्म से ही सर्व शक्तियों का जन्म-सिद्ध अधिकार का अधिकारी बना देता है और वरदाता के नाते से जन्म होते ही मास्टर सर्वशक्तिवान बनाये, 'सर्व शक्तिवान भव' का वरदान दे देते हैं।'' अ.बापदादा29.10.87

''श्रेष्ठ संकल्प शक्ति अर्थात् मन को जहाँ चाहो, जब चाहो वहाँ स्थित कर सकते हो... यह है मन की शक्ति, जो अलौकिक जीवन में वर्से वा वरदान में प्राप्त है।'' अ.बापदादा29.10.87

''स्मृतिस्वरूप अर्थात् जैसा समय, जैसा कर्म वैसे स्वरूप की स्मृति इमर्ज रूप में अनुभव करो। जैसे अमृतवेले मास्टर वरदाता बन वरदाता से वरदान लेने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ... वह वरदानी समय है और वरदाता-विधाता साथ में है... मुरली सुनते समय गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ... भगवान पढ़ाने आये हैं... तो कितना नशा रहेगा... ऐसे हर कर्म में बाप के साथ स्मृति-स्वरूप बनते चलो।'' अ.बापदादा14.10.87

''इन तीन स्वरूपों से विशेष तीन वरदान कौन-से हैं? निराकार स्वरूप की मुख्य शिक्षा का वरदान कौनसा है? कर्मातीत भव। आकारी स्वरूप अथवा फरिश्तेपन का वरदान कौनसा है? डबल-लाइट भव! ... साकार स्वरूप का विशेष वरदान है - साकार समान निरहंकारी और निर्विकारी भव।'' अ.बापदादा 29.1.75

''अब ऐसे वरदान को साकार रूप में लाओ अर्थात् स्वयं को ज्ञान-मूर्त, याद-मूर्त, और साक्षात्कार-मूर्त बनाओ। जो भी सामने आये, उसे मस्तक द्वारा मस्तक-मणि दिखाई दे, नैनों द्वारा ज्वाला दिखाई दे और मुख द्वारा वरदान के बोल निकलते हुए दिखाई दें। जैसे अब तक बाप-दादा के महावाक्यों को साकार स्वरूप देने के लिए निमित्त बनते आये हो, अब इस स्वरूप को साकार बनाओ।'' अ.बापदादा 18.1.75

मोहजीत राजा का राज

मोहजीत राजा के विषय में भी अनेक कहानियां हैं। सत्यनारायण की कथा में भी मोरध्वज के नाम से मोहजीत राजा का वृतान्त आता है परन्तु यथार्थ क्या है, वह किसको पता नहीं, जो बाबा ने अभी बताया है कि सतयुग-त्रेतायुग की दुनिया मोहजीत होती है। तुम अभी इस सत्य ज्ञान के द्वारा मोहजीत बनते हो। सत्य ज्ञान के द्वारा अपनी देह से भी मोहजीत बन जाते हो। जो जितना मोहजीत बनता है, वह उतना ही इस संगमयुग का सुख अनुभव करता है। गीता का सार भी है नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप।

स्थूल और सूक्ष्म भोजन का राज

जैसे स्थूल भोजन का जीवन-व्यवहार पर प्रभाव होता है, वैसे ही स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों अर्थात् दृष्टि, स्पर्श, कानों आदि से जो भी अन्दर जाता है, उसका प्रभाव आत्मा के जीवन-व्यवहार पर पड़ता है। इन सब राजों को बाबा ने मुरली में भिन्न-भिन्न शब्दों और भावों से समझाया है और उसके लिए परहेज बताई है।

''वर्तमान समय रुहानी दृष्टि और वृत्ति के अभ्यास की बहुत आवश्यकता है... व्यक्ति व वैभव कभी न कभी अपने वश कर लेता है। ... ब्राह्मण आत्मा अगर संकल्प में भी विकारी दृष्टि-वृत्ति रखती है अर्थात् चमड़ी को देखती है तो महापापी की लिस्ट में आ जाते हैं।'' अ.बापदादा 19.9.75

''ब्राह्मण जीवन में बड़े से बड़ा पाप व दाग़ इस विकारी भावना का गिना जाता है... शुद्ध संकल्प रूपी आहार अर्थात् भोजन को स्वीकार करते हो... मलेच्छ अर्थात् आत्मघाती महापापी कहलायेंगे... इस महापाप का दण्ड बहुत कड़े रूप में भोगना पड़ेगा।''

अ.बापदादा 19.9.75

जीवन में घाटे-फायदे का राज

संगमयुग पर हम जो समय शुभाशुभ चिन्तन में, बातों में लगाते हैं उसका तीन प्रकार का फायदा भी होता है तो तीन प्रकार का घाटा भी होता है। यदि व्यर्थ बातों या व्यर्थ चिन्तन, व्यर्थ कार्यों में समय-शक्ति लगाते हैं तो एक तो संगमयुग के मुक्ति-जीवनमुक्ति के देव-दुर्लभ सुख से वंचित हो जाते हैं, दूसरा उन कार्यों का फल कर्मभोग के रूप में भोगना पड़ता है और तीसरा उसके कारण भविष्य की प्राप्तियों से भी वंचित हो जाते हैं। इस सत्य का ज्ञान भी बाबा ने मुरलियों में भिन्न शब्दों और भावों से दिया हुआ है।

आत्म-विश्वास का राज

अपने कर्म-फल पर विश्वास रखना अति आवश्यक है। हमारा कर्मफल संचित है और हमारी किसके प्रति दुर्भावना नहीं तो हमारे प्रति किसकी हो नहीं सकती। कोई भी हिंसक जीव की भी हमारे प्रति हिंसा वृत्ति नहीं हो सकती।

आत्मा-परमात्मा और विश्व-नाटक के सत्य ज्ञान से आत्मिक शक्ति बढ़ती है और आत्म-विश्वास जागृत होता है। ड्रामानुसार परमात्मा की याद से आत्मा के ऊपर से विकर्मों का खाता खत्म होता है और शुभ कर्मों का खाता जमा होता है तब ही आत्म-विश्वास बढ़ता है। दृढ़ आत्म-विश्वास वाला ही इस प्रकृति के परम सुख का अनुभव कर सकता है। परमात्मा की हम आत्माओं पर परम कृपा है जो हमको ऐसे प्रकृति सुख और आध्यात्मिक सुख से सम्पन्न स्थान पर रखा है और इस प्रकृति के सुख को और ईश्वरीय सुख को अनुभव करने की शक्ति और बुद्धि दी है।

विवाह और गन्धर्वी विवाह का राज

दुनिया में विवाह समाज की एक अनिवार्य प्रवृत्ति है परन्तु इसके लिए दुनिया में अनेक प्रकार के विधि-विधान प्रचलित हैं और हर धर्म में अपने-अपने विधि-विधान हैं परन्तु भारत में आदि से लेकर अब तक मुख्यता स्वम्बर प्रथा, माता-पिता द्वारा चुनकर विवाह रचाना, मन्दिरों-गिरजाघरों में विवाह करना, न्यायालय में लिखापढ़ी करके विवाह करना। अभी बाबा ने गन्धर्वी विवाह का भी विधि-विधान बताया है, जिसका वर्णन शास्त्रों आदि में भी अस्पष्ट रूप से है। बाबा या यज्ञ के मुख्य के द्वारा किसी कन्या के जीवन को पतन से बचाने के लिए बाबा ने ये विधि-विधान अपनाया है, जिससे दोनों पवित्र जीवन व्यतीत कर सकें परन्तु ये कभी भी नहीं समझ लेना चाहिए कि जो कुमार-कुमारी जब से ज्ञान में आये और बाबा की श्रीमत अनुसार पुरुषार्थ किया, उनसे गन्धर्वी विवाह वालों का पद श्रेष्ठ हो जायेगा। गन्धर्वी विवाह करने वालों में भी नाम-रूप की बीमारी तो होती ही है, इसलिए उनकी गिनती दूसरी लाइन में ही होगी, भले ही उनका जीवन उदाहरण स्वरूप है।

''तुम बच्चों को तो बड़ी खुशी होनी चाहिए - हमको परमात्मा पढ़ाते हैं... गन्धर्वी विवाह किया, यह कोई खुशी की बात नहीं है, यह तो कमजोरी है।'' सा.बाबा 17.8.05 रिवा.

आत्मानुभूति और परमात्मानुभूति का राज

आत्मानुभूति के बाद ही आत्मा परमात्मानुभूति कर सकती है। जो आत्मा के प्रति जाग्रत होगा, वही परमात्मा की अनुभूति कर सकता है।

''अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है... पहले जब अपने को आत्मा निश्चय करें, तब बाप को भी जान सकें। आत्मा को ही नहीं पहचानते हैं इसलिए बाप को भी पूरा जान नहीं सकते। अभी तुम बच्चे जानते हो - हम आत्मा बिन्दी हैं। इतनी छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है।'' सा.बाबा 29.6.05 रिवा.

''आत्मा को देख नहीं सकते। आत्मा को जाना जाता है, परमात्मा को भी जाना जाता है... शरीर से कैसे निकल जाती है, पता भी नहीं पड़ता है।'' सा.बाबा 25.7.05 रिवा.

Cosmic Energy का राज

बाबा ने विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशयता का जो ज्ञान दिया है, उससे ये बात स्पष्ट होती है कि कोई ऐसी शक्ति है, जो चेतन आत्माओं सहित इन जड़ तत्वों में गति प्रदान करती है, जिसके आधार पर ये अनादि काल से चलते आ रहे हैं और अनन्त काल तक चलने वाले हैं। उसको ही Cosmic Energy कहते हैं। यह शक्ति जड़ और चेतन दोनों तत्वों के गुरुत्वाकर्षण से निर्माण होती है, जिससे सारे तत्व चक्रवत चलते रहते हैं।

सुखी जीवन जीने की कला का राज

बाबा ने सुखी जीवन जीने के लिए जीवन व्यवहार की सारी बातों के विषय में ज्ञान दिया है, जिससे हमारा ये जीवन भी सुखमय हो और भविष्य जीवन भी सुखमय हो। सवेरे उठने से रात सोने तक के जिस बाबा ने सब बातें बताई हैं, उनका ध्यान रहे और उस अनुरूप जीवन रहे तो ये ब्राह्मण जीवन परम सुखमय अनुभव हो।

''जो विश्व के मालिक बनने वाले बच्चे हैं, उनके ख्यालात बहुत ऊंचे और चलन बड़ी रॉयल होगी... भोजन भी बहुत सूक्ष्म होगा। खुशी जैसी खुराक नहीं। सदैव खुशी में रहो तो खान-पान भी बहुत थोड़ा हो जायेगा... भोजन सदैव एकरस रहना चाहिए।'' सा.बाबा 4.7.05 रिवा.

कछुआ, सर्प, भ्रमरी आदि के कर्मों और गुणों का राज

कछुआ, सर्प, भ्रमरी आदि आदि का भक्ति मार्ग में भी उपदेशक उदाहरण देते हैं परन्तु उन सबकी यथार्थ वास्तिकता अभी बाबा ने बताई है और उनके गुण, कर्तव्य, संस्कार कैसे योग साधना और ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बनते हैं, यह सब राज़ भी बाबा ने बताये हैं। कछये के समान इन्द्रियों को समेटना, सर्प के समान इस देह से न्यारा होने का अभ्यास, भ्रमरी के समान पतित मनुष्यों की सेवा कर देवता बनाने का कर्तव्य करना, यह सब बाबा ने अभी सिखाया है और अभी ही हम इसका अभ्यास करते हैं।

''तुम्हें ही भ्रमरी कहा जाता है। तुम कीड़ों को आप समान ब्राह्मण बनाती हो। तुमको कहा जाता है कि कीड़ों को लाकर भूँ-भूँ करो। भ्रमरी भी भूँ-भूँ करती है फिर कोई को तो पंख आ जाता हैं, कोई मर जाते हैं।'' सा.बाबा 8.6.05 रिवा.

''ज्ञान-भक्ति-वैराग्य। वैराग्य दो होता का होता है। एक है हद का वैराग्य, दसूरा यह है बेहद का वैराग्य... तुम ब्राह्मणों का कर्तव्य है भ्रमरी के मिसल कीड़ों को भूँ-भूँ करके आप समान बनाना और तुम्हारा पुरुषार्थ है सर्प के मिसल पुरानी खाल छोड़ नई लेने का।'' सा.बाबा 16.7.05 रिवा.

डबल ताज और सिंगल ताज का राज

देवताओं को डबल ताजधारी दिखाते हैं, द्वापर से आने वाले धर्मपिताओं को पवित्रता का ताज और द्वापर से बनने वाले राजाओं को रतनजड़ित सिंगल ताजधारी दिखाते हैं परन्तु इस सबका यथार्थ राज़ अभी परमात्मा ने बताया है कि देवताओं का जन्म योगबल से होता है इसलिए उनकी देह और आत्मा दोनों पवित्र होते हैं, धर्मपिताओं का जन्म तो भोगबल से होता है परन्तु आत्मा पवित्र होती है तो उनको पवित्रता का ताज दिखाते हैं और द्वापर के बाद के राजाओं को राजाई का ताज तो होता है परन्तु देवताओं के समान पवित्रता नहीं होती। ब्राह्मणों की आत्मा पवित्र बनती है परन्तु उनको दोनों ही ताज नहीं दिखाये जाते हैं परन्तु उनकी महिमा और गायन होता है, पवित्रता की भी शक्ति रहती है।

''ताज ब्राह्मण जीवन की विशेषता 'पवित्रता' का सूचक है। चेहरे की चमक रुहानी स्थिति में स्थित रहने की रुहानियत की चमक है... यह चेहरा ही वृत्ति और स्थिति का दर्पण है... एक है सदा रुहानियत की स्थिति में स्थित रहने वाले और दूसरे हैं अभ्यास द्वारा स्थिति में स्थित रहने वाले।'' अ.बापदादा 9.10.87

आपघात - महापाप का राज़ / आपघात और जीवघात के भेद का राज

प्राय: दुनिया में सभी जीवघात को ही आपघात या आत्मघात मानते हैं और आपघात को महापाप कहते हैं। परन्तु अभी बाबा ने आत्मा और जीव का अन्तर बताया है और आपघात किसको कहा जाता है और जीवघात किसको कहा जाता है, उसका राज़ भी समझाया है। आपघात महापाप क्यों है, उसका राज़ भी बताया है। वास्तव में जीवघात भी बड़ा पाप है क्योंकि उससे सिद्ध होता है कि आत्मा इस विश्व नाटक में अपने पार्ट से तंग हो गई या आने वाली परिस्थितियों को सहन नहीं कर सकी। वास्तव में कर्म के विधि-विधान को जानने वाला कभी जीवघात नहीं कर सकता क्योंकि उससे आत्मा विकर्मों के फल से मुक्त नहीं हो सकती, इसलिए उसको आगे शरीर लेकर उनका फल भोगना ही पड़ेगा।

आपघात अर्थात् आत्मघात क्या है और वह महापाप क्यों है, यह भी बाबा के ज्ञान से अभी समझ में आया है कि जो आत्मा अपनी आत्मा की पुकार को दबाकर कर्म करती है, अपने विवेक को दबाकर कर्म करती है, वह आपघात महापाप है क्योंकि उसके कारण आत्मा आगे भी पाप कर्म ही करती रहती है, इसलिए पाप का खाता बढ़ता ही रहता है। यथार्थ ज्ञान की धारणा ही इससे मुक्त होने का एकमात्र साधन है।

''तीसरे प्रकार की महसूसता है - मन मानता है कि यह ठीक नहीं है, विवेक आवाज भी देता है कि यह यथार्थ नहीं है लेकिन बाहर से ... यह विवेक का खून करना भी पाप है। जैसे आपघात महापाप है, वैसे यह भी पाप के खाते में जमा होता है।''

अ.बापदादा 2.11.87

''आत्मा के असली गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप से नीचे आना अर्थात् विस्मृत होना - यह भी पाप के खाते में जमा होता है। इसलिए कहा जाता है आत्मघाती महापापी। ... माया के वश, परमत के वश, कुसंग के वश या परिस्थिति के वश अपने ईश्वरीय विवेक को दबाते हो तो समझो ईश्वरीय विवेक का खून करते हो।'' अ.बापदादा15.10.75

''सबसे बढ़ा धोखा स्वयं को देते हो कि जो जानते हुए, मानते हुए फिर भी स्वयं को श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित कर देते हो... अपने को अच्छा पुरुषार्थी सिद्ध करना, कोई भी गलती करके छिपाना-यह भी धोखा देना है वा ठगी करना है।'' अ.बापदादा15.10.75

Q. जीवघात के लिए उत्तरदायी कौन अर्थात् अपराधी कौन?

A. कर्म के नियम-सिद्धान्त को विचार करते हुए निर्णय करें तो - क्या जिससे परेशान होकर जीवघात-आपघात किया, वह या जिसने उसकी सुनी नहीं, वह या जीवघात-आपघात करने वाला स्वयं?

Q. क्या जिस पर सर्वशक्तिवान परमात्मा की छत्रछाया हो, परमात्मा से प्रीतबुद्धि हो उसको कोई आत्मा इस स्थिति तक परेशान कर सकती है कि वह ऐसा कर्म करने के लिए बाध्य हो जाये?

भगवानुवाच - निश्चयबुद्धि विजयन्ति, प्रीतबुद्धि विजयन्ति तो उसका अस्तित्व क्या रहा? जीवघात-आपघात करने वाले को यथार्थ ज्ञानी कहा जा सकता है?

ये घटनायें रोकने के लिए पुरुषार्थ क्या?

A.वास्तव में कर्म सिद्धान्त को विचार करें और जीवघात करने वाले व्यक्ति की मन: स्थिति को विचार करें तो 65-70 प्रतिशत तो वह व्यक्ति ही उत्तरदायी होता है और 25-30 प्रतिशत अन्य आत्मायें निमित्त बनती हैं, जो भी अपने अपराध के लिए पश्चाताप अवश्य करती हैं या कर्मफल में, मान-प्रतिष्ठा में ह्रास अवश्य होता है। जो समर्थ है, निमित्त है, वह ध्यान नहीं देता तो उसका भी कुछ न कुछ अपराध अवश्य बनता है और उसको भी उसका फल भोगना ही पड़ता है। इसके लिए ज्ञान की स्थिति में उन्नति अति आवश्यक है।

''बाप का बनकर फिर बाप को छोड़ा तो बहुत पापात्मा हो जाते हैं। जैसे कोई किसका खून करता है तो पाप लगता है ना। वह पाप भी थोड़ा है। यहाँ जो बाप का बन और आकर फारकती देते, प्रतिज्ञा कर फिर विकारी बन पड़ते तो बहुत पाप लगता है। अज्ञान काल में इतना नहीं लगता, जितना ज्ञान काल में लगता है।'' सा.बाबा 28.5.71 रिवा.

विश्व-नाटक के हीरो पार्टधारी का राज

बाबा ने कहा है तुम आत्मायें इस विश्व-नाटक के हीरो पार्टधारी हो क्योंकि तुम्हारा इस विश्व-नाटक में आदि से अन्त तक पार्ट है या कहें कि इस विश्व-नाटक में तुम्हारा सनातन पार्ट है अर्थात् आलराउण्ड पार्ट है। अन्य आत्मायें तो इस नाटक के बाई-प्लाट्स हैं। इस पार्ट को सफलता पूर्वक बजाने के लिए बाबा ने समय-समय पर विभिन्न महावाक्य बोले हैं।

''हीरो पार्ट बजाने के लिए पहले अपने को जीरो समझना है... हीरो पार्ट बजाने के लिए विशेष दो शक्तियां चाहिए। एक रूलिंग पॉवर और दूसरी कन्ट्रोलिंग पॉवर... जब चाहो तब एक सेकेण्ड में न्यारे हो जाओ अर्थात् संकल्प करते ही स्वरूप हो जाये।''

अ.बापदादा11.10.75

''हद के एक्टर्स जब हद के अन्दर अपने एक्ट करते दिखाई देते हैं तो लाइट के कारण अति सुन्दर स्वरूप दिखाई देते हैं...ऐसे ही बेहद ड्रामा के आप हीरो-हीरोइन एक्टर्स, अव्यक्त स्थिति की लाइट के अन्दर हर एक्ट करने से क्या दिखाई देंगे? अलौकिक फरिश्ते! ... वे हर आत्मा को स्वत: ही अपनी तरफ आकर्षित करेंगे।'' अ.बापदादा 5.9.75

''तुम्हारा ही हीरो-हीरोइन का पार्ट है। तुम डायमण्ड बनते हो। ... तुम्हारा ये जीवन बहुत अमूल्य है क्योंकि तुम विश्व की सर्विस करते हो।'' सा.बाबा 20.7.05 रिवा.

धर्म-सत्ता और राज-सत्ता का राज़ / धर्म और कर्म का राज

सतयुग-त्रेतायुग में धर्म-सत्ता और राज-सत्ता एक के ही हाथ में होती है, जिसकी निशानी देवताओं को प्रकाशमय ताज और रतनजड़ित ताज दोनों दिखाते हैं परन्तु द्वापर से धर्म-सत्ता और राज-सत्ता दो भागों में बट जाती है, इसलिए राजाओं को जतनजड़ित ताज तो होता है लेकिन प्रकाशमय ताज नहीं होता है और धर्म-पिताओं को प्रकाशमय ताज होता है लेकिन रतनज-ड़ित ताज नहीं होता है।

''सतयुग-त्रेतायुग में सम्पन्नता और सम्पूर्णता का गायन है... द्वापर में भी राज्य-सत्ता तो आपके पास होती है। वहाँ धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता दो भागों में बट जाती है, इसलिए द्वापर कहा जाता है... धर्म-पितायें धर्म-सत्ता के आधार से धर्म की स्थापना करते हैं।'' अ.बापदादा 30.9.75

अन्त:वाहक देह का राज़ / देह में रहते देह से न्यारी स्थिति का राज

योगियों के लिए जो अन्त:वाहक देह का गायन है, उसका राज़ भी परमात्मा ने अभी बताया है और वह कैसे कार्य करता है, उसका विधि-विधान भी बताया है और ब्रह्मा बाबा के द्वारा उसका अनुभव भी कराया है।

''जो अन्त:वाहक शरीर से चक्र लगाने का गायन है, यह अन्तर की आत्मा वाहन बन जाती है। तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे बिल्कुल बटन दबाया, विमान उड़ा, चक्र लगाकर आ गये और दूसरे भी अनुभव करेंगे कि यहाँ होते हुए भी नहीं है। जैसे साकार में देखा ना - बात करते-करते भी सेकण्ड में हैं और अभी नहीं हैं।'' अ.बापदादा 20.1.86

''विदेही बापदादा को भी देह का आधार लेना पड़ता है। किसलिए? बच्चों को भी विदेही बनाने के लिए। जैसे बाप विदेही, देह में आते हुए भी विदेही स्वरूप में, विदेहीपन का अनुभव कराते हैं, ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बनकर कर्म कराओ।'' अ.बापदादा19.12.85

Q. सतयुग में विमान होंगे या ऐसे ही अन्त:वाहक शरीर द्वारा दूसरे स्थान के दृष्य देखेंगे या दूसरे स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों से मिलन का अनुभव करेंगे और करायेंगे?

करन-करावनहार का राज

परमात्मा को करन-करावनहार कहते हैं परन्तु परमात्मा के साथ-साथ आत्मा भी करन-करावनहार है। परमात्मा कैसे करन-करावनहार है और आत्मा कैसे करन-करावनहार है, यह राज भी परमात्मा ने अभी बताया है।

''बाबा ने सम्पन्न बनने के लिए आज सभी को एक शब्द याद दिलाया, वह शब्द है - 'करावनहार'। ... मैं बाप समान करावनहार हूँ, मालिक बनकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने वाली। ये स्मृति रहेगी तो मन, बुद्धि, संस्कार जो सूक्ष्म कर्मचारी हैं, वे आपके आर्डर में चलेंगे।'' अ.बापदादा का सन्देश 30.5.04 गुल्जार दादी के द्वारा

जो है, जैसा है का राज

भगवानोवाच्य - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा कोई विरला ही जानता है और उनमें भी कोई विरला ही वैसा जानकर मुझे याद करता है। परमात्मा जो है, जैसा है, वैसा जानकर उसको याद करने से आत्मा परम सुख को अनुभव करती है परन्तु परमात्मा को यथार्थ रीति जानने से पहले आत्मा जो है, जैसी है, उसको जानना अति आवश्यक है और आत्मा-परमात्मा के साथ ये विश्व नाटक जो है, जैसा है, वैसा जानना भी उतना ही आवश्यक है।

परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है, आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है और ये विश्व-नाटक सत्य और परम कल्याणमय है। जो इन तीनों के राज़ को जानता है, वह जीवन में परमानन्द का अनुभव करता है।

सूर्य-चांद के ग्रहण का राज

आत्माओं पर ग्रहण कैसे लगता है, यह भी बाबा ने बताया है। वह ग्रहण तो सूर्य-चांद पर लगता है परन्तु यह ग्रहण ज्ञान सूर्य परमात्मा पर तो कभी ग्रहण नहीं लगता है। ग्रहण चन्द्रमा और तारों पर लगता है और ग्रहण पूर्ण चन्द्रमा पर ही लगता है। आत्मा जब सम्पूर्ण हो जाती है, फिर उतरती कला आरम्भ हो जाती है, यह संगम ही चढ़ती कला का युग है और परम सुख के अनुभव का समय है।

''जितना याद करेंगे, उतना ऊंच चढ़ती कला होगी। सम्पूर्ण बनना है ना। चन्द्रमा की भी लकीर रह जाती है फिर कला बढ़ते-बढ़ते सम्पूर्ण बन जाता है। तुम्हारा भी ऐसे है... चन्द्रमा पर भी ग्रहण लगता है तो कहते हैं - दे दान तो छूटे ग्रहण।''

सा.बाबा 29.7.05 रिवा.

व्यभिचारी और अव्यभिचारी याद का राज़ / व्यभिचारी और अव्यभिचारी भक्ति का राज
व्यभिचारी और अव्यभिचारी ज्ञान का राज़ / व्यभिचारी और अव्यभिचारी योग का राज

स्त्री के लिए एक पति के अतिरिक्त किसी पर-पुरुष की ओर बुद्धि जाने को व्यभिचारी कहा जाता है, ऐसे ही परमात्मा पतियों का पति है, आत्मा उनके अतिरिक्त और किसी भी वस्तु या व्यक्ति को याद करती है तो वह व्यभिचारी याद हो जाती है। अव्यभिचारी याद का क्या महत्व है, वह भी बाबा ने अभी बताया है।

''देही अभिमानी बनो, नहीं तो पुराने सम्बन्धी याद पड़ते रहेंगे। छोड़ा भी है फिर भी बुद्धि जाती रहती है। नष्टोमोहा हैं नहीं, इसको व्यभिचारी याद कहा जाता है। सद्गति को पा न सकें क्योंकि दुर्गति वालों को याद करते रहते हैं।'' सा.बाबा 18.3.71 रिवा.

विचारणीय प्रश्न

Q. जीवन क्या, क्यों और किसलिए है ?

A. देह में रहते देह से न्यारी स्वराज्य-अधिकारी स्थिति परमानन्दमय है, जिसके लिए साधन-सम्पत्ति, व्यक्ति की कोई आवश्यकता नहीं है। उसके लिए न ये साधक हैं और न ही बाधक हैं, इनकी स्मृति ही उस परमानन्द को अनुभव नहीं करने देती।

Q. वृत्ति से दृष्टि और संकल्प परिवर्तन होता है या दृष्टि से संकल्प और संकल्प से वृत्ति बनती है ? वृत्ति का स्वरूप क्या है ?

A. व्रत रखना अर्थात् वृत्ति बनाना। तो जैसी वृत्ति होती है, वैसी ही दृष्टि, कृत्ति स्वत: ही बन जाती है। ... जैसी वृत्ति वैसा वायुमण्डल बनता है। अ.बापदादा 7.3.05

Q. आत्मा पर बोझा क्या है और उससे मुक्त होने के क्या-क्या रास्ते हैं ?

A. आत्मा पर दो प्रकार का बोझा है। एक है सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक आत्मा जो देह धारण करती है, आत्मिक स्वरूप भूला हुआ होता है, उसके कारण देहभान और देहाभिमान का बोझा आत्मा पर चढ़ जाता है और देहाभिमान के कारण आत्मा अनेक प्रकार के पाप कर्म में प्रवृत्त हो जाती है, जिससे आत्मा पर पापों का बोझा चढ़ जाता है। बोझा के कारण यथार्थ ज्ञान मिलते भी आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित नहीं हो पाती है। इस प्रकार हम देखें तो एक तो देहभान और देहाभिमान की जंक और पाप कर्मों का बोझा आत्मा पर है।

योग द्वारा - ये विश्व-नाटक अनादि अविनाशी है, हम किसी भी पुरुषार्थ के द्वारा इसकी किसी भी अनादि घटना को परिवर्तन नहीं कर सकते हैं परन्तु योगबल के द्वारा हम अपने दृष्टिकोण को बदलकर, देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर उसकी वेदना से मुक्त हो सकते हैं अर्थात् Events can't be changed but we can change our attitude towards events. इस प्रकार हम देखें तो योग द्वारा आत्मा से देहभान और देहाभिमान की जंक उतरती है।

कर्मभोग द्वारा - कर्मभोग और उसकी वेदना से आत्मा के पाप कर्मों के हिसाब-किताब खत्म होते हैं और आत्मा हल्की होती है। धर्मराज की सजाओं के द्वारा - आत्मा को धर्मराज की सजायें मानसिक रूप में प्राप्त होती हैं, जिसकी भोगना से आत्मा का पाप कर्मों का बोझा खत्म होता है।

Q. मुरली क्या है ?

A. मुरली मिस कर देते हैं। बाप कहते हैं - कितनी गुह्य-गुह्य बातें तुमको सुनाता हूँ, जो सुनकर धारणा करना है। धारणा नहीं होगी तो कच्चे रह जायेंगे। बहुत बच्चे भी विचार सागर मंथन कर अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुनाते हैं। ... तुमको तो अथाह खुशी होनी चाहिए। सा.बाबा 29.7.04 रिवा.

Q. ज्ञान सागर बाबा ने हमको क्या-क्या राज़ समझाये हैं और वे हमारी खुशी में कैसे वृद्धि कर सकते हैं तथा वह खुशी स्थाई कैसे रह सकती है ?

Q. ज्ञान सागर बाप आकर हमको कौन-कौन से राज़ समझाते हैं, जिसके कारण हमारी चढ़ती कला होती है और जिसके लिए ही आधा कल्प हम बाप को याद करते हैं ?

Q. अभी शरीर की इन्द्रियां शिथिल होते, कर्मभोग होते भी आत्मा शरीर छोड़ना नहीं चाहती परन्तु सतयुग में शरीर स्वस्थ, दुख-दर्द से भी मुक्त होते भी एक समय के बाद आत्मा देह का त्याग कर देती तो उसका कारण क्या है - आत्मा क्यों देह का त्याग कर देती ?

A. ड्रामा का पार्ट पूरा होना और नये पार्ट की आकर्षण तथा हिसाब किताब का पूरा होना, नये हिसाब किताब का आरम्भ होना इसका आधार बनता है और आत्मा को आकर्षण होती है देह त्याग का।

Q. परमधाम की मुक्ति, सतयुग-त्रेता की जीवनमुक्ति और संगमयुग के मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में कौनसा अनुभव श्रेष्ठ है और क्यों है ?

Q. बाप का यथार्थ वर्सा क्या है और बाप ने सबको समान वर्सा दिया है या सबको अलग-अलग दिया है ?

A. दिव्य बुद्धि से निर्णय शक्ति और दिव्य दृष्टि से परखने की शक्ति प्राप्त होती है।
Q. तुम जिस कार्य के लिए इस ब्राह्मण कुल में जन्में हो या बाबा के बने हो, वह कार्य पूरा किया ? वह कार्य क्या है, याद है ? बाप परमानन्द का दाता है, तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो और करा रहे हो ?
यह परमानन्द का अनुभव ही इस जीवन की परम प्राप्ति है और भविष्य प्राप्तियों का आधार है।
Q. शंकर का कर्तव्य शिवबाबा का है या ब्रह्मा बाबा का ?
Q. पूरे 84 जन्म किन आत्माओं के होंगे और कितनी आत्माओं के होंगे ?
A. 9 लाख आत्मायें जो पहले-पहले आती हैं, उनके तो 84 जन्म होंगे ही लेकिन पहले जन्म अर्थात् 100-150 साल के अन्दर जो आत्मायें जन्म लेंगी, उनके भी 84 जन्म हो सकते हैं और होंगे ही।
Q. दुख-अशान्ति द्वापर से ही दुख शुरू हो जाता है, यह कैसे कह सकते हैं ?
A. जहाँ देहाभिमान और काम विकार है, वहाँ दुख-अशान्ति की कुछ न कुछ महसूसता होना स्वभाविक ही है। भक्ति करते ही हैं दुख-अशान्ति से मुक्त होने के लिए अर्थात् भक्ति दुख-अशान्ति का दर्पण है।
Q. क्या शास्त्र लिखने वालों ने शास्त्र लिख कर कोई भूल की है अर्थात् कोई गलती की है ? यदि की है तो क्या और क्यों की है ?
A. भल शास्त्रों में अधिकांश गलत है, आटे में नमक के समान ही कुछ सही है परन्तु ड्रामा अनुसार वह बिल्कुल सही है। शास्त्र
A. लिखना भी उन आत्माओं का पार्ट है, उसका उनमें अविनाशी संस्कार है। इसलिए उनकी कोई भूल नहीं कही जा सकती। बाबा भी कहता है कि उनका कोई दोष नहीं है।
Q. अटूट निश्चय और अटल-अचल स्थिति क्या है ?
Q. दिल से कहो 'मेरा बाबा' और मतलब से 'मेरा बाबा' कहने में क्या अन्तर है ?
Q. क्या कोई आत्मा ब्राह्मण कुल में जन्म ले सकती है और यदि ले सकती है तो कैसे ?
कई बच्चों के मां-बाप उनके जन्म लेने से 5-6 मास पहले ही ज्ञान में आ जाते हैं तो अवश्य ही उस मां के गर्भ में आत्मा के प्रवेश होने से पहले वे ब्राह्मण बन जाते हैं।
Q. स्पेस जहाँ सेटेलाइट आदि छोड़ते हैं, वह स्पेस क्या है और कहाँ है ?
Q. विकार आत्मा में हैं या शरीर में अर्थात् विकारी आत्मा बनती है या शरीर ? क्यों और कैसे ? क्योंकि शरीर में भी अनेक
A. द्रव्य पैदा होते हैं, जो काम-विकार आदि के कारण बन सकते हैं।
रचता आत्मा है और आत्मा के खान-पान, संकल्पों के कारण ही शरीर में ऐसे द्रव्य पैदा होते हैं, जो काम-विकार आदि के कारण बनते हैं। आत्मा ही अज्ञानता के कारण इन्द्रियों के वशीभूत अयुक्त खान-पान, व्यवहार, संग आदि करती, जिससे वे द्रव्य पैदा होते हैं और विकारों की उत्पत्ति होती है।
Q. क्या मीरा स्वर्ग में आयेगी, क्या वह ज्ञान में आयेगी ?
A. विवेक कहता है कि मीरा को श्रीकृष्ण से प्यार था, कृष्ण के प्यार में इतना सब सहन किया तो जरूर ज्ञान में आना चाहिए और ज्ञान को धारण कर स्वर्ग में आना चाहिए। सृष्टि के नियमानुसार जिसने बैकुण्ठ का अनुभव नहीं किया, श्रीकृष्ण या परमात्मा के प्यार का अनुभव नहीं किया, वह उसके लिए इतना सहन करे, ये सम्भव नहीं है। बाबा ने कहा है - जो शिव के भक्त होंगे, देवताओं के भक्त होंगे, वे ही ये ज्ञान अच्छी रीति सुनेंगे और धारण करेंगे। यदि कहीं पर बाबा ने ये कहा भी है कि मीरा स्वर्ग में नहीं आयेगी तो इसी सन्दर्भ में कहा है कि उसने साक्षात्कार किया, कृष्ण की भक्ति की, कृष्ण के साथ साक्षात्कार में डांस किया- उस पुरुषार्थ से स्वर्ग में नहीं आयेगी। परन्तु बाबा ने अनेक बार कहा है कि शिव के भक्त, देवताओं के भक्त ही ज्ञान में पहले आयेंगे, उस हिसाब वह ज्ञान में आ सकती है और विवेक कहता है कि जरूर आयेगी।

''साक्षात्कार है खेलपाल। मीरा ध्यान में खेलती थी, उनको ज्ञान नहीं था। मीरा कोई बैकुण्ठ में गई नहीं। यहाँ ही कहाँ होगी। इस ब्राह्मण कुल की होगी तो यहाँ ही ज्ञान लेती होगी। ऐसे नहीं कि डांस किया तो बस बैकुण्ठ में चली गई।''

सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

Q. देह में रहते देह से न्यारी स्थिति परमानन्दमय, परम सुखमय, परम शान्तिमय है। इस स्थिति की अनुभूति के लिए क्या-क्या बातें सहयोगी हैं और क्या2 बातें बाधक है?

A. आत्मिक स्वरूप का यथार्थ ज्ञान, शुभ कर्मों का संचित खाता, अन्य आत्माओं की दुआयें, स्थूल-सूक्ष्म खान-पान और व्यवहार की इस अनुभूति में विशेष भूमिका है। इस स्थिति में स्थित आत्मा ही परमात्मा के यथार्थ साथ का अनुभव करेगी और परमात्मा के साथ वाली आत्मा ही इस स्थिति को दीर्घ काल तक अनुभव कर सकेगी।

Q. जब ध्यान में जाते हैं, बाबा को भोग लगाने जाते हैं, बाबा से सन्देश लेने जाते हैं तो आत्मा सूक्ष्मवतन में जाती है या बाबा की प्रेरणा लेते हैं, वास्तविकता क्या है?

Q. आत्मा का पुण्य-पाप का खाता का हिसाब कैशबुक है या खाताबही (Ledger) अर्थात् + - or - or ö और भोग से + - कम होता है?

A. यदि कैशबुक के समान है तो जब जमा का पूरा खाता खत्म होकर पाप का खाता बढ़ जाये तब ही आत्मा को दुख होना चाहिए परन्तु आत्मा सुख और दुख समयानुसार दोनों ही होते हैं इससे समझ में आता है कि खाता खाताबही के समान जमा होता है अर्थात् पुण्य कर्म का भी फल मिलता है तो पाप कर्म का भी फल मिलता है। पाप-पुण्य दोनों के खाते संचित होते हैं।

Q. सबसे सहज पुरुषार्थ क्या है? हम आत्मा हैं, जो यथार्थ है, वह स्मृति में रहे तो और पुरुषार्थ स्वत: हो जाते हैं?

Q. सतयुग की पवित्रता और संगमयुग की पवित्रता अर्थात् देवताओं की पवित्रता और ब्राह्मणों की पवित्रता में क्या अन्तर है?

A. देवताओं की पवित्रता आत्मिक शक्ति के आधार पर है परन्तु ब्राह्मणों की पवित्रता यथार्थ ज्ञान और परमात्मिक शक्ति के आधार है, इसलिए देवताओं की पवित्रता गिरती कला की पवित्रता है परन्तु ब्राह्मणों की पवित्रता चढ़ती कला की पवित्रता है। ब्राह्मणों की पवित्रता सम्पन्न पवित्रता है, इसलिए ब्राह्मणों का सुख अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द के नाम से गाया जाता है और देवताओं का सुख केवल सुख है, जो भौतिक साधनों के आधार पर है।

सारांश

तमसो मां ज्योतिर्गमय, असतो मां सद्गमय, मृत्योर्मा अमृत गमय।

परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसने हमको ज्ञान के अनेक गुह्य राज़ बताये हैं, जिनका ज्ञान, उनका अनुभव और उन पर हमारा अटल निश्चय ही हमारे जीवन का आधार है और हमारे व्यक्तिगत जीवन और सामूहिक विश्व की चढ़ती कला का आधार है। ज्ञान के गुह्य रहस्यों को समझने और अनुभव करने के लिए बाबा की मुरली ही एकमात्र आधार है। मुरली को जितना ही हम पढ़ेंगे-सुनेंगे, उसका मनन-चिन्तन करेंगे, उतना ज्ञान के गुह्य राज़ों को समझ सकेंगे और उनकी हमारे जीवन में धारणा होगी, जिससे हमको हमारा ये ब्राह्मण जीवन सरल, सुखद और सफल अनुभव होगा। बाबा ज्ञान का सागर है और बाबा की मुरली ज्ञान रतनों की खान है। बाबा ने रतनों की खान हमको दी है, अब ये हमारे ऊपर है कि हम उस खान का कितना लाभ उठायें। बाबा का सुखद वरदानी हाथ सदा हमारे ऊपर है, हम उसका अनुभव करके उसका सुख लें, ये हमारा परम कर्तव्य है।

बाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान रत्नों की धारणा से ही बाबा की याद पक्की होती है और आत्मा की अज्ञानता रूपी ग्रहचारी उतरती है, जो आत्मा की और विश्व की उतरती कला का मूल कारण है। मैं आत्मा हूँ और परमपिता परमात्मा की अनादि सन्तान हूँ। आत्मा-परमात्मा दोनों ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं और परमात्मा हाथ और उसकी छत्रछाया सर्वात्माओं पर सदा है।

विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, हर आत्मा एक स्वतन्त्र सत्ता है, विश्व-नाटक में कर्म और फल के अटल सिद्धान्त की अविनाशी नूँध है। जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होगा, वह भी अच्छा होगा। वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है।
बाबा ज्ञान का सागर है, उसके ज्ञान के सागर में गोता लगाने से ही ये पता पड़ा है कि वह सागर कितना गहरा है और उसमें कितने रत्न समाये हुए हैं और उन रत्नों का कितना सुख है।
आत्मा को जानने से शान्ति मिलती, बाबा को जानने से शक्ति मिलती और ड्रामा को जानने से हर्षित रहते हैं... दादी जानकी

''बाप कहते हैं - यह ड्रामा में नूँध है, जो विकर्म करते हैं, उनको कर्मों की सजा मिलती है। ... उसकी कोई लिखत आदि तो होती नहीं है। ... बड़े से बड़ा विकर्म है देहाभिमानी बनना। ... सबसे बड़ा पाप है काम कटारी चलाना।''

सा.बाबा 30.8.05 रिवा.

''बाप बच्चों को स्मृति दिलाते हैं - तुम पहले-पहले सतयुग में आये, फिर पार्ट बजाते, 84 जन्म भोग अब पिछाड़ी में आ गये हो। ... मैं एक्यूरेट टाइम पर आता हूँ। जैसे ड्रामा में एक्यूरेट खेल चलता है ना।'' सा.बाबा 5.9.05 रिवा.

''तुम अपने को आत्मा समझो, ... आत्मा में खाद कैसे पड़ती है, यह भी बाप ने समझाया है... याद की यात्रा में रहने से तुमको ताकत मिलेगी।'' सा.बाबा 5.9.05 रिवा.

''आप बेफिकर बादशाह हो, बेगर होते भी बादशाह... बादशाह का अर्थ यह नहीं कि तख्त पर बैठें। बादशाह अर्थात् भरपूर, कोई अप्राप्ति नहीं, कमी नहीं।'' अ.बापदादा10.12.87

''सौदा तो सबने किया है लेकिन हर बात में नम्बरवार होते हैं। बाप ने तो सभी को एक जैसे सर्व खजाने दिये हैं क्योंकि अखुट सागर है। बाप को देने में नम्बरवार देने की आवश्यकता नहीं है। ... अथाह खाजाना है लेकिन लेने वालों में नम्बर हो जाते हैं... नम्बरवन सौदागर खजानों को स्व के प्रति मनन कर अनुभवी बन कार्य में लगाते हैं।'' अ.बापदादा10.12.87

''नम्बरवन सौदागर खजानों को मनन कर अनुभव की अथॉर्टी बन दूसरों को भी बांटते। कार्य में लगाना अर्थात् खजानों को बढ़ाना। ... इस खजाने की कन्डीशन यह है कि जितना औरों को देंगे, जितना कार्य में लगायेंगे, उतना बढ़ेगा... समझा मनन शक्ति का बहुत महत्व है।'' अ.बापदादा10.12.87

''मास्टर ज्ञान सूर्य ...कोई भी परिस्थिति सामने आये लेकिन सूर्य रोशनी देने के कार्य के बिना रह नहीं सकता। ऐसे मास्टर ज्ञान सूर्य हो ?... परमार्थ से व्यवहार और परिवार दोनों को श्रेष्ठ बनाना है। जहाँ परमार्थ है, वहाँ व्यवहार सहज सिद्ध हो जाता है।''

अ.बापदादा 10.12.87 पार्टियों से

लव एण्ड लॉ के बैलेन्स

''राजऋषि अर्थात् एक तरफ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग्य का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य, उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स... बेहद अर्थात् मैं सम्पूर्ण सम्पन्न आत्मा बाप समान सदा सर्व कर्मेन्द्रियों के राज्य अधिकारी।'' अ.बापदादा27.11.87

''तुम्हारा भी कोई दोष नहीं है। यह भी ड्रामा अनादि बना हुआ है। राम-राज्य और रावण-राज्य का खेल बना हुआ है... खेल में जीत और हार होती ही है। ... यह सुख-दुख का खेल है। सिर्फ सुख का ही खेल होता फिर तो यह भक्ति आदि कुछ न हो।''

सा.बाबा 7.9.05 रिवा.

''अबलाओं पर अत्याचार होने का भी ड्रामा में पार्ट है। ऐसा पार्ट क्यों बनाया, यह प्रश्न ही नहीं उठता।... ऐसे तो फिर सब कहेंगे- हमको यह पार्ट क्यों मिला ? नहीं, यह बना-बनाया ड्रामा है।... दुख-सुख यह तो अपने कर्मों का हिसाब है।''

सा.बाबा 7.9.05 रिवा.

''एक भारत ही है, जिसने किसी का भी राज्य छीना नहीं है क्योंकि भारत असुल में अहिंसक है ना! ... तुम भारतवासियों को बाप विश्व का मालिक बनाते हैं।'' सा.बाबा 7.9.05 रिवा.

''अनेक वैराइटी धर्मों का झाड़ है।... इसको कहा जाता है कुदरती बना-बनाया बेहद का ड्रामा।... इस ड्रामा के राज को समझने में बुद्धि बड़ी विशाल चाहिए।'' सा.बाबा 7.9.05 रिवा.

गीता में ''अजोनित्या शाश्वतो अयं हन्यते न हन्यमाने शरीरे - का राज / स्वधर्मे निधनम् श्रेयष्कर, परधर्म भयावहा" - का राज

स्वधर्म और परधर्म का राज़ भी बाप ने समझाया है कि परधर्म का आशय हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई... से नहीं परन्तु स्वधर्म-परधर्म का आशय आत्मा का धर्म और देह के धर्मों से है। देह के धर्मों के वशीभूत आत्मा ही भय का अनुभव करती है। स्वधर्म में स्थित आत्मा किसी भी परिस्थिति में और किसी भी स्थिति में सुख-शान्ति-आनन्द की अनुभूति करती है।

कर्म में

विश्व-नाटक के कर्म और फल के अटल विधि-विधान के अनुसार हर आत्मा अपने कर्म के लिए उत्तरदायी है और उसके कर्म का ही फल उसको मिलता है और मिलेगा। यदि किसी के अयुक्त व्यवहार से भी कोई दूसरी आत्मा किसी अकृत्य में प्रवृत्त होती है तो भी दूसरी आत्मा पहले वाले के कर्म का बहाना बनाकर अपने कर्म से छूट नहीं सकती भले पहली वाली को भी अपने कर्म का फल मिलेगा ही। यथा कोई स्त्री नंगी होकर सामने आ जाती है और किसी की दृष्टि-वृत्ति खराब हो जाती है तो दोनों को अपने-अपने कर्मानुसार फल अवश्य मिलेगा।

आत्माओं के हिसाब-किताब के राज में

चाहे सतयुग हो या कलियुग हो या संगमयुग हो आत्माओं का आत्माओं से और प्रकृति से हिसाब-किताब रहता ही है और जब तक वर्तमान जन्म का हिसाब-किताब पूरा न हो तब तक आत्मा उस देह का त्याग नहीं कर सकती और जब तक कर्म का कोई हिसाब-किताब न हो तब तक कहाँ भी जन्म नहीं ले सकती और कल्पान्त में हिसाब-किताब पूरा करके आत्मा पावन न

बनें तब तक देह त्याग कर वापस परमधाम जा नहीं सकती। ये हिसाब-किताब का विधि-विधान परमात्मा अभी संगमयुग पर ही बताया है और इस हिसाब-किताब को पूरा करने का विधि-विधान भी बताया है।

शिव और शंकर का राज़

भक्ति मार्ग में तो शिव और शंकर को एक ही मानते हैं, जबकि दोनों के रूप को देख कर एक बच्चा भी समझ जाये कि ये दो सत्तओं के चित्र या प्रतिमायें हैं परन्तु अन्धश्रृद्धा में भक्तों का विचार ही नहीं चलता है। दोनों के रूप, गुण, कर्तव्यों के अन्तर का यथार्थ राज़ अभी परमात्मा ने बताया है कि शिवलिंग निराकार परमात्मा का रूप है और शंकर एक सूक्ष्माकारी देवता है, जो वास्तव में परमात्मा के एक कर्तव्य का प्रतीक मात्र है अर्थात् शंकर का अपना स्वतन्त्र स्वरूप नहीं है अर्थात् उनकी अलग से कोई आत्मा नहीं है।

अमृत-धारा

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वतः होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वतः जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वतः होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है।... किसी भी कारण से दुख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा14.11.87

ओम शान्ति